हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

73

आयुसाधन विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७१, शक संवत् १९३६
सन् २०१४-२०१५, जय हिन्द संवत् ६७-६८

पंचांग-प्रवर्तकः

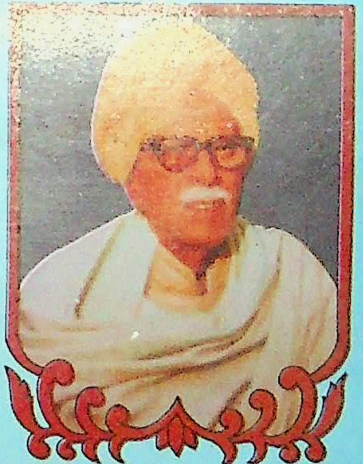

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
चन्द्र

मंत्री
चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 87 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स

टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
८८.००

सर्वाधिकार- 'M/S मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित हैं।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्त्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि. (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि. के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्त्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्त्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्त्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
[illegible]	–वार।
[illegible]	–[illegible]।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	– शुक्लपक्ष, शुक्रवार, – शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सा.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "**प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्।卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

आयुसाधन विशेषांक

विक्रम संवत् २०७१, शक संवत् १९३६
सन् २०१४-२०१५, जय हिन्द संवत् ६७-६८

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
चन्द्र

मंत्री
चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 87 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

मूल्य
८८.००

सर्वाधिकार-मै0 मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

सर्वाधिकार– 'M/S मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित हैं।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चांङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग $3\frac{1}{3}$ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्त्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के $24^{\text{घं}}$ $00^{\text{मि}}$ (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। किञ्च– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के $24^{\text{घं}}$–$00^{\text{मि}}$ के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो [illegible] अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णि[illegible] दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= [illegible] इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में —(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्त्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ. –अस्त।
अं –अंश।
उ. –उदित, उत्तर।
क. –कला।
कृ. –कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा. –क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोघू. –गोधूलि (लग्न)।
ति. –तिथि।
द. –दक्षिण।
दा. –दानपूजन।
दि. –दिन।
दि.ल. –दिन का लग्न।
प्रा. –प्रारम्भ।
भ. –भद्रा।
मा. –मार्गी।
मि. –मिनट।
रा. –राशि।
ल. –लग्न।
[illegible] –वक्री।
[illegible]
[illegible]
[illegible] के लिए।
स. –[illegible] सबके लिए।
शु. – शुक्लपक्ष, शुक्रवार,
– शुक्र (ग्रह)।
सं. –संक्रान्ति, संवत्।
सां.का. –साम्पातिक काल।
स्मा. –स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृद्ध्वान्तनाशन-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 निखिलदर्शि प्रसन्नायुषं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं प्रकाशतु ॥

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

श्री शंकर: शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

पंचांग-प्रवर्तक:

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

आयुसाधन विशेषांक

विक्रम संवत् २०७१, शक संवत् १९३६
सन् २०१४-२०१५, जय हिन्द संवत् ६७-६८

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा चन्द्र

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 87 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली-6 फोन : 23977110

मूल्य
८८.००

सर्वाधिकार [illegible] ज्योतिष कार्यालय, [illegible] द्वारा सुरक्षित

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०७१ वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचाग मे प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन,	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख–प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3–10
श्रीगणेश चतुर्थी / श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11–12
संदिग्ध व्रतपर्व–व्यवस्था (सं. 2071 वि.),	13–16
सं. 2071 वि. मे स्मार्तों और वैष्णवों के श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत की तिथि ?	17
सं. 2071 वि. मे विजयादशमी कब ?	18–19
सं. 2071 वि. में भारत में क्षेत्रभेद से दो दुर्गेश एवं दो धनेश	20–22
गण्डमूल, पंचक,	23
ग्रहण–विवरण,	24–29
संवत् 2071 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–कुंडलियां	30–40
श्री सत्यव्रतशर्मा का महाप्रयाण–श्रद्धाञ्जलि	41
शनि–साढ़ेसाती,	42–44
आकाशी कौंसिल (सं. 2071 वि.), जलवायु एवम् वर्षाविचार	45–64
व्यापारविमर्श (सं. 2071 वि.),	65–80
आपके स्वप्न क्या संकेत देते हैं ?	81–83
यंत्र, मंत्र, तंत्र –साधनाकाल एवं चमत्कार,	84–91
प्रसूति लग्नविचार, नक्षत्र–राशिज्ञान चक्र आदि,	92–103
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2071 वि.),	104–115
वर्षराजादि फल (सं. 2071 वि.),	116–124
तिथ्यादि 24 पत्र (सं. 2071 वि.),	125–148
घण्टा–मिनटात्मक तिथ्यादि (भा.स्टैं.टा.),	149–163
चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणप्रवेश (सं. 2071 वि.),	164–168

विषय	पृष्ठ
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	169–183
चन्द्र–शृंगोन्नति, चण्डीगढ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2071 वि.),	184–186
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	187–191
ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार, वक्र–मार्ग / उदय–अस्त,	192–197
अक्षांशादि सारणी,	198–207
दैनिक लग्नसारणी (चण्डीगढ़ के लिए),	208–213
प्रमुख–प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	214
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	215–218
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	219–224
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	225
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म–शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	226–228
आवश्यक मुहूर्त,	229–231
मेलापक–सारणी देखने की रीति और अष्टकूट–परिहार, मेलापक–सारणी,	232–239
लग्न–गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	240–253
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2071 वि.),	254–259
सं. 2072 वि. में संभावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त	260
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2071 वि.),	261–263
विवाहमुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार,	264–267
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2071 वि.),	268–269
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	270–273
सर्वार्थसिद्धि आदि योग,	274–276

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
सं. 2071 वि. में स्मार्तों और वैष्णवों के श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत की तिथि ?	17
सं. 2071 वि. में विजयादशमी कब ?	18–19
सं. 2071 वि. में भारत में क्षेत्रभेद से दो दुर्गेश एवं दो धनेश	20–22
संवत् 2071 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–कुंडलियां	30–40
आपके स्वप्न क्या संकेत देते हैं ?	81–83
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2071 वि.),	254–259
विवाहमुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार,	264–267

आयुसाधन विशेषांक*

समस्याएं और समाधान	279–287
आयुनिर्णय	288–301

*इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 277 भी देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विज्ञापनपृष्ठ बारे निर्देश पृष्ठ 277 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म- श्रीशक्तिधरशर्म- श्रीमदिन्दुशेखर- शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध- स्फुट- गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र- दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष- गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्तण्ड- पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक- लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2072 वि.) का विशेषांक– अगले वर्ष (सं. 2072 वि. में) ' राशिफल विशेषांक ' होगा। अपनी राशि के जिस दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक राशिफल को आप पंचांगों, पत्र–पत्रिकाओं में या T.V. पर उत्कण्ठा से पढ़ते–सुनते हैं– वह कहां तक विश्वसनीय है– इसका खगोल–शास्त्रानुसारी तार्किक विश्लेषण इस अंक में आप पढ़ेंगे। --प्रियव्रत शर्मा

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक '' व्रत–पर्व विवेक'' पर आधारित)

जनवरी (सन् 2014 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2014 ई. प्रारम्भ	1 जन.	बु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	चं.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	मं.
माघस्नान प्रारम्भ	16 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	16 जन.	गु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	19 जन.	र.
मौनी अमावस	30 जन.	गु

फरवरी (सन् 2014 ई.)

गौरी तृतीया (गौंतरी)	2 फर.	र.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	2 फर.	र.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	4 फर.	मं.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजा	4 फर.	मं.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	6 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	7 फर.	शु.
भीष्म द्वादशी	11 फर.	मं.
माघी पूर्णिमा	14 फर.	शु.
माघस्नान समाप्त	14 फर.	शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर.	गु.

मार्च (सन् 2014 ई.)

होलाष्टक प्रारम्भ	8 मार्च	श.
गोविन्द द्वादशी	12 मार्च	बु.
होलिकादहन	16 मार्च	र.
होलाष्टक समाप्त	16 मार्च	र.
वसन्तोत्सव	17 मार्च	चं.
महाविषुवदिन	20 मार्च	गु.
वारुणीपर्व	28 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2070 वि. पूर्ण	30 मार्च	र.
चान्द्र संवत् 2071 वि. प्रा.	31 मार्च	चं.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	31 मार्च	चं.
वर्षफलश्रवण	31 मार्च	चं.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	31 मार्च	चं.

अप्रैल (सन् 2014 ई.)

गौरी तृतीया (गणगौर)	2 अप्रै.	बु.
आन्दोलन तृतीया	2 अप्रै.	बु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	4 अप्रै.	शु.
नागपंचमी	4 अप्रै.	शु.
हयव्रत	4 अप्रै.	शु.
स्कन्द षष्ठी	5 अप्रै.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	7 अप्रै.	चं.
श्रीरामनवमी	8 अप्रै.	मं.
वासन्त नवरात्र समाप्त	8 अप्रै.	मं.
नवरात्र–व्रतपारणा	9 अप्रै.	बु.
दोलोत्सव	11 अप्रै.	शु.
विष्णुदमनोत्सव	12 अप्रै.	श.
अनंग त्रयोदशी	12 अप्रै.	श.
श्रीमहावीर जयन्ती	13 अप्रै.	र.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	चं.
शिवदमनोत्सव	14 अप्रै.	चं.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	15 अप्रै.	मं.

मई (सन् 2014 ई.)

श्रीपरशुराम जयन्ती	1 मई.	गु.
अक्षय तृतीया	2 मई	शु.
श्रीगंगा–जन्म	6 मई	मं.
श्रीजानकी–जयन्ती	8 मई	गु.
श्रीनृसिंह–जयन्ती	13 मई	मं.
श्रीकूर्म–जयन्ती	14 मई	बु.
वैशाखी पूर्णिमा	14 मई	बु.
श्रीबुद्धजयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	14 मई	बु.
वैशाखस्नान समाप्त	14 मई	बु.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	24 मई	श.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	28 मई	बु.
भावुका अमावस	28 मई	बु.
रम्भा तृतीया	31 मई	श.

जून (सन् 2014 ई.)

अरण्य षष्ठी	4 जून	बु.
विन्ध्यवासिनी–पूजा	4 जून	बु.
श्रीगंगा दशहरा	8 जून	र.
निर्जला एकादशी व्रत	9 जून	चं.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	12 जून	गु.
रथयात्रा (पुरी)	29 जून	र.

जुलाई (सन् 2014 ई.)

कुमार षष्ठी	3 जुला.	गु.
विवस्वत् सप्तमी	4 जुला.	शु.
विष्णुशयनोत्सव	8 जुला.	मं.
कोकिला व्रत	11 जुला.	शु.
शिवशयनोत्सव	11 जुला.	शु.
गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)	12 जुला.	श.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	12 जुला.	श.
हरियाली अमावस	26 जुला.	श.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	30 जुला.	बु.

अगस्त (सन् 2014 ई.)

नागपंचमी	1 अग.	शु.
श्रीदुर्गाष्टमी	4 अग.	चं.
रक्षाबन्धन (राखी)	10 अग.	र.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	10 अग.	र.
ऋक् उपाकर्म	10 अग.	र.
श्रावणी पूर्णिमा	10 अग.	र.
बहुला चतुर्थी	13 अग.	बु.
श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी	13 अग.	बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	17 अग.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=संन्यासियों के लिए)	18 अग.	चं.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	18 अग.	चं.
श्रीगुग्गा नवमी	19 अग.	मं.
कुशोत्पाटिनी अमावस	25 अग.	चं.
पिठोरी अमावस	25 अग.	चं.
हरितालिका तृतीया	28 अग.	गु.
गौरी तृतीया	28 अग.	गु.
साम उपाकर्म	29 अग.	शु.
कलंक चतुर्थी	29 अग.	शु.
सिद्धिविनायक व्रत	29 अग.	शु.
ऋषि पंचमी	30 अग.	श.
सूर्य षष्ठी व्रत	31 अग.	र.

सितंबर (सन् 2013 ई.)

श्रीराधाष्टमी	2 सितं.	मं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	2 सितं.	मं.
बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)	3 सितं.	बु.
श्रीवामन जयन्ती	6 सितं.	श.
अनन्त चतुर्दशी	8 सितं.	चं.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	8 सितं.	चं.
पूर्णिमा श्राद्ध	8 सितं.	चं.
महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ	9 सितं.	मं.
चन्द्रषष्ठी व्रत	13 सितं.	श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	15 सितं.	चं.
महालय श्राद्ध समाप्त	23 सितं.	मं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

शारद नवरात्र प्रारम्भ	25 सितं.	गु.
उपांगललिता व्रत	29 सितं.	चं.
अक्तूबर (सन् 2014 ई.)		
सरस्वती आवाह्न	1 अक्तू.	बु.
सरस्वती पूजन	2 अक्तू.	गु.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	2 अक्तू.	गु.
महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए)	2 अक्तू.	गु
महानवमी (बलिदान के लिए)	3 अक्तू.	शु.
सरस्वती के लिए बलिदान	3 अक्तू.	शु.
नवरात्र समाप्त	3 अक्तू.	शु.
विजयादशमी (दशहरा)	3 अक्तू.	शु.
सरस्वती विसर्जन	4 अक्तू.	श.
भरतमिलाप	4 अक्तू.	श.
कोजागर व्रत	7 अक्तू.	मं.
शरत् पूर्णिमा	7 अक्तू.	मं.
महर्षि वाल्मीकि–जयन्ती	8 अक्तू.	बु.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	8 अक्तू.	बु.
चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	8 अक्तू.	बु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	11 अक्तू.	श.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	15 अक्तू.	बु.
गोवत्स द्वादशी	20 अक्तू.	चं.
धन त्रयोदशी	21 अक्तू.	मं.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	22 अक्तू.	बु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	22 अक्तू.	बु.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	23 अक्तू.	गु.
गोवर्धनपूजा, बलिपूजा,	24 अक्तू.	शु.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	24 अक्तू.	शु.
यमद्वितीया, भाई दूज	25 अक्तू.	श.

श्रीविश्वकर्मा पूजा	25 अक्तू.	श.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	29 अक्तू.	बु.
गोपाष्टमी	31 अक्तू.	शु.
नवम्बर (सन् 2014 ई.)		
अक्षय नवमी	1 नवं.	श.
कूष्माण्ड नवमी	1 नवं.	श.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	2 नवं.	र.
हरिप्रबोधोत्सव	4 नवं.	मं.
तुलसी विवाह	4 नवं.	मं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	4 नव.	मं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	5 नवं.	बु.
कार्त्तिक पूर्णिमा	6 नवं.	गु.
श्री गुरुनानक जयन्ती	6 नवं.	गु.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	6 नवं.	गु.
भीष्म पंचक समाप्त	6 नवं.	गु.
त्रिपुरोत्सव	6 नवं.	गु.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	14 नवं.	शु.
स्कन्द–गुह षष्ठी	27 नवं.	गु.
चम्पा षष्ठी	27 नवं.	गु.
मित्र सप्तमी	28 नवं.	शु.
दिसंबर (सन् 2014 ई.)		
श्रीगीता जयन्ती	2 दिसं.	मं.
श्रीदत्त जयन्ती	6 दिसं.	श.
जनवरी (सन् 2015 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2015 ई. प्रारम्भ	1 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	5 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	5 जन.	चं.

संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	8 जन.	गु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	मं.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	बु.
मौनी अमावस	20 जन.	मं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	22 जन.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	23 जन.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	24 जन.	श.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	24 जन.	श.
रथसप्तमी /आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	26 जन.	चं.
भीष्माष्टमी	27 जन.	मं.
भीष्म द्वादशी	31 जन.	श.
फरवरी (सन् 2015 ई.)		
माघी पूर्णिमा	3 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	3 फर.	मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर.	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	26 फर.	गु.
मार्च (सन् 2015 ई.)		
गोविन्द द्वादशी	2 मार्च	चं.
होलिकादहन	5 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	5 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	6 मार्च	शु.
वारुणीपर्व	18 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2071 वि. पूर्ण	20 मार्च	शु

कुम्भमहापर्व–नासिक

आगामी वर्ष (सं. 2072 वि.) में 13 सितंबर, 2015 ई. को भाद्र. अमा, रविवार के दिन नासिक में कुम्भमहापर्व घटित होने जा रहा है। जिसकी स्नान–दान–जप आदि के लिए तिथियों का निर्देश अगले वर्ष (सं. 2072 वि.) के पंचांग में विस्तार–पूर्वक किया जाएगा।

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2072) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
सन् 2015 ई.	
नवरात्र प्रारम्भ	21 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	27 मार्च
श्री रामनवमी	28 मार्च
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	2 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	20 अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	4 मई
श्री गंगा दशहरा	28 मई
गुरु पूर्णिमा	31 जुला.
रक्षाबन्धन	29 अग.
संकष्ट चतुर्थी	1 सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	5 सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	5 सितं.
श्राद्ध प्रारम्भ	27 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	13 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	21 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	22 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	26 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	27 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	30 अक्तू.
दीपावली	11 नवं.
भाई दूज	13 नवं.
श्री गुरु नानक जयन्ती	25 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	3 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	12 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	22 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक) –(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2014 ई.)

पौष शुक्ल	11 जन.
माघ कृष्ण	27 जन.
माघ शुक्ल	10 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	25 फर.
फाल्गुन शुक्ल	12 मार्च
चैत्र कृष्ण	27 मार्च
चैत्र शुक्ल	11 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	25 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	10 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	24 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	9 जून
आषाढ़ कृष्ण	23 जून
आषाढ़ शुक्ल (स्मा.)	8 जुला.
श्रावण कृष्ण	22 जुला.
श्रावण शुक्ल	7 अग.
भाद्रपद कृष्ण	21 अग.
भाद्रपद शुक्ल	5 सितं.
आश्विन कृष्ण	19 सितं.
आश्विन शुक्ल (स्मा.)	4 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	19 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	3 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	18 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	2 दिसं.
पौष कृष्ण	18 दिसं.
पौष शुक्ल (सन् 2015 ई.)	1 जन.
माघ कृष्ण	16 जन.
माघ शुक्ल	30 जन.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर.
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	16 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2014 ई.)

पौष शुक्ल	2 जन.
माघ कृष्ण	17 जन.
माघ शुक्ल	31 जन.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर.
फाल्गुन शुक्ल	2 मार्च
चैत्र कृष्ण	17 मार्च
चैत्र शुक्ल	31 मार्च
वैशाख कृष्ण	16 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	30 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	15 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	29 मई
आषाढ़ कृष्ण	14 जून
आषाढ़ शुक्ल	28 जून
श्रावण कृष्ण	13 जुला.
श्रावण शुक्ल	27 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	11 अग.
भाद्रपद शुक्ल	26 अग.
आश्विन कृष्ण	10 सितं.
आश्विन शुक्ल	25 सितं.
कार्त्तिक कृष्ण	9 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	24 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	7 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	23 नवं.
पौष कृष्ण	7 दिसं.
पौष शुक्ल	22 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ कृष्ण	6 जन.
माघ शुक्ल	21 जन.
फाल्गुन कृष्ण	4 फर.
फाल्गुन शुक्ल	19 फर.
चैत्र कृष्ण	6 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2014 ई.)

पौष	15 जन.
माघ	14 फर.
फाल्गुन	16 मार्च
चैत्र	14 अप्रै.
वैशाख	14 मई
ज्येष्ठ	12 जून
आषाढ़	11 जुला.
श्रावण	10 अग.
भाद्रपद	8 सितं.
आश्विन	7 अक्तू.
कार्त्तिक	6 नवं.
मार्गशीर्ष	6 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
पौष	4 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	5 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2014 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	2 अप्रै.
श्रीरामनवमी	8 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	1 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	13 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	14 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	14 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	2 अग.
* श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	17 अग.
श्रीवराह जयन्ती	28 अग.
श्रीवामन जयन्ती	6 सितं.

* अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2014 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	19 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	20 मार्च
वैशाख	18 अप्रै.
ज्येष्ठ	17 मई
आषाढ़	16 जून
श्रावण	15 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	13 अग.
आश्विन	12 सितं.
कार्त्तिक	11 अक्तू.
मार्गशीर्ष	10 नवं.
पौष	10 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	8 जन.
फाल्गुन	7 फर.
चैत्र	9 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2014 ई.)

पौष	4 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.
वैशाख	2 मई
ज्येष्ठ	1 जून
आषाढ़	1 जुला.
श्रावण	30 जुला.
भाद्रपद	29 अग.
आश्विन	29 सितं.
कार्त्तिक	27 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष	25 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	23 जन.
फाल्गुन	22 फर.

प्रदोष व्रत

(सन् 2014 ई.)

पौष शुक्ल (सोम)	13 जन.
माघ कृष्ण (भौम)	28 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण	27 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च
चैत्र शुक्ल (शनि)	12 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (शनि)	26 अप्रै.
वैशाख शुक्ल (सोम)	12 मई
ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	26 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (भौम)	10 जून
आषाढ़ कृष्ण (भौम)	24 जून
आषाढ़ शुक्ल	10 जुला.
श्रावण कृष्ण	24 जुला.
श्रावण शुक्ल	8 अग.
भाद्रपद कृष्ण	22 अग.
भाद्रपद शुक्ल (शनि)	6 सितं.
आश्विन कृष्ण	21 सितं.
आश्विन शुक्ल (सोम)	6 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण (भौम)	21 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल (भौम)	4 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	20 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	4 दिसं.
पौष कृष्ण	19 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
पौष शुक्ल	2 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	1 फर.
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	16 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	3 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत
(सन् 2014 ई.)

माघ	29 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	27 फर.
चैत्र	29 मार्च
वैशाख	27 अप्रै.
ज्येष्ठ	27 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	25 जुला.
भाद्रपद	23 अग.
आश्विन	22 सितं.
कार्तिक	22 अक्तू.
मार्गशीर्ष	20 नवं.
पौष	20 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	18 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रिं)	17 फर.
चैत्र	18 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2014 ई.)
(स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

पौष	16 जन.
माघ	14 फर.
फाल्गुन	16 मार्च
चैत्र	15 अप्रै.
वैशाख	14 मई
ज्येष्ठ	13 जून
आषाढ़	12 जुला.
श्रावण	10 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	8 अक्तू.
कार्तिक	6 नवं.
मार्गशीर्ष	6 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
पौष	5 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	5 मार्च

संक्रान्तियां
(सन् 2014 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ)
(2014 ई.)

पौष	1 जन.
माघ	30 जन.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च
वैशाख (भौम)	29 अप्रै.
ज्येष्ठ	28 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण (शनैश्चरी)	26 जुला.
भाद्रपद (सोम)	25 अग.
आश्विन	24 सितं.
कार्तिक	23 अक्तू.
मार्गशीर्ष (शनैश्चरी)	22 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ (भौमवती)	20 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	20 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत
(2014 ई.)

पौष	8 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	8 मार्च
चैत्र	7 अप्रै.
वैशाख	7 मई
ज्येष्ठ	6 जून
आषाढ़	5 जुला.
श्रावण	4 अग.
भाद्रपद	2 सितं.
आश्विन	2 अक्तू.
कार्तिक	31 अक्तू.
मार्गशीर्ष	29 नवं.
पौष	29 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.

मासिक कालाष्टमी व्रत
(2014 ई.)

माघ	24 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	23 मार्च
वैशाख	22 अप्रै.
ज्येष्ठ	21 मई
आषाढ़	19 जून
श्रावण	18 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	15 अक्तू.
मार्गशीर्ष (कालाष्टमी)	14 नवं.
पौष	14 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर
चैत्र	13 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी
श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

(2014 ई.)

माघ	29 जन.
फाल्गुन	27 फर.
चैत्र	28 मार्च
वैशाख	27 अप्रै.
ज्येष्ठ	26 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	24 जुला.
भाद्रपद	23 अग.
आश्विन	21 सितं.
कार्तिक	21 अक्तू.
मार्गशीर्ष	20 नवं.
पौष	20 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
माघ	18 जन.
फाल्गुन	17 फर.
चैत्र	18 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध
(सन् 2014 ई.)

प्रोष्ठपदी / ⊙पूर्णिमा	8 सितं.
प्रतिपदा	9 सितं.
द्वितीया	10 सितं.
तृतीया	11 सितं.
चतुर्थी	12 सितं.
पंचमी	13 सितं.
षष्ठी	14 सितं.
सप्तमी	15 सितं.
अष्टमी	16 सितं.
★नवमी	17 सितं.
दशमी	18 सितं.
एकादशी	19 सितं.
✳ द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध	20 सितं.
त्रयोदशी, मघा श्राद्ध	21 सितं.
✽ चतुर्दशी	22 सितं.
सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	23 सितं.
नाना / नानी का श्राद्ध	24 सितं.

★सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

✳ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✽ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

⊙"जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए "–यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोकपरम्परा है।

क्रिश्चियन त्योहार
(सन् 2014 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	13 अप्रै.
गुड फ्राई डे	18 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	20 अप्रै.
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

जैन व्रतपर्व	
(सन् 2014 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	29 जन.
मर्यादा महोत्सव	6 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	8 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	13 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	9 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	3 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	12 जुला.
चातुर्मास्य व्रत–नियम आदि प्रारम्भ	12 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण–दिवस	22 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	22 अग.
संवत्सरी महापर्व	29 अग.
श्रीकालू निर्वाण–दिवस	31 अग
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	3 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण–दिवस	7 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण–दिवस	23 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	25 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	28 अक्तू.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	6 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षादिवस	17 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षादिवस	11 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	17 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	18 जन.
मर्यादा महोत्सव	26 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन	
(सन् 2014 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	23 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	1 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	14 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	24 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	3 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	16 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	25 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	1 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	4 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	5 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	31 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	3 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जी	25 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	4 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	5 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाई बाबा	23 नवं.
(सन् 2015 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	12 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	12 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	22 जन.
श्रीनेता जी सुभाशचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	3 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	14 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	20 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	5 मार्च

मुस्लिम त्योहार	
(सन् 2014 ई.)	
आखिरी चहार शम्बा	1 जन.
शहादत–ए–इमाम हसन	1 जन.
ईद–ए–मिलाद	14 जन.
ईद–ए–मौलाद	19 जन.
फतिहायज़दहुम	12 फर.
जन्म श्री हज़रत अली	13 मई
शब–ए–मिराज	27 मई
शब–ए–बरात	14 जून
रमज़ान का पहला दिन	30 जून
शहादत–ए–हज़रत अली	20 जुला.
जमतुल विदा	25 जुला.
शब–ए–कद्र	26 जुला.
ईद–उल–फित्र	29 जुला.
इदुलज्जुहा	6 अक्तू.
मुहर्रम (ताज़िया)	4 नवं.
चेहल्म	13 दिसं.
आखिरी चहार शम्बा	17 दिसं.
शहादत–ए–इमाम हसन	21 दिसं.
(सन् 2015 ई.)	
ईद–ए–मिलाद	4 जन.
ईद–ए–मौलाद	9 जन.
फतिहायज़दहुम	1 फर.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रतपर्व, तेज़ी–मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है– यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं–

(i) , तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता–मार्गिता, उदयास्त, लोप–दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व–निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त–गणित–फलित–सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूँ–यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला– 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र में जय–पराजय, राजनेताओं का उत्थान–पतन; पाक्षिक–मासिक–वार्षिक फलादेश, यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति–विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वग़ैरह की जानकारी एवम् वायदा–हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक–मासिक–पाक्षिक–दैनिक तेजी–मन्दी– सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए–

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277 — 0160-2641 577

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

–सम्पादक मण्डल

सिक्ख–पर्व (सं. 2071 वि.) (सन् 2014–15 ई.)

सिक्ख–पर्व

संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2014 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2014 ई.)			
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संक्रान्ति*
श्री गुरु नानकदेव जी	6 नवं., 2014 ई.	अवतार दिन से	18 सितं., 2014 ई.	*6 नवं., 2014 ई.	अवतार दिन से	22 सितम्बर	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से प्रकाशित मासिक-पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' (अप्रैल, 2010 ई.) के पृष्ठ 89 के अनुसार तारा अंकित पर्व और संक्रान्ति अब पुरातन परम्परा (विक्रमी) के अनुसार ही हुआ करेंगे।
श्री गुरु अंगददेव जी	30 अप्रै., 2014 ई.	13 सितं., 2014 ई.	3 अप्रै. 2014 ई.	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	
श्री गुरु अमरदास जी	13 मई, 2014 ई.	31 मार्च. 2014 ई.	9 सितं., 2014 ई.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	
श्री गुरु रामदास जी	10 अक्तू., 2014 ई.	7 सितं, 2014 ई.	28 अग., 2014 ई.	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	21 अप्रै., 2014 ई.	27 अग., 2014 ई.	1 जून, 2014 ई.	2 मई	16 सितम्बर	1 जून *	
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	14 जून, 2014 ई.	21 मई, 2014 ई.	4 अप्रै. 2014 ई.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	
श्री गुरु हरिराय जी	1 फर., 2015 ई.	18 मार्च, 2015 ई.	17 अक्तू, 2014 ई.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	
श्री गुरु हरकिशन जी	20 जुला., 2014 ई.	17 अक्तू. 2014 ई.	14 अप्रै., 2014 ई.	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	20 अप्रै., 2014 ई.	14 अप्रै., 2014 ई.	27 नवं., 2014 ई.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	7 जन., 2014 ई. 28 दिसं., 2014 ई.	25 नवं., 2014 ई.	28 अक्तू., 2014 ई.	7 जन., 2014 ई. 28 दिसं., 2014 ई.*	24 नवम्बर	28 अक्तू., 2014 ई.*	
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	14 अप्रैल, 2014 ई.		14 अप्रैल, 2014 ई.*			
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	26 अगस्त, 2014 ई.		1 सितंबर, 2014 ई.			
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	25 अक्तूबर, 2014 ई.		25 अक्तूबर, 2014 ई.*			

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

इंग्लिश नववर्ष (2014 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	(सन् 2015 ई.)	
*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	7 जन.	गुड फ्राई डे	18 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2015 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	13 मई	दशहरा	3 अक्तू.	ईद–ए–मिलाद	4 जन.
पोंगल	14 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	14 मई	इदुलज्जुहा	6 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
ईद–ए–मिलाद	14 जन.	रथयात्रा (पुरी)	29 जून	श्रीवाल्मीकि–जयन्ती	8 अक्तू.	पोंगल	15 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	जमतुलविदा	25 जुला.	दीपावली	23 अक्तू.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	14 फर.	इदुल–फित्र	29 जुला.	भाई दूज	25 अक्तू.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	3 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	10 अग.	मुहर्रम (ताज़िया)	4 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर.
होला, वसन्तोत्सव	17 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	6 नवं.	वसन्तोत्सव	6 मार्च
गुड़ी पड़वा	31 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	18 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.		
श्रीराम नवमी	8 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	29 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	13 अप्रै.	ओणम् (केरल)	7 सितं.	*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	28 दिसं.		
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.						

* श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी का अवतारपर्व संशोधित नानकशाही Calander के अनुसार पौष शुक्ल सप्तमी को ही मनाया जाना चाहिए।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2014 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2014 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2014 ई.	
वसन्त पंचमी	4 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	12 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	27 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	27 फर.
मार्च 2014 ई.	
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	17 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	18 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	20 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	21 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	29 मार्च
अप्रैल 2014 ई.	
माईसरखाना (पं.)	5 अप्रै.
मेला नरीसैंभरी, मथुरा (उ.प्र.)	7 अप्रै.
श्रीमनसादेवी (हरि.)	7 अप्रै.
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	7 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	7 अप्रै.
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	13 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	14 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	14 अप्रै.
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
ज.दि. भाई दित्त सिंह ज्ञानी	21 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	29 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
मई 2014 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	8 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
जून 2014 ई.	
पुण्यतिथि सतगुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	3 जून
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	6 जून
श्रीगंगा दशहरा	8 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	8 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	9 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	9 जून
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	10 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	13 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई 2014 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/ बड़ू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
जयन्ती सतगुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	3 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	7 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	12 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	12 जुला.
अगस्त 2014 ई.	
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	1 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	4 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	4 अग.
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी गु. श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	10 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	18 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	23 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्रीगोसाईंआणां, कुराली (पंजाब)	27 अग.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	29 अग.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	30 अग.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	30 अग.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2014 ई.)	तारीख
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	31 अग.
सितंबर 2014 ई.	
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	2 सितं.
ब. भा. दित्त सिंह ज्ञानी	6 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	6 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	8 सितं.
छपार (पं.)	8 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	9 सितं.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	10 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	23 सितं.
अक्तूबर 2014 ई.	
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	2 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	2 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	2 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	3 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	7 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	7 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	7 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	18 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी) हि.प्र.	18 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	23 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2014 ई.)	तारीख
नवंबर 2014 ई.	
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	2 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	3 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	3 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	5 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	5 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	6 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	6 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	6 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	21 नवं.
दिसम्बर 2014 ई.	
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	1 दिसं.
ब. सं. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन)	5 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2015 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) पं.	14 जन.

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) पं.	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
वसन्त पंचमी	24 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (प.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2015 ई.	
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	1 फर.
ब. सं. बा. बिशन सिंह जी रौणी वाले/सं. बा. हरभजन सिंह जी कोहरियां वाले–कोहरियां, प्रा.	3 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	17 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	17 फर.
मार्च 2015 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	6 माचे
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	11 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	12 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च

कुम्भ महापर्व की पूर्व सूचना

आगामी वर्ष सं. 2072 वि. में भाद्र. अमा, रविवार (13 सितंबर, 2015 ई.) को "नासिक कुम्भपर्व " का योग बन रहा है। इस महापुण्य के दिन पुण्यसलिला गोदावरी में स्नान कर पुण्यसञ्चय एवं निर्वाण के इच्छुक श्रद्धालुओं को तदर्थ पहिले ही प्रस्तुत हो जाना चाहिए। इस पर्वराज के पुण्य–स्नानदिवसों का विस्तृत विवरण तथा ऐतत्सम्बद्ध सभी प्रकार की अन्य पूरी जानकारी विस्तारपूर्वक अगले वर्ष (सं. 2072 वि.) के पञ्चांग में दी जाएगी। ध्यान रहे– नासिक के कुम्भपर्व को सिंहस्थ पर्व भी कहा जाता है।

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2071 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)	
	18 अप्रै., 2014 ई. घं. मि.	17 मई, 2014 ई. घं. मि.	16 जून 2014 ई. घं. मि.	15 जुला. 2014 ई. घं. मि.	13 अग. 2014 ई. घं. मि.	12 सितं. 2014 ई. घं. मि.	11 अक्तू. 2014 ई. घं. मि.	10 नवं., 2014 ई. घं. मि.	10 दिसं., 2014 ई. घं. मि.	8 जन., 2015 ई. घं. मि.	7 फर., 2015 ई. घं. मि.	9 मार्च, 2015 ई. घं. मि.	स्मार्त 17 अगस्त 2014 ई.	वैष्णव 18 अगस्त 2014 ई.
अजमेर	22 03	21 50	22 18	21 43	21 03	21 06	20 30	20 50	21 16	20 51	21 16	21 45	23 58	24 45
अमृतसर	22 11	21 59	22 23	21 45	21 01	20 59	20 20	20 40	21 08	20 45	21 15	21 49	23 49	24 35
अलवर	21 56	21 44	22 11	21 36	20 54	20 57	20 20	20 40	21 06	20 41	21 08	21 37	23 48	24 35
अलीगढ़	21 51	21 38	22 06	21 30	20 48	20 50	20 13	20 33	21 00	20 35	21 02	21 32	23 42	24 28
अहमदाबाद	22 05	21 52	22 23	21 50	21 12	21 18	20 43	21 04	21 29	21 01	21 24	21 50	24 12	24 59
आगरा	21 50	21 37	22 05	21 30	20 49	20 51	20 15	20 35	21 01	20 36	21 02	21 31	23 43	24 30
इलाहाबाद	21 31	21 18	21 48	21 13	20 33	20 38	20 01	20 22	20 48	20 22	20 46	21 14	23 30	24 17
उज्जैन	21 55	21 40	22 10	21 37	20 59	21 05	20 30	20 51	21 15	20 48	21 11	21 37	23 59	24 46
उदयपुर(रा.)	22 03	21 53	22 20	21 46	21 07	21 12	20 36	20 57	21 22	20 56	21 20	21 47	24 05	24 52
ऊना	22 06	21 54	22 18	21 40	20 56	20 54	20 15	20 35	21 03	20 40	21 10	21 44	23 44	24 30
कपूरथला	22 09	21 56	22 21	21 43	20 59	20 57	20 18	20 38	21 06	20 43	21 13	21 46	23 47	24 33
करनाल	22 00	21 47	22 13	21 35	20 53	20 56	20 14	20 34	21 02	20 38	21 06	21 38	23 43	24 29
कांगड़ा	22 07	21 54	22 18	21 39	20 55	20 52	20 13	20 32	21 01	20 38	21 09	21 43	23 42	24 28
कानपुर	21 39	21 27	21 55	21 20	20 39	20 42	20 05	20 25	20 52	20 26	20 52	21 21	23 34	24 21
कुरुक्षेत्र	22 01	21 48	22 14	21 36	20 54	20 57	20 15	20 35	21 03	20 39	21 07	21 39	23 44	24 30
कुल्लू	22 02	21 50	22 14	21 36	20 52	20 50	20 11	20 31	20 59	20 36	21 06	21 40	23 40	24 25
कोटा	21 55	21 43	22 12	21 38	20 58	21 03	20 27	20 47	21 13	20 47	21 11	21 38	23 55	24 42
कोलकाता	20 59	20 46	21 18	20 45	20 07	20 14	19 39	20 00	20 24	19 57	20 19	20 44	23 07	23 55
गुरदासपुर	22 10	21 57	22 22	21 43	20 59	20 56	20 17	20 37	21 05	20 42	21 13	21 47	23 46	24 32
ग्वालियर	21 48	21 35	22 04	21 29	20 49	20 52	20 16	20 36	21 02	20 37	21 01	21 30	23 45	24 31
चण्डीगढ़	22 02	21 49	22 15	21 37	20 53	20 52	20 14	20 33	21 01	20 38	21 07	21 40	23 43	24 29
चम्बा	22 09	21 56	22 20	20 40	20 56	20 52	20 13	20 32	21 01	20 39	21 10	21 45	23 42	24 28
चूरु	22 00	21 48	22 16	21 40	20 59	21 02	20 25	20 46	21 12	20 47	21 12	21 42	23 54	24 41
चेन्नई	21 18	21 05	21 42	21 14	20 42	20 57	20 25	20 48	21 08	20 37	20 52	21 10	23 54	24 42
जम्मू	22 14	22 01	22 25	21 45	21 01	20 57	20 18	20 37	21 06	20 44	21 15	21 50	23 47	24 33
जयपुर	21 59	21 46	22 14	21 39	20 58	21 01	20 24	20 44	21 11	20 45	21 11	21 40	23 53	24 39
जालन्धर	22 08	21 55	22 20	21 42	20 58	20 56	20 18	20 37	21 06	20 42	21 12	21 45	23 47	24 33
जोधपुर	22 09	21 57	22 25	21 50	21 10	21 13	20 37	21 49	21 23	20 57	21 22	21 51	24 05	24 52
दरभंगा	21 15	21 03	21 32	20 57	20 16	20 20	19 43	20 04	20 30	20 04	20 29	20 58	23 12	23 59
दिल्ली	21 56	21 43	22 10	21 34	20 58	20 53	20 15	20 35	21 02	20 38	21 05	21 36	23 44	24 31

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2071 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)	
	18 अप्रै., 2014 ई. घं. मि.	17 मई, 2014 ई. घं. मि.	16 जून 2014 ई. घं. मि.	15 जुला. 2014 ई. घं. मि.	13 अग. 2014 ई. घं. मि.	12 सितं. 2014 ई. घं. मि.	11 अक्तू. 2014 ई. घं. मि.	10 नवं., 2014 ई. घं. मि.	10 दिसं., 2014 ई. घं. मि.	8 जन., 2015 ई. घं. मि.	7 फर., 2015 ई. घं. मि.	9 मार्च, 2015 ई. घं. मि.	स्मार्त 17 अगस्त 2014 ई.	वैष्णव 18 अगस्त 2014 ई.
देहरादून	21 56	21 43	22 09	21 31	20 48	20 47	20 09	20 29	20 57	20 33	21 02	21 34	23 38	24 24
नाहन	22 00	21 47	22 13	21 35	20 51	20 50	20 12	20 31	20 59	20 36	21 05	21 38	23 41	24 27
पटना	21 17	21 05	21 34	20 59	20 19	20 23	19 47	20 08	20 33	20 07	20 37	21 00	23 16	24 03
पटियाला	22 03	21 50	21 16	21 38	20 55	20 54	20 16	20 36	21 04	20 40	21 09	21 41	23 45	24 31
पठानकोट	22 09	21 57	22 21	21 42	20 57	20 55	20 16	20 35	21 04	20 41	21 12	21 46	23 45	24 30
फगवाड़ा	22 07	21 54	22 19	21 41	20 57	20 55	20 17	20 36	21 05	20 41	21 11	21 44	23 46	24 32
फिरोज़पुर	22 11	21 58	22 24	21 46	21 02	21 01	20 23	20 42	21 10	20 47	21 16	21 46	23 52	24 38
बंगलोर	21 29	21 16	21 53	21 25	20 53	21 08	20 37	20 59	21 20	20 49	21 03	21 21	24 05	24 54
बिलासपुर(हि.प्र.)	22 04	21 52	22 16	21 38	20 54	20 52	20 13	20 33	21 01	20 38	21 08	21 42	23 42	24 28
बीकानेर	22 11	21 58	22 26	21 50	21 08	21 10	20 33	20 53	21 20	20 55	21 21	21 52	24 01	24 48
बून्दी	21 55	21 43	22 13	21 37	20 58	21 02	20 26	20 46	21 12	20 46	21 10	21 38	23 54	24 41
भटिण्डा	22 08	21 56	22 21	21 44	21 04	21 00	20 22	20 42	21 10	20 46	21 15	21 47	23 51	24 37
भरतपुर	21 53	21 40	22 08	21 33	20 52	20 54	20 17	20 37	21 04	20 39	21 05	21 34	23 46	24 33
मण्डी (हि.प्र.)	22 03	21 51	22 15	21 37	20 53	20 51	20 12	20 32	21 00	20 37	21 07	21 41	23 41	24 27
मथुरा	21 53	21 40	22 08	21 32	20 51	20 54	20 17	20 37	21 03	20 38	21 04	21 34	23 46	24 32
मुम्बई	21 58	21 45	22 18	21 47	21 12	21 22	20 48	21 10	21 33	21 04	21 23	21 45	24 17	24 05
रोपड़	22 03	21 50	22 16	21 38	20 54	20 53	20 15	20 34	21 02	20 39	21 08	21 41	23 44	24 30
रोहतक	21 58	21 45	22 12	21 36	21 00	20 55	20 17	20 37	21 04	20 40	21 07	21 38	23 46	24 33
लखनऊ	21 37	21 25	21 53	21 18	20 37	20 40	20 03	20 23	20 50	20 24	20 50	21 19	23 32	24 19
लुधियाना	22 06	21 53	22 19	21 40	20 57	20 56	20 17	20 37	21 05	20 41	21 11	21 44	23 46	24 32
वाराणसी	21 26	21 13	21 43	21 08	20 29	20 33	19 57	20 17	20 43	20 17	20 41	21 09	23 26	24 12
शिमला	22 01	21 48	22 13	21 35	20 51	20 50	20 12	20 31	20 59	20 36	21 05	21 39	23 40	24 26
श्रीनगर (का.)	22 17	22 04	22 27	21 47	21 01	20 56	20 16	20 35	21 05	20 43	21 16	21 52	23 45	24 30
संगरूर	22 05	21 52	22 18	21 40	20 57	20 57	20 19	20 38	21 06	20 42	21 11	21 43	23 47	24 34
सहारनपुर	21 57	21 44	22 10	21 33	20 50	20 50	20 12	20 32	20 59	20 35	21 04	21 30	23 41	24 27
सीकर	22 03	21 51	22 18	21 42	21 00	21 02	20 25	20 45	21 12	20 47	21 14	21 41	23 54	24 40
हरिद्वार	21 55	21 42	22 08	21 30	20 48	20 47	20 09	20 29	20 57	20 33	21 01	21 33	23 38	24 24
हिसार	22 03	21 50	22 17	21 40	20 58	20 58	20 21	20 41	21 08	20 44	21 11	21 43	23 50	24 36
होशियारपुर	22 07	21 54	22 19	21 41	20 57	20 55	20 16	20 35	21 04	20 41	21 11	21 44	23 45	24 31

सन्दिग्ध व्रत–पर्व–व्यवस्था (सं. 2071 वि.)

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)–134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत–पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, – प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है।)

(1) अनङ्ग त्रयोदशी (चैत्र शु. 13)

यह पर्व चैत्रशुक्ल त्रयोदशी को मनाया जाता है। यदि त्रयोदशी दो दिन विद्यमान हो तो इसे पूर्व(द्वादशी)विद्धा के दिन मनाने का निर्देश है। **धर्मसिन्धु** का वचन है –" **तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या।**" इसवर्ष त्रयोदशी 12 और 13 अप्रैल, 2014 ई. को– दोनो दिन विद्यमान है, अतः शास्त्रनिर्देशानुसार **यह पर्व पहले दिन 12 अप्रैल, 2014 ई. को ही मनाया जाएगा।** क्योंकि इस दिन द्वादशी त्रिमुहूर्त्ताधिक–व्यापिनी है, जो त्रयोदशी को विद्ध कर रही है।

(2) अक्षयतृतीया (वैशा. शु. 3)

वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षयतृतीया मनाई जाती है। यह युगादि तिथि भी है। इस दिन पितृश्राद्ध करने का भी विधान है । शास्त्रनिर्णय है कि– कृष्णपक्ष की युगादि तिथियों का अनुष्ठान (श्राद्ध) अपराह्न में और शुक्लपक्षीय युगादि तिथियों का पूर्वाह्न में किया जाता है। इसके अनुसार वैशाख शुक्लतृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी, जिस दिन होगी, उसी दिन अक्षयतृतीया मनाई जाएगी। यदि द्वेधाविभक्त (दो से विभाजित) दिन के पूर्वार्ध (पूर्वाह्न) को तृतीया दो दिन व्याप्त करती हो तो अक्षयतृतीया को उस स्थिति में दूसरे ही दिन मनाने का शास्त्रादेश है, बशर्ते कि– वह दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्त या इससे अधिक समय को व्याप्त करे। यदि इससे (तीन मुहूर्त्त से) कम काल को वह व्याप्त करे तो पहले दिन ही अक्षयतृतीया मनाई जाती है। **'धर्मसिन्धुकार'** का वचन है–

> **"द्वेधाविभक्त–दिन–पूर्वार्धक–देशव्यापिनी दिनद्वये चेत्,**
> **त्रिमुहूर्त्ताधिकव्याप्तिसत्त्वे परा, त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा।"**

इसवर्ष वैशा. शुक्लतृतीया दो दिन (1 और 2 मई, 2014 ई. को) दिन के पूर्वार्ध (पूर्वाह्ण) को व्याप्त कर रही है, अतः पूर्वोक्त प्रतिपादनानुसार **यह पर्व दूसरे ही दिन (2 मई, 2014 ई. को ही)** होगा, **क्योंकि इसदिन तृतीया त्रिमुहूर्त्त से अधिक भी है।** इसदिन रोहिणी नक्षत्र भी 11 घं. 18 मि. तक है, जिससे इसपर्व का माहात्म्य बढ़ जाता है।

(3) श्रीसत्यनारायण व्रत (आषाढ़ एवं आश्विन)

यह व्रत पंजाब आदि प्रान्तों में प्रत्येक मास की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। वैसे कोई भी व्यक्ति स्वेच्छया इस व्रत को अन्य किसी भी दिन, किसी भी प्रदोषव्यापिनी तिथि में कर सकता है– ऐसा भी पुराणवाक्य है। लेकिन पश्चिमोत्तर भारतीय प्रान्तों में इसे पूर्णिमा में ही करने की परम्परा है।

यह नक्तव्रत है। अतः इसकी तिथि का निर्णय भी नक्तव्रत के समान ही है। तदनुसार प्रदोषव्यापिनी तिथि में ही इसे करना होगा। दोनों दिन पूर्णिमा की प्रदोष में व्याप्ति एवं अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे दिन ही करने का विधान है। इस बारे **'कालमाधव'** का वाक्य है–

> **"प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।**
> **अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।"**

इसवर्ष आषाढ मास की पूर्णिमा केवल 11 जुलाई, 2014 को ही प्रदोषव्यापिनी है, [अतः इस मास का **सत्यनारायण व्रत 11 जुलाई, 2014 ई. को ही होगा।** इसदिन प्रदोषकाल लगभग 19 घं. 24 मि. से 21 घं. 26 मि. तक है। स्पष्ट है, इस समय आषाढ़पूर्णिमा विद्यमान है। दूसरे दिन (12 जुलाई को) तो पूर्णिमा प्रदोषप्रारम्भ से पहले ही समाप्त हो जाती है।

अपि च– आश्विन मास का **सत्यनारायण व्रत 7 अक्तू., 2014 ई. को करना होगा, क्योंकि यहां पूर्णिमा इसी दिन प्रदोष को व्याप्त करती है।**

दूसरे दिन (8 अक्तू. को) वह प्रदोषप्रारम्भ से पहले ही समाप्त हो जाती है। इन दिनों प्रदोषकाल लगभग 17 घं. 58 मि. से 20 घं. 27 मि. तक रहेगा।

(4) रक्षाबन्धन (श्राव. शु. 15)

रक्षाबन्धन भद्रारहित अपराह्ण में किया जाता है। इस वर्ष श्राव. पूर्णिमा, रविवार को (10 अगस्त, 2014 ई. के दिन) भद्रा 13 घं. 38 मि. तक है। स्पष्ट है– यहां रक्षाबन्धन का शास्त्रोक्त काल (अपराह्ण) भद्रा से सर्वथा मुक्त है। इस दिन पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू–काश्मीर, राजस्थान, हरियाणा आदि में अपराह्णकाल 13 घं. 47 मि. से 16 घं. 26 मि. तक रहेगा। **अतः यहां (10 अगस्त, 2014 ई. को) पूरा अपराह्णकाल (13 घं. 47 मि. से 16 घं. 26 मि. तक) भद्रामुक्त होने से रक्षाबन्धन के लिए शुभ है।**

(5) दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. कृष्ण एवं भाद्र. शुक्ल 8)

यह व्रत स्त्रियों द्वारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी को किया जाता है।

इस व्रत को **'रौहिण'** मुहूर्त (दिन के नवम मुहूर्त) में व्याप्त अष्टमी में करने का निर्देश है। रौहिण मुहूर्त के समय ज्येष्ठा और मूलनक्षत्र न हों– यह भी शास्त्रनिर्देश है। यदि ये नक्षत्र किसी स्थिति में वर्जित करने असम्भव हों तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है (अगस्त्य तारा वर्षा ऋतु के लगभग समाप्ति के दिनों में रात्रि के समय दक्षिण की ओर दिखाई देने लगता है)। कन्यार्क इस व्रत में सामान्यतः वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल में इस व्रत के अनुष्ठान को महत्त्व दिया गया है–

" शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वासंज्ञा तु साष्टमी। सिंहार्क एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन।। सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे।" –(*स्कन्द*)

यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाए (रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे) तो शास्त्रकारों का कहना है, कि– ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्ती ऐसे अन्य रौहिणव्यापिनी किसी भी कृष्ण या शुक्लपक्ष की अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो।

इसवर्ष (सं. 2071 वि. में) पंजाब, हि.प्र., जम्मू– काश्मीर, पश्चिमोत्तरी उ.खं., उत्तरी हरियाणा, पश्चिमोत्तरी उ.प्र. में रौहिणव्यापिनी भाद्र. शुक्ल अष्टमी, मंगलवार (2 सितं., 2014 ई.) के दिन अगस्त्य तारा लुप्त रहेगा, जिससे इन प्रदेशों में **इसवर्ष दूर्वाष्टमी व्रत 2 सितंबर, 2014 ई. को ही होगा।** लेकिन गणित बतलाती है, इन उपरोक्त प्रदेशों के अलावा उत्तर भारत के शेष दिल्ली, राजस्थान, द. हरियाणा, पूर्व– दक्षिणी उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, उत्तरी गुजरात, मध्यप्रदेश, एवं छत्तीसगढ़ के उत्तरार्ध, झारखण्ड, बिहार, प. बंगाल, मेघालय, आसाम, त्रिपुरा, सिक्किम, मिज़ोरम, नेपाल, मणिपुर, नागालैण्ड व अरुणाचल में भाद्र. शुक्ल अष्टमी (2 सितं., 2014 ई.) के दिन अगस्त्य उदित रहेगा। जिससे उपरोक्त नियमानुसार इन प्रदेशों में **इसवर्ष दूर्वाव्रत रौहिणव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी, रविवार (17 अगस्त, 2014 ई.) के दिन होगा, क्योंकि इसदिन इन प्रदेशों में सर्वत्र अगस्त्य लुप्त रहेगा।**

इस प्रतिपादन को हम इस प्रकार से भी स्पष्ट कर सकते हैं–

इसवर्ष दूर्वाष्टमी व्रत भारत के $30^\circ\frac{1}{2}$ से 37° अक्षांशीय भाग में भाद्र. शुक्ल अष्टमी, मंगलवार (2 सितं., 2014 ई.) को और $23^\circ\frac{1}{2}$ से $30^\circ\frac{1}{2}$ अक्षांशीय भाग में रौहिणव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी, रविवार (17 अगस्त, 2014 ई.) को होगा।

अब पाठक समझ गए होंगे– इसवर्ष हमने पंचांग में दूर्वाव्रत इन दो भिन्न–भिन्न तारीखों में क्यों दर्शाया है। (भारत के किन–किन अक्षांशों पर अगस्त्य कब–कब उदित एवं अस्त होता है ? इसके लिए मेरे **'व्रतपर्व विवेक'** का पृष्ठ 170 देखें)

(6) महानवमी (आश्वि. शु. 9)

आश्वि. शुक्ल नवमी के दिन महानवमी होती है। यह दो प्रकार की है– (1) पूजा एवं उपवासार्थ, (2) बलिदानार्थ। पूजा–उपवासार्थ

अष्टमीविद्धा नवमी और बलिदानार्थ दशमीविद्धा नवमी ली जाती है। **धर्मसिन्धु** का यह वाक्य है– " **महानवमी तु बलिदान–व्यतिरिक्तविषये पूजोपोषणादौ अष्टमीविद्धा ग्राह्या............। नवमीप्रयुक्त महाबलिदाने तु दशमीविद्धा।।**"

इसवर्ष 2 अक्तू., 2014 ई. को नवमी अष्टमीविद्धा और 3 अक्तू., 2014 ई. को दशमीविद्धा है। अतः निर्णयानुसार **इसवर्ष पूजा–उपवासार्थ महानवमी 2 अक्तूबर, 2014 ई. को और बलिदानार्थ महानवमी 3 अक्तूबर, 2014 ई. को होगी।**

(7) विजयादशमी (आश्वि. शुक्ल 10)

विजयादशमी अपराह्णव्यापिनी आश्वि. शुक्ल दशमी को मनाई जाती है। अपराह्णव्यापी श्रवण नक्षत्र भी अनेकत्र इस पर्व का निर्णायक/महत्त्वाधायक माना गया है। इस वर्ष केवल 3 अक्तूबर, 2014 ई. को ही दशमी अपराह्ण में विद्यमान है। अतः इसी दिन विजयादशमी मनाई जाएगी। श्रवण नक्षत्र तो इस वर्ष केवल 4 अक्तूबर, 2014 को ही अपराह्ण में वर्त्तमान है और इसदिन दशमी प्रातः 7 घं. 25 मि. पर ही समाप्त हो जाती है, यानी इसदिन यह अपराह्ण को स्पर्श नहीं करती। इस स्थिति में कुछ लोग "**उदये दशमी किञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि। श्रवणर्क्षे यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा।।**" इस **कश्यपवचन** के आधार पर 4 अक्तू., 2014 ई. को विजयादशमी सिद्ध तो कर रहे हैं। लेकिन उनका यह मत मीमांसकों को मान्य नहीं है। वे इस स्थिति में भी 3 अक्तू., 2014 ई. को ही विजयादशमी के पक्ष में हैं। **हमने भी उनके तर्कसंगत मतानुसार इसवर्ष यह पर्व 3 अक्तू., 2014 को ही लिखा है।**

[इस विषय में विशेष स्पष्टता के लिए पृष्ठ 18 पर "**इसवर्ष (सं. 2071 में) विजयादशमी कब ?**" लेख पढ़ें]

(8) भीष्मपंचक प्रारम्भ (कार्त्तिक शु. 10+11)

शास्त्रों में **भीष्मपंचक व्रत** का अनुष्ठान (जैसा कि '**पंचक**' शब्द से ही स्पष्ट है) केवल पांच दिन (कार्त्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) का ही लिखा है। "यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में कोई ⟶ तिथिक्षय हो जाने से एकादशी से पूर्णिमा तक की दिनसंख्या चार ही रह जाए तब दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (चतुर्दशी से अविद्ध) औदयिक पूर्णिमा के दिन, यदि पूर्णिमा का क्षय हुआ हो तो चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए । **तथा च**– यदि इन पांच तिथियों में से किसी एक की वृद्धि हो जाने से व्रत के दिन 6 बनते हों, तो शुद्ध (दशमी से अविद्ध) एकादशी के दिन प्रारम्भ करके चतुर्दशीविद्धा पूर्णिमा के दिन, यदि पूर्णिमा की वृद्धि हुई हो तो पहिली पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त करना चाहिए"– ऐसा धर्मशास्त्र का प्रतिपादन है। इस बारे में ***'धर्मसिन्धु'*** का वचन है,–

"एकादश्यादि–दिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च **शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक– पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारंभे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रतसमाप्तिर्न घटते, तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः। शुद्धैकादश्यामारम्भेऽपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापने यदि षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपूर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।**"

देखिए– इसवर्ष (सं. 2071 वि. में) कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी का क्षय हो जाने के कारण कार्त्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक की तिथिसंख्या (दिनसंख्या) केवल चार रह गई है। अतः पूर्वोद्धृत **'धर्मसिन्धु'** वाक्यानुसार **इसवर्ष 'भीष्मपंचक' का प्रारम्भ दशमीविद्धा एकादशी (2 नवंबर, 2014 ई.) से किया जाएगा।** जिससे पूर्णिमा तक **'भीष्मपंचक'** की दिनसंख्या पांच बन जाती है।

(9) पद्मक योग (मार्ग. कृष्ण 2)

विशाखा में सूर्य की स्थिति के समय जब चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में हो तब ' **पद्मक** 'नामक योग होता है। किसी भी तीर्थस्थान पर, विशेष कर **तीर्थराज पुष्कर** (राजस्थान) पर इस योग में स्नान–दान–जप का विशेष माहात्म्य माना गया है– " **विशाखास्थे सूर्ये सति यद्दिने चन्द्रनक्षत्रं कृत्तिका, तत्र पद्मकयोगः। अयं पुष्करेऽतिप्रशस्तः।।**"

– (धर्मसिन्धु)

इसवर्ष मार्ग. कृष्ण द्वितीया को (8 नवंबर, 2014 ई. के दिन) पुष्करयोग 14 घं. 30 मि. तक रहेगा। श्रद्धालुओं को इसका लाभ उठाना चाहिए।

(10) प्रदोषव्रत (फाल्गु. शुक्ल)

प्रदोषव्रत नक्तव्रत है, अतः इसे प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में किया जाता है, यदि त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो **"कालमाधव"** आदि के अनुसार यह व्रत दूसरे ही दिन किया जाएगा–

" प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिः दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।"–(कालमाधव)

इसवर्ष (सं. 2071 में) फाल्गु. शुक्ल त्रयोदशी 2 और 3 मार्च, 2015 ई.– दोनों दिन प्रदोष में विद्यमान है (इन दिनों प्रदोषकाल लगभग. 18 घं. 19 मि. से 20 घं. 30 मि. तक है)। यद्यपि दूसरे दिन 3 मार्च, 2015 ई. को त्रयोदशी प्रदोष को अपेक्षाकृत् काफी कम व्याप्त कर रही है, तथापि **" दिनद्वये वाथवांशेन व्याप्तिः "– निर्देशानुसार यहां इस वर्ष त्रयोदशी–प्रदोष व्रत 3 मार्च को ही किया जाएगा। अपि च–** इसदिन त्रयोदशी **'गौण प्रदोषकाल'** माने जाने वाले सायाह्न को तो पूर्णतया व्याप्त कर ही रही है।

कुम्भ महापर्व की पूर्व सूचना

आगामी वर्ष सं. 2072 वि. में भाद्र. अमा, रविवार (13 सितंबर, 2015 ई.) को **"नासिक कुम्भपर्व "** का योग बन रहा है। इस महापुण्य के दिन पुण्यसलिला गोदावरी में स्नान कर पुण्यसञ्चय एवं निर्वाण के इच्छुक श्रद्धालुओं को तदर्थ पहिले ही प्रस्तुत हो जाना चाहिए। इस पर्वराज के पुण्य–स्नानदिवसों का विस्तृत विवरण तथा ऐतत्सम्बद्ध सभी प्रकार की अन्य पूरी जानकारी विस्तारपूर्वक अगले वर्ष (सं. 2072 वि.) के पञ्चांग में दी जाएगी। **ध्यान रहे–** नासिक के कुम्भपर्व को **सिंहस्थ** पर्व भी कहा जाता है।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं। लेकिन अब प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफरीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* सोलन (हि.प्र.) निवासी चि. *श्रीकृष्णशर्मा, शास्त्री,* M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य, ; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा तथा *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) स्मार्त्तों और वैष्णवों के श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत की तिथि ?

–प्रियव्रत शर्मा

भारत में इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) भाद्र. कृष्ण अष्टमी 18 अगस्त, 2014 ई. को सूर्योदय के समीप ही 6 घं. 06 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर समप्त हो रही है, जिससे भारत में स्थानभेद से यह अष्टमी इसदिन कहीं सूर्योदय के कुछ मिनट बाद और कहीं कुछ मिनट पहले ही समाप्त होगी। जहां यह सूर्योदयानन्तर समाप्त होगी, वहां 18 अगस्त, 2014 ई. को यह (अष्टमी) नवमीयुता होगी। जिससे वैष्णव सम्प्रदाय वाले लोग वहां इसीदिन (18 अगस्त, 2014 ई. को ही) श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत करेंगे। क्योंकि इस सम्प्रदाय के अनुयायी अर्धरात्रिव्यापिनी एवं रोहिणीयुता अष्टमी को भी छोड़कर " *उदये चाष्टमी किञ्चित् सकला नवमी यदि। लभ्यते बुधसंयुक्ता प्राजापत्यर्क्षसंयुता।।*" और " वर्षशतेनापि लभ्यते वा न लभ्यते।"– 'स्कन्दपुराण' के इस वाक्यानुसार नवमीयुता अष्टमी को ही इसव्रत के लिए मान्यता देते हैं। स्मार्त्त लोग तो अर्धरात्रि(चन्द्रोदय)व्यापिनी अष्टमी के ही दिन यह व्रत रखते हैं।

इसवर्ष समस्त भारत में भाद्र. कृष्ण अष्टमी 17 अगस्त, 2014 को ही अर्धरात्रिव्यापिनी है। अतः इसवर्ष भारत में सर्वत्र स्मार्त्त सम्प्रदायानुयायी निरपवाद रूप से 17 अगस्त, 2014 ई. को ही जन्माष्टमी व्रत रखेंगे।

दाईं ओर दिया भारतमानचित्र देखिए– इसमें दर्शायी गई 'क–ख' रेखा से दाईं ओर सर्वत्र 18 अगस्त, 2014 ई. को सूर्योदय 6 घं. 06 मि. (भा. स्टैं. टा.) (अष्टमी की समाप्ति) से पहले ही हो जाएगा। अतः भारत के इस भाग में भाद्र. कृष्ण अष्टमी सूर्योदय से कुछ मिनट बाद ही समाप्त होगी, जिससे अष्टमी भारत के इस भाग में नवमीयुता होगी। परिणामस्वरूप, देश के इस भाग में वैष्णव लोग 15 अगस्त, 2014 ई. को यह व्रत करेंगे, लेकिन स्मार्त्त लोग तो अपनी परम्परा अनुसार यहां 17 अगस्त, 2014 ई. को ही (अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन) ही व्रत रखेंगे। इस रेखा से बाईं ओर वाले प्रदेशों में तो सूर्योदय 18 अगस्त को अष्टमी की समाप्ति [6 घं. 06 मि. (भा. स्टैं. टा.)] के बाद होगा। जिससे वहां अष्टमी नवमीयुता प्राप्त न होने से वैष्णव भी स्मार्तों के साथ ही यह व्रत 17 अगस्त, 2014 ई. को (अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन) ही करेंगे।

यह मानचित्र देखिए– इस रेखा से बाईं ओर स्थित प. राजस्थान, गुजरात, प. महाराष्ट्र, कर्णाटक, केरल, तामिलनाडु का पश्चिम–दक्षिणी भाग, प. आन्ध्रप्रदेश और मध्यप्रदेश के पश्चिमी छोर में स्मार्त्तों एवं वैष्णवों का श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत 17 अगस्त, 2014 ई. को एक ही दिन होगा। शेष भारत में (क–ख रेखा से दाईं ओर) स्मार्त्तों का व्रत 17 अगस्त और वैष्णवों का 18 अगस्त, 2014 ई. को होगा।

ध्यान दें– उपरोक्त विवेचन से पाठक यह भी समझ गए होंगे कि– जब तक हमारे व्रत–पर्वों की तिथियों के निर्णय का आधार स्थानीय सूर्य–चन्द्रोदयास्त तथा विभिन्न सम्प्रदाय हैं; तब तक इनका ऐकमत्य से निर्धारण सम्भव नहीं है।

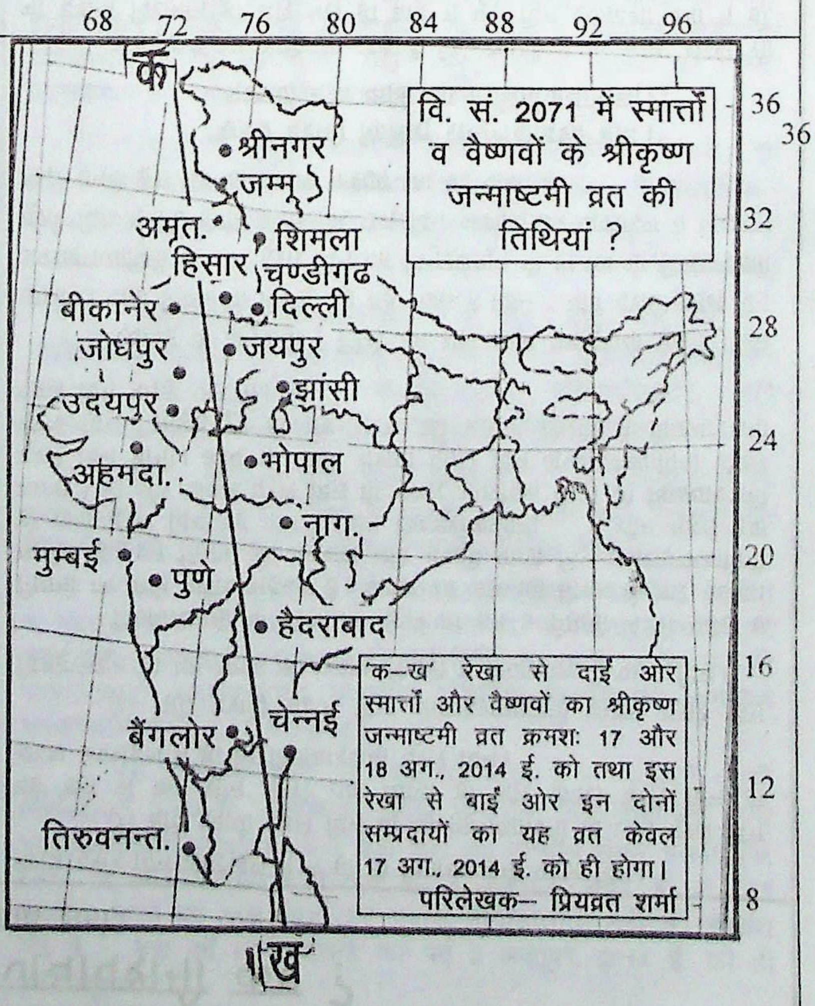

वि. सं. 2071 में स्मार्त्तों व वैष्णवों के श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत की तिथियां ?

'क–ख' रेखा से दाईं ओर स्मार्त्तों और वैष्णवों का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत क्रमशः 17 और 18 अग., 2014 ई. को तथा इस रेखा से बाईं ओर इन दोनों सम्प्रदायों का यह व्रत केवल 17 अग., 2014 ई. को ही होगा।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

सं. 2071 वि. में विजयादशमी कब ?

लेखक–प्रियव्रत शर्मा,

इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) विजयादशमी की तिथि के बारे में कुछ वैमत्य है, अतः इस विषय में धर्मशास्त्रीय विश्लेषण करना मैं आवश्यक समझता हूँ। विजयादशमी की तिथि के बारे में इस प्रकार का वैमत्य कुछ वर्षों के अंतराल पर घटित होता रहता है। अतः एतद्विषयक मेरे इस विमर्श को ध्यानपूर्वक समझ लेना चाहिए।

अपराह्णव्यापिनी आश्वि. शुक्ल दशमी के दिन **'विजयादशमी'** मनाई जाती है। अनेकत्र अपराह्ण में श्रवणनक्षत्र भी इसकी तिथि के निर्णय का प्रयोजक है। ' **विजयादशमी** ' को **'दशहरा'** भी कहा जाता है।

विजयादशमी का निर्णय श्रवण एवं दशमी की विभिन्न स्थितियों में इस प्रकार होगाः–

(1) केवल दूसरे ही दिन दशमी अपराह्णव्यापिनी हो तो विजयादशमी प्रत्येक स्थिति में दूसरे दिन।

(2) दोनों दिन दशमी अपराह्णव्याप्त हो और दोनों दिन इस समय श्रवणनक्षत्र विद्यमान या अविद्यमान हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(3) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में अविद्यमान हो और दोनों दिन श्रवण अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(4) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो और श्रवणनक्षत्र पहले ही दिन अपराह्ण में विद्यमान हो तो विजयादशमी पहिले दिन।

(5) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो और श्रवणनक्षत्र दूसरे ही दिन अपराह्ण में विद्यमान हो तो विजयादशमी दूसरे दिन।

(6) यदि केवल पहले ही दिन दशमी अपराह्ण में हो और श्रवण नक्षत्र दूसरे दिन अपराह्ण में न हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(7) यदि दशमी पहले दिन ही अपराह्णव्यापिनी हो तथा दूसरे दिन वह कम से कम तीन मुहूर्त्त तक व्याप्त हो और केवल दूसरे दिन ही श्रवण अपराह्ण में हो तो विजयादशमी दूसरे दिन।

(8) यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी होकर दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तन्यून हो तब श्रवण की प्रत्येक स्थिति में विजयादशमी पहले दिन।

विजयादशमी के निर्णायक उपरोक्त इन 8 नियमों में से पहले 6 नियमों पर सभी पूर्णतः सहमत हैं। केवल 7वें और 8वें नियम के बारे में यहां मतभेद है। इन नियमों के अनुसार यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी हो तथा दूसरे दिन वह कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी (तीन मुहूर्त्त तक व्याप्त) हो और केवल दूसरे दिन ही श्रवण अपराह्ण में हो तो **विजयादशमी** दूसरे दिन होगी। **अपि च**– यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी होकर दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तन्यून हो तब श्रवण की प्रत्येक स्थिति में **विजयादशमी** पहले दिन मनाई जाएगी।

एकपक्ष के अनुयायी (जिन्हें हम यहां प्रथम पक्षानुयायी कहेंगे) इन उपरोक्त दोनों नियमों के विरुद्ध यह मत रखते हैं कि– " यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी हो और दूसरे दिन वह त्रिमुहूर्त्तन्यून भी हो तब भी विजयादशमी दूसरे दिन मनानी होगी, बशर्ते कि, उस दिन श्रवण नक्षत्र अपराह्ण में विद्यमान हो।" उनके इस मत का आधार **'कश्यप'** का यह वाक्य है–

"उदये दशभी किंचित् सम्पूर्णैकादशी यदि।
श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा।।"

इसका वे यह अभिप्राय लेते हैं कि– सूर्योदय के समय थोड़ी सी भी दशमी विद्यमान हो और भले ही बाद में पूरा दिन एकादशी क्यों न हो, यदि वहां अपराह्ण में श्रवण नक्षत्र विद्यमान है तब **विजयादशमी** का पर्व उसी दिन मनाया जाए।

यहां द्वितीय पक्षानुयायियों का स्पष्टीकरण है कि– इस वाक्य में प्रयुक्त ' **किञ्चित्** ' शब्द का शब्दार्थ नहीं लेना चाहिए। यह शब्द सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्तव्याप्ति की प्रशंसा में लिखा गया है। जब कभी किसी महत्त्वपूर्ण पदार्थ की हम प्रशंसा करते हैं, तब उसके छोटे से भाग को भी प्रकारान्तर से हम बहुत बड़ा महत्त्व देने लग जाते हैं। ⊗

ध्यान दें–इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) आश्वि. शुक्ल, दशमी 4 अक्तूबर, 2014 ई. को सूर्योदयानन्तर 7 घं. 25 मि. (भा.स्टै.टा.) तक (लगभग एक मुहूर्त्तमात्र) ही विद्यमान है और इस दिन अपराह्ण में श्रवण नक्षत्र भी है। इस स्थिति में पूर्व पक्षानुयायियों के अनुसार **विजयादशमी** 4 अक्तूबर को ही होनी चाहिए। लेकिन द्वितीय पक्षानुयायियों के अनुसार दशमी की त्रिमुहूर्त्तव्याप्ति के बिना 4 अक्तूबर को अपराह्ण में दशमी तिथि का अस्तित्व नहीं होगा। क्योंकि, त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी तिथि **'साकल्यापादिता'** तिथि मानी गई है,✱ अतः धर्मशास्त्रकारों ने प्रथम पक्षानुयायियों के मत को निरस्त करते हुए इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) **'विजयादशमी'** का पर्व 3 अक्तूबर, 2014 ई. को ही निर्धारित किया है। इस (द्वितीय) पक्ष की पुष्टि में **'कालमाधव'** कार का यह वाक्य ध्यान देने योग्य है कि– सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी तिथि ही साकल्यापादिता होती है और उसी के आधार पर दान, व्रत आदि का निर्णय होना चाहिए। सूर्योदयकाल को स्पर्शमात्र करने वाली अथवा सूर्योदयानन्तर घटिकामात्र–वर्तिनी तिथि तो यहां त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी तिथि की केवल प्रशंसकमात्र है। वह साकल्यापादिता नहीं होती–

" सूर्योदये मुहूर्त्तत्रयव्यापिनी तिथिः दान–व्रतयोः ग्रहीतव्या। एवं सति उदयमात्रव्याप्तिशास्त्रं घटिकामात्रव्याप्तिशास्त्रञ्च वैश्वानराधिक–रणन्यायेनावयवस्तुत्याऽनुवादरुपतया त्रिमुहूर्त्तव्याप्तिं प्रशंसन्ति।"

– (*कालमाधव*)

वीरमित्रोदय–समयप्रकाश ' में भी यही समर्थित है– **'आदित्योदय–वेलायाः या स्तोकापि तिथिर्भवेत्।'– " इत्यादीनि त्रिमुहूर्त्त–न्यूनाया अपि सम्पूर्णत्व(साकल्यापादकत्व)प्रतिपादिकानि तानि अष्टाकपाल–आग्नेयाधिकरण–न्यायेन त्रिमुहूर्त्तव्याप्तिस्तावकानि।"**

किञ्च– देखिए– **"उदये दशमी किञ्चित्** ....." की व्याख्या करते हुए **'धर्मसिन्धुकार'** ने तो स्पष्ट लिखा है कि–ये सभी वाक्य यहां सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी दशमी तिथि को ही साकल्यापादिता सिद्ध करते हैं–

"यदा तु पूर्वदिन एव अपराह्णव्यापिनी दशमी परदिने च मुहूर्त्तत्रयादिव्यापिनी अपराह्णात्पूर्वमेव समाप्ता, परत्रैव च श्रवणयोगवती तदा परैव। अपराह्णे दशम्यभावेऽपि 'यां तिथिं समनुप्राप्य ......'– इत्यादि साकल्यवचनैः श्रवणयुक्तायाः ग्राह्याया औदयिक–स्वल्पदशम्याः कर्मकाले सत्त्वापादानात्।" – (*धर्मसिन्धु*)

इस उपरोक्त विमर्श से स्पष्ट हो जाता है – " उदये दशमी किंचित्....." वाक्य में ' **किञ्चित्** ' शब्द मीमांसया त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी तिथि का ही अभिप्राय रखता है। अतः इस शब्द का वाच्यार्थ लेकर इसवर्ष (सं. 2071 वि. में) **'विजयादशमी'** पर्व को 4 अक्तूबर, 2014 ई. के दिन स्थापित करने का कुछ लोगों का प्रयास मीमांसासंगत नहीं है। **सारांश यह है – इस वर्ष विजयादशमी का पर्व 3 अक्तूबर, 2014 ई. को ही शास्त्रानुमत है।**

⊗ *देखिए– सत्संगति को महापाप–निवारक एवं महापुण्यप्रद माना गया है। इसकी प्रशंसा में ' तुलसीदास जी ' का यह वाक्य यहां चरितार्थ होता है–*

"एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुन आध।
तुलसी संगत साध की कटे कोटि अपराध।।"

देखिए– तुलसीदास के इस वचन से हम यह अर्थ कदापि नहीं ले सकते कि– सत्संगति का एक पलमात्र करोड़ों पापों का वस्तुतःनिवारक है। यहां तुलसीदास का यह कथन सत्संगति का भारी माहात्म्यमात्र बतलाता है।

✱ *पाठकों को जान लेना चाहिए कि–तिथि दो प्रकार की होती है– गणितागता और साकल्यापादिता। सूर्य और चन्द्र के अन्तर से गणित द्वारा प्राप्त तिथि, जो पंचांगों में दी रहती है, वह गणितागता है। इसे वास्तव तिथि भी कहते हैं। सूर्योदयानंतर कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्याप्ता तिथि ही साकल्यपादिता तिथि मानी जाती है। यह केवल काल्पनिक तिथि है, जो उस काल में भी विद्यमान मानी जाती है, जहां गणितागत तिथि नहीं होती। 'व्रत–पर्व–निर्णय' में इसका प्रयोग अनेकत्र होता है।*

इसवर्ष (सं. 2071 वि.में) भारत में क्षेत्रभेदसे दो दुर्गेश एवं दो धनेश

(लेखक – प्रियव्रत शर्मा)

भारतीय ज्योतिषानुसार वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदय से मानी गई है, अतः इससे यह स्पष्ट है, प्रतिवर्ष प्रत्येक वर्षाधिकारी भूगोल पर अनिवार्यतः दो–दो हुआ करते हैं। क्योंकि एक ही काल (क्षण) में भूगोल के एक अर्ध में एक वार और दूसरे अर्ध में दूसरा वार विद्यमान रहता है।

वारों के आरम्भ का स्थानीय सूर्योदय से सम्बन्ध होने के कारण इन वारों पर आश्रित ये वर्षाधिकारी अनेकदा एक ही देश/प्रदेश एवं नगर/ग्राम में भी सूर्योदयकाल की भिन्नता के कारण किसी भी वर्ष दो–दो हो जाते हैं। इस प्रकार की स्थिति सामान्यतः दो–तीन वर्षों में घटित होती रहती है। यह स्थिति तब पैदा होती है, जब वर्षाधिकारी से सम्बद्ध संक्रान्ति आदि देशीय, प्रदेशीय या नगरीय सूर्योदयकाल के आसन्न घटित हो रही हो। ऐसी स्थिति भारत में दो–चार वर्षों में घटित हो ही जाती है, जिससे उस वर्ष के एक या अधिक अधिकारी पूर्व–पश्चिम क्षेत्रभेद से दो–दो बन जाते हैं।

इसवर्ष (सं. 2071 वि. मे) भारत में दुर्गेश (सिंहसंक्रान्ति–वारेश) और धनेश (कन्यासंक्रान्ति–वारेश) –दोनों दो–दो हैं, जिनका देश के दो–दो भिन्न क्षेत्रों पर आधिपत्य होगा। इन वर्षाधिकारियों द्वारा इसवर्ष शासित होने वाले भिन्न–भिन्न भारतीय क्षेत्रों का स्पष्टीकरण हम यहां कर रहे हैं। सामने दिए गए भारतचित्र [चित्र (1)] द्वारा दो दुर्गेशों का आधिपत्य इस प्रकार स्पष्ट किया जा रहा है–

दो दुर्गेश

सामने दिए गए चित्र (1) में दी गई 'क–ख' रेखा से दाएं स्थित भारतीय क्षेत्र में इसवर्ष दुर्गेश रवि और बाएं स्थित क्षेत्र में दुर्गेश शनि होगा। क्योंकि इसवर्ष सिंहसंक्रान्ति–कालिक वार, जिसका स्वामी दुर्गेश माना गया है, इस रेखा से दाईं ओर रवि और बाईं ओर शनि होगा।

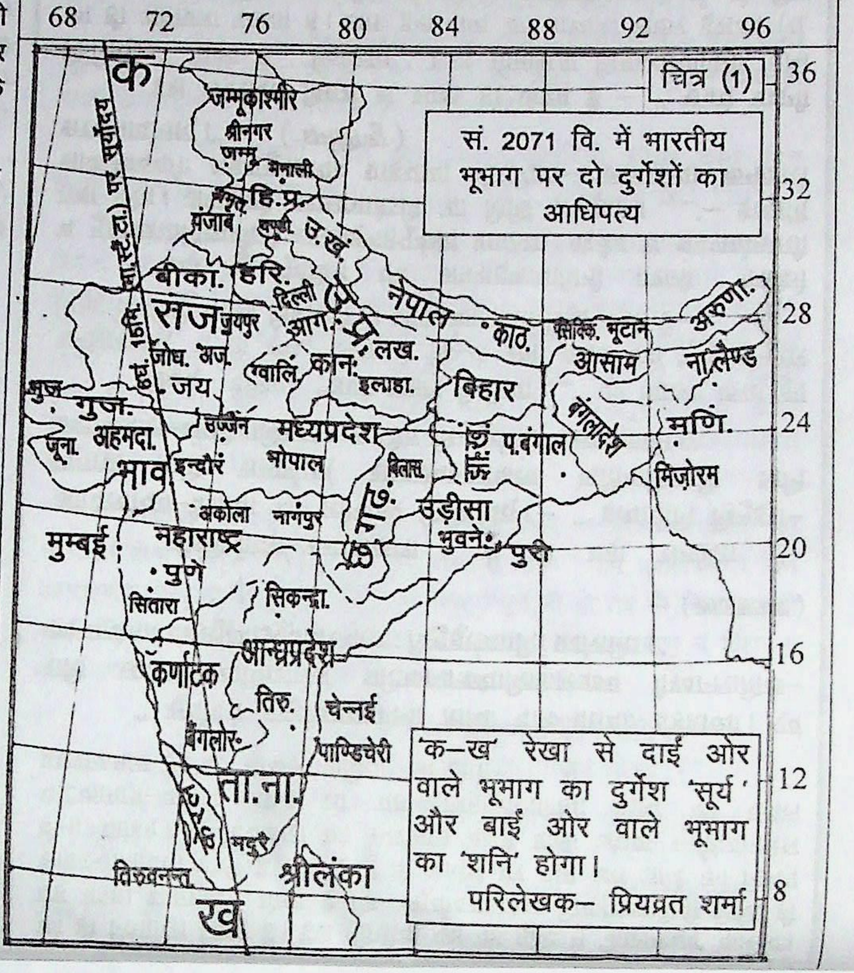
68
72
76
80
84
88
92
96
36
32
28
24
20
16
12
8
क
ख
छं. 16मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्योदय
जम्मूकाश्मीर
श्रीनगर
जम्मू
मनाली
अमृत.
हि.प्र.
पंजाब
चण्डी.
उ.खं.
बीका.
हरि.
दिल्ली
उ.प्र.
नेपाल
काठ.
सिक्कि.
भूटान
अरुणा.
राज
जयपुर
आग.
लख.
आसाम
नागालैण्ड
जोध.
अज.
ग्वालि.
कान.
इलाहा.
बिहार
भुज
गुज.
जय.
बंगलादेश
मणि.
उज्जैन
मध्यप्रदेश
जूना.
अहमदा.
झा.
प.बंगाल
भाव
इन्दौरं
भोपाल
बिलास.
मिज़ोरम
अकोला
नागंपुर
छ.ग.
उड़ीसा
मुम्बई
महाराष्ट्र
भुवने.
पुरी
पुणे
सितारा
सिकन्द्रा.
आन्ध्रप्रदेश
कर्णाटक
तिरु.
चेन्नई
बैंगलोर
पाण्डिचेरी
ता.ना.
केरल
मदुरै
तिरुवनन्त.
श्रीलंका

चित्र (1)

सं. 2071 वि. में भारतीय भूभाग पर दो दुर्गेशों का आधिपत्य

'क–ख' रेखा से दाईं ओर वाले भूभाग का दुर्गेश 'सूर्य' और बाईं ओर वाले भूभाग का 'शनि' होगा।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

दो धनेश

सामने दिए चित्र (2) में दी गई 'क–ख' रेखा से दाएं स्थित भारतीय क्षेत्र में इसवर्ष धनेश बुध और बाएं स्थित क्षेत्र में मंगल होगा। क्योंकि इसवर्ष कन्यासंक्रान्ति–कालिक वार, जिसका स्वामी धनेश माना जाता है, इस रेखा से दाईं ओर बुध और बाईं ओर मंगल होगा।

यहां पाठकजन यह भी समझ लें कि– वर्ष के इन दस (राजा, मन्त्री आदि) अधिकारी ग्रहों का निर्णय वारेश से इस प्रकार किया जाता है–

राजा :–	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का वारेश।
मन्त्री :–	मेषसंक्रान्ति–वारेश।
सस्येश :–	कर्कसंक्रान्ति–वारेश।
दुर्गेश :–	सिंहसंक्रान्ति–वारेश।
धनेश :–	कन्यासंक्रान्ति–वारेश।
रसेश :–	तुलासंक्रान्ति–वारेश।
धान्येश :–	धनुसंक्रान्ति–वारेश।
नीरसेश :–	मकरसंक्रान्ति–वारेश।
फलेश :–	मीनसंक्रान्ति–वारेश।
मेघेश :–	सूर्य द्वारा आर्द्रानक्षत्रप्रवेश–कालिक वार का स्वामी।

इस प्रकार स्पष्ट है, इन दस वर्षाधिकारियों का वारेश से साक्षात् सम्बन्ध है।

प्रसंगवश यह भी जान लीजिए–

प्राचीनकाल में भारतीय पंचांगकार अपने स्थानीय संक्रान्ति आदि के वारानुसार ही वार्षिक फलादेश अपने पंचांगों में दिया करते थे। स्थानीय वारभेद से उत्पन्न वर्षेश आदि के फलादेश की ओर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। अपने स्थानीय अक्षांश, रेखांशों पर निर्णीत वर्षराजा, वर्ष–मन्त्री आदि

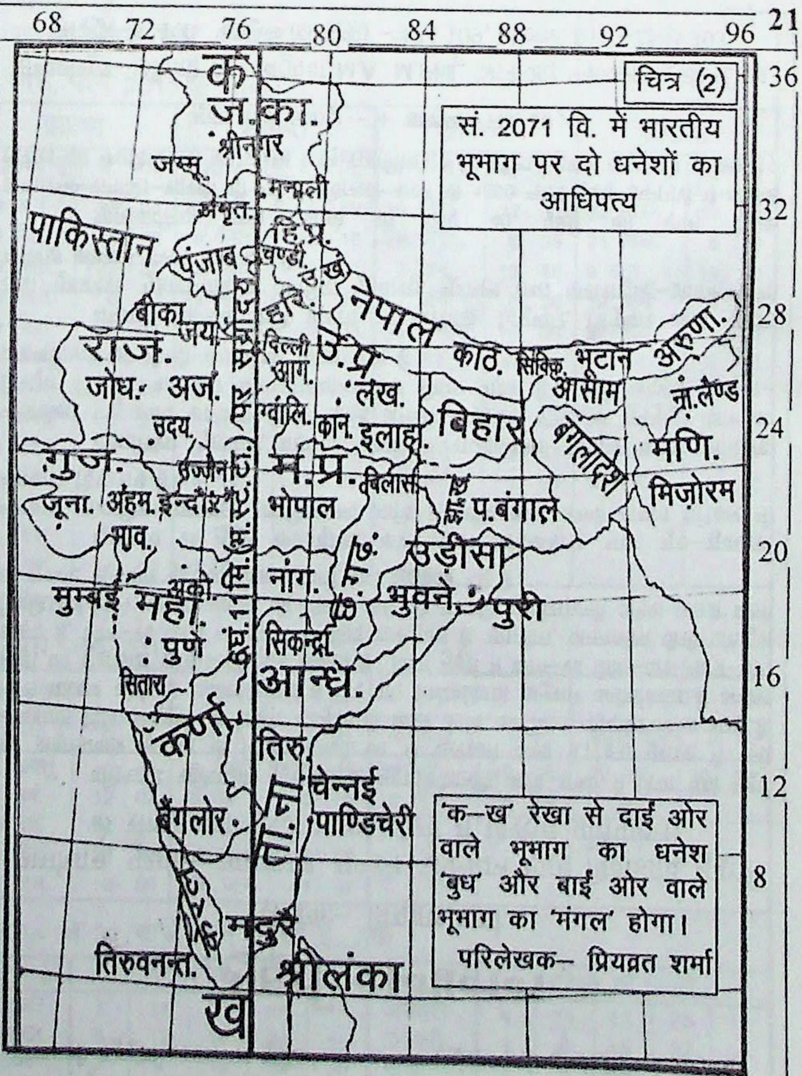
68
72
76
80
84
88
92
96
36
32
28
24
20
16
12
8
क
ज.का.
श्रीनगर
जम्मू
मनाली
अमृत.
पाकिस्तान
हि.प्र.
पंजाब
चण्डी.
उ.ख.
हरि.
नेपाल
बीका.
जय.
दिल्ली
उ.प्र.
राज.
जोध.
अज.
आग.
लख.
काठ.
सिक्कि.
भूटान
अरुणा.
आसाम
ना.लैण्ड
उदय.
ग्वालि.
कान.
इलाह.
बिहार
बंगलादेश
मणि.
गुज.
उज्जैन
म.प्र.
बिलास.
मिज़ोरम
जूना.
अहम.
इन्दौर
भोपाल
प.बंगाल
भाव.
उड़ीसा
मुम्बई
महा.
अको.
नांग.
छ.ग.
भुवने.
पुरी
पुणे
सिकन्द्रा.
सितारा
आन्ध्र.
कर्णा.
तिरु.
चेन्नई
बैंगलोर.
पाण्डिचेरी
ता.ना.
केरल
मदुरै
तिरुवनन्त.
श्रीलंका
ख

चित्र (2)

सं. 2071 वि. में भारतीय भूभाग पर दो धनेशों का आधिपत्य

'क–ख' रेखा से दाईं ओर वाले भूभाग का धनेश 'बुध' और बाईं ओर वाले भूभाग का 'मंगल' होगा।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

के फलादेश को ही वे प्रकारान्तरेण अखिल भारतीय के रूप में प्रचारित करते थे, जो सिद्धान्तदृष्ट्या गलत था। लेकिन स्थानीय वारानुसार निर्णीत विभिन्न क्षेत्रानुसारी वर्षेशादि के परस्पर विरुद्ध फलादेशों का क्षेत्रभेद से विभाजन भी तो एक टेढ़ी खीर है। एक ही देश, प्रदेश, नगर में वारभेद के कारण दो–दो वर्षाधिकारियों के परस्पर असम्बद्ध अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सुवृष्टि, भूकम्प, देशोपद्रव, शासनक्रान्ति, देशस्वास्थ्य, महामारी आदि फलादेशों का विभाजन पंचांगकार किस प्रकार करते हैं ? इसका कोई उत्तर नहीं है। हमारी संहिताएं भी इस विषय में मूक हैं। **अपि च**– भारतीय पंचांगकारों द्वारा **'वार्षिक फल'** प्रसंग में दस वर्षाधिकारियों के अलावा, संवत्सरवाहन, संवत्सरपुरुष, वर्षादि–विश्वामान, जलादि चार स्तम्भ, चार आर्षमान, संवत्सर–वास, रोहिणीवास, चतुर्मेघ, नवमेघ, अष्टनाग, सप्तवायु, शनिदृष्टि, जगत्लग्नकुण्डली आदि–आदि के आधार पर पंचांगों में दिए जाने वाले परस्पर असमन्वयी, विरुद्ध फलादेशों का क्या कोई समन्वयप्रकार है ? सभी पंचांगकार इन्हें प्रतिवर्ष पृथक्–पृथक् परस्पर निरपेक्षरूपेण केवल उद्धृत कर देते हैं। अन्ततः इन सबका समुदित (संकलित) वार्षिक फल कैसे जाना जाए ? यह सचमुच एक उलझी समस्या है।

क्या आपको मालूम है कि **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** संक्षिप्तरूप में **"श्री बटुक पञ्चांग"** के नाम से प्रकाशित होता है ? **"श्री बटुक पञ्चांग"** पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, संदिग्ध व्रत-पर्व आदि, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है ।

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित
साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

मुहूर्त्त गजानन

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सी तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि 57 दोष तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, ग्रहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक बीसों मौलिक कोष्ठक इसमें दिए गए हैं।

मुहूर्त्तकालिक लग्न जानने के लिए 40 पृष्ठों की एवम् दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति–सारणी दी गई है, जिससे भारत के 1000 नगर एवम् उपनगरों में अभीष्ट तारीख को मेषादि लग्नों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) तुरन्त जाना जा सकता है।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59,
सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2014 से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2014 ई.	घं.	मि	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014–15 ई.	घं.	मि.	2014–15 ई	घं.	मि.
— — —	—	—	1 जन.	11	08	27 अप्रै.	10	02	29 अप्रै.	9	05	24 अग.	0	01	26 अग.	5	59	20 दिसं.	22	11	22 दिसं.	19	14
7 जन.	20	20	9 जन.	21	55	6 मई	21	04	9 मई	2	38	2 सितं.	18	08	4 सितं.	16	16	29 दिसं.	6	35	31 दिसं.	5	38
17 जन.	16	09	19 जन.	21	38	16 मई	5	26	18 मई	1	58	10 सितं.	22	31	12 सितं.	19	31	7 जन.	13	46	9 जन.	19	28
27 जन.	2	54	28 जन.	22	25	24 मई	16	25	26 मई	16	24	20 सितं.	6	22	22 सितं.	12	19	17 जन.	8	36	19 जन.	5	51
4 फर.	4	49	6 फर.	4	57	3 जून	4	51	5 जून	10	43	29 सितं.	23	54	1 अक्तू.	23	03	25 जन.	12	59	27 जन.	11	10
13 फर.	22	22	16 फर.	3	35	12 जून	14	55	14 जून	10	32	8 अक्तू.	9	10	10 अक्तू.	5	48	3 फर.	20	31	6 फर.	2	16
23 फर.	10	30	25 फर.	7	38	20 जून	21	48	22 जून	22	09	17 अक्तू.	13	36	19 अक्तू.	19	34	13 फर.	17	57	15 फर.	16	30
3 मार्च	15	11	5 मार्च	13	59	30 जून	11	50	2 जुला.	17	52	27 अक्तू.	5	29	29 अक्तू.	4	27	21 फर.	22	02	23 फर.	18	34
13 मार्च	5	17	15 मार्च	10	22	10 जुला.	1	10	11 जुला.	20	48	4 नवं.	18	24	6 नवं.	15	44	3 मार्च	2	33	5 मार्च	8	29
22 मार्च	16	06	24 मार्च	14	10	18 जुला.	4	01	20 जुला.	3	42	13 नवं.	21	41	16 नवं.	3	38	13 मार्च	1	09	15 मार्च	1	12
31 मार्च	1	30	1 अप्रै.	23	56	27 जुला.	18	04	30 जुला.	0	06	23 नवं.	12	44	25 नवं.	10	38	— —	—	—	— —	—	—
9 अप्रै.	13	00	11 अप्रै.	18	15	6 अग.	10	37	8 अग.	7	15	2 दिसं.	1	14	3 दिसं.	23	44						
18 अप्रै.	21	52	20 अप्रै.	19	33	14 अग.	12	19	16 अग.	10	36	11 दिसं.	6	00	13 दिसं.	11	50						

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2014 से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014 ई.	घं.	मि.	2014–15 ई.	घं.	मि.	2014–15 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.
4 जन.	12	48	8 जन.	20	46	21 मई	7	45	25 मई	16	14	5 अक्तू.	5	13	9 अक्तू.	7	15	18 फर.	19	58	22 फर.	20	00
31 जन.	23	48	5 फर.	4	28	17 जून	14	06	21 जून	21	44	1 नवं.	12	07	5 नवं.	16	56	18 मार्च	6	59	—	—	
28 फर.	10	52	4 मार्च	14	12	14 जुला.	22	40	19 जुला.	3	31	28 नवं.	17	30	3 दिसं.	0	22						
27 मार्च	19	53	1 अप्रै.	0	26	11 अग.	9	05	15 अग.	11	05	25 दिसं.	23	49	30 दिसं.	5	55						
24 अप्रै.	2	22	28 अप्रै.	9	22	7 सितं.	19	53	11 सितं.	20	42	22 जन.	8	50	26 जन.	11	47						

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2014 से 31 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

2014 ई.	रविवार की तारीखें					2014 ई.	रविवार की तारीखें					2014 ई.	रविवार की तारीखें					2015 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	—	मई	4	11	18	25	—	सितंबर	7	14	21	28	—	जनवरी	4	11	18	25	—
फरवरी	2	9	16	23	—	जून	1	8	15	22	29	अक्तूबर	5	12	19	26	—	फरवरी	1	8	15	22	—
मार्च	2	9	16	23	30	जुलाई	6	13	20	27	—	नवंबर	2	9	16	23	30	मार्च	1	8	15	22	29
अप्रैल	6	13	20	27	—	अगस्त	3	10	17	24	31	दिसंबर	7	14	21	28	—						

ग्रहण-विवरण (सं. 2071 वि.)

–प्रियव्रत शर्मा,

वि. सं. 2071 (31 मार्च, 2014 से 20 मार्च, 2015 ई. तक की अवधि) में निम्नांकित पांच ग्रहण भूमण्डल पर दिखाई पड़ेंगे–

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (15 अप्रैल, 2014 ई.)
(ii) कंकण सूर्यग्रहण (29 अप्रैल, 2014 ई.)
(iii) **खग्रास चन्द्रग्रहण (8 अक्तूबर, 2014 ई.)**
(iv) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (24 अक्तूबर, 2014 ई.)
(v) खग्रास सूर्यग्रहण (20 मार्च, 2015 ई.)

इन ग्रहणों में से केवल 8 अक्तूबर, 2014 ई. वाला चन्द्रग्रहण ही भारत में सायं ग्रस्तोदय दिखाई देगा। शेष चारों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं पड़ेंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (15 अप्रैल, 2014 ई.)–

यह चन्द्रग्रहण चैत्र पूर्णिमा, मंगलवार को 15 अप्रैल, 2014 ई. के दिन भा.स्टैं.टा. अनुसार 11 घं. 28 मि. से 15 घं. 03 मि. के मध्य विश्व के विभिन्न देशों (ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, जापान, स्पेन, अफ्रीका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, कनाडा, अलास्का, ग्रीनलैण्ड आदि) में दिखाई देगा। **इसके स्पर्शादि काल भा.स्टैं.टा. अनुसार इस प्रकार हैं–**

	घं.	मि.
स्पर्श	11	28
खग्रास–आरम्भ	12	36
ग्रहण–मध्य	13	15
खग्रास–समाप्त	13	55
मोक्ष	15	03

स्पष्ट है, इस ग्रहण के समय भारत में सर्वत्र दिन ही होगा।

(2) कंकण सूर्यग्रहण (29 अप्रैल, 2014 ई.) –

यह सूर्य ग्रहण वैशाखी अमा, मंगलवार के दिन 29 अप्रैल, 2014 ई. को ऑस्ट्रेलिया, उत्तर–पश्चिमी एण्टार्क्टिका एवम् हिन्द महासागर में दिखाई पड़ेगा। भूमण्डल पर भा.स्टै.टा. अनुसार यह ग्रहण 9 घं. 22 मि. पर प्रारम्भ होकर 13 घं. 44 मि. पर समाप्त होगा। इसकी कंकणाकृति उ. एण्टार्क्टिका में 11 घं. 28 मि. से 11 घं. 38 मि. तक देखी जा सकेगी। भूगोल पर इस ग्रहण के घटनास्थल, स्पर्शकाल आदि के लिए पृ. **29** पर चित्र (1) देखें।

(3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (24 अक्तू, 2014 ई.) –

यह ग्रहण कार्तिक अमा, शुक्रवार के दिन 24 अक्तूबर, 2014 ई. को अमेरिका, कनाडा, अलास्का, ग्रीनलैण्ड तथा प्रशान्त महासागर में भा.स्टैं.टा. अनुसार 1 घं. 07 मि. से 5 घं. 21 मि. तक खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा। भूगोल पर इस ग्रहण के घटनास्थल, स्पर्शकाल आदि के लिए **29** पृ. पर चित्र (2) देखें।

(4) खग्रास सूर्यग्रहण (20 मार्च, 2015 ई.) –

यह ग्रहण चैत्री अमा, शुक्रवार को 20 मार्च, 2015 ई. के दिन उत्तरी अफ्रीका, समस्त यूरोप, मंगोलिया, रूस व चाइना में दीखेगा। इसकी खग्रासाकृति ग्रीनलैण्ड के पूर्व एवम् दक्षिण में आर्कटिक महासागर में देखी जा सकेगी। यह ग्रहण भूमण्डल पर भा.स्टैं.टा. अनुसार 13 घं. 11 मि. से 17 घं. 20 मि. तक उपरोक्त देशों में दिखाई पड़ेगा। **इसके भूमण्डल पर स्पर्श आदि काल भा.स्टैं.टा. में इस प्रकार हैं–**

	घं.	मि.
स्पर्श	13	11
खग्रास–आरम्भ	14	39
ग्रहण–मध्य	15	15
खग्रास–समाप्त	15	51
मोक्ष	17	20

भूगोल पर इस ग्रहण के घटनास्थल, स्पर्शकाल आदि के लिए पृ. **29** पर चित्र (3) देखें।

भारत में दृश्य चन्द्रग्रहण का विस्तृत विवरण–

इस वि. संवत् (2071) में 8 अक्तूबर, 2014 ई. वाला चन्द्रग्रहण ही भारत में दीखेगा। यह ग्रहण आश्विन पूर्णिमा, बुधवार को पश्चिमी भाग को छोड़कर शेष सम्पूर्ण भारत, म्यांमार, चीन, रूस, मंगोलिया, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, सिंगापुर, हांगकांग, फिलिपीन्स, ऑस्ट्रेलिया में ग्रस्तोदय तथा द. अमेरिका, उ. अमेरिका, कनाडा, ग्रीनलैण्ड में ग्रस्तास्त के रूप में दिखाई देगा। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, टर्की, सीरिया, अफ्रीका एवम् यूरोपीय देशों में यह ग्रहण बिल्कुल नहीं दीखेगा। इसके स्पर्श आदि काल (भा.स्टै.टा.) अनुसार इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.
स्पर्श	14	45
खग्रास–आरम्भ	15	55
ग्रहण–मध्य	16	24
खग्रास–समाप्त	16	54
मोक्ष	18	04

8 अक्तूबर, 2014 ई.
(भा.स्टैं.टा.)

	घं.	मि.
पर्वकाल =	3	19

यह ग्रहण पश्चिमी जम्मू–काश्मीर, पंजाब के पश्चिमी भाग, लगभग पूरे राजस्थान, सम्पूर्ण गुजरात, पश्चिमी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के पश्चिमार्ध, कर्नाटक के अधिकतर भाग तथा पूरे केरल को छोड़कर शेष पूरे भारत में सायंकाल के समय ग्रस्तोदय होगा। अरुणाचल, पूर्वी आसाम और नागालैण्ड (जहां चन्द्रमा पूर्ण ग्रस्त उदित होगा) को छोड़कर शेष भारतीय प्रान्तों में चन्द्रमा खण्डग्रास के रूप में ही उदित होगा। स्पष्टता के लिए सामने दिया भारत–मानचित्र(नक्शा) देखिए। इस चित्र में अंकित 'क–ख' रेखा से दाईं ओर स्थित भारतीय प्रदेशों में ही यह ग्रहण दृश्य होगा। 'क–ख' और 'च–छ' रेखाओं के मध्यवर्ती प्रदेशों में चन्द्रमा खण्डग्रासरूप में और 'च–छ' रेखा से दाईं ओर खगास के रूप में उदित होगा। 'क–ख' रेखा पर स्थित नगर–ग्रामों में चन्द्रोदय 18 घं. 04 मि. पर होगा और इसी समय ग्रहण समाप्त हो जाएगा। स्पष्ट है– जो नगर–ग्राम इस 'क–ख' रेखा से दाईं ओर जितना अधिक हटा होगा, वहां ग्रहण का ग्रास उतना ही अधिक दीखेगा। इस प्रकार इस रेखा के पार्श्वस्थ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान आदि के नगरों में यह ग्रहण अत्यल्प काल के लिए अत्यल्प ग्रास के रूप में ही दीख पड़ेगा। अनेक स्थलों पर तो यह वहां दृष्टिग्राह्य भी नहीं होगा। 'च–छ' रेखा से बाईं ओर के

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (8 अक्तूबर, 2014 ई.)

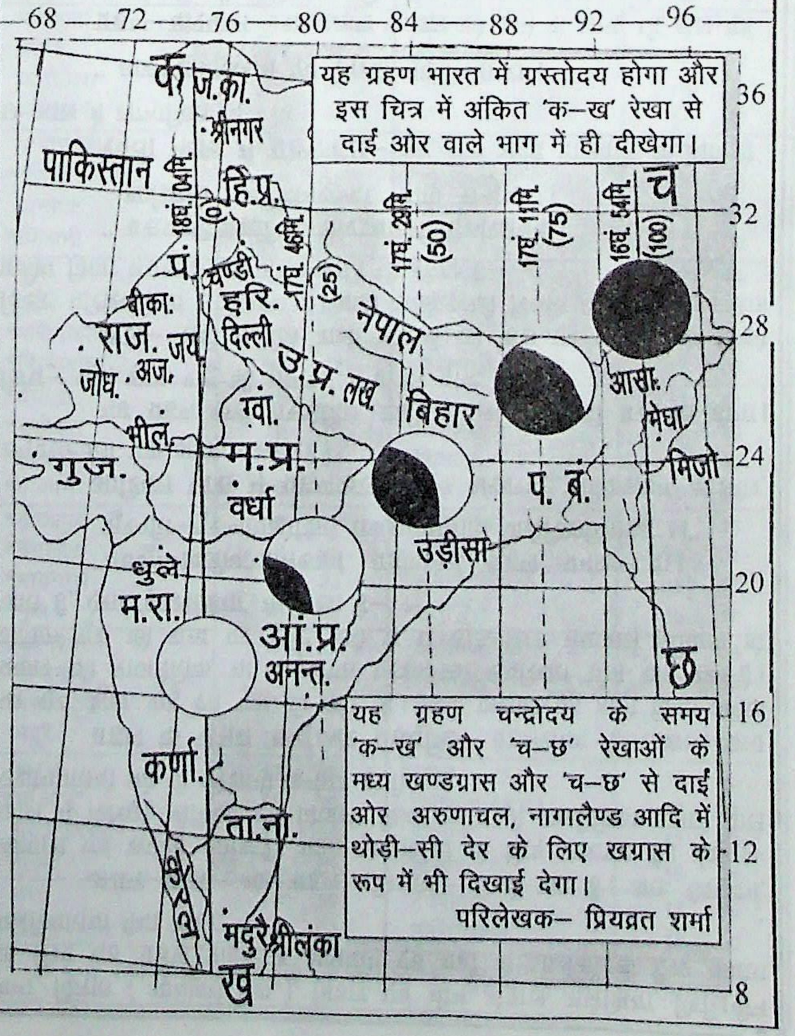
68
72
76
80
84
88
92
96
36
32
28
24
20
16
12
8
क
ज.का.
श्रीनगर
पाकिस्तान
हि.प्र.
पं.
चण्डी
हरि.
दिल्ली
बीका:
राज.
जय.
जोध.
अज.
उ.प्र. लख.
ग्वा.
भील.
गुज.
म.प्र.
वर्धा
धुले
म.रा.
आं.प्र.
अनन्त.
कर्णा.
ता.ना.
केरल
मदुरै
श्रीलंका
ख
नेपाल
बिहार
प. बं.
उड़ीसा
आसा.
मेघा.
मिजो
च
छ
18घं. 04मि.
(0)
17घं. 48मि.
(25)
17घं. 29मि.
(50)
17घं. 11मि.
(75)
16घं. 54मि.
(100)

यह ग्रहण भारत में ग्रस्तोदय होगा और इस चित्र में अंकित 'क–ख' रेखा से दाईं ओर वाले भाग में ही दीखेगा।

यह ग्रहण चन्द्रोदय के समय 'क–ख' और 'च–छ' रेखाओं के मध्य खण्डग्रास और 'च–छ' से दाईं ओर अरुणाचल, नागालैण्ड आदि में थोड़ी–सी देर के लिए खग्रास के रूप में भी दिखाई देगा।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

पार्श्वर्ती स्थलों पर ग्रहण का खण्डग्रासरूप पर्याप्त दृष्टिग्राह्य होगा। इस रेखा से दाईं ओर चन्द्रोदय के समय ग्रहण का खग्रासरूप देखा जा सकेगा। इस रेखा पर स्थित नगर/ग्रामों में चन्द्रोदय के समय (16 घं. 54 मि. I.S.T. पर) खग्रासग्रहण समाप्त हो जाएंगा। भारत के इस मानचित्र में ऊपर से नीचे की ओर जाने वाली भग्न(टूटी) रेखाओं पर स्थित नगरों में चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.) तथा उसके नीचे चन्द्रोदयकालिक प्रतिशत ग्रास भी कोष्ठक में अंकित है। पृ. 27 पर भारत के प्रसिद्ध नगरों में 8 अक्तूबर, 2014 ई. के चन्द्रोदय का काल (भा.स्टैं.टा.) दिया गया है।

ग्रहण का सूतक– इस ग्रहण का सूतक 8 अक्तूबर, 2014 ई. को सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

भारत में दृश्य ग्रहण का राशिफल–यह ग्रहण (8 अक्तूबर, 2014 ई. , बुधवार को) रेवती नक्षत्र एवं मीन राशि में घटित होगा। अतः जन्मनक्षत्र रेवती एवं मीन राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह चन्द्रग्रहण विशेषरूप से नेष्ट–फलप्रद रहेगा। विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे देखें–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	हानि	धनलाभ	कष्ट	चिन्ता	सुख	स्त्री/पतिकष्ट	मृत्युतुल्य भारी कष्ट	अपमान	सुख	लाभ	हानि	घात

इस ग्रहण का विशेष फल इसप्रकार है–

मीन राशि में ग्रहण होने से समुद्रतटवर्ती प्रदेशों, समुद्री पदार्थों (मोती, मूंगा, पैट्रोलियम, रत्नादि) के उपजीवियों, जंगली जीवों, बुद्धिजीवी वर्ग, पानी से रोजी कमाने वालों (मछुवारों, नाविक, जलयान से सम्बद्ध मर्चेण्ट–नेवी आदि) किंवा जल से कमाई करने वालों को कष्ट होता है–

" मीने सागर–कूल सागरजल–द्रव्याणि वन्यान् जनान्।
प्राज्ञान् वार्युपजीविनश्च भफलं कुर्मोण–देशाद् वदेत्।। "

कूर्मचक्रानुसार ईशान दिशा में स्थित देशों के लिए यह ग्रहण विशेष उपद्रव–कारक है। तदनुसार उ. ध्रुव के नीचे पर्वतीय प्रदेश, वर्तमान काश्मीर, रामगंगा से सरयू के मध्य का भाग, कुमाऊँ क्षेत्र, चिनाब व जेहल्म का नीचला भाग, किरात (आर्यावर्त देश), बिहार एवं चीन, नेपाल, मलेशिया, फिलिपीन के लिए यह ग्रहण प्राकृतिक आपदाएं एवं यहां के शासकों के लिए कठिन परिस्थितियां पैदा करे।

अयन–फल– यह ग्रहण दक्षिणायन में हो रहा है। अतः वैश्यवर्ग, व्यापारी एवं सफाई कर्मचारी आदि सेवधर्मियों के लिए कष्टप्रद है। ईशान–कोण में म्लेच्छों, सैनिकों एवं बिजली किंवा अग्नि से आजीविका कमाने वाले उद्योगपतियों को भी परेशानी अनुभव होगी।

ग्रहण के समय चन्द्र पर ग्रहदृष्टि– ग्रहणसमय मीनराशिस्थ चन्द्र पर सूर्य, शुक्र, राहु एवं गुरु की दृष्टि है। खड़ी फसलों को हानि किंवा अनेक प्रकार की राजनैतिक या प्राकृतिक परेशानियां उपस्थित होने का भय है। लेकिन गुरु की चन्द्र पर दृष्टि होने से ये उल्लिखित नेष्टफल निष्क्रिय हो जाते हैं; ऐसा 'बृहत्संहिता' में लिखा है–

"यदशुभमवलोकनाभिरुक्तं ग्रहजनितं ग्रहणे प्रमोक्षणे वा।
सुरपति–गुरुणावलोकिते तच्छममुपयाति जलैरिवाग्निरिद्धः।।"

आश्विन मास में ग्रहणफल– चीन, अरबराष्ट्र, पाकिस्तान, काश्मीर, समुद्रतटवर्ती देश आपदाग्रस्त रहें।

यह ग्रहण कहीं ग्रस्तोदित, कहीं खग्रास एवं कहीं ग्रस्तास्त होगा। किंच– सूर्य, शुक्र, राहु की मीनस्थ चन्द्र पर दृष्टि भी है।

फल– सर्दी में होने वाली फसलों का नाश एवं शासकों के सामने विकट परिस्थितियां उपस्थित हों। कहीं अकाल की स्थिति व कहीं प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादजन्य जनधनहानि भी संभव है–

" ग्रस्तावुदितास्तमितैः शारदधान्यावनीश्वरक्षयदः।
सर्वग्रस्तो दुर्भिक्षमरकदो पाप–सन्दृष्टः।।"

रेवती नक्षत्र में ग्रहणफल– मूंग, मोठ आदि दालवाना के व्यापारी छः मास में लाभान्वित हों–

" मासषट्काल्लाभ एव रेवत्यां मुद्ग–माषतः।"

ग्रहण–वारफल– चन्द्रग्रहण बुधवार को होने से अन्न, घी, तेल एवं सुपारी, रक्तवर्ण वस्तुओं, नारियल आदि के संग्रह से लाभ हो।

ग्रहण–योगफल– यह ग्रहण व्याघात योग में घटित हो रहा है। प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो, खड़ी फसलों को हानि पहुंचे एवं महंगाई बहुत रहे।

चन्द्रोदय (भा.स्टैं.टा.) (8 अक्तूबर, 2014 ई.)

नगर	घं.	मि.	नगर	घं.	मि.	नगर	घं.	मि.	नगर	घं.	मि.
अगरतला	17	03	गुड़गांव	17	59	पंचकूला	17	58	मोहाली	17	59
अनन्तपुर	18	04	गुवाहाटी	16	59	पटना	17	27	यवतमाल	17	59
अम्बाला	18	00	गोरखपुर	17	34	पटियाला	18	00	*रतलाम	18	10
*अमृतसर	18	06	ग्वालियर	17	56	पठानकोट	18	02	राउरकेला	17	31
अलवर	18	01	चण्डीगढ़	17	58	पाण्डिचेरी	17	56	रांची	17	36
अलीगढ़	17	55	*चूरू	18	06	*पणजी	18	19	*राजकोट	18	28
*अहमदाबाद	18	20	चेन्नई	17	54	पानीपत	17	58	रायपुर	17	44
आगरा	17	56	जबलपुर	17	50	*पिलानी	18	05	रोपड़	17	59
*इन्दौर	18	07	जमशेदपुर	17	24	*पुणे	18	17	लखनऊ	17	44
इम्फाल	16	51	*जम्मू	18	05	पुरी	17	29	लुधियाना	18	02
इलाहाबाद	17	41	*जयपुर	18	05	*फरीदकोट	18	07	वर्धा	17	57
ईटानगर	16	51	*जलगांव	18	09	*फिरोज़पुर	18	07	वाराणसी	17	36
*उज्जैन	18	07	*जामनगर	18	31	*बठिंडा	18	06	विजयवाड़ा	17	51
*उदयपुर (राज.)	18	15	जालन्धर	18	03	*बड़ोदरा	18	18	विशाखापत्तनम्	17	39
ऐजावल	16	57	*जैसलमेर	18	25	*बाड़मेर	18	24	शिमला	17	56
*औरंगाबाद	18	11	*जोधपुर	18	17	*बीकानेर	18	14	शिलांग	16	59
कटक	17	28	जोरहाट	16	49	*बीजापुर	18	11	* शोलापुर	18	18
कपूरथला	18	04	झांसी	17	55	*बैंगलौर	18	05	श्रीनगर (का.)	18	04
कटुआ	18	02	*झुंझुनु	18	06	*भावनगर	18	23	संगरूर	18	03
कांगड़ा	17	59	डिब्रूगढ़	16	46	*भुज	18	32	*सतारा	18	17
कानपुर	17	56	तिरुपति	17	59	भुवनेश्वर	17	27	सलीम	18	03
कुराली (पं.)	17	59	*तिरुवनन्तपुरम्	18	10	भोपाल	18	00	सहारनपुर	17	56
कुरुक्षेत्र	17	58	त्रिचनापल्ली	18	01	मण्डी (हि.प्र.)	17	58	*सिरसा	18	06
कुल्लू	17	58	दिल्ली	17	58	मदुरै	18	04	*सीकर	18	07
*कोटा	18	06	देहरादून	17	53	मथुरा	17	58	*सूरत	18	20
*कोयम्बटूर	18	08	*नवलगढ़	18	06	*मा.आबू	18	19	हमीरपुर (उ.प्र.)	17	47
कोलकाता	17	15	नागपुर	18	03	मुज़फ्फरनगर	17	55	हरिद्वार	17	53
*कोल्हापुर	18	17	नान्देड़	18	03	*मुम्बई	18	21	हिसार	18	04
कोहिमा	16	50	नाभा	18	01	मेरठ	17	56	हैदराबाद	17	59
खन्ना (पं.)	18	01	नाहन	17	56	*मैसूर	18	09	होशियारपुर	18	00
गंगटोक	17	12	नैनीताल	17	48						
*गान्धीनगर	18	20	नैल्लूर	17	54						

* इन नगरों में चन्द्रोदय से पहिले ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण
(8 अक्तूबर, 2014 ई.)

स्पर्श, खग्रास–आरम्भ–समाप्ति
एवम् मोक्ष की दिशाएं

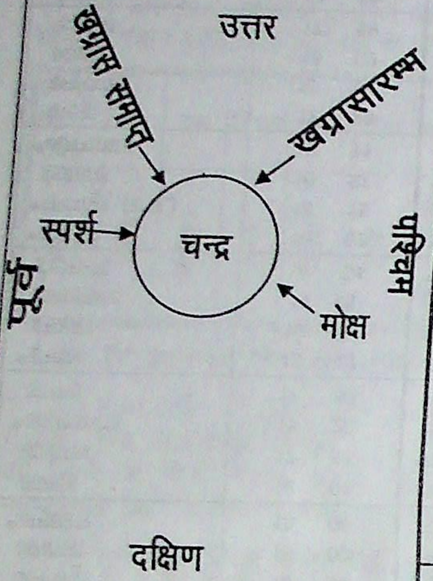
खग्रास समाप्ति
उत्तर
खग्रासारम्भ
स्पर्श
चन्द्र
पूर्व
पश्चिम
मोक्ष
दक्षिण

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (8 अक्तूबर, 2014 ई.)

(कुछ नगरों में चन्द्रोदयकालीन ग्रासमान)

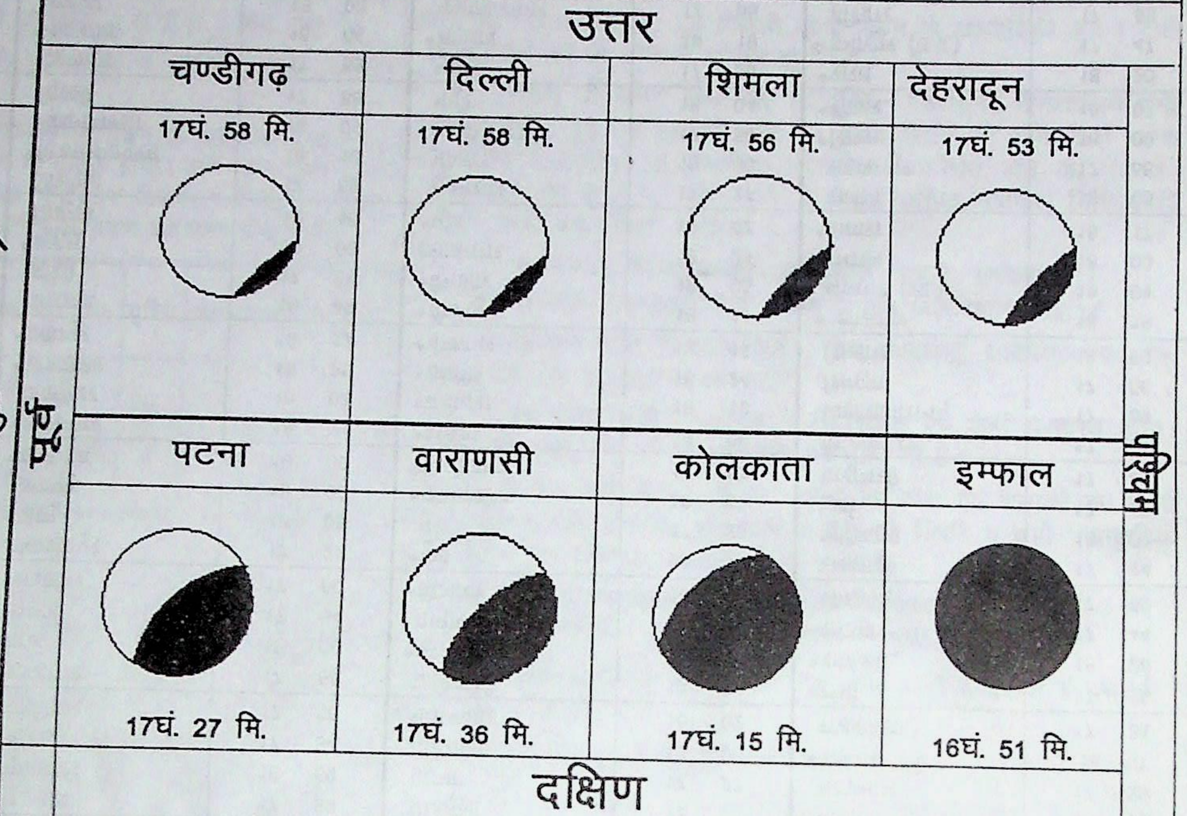
उत्तर
चण्डीगढ़
17घं. 58 मि.
दिल्ली
17घं. 58 मि.
शिमला
17घं. 56 मि.
देहरादून
17घं. 53 मि.
पूर्व
पश्चिम
पटना
17घं. 27 मि.
वाराणसी
17घं. 36 मि.
कोलकाता
17घं. 15 मि.
इम्फाल
16घं. 51 मि.
दक्षिण

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

कंकण सूर्य्रहण (29 अप्रैल, 2014)

(भूगोल पर ग्रहण–घटनास्थल, स्पर्शकाल, परम ग्रासमान और कंकणाकृत्तिस्थल)

चित्र (1)

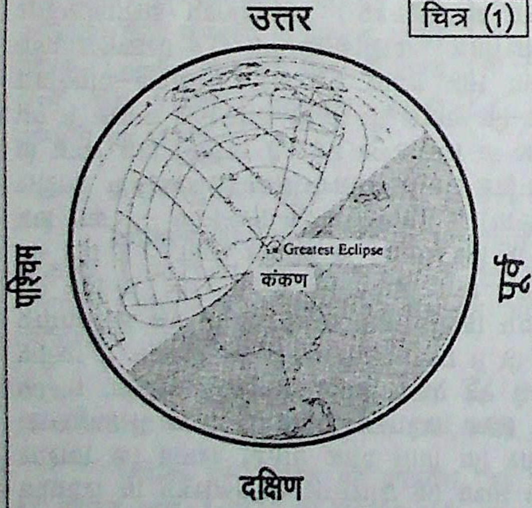
उत्तर
पश्चिम
Greatest Eclipse
कंकण
पूर्व
दक्षिण

(i) उत्तर–पश्चिम से दक्षिण एवम् दक्षिण– पूर्व की ओर जा रही वक्ररेखाओं पर स्पर्श का U.T. (Universal time) दिया गया है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ देने पर यह भा. स्टैं. टा. हो जाएगा।

(ii) दूसरी वक्ररेखाओं पर परम ग्रासमान (प्रतिशत में) अंकित है।

(iii) स्टार (✱) से अंकित स्थल पर कुछ ही मिनटों के लिए यह कंकणाकृति दीखेगी।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (24 अक्तू., 2014)

(भूगोल पर ग्रहण–घटनास्थल, स्पर्शकाल और परम ग्रासमान)

चित्र (2)

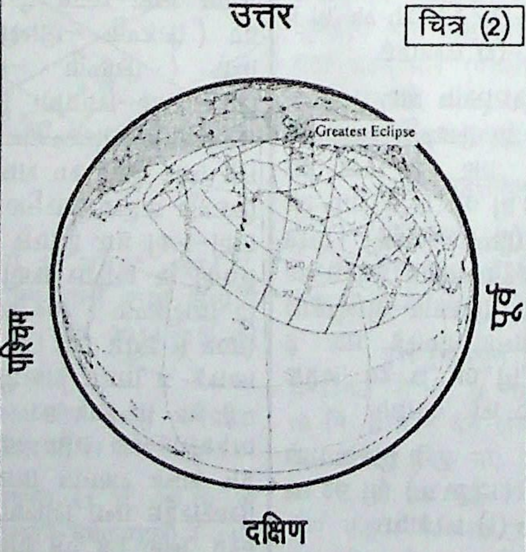
उत्तर
Greatest Eclipse
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण

(i) उत्तर से दक्षिण एवम् दक्षिण–पश्चिम की ओर जा रही वक्ररेखाओं पर ग्रहण का स्पर्शकाल U.T. (Universal time) में है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ने पर यह भा. स्टैं. टा. हो जाएगा।

(ii) पश्चिमोत्तर से पूर्वोत्तर की ओर जाने वाली वक्ररेखाओं पर ग्रहण का परम ग्रास (प्रतिशत में) अंकित है।

खग्रास सूर्यग्रहण (20 मार्च, 2015)

(भूगोल पर ग्रहण–घटनास्थल, स्पर्शकाल, परम ग्रासमान और खग्रास–दृश्यस्थल)

चित्र (3)

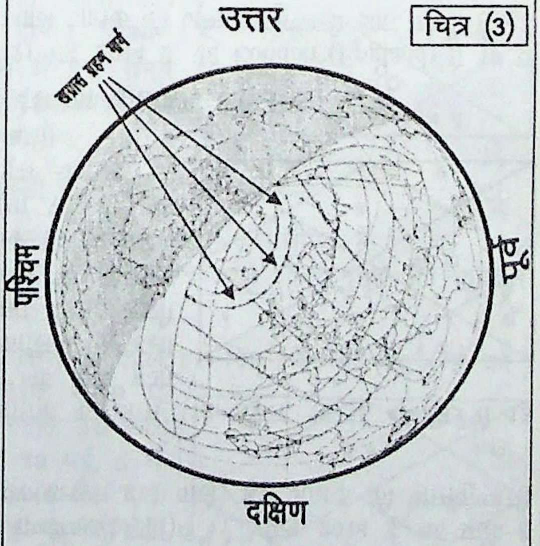
उत्तर
खग्रास ग्रहण मार्ग
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण

(i) बाईं से दाईं ओर खींची वक्ररेखाओं पर ग्रहण–स्पर्शकाल U.T. (Universal time) में है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ने पर यह भा. स्टैं. टा. हो जाएगा।

(ii) दूसरी वक्ररेखाओं पर प्रतिशत में परम ग्रासमान में दिया गया है।

(iii) ग्रीनलैण्ड से पूर्व–दक्षिण की ओर बनी पट्टी में यह ग्रहण खग्रास के रूप में दीखेगा।

संवत् 2071 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–मुहूर्त्त–कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में भारी सहयोग के लिए **'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय '– कुराली (पं.)** के अनुभवी कार्यकर्ता, **ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन (हि.प्र.),** निवासी प्रबुद्ध विद्वान् आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा, M.A.,** शास्त्री, वेदाचार्य, साहित्याचार्य को आशीर्वाद–पुरस्सर धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता–

– प्रियव्रत शर्मा

यद्यपि जातकपद्धति एवम् ताजिक ग्रन्थों में द्वादश–भाव–साधनपूर्वक बनाई गई भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक–जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश–कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि–कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाए हुए हैं। जन्म, प्रश्न वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्त्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनाई गई जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का वहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाए हुए है। सच बात तो यह है– फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक रूप तो लगभग लुप्त सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2071 वि. में बनने वाली सभी (कुल 207) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से किस तारीख के कितने बजे तक "**– कौन–सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन–किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेशकुण्डली (वर्षप्रवेशकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास बना सकेंगे।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाईम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में बदलकर, इन्हें प्रयोग में लाइए। **स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–**

उदाहरण (1)– चण्डीगढ़(U.T.)में 11 अप्रैल, 2014 ई. को प्रातः 8 घं. 20 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है ?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **"10 अप्रैल, 15 घं. 47 मि. से 13 अप्रैल, 02 घं. 40 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** चण्डीगढ़ में 11 अप्रैल को प्रातः 8 घं. 20 मि.(भा. स्टैं. टा.) पर वृष लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न–कुण्डली यह बनी–

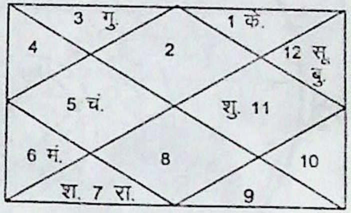

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)– 21 मई, 2014 ई. को London (England) में 19 घं. 5 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है ?

London (England) में इस समय D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चल रहा होगा, जो क्षेत्रीय स्टैं. टा. (G.M.T-) से एक घंटा आगे रहता है। स्पष्ट है– इस जातक का जन्मसमय यहां 18 घं. 05 मि. (G.M.T.) होगा। England के स्टैं.टा.(G.M.T.) से भा. स्टैं. टा. 5 घं. 30 मि. आगे रहता

है, अतः इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 21 मई, 2014 ई. और जन्मकाल भा. स्टैं. टा. 23 घं. 35 मि. बना। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"21 मई 07 घं. 45 मि. से 23 मई 2 घं. 25 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक– कुण्डली (ग्रहस्थिति– कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** London में इसके जन्म के समय लग्न तुला होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–

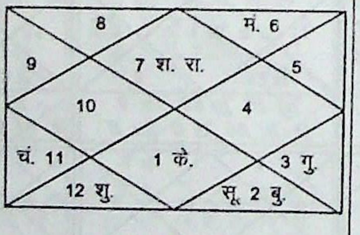

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (3)– भारत (हि. प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11घं. 14 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर जन्मे एवम् सम्प्रति मोहाली (पंजाब) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2014–15 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 40 मिले और 41वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2014 ई. (शुक्रवार) को 17घं. 20मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वषप्रवेश **"15 अगस्त 11 घं. 05 मि. से 17 अगस्त 06घं. 14मि. "** के मध्य हुआ है, अतः इसकी वर्षकुण्डली (41वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली– अनुरूप होगी। **किञ्च–** इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (15 अगस्त, 2014 ई. को 17 घं. 20 मि. पर) धनु लग्न है, अतः इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी–

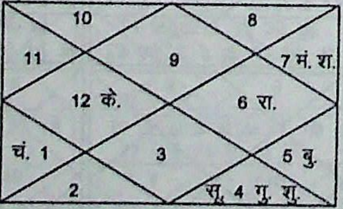

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं–

उदाहरण (4)– मान लें, 10 अक्तूबर, 2014 ई. को 12 घं. 25 मि.(भा.स्टैं.टा) पर आपके पास देहली (भारत) में आकर कोई प्रश्नकर्ता **' कार्यसिद्धि / असिद्धि '** का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 10 अक्तूबर, 2014 ई. और प्रश्नकाल 12 घं. 25 मि. आगे इस स्तंभ में दिए गए **" 9 अक्तू. 7 घं. 15 मि. से 11 अक्तू. 10 घं. 45 मि. "** के मध्य पड़ता है, अतः यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अंतर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** यहां प्रश्नस्थल (देहली) में इस समय लग्न धनु है, अतः यहां इस प्रश्नकर्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी–

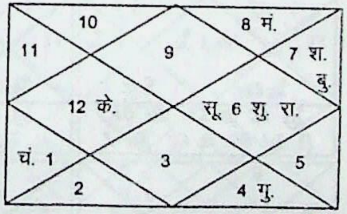

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण–(5) हमारे इस पंचांग (श्री मार्त्तण्ड) में 20 मई, 2014 ई. को पृष्ठ **256** पर दिए मिथुन लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस (मिथुन) लग्न का काल इस दिन (20 मई, 2014 ई. को) चण्डीगढ़ में 7 घं. 5 मि. से 9 घं. 19 मि. है और यह लग्नकाल इस स्तंभ के अन्तर्गत दिए गए **" 19 मई, 5 घं. 36 मि. से 21 मई, 7घं. 44 मि. "** के मध्य पड़ता है, अतः यह मुहूर्त्तकुण्डली यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी–

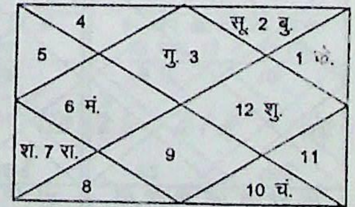

इस प्रकार पाठक समझ गए होंगे– जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे– कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

31 मार्च से 10 मई, सन् 2014 ई.

31 मार्च 0 घं. 16 मि. से
31 मार्च 10 घं. 01 मि.

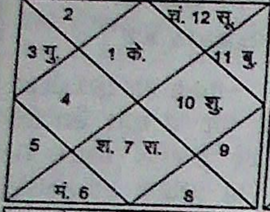
2
चं. 12 सू.
3 गु.
1 के.
11 बु.
4
10 शु.
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

31 मार्च 10 घं. 02 मि. से
1 अप्रैल. 0 घं. 25 मि.

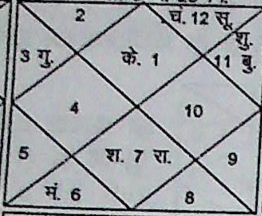
2
चं. 12 सू.
शु.
3 गु.
के. 1
11 बु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

1 अप्रैल, 0 घं. 26 मि. से
3 अप्रैल. 6 घं. 13 मि.

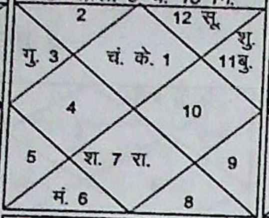
2
12 सू.
शु.
गु. 3
चं. के. 1
11बु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

3 अप्रैल. 6 घं. 14 मि. से
4 अप्रैल. 7 घं. 30 मि.

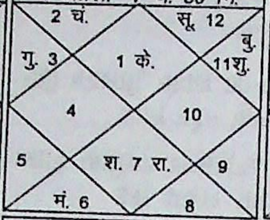
2 चं.
सू. 12
बु.
गु. 3
1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

4 अप्रैल, 7 घं. 31 मि. से
5 अप्रैल. 15 घं. 26 मि.

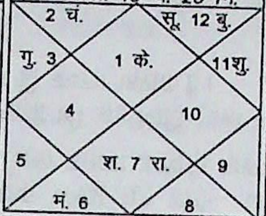
2 चं.
सू. 12 बु.
गु. 3
1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

5 अप्रैल, 15 घं. 27 मि. से
8 अप्रैल. 3 घं. 19 मि.

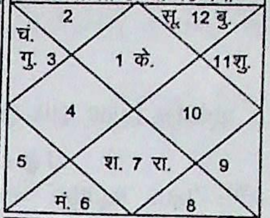
2
सू. 12 बु.
चं.
गु. 3
1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

8 अप्रैल, 3 घं. 20 मि. से
10 अप्रैल. 15 घं. 46 मि.

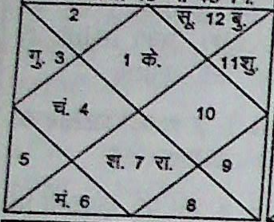
2
सू. 12 बु.
गु. 3
1 के.
11शु.
चं. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

10 अप्रैल, 15 घं. 47 मि. से
13 अप्रैल. 2 घं. 40 मि.

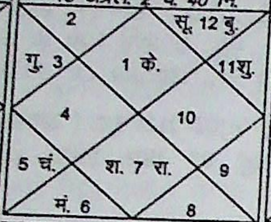
2
सू. 12 बु.
गु. 3
1 के.
11शु.
4
10
5 चं.
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

13 अप्रैल, 2 घं. 41 मि. से
14 अप्रैल. 7 घं. 35 मि.

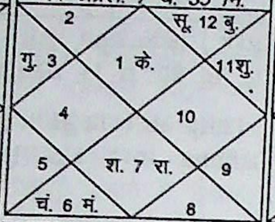
2
सू. 12 बु.
गु. 3
1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
चं. 6 मं.
8

14 अप्रैल, 7 घं. 36 मि. से
15 अप्रैल. 10 घं. 58 मि.

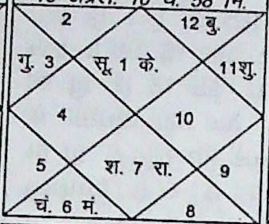
2
12 बु.
गु. 3
सू. 1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
चं. 6 मं.
8

15 अप्रैल, 10 घं. 59 मि. से
17 अप्रैल. 16 घं. 47 मि.

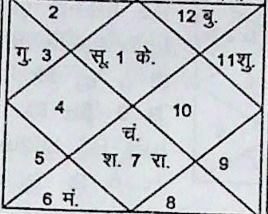
2
12 बु.
गु. 3
सू. 1 के.
11शु.
4
10
चं.
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
8

17 अप्रैल. 16 घं. 48 मि. से
19 अप्रैल. 20 घं. 48 मि.

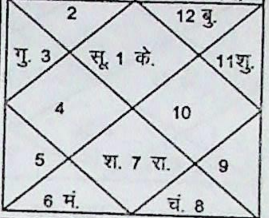
2
12 बु.
गु. 3
सू. 1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
चं. 8

19 अप्रैल 20 घं. 49 मि. से
20 अप्रैल 17 घं. 34 मि.

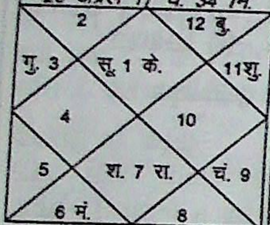
2
12 बु.
गु. 3
सू. 1 के.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
चं. 9
6 मं.
8

20 अप्रैल 17 घं. 35 मि. से
21अप्रैल 23 घं. 45 मि.

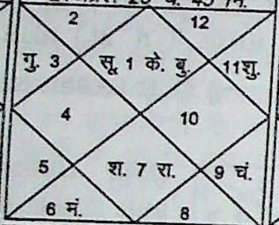
2
12
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9 चं.
6 मं.
8

21 अप्रैल 23 घं. 46 मि. से
24 अप्रैल 2 घं. 21 मि.

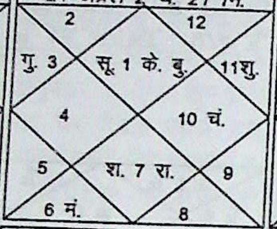
2
12
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11शु.
4
10 चं.
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
8

24 अप्रैल 2 घं. 22 मि. से
26 अप्रैल 5 घं. 18 मि.

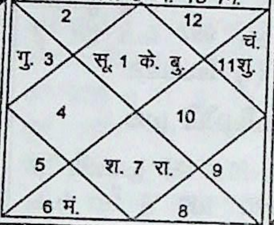
2
12
चं.
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
8

26 अप्रैल, 5 घं. 19 मि. से
28 अप्रैल, 0 घं. 39 मि.

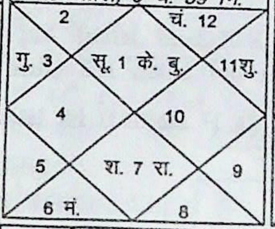
2
चं. 12
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11शु.
4
10
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
8

28 अप्रैल, 0 घं. 40 मि. से
28 अप्रैल, 9 घं. 21 मि.

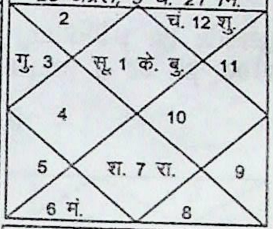
2
चं. 12 शु.
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
6 मं.
8

28 अप्रैल, 9 घं. 22 मि. से
30 अप्रैल, 15 घं. 24 मि.

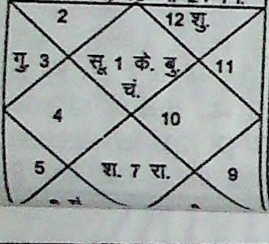
2
12 शु.
गु. 3
सू. 1 के. बु.
चं.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9

30 अप्रैल, 15 घं. 25 मि. से
3 मई 0 घं. 08 मि.

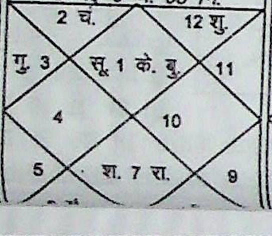
2 चं.
12 शु.
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9

3 मई, 0 घं. 09 मि. से
4 मई, 22 घं. 07 मि.

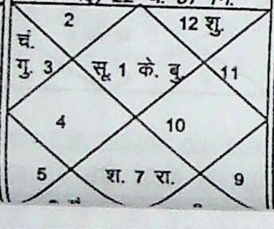
2
12 शु.
चं.
गु. 3
सू. 1 के. बु.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9

4 मई, 22 घं. 08 मि. से
5 मई, 11 घं. 27 मि.

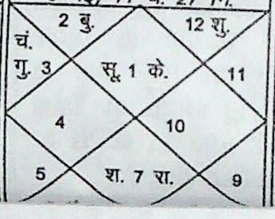
2 बु.
12 शु.
चं.
गु. 3
सू. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9

5 मई, 11 घं. 28 मि. से
7 मई, 23 घं. 58 मि.

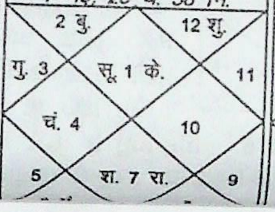
2 बु.
12 शु.
गु. 3
सू. 1 के.
11
चं. 4
10
5
श. 7 रा.
9

7 मई, 23 घं. 59 मि. से
10 मई, 11 घं. 21 मि.

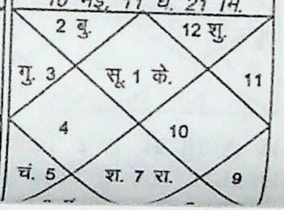
2 बु.
12 शु.
गु. 3
सू. 1 के.
11
4
10
चं. 5
श. 7 रा.
9

10 मई से 19 जून, सन् 2014 ई.

10 मई, 11 घं. 22 मि. से
12 मई, 19 घं. 49 मि.

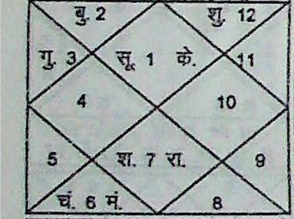
बु. 2
शु. 12
गु. 3
सू. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
चं. 6 मं.
8

12 मई, 19 घं. 50 मि. से
15 मई, 1 घं. 00 मि.

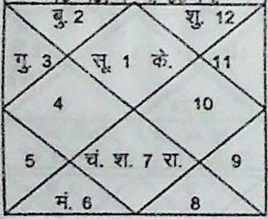
बु. 2
शु. 12
गु. 3
सू. 1 के.
11
4
10
5
चं. श. 7 रा.
9
मं. 6
8

15 मई, 1 घं. 01 मि. से
15 मई, 4 घं. 27 मि.

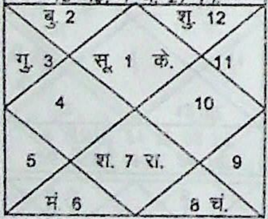
बु. 2
शु. 12
गु. 3
सू. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8 चं.

15 मई, 4 घं. 28 मि. से
17 मई, 3 घं. 47 मि.

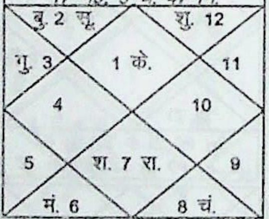
बु. 2 सू.
शु. 12
गु. 3
1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8 चं.

17 मई, 3 घं. 48 मि. से
19 मई, 5 घं. 35 मि.

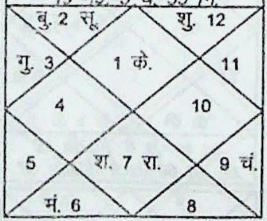
बु. 2 सू.
शु. 12
गु. 3
1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9 चं.
मं. 6
8

19 मई, 5 घं. 36 मि. से
21 मई, 7 घं. 44 मि.

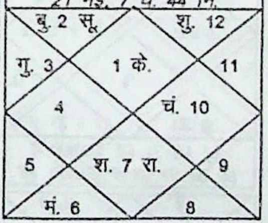
बु. 2 सू.
शु. 12
गु. 3
1 के.
11
4
चं. 10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

21 मई, 7 घं. 45 मि. से
23 मई, 2 घं. 25 मि.

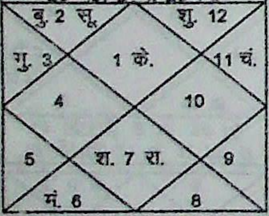
बु. 2 सू.
शु. 12
गु. 3
1 के.
11 चं.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

23 मई, 2 घं. 26 मि. से
23 मई, 11 घं. 08 मि.

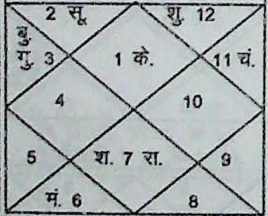
2 सू.
शु. 12
बु.
गु. 3
1 के.
11 चं.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

23 मई, 11 घं. 09 मि. से
24 मई, 4 घं. 59 मि.

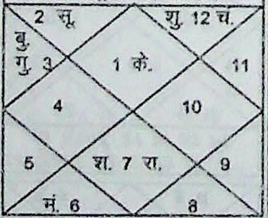
2 सू.
शु. 12 चं.
बु.
गु. 3
1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

24 मई, 5 घं. 00 मि. से
25 मई, 16 घं. 13 मि.

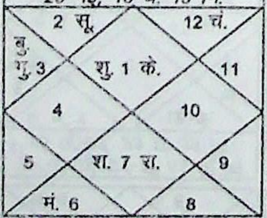
2 सू.
12 चं.
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

25 मई, 16 घं. 14 मि. से
27 मई, 23 घं. 09 मि.

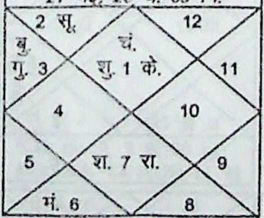
2 सू.
12
बु.
चं.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

27 मई, 23 घं. 10 मि. से
30 मई, 8 घं. 09 मि.

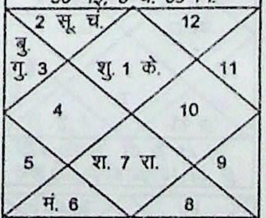
2 सू. चं.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

30 मई, 8 घं. 10 मि. से
1 जून, 19 घं. 17 मि.

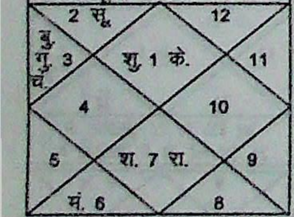
2 सू.
12
बु.
गु. 3
चं.
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

1 जून, 19 घं. 18 मि. से
4 जून, 7 घं. 48 मि.

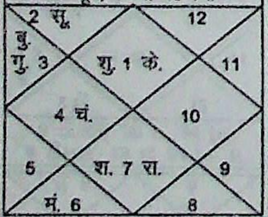
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4 चं.
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

4 जून, 7 घं. 49 मि. से
6 जून, 19 घं. 52 मि.

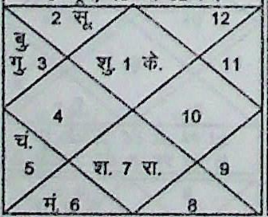
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
चं.
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

6 जून, 19 घं. 53 मि. से
9 जून, 5 घं. 13 मि.

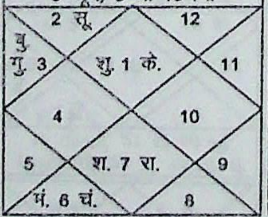
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6 चं.
8

9 जून, 5 घं. 14 मि. से
11 जून, 10 घं. 42 मि.

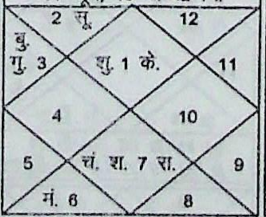
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
चं. श. 7 रा.
9
मं. 6
8

11 जून, 10 घं. 43 मि. से
13 जून, 12 घं. 53 मि.

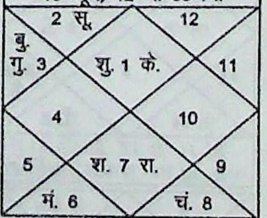
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
चं. 8

13 जून, 12 घं. 54 मि. से
15 जून, 11 घं. 01 मि.

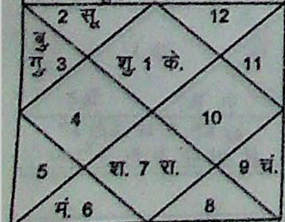
2 सू.
12
बु.
गु. 3
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
9 चं.
मं. 6
8

15 जून, 11 घं. 02 मि. से
15 जून, 13 घं. 22 मि.

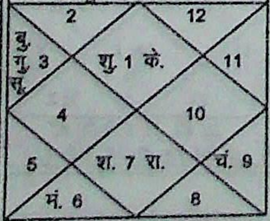
2
12
बु.
गु. 3
सू.
शु. 1 के.
11
4
10
5
श. 7 रा.
चं. 9
मं. 6
8

15 जून, 13 घं. 23 मि. से
17 जून, 14 घं. 05 मि.

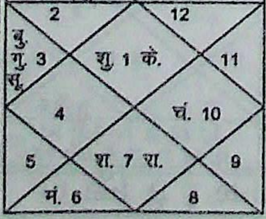
2
12
बु.
गु. 3
सू.
शु. 1 के.
11
4
चं. 10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

17 जून, 14 घं. 06 मि. से
18 जून, 17 घं. 57 मि.

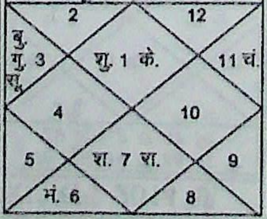
2
12
बु.
गु. 3
सू.
शु. 1 के.
11 चं.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

18 जून, 17 घं. 58 मि. से
19 जून, 8 घं. 46 मि.

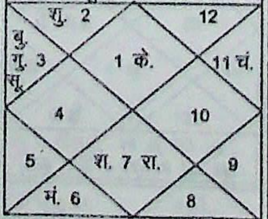
शु. 2
12
बु.
गु. 3
सू.
1 के.
11 चं.
4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

19 जून, 8 घं. 47 मि. से
19 जून, 16 घं. 36 मि.

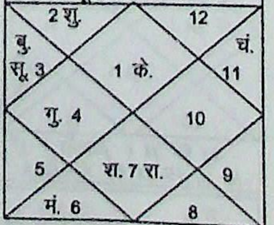
2 शु.
12
बु.
सू. 3
चं.
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

19 जून से 2 अगस्त, सन् 2014 ई.

19 जून, 16 घं. 37 मि. से
21 जून, 21 घं. 43 मि.

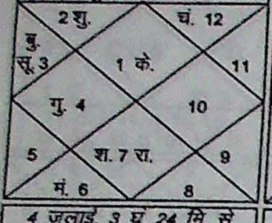
2 शु.
चं. 12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

21 जून, 21 घं. 44 मि. से
24 जून, 5 घं. 18 मि.

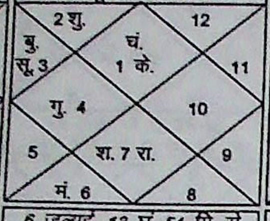
2 शु.
12
बु.
सू. 3
चं.
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

24 जून, 5 घं. 19 मि. से
26 जून, 14 घं. 57 मि.

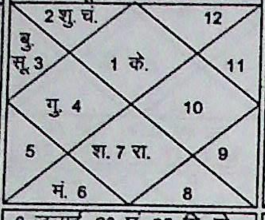
2 शु. चं.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

26 जून, 14 घं. 58 मि. से
29 जून, 2 घं. 17 मि.

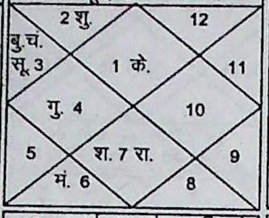
2 शु.
12
बु. चं.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

29 जून, 2 घं. 18 मि. से
1 जुलाई, 14 घं. 50 मि.

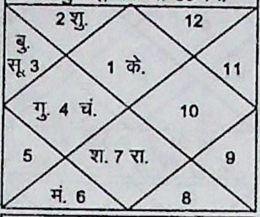
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4 चं.
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

1 जुलाई, 14 घं. 51 मि. से
4 जुलाई, 3 घं. 23 मि.

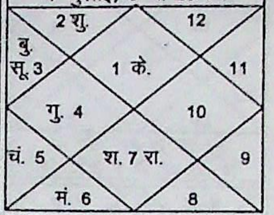
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
चं. 5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

4 जुलाई, 3 घं. 24 मि. से
6 जुलाई, 13 घं. 53 मि.

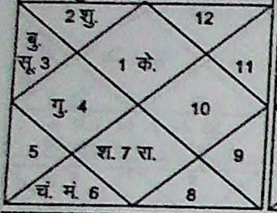
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
चं. मं. 6
8

6 जुलाई, 13 घं. 54 मि. से
8 जुलाई, 20 घं. 34 मि.

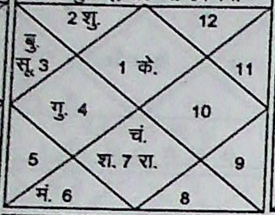
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
चं.
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8

8 जुलाई, 20 घं. 35 मि. से
10 जुलाई, 23 घं. 14 मि.

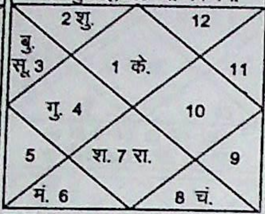
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9
मं. 6
8 चं.

10 जुलाई, 23 घं. 15 मि. से
12 जुलाई, 21 घं. 50 मि.

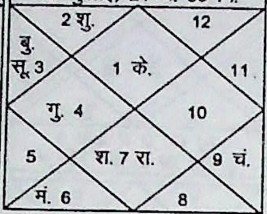
2 शु.
12
बु.
सू. 3
1 के.
11
गु. 4
10
5
श. 7 रा.
9 चं.
मं. 6
8

12 जुलाई, 21 घं. 51 मि. से
12 जुलाई, 23 घं. 14 मि.

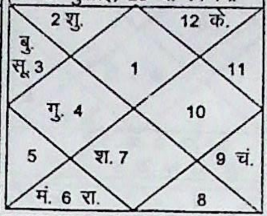
2 शु.
12 के.
बु.
सू. 3
1
11
गु. 4
10
5
श. 7
9 चं.
मं. 6 रा.
8

12 जुलाई, 23 घं. 15 मि. से
13 जुलाई, 21 घं. 11 मि.

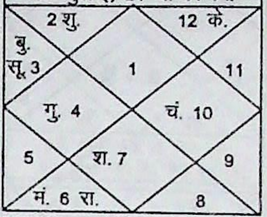
2 शु.
12 के.
बु.
सू. 3
1
11
गु. 4
चं. 10
5
श. 7
9
मं. 6 रा.
8

13 जुलाई, 21 घं. 12 मि. से
14 जुलाई, 8 घं. 38 मि.

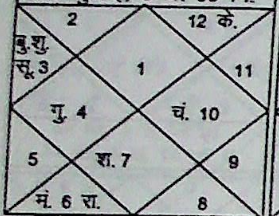
2
12 के.
बु. शु.
सू. 3
1
11
गु. 4
चं. 10
5
श. 7
9
मं. 6 रा.
8

14 जुलाई, 8 घं. 39 मि. से
14 जुलाई, 22 घं. 39 मि.

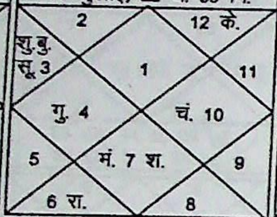
2
12 के.
शु. बु.
सू. 3
1
11
गु. 4
चं. 10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

14 जुलाई, 22 घं. 40 मि. से
16 जुलाई, 21 घं. 52 मि.

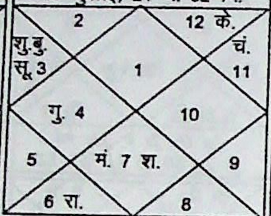
2
12 के.
शु. बु.
सू. 3
चं.
1
11
गु. 4
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

16 जुलाई, 21 घं. 53 मि. से
16 जुलाई, 23 घं. 35 मि.

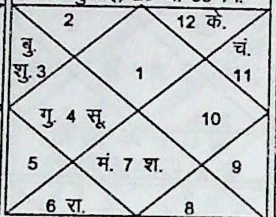
2
12 के.
बु.
शु. 3
चं.
1
11
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

16 जुलाई, 23 घं. 36 मि. से
19 जुलाई, 3 घं. 30 मि.

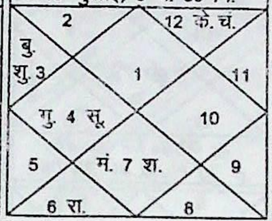
2
12 के. चं.
बु.
शु. 3
1
11
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

19 जुलाई, 3 घं. 31 मि. से
21 जुलाई, 10 घं. 47 मि.

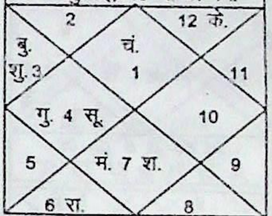
2
12 के.
बु.
शु. 3
चं.
1
11
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

21 जुलाई, 10 घं. 48 मि. से
23 जुलाई, 20 घं. 46 मि.

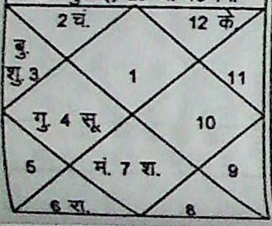
2 चं.
12 के.
बु.
शु. 3
1
11
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

23 जुलाई, 20 घं. 47 मि. से
26 जुलाई, 8 घं. 27 मि.

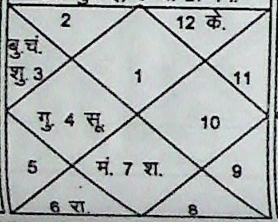
2
12 के.
बु. चं.
शु. 3
1
11
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

26 जुलाई, 8 घं. 28 मि.
28 जुलाई, 21 घं. 03 मि.

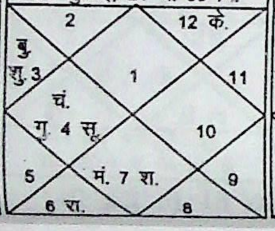
2
12 के.
बु.
शु. 3
1
11
चं.
गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

28 जुलाई, 21 घं. 04 मि. से
29 जुलाई, 5 घं. 38 मि.

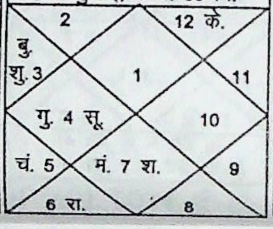
2
12 के.
बु.
शु. 3
1
11
गु. 4 सू.
10
चं. 5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

29 जुलाई, 5 घं. 39 मि.. से
31 जुलाई, 9 घं .44 मि.

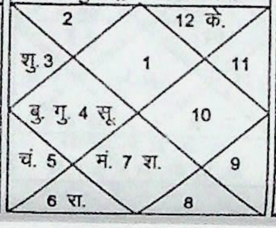
2
12 के.
शु. 3
1
11
बु. गु. 4 सू.
10
चं. 5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

31 जुलाई, 9 घं .45 मि. से
2 अगस्त, 21 घं. 01 मि.

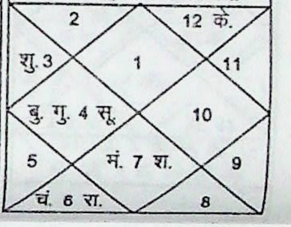
2
12 के.
शु. 3
1
11
बु. गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
चं. 6 रा.
8

2 अगस्त से 11 सितंबर, सन् 2014 ई.

2 अगस्त, 21 घं. 02 मि. से 5 अगस्त, 5 घं. 09 मि.

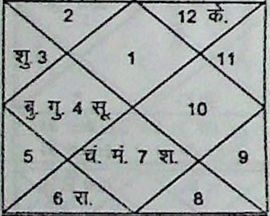
2
12 के.
शु. 3
1
11
बु. गु. 4 सू.
10
5
चं. मं. 7 श.
9
6 रा.
8

5 अगस्त, 5 घं. 10 मि. से 7 अगस्त, 9 घं. 15 मि.

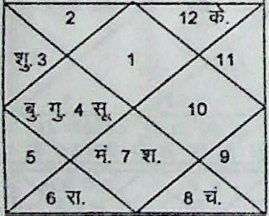
2
12 के.
शु. 3
1
11
बु. गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8 चं.

7 अगस्त, 9 घं. 16 मि. से 7 अगस्त, 16 घं. 04 मि.

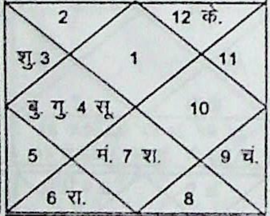
2
12 के.
शु. 3
1
11
बु. गु. 4 सू.
10
5
मं. 7 श.
9 चं.
6 रा.
8

7 अगस्त, 16 घं. 05 मि. से 9 अगस्त, 9 घं. 58 मि.

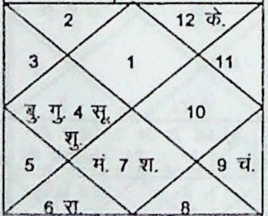
2
12 के.
3
1
11
बु. गु. 4 सू.
शु.
10
5
मं. 7 श.
9 चं.
6 रा.
8

9 अगस्त, 9 घं. 59 मि. से 11 अगस्त, 9 घं. 04 मि.

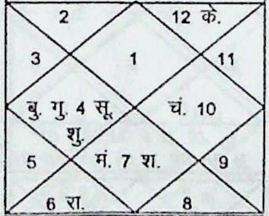
2
12 के.
3
1
11
बु. गु. 4 सू.
शु.
चं. 10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

11 अगस्त, 9 घं. 05 मि. से 12 अगस्त, 21 घं. 05 मि.

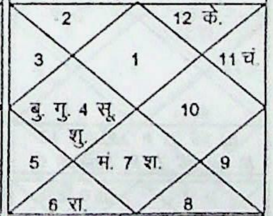
2
12 के.
3
1
11 चं.
बु. गु. 4 सू.
शु.
10
5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

12 अगस्त, 21 घं. 06 मि. से 13 अगस्त, 8 घं. 47 मि.

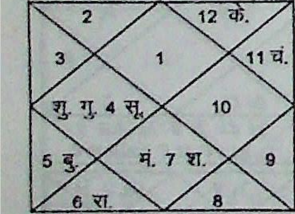
2
12 के.
3
1
11 चं.
शु. गु. 4 सू.
10
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

13 अगस्त, 8 घं. 48 मि. से 15 अगस्त, 11 घं. 04 मि.

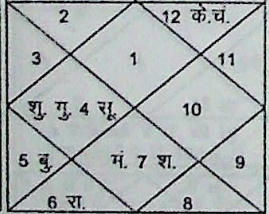
2
12 के.चं.
3
1
11
शु. गु. 4 सू.
10
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

15 अगस्त, 11 घं. 05 मि. से 17 अगस्त, 6 घं. 14 मि.

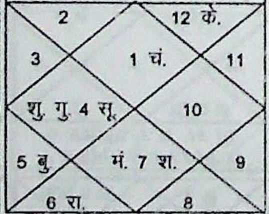
2
12 के.
3
1 चं.
11
शु. गु. 4 सू.
10
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

17 अगस्त, 6 घं. 15 मि. से 17 अगस्त, 17 घं. 02 मि.

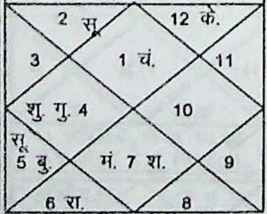
2 सू.
12 के.
3
1 चं.
11
शु. गु. 4
10
सू.
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

17 अगस्त, 17 घं. 03 मि. से 20 अगस्त, 2 घं. 32 मि.

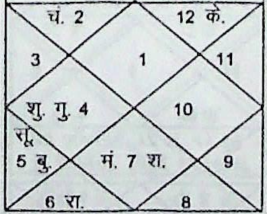
चं. 2
12 के.
3
1
11
शु. गु. 4
10
सू.
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

20 अगस्त, 2 घं. 33 मि. से 22 अगस्त, 14 घं. 19 मि.

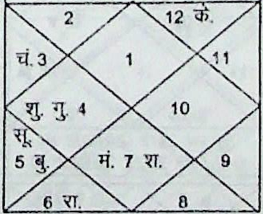
2
12 के.
चं. 3
1
11
शु. गु. 4
10
सू.
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

22 अगस्त, 14 घं. 20 मि. से 25 अगस्त, 3 घं. 00 मि.

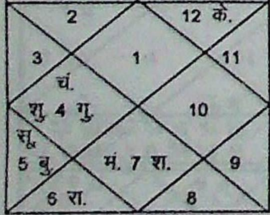
2
12 के.
3
1
11
चं.
शु. 4 गु.
10
सू.
5 बु.
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

25 अगस्त, 3 घं. 01 मि. से 27 अगस्त, 15 घं. 31 मि.

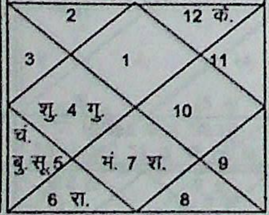
2
12 के.
3
1
11
शु. 4 गु.
10
चं.
बु. सू. 5
मं. 7 श.
9
6 रा.
8

27 अगस्त, 15 घं. 32 मि. से 29 अगस्त, 15 घं. 40 मि.

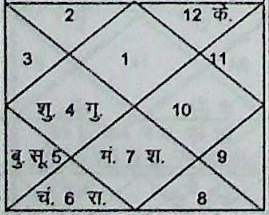
2
12 के.
3
1
11
शु. 4 गु.
10
बु. सू. 5
मं. 7 श.
9
चं. 6 रा.
8

29 अगस्त, 15 घं. 41 मि. से 30 अगस्त, 2 घं. 51 मि.

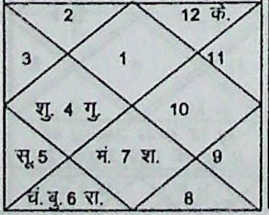
2
12 के.
3
1
11
शु. 4 गु.
10
सू. 5
मं. 7 श.
9
चं. बु. 6 रा.
8

30 अगस्त, 2 घं. 52 मि. से 1 सितंबर, 3 घं. 13 मि.

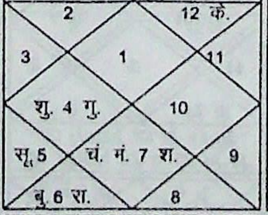
2
12 के.
3
1
11
शु. 4 गु.
10
सू. 5
चं. मं. 7 श.
9
बु. 6 रा.
8

1 सितंबर, 3 घं. 14 मि. से 1 सितंबर, 11 घं. 51 मि.

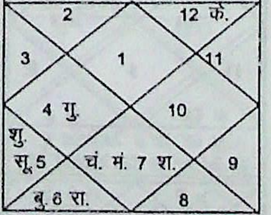
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
चं. मं. 7 श.
9
बु. 6 रा.
8

1 सितंबर, 11 घं. 52 मि. से 3 सितंबर, 17 घं. 31 मि.

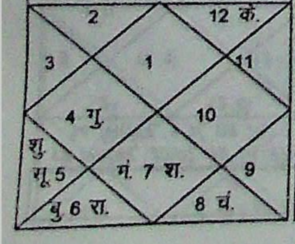
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
मं. 7 श.
9
बु. 6 रा.
8 चं.

3 सितंबर, 17 घं. 32 मि. से 5 सितंबर, 2 घं. 29 मि.

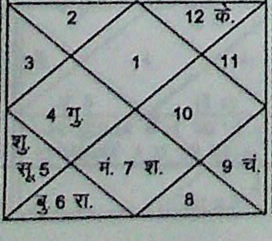
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
मं. 7 श.
9 चं.
बु. 6 रा.
8

5 सितंबर, 2 घं. 30 मि. से 5 सितंबर, 19 घं. 49 मि.

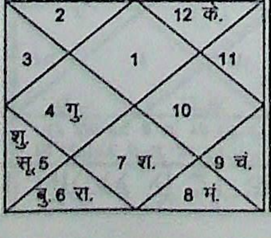
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9 चं.
बु. 6 रा.
8 मं.

5 सितंबर, 19 घं. 50 मि. से 7 सितंबर, 19 घं. 52 मि.

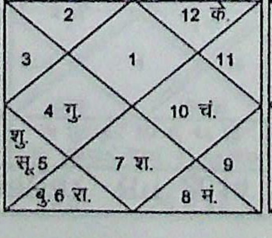
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10 चं.
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

7 सितंबर, 19 घं. 53 मि. से 9 सितंबर, 19 घं. 29 मि.

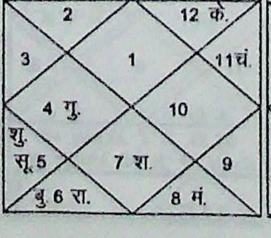
2
12 के.
3
1
11 चं.
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

9 सितंबर, 19 घं. 30 मि. से 11 सितंबर, 20 घं. 41 मि.

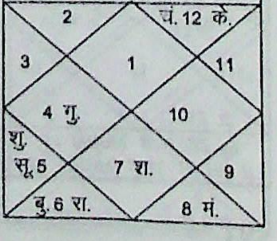
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

11 सितंबर से 21 अक्तूबर, सन् 2014 ई.

11 सितंबर, 20 घं. 42 मि. से
14 सितंबर, 1 घं. 05 मि.

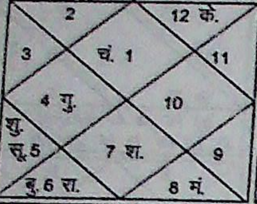
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

14 सितंबर, 1 घं. 06 मि. से
16 सितंबर, 9 घं. 20 मि.

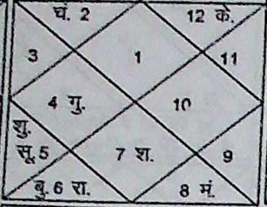
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

16 सितंबर, 9 घं. 21 मि. से
17 सितंबर, 6 घं. 10 मि.

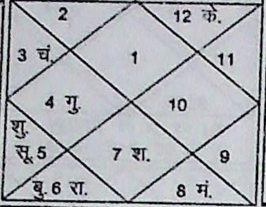
2
12 के.
3 चं.
1
11
4 गु.
10
शु.
सू. 5
7 श.
9
बु. 6 रा.
8 मं.

17 सितंबर, 6 घं. 11 मि. से
18 सितंबर, 20 घं. 41 मि.

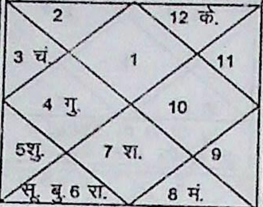
2
12 के.
3 चं.
1
11
4 गु.
10
5शु.
7 श.
9
सू. बु. 6 रा.
8 मं.

18 सितंबर, 20 घं. 42 मि. से
21 सितंबर, 2 घं. 15 मि.

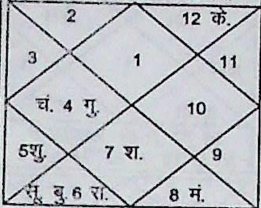
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5शु.
7 श.
9
सू. बु. 6 रा.
8 मं.

21 सितंबर, 2 घं. 16 मि. से
21 सितंबर, 9 घं. 22 मि.

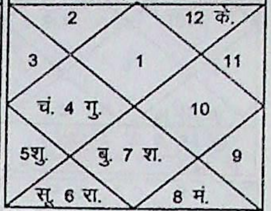
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5शु.
बु. 7 श.
9
सू. 6 रा.
8 मं.

21 सितंबर, 9 घं. 23 मि. से
23 सितंबर, 21 घं. 41 मि.

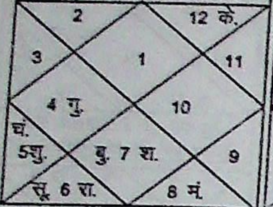
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं.
5शु.
बु. 7 श.
9
सू. 6 रा.
8 मं.

23 सितंबर, 21 घं. 42 मि. से
25 सितंबर, 8 घं. 02 मि.

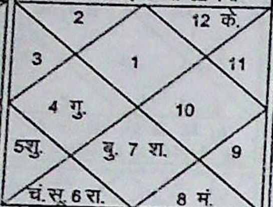
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5शु.
बु. 7 श.
9
चं. सू. 6 रा.
8 मं.

25 सितंबर, 8 घं. 03 मि. से
26 सितंबर, 8 घं. 33 मि.

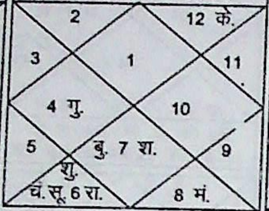
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
शु.
चं. सू. 6 रा.
8 मं.

26 सितंबर, 8 घं. 34 मि. से
28 सितंबर, 17 घं. 21 मि.

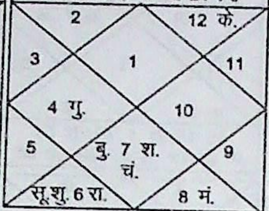
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
चं.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

28 सितंबर, 17 घं. 22 मि. से
30 सितंबर, 23 घं. 43 मि.

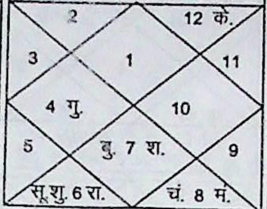
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
चं. 8 मं.

30 सितंबर, 23 घं. 44 मि. से
3 अक्तूबर, 3 घं. 30 मि.

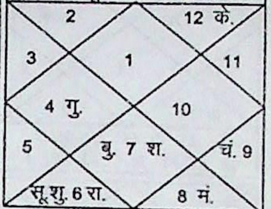
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
चं. 9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

3 अक्तूबर, 3 घं. 31 मि. से
5 अक्तूबर, 5 घं. 12 मि.

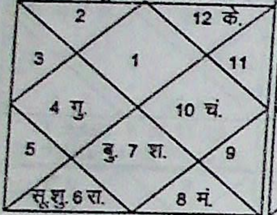
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10 चं.
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

5 अक्तूबर, 5 घं. 13 मि. से
7 अक्तूबर, 5 घं. 56 मि.

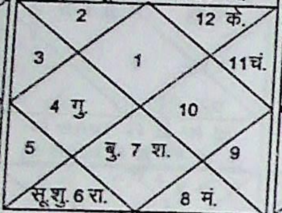
2
12 के.
3
1
11चं.
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

7 अक्तूबर, 5 घं. 57 मि. से
9 अक्तूबर, 7 घं. 14 मि.

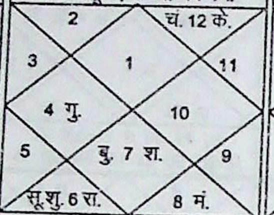
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

9 अक्तूबर, 7 घं. 15 मि. से
11 अक्तूबर, 10 घं. 45 मि.

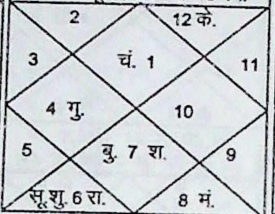
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

11 अक्तूबर, 10 घं. 46 मि. से
13 अक्तूबर, 17 घं. 41 मि.

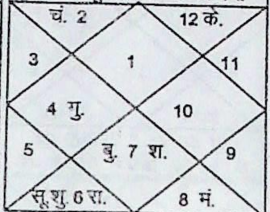
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

13 अक्तूबर, 17 घं. 42 मि. से
16 अक्तूबर, 4 घं. 06 मि.

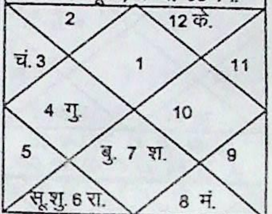
2
12 के.
चं. 3
1
11
4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

16 अक्तूबर, 4 घं. 07 मि. से
16 अक्तूबर, 13 घं. 08 मि.

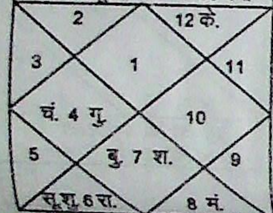
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5
बु. 7 श.
9
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

16 अक्तूबर, 13 घं. 09 मि. से
17 अक्तूबर, 18 घं. 09 मि.

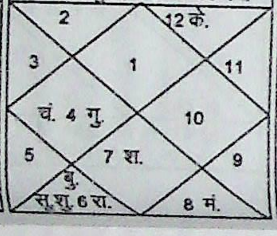
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5
7 श.
9
बु.
सू. शु. 6 रा.
8 मं.

17 अक्तूबर, 18 घं. 10 मि. से
18 अक्तूबर, 13 घं. 46 मि.

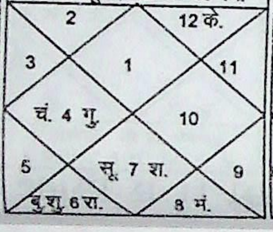
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5
सू. 7 श.
9
बु. शु. 6 रा.
8 मं.

18 अक्तूबर, 13 घं. 47 मि. से
18 अक्तूबर, 16 घं. 35 मि.

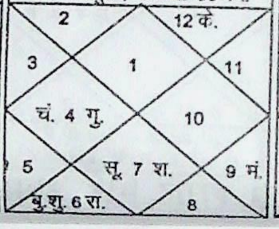
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5
सू. 7 श.
9 मं.
बु. शु. 6 रा.
8

18 अक्तूबर, 16 घं. 36 मि. से
19 अक्तूबर, 8 घं. 37 मि.

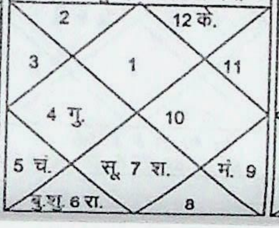
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5 चं.
सू. 7 श.
मं. 9
बु. शु. 6 रा.
8

19 अक्तूबर, 8 घं. 38 मि. से
21 अक्तूबर, 4 घं. 55 मि.

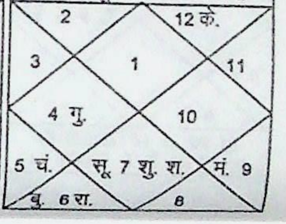
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5 चं.
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8

21 अक्तूबर से 30 नवंबर, सन् 2014 ई.

21 अक्तूबर, 4 घं. 56 मि. से 23 अक्तूबर, 15 घं. 22मि.

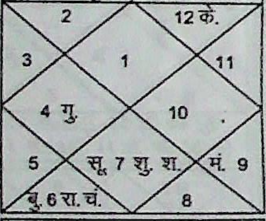
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा. चं.
8

23 अक्तूबर, 15 घं. 23 मि. से 25 अक्तूबर, 23 घं. 21 मि.

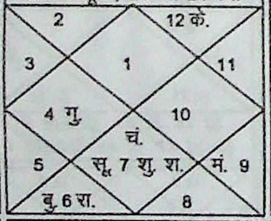
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं.
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8

25 अक्तूबर, 23 घं. 22 मि. से 28 अक्तूबर, 5 घं. 07 मि.

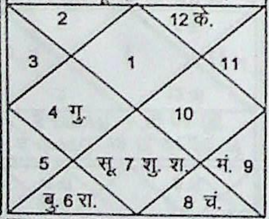
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8 चं.

28 अक्तूबर, 5 घं. 08 मि. से 30 अक्तूबर, 9 घं. 12 मि.

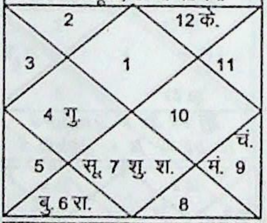
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं.
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8

30 अक्तूबर, 9 घं. 13 मि. से 1 नवंबर, 12 घं. 06 मि.

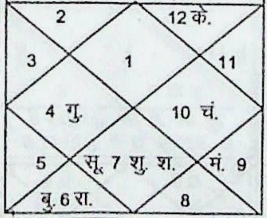
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10 चं.
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8

1 नवंबर, 12 घं. 07 मि. से 2 नवंबर, 20 घं. 53 मि.

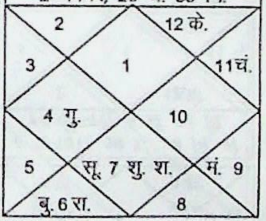
2
12 के.
3
1
11 चं.
4 गु.
10
5
सू. 7 शु. श.
मं. 9
बु. 6 रा.
8

2 नवंबर, 20 घं. 54 मि. से 3 नवंबर, 14 घं. 25 मि.

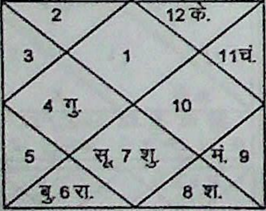
2
12 के.
3
1
11 चं.
4 गु.
10
5
सू. 7 शु.
मं. 9
बु. 6 रा.
8 श.

3 नवंबर, 14 घं. 26 मि. से 4 नवंबर, 21 घं. 15 मि.

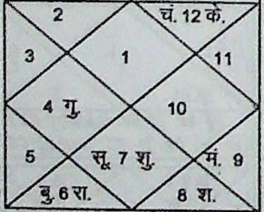
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
सू. 7 शु.
मं. 9
बु. 6 रा.
8 श.

4 नवंबर, 21 घं. 16 मि. से 5 नवंबर, 16 घं. 55 मि.

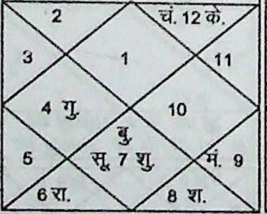
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
10
बु.
5
सू. 7 शु.
मं. 9
6 रा.
8 श.

5 नवंबर, 16 घं. 56 मि. से 7 नवंबर, 20 घं. 43 मि.

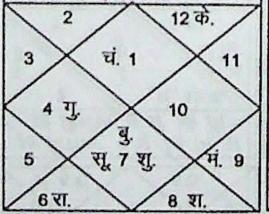
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
10
बु.
5
सू. 7 शु.
मं. 9
6 रा.
8 श.

7 नवंबर, 20 घं. 44 मि. से 10 नवंबर, 3 घं. 00 मि.

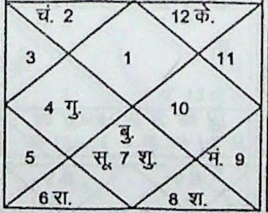
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
बु.
5
सू. 7 शु.
मं. 9
6 रा.
8 श.

10 नवंबर, 3 घं. 01 मि. से 12 नवंबर, 7 घं. 02 मि.

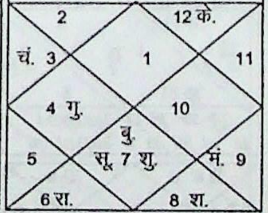
2
12 के.
चं. 3
1
11
4 गु.
10
बु.
5
सू. 7 शु.
मं. 9
6 रा.
8 श.

12 नवंबर, 7 घं. 03 मि. से 12 नवंबर, 12 घं. 29 मि.

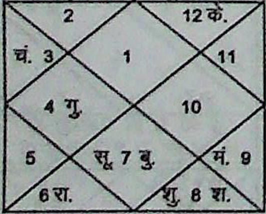
2
12 के.
चं. 3
1
11
4 गु.
10
5
सू. 7 बु.
मं. 9
6 रा.
शु. 8 श.

12 नवंबर, 12 घं. 30 मि. से 15 नवंबर, 0 घं. 35 मि.

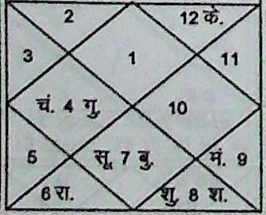
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
10
5
सू. 7 बु.
मं. 9
6 रा.
शु. 8 श.

15 नवंबर, 0 घं. 36 मि. से 16 नवंबर, 18 घं. 00 मि.

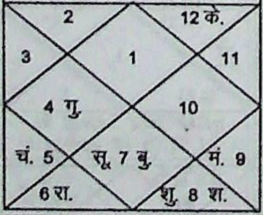
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं. 5
सू. 7 बु.
मं. 9
6 रा.
शु. 8 श.

16 नवंबर, 18 घं. 01 मि. से 17 नवंबर, 13 घं. 10 मि.

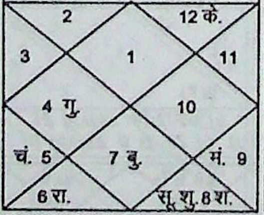
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं. 5
7 बु.
मं. 9
6 रा.
सू. शु. 8 श.

17 नवंबर, 13 घं. 11 मि. से 19 नवंबर, 23 घं. 46 मि.

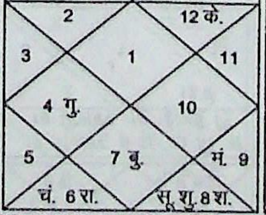
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
7 बु.
मं. 9
चं. 6 रा.
सू. शु. 8 श.

19 नवंबर, 23 घं. 47 मि. से 22 नवंबर, 7 घं. 12 मि.

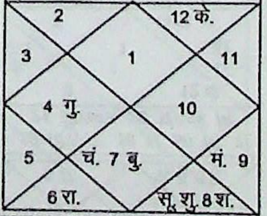
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
चं. 7 बु.
मं. 9
6 रा.
सू. शु. 8 श.

22 नवंबर, 7 घं. 13 मि. से 24 नवंबर, 11 घं. 49 मि.

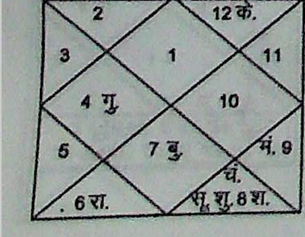
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
5
7 बु.
मं. 9
चं.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

24 नवंबर, 11 घं. 50 मि. से 24 नवंबर, 13 घं. 57 मि.

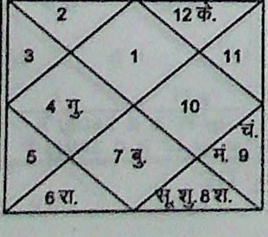
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं.
5
7 बु.
मं. 9
6 रा.
सू. शु. 8 श.

24 नवंबर, 13 घं. 58 मि. से 26 नवंबर, 14 घं. 51 मि.

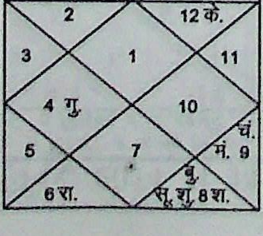
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10
चं.
5
7
मं. 9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

26 नवंबर, 14 घं. 52 मि. से 27 नवंबर, 12 घं. 57 मि.

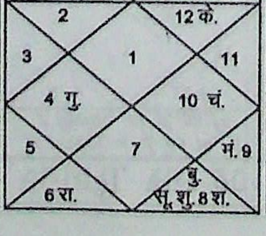
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
10 चं.
5
7
मं. 9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

27 नवंबर, 12 घं. 58 मि. से 28 नवंबर, 17 घं. 29 मि.

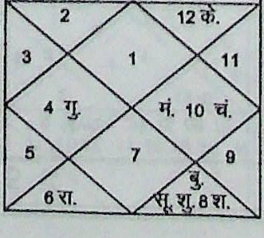
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10 चं.
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

28 नवंबर, 17 घं. 30 मि. से 30 नवंबर, 20 घं. 32 मि.

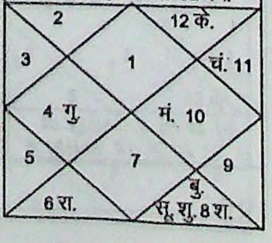
2
12 के.
3
1
चं. 11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

30 नवंबर, 2014 से 11 जनवरी, सन् 2015 ई.

30 नवंबर, 20 घं. 33 मि. से
3 दिसंबर, 0 घं. 21 मि.

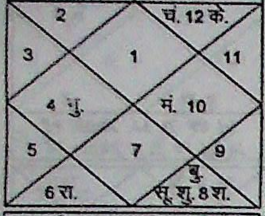
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

3 दिसंबर, 0 घं. 22 मि. से
5 दिसंबर, 5 घं. 18 मि.

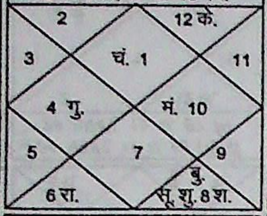
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

5 दिसंबर, 5 घं. 19 मि. से
6 दिसंबर, 4 घं. 42 मि.

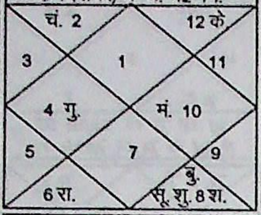
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

6 दिसंबर, 4 घं. 43 मि. से
7 दिसंबर, 11 घं. 58 मि.

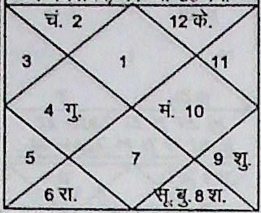
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

7 दिसंबर, 11 घं. 59 मि. से
9 दिसंबर, 21 घं. 06 मि.

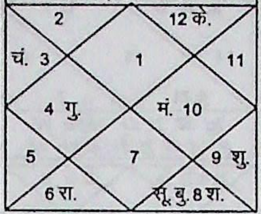
2
12 के.
चं. 3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

9 दिसंबर, 21 घं. 07 मि. से
12 दिसंबर, 8 घं. 47 मि.

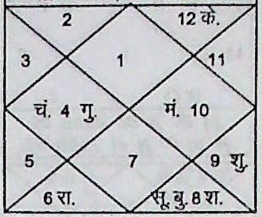
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

12 दिसंबर, 8 घं. 48 मि. से
13 दिसंबर, 15 घं. 09 मि.

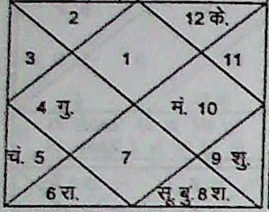
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
चं. 5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

13 दिसंबर, 15 घं. 10 मि. से
14 दिसंबर, 21 घं. 37 मि.

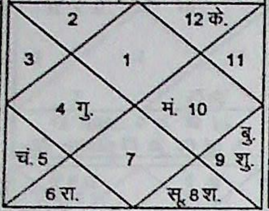
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
चं. 5
7
9 शु.
6 रा.
सू. 8 श.

14 दिसंबर, 21 घं. 38 मि. से
16 दिसंबर, 8 घं. 41 मि.

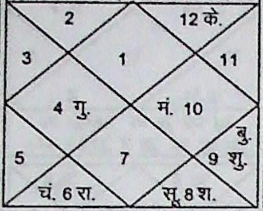
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 शु.
चं. 6 रा.
सू. 8 श.

16 दिसंबर, 8 घं. 42 मि. से
17 दिसंबर, 8 घं. 59 मि.

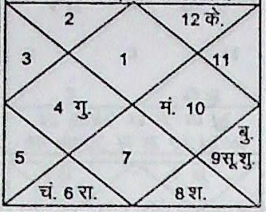
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9सू. शु.
चं. 6 रा.
8 श.

17 दिसंबर, 9 घं. 00 मि. से
19 दिसंबर, 16 घं. 49 मि.

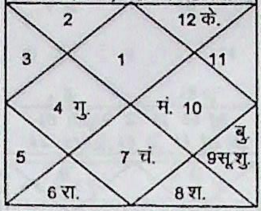
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7 चं.
9सू. शु.
6 रा.
8 श.

19 दिसंबर, 16 घं. 50 मि. से
21 दिसंबर, 20 घं. 56 मि.

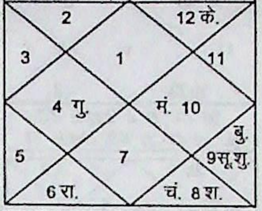
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9सू. शु.
6 रा.
चं. 8 श.

21 दिसंबर, 20 घं. 57 मि. से
23 दिसंबर, 22 घं. 39 मि.

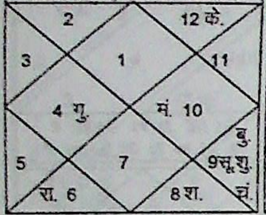
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9सू. शु.
रा. 6
8 श.
चं.

23 दिसंबर, 22 घं. 40 मि. से
25 दिसंबर, 23 घं. 48 मि.

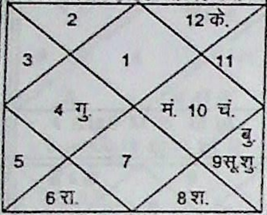
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10 चं.
बु.
5
7
9सू. शु.
6 रा.
8 श.

25 दिसंबर, 23 घं. 49 मि. से
28 दिसंबर, 1 घं. 57 मि.

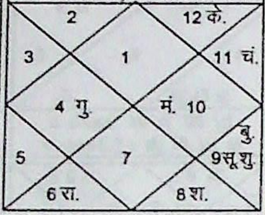
2
12 के.
3
1
11 चं.
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9सू. शु.
6 रा.
8 श.

28 दिसंबर, 1 घं. 58 मि. से
30 दिसंबर, 2 घं. 38 मि.

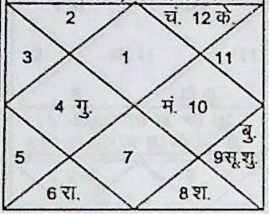
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9सू. शु.
6 रा.
8 श.

30 दिसंबर, 2 घं. 39 मि. से
30 दिसंबर, 5 घं. 54 मि.

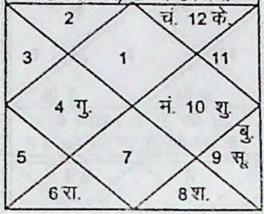
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10 शु.
बु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

30 दिसंबर, 5 घं. 55 मि. से
1 जनवरी, 11 घं. 44 मि.

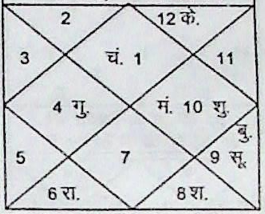
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
मं. 10 शु.
बु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

1 जनवरी, 11 घं. 45 मि. से
1 जनवरी, 11 घं. 46 मि.

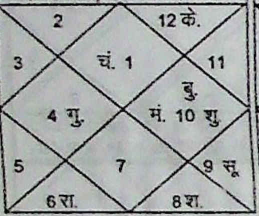
2
12 के.
3
चं. 1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

1 जनवरी, 11 घं. 47 मि. से
3 जनवरी, 19 घं. 23 मि.

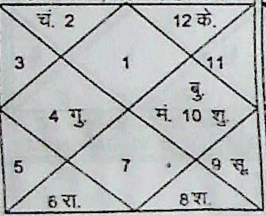
चं. 2
12 के.
3
1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

3 जनवरी, 19 घं. 24 मि. से
5 जनवरी, 1 घं. 58 मि.

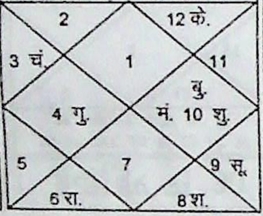
2
12 के.
3 चं.
1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

5 जनवरी, 1 घं. 59 मि. से
6 जनवरी, 4 घं. 54 मि.

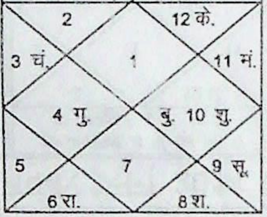
2
12 के.
3 चं.
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

6 जनवरी, 4 घं. 55 मि. से
8 जनवरी, 16 घं. 27 मि.

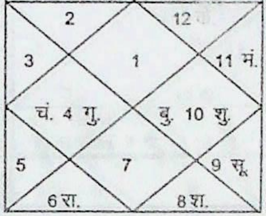
2
12
3
1
11 मं.
चं. 4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

8 जनवरी, 16 घं. 28 मि. से
11 जनवरी, 5 घं. 22 मि.

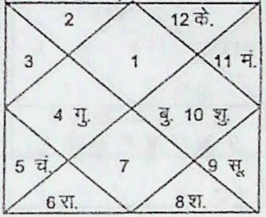
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5 चं.
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

11 जनवरी, से 22 फरवरी, सन् 2015 ई.

11 जनवरी, 5 घं. 23 मि. से
13 जनवरी, 17 घं. 37 मि.

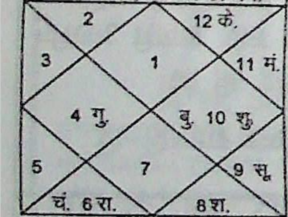
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
चं. 6 रा.
8 श.

13 जनवरी, 17 घं. 38 मि. से
14 जनवरी, 19 घं. 26 मि.

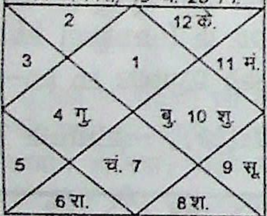
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
चं. 7
9 सू.
6 रा.
8 श.

14 जनवरी, 19 घं. 27 मि. से
16 जनवरी, 2 घं. 42 मि.

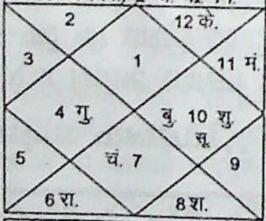
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
चं. 7
9
6 रा.
8 श.

16 जनवरी, 2 घं. 43 मि. से
18 जनवरी, 7 घं. 33 मि.

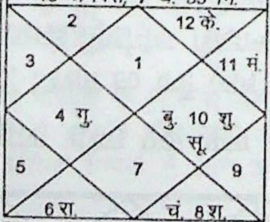
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

18 जनवरी, 7 घं. 34 मि. से
20 जनवरी, 8 घं. 57 मि.

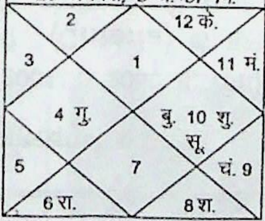
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

20 जनवरी, 8 घं. 58 मि. से
22 जनवरी, 8 घं. 49 मि.

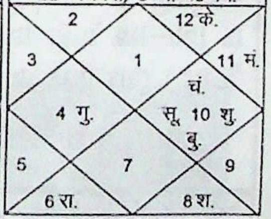
2
12 के.
3
1
11 मं.
चं.
4 गु.
सू. 10 शु.
बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

22 जनवरी, 8 घं. 50 मि. से
23 जनवरी, 2 घं. 17 मि.

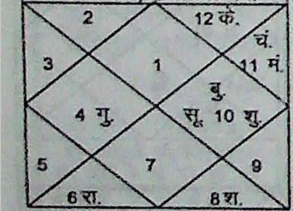
2
12 के.
चं.
3
1
11 मं.
बु.
4 गु.
सू. 10 शु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

23 जनवरी, 2 घं. 18 मि. से
24 जनवरी, 9 घं. 13 मि.

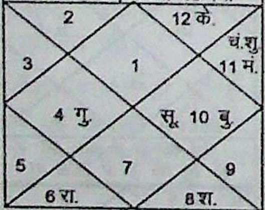
2
12 के.
चं.शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

24 जनवरी, 9 घं. 14 मि. से
26 जनवरी, 11 घं. 46 मि.

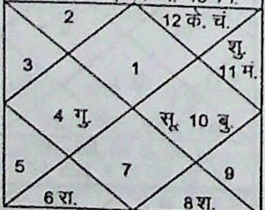
2
12 के. चं.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

26 जनवरी, 11 घं. 47 मि. से
28 जनवरी, 17 घं. 11 मि.

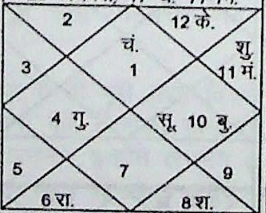
2
12 के.
चं.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

28 जनवरी, 17 घं. 12 मि. से
31 जनवरी, 1 घं. 16 मि.

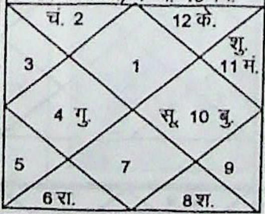
चं. 2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

31 जनवरी, 1 घं. 17 मि. से
2 फरवरी, 11 घं. 27 मि.

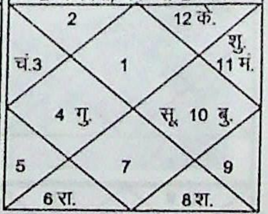
2
12 के.
शु.
चं.3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

2 फरवरी, 11 घं. 28 मि. से
4 फरवरी, 23 घं. 16 मि.

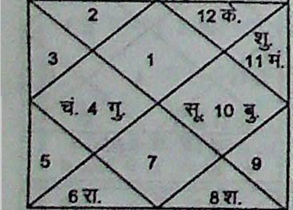
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
चं. 4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

4 फरवरी, 23 घं. 17 मि. से
7 फरवरी, 12 घं. 08 मि.

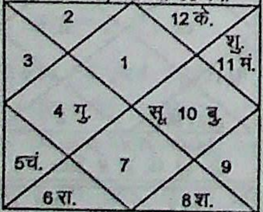
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5चं.
7
9
6 रा.
8 श.

7 फरवरी, 12 घं. 09 मि. से
10 फरवरी, 0 घं. 47 मि.

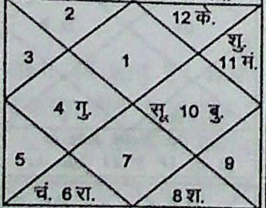
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

10 फरवरी, 0 घं. 48 मि. से
12 फरवरी, 11 घं. 09 मि.

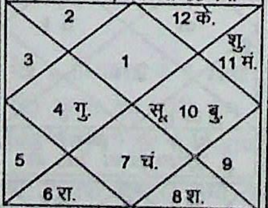
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7 चं.
9
6 रा.
8 श.

12 फरवरी, 11 घं. 10 मि. से
12 फरवरी, 13 घं. 12 मि.

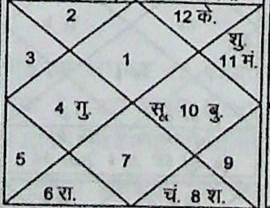
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

12 फरवरी, 13 घं. 13 मि. से
13 फरवरी, 8 घं. 25मि.

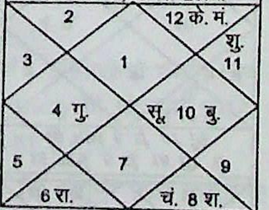
2
12 के. मं.
शु.
3
1
11
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

13 फरवरी, 8 घं. 26 मि. से
14 फरवरी 17 घं. 37 मि.

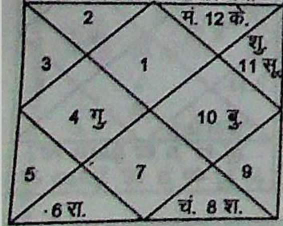
2
मं. 12 के.
शु.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

14 फरवरी, 17 घं. 38 मि. से
16 फरवरी 6 घं. 09 मि.

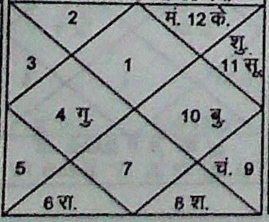
2
मं. 12 के.
शु.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

16 फरवरी, 6 घं. 10 मि. से
16 फरवरी 20 घं. 05 मि.

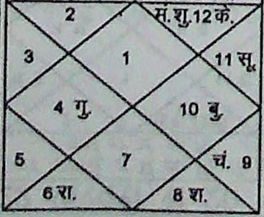
2
मं.शु.12के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

16 फरवरी, 20 घं. 06 मि. से
18 फरवरी 19 घं. 57 मि.

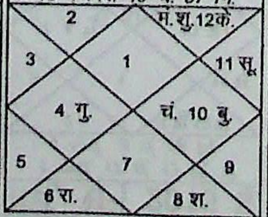
2
मं.शु.12के.
3
1
11 सू.
4 गु.
चं. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

18 फरवरी, 19 घं. 58 मि. से
20 फरवरी 19 घं. 14 मि.

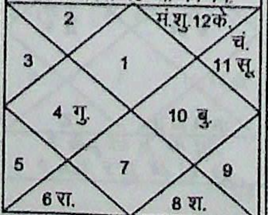
2
मं.शु.12के.
चं.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

20 फरवरी, 19 घं. 15 मि. से
22 फरवरी 19 घं. 59 मि.

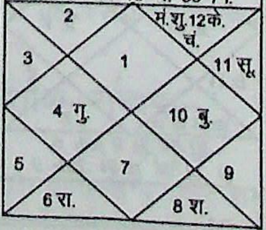
2
मं.शु.12के.
चं.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

30 नवंबर, 2014 से 11 जनवरी, सन् 2015 ई.

30 नवंबर, 20 घं. 33 मि. से
3 दिसंबर, 0 घं. 21 मि.

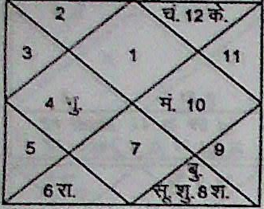
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

3 दिसंबर, 0 घं. 22 मि. से
5 दिसंबर, 5 घं. 18 मि.

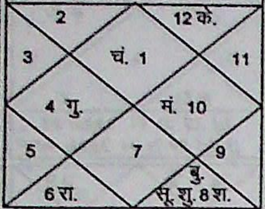
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

5 दिसंबर, 5 घं. 19 मि. से
6 दिसंबर, 4 घं. 42 मि.

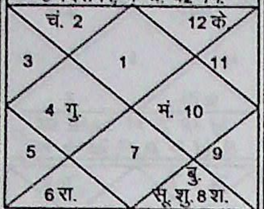
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9
बु.
6 रा.
सू. शु. 8 श.

6 दिसंबर, 4 घं. 43 मि. से
7 दिसंबर, 11 घं. 58 मि.

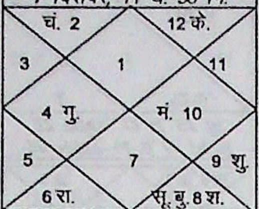
चं. 2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

7 दिसंबर, 11 घं. 59 मि. से
9 दिसंबर, 21 घं. 06 मि.

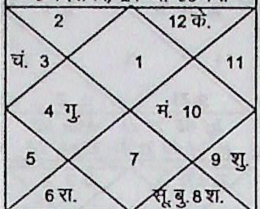
2
12 के.
चं. 3
1
11
4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

9 दिसंबर, 21 घं. 07 मि. से
12 दिसंबर, 8 घं. 47 मि.

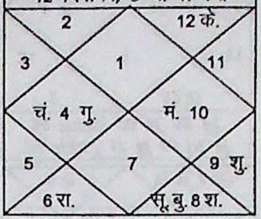
2
12 के.
3
1
11
चं. 4 गु.
मं. 10
5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

12 दिसंबर, 8 घं. 48 मि. से
13 दिसंबर, 15 घं. 09 मि.

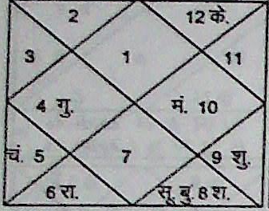
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
चं. 5
7
9 शु.
6 रा.
सू. बु. 8 श.

13 दिसंबर, 15 घं. 10 मि. से
14 दिसंबर, 21 घं. 37 मि.

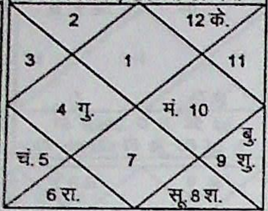
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
चं. 5
7
9 शु.
6 रा.
सू. 8 श.

14 दिसंबर, 21 घं. 38 मि. से
16 दिसंबर, 8 घं. 41 मि.

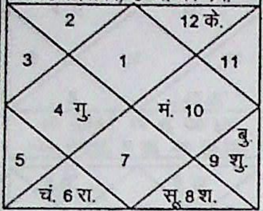
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 शु.
चं. 6 रा.
सू. 8 श.

16 दिसंबर, 8 घं. 42 मि. से
17 दिसंबर, 8 घं. 59 मि.

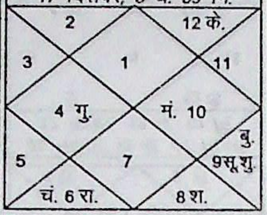
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 सू. शु.
चं. 6 रा.
8 श.

17 दिसंबर, 9 घं. 00 मि. से
19 दिसंबर, 16 घं. 49 मि.

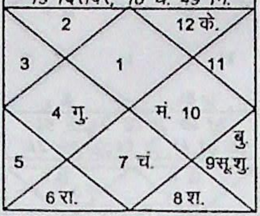
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7 चं.
9 सू. शु.
6 रा.
8 श.

19 दिसंबर, 16 घं. 50 मि. से
21 दिसंबर, 20 घं. 56 मि.

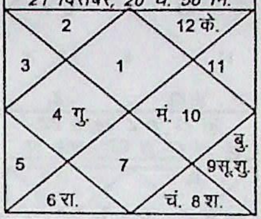
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 सू. शु.
6 रा.
चं. 8 श.

21 दिसंबर, 20 घं. 57 मि. से
23 दिसंबर, 22 घं. 39 मि.

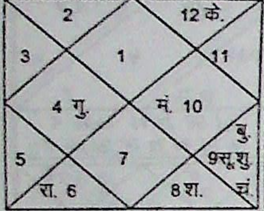
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 सू. शु.
रा. 6
8 श.
चं.

23 दिसंबर, 22 घं. 40 मि. से
25 दिसंबर, 23 घं. 48 मि.

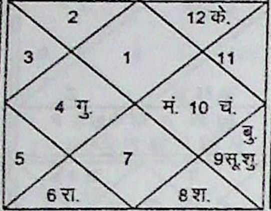
2
12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10 चं.
बु.
5
7
9 सू. शु.
6 रा.
8 श.

25 दिसंबर, 23 घं. 49 मि. से
28 दिसंबर, 1 घं. 57 मि.

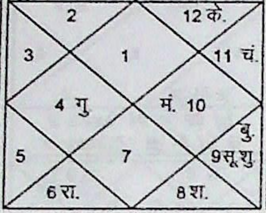
2
12 के.
3
1
11 चं.
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 सू. शु.
6 रा.
8 श.

28 दिसंबर, 1 घं. 58 मि. से
30 दिसंबर, 2 घं. 38 मि.

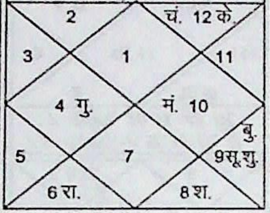
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10
बु.
5
7
9 सू. शु.
6 रा.
8 श.

30 दिसंबर, 2 घं. 39 मि. से
30 दिसंबर, 5 घं. 54 मि.

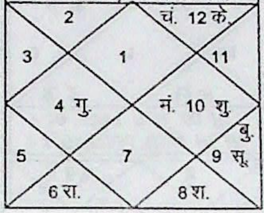
2
चं. 12 के.
3
1
11
4 गु.
मं. 10 शु.
बु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

30 दिसंबर, 5 घं. 55 मि. से
1 जनवरी, 11 घं. 44 मि.

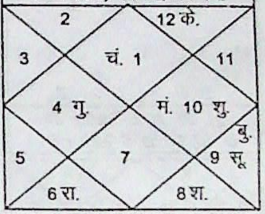
2
12 के.
3
चं. 1
11
4 गु.
मं. 10 शु.
बु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

1 जनवरी, 11 घं. 45 मि. से
1 जनवरी, 11 घं. 46 मि.

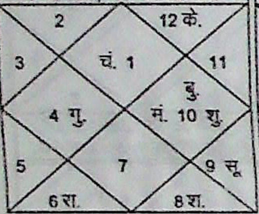
2
12 के.
3
चं. 1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

1 जनवरी, 11 घं. 47 मि. से
3 जनवरी, 19 घं. 23 मि.

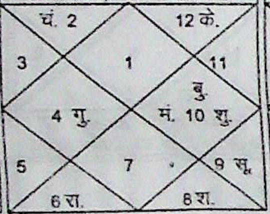
चं. 2
12 के.
3
1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

3 जनवरी, 19 घं. 24 मि. से
5 जनवरी, 1 घं. 58 मि.

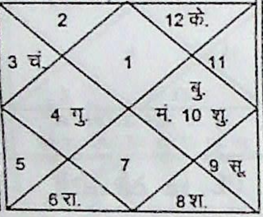
2
12 के.
3 चं.
1
11
बु.
4 गु.
मं. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

5 जनवरी, 1 घं. 59 मि. से
6 जनवरी, 4 घं. 54 मि.

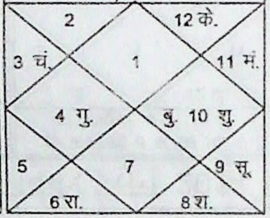
2
12 के.
3 चं.
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

6 जनवरी, 4 घं. 55 मि. से
8 जनवरी, 16 घं. 27 मि.

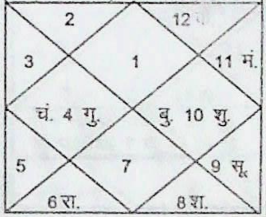
2
12
3
1
11 मं.
चं. 4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

8 जनवरी, 16 घं. 28 मि. से
11 जनवरी, 5 घं. 22 मि.

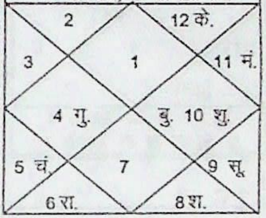
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5 चं.
7
9 सू.
6 रा.
8 श.

11 जनवरी, से 22 फरवरी, सन् 2015 ई.

11 जनवरी, 5 घं. 23 मि. से
13 जनवरी, 17 घं. 37 मि.

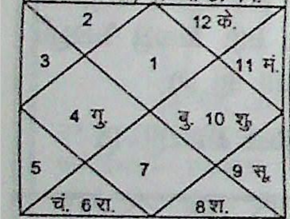
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
7
9 सू.
चं. 6 रा.
8 श.

13 जनवरी, 17 घं. 38 मि. से
14 जनवरी, 19 घं. 26 मि.

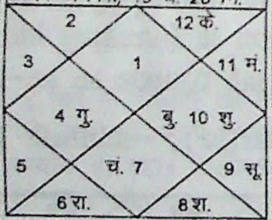
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
5
चं. 7
9 सू.
6 रा.
8 श.

14 जनवरी, 19 घं. 27 मि. से
16 जनवरी, 2 घं. 42 मि.

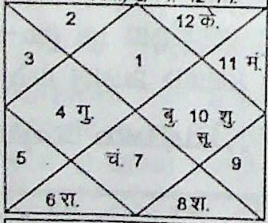
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
चं. 7
9
6 रा.
8 श.

16 जनवरी, 2 घं. 43 मि. से
18 जनवरी, 7 घं. 33 मि.

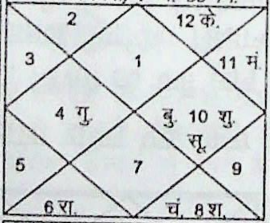
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

18 जनवरी, 7 घं. 34 मि. से
20 जनवरी, 8 घं. 57 मि.

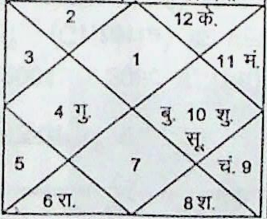
2
12 के.
3
1
11 मं.
4 गु.
बु. 10 शु.
सू.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

20 जनवरी, 8 घं. 58 मि. से
22 जनवरी, 8 घं. 49 मि.

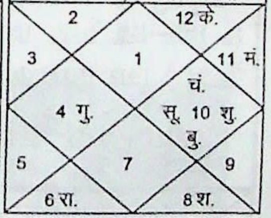
2
12 के.
3
1
11 मं.
चं.
4 गु.
सू. 10 शु.
बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

22 जनवरी, 8 घं. 50 मि. से
23 जनवरी, 2 घं. 17 मि.

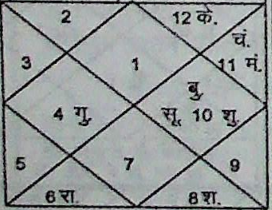
2
12 के.
चं.
3
1
11 मं.
बु.
4 गु.
सू. 10 शु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

23 जनवरी, 2 घं. 18 मि. से
24 जनवरी, 9 घं. 13 मि.

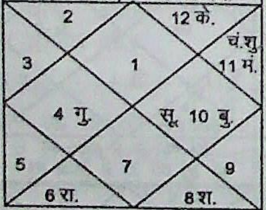
2
12 के.
चं.शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

24 जनवरी, 9 घं. 14 मि. से
26 जनवरी, 11 घं. 46 मि.

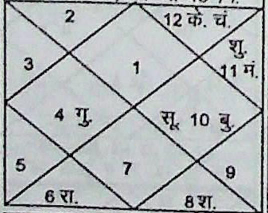
2
12 के. चं.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

26 जनवरी, 11 घं. 47 मि. से
28 जनवरी, 17 घं. 11 मि.

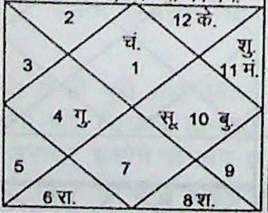
2
12 के.
चं.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

28 जनवरी, 17 घं. 12 मि. से
31 जनवरी, 1 घं. 16 मि.

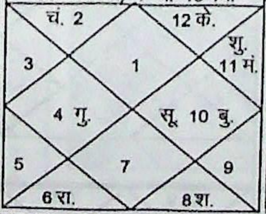
चं. 2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

31 जनवरी, 1 घं. 17 मि. से
2 फरवरी, 11 घं. 27 मि.

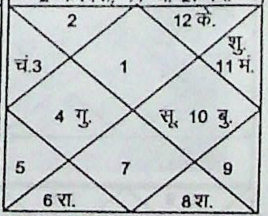
2
12 के.
शु.
चं.3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

2 फरवरी, 11 घं. 28 मि. से
4 फरवरी, 23 घं. 16 मि.

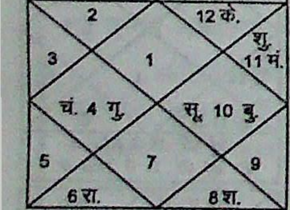
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
चं. 4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

4 फरवरी, 23 घं. 17 मि. से
7 फरवरी, 12 घं. 08 मि.

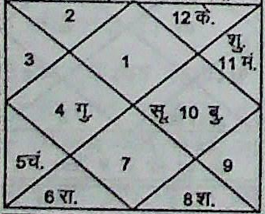
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5चं.
7
9
6 रा.
8 श.

7 फरवरी, 12 घं. 09 मि. से
10 फरवरी, 0 घं. 47 मि.

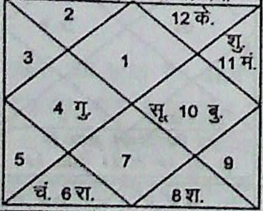
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

10 फरवरी, 0 घं. 48 मि. से
12 फरवरी, 11 घं. 09 मि.

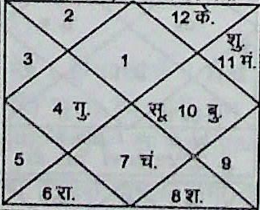
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7 चं.
9
6 रा.
8 श.

12 फरवरी, 11 घं. 10 मि. से
12 फरवरी, 13 घं. 12 मि.

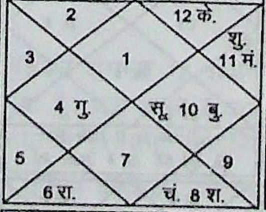
2
12 के.
शु.
3
1
11 मं.
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

12 फरवरी, 13 घं. 13 मि. से
13 फरवरी, 8 घं. 25मि.

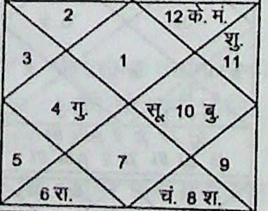
2
12 के. मं.
शु.
3
1
11
4 गु.
सू. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

13 फरवरी, 8 घं. 26 मि. से
14 फरवरी 17 घं. 37 मि.

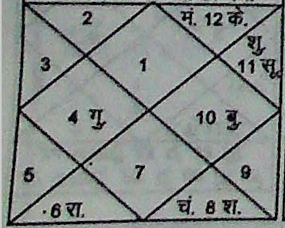
2
मं. 12 के.
शु.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

14 फरवरी, 17 घं. 38 मि. से
16 फरवरी 6 घं. 09 मि.

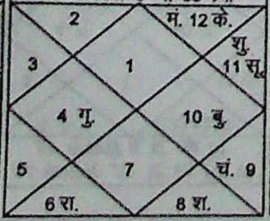
2
मं. 12 के.
शु.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

16 फरवरी, 6 घं. 10 मि. से
16 फरवरी 20 घं. 05 मि.

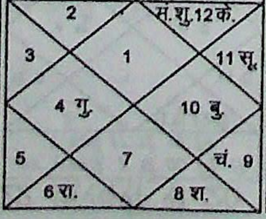
2
मं.शु.12के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

16 फरवरी, 20 घं. 06 मि. से
18 फरवरी 19 घं. 57 मि.

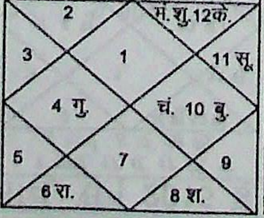
2
मं.शु.12के.
3
1
11 सू.
4 गु.
चं. 10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

18 फरवरी, 19 घं. 58 मि. से
20 फरवरी 19 घं. 14 मि.

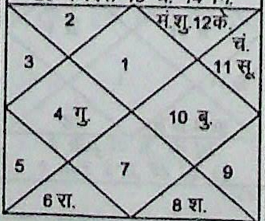
2
मं.शु.12के.
चं.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

20 फरवरी, 19 घं. 15 मि. से
22 फरवरी 19 घं. 59 मि.

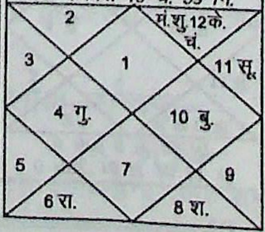
2
मं.शु.12के.
चं.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

22 फरवरी से 20 मार्च, सन 2015 ई.

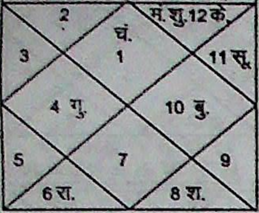
22 फरवरी, 20 घं. 00 मि. से 24 फरवरी 23 घं. 44 मि.
2
चं.
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

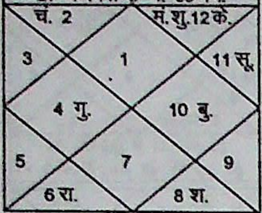
24 फरवरी, 23 घं. 45 मि. से 27 फरवरी 6 घं. 59 मि.
चं. 2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

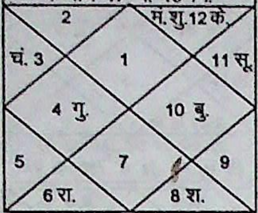
27 फरवरी, 7 घं. 00 मि. से 1 मार्च 17 घं. 16 मि.
2
मं.शु.12 के.
चं. 3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

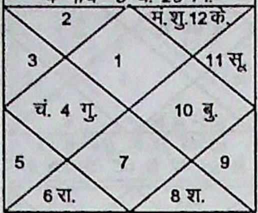
1 मार्च, 17 घं. 17 मि. से 4 मार्च 5 घं. 26 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
चं. 4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

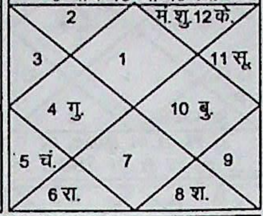
4 मार्च, 5 घं. 27 मि. से 6 मार्च 18 घं. 19 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5 चं.
7
9
6 रा.
8 श.

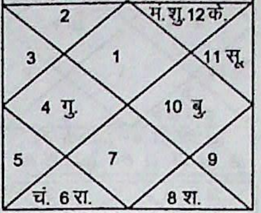
6 मार्च, 18 घं. 20 मि. से 9 मार्च 6 घं. 29 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

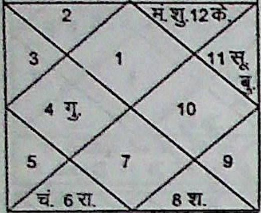
9 मार्च, 6 घं. 30 मि. से 9 मार्च 6 घं. 50 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

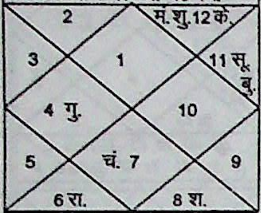
9 मार्च, 6 घं. 51 मि. से 11 मार्च 17 घं. 40 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
चं. 7
9
6 रा.
8 श.

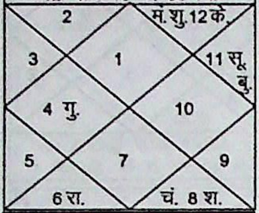
11 मार्च, 17 घं. 41 मि. से 12 मार्च 18 घं. 06 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

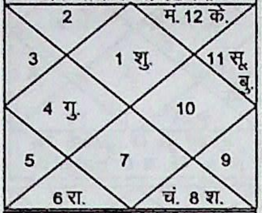
12 मार्च, 18 घं. 07 मि. से 14 मार्च 1 घं. 32 मि.
2
मं. 12 के.
3
1 शु.
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

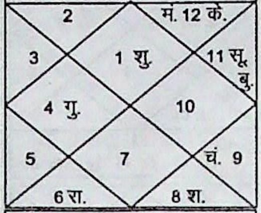
14 मार्च, 1 घं. 33 मि. से 15 मार्च 5 घं. 17 मि.
2
मं. 12 के.
3
1 शु.
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

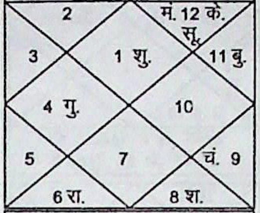
15 मार्च, 5 घं. 18 मि. से 16 मार्च 5 घं. 47 मि.
2
मं. 12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

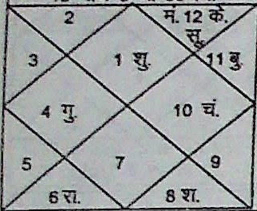
16 मार्च, 5 घं. 48 मि. से 18 मार्च 6 घं. 58 मि.
2
मं. 12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10 चं.
5
7
9
6 रा.
8 श.

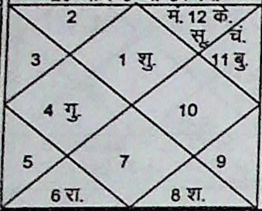
18 मार्च, 6 घं. 59 मि. से 20 मार्च 6 घं. 34 मि.
2
मं. 12 के.
सू.
चं.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
8 श.

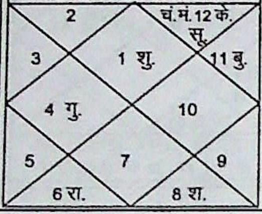
20 मार्च, 6 घं. 35 मि. से 20 मार्च 15 घं. 06 मि.
2
चं.मं.12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
8 श.

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– **''श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्''** द्वारा रचित एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन – व्रत–पर्व विवेक

जो कि व्रत–पर्व पर आधारित एक ऐसा विशिष्ट संकलन है, जिसमें 50 वर्षों (सन् 2001 से 2050 ई. तक) के सभी धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, जैन एवम् क्रिश्चियन) के व्रत–पर्वों की तारीखें और उनके निर्णायक सिद्धान्तों (Criteria) के इलावा हिन्दू व्रत–पर्वों से सम्बन्धित व्रत–कथाएं तथा देवी–देवताओं की पूजा–अर्चनार्थ आरतियां भी दी गईं हैं। डायरी, पंचांग, जन्त्री तथा कैलेण्डर के निर्माता–प्रकाशकों, ज्योतिषियों एवं धर्मनिष्ठ लोगों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है।

ज्येष्ठभ्राता श्री सत्यव्रत जी भी हमसे बिछुड़ गए

(श्रद्धाञ्जलि)

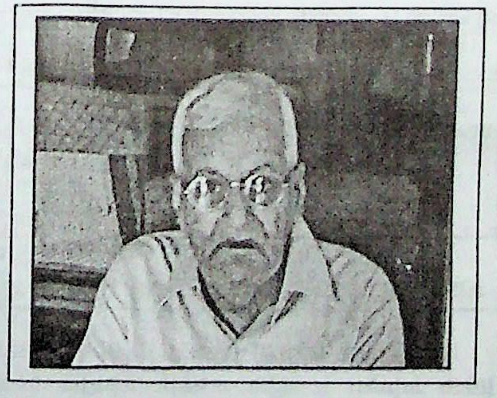

13 मई, 2013 ई. को श्रीसत्यव्रत जी के आकस्मिक निधन से हमारे परिवार के सिर से अनन्य उत्तमवृद्ध के वरद हस्त की छाया भी जाती रही। आयु की 83 वर्ष की अवधि में आपकी जीवनचर्या और मनोविनोद– एकमात्र स्वाध्याय ही रहा। बाल्यकाल से ही आपकी अद्‌भुत प्रतिभा सम्पर्क में आने वाले लोगों को चमत्कृत कर देने वाली थी।

18 वर्ष की आयु में ही आपने पंजाब यूनिवर्सिटी से **'शास्त्री–परीक्षा'** विशेष–योग्यता से उत्तीर्ण की। तदनन्तर **'साहित्याचार्य'** उपाधि **'महाराज संस्कृत–कॉलेज'** जयपुर से सर्वाचार्य–परीक्षार्थियों में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कर अर्जित की।

संस्कृत में गद्य–पद्य–रचना की विलक्षण प्रतिभा आप में कौमार्यावस्था में ही पूरी तरह विकसित दीखने लगी थी। 16 वर्ष की अवस्था में ही आपने **'बटुकभैरव स्तव'** की रचना की, जिसकी तात्कालिक संस्कृत–पत्र–पत्रिकाओं में आश्चर्यानुप्राणित श्लाघाभरी समीक्षाएं छपीं। इसके अनन्तर इन्होंने लगभग 6–7 विभिन्न देवी–देवताओं की संस्कृतपद्यमयी स्तुतियां, **' भ्रमभञ्जन नाटकम् '** तथा हिमाचल प्रदेश की लोककथा की नायिका **सुन्दरी–गम्भरी** की प्रणयकथा पर आधारित एक 7 अंक का **' गम्भरी नाटकम् '** संस्कृत में लिखा। काव्यप्रकाश, रसगंगाधर जैसे अलंकारग्रन्थों की श्रेणी का एक प्रौढ़ मौलिक ग्रन्थ **'काव्यमीमांसा'** इनकी विशेष कृति है, जो इनके साहित्यशास्त्रीय रस, अलंकार, शब्दशक्ति आदि सिद्धान्तों पर गम्भीर आधिपत्य की परिचायक है।

आपकी योग्यता का एक पक्ष बहुत कम लोगों को ज्ञात है। आपने मेरे (**प्रियव्रत के**) साथ मिलकर लगभग 12 वर्ष तक **' श्रीमार्त्तण्ड पंचांग '** की दृक्पक्षीय सम्पूर्ण गणित (तिथ्यादि, स्पष्टग्रह, ग्रहोदयास्त, सूर्य–चन्द्रग्रहण आदि) करने का भारी श्रम किया है। उस समय Computer की तो बात छोड़िए, Manual Calculator भी भारत में उपलब्ध नहीं थे। इस दृक्सिद्ध **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** का मूल आपके पावन स्वेदस्रोत से अभिषिक्त है।

आप अपने पीछे सर्वतोभावेन सम्पन्न दो सौभाग्यवती विदुषी बेटियां **डॉ. राजेश कुमारी शर्मा, डॉ. प्रतिभा कौशिक**, एक बेटा चि. प्रद्युम्न तथा वृद्धापत्नी (भाभी जी) छोड़ गए हैं।

प्रभु से प्रार्थना है, हमारे दिवंगत आदरणीय ज्येष्ठ भ्राता जी की आत्मा को वे शाश्वत शान्ति दें तथा हम सभी को उनका यह असह्य वियोग सहन करने की क्षमता।

शोक–सन्तप्त–

अनुज–

प्रियव्रत शर्मा–इन्दुशेखर शर्मा

22 फरवरी से 20 मार्च, सन् 2015 ई.

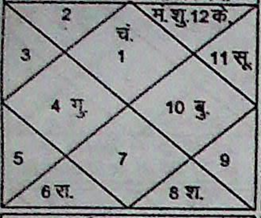
22 फरवरी, 20 घं. 00 मि. से
24 फरवरी 23 घं. 44 मि.
2
चं.
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

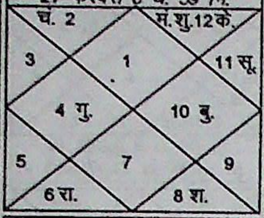
24 फरवरी, 23 घं. 45 मि. से
27 फरवरी 6 घं. 59 मि.
चं. 2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

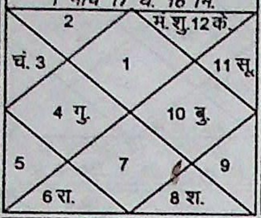
27 फरवरी, 7 घं. 00 मि. से
1 मार्च 17 घं. 16 मि.
2
मं.शु.12 के.
चं. 3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

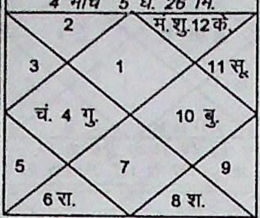
1 मार्च, 17 घं. 17 मि. से
4 मार्च 5 घं. 26 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
चं. 4 गु.
10 बु.
5
7
9
6 रा.
8 श.

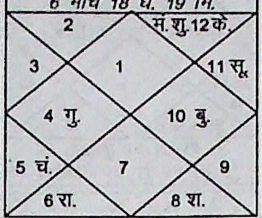
4 मार्च, 5 घं. 27 मि. से
6 मार्च 18 घं. 19 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5 चं.
7
9
6 रा.
8 श.

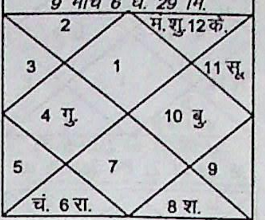
6 मार्च, 18 घं. 20 मि. से
9 मार्च 6 घं. 29 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
4 गु.
10 बु.
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

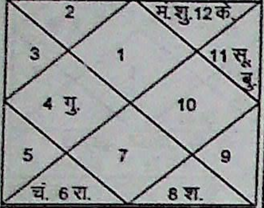
9 मार्च, 6 घं. 30 मि. से
9 मार्च 6 घं. 50 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
चं. 6 रा.
8 श.

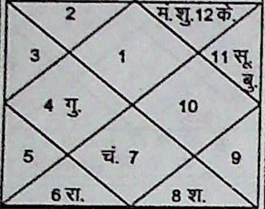
9 मार्च, 6 घं. 51 मि. से
11 मार्च 17 घं. 40 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
चं. 7
9
6 रा.
8 श.

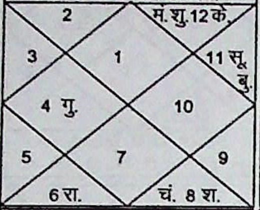
11 मार्च, 17 घं. 41 मि. से
12 मार्च 18 घं. 06 मि.
2
मं.शु.12 के.
3
1
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

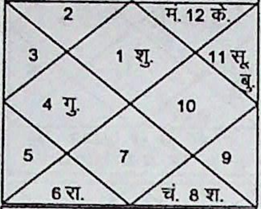
12 मार्च, 18 घं. 07 मि. से
14 मार्च 1 घं. 32 मि.
2
मं. 12 के.
3
1 शु.
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
चं. 8 श.

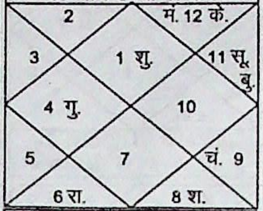
14 मार्च, 1 घं. 33 मि. से
15 मार्च 5 घं. 17 मि.
2
मं. 12 के.
3
1 शु.
11 सू.
बु.
4 गु.
10
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

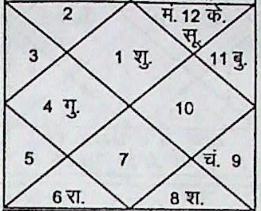
15 मार्च, 5 घं. 18 मि. से
16 मार्च 5 घं. 47 मि.
2
मं. 12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
चं. 9
6 रा.
8 श.

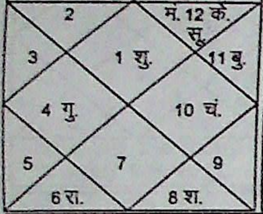
16 मार्च, 5 घं. 48 मि. से
18 मार्च 6 घं. 58 मि.
2
मं. 12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10 चं.
5
7
9
6 रा.
8 श.

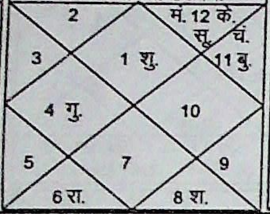
18 मार्च, 6 घं. 59 मि. से
20 मार्च 6 घं. 34 मि.
2
मं. 12 के.
सू. चं.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
8 श.

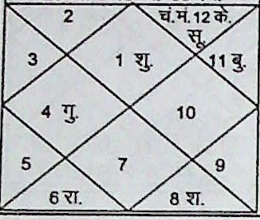
20 मार्च, 6 घं. 35 मि. से
20 मार्च 15 घं. 06 मि.
2
चं.मं.12 के.
सू.
3
1 शु.
11 बु.
4 गु.
10
5
7
9
6 रा.
8 श.

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– **''श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्''** द्वारा रचित एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन – व्रत–पर्व विवेक

जो कि व्रत–पर्व पर आधारित एक ऐसा विशिष्ट संकलन है, जिसमें 50 वर्षों (सन् 2001 से 2050 ई. तक) के सभी धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, जैन एवम् क्रिश्चियन) के व्रत–पर्वों की तारीखें और उनके निर्णायक सिद्धान्तों (Criteria) के इलावा हिन्दू व्रत–पर्वों से सम्बन्धित व्रत–कथाएं तथा देवी–देवताओं की पूजा–अर्चनार्थ आरतियां भी दी गई हैं। डायरी, पंचांग, जन्त्री तथा कैलेण्डर के निर्माता–प्रकाशकों, ज्योतिषियों एवं धर्मनिष्ठ लोगों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है।

ज्येष्ठभ्राता श्री सत्यव्रत जी भी हमसे बिछुड़ गए

(श्रद्धाञ्जलि)

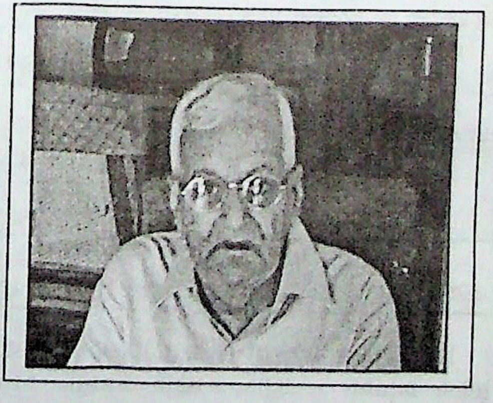

13 मई, 2013 ई. को श्रीसत्यव्रत जी के आकस्मिक निधन से हमारे परिवार के सिर से अनन्य उत्तमवृद्ध के वरद हस्त की छाया भी जाती रही। आयु की 83 वर्ष की अवधि में आपकी जीवनचर्या और मनोविनोद– एकमात्र स्वाध्याय ही रहा। बाल्यकाल से ही आपकी अद्भुत प्रतिभा सम्पर्क में आने वाले लोगों को चमत्कृत कर देने वाली थी।

18 वर्ष की आयु में ही आपने पंजाब यूनिवर्सिटी से **'शास्त्री–परीक्षा'** विशेष–योग्यता से उतीर्ण की। तदनन्तर **'साहित्याचार्य'** उपाधि **'महाराज संस्कृत–कॉलेज'** जयपुर से सर्वाचार्य–परीक्षार्थियों में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कर अर्जित की।

संस्कृत में गद्य–पद्य–रचना की विलक्षण प्रतिभा आप में कौमार्यावस्था में ही पूरी तरह विकसित दीखने लगी थी। 16 वर्ष की अवस्था में ही आपने **'बटुकभैरव स्तव'** की रचना की, जिसकी तात्कालिक संस्कृत–पत्र–पत्रिकाओं में आश्चर्यानुप्राणित श्लाघाभरी समीक्षाएं छपीं। इसके अनन्तर इन्होंने लगभग 6–7 विभिन्न देवी–देवताओं की संस्कृतपद्यमयी स्तुतियां, **' भ्रमभञ्जन नाटकम् '** तथा हिमाचल प्रदेश की लोककथा की नायिका **सुन्दरी–गम्भरी** की प्रणयकथा पर आधारित एक 7 अंक का **' गम्भरी नाटकम् '** संस्कृत में लिखा। काव्यप्रकाश, रसगंगाधर जैसे अलंकारग्रन्थों की श्रेणी का एक प्रौढ़ मौलिक ग्रन्थ **'काव्यमीमांसा'** इनकी विशेष कृति है, जो इनके साहित्यशास्त्रीय रस, अलंकार, शब्दशक्ति आदि सिद्धान्तों पर गम्भीर आधिपत्य की परिचायक है।

आपकी योग्यता का एक पक्ष बहुत कम लोगों को ज्ञात है। आपने मेरे (**प्रियव्रत** के) साथ मिलकर लगभग 12 वर्ष तक **' श्रीमार्त्तण्ड पंचांग '** की दृक्पक्षीय सम्पूर्ण गणित (तिथ्यादि, स्पष्टग्रह, ग्रहोदयास्त, सूर्य–चन्द्रग्रहण आदि) करने का भारी श्रम किया है। उस समय Computer की तो बात छोड़िए, Manual Calculator भी भारत में उपलब्ध नहीं थे। इस दृक्सिद्ध **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** का मूल आपके पावन स्वेदस्रोत से अभिषिक्त है।

आप अपने पीछे सर्वतोभावेन सम्पन्न दो सौभाग्यवती विदुषी बेटियां **डॉ. राजेश कुमारी शर्मा, डॉ. प्रतिभा कौशिक,** एक बेटा चि. प्रद्युम्न तथा वृद्धापत्नी (भाभी जी) छोड़ गए हैं।

प्रभु से प्रार्थना है, हमारे दिवंगत आदरणीय ज्येष्ठ भ्राता जी की आत्मा को वे शाश्वत शान्ति दें तथा हम सभी को उनका यह असह्य वियोग सहन करने की क्षमता।

शोक–सन्तप्त–
अनुज–
प्रियव्रत शर्मा–इन्दुशेखर शर्मा

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2071 वि.)

जन्मकुण्डली मे शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म मे अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। **वृष** को पहिले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अंत के अढाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढाई वर्ष, **सिंह** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। **कन्या** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **तुला** को आखिर के अढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, **मकर** को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुंभ** को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

सं. 2071 वि. में शनि–संचार का फल

तुला राशि में शनि का प्रवेश–गत संवत् 2069 वि. में 4 अगस्त, सन् 2012 ई. को 08 घं. 49 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर शतभिषा नक्षत्र और कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव मार्गी गति से तुला राशि में पदार्पण कर सं. 2071 वि. में 2 नवंबर, सन् 2014 ई. तक तुलाराशि में ही विचरण करते रहेंगे।

वृश्चिक राशि में शनि का प्रवेश–संवत् 2071 वि. में 2 नवंबर, सन् 2014 ई. को 20 घं. 54 मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव वृश्चिक राशि में पदार्पण करके संवत् 2071 वि. के अन्त तक वृश्चिक राशि में ही विचरण करते रहेंगे।

तुला राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(सं. 2071 वि. के प्रारम्भ से 2 नवंबर, सन् 2014 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढती या उतरती	
कर्क	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।
कन्या	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन–विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथाव्यय, धनहानि।
तुला	साढेसाती	रजत	हृदय	– –	व्यापार में प्रगति, धन–धान्यसमृद्धि, प्रभाववृद्धि, सम्मान–प्राप्ति, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।
मीन	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरकष्ट, रक्त–पित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।

वृश्चिक राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(2 नवंबर, सन् 2014 ई. से सं. 2071 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	अचानक धनलाभ, स्त्री–पुत्र से सुख, सम्पत्ति–लाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें, सेहत ठीक।
तुला	साढ़ेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धनधान्यसमृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढ़े, राजपक्ष से सम्मान, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढ़ेसाती	लौह	हृदय	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पितविकार से परेशानी, स्त्री कष्ट, पशु किंवा सन्तानपक्ष से कष्ट, व्यापार में हानि एवं राजपक्ष से भय।
धनु	साढ़ेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	व्यापार में प्रचुर लाभ हो। स्त्रीपक्ष एवं पुत्र से सुख, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें।
मेष	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, रोगों से परेशानी, वृथा खर्च, धनहानिभय।

नोटः– पीछे दिए गए कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल तुलाराशि एवं वृश्चिक राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है– यह समझ लें।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले **"अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"**– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्तसमय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली–धूप– लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"– इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें :–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति–कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान्, दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) नीली नग या नीलम धारण करना भी ठीक रहेगा।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः, शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शनैश्चर–स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

" ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

संवत् 2071 वि. में गुरुसंचार का फल

मिथुन–राशि में गुरु का प्रवेश– विगत संवत् 2070 वि. में 31 मई, सन् 2013 ई. को 6 घं. 48 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर धनिष्ठा नक्षत्र, वैधृति योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मिथुन–राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2071 वि. में 19 जून, 2014 ई. तक मिथुन राशि में ही रहेंगे।

मिथुन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(सं. 2071 वि. के प्रारम्भ से 19 जून, 2014 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग–भय	सुख	धनहानि

कर्क-राशि में गुरु का प्रवेश

सं. 2071 वि. में 19 जून, 2014 ई. को 8 घं. 47 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर पू. भा. नक्षत्र, आयुष्मान योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव कर्कराशि में प्रविष्ट होकर सं. 2071 वि. के अन्त तक कर्कराशि में ही रहेंगे।

कर्क-राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(19 जून, संन् 2014 ई. से सं. 2071 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग-भय	सुखप्राप्ति

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :-गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़-शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरुग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है:- " **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती तर्जनी अंगुली में धारण करें।

क्या आपको मालूम है कि **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** संक्षिप्तरूप में **"श्री बटुक पञ्चांग"** के नाम से प्रकाशित होता है ? **"श्री बटुक पञ्चांग"** पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

सं. 2071 वि. में राहु-संचार का फल

तुला राशि में राहु प्रवेश -विगत संवत् 2069 वि. में 23 दिसंबर, सन् 2012 ई. को 18 घं. 7 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर भरणी नक्षत्र, शिवयोग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय राहु तुलाराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2071 वि. में 12 जुलाई, सन् 2014 ई. तक तुलाराशि में ही संचरण करेगा।

तुला-राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(सं. 2071 वि. के प्रारम्भ से 12 जुलाई, सन् 2014 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि

कन्या राशि में राहुप्रवेश- सं. 2071 वि. में 12 जुलाई, सन् 2014 ई. को 21 घं. 51 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उ.षा. नक्षत्र, वैधृति योग एवं धनुस्थ-चन्द्र के समय राहु कन्या राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2071 वि. के अन्त तक कन्याराशि में ही संचरण करेगा।

कन्या-राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(12 जुलाई, सन् 2014 ई. से सं. 2071 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि	राजभय

राहु जन्माङ्ग में या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणा-सहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु का बीजमन्त्र (" ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।") का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहु-शान्त्यर्थ गोमेद 5/7 रत्ती धारण कर सकते हैं।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2071 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- संवत् 2071 वि. की ग्रहपरिषद् का राजा एवम् मन्त्रीपद–दोनों चन्द्र को प्राप्त हैं। इसवर्ष अनेकत्र भयंकर वर्षा, बाढ़, भूकम्प, तूफान एवम् कहीं अग्निकाण्ड की घटनाओं से जनधन-हानि हो; अनेकत्र दुष्कर्म किंवा अनैतिक कार्यों की वृद्धि हो।
- यह 'प्लवंग' नामक वर्ष है। इस वर्ष भूकम्प की घटनाओं एवं हैरीकेन आदि से विशेष परेशानी रहे।
- संवत् के प्रारम्भ में (अप्रैल से मई, 2014 ई. तक) शनि–मंगल एवं राहु (खलत्रयी) का वक्रत्व प्रधान राजनैतिक दलों में विशेष शक्तिपरीक्षणकी स्थिति बनाएगा। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।
- जुलाई से कन्याराशि का राहु एवं बुध का अतिचार एवं 14 जुलाई से सितम्बर, 2014 ई. तक शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध देश में अघटित घटनाओं को सामने लाएगा।
- यह वर्ष देश के नेतृत्व में परिवर्तन एवं कुछ राष्ट्रीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए भयावह है।
- जुलाई से सितंबर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति उग्रवादियों द्वारा देश में (छत्तीसगढ़, पंजाब, दिल्ली, जम्मू–काश्मीर एवं बिहार आदि किंवा महानगरों में) भारी कष्टप्रद वातावरण बनाए। शासनतन्त्र को सावधान रहना होगा।
- श्रीमती सोनियागांधी, श्रीराहुलगांधी एवम् श्रीनरेन्द्रमोदी जी की ग्रहस्थिति इसवर्ष क्या दिशा–निर्देश देती है ?
- 2 अक्तूबर से 6 दिसंबर, 2014 ई. तक एवं 4 जनवरी, 2015 ई. से संवत् के अन्त तक समुद्री तूफान (सुनामी), हैरीकेन एवं भारी प्राकृतिक आपदा का संकेत ग्रहचाल से मिलता है।
- भारत की राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थिति और देश का नेतृत्व इसवर्ष क्या संकेत देता है ?
- देश–विदेश (भारत, अमेरिका, मुस्लिमराष्ट्र एवम् यूरोपीय देशों) में घटित होने वाले घटनाचक्र का विवरण।

पाठको यह बृहद् ब्रह्माण्ड विधाता का एक चक्र है, सभी जीव उसके अनुसार ही चलने को विवश हैं। इस प्रकार स्वयं को ईश्वर से पृथक् समझता प्राणी इस चक्र से बन्धा जीवन–मरण से मुक्त नहीं होता। ' श्वेताश्वतरोपनिषद् ' का वचन है;–

"सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहन्ते अस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे।
पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति।। "

इस उपनिषद्वाक्य के अनुसार प्रत्येक प्राणी अपने अस्तित्व की वास्तविकता को ढूंढने के लिए सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र का आश्रय लेता है।

अज्ञात, अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहिर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है;–

" ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तदज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।"– (श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण–विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति

ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताडित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर--उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

> "अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
> तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना।।"–(नैषधचरित)

यह बात भी नितांत सत्य है कि– ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है – इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 87वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2071 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 86 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 87 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित, समस्या–समाधान, प्रामाणिक ग्रहणगणित, शोधपूर्ण लेखों एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

[*भारत–पाकविभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाकयुद्ध; भारत–चीनयुद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी–लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004 ई. को अमरीका में भूकम्प एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है ।*]

अपि च– संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा; 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी; भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना; मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण; 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प; 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान; 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा; 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी; 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प; 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प; सं. 2065 वि. में मुंबई स्थित ताज होटल पर सब से बड़े उग्रवादी हमले की भविष्वाणी; 14 नवम्बर, 2008 ई. को चन्द्रमा पर भारत का तिरंगा फहराना एवं भारत के विश्व की चौथी शक्ति के रूप में उदय की भविष्यवाणी; *सं. 2066 वि. में नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति एवम् गणतन्त्र की स्थापना, सं 2066 वि. में अमरीका में बराक ओबामा के राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी, श्री मनमोहन सिंह जी का पुनः प्रधानमन्त्री बनना; 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती के विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी;* 27 फरवरी, 2010 में चिल्ली में 8.8 रैक्टेयर भूकम्प, *17 जनवरी, 2010 को भारतीय राजनीति के युग पुरुष ज्योतिवसु जी के स्वर्गवास, 15 मई, 2010 ई. को पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत का महाप्रयाण, 5/6 अगस्त, 2010 ई. को लेह–लदाख में बादल फटने से हवाई अड्डे के ध्वस्त होने की भविष्यवाणी, 10/11 अगस्त, 2010 को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी, 14 अगस्त, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी एवम्* अन्य अवाक् कर देने वाली सहस्रों सफल भविष्यवाणियों का श्रेय "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग" को ही जाता है।

इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह एकमात्र प्रामाणिक 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सम्पूर्ण भारत में ही नहीं किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

विगत सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है, लेकिन सं. 2071 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व गत दो–तीन वर्षों की कुछ

भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) 11 मार्च, 2011 ई. को जापान में अब तक इस सदी के भयंकर विनाशकारी भूचाल एवं सुनामी से जो विनाश हुआ था, उसका उल्लेख सं. 2067 वि. के " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " में स्पष्टरूप से कर दिया गया था, देखें पृ. 122 " लोकभविष्य"–

" इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से अमरीका, जापान एवं अन्य देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड व ज्वालामुखी–विस्फोट से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।"

इस भयंकर जापानी दुर्घटना को The Times of India ने इस प्रकार लिखा था–" **Quake, Tsunami Pummel Japan, 8.9 Temblor Triggers Wall of water, Many fires, Houses, cars Tossed Ground like Toys."**

दैनिक पंजाब केसरी ने इस घटना को– "महाभूकम्प / महासुनामी" रूप मे घोषित किया।

समाचारपत्रों के अनुसार यह 140 वर्षों में सबसे भयानक भूकम्प था, इसमें 1,000 लोग मारे गए। इस सुनामी का प्रभाव फिलिपीन्स एवं अमरीका में भी देखा गया।

(2) **"Terror Back in Mumbai"- Hindustan Times, dated 14th July, 2011;-**

" मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा 13/7/2011 को कहर बरपाया गया"– इस वारदात की भविष्यवाणी पढ़ें–" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि., पृ. 29, कॉलम 1 में–

"12 जून से मंगल वृषराशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। पहले ही 7 जून को राहु वृश्चिक एवं केतु वृष में प्रविष्ट होकर दोनों संवत् 2068 के अन्त तक इन्हीं राशियों में चलेंगे। इसी मध्य अघटित घटनाचक्र चलेगा। उग्रवादी विदेश एवं स्वदेश के महानगरों में कहर बरपाएंगे। जानी–माली नुक्सान से विश्व में अशान्ति व्याप्त होगी। कहीं समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं वरिष्ठ व्यक्तिविशेष के निधन किंवा हत्या से जनजीवन अस्त–व्यस्त होगा। "

(3) 2 मई को आतंकवादी नेता लाडेन की हत्या कर दी गई– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. पृ. 29, कॉलम 1 में पढ़ें–

" विश्व के यावनराष्ट्रों एवं अमेरिका, भारत आदि राष्ट्रों में उग्रवादजन्य घोर अशान्ति, विस्फोट आदि से जनधनहानि एवं किसी व्यक्ति के हत्याकाण्ड की घटना शनि–मंगल के समसप्तक के कारण होगी। शनि–मंगल का यह समसप्तक 2 मई, 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा।"

(4) (A) संवत् 2068 वि. में 20 अक्तूबर को लीबिया के शासक 'कर्नल गद्दाफी' के मारे जाने की भविष्यवाणी–

(B) 24 अक्तूबर, 2011 को तुर्की में 7.2 रिक्टर के भूकम्प से लाखों लोग बेघर हुए एवं हज़ारों लोग मारे जाने का समाचार समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

इन दोनों भविष्यवाणियों बारे पढ़ें–" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि., पृ. 29, कॉलम 2 में–

" 20 सितंबर को चित्रा नक्षत्र का शनि एवं 26 सितम्बर को शनि का अस्त होना तथा 'खप्परयोग' कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का संकेत देते हैं– "यदा चित्रांगतः सौरिः छत्रभंगस्तदा भवेत्।" कहीं किसी राष्ट्र में आन्तरिक स्थिति विकृतरूप धारण करेगी। कहीं शासनसत्ता में आकस्मिक परिवर्तन हो। भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान (सुनामी) आदि से किंवा यानदुर्घटना से भारी हानि भी संभव है।"

सं. 2069 के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" से आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध भविष्यवाणियों का उल्लेख–

(5) 3 अगस्त (2012 ई.) को चीन में भीषण तूफान से 10 लाख लोग बेघर। (पढ़ें– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 33–34)

" .... राशि वाले देश में समुद्रतटवर्ती भूभाग पर समुद्री तूफान.........से भारी जनधनहानि के योग हैं। "

चीन के तटीय इलाकों में 2 भीषण तूफानों से 10 लाख से ज्यादा लोग बेघर हुए।

(6) 27 अगस्त (2012 ई.) को केरल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मुम्बई, नेपाल, उत्तरप्रदेश के कई ज़िले जलग्रस्त, लाखों लोग बेघर हुए। (पढ़ें– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 100 पर–)

"आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश रात्रि के समय हुआ है। बुध–चन्द्रयोग आंधी–तूफान, दक्षिण–पश्चिम में सामान्य से अधिक वर्षा का संकेत देता है। पूर्वी एवं पश्चिमी भूभाग में कहीं असामयिक वर्षा भी हो। "

(7) (i) भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल जी के 30 नवंबर, 2012 ई. को निधन की भविष्यवाणी।

(ii) शिवसेना प्रमुख श्री बालठाकरे जी के 17 नवंबर, 2012 ई. को निधन की भविष्यवाणी। (सं. 2069 वि. के "श्री मार्त्तण्ड पंचांग", पृष्ठ 38, कॉलम 2 के अन्तिम स्टैंजा में पढ़ें)

"4 अक्तूबर को देवगुरु बृहस्पति वक्रगति से चलना शुरु करता है। इस समय गुरु पर मंगल–राहु की दृष्टि है तथा 29 जनवरी, 2013 ई. तक गुरु ग्रह वक्रगति से ही चलता रहेगा। इस समय शनि–गुरु का षडष्टकयोग चल रहा है।

शनि भी वक्रगति से 10 अक्तूबर तक चलता रहेगा। इस समयावधि में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा।"

(8) उत्तराखण्ड में प्राकृतिक भीषण आपदा से महाविनाश (2 जून, 2013 ई.) (श्री मार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2070 वि. पृष्ठ 44 कॉलम 2)–

"4 मई से 22 जून तक गुरु–शुक्र का एकराशिसम्बन्ध महाराष्ट्र, उड़ीसा उत्तराखण्ड आदि में प्राकृतिक आपदा (भयंकर वर्षा, भूकम्प एवं तूफान आदि) से जनधनहानि का योग बनाता है।"

किञ्च– पृ. 45 पर, कॉलम 1 में स्पष्ट लिखा था कि– " जुलाई के प्रथम सप्ताह में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु का एकत्र होना हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू–काश्मीर, महाराष्ट्र, उड़ीसा किंवा बिहार में प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देता है।"

इस (20 सितंबर, सन् 2012 ई. को 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में की) भविष्यवाणी के अनुसार उत्तराखण्ड की भयंकर त्रासदी ने 22 जून को लाखों व्यक्तियों को केदारनाथ यात्रा के समय काल–कवलित कर लिया। लगभग 600 गांव समाप्त हो गए'। अरबों रुपए की सड़कें, घर एवं वन्य सम्पदा की हानि को उत्तराखण्ड भुला न पाएगा।

इसी समयावधि में असम, जम्मू–काश्मीर, उड़ीसा, मुंबई में भी वर्षा से जो हानि हुई है, वह भी जगजाहिर है। उत्तराखण्ड के पिथोरागढ़ में 19 जून, 2013 ई.को भूकम्प से जनजीवन दहल उठा।

(9) काश्मीर (किश्तवाड़) में भारी हिंसा–" Kishtwar burns"- (Hindustan Times- 13-8-2013)- पढ़ें " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" सं. 2070 वि., पृ. 48, कॉलम 2 पर "जम्मू–काश्मीर" शीर्षक के अन्तर्गत – " गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 7 जुलाई, 2013 ई. तक एवं 18 अगस्त के लगभग से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक इस प्रान्त में भयंकर प्राकृतिक आपदा एवं भीषण उग्रवादजन्य विस्फोटक स्थिति से भारी जनधनहानि के योग हैं। सीमाप्रान्तों पर आपसी झड़पों से अशान्ति रहेगी।"

(10) (i) पुंछ क्षेत्र में रातभर फायरिंग करता रहा पाकिस्तान– 50 घण्टे में 5वीं बार किया संघर्ष–विराम का उल्लंघन– (13/8/2013) (पंजाब केसरी)।

(ii) भारतीय चौकियों पर पाकिस्तान की फायरिंग (13 अगस्त, से 14 अगस्त, सन् 2013 ई. तक फायरिंग जारी रही)–दैनिक भास्कर– 15/8/2013, पढ़ें– " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" सन् 2070 वि., पृ. 41, कॉलम 2 पर अन्तिम स्टैंज़ा–

"18 अगस्त से 5 अक्तूबर, सन् 2013 ई. तक राहुयुत शनि का मंगल के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनेगा। इस समयावधि में अफग़ानिस्तान, पाकिस्तान में उग्रवादी ग्रुप के मुखिया, चरमपंथी एवं उनके अधीन काम कर रहे मुस्लिम गुट सीमाप्रान्तों, महानगरों में नरसंहार करने में सफल होंगे।"

(11) "महाराष्ट्र में अकाल"– पढें" पृ. 45, कॉलम 1 में–

"17 जुलाई से 10 अगस्त, 2013 ई. तक शुक्र सिंह राशि में रहेगा, जोकि प्रान्तविशेष में वर्षा की कमी किंवा सूखे की स्थिति बना सकता है।"

(12) " अमेरिकन राष्ट्रपति 'ओबामा' पुनर्निर्वाचित"– "Obama Re-elected" The Tribune- Dated 6-11-2012 (पढ़ें– " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" पृ. 41, कॉलम 1 पर)–

" श्री बराक ओबामा जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुनस्थ गुरु इनके (जोकि 31 मई, 2013 से शुरु है) भाग्यस्थान में एवं शनि भी तुला–राशिस्थ होकर इनके लग्न (तुला राशि) में राहु के साथ केन्द्रस्थ होगा। जोकि इन्हें राजयोग पुनः प्रदान करता है।"

(13) भारत की चरमराती आर्थिक स्थिति, असह्य महंगाई, घोटाले एवं भ्रष्टाचार की महामारी की स्थिति देश को कहां ले जा रही है– इस स्थिति की भविष्यवाणी– पढ़ें– " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" (सं. 2070 वि.) पृ. 43, कॉलम 1 पर–

भारतीय गणतन्त्र 64वें वर्ष की कुण्डली के आधार पर लिखा था–

" धनेश बुध अभी अस्त है, जोकि नवमभाव में मकर राशिस्थ सूर्य के सन्निकर्ष में है। अतः भारत अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सक्षम मालूम नहीं देगा।"

पृष्ठ 44, कॉलम 2 भी पढ़ें– "ध्यान दें– 18 फरवरी, सन् 2013 ई. से 7 जुलाई, 2013 ई. तक शनि वक्री हालत में राहु के साथ चलता रहेगा। हमारे नेतागण वोटबैंक की राजनीति को प्रमुख रखते हुए देश को धर्मनिरपेक्ष बनाम सांप्रदायिकता में बांट देने का अपराध कर बैठेंगे। भारत के सत्ताकांक्षी राजनीतिक दल मुस्लिम, जाट आदि के आरक्षण से किंवा अप्रवासियों को भी शरण प्रदान करके तोषणनीति द्वारा देश के भविष्य की परवाह नहीं करेंगे। इससे असम, पश्चिमी बंगाल, नागालैण्ड, मणिपुर, बिहार, त्रिपुरा, उत्तर–प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं दिल्ली में भी अप्रवासियों की संख्या आगे चलकर भारत के भविष्य के लिए प्रश्नचिन्ह बनेगी। जिसका परिणाम कहीं साम्प्रदायिक दंगे, कहीं उग्रवादजन्य भयंकर जनधनहानि भी संभव है। "

केन्द्रीय शासनसत्ता की कारगुज़ारी के बारे में पृष्ठ 45, कॉलम 2 पर और भी देखें–

" इस समयावधि में (अक्तूबर, 2013 से जनवरी, 2014 ई. तक) भारतीय जनता अनुभव करने लगेगी कि– भ्रष्टचार की महामारी हमारी शासनव्यवस्था को जर्जर कर रही है, सरकार कौमा में एवं राजनीति मदहोश है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां देश को लूट रही हैं। इसे सुधारार्थ जनता सचेष्ट होंगी। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।"

(14) चीन एवं पाकिस्तान द्वारा सीमाप्रान्तों पर अतिक्रमण एवं सैनिक हत्याकाण्ड की भविष्यवाणी पढ़ें– " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" (सं. 2070 वि.) पृ. 42, कॉलम 2 पर–

" स्वतन्त्र भारत के 67वें वर्ष (15 अगस्त, 2013 ई. से आगे) की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश–मंगल मिथुन राशि में गुरु के साथ है। लेकिन 18/19 अगस्त को मंगल कर्क (अपनी नीच) राशि में आकर शनि–राहु के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बना लेगा; जोकि 4/5 अक्तूबर तक इसी तरह बना रहेगा। यह ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों पर शत्रु की गतिविधि से सावधान रहने एवं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों एवम् कुछ पर्वतीय भूभाग पर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, समुद्री तूफान, किंवा महानगरों में कहीं उग्रवादजन्य जनधनहानि का संकेत देती है। सरकार को इस समयावधि में सतर्क रहना होगा।"

इस समयावधि में हिमाचल प्रदेश में जल से हानि, उत्तराखण्ड की त्रासदी, जम्मू–काश्मीर में भूकम्प एवं छत्तीसगढ़ में उग्रवादियों द्वारा नरसंहार आदि एवं चीन–पाक द्वारा सीमा–अतिक्रमण की घटनाएं भी इन पंक्तयों की सत्यता को प्रमाणित करती हैं।

(15) तेलंगाना एवं वोडोलैण्ड के लिए हंगामा– पढ़ें " श्री मार्त्तण्ड पंचांग" 2070 वि., पृष्ठ 45, कॉलम 1, अन्तिम स्टैंज़ा–

" हमें भी सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना ही होगा। असम में बोडोलैण्ड समस्या पुनः उजागर होगी। कहीं हत्याकाण्ड एवं पुनः यहां (असम में) अगस्त से अक्तूबर, 2013 ई. तक अराजकता का वातावरण बनना संभव है। सरकार को सावधान रहना होगा।"

तेलंगाना पर 12 M.P.'s को सस्पैण्ड कर दिया गया है। आन्ध्रप्रदेश में उपद्रव हुए। अब बोडोलैण्ड के लिए भी असम में भारी अन्दोलन हो रहे हैं;– यह जनता जानती है।

[नोट– स्थानाभाव के कारण सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा करना यहां सम्भव नहीं है।]

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गईं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2071 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2071 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

इस संवत् (2071 वि.) को शास्त्रों ने ' प्लवंग ' नामक संज्ञा दी है। यह 'रुद्रविंशति' का प्रथम संवत्सर है।

' प्लवंग ' संवत्सर में चावल, चना, जौ, बाजरा आदि अनाज प्राकृतिक प्रतिकूलता किंवा अकालिक वर्षा से या सामयिक वर्षा के अभाव से नष्ट हो जाते है। खाद्यान्नों एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं के सर्वसाधारण–व्यक्ति की पहुंच से बाहिर होने से जनता शासनतन्त्र से रुष्ट रहे। कहीं भूकम्प किंवा भयंकर अन्य प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत भी मिलता है;–

" तुषधान्यानि नश्यन्ति मेघो वर्षति माधवे।
प्लवंगे पीड़िता सर्वे भूमिकम्पो क्वचिद् भवेत्।।"

किञ्च– इस ' प्लवंग ' संवत्सर में वर्षा मध्यम हो, जनता में नाना प्रकार के भयंकर रोगों से परेशानी हो, शासकगण (राजनैतिक दल) परस्पर शक्तिपरीक्षण के लिए कटिबद्ध रहेंगे। राष्ट्रविशेष की सत्ता में (इस संवत् 2071 वि. में) परिवर्त्तन के भी योग बनते हैं–

" प्लवंगे मध्यमा वृष्टिः रोग–शोकाकुला धरा।
परस्परं द्विषन्तो वै शत्रुभिर्हृत–वैभवाः।।"

अपि च–रुद्रविशन्ति का प्रारम्भिक संवत्सर होने से यह वर्ष (सन् 2014–15 ई.) विशिष्ट राजनीतिज्ञों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए विशेष सावधानी का है। राजनैतिक हत्याकाण्ड, तूफान एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

इस संवत्सर का राजा एवं मन्त्री– दोनों पदों पर केवल चन्द्रमा का ही अधिकार है। अतः इस संवत्सर में अग्निकाण्ड एवं अनैतिक (चोरी, लूटमार किंवा अपहरण आदि) घटनाएं शासनतन्त्र के लिए सिरदर्द बनेंगी –

" स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्निचौरादिजं भयम्।"

संवत् 2069 वि. में पृष्ठ 32, कॉलम 2 पर ' ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव ' शीर्षक के अन्तर्गत हमने देश के प्रान्तों में भयंकर बाढ़, राजनैतिक संकट, आर्थिक संकट की स्पष्ट घोषणा इन पंक्तियों में की थी, जोकि आज केन्द्रीय शासनसत्ता को स्पष्टरूप से अनुभव करना पड़ रहा है। सटीक भविष्यवाणी फलितज्योतिष की गरिमा को स्पष्ट करती है –

" इस संवत् (2069 वि.) में महाक्रूर ग्रह शनि को धान्याधिपति पद प्राप्त है। अतः कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण शासकों को कठिन परिस्थिति एवं आर्थिक सकट का सामना करना पड़ेगा। देश में राजनैतिक दल शक्तिपरीक्षणार्थ अन्तर्मन से तैयारी में सन्नद्ध मालूम देंगे। केन्द्रीय सत्तारूढ़ दल के लिए कई प्रश्नचिह्न उपस्थित होंगे, जिसका हल सहज संभव न मालूम देगा।"

2 सितंबर, सन् 2011 ई. में लिखी गई इन पंक्तियों की सत्यता का मूल्यांकन जनता स्वयं कर सकती है। कोयला–घोटाला आदि को उजागर करके विपक्षी दल ने केन्द्रीय शासनतन्त्र के आगे प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी से त्यागपत्र की मांग करके प्रश्नचिह्न उपस्थित कर दिया है। क्या इसे विपक्षी दल के शक्तिपरीक्षण का अन्तर्मन न समझें ?

आज भी उल्लिखित भविष्यवाणी केन्द्रीय शासनतन्त्र को सचेत कर रही है।

वर्तमान संवत् (2071 वि.) में सस्येश, नीरसेश, धनेश– ये तीन पद बाल ग्रह बुध के अधिकारक्षेत्र में हैं, जोकि इस वर्ष के राजा–मन्त्री ग्रह चन्द्र का शत्रु है। लेकिन बुध के साथ चन्द्र की मैत्री अवश्य है। इस वर्ष के सूर्योदय–कालभेद से धनेश पद मंगल को भी प्राप्त है। इस संवत् में दुर्गेश सूर्य है एवं सूर्योदय–कालभेद से अन्यत्र दुर्गेश पद शनि को भी प्राप्त है। इस वर्ष रसेश शुक्र, फलेश शनि एवं मेघेश सूर्य है।

इस प्रकार शुभाशुभ ग्रहों की संख्या प्रायः सन्तुलन में है। क्रूर ग्रह सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि अधिक प्रभावशाली हैं, जोकि राजनैतिक दृष्टि से विरोधी पार्टियों का प्रातिनिध्य करते हैं।

संवत् 2071 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत् लग्नकुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नजर

सं. 2071 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में मेषस्थ सूर्य–केतु का शनि–राहु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है, जोकि सीरिया, ईरान, पाकिस्तान एवं अमेरिका के किसी प्रान्त में प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि का संकेत देता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि यावनराष्ट्रों में कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं देश के विभाजन के लक्षण बनेंगे।

वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली
(संवत् 2071 वि.)

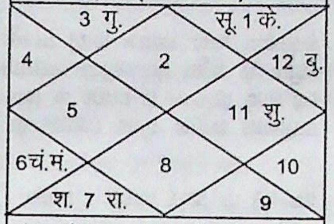

(14 अप्रैल, सन् 2014 ई., 7 घं.36 मि.)

लग्नेश शुक्र मित्रक्षेत्र में है। शनि नवमेश एवं दशमेश होकर छठेभाव में होने से अरबराष्ट्र, कोरिया, बंगलादेश, चीन, जापान, लंका, नाइजीरिया, इटली में कहीं समुद्री तूफान, हैरिकेन एवं आन्तरिक आपदा से हानि संभव है। क्योंकि, शनि की दृष्टि इसवर्ष पश्चिमी भूभाग पर है एवं वर्षेश–प्रवेश वृषलग्न एवं व्याघात योग में हुआ है, अतः भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा, जम्मू–काश्मीर, बिहार, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल में आतंकी घटनाओं से जनधनहानि के योग भी हैं। भारत के दक्षिणी भूभाग पर समुद्री तूफान एवं कुछ प्रान्तों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष शासन को स्तब्ध कर सकते हैं।

भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि उच्चस्थ, स्वभावतः वक्री राहु के साथ तुला राशि में चल रहा है। 2 मार्च, 2014 ई. से ही शनि–राहु वक्रगति से चल रहे हैं। 3 मई, 2014 ई. तक सूर्य, बुध–केतु के साथ शनि–राहु का समसप्तक–योग रहेगा। बुध इस समय अतिचारी है। 19 मई तक कन्याराशिस्थ मंगल वक्रगति से चलेगा। यह ग्रहस्थिति केन्द्रीय शासनतन्त्र में (19 मई, सन् 2014 ई. तक शनि–मंगल के वक्रत्वकाल में) राजनैतिक उलटफेर का संकेत देती है। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

जुलाई, सन् 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिम–राष्ट्रों में कहीं अचानक शासकीय परिवर्तन, कहीं आन्तरिक क्रान्ति, कहीं सेना द्वारा सत्ता–हथियाना भी संभव है।

भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार, जम्मू–काश्मीर किंवा बंगाल में भयंकर आतंकियों की गतिविधि पर सरकार को विशेष ध्यान देना होगा। माओवादी किंवा अन्य उग्रवादी ग्रुप भारत के महानगरों में इसवर्ष

(सं. 2071 वि में) कहीं समुद्रतटवर्ती भूभाग पर उग्रवाद, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, तूफान, सुनामी आदि से भयंकर हानि के संकेत गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट नजर आ रहे हैं– भगवान् रक्षा करें ! भारत के दक्षिणी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप का प्रभाव अधिक अनुभव होगा। नववर्षप्रवेश चतुर्दशी, चन्द्रवार को होने से श्रावण से आश्विन तक एवं माघ–फाल्गुन में विशेष कष्टपूर्ण घटनाएं घटेंगी। प्राकृतिक आपदाएं इसवर्ष जनता एवं शासकों के लिए अधिक घातक एवं कष्टप्रद होगीं।

11 जुलाई से 3 नवंबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का एकराशि–संबन्ध एवं राहु के राशिपरिवर्तन से इण्डोनेशिया, जापान, चीन, अमेरिका, भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग, महाराष्ट्र, गुजरात एवं पर्वतीय क्षेत्रों तथा कुछ अन्य देशों/क्षेत्रों में कहीं विनाशकारी भूकम्प, समुद्री तूफान, सुनामी किंवा ज्वालामुखी– विस्फोट से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) – 1 जनवरी से दिसं. 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार 22 जनवरी, 2014 ई. तक यूरोपीय देशों में कहीं प्राकृतिक आपदा से संकटापन्न स्थिति बनेगी। कहीं हिमपात, कहीं समुद्री तूफान से भारी हानि के योग हैं।

4 फरवरी, सन् 2014 ई. से 24 मार्च, सन् 2014 ई. तक शनि, मंगल, राहु– ये तीनों तुला राशि में चलते रहेंगे। 1 मार्च (शनैश्चरी अमा) को मंगल वक्री एवं 2 मार्च को शनि भी वक्री हो रहा है। इस प्रकार खलत्रयी का सम्बन्ध बहुत ही अघटित घटनाओं को जन्म देगा। इस समयावधि में कहीं उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, कहीं भयंकर यान–दुर्घटना से जनधनहानि, कहीं भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। कहीं किसी प्रतिष्ठित महामान्य राजनीतिज्ञ के निधन से शोक भी व्याप्त हो।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
(1 जनवरी, 2014 ई.
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

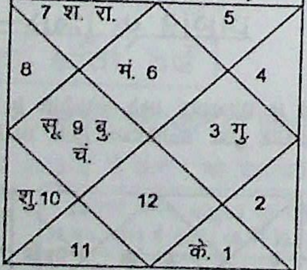

ध्यान दें:– मंगल–राहु–शनि संवत् 2071 वि. के प्रारम्भ से 19 मई तक वक्री रहेंगे। 7 मई तक बुध भी अतिचारी रहेगा। चान्द्रमास चैत्र में पांच मंगलवार भी किसी विशेष दुर्घटना के संकेतक है –

"चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पञ्चार–वासराः। राजानश्च क्षयं यान्ति।।"

"राजानश्च क्षयं यान्ति"–इस प्रमाण से कहीं किसी देशविशेष में सत्ता–हस्तान्तरण, प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का अभिप्राय स्पष्ट समझें।

14 अप्रैल से 13 मई तक शनि–राहु का सूर्य–केतु के साथ समसप्तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए भारी चुनौतीभरा है। सिंह, वृष, तुला एवं कुम्भ राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए समय अग्निपरीक्षा का है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी समय विशिष्ट राजनीतिज्ञ के लिए ठीक नहीं।

20 मई को मंगल मार्गी होगा। 23 मई को शुक्र मेष राशि में आकर शनि–राहु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। यह योग यूरोप के कुछ देशों में भारी प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है। कहीं वायुवेग, समुद्री तूफान किंवा भूकम्प आदि से हानि सम्भव है।

30 मई को बुध आर्द्रा में आकर 7 जून को वक्री हो जाता है। शुक्र–मंगल का षडष्टकयोग, शनि–राहु का शुक्र–केतु के साथ समसप्तक कहीं महावृष्टि किंवा तूफान से हानि का संकेत देता है।

15 जून को मिथुनस्थ सूर्य वक्री बुध से मेल करेगा एव 18 जून को वृषस्थ शुक्र शनि–राहु के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। 19 जून को गुरु कर्क राशि में आकर शनि की नजर में आ जाएगा। यह योग कहीं बाढ़ से विनाश करेगा। कुछ देशों में भारी दुर्भिक्ष की स्थिति से शासकों को परेशानी में किंकर्तव्य–विमूढ़ बना सकता है।

28 मई से 13 जून, 2014 ई. की ग्रहस्थिति यूरोप के देशों के लिए प्राकृतिक आपदाओं को लेकर उपस्थित होगी।

13 जुलाई, 2014 ई. से संवत् के अन्त तक राहु कन्या राशि में ही रहेगा। 14 जुलाई से 3 सितंबर, 2014 ई. तक शनि–मंगल ये दोनों क्रूर ग्रह तुलाराशि में ही एकसाथ चलेंगे। " युद्धदौ शनिमाहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ"– प्रमाण के अनुसार यूरोपीय देशों में कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो, कहीं प्राकृतिक प्रकोप व कहीं दुर्भिक्ष से जनजीवन त्रस्त रहे। कहने का तात्पर्य यह है कि– जुलाई से सितंबर, 2014 तक की ग्रहस्थिति यूरोप के राजनीतिज्ञों एवं जनता के लिए भारी संकटापन्न है। उग्रवादजन्य जनधनहानि, भयंकर बाढ़, भूकम्प, विस्फोट एवं समुद्री सुनामी किंवा हैरीकेन आदि आपदाओं से यूरोप के देश–विशेष को जूझना पड़ेगा।

4 सितंबर को मंगल वृश्चिक (अपनी राशि) में आ जाता है एवं 10 सितंबर को बुधवारी प्रतिपदा एवं 17 सितंबर को बुधवारी संक्रान्ति व 24 सितंबर को बुधवारी अमा, 2 अक्तूबर को शुक्रास्त एवं 8 अक्तूबर को चन्द्रग्रहण होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु किंवा पदरिक्त होने से जनता स्तब्ध रहेगी।

अक्तूबर से दिसम्बर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार देखें तो 27 नवंबर से 3 जनवरी, सन् 2015 ई. तक मंगल मकर राशि में चलेगा। 26 नवंबर, 2014 ई. से मंगल अतिचारी होकर मकर राशि में रहेगा। नवम्बर, 2014 ई. में मंगल ग्रह पर भारत एक यान भेजने में सफल होगा, जिससे मंगलग्रह पर जीवन की सत्ता के बारे में रहस्यपूर्ण परिणाम अगस्त, 2016 ई. से आगे उपलब्ध होंगे। ग्रहस्थिति के अनुसार नवम्बर में एक धूम्रकेतु के उदय होने का योग है। यह ग्रहस्थिति अमेरिका आदि प्रतिष्ठित देशों के प्रधान राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। जापान, जर्मनी, ऑस्ट्रिया

आदि में कहीं भूकम्प, ज्वालामुखी–विस्फोट, समुद्री सुनामी किंवा अग्निकाण्ड, वायुवेग आदि से जनधनहानि का संकेत मिलता है।

यूरोप की कुण्डली (नं. 2)– (जनवरी, 2015 से संवत् 2071 के अन्त तक की ग्रहस्थिति पर एक दृष्टि) इस कुण्डली (नं. 2) में शनि एवं गुरु की मंगल–शुक्र पर विशेष दृष्टि है। 26 नवंबर, 2014 से 12 फरवरी, 2015 ई. तक मंगल अतिचारी रहेगा। कर्कस्थ गुरु वक्री है। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। फ्रांस आदि में कहीं अकस्मात् राष्ट्रनायक के विरुद्ध सेना आदि द्वारा विद्रोह संभव है –

> "राष्ट्रभंगं विजानीयात् वैरोपद्रव–संकुलम्।
> कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा।
> तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं राजानो युद्धतत्पराः।।"

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
(1 जनवरी, 2015 ई.
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

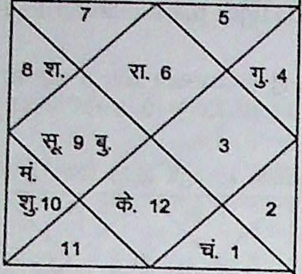

अतः इन दिनों कहीं राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, कहीं हत्याकाण्ड, कहीं शासक–विरुद्ध सेनाविद्रोह आदि अघटित घटनाएं देखने में आएंगी,– ऐसा ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है।सर्वज्ञ तो ईश्वर ही है।

सं. 2071 वि. में मुस्लिम–राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
05 नवं., सन् 2013 ई., मंगलवार,
17 घं. 27 मि. (सूर्यास्त–समय)

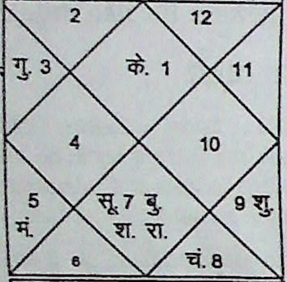

हिजरी सन् 1435 (1 मुहर्रम)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
26 अक्तू .,सन् 2014 ई., रविवार,
17 घं. 36 मि. (सूर्यास्त–समय)

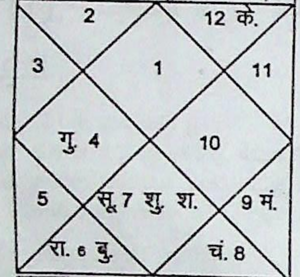

हिजरी सन् 1436 (1 मुहर्रम)

कुण्डली (1) –मुस्लिमदेशों की कुण्डली (नं. 1) (अर्थात् 5 नवंबर, 2013 से 25 अक्तूबर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति) का परिशीलन करने से निम्नांकित घटनाचक्र का पता चलता है। नीचस्थ सूर्य के साथ शनि–बुध एवं राहु का एक राशि में होना अफग़ानिस्तान, पाक एवं इराक–ईरान के लिए अनेकों आर्थिक, राजनैतिक एवं उग्रवाद–नेतृत्व के पोषण की समस्याओं को लेकर उपस्थित हो रहा है। सन् 2014 ई. में अफग़ानिस्तान में आर्थिक स्थिति विषम होगी, अमेरिका फिर भी आर्थिक सहायतार्थ आगे आएगा। गुरु–शुक्र का समसप्तकयोग 5 दिसंबर, 2014 ई. तक चलेगा। 15 नवंबर, 2014 ई. तक राहु, बुध एवं सूर्य का एकराशिसम्बन्ध रहेगा। शनि–राहु का भी एकराशिसम्बन्ध 11 जुलाई, 2014 तक चलेगा। मुस्लिमराष्ट्रों की स्थिति चिन्तनीय बनेगी। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान में नवाज़ शरीफ के प्रधानपद पर आने से भारत को जो उम्मीदें जगीं थीं– वे नकारा सिद्ध होंगी। मुस्लिमराष्ट्रों की आर्थिक स्थिति चरमराएगी। ईरान, सीरिया के साथ अमेरिका–ब्रिटेन के सम्बन्ध बिगड़ेंगे। परिणामस्वरूप, युद्धमय स्थिति बनेगी।

सीमाओं का अतिक्रमण एवं उग्रवादजन्य हिंसाकाण्ड भारत को कठोर उत्तर देने पर विवश कर देंगे। स्थिति बिगड़ जाने के योग हैं। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का तुला राशि में रहना एवं पाकराशि कन्या में राहु का सञ्चार मुस्लिमराष्ट्रों की आतंकवादी नीति को और बल देगा। परिणामस्वरूप, कहीं आन्तरिक क्रान्ति, कहीं रासायनिक अस्त्रप्रहार, कहीं भयंकर भूकम्प से ज़ोरदार जनधनहानि के योग बनते हैं। इस समय मुस्लिमराष्ट्रविशेष में प्रधानपद को खतरा है। उग्रवादी किंवा सेना मुस्लिम–राष्ट्रों पर हावी रहेगी।

4 सितंबर, 2014 के बाद अक्तूबर, 2014 तक बुध–राहु, शनि–बुध एवं सूर्य–राहु का योग भीषण आपदाओं (विशेषतः प्राकृतिक आपदाओं) एवं हिंसक घटनाओं से अरब–राष्ट्रों एवं सभी मुस्लिमराष्ट्रों को लकवाग्रस्त कर सकता है। कहीं राष्ट्रविशेष में सेना शासनसत्ता पर भी काबज़ हो सकती है।

कुण्डली (नं. 2) (अर्थात् 26 अक्तूबर, 2014 ई. से इस संवत् 2071 वि. के अन्त तक) की ग्रहचाल मुस्लिम–राष्ट्रों की स्थिति ग्रहगोचर के हिसाब से इसप्रकार है–24 अक्तूबर को बुध पूर्व में उदित होगा। 2 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2014 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा। साथ ही 1 नवंबर को शनि भी अस्त होकर 5 दिसंबर तक अस्त ही रहेगा। मुस्लिम–राष्ट्रविशेष कट्टरपन्थी व तालिबानी देश के रूप में जाने जाएंगे, विशेषतः पाकिस्तान। इस समयावधि में उत्तर–कोरिया के साथ दक्षिण–कोरिया की युद्धस्थिति बन सकती है। इसमें रूस एवं अमेरिका की दखलंदाजी संभव है। संवत् के अन्त तक पाक एवं अफग़निस्तान में शिया–सुन्नी–टकराव खतरा बनकर उभरेगा। कुण्डली (नं. 2) में स्पष्ट भान होता है कि– बलूच–राष्ट्रवाद पाकिस्तान द्वारा समर्थित तालिबान यदि अफगानिस्तान में अपनी पैठ बना लेता है तो सीमाप्रान्तों पर पाक को ही चुनौती देने लगेगा एवं पाक की अर्थव्यवस्था भयंकर रूप से चरमरा जाएगी।

संवत् 2071 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत–सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि– ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।"

'ऋग्वेद' में स्पष्ट लिखा है– कि एक विलक्षण तेज श्रोत से सूर्य सहित समस्त ज्योति–पिण्ड देदीप्यमान हैं। उस सूर्य से समस्त आकाशस्थ व सांसारिक पदार्थ प्रकाशित हो रहे हैं। स्पष्ट है कि– सूर्य व सौर–मण्डल ही इस चराचर समस्त पदार्थों का नियन्ता है।

" एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।।"

इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 67वां वर्ष

(14 अगस्त, 2013 ई. से 15 अगस्त, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति का विवेचन)

स्वतन्त्र भारत के 67वें वर्ष (15 अगस्त, 2013 ई. से आगे) की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश–मंगल मिथुन राशि में गुरु के साथ है। लेकिन 18/19 अगस्त को मंगल कर्क (अपनी नीच) राशि में आकर शनि–राहु के साथ दशम–चतुर्थ सम्बन्ध बना लेगा; जोकि 4/5 अक्तूबर तक इसी तरह बना रहेगा। यह ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों पर शत्रु की गतिविधि से सावधान रहने एवं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों एवम् कुछ पर्वतीय भूभाग पर प्राकृतिक आपदा– भूकम्प, समुद्री तूफान, किंवा महानगरों में कहीं उग्रवादजन्य जनधनहानि का संकेत देती है। सरकार को इस समयावधि में सतर्क रहना होगा।

स्वतन्त्र भारत का 67 वां वर्ष
14 अग., 2013 ई. (22 घं. 05 मि.)(I.S.T.)

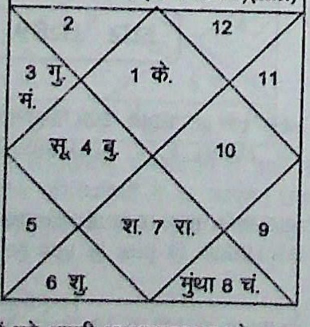

ध्यान दें– इस (अगस्त से अक्तूबर 2013 ई. की) समयावधि में प्रमुख राष्ट्रनायकों विशेषतः कन्या, सिंह, तुला एवं कुम्भ राशि वाले नेताओं को अपनी सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना अनिवार्य है। क्योंकि कन्याराशि का स्वामी बुध इस (67वें वर्ष की कुण्डली के) समय अतिचारी है, कन्याराशि में नीच शुक्र पर मंगल की दृष्टि भी है। शनि–राहु तुलाराशिस्थ है। शनि की सिंह–राशीश– सूर्य पर विशेष दृष्टि भी है। मुंथा अष्टमभाव में नीच–चन्द्र के साथ है। अतः यह वर्ष भारतीय राजनीति में भारी अस्थिरता एवं परिवर्तन को लेकर आ रहा है। आगे केन्द्रीय शासनतन्त्र की स्थापना के लिए नए समीकरण बनेंगे।

18 अगस्त, सन् 2013 ई. से 5 अक्तूबर, शनिवार, सन् 2013 ई. तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ–सम्बन्ध देश की सुरक्षा के लिए विशेष कठिन परिस्थिति वाला है। सीमाप्रान्तों पर चीन–पाक की तरफ से सीमातिक्रमण होने पर भी भारत सरकार की अनदेखी किंवा उपेक्षा वाली तथाकथित कूटनीति से भारत की अस्मिता एवं सुरक्षा के लिए खतरा निरन्तर बढ़ता ही जाएगा। संवेदनशील रणनीतिक महत्वपूर्ण मुद्दों को टालते ही जाना आगे बहुत महंगा पड़ेगा, जिससे भारत के सीमावर्ती क्षेत्र चीन हड़प लेगा। केवल "शठे शाठ्यं समाचरेत्" वाली नीति ही अपनानी होगी।

वर्षकुण्डली में मुंथेश–मंगल, नीचाकांक्षी है एवं नीच चन्द्र के साथ मुन्था छठे भाव में है। यह ग्रहस्थिति भी देश की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए बाधक परिस्थिति का संकेत देती है।

7 नवंबर, 2013 ई. से 5 मार्च, 2014 ई. तक मिथुनस्थ गुरु वक्री रहेगा। साथ ही 21 दिसंबर, 2013 ई. से 30 जनवरी, 2014 ई. तक शुक्र भी वक्रगति से चलेगा। इस समयावधि में छत्तीसगढ, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश एवं महानगरों में भारी भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य जघन्य कृत्यों से भारी जनधन–हानि के योग बनते हैं।

1 मार्च को मंगल एवं 2 मार्च, सन् 2014 ई. को शनि वक्रगति से चलने लगेगा। ध्यान दें कि– 4 फरवरी, सन् 2014 ई. से मंगल तुला राशि में आकर शनि–राहु के साथ मेल करेगा। ये–ग्रहों की एकराशिस्थ खलत्रयी भारतीय शासन–पद्धति में विशेष रदो–बदल करके पुनः शासनतन्त्र को कुछ अच्छा करने का अवसर प्रदान करेगी।

शनि–मंगल एवं स्वभावतः वक्रगति से चलने वाला राहु – इन तीनों का वक्रत्वकाल (अर्थात् 4 मार्च, सन् 2014 ई. से मई, सन् 2014 ई. तक) देश के राजनीतिज्ञों एवं देश की सुरक्षा के लिए विशेष सावधानी का है। प्रतिष्ठित–व्यक्तियों की सुरक्षा में कोताही (अनदेखी) न हो एवं उग्रवादियों की जानी–माली नुक्सान देने वाली कुनीति से भी गुप्तचर विभाग को सावधान रहना होगा। यह समय (फरवरी से मई, 2014 ई. तक) चीन–पाकिस्तान की कुनीति से सीमाप्रान्तों पर विशेष सुरक्षा–व्यवस्था का है। क्योंकि शनि, मंगल, राहु– ये सब तुला राशि में हैं, सभी वक्री हैं। अतः नजदीकी देशों में भी प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य विस्फोट से हानि का प्रभाव यहां (भारत) के व्यापार–क्षेत्र पर भी होगा। भारत की अर्थव्यवस्था चिन्तनीय स्थिति में रहेगी।

महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। सरकार की आकर्षक घोषणाएं कार्यान्वित न होने से जनता में आक्रोश बढ़ेगा।

20 मई को मंगल एवं 19 जुलाई, 2014 ई. को शनि भी मार्गी हो जाएगा। इस समयावधि में कुछ भारतीय प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में जनहानि एवं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी।

14 जुलाई को मंगल शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध 3/4 सितम्बर तक बनाएगा। यह समयावधि भी भारतीय शासन-पद्धति के लिए भारी कठिनाइयों को लेकर उपस्थित होगी।

स्वतन्त्र भारत का 68वां वर्ष

(15 अगस्त, 2014 ई. से 20 मार्च, 2015 ई. (संवत् 2071 वि.) तक का विवेचन)

स्वतन्त्र भारत के 68वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार कर्क लग्न में सूर्य-शुक्र-गुरु भारत की प्रभावराशि मकर पर दृष्टिपात कर रहे हैं। शुक्र आयेश एवं चतुर्थेश (केन्द्रेश) भी है। सूर्य धनेश होकर लग्नस्थ है। उच्च बृहस्पति नवमेश होकर नवमभाव को देख रहा है। भारत के समक्ष इस समय गहरा आर्थिक-संकट तो है ही, लेकिन इस संकट से निजात पाने के लिए नई योजनाएं, नए विचार, नए कार्यक्रम बनेंगे, जिनके कारण भारत इस आर्थिक संकट से मुक्ति पाकर तरक्की की तरफ आगे बढ़ने लगेगा।

स्वतन्त्र भारत का 68 वां वर्ष
14/15 अग., 2014 ई. (28 घं. 14 मि.)(I.S.T.)

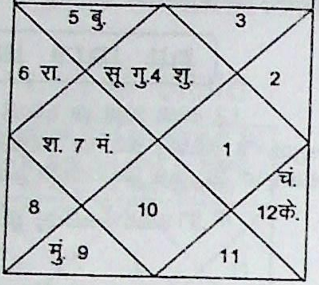

कन्या राशि का राहु चन्द्र को देख रहा है एवं 14 जुलाई, 2014 ई. से तुला राशि में स्थित शनि-मंगल का 3 सितंबर, 2014 ई. तक एकसाथ रहना भारत के राजनीतिज्ञों के लिए भयावह अवश्य है। राजनीतिज्ञों के लिए यह (14 जुलाई से 3 सितंबर तक का) समय सीमाप्रान्तों पर चीन किंवा पाकिस्तान की गतिविधि से कठिन परिस्थिति पैदा करेगा, जिसका हल सामूहिक पार्टियों के सहयोग की जरूरत चाहेगा। शनि, मंगल एवं शुक्र की स्थिति को दृष्टि में रखते हुए संकेत मिलता है कि सितम्बर, 2014 ई. से संवत् 2071 वि. के अन्त तक की अवधि में भारत समुद्रीक्षेत्र से तेल एवं गैस प्राप्त कर सकेगा- यह वर्ष की बड़ी उपलब्धि होगी। इस उपरोक्त समय (लगभग 14 जुलाई से सितंबर तक) के दौरान किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का ओहदा खाली होगा एवं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादी संगठनों द्वारा भारी जनधन हानि का योग भी बन रहा है।

जुलाई से अगस्त तक कहीं वर्षा-बाढ़, कहीं अकालग्रस्त क्षेत्रों से जनधनहानि के योग भी हैं। 17 सितंबर को बुधवारी संक्रान्ति एवं 24 सितंबर, 2014 ई. को बुधवारी अमावस होने से खप्पर-योग बनता है;- इस प्रकार 5 दिसंबर (सन् 2014 ई.) तक की ग्रहस्थिति पश्चिमी देशों एवं प्रमुख नेताओं के लिए विशेषतः अमेरिका एवं मुस्लिम देशों के लिए समय भयावह है।

8 दिसम्बर को गुरु वक्री होकर संवत् के अन्त तक वक्री रहेगा। फरवरी, 2015 ई. से मार्च, 2015 ई. तक शनि, राहु एवं मंगल की स्थिति एवं मंगल का अतिचारी होना आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक-दृष्टि से समय उग्रवाद एवं भूकम्प आदि से भारी क्षतिपूर्ण एवं भयावह मालूम देता है। भगवान् रक्षा करें- यही प्रार्थना है।

भारतीय गणतन्त्र का 65वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 65वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश सूर्य छठे भाव में शनि के क्षेत्र में बुध के साथ व्यय भाव को देख रहा है। संकेत मिलता है कि- भारत को भयंकर आर्थिक-संकट का सामना करना पड़ेगा। वर्तमान कांग्रेस सरकार 'खाद्य सुरक्षा' आदि बिलों का प्रलोभन देकर सत्ता-प्राप्ति की तरफ बढ़ने का यत्न कर रही है, लेकिन इन्हें अन्तिम-रूप देकर अन्त तक बनाए रखना ग्रहस्थिति के अनुसार संभव प्रतीत नहीं होता। क्योंकि मुंथेश-चन्द्र भी भूमि अधिग्रहण के स्वामी मंगल के क्षेत्र में नीचस्थ है। मंगल नवमेश-चतुर्थेश होकर धनस्थान में है। लेकिन नवम भाव पर शनि-राहु की दृष्टि होने से भारतदेश अपनी अस्मिता एवं गणतन्त्र की सत्ता को कठिन परिस्थिति में भी बनाए रखेगा।

भारतीय गणतन्त्र का 65 वां वर्ष
26 जन. 2014 ई.(20घं. 06मि.)(I.S.T.)

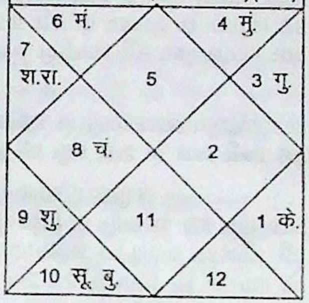

योजना-स्थान के स्वामी (पंचमेश) गुरु की पंचम भाव पर पूर्णदृष्टि है, गुरु-शुक्र का समसप्तक भी बना हुआ है। शुक्र तृतीयेश एवं दशम-भावेश है। अतः नए शासन-तन्त्र का उदय अनुभवी समर्थ-शासक के तत्वावधान में ही होगा। नई उम्मीदें, नए रूप एवं नई योजनाओं के साथ क्षेत्रीय-पार्टियों के सहयोग से नए समीकरण लेकर गणतन्त्र का उदय फरवरी, 2014 से मई, 2014 ई. तक होने वाला है। लेकिन गणतन्त्र-कुण्डली के तृतीय भाव में शनि-राहु हैं। इसवर्ष शनि-मंगल-राहु की गति-स्थिति के आधार पर किसी प्रतिष्ठित-व्यक्ति को भारी कष्ट सहन करना पडेगा एवं कोई कष्टप्रद समाचार मिल सकता है।

संवत् 2071 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में भावी घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद्भागवतपुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के 11वें अध्याय के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परमात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में केवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुषर्षभः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

गतसंवत् 2070 वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, रविवार, तदनुसार 30/31 मार्च, सन् 2014 ई. को 24 घं. 16 मि. पर उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् 2071 वि. का शुभारम्भ वृश्चिक लग्न में होगा। लग्नेश एवं षष्ठेश मंगल शत्रुक्षेत्र में स्थित होकर योजनास्थान एवं शत्रुभाव को देख रहा है। नई–नई योजनाओं की घोषणाएं एवं सुधारात्मक प्रयास कार्यान्वित होंगे। इसवर्ष सन् 2014 ई. में राजनैतिक उलटफेर एवं जनजीवन में नई चेतना जागृत होगी। व्ययस्थान में उच्चस्थ शनि एवं राहु गुरुदृष्ट होने से देश की प्रगतिप्रद योजनाओं में व्यय अधिक होगा। लेकिन वृश्चिक राशि में नववर्ष का उदय होने से पश्चिमी प्रान्तविशेष में कहीं नौ मास तक दुर्भिक्ष की स्थिति बनने से शासकवर्ग कठिन परिस्थितियों में आ जाएंगे। उत्तर में विपरीत जलवायु के कारण फसलें प्रभावित हों। उपज आधी हाथ लगे। सोना–चान्दी एवं अन्य धातुओं में समर्घता रहे;–

शुभ संवत् 2071 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

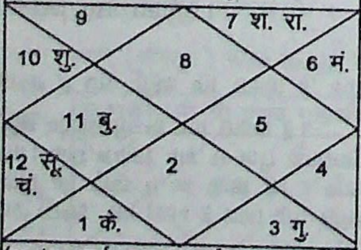

(30/31 मार्च, सन् 2014 ई., 24 घं. 16 मि.)

" वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम्।
उदीच्यामर्ध–निष्पत्तिः समर्घा धातवस्तथा।।"

पूर्व में राजविग्रह, जनता दुःखी, मध्यप्रदेश में धान्यनाश हो। दक्षिण में कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से शासनसत्ता में परिवर्तन हो–

"पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखः मासत्रयं भवेत्।
पश्चात् सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते।
दक्षिणस्यां देशभंगो भाविवर्षे प्रजायते।।"

संवत् 2071 वि. के प्रारम्भ होने से पहले ही शनि एवं मंगल–ये दोनों खलग्रह 2 मार्च, सन् 2014 ई से ही वक्रगति से चल रहे हैं। 19 मई, 2014 ई. तक शनि, राहु एवं मंगल– यह खलत्रयी वक्रगति में ही रहेगी। यह समय राजनैतिक पार्टियों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। गतवर्ष 2070 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" के पृष्ठ 45, कॉलम 2 पर हमने स्पष्टरूप से विपक्षी दल की कारगुजारी के बारे में लिखा था– " ध्यान दें– 4 फरवरी, 2014 ई. से मंगल तुला राशि में आकर शनि–राहु के साथ 24 मार्च, 2014 ई. तक इकट्ठे चलेंगे। 1 मार्च, 2014 ई. से शनि–मंगल दोनों वक्री पोज़ीशन में भी रहेंगे। सत्ता–प्राप्ति के लिए क्षेत्रीय–पार्टियों की भाजपा द्वारा पीठ थपथपाना उतना ही अपराध है जितना संसद सत्र की कारवाई को रोकना। जनता इस पग को राजनैतिक स्वार्थ के लिए सुधार की राह में रुकावट ही समझेगी।"

अब सं. 2071 वि. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि–कांग्रेस भू–अधिग्रहण, खाद्य सुरक्षा बिल आदि लोक–लुभाऊ बिल संसद में पारित कराकर आगामी निर्वाचनों में प्रभावी पार्टी के रूप में उदित होने का प्रयास करेगी, लेकिन क्षेत्रीय पार्टियों को प्रलोभन देकर ही कांग्रेस पार्टी सत्ता–सुख भोगना चाहेगी।

इस समय भारतीय राजनीति की ग्रहगति चिन्तनीय है। केन्द्रीय शासनसत्ता मई, 2014 ई. तक की ग्रहचाल के अनुसार अनुभव हो रहा है कि– देश विश्व एवं विदेशी उद्यमियों का विश्वास खो देगा। नववर्ष कुण्डली में धनेश–गुरु अष्टमस्थ होने से गहराते आर्थिक–संकट से कार्पोरेटवर्ग में भी सरकार के विरुद्ध रोष बढ़ेगा। U.P.A. (II) द्वारा सुधारात्मक प्रक्रिया भी असंतोषजनक रहेगी। परिणाम दूरगामी होंगे– ऐसा गोचर ग्रहस्थिति से मालूम देता है।

आगामी निर्वाचनों में महंगाई, भ्रष्टाचार एवं घोटाले राष्ट्र में व्याप्त–अराजकता जैसी स्थिति, रूलिंग पार्टी के लिए सिरदर्द बनेगी। भारतीय लोकतन्त्र में ऐतिहासिक आर्थिक गिरावट की ओर बढ़ रहा देश " भोजन गारंटी " योजना का निर्वहण करने में समर्थ नहीं होगा। ग्रहचाल आगे विषम परिस्थिति का संकेत देती है। देश नेतृत्व किंवा पार्टी में परिवर्तन तो चाहेगा, लेकिन विपक्ष में भी जनता को देश का हित नज़र नहीं आएगा। अन्ततः वही होगा जो जनता के न चाहने पर भी उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा।

19 मई, सन् 2014 तक की ग्रहस्थिति राजनीतिक–परिपेक्ष्य से अप्रत्याशित परिणामों वाली है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– लोकसभा का परिदृश्य

निर्वाचनों के बाद भी स्थायी किंवा सुदृढ़ सरकार नहीं होगा, क्योंकि विभिन्न पार्टियों का मेल (खिचड़ी) अपने–अपने स्वार्थो से सरकार को प्रगति की ओर नहीं ले जाने देगा। यह देश के लिए दुःखद रहेगा।

ज्येष्ठ चान्द्रमास (15 मई से 13 जून, सन् 2014 ई. तक) में पांच गुरुवार होंगे। अतः पश्चिमी प्रान्तों में कहीं उग्रवादजन्य परेशानी से जनधनहानि हो, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भी दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी–

"ज्येष्ठ–शुक्ल–तृतीयायां आर्द्रानक्षत्रकं यदा।
तदा वै दुःखदा वर्षा महादुर्भिक्षकारिणी।।"

आषाढ़ चान्द्रमास में (14 जून से 12 जुलाई, सन् 2014 ई तक) पांच शनिवार हैं। 19 जून को गुरु कर्कराशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। 3 जुलाई, 2014 ई. तक गुरु पुनर्वसु नक्षत्र में ही चलेगा। कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि होगी एवं कही बुध–शनि का वक्रत्व भारी दुर्भिक्ष की स्थिति भी बना सकता है।

जून–जुलाई, 2014 ई. में कुछ प्रान्तों में घोर दुर्भिक्ष बन सकता है, क्योंकि शनि वक्र है;– गुरु कर्क में है;–

"बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति।
अनावृष्टिस्तदा घोरा दुर्भिक्षं सर्वमण्डले।।"

राहु 12 जुलाई को कन्याराशि में प्रवेश करेगा। कन्याराशि भारत की राशि भी कुछ विद्वान् मानते हैं। 14 जुलाई से 3 सितम्बर तक शनि–मंगल ये दोनों क्रूरग्रह तुला राशि में एकसाथ चलेंगे। 26 जुलाई से अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बुधग्रह अतिचारी भी रहेगा। अतः जुलाई से सितंबर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति भारत के दिल्ली, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार किंवा छत्तीसगढ़, जम्मू–काश्मीर आदि प्रान्तों एवं महानगरों में भी उग्रवादी ग्रुपों द्वारा भारी जनधनहानि के योग बनाती है।

श्रावण शुक्लपक्ष में (27 जुलाई से 10 अगस्त, 2014 ई. तक) तिथिक्षय किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति का पदरिक्त करेगी–

"श्रावणे शुक्लपक्षे तिथिर्कापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

17 सितंबर को बुधवारी संक्रान्ति तथा 24 सितंबर को बुधवारी अमावस होने से खप्पर योग भी बन रहा है, जो कि कहीं दहशतग्रस्त लोगों द्वारा 27 जुलाई से 24 सितंबर, 2014 ई तक का समय राजनीतिज्ञों किंवा विश्व के प्रतिष्ठित–व्यक्तियों के लिए भारी संघर्षपूर्ण एवं भयावह है। सीमाप्रान्तों पर चीन, पाक आदि विरोधी देशों की गतिविधि से सीमाप्रान्त अशान्त रहेंगे। इसलिए देश के नेतृत्व एवं देश की सैन्यसत्ता को सावधान रहना होगा। शत्रुदेशों को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए सेना को कुछ अधिकार अधिक देने होंगे।

सितंबर से अक्तूबर, 2014 ई. तक कहीं छत्रभंग (शासन सत्ता में परिवर्तन) किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या से वातावरण क्षुब्ध रहेगा। क्योंकि 8 अक्तूबर, 2014 ई. को चन्द्रग्रहण, सूर्य–चन्द्र का समसप्तक है–

"क्रूरग्रह–संयुक्ते सूर्येंद्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।।"

17 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। 19 अक्तूबर को शुक्र भी तुलाराशि में आएगा। सूर्य, शुक्र, शनि एकराशि में आकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हलचल पैदा करेंगे। भारत और चीन को सीमा–विवादों पर शान्ति–स्थापनार्थ कदम उठाने होंगे, अन्यथा सीमा–प्रान्तों पर अशान्ति बढ़ेगी। 17 अक्तूबर से 15 नवंबर तक पाकिस्तान की कुनीति एवं दक्षिण–कोरिया के साथ स्थिति बिगड़ने से वैश्विक–शान्ति भंग होगी एवं भारत की राजनीति में हलचल रहे।

ध्यान दें– शताब्दी का धूम्रकेतु नवम्बर अन्त या आगे जल्दी सूर्य के पास आएगा। यह भयंकर भूकम्प एवं प्राकृतिक प्रकोप से प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित करेगा। 1 नवम्बर को शनि अस्त होकर 2 नवम्बर को शनि वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इस समय तुला राशिस्थ शुक्र भी 26 नवंबर, 2014 ई. तक अस्त रहेगा। वृश्चिक–राशिस्थ शनि राजनीतिज्ञों (विपक्षीदलों) में आपसी संघर्ष की स्थिति बनाएगा। सर्पादि विष से जनजीवन त्रस्त रहे। पक्षियों की मृत्यु हो। विश्व के प्रमुख देशों में नवम्बर से संवत् 2071 वि. के अन्त तक विनाशकारी भयंकर तूफान, विस्फोट किंवा समुद्री–विनाश से भारी जनधन हानि होगी। भारत भी इन दिनों उग्रवादियों की गतिविधियों एवं भूकम आदि प्राकृतिक प्रकोप से अछूता नहीं रहेगा।

वृश्चिक के शनि में 22 नवम्बर को शनिवारी अमावस एवं 22 नवम्बर, 2014 ई. से 3 जनवरी, 2015 ई. तक मंगल मकर राशि में आकर 26 नवम्बर से 12 फरवरी, 2015 ई. तक अतिचारी रहेगा;– शनि मंगल का राशि व्यत्यय भी है। इस समयावधि में जम्मू–काश्मीर, गुजरात, उड़ीसा, आसाम, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों एवं देहली आदि प्रमुख महानगरों में नवंबर, 2014 ई. से फरवरी, 2015 ई. तक भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य भयंकर जनधनहानि के योग हैं। चीन, पाकिस्तान आदि के साथ लगने वाले सीमाप्रान्तों पर भी शान्ति भंग होगी। सैन्य शक्ति का प्रयोग अनिवार्य अनुभव होने लगेगा। शासनतन्त्र को अपनी सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा। किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति का शोक भी राष्ट्र को झेलना पड़ सकता है।

8 दिसम्बर, 2014 ई. को गुरु वक्री हो रहा है। राष्ट्र में उपद्रव, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो–

" कर्कराशिं गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्।
राष्ट्रभंगं विजानीयाद् वैरोपद्रव–संकुलम्।।"

ध्यान दें–मकर राशि का शुक्र एवं मकर राशि के मंगल के समय (दिसंबर, 2014 ई. तक) भयंकर महंगाई से जनता में शासन के विरुद्ध भयंकर रोष पनपेगा। जिससे शासकों को अपना औहदा खतरे में पड़ता दिखाई देगा।

" मकरे च स्थिते भौमे घृत–तैल–महर्घता।
धान्यानां च महर्घत्वं नात्र कार्या विचारणा।।"

माघ चान्द्रमास में (6 जनवरी से 3 फरवरी, सन् 2015 ई. तक) पांच मंगलवार एवं 20 जनवरी को मंगलवारी अमावस है। कुम्भस्थ अतिचारी मंगल की शनि पर दृष्टि भी है– **" मंगले म्रियते राजा पञ्च भौमे महद्भयम्।"**– प्रमाणानुसार वरिष्ठ राजनीतिज्ञ–विशेष के लिए उल्लिखित समावधि विशेष कष्टमय किंवा कठिन परिस्थिति में उलझने की है। पदरिक्त होने का भय भी है। समुद्र तटवर्ती भूभाग पर कहीं भयंकर हानि किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि का भी योग है।

12 फरवरी को मंगल मीन राशि में आकर अतिचारी नहीं रहता। 15 फरवरी, 2015 ई. को शुक्र भी मीन राशि में आकर मंगल के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। यह सम्बन्ध 11 मार्च, सन् 2015 ई. तक बना रहेगा। 14 मार्च, सन् 2015 ई. को वृश्चिकस्थ शनि वक्री होगा। यह समयावधि पक्ष–विपक्ष में भारी नोक–झोंक वाली रहेगी। महंगाई से जनता का धैर्य टूटता दिखाई देगा। शासन को अपने बिल पूरा करने भारी पड़ेंगे। जिससे जनता में रोष व प्रदर्शन होंगे।

महामहिम श्री प्रणवमुखर्जी महाभाग (राष्ट्रपति भारत गणतन्त्र)

महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी का जन्म मिराती (वीरभूम) West Bengal में 11 दिसंबर, 1935 ई. को मिथुन लग्न में हुआ था। इनकी यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्मकुण्डली श्री प्रणव मुखर्जी

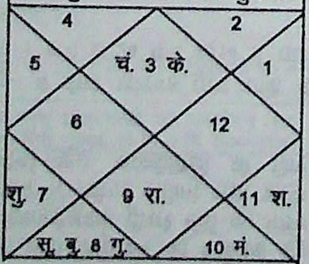

भाग्येश–शनि भाग्यस्थान में एवं कर्मेश–गुरु की कर्मस्थान पर विशेषदृष्टि है। यह राजयोगकारक ग्रहस्थिति है। शुक्र की महादशा में राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में इन्हें राष्ट्रपतिपद प्राप्त हुआ। शुक्र में शनि एव बुध का प्रत्यन्तर 3 नवंबर, 2013 ई. तक प्रभावी रहेगा। इन्हें गणतन्त्र के हित में अच्छे राजनैतिक कर्त्तव्य निभाने होंगे।

श्री प्रणव मुखर्जी के लिए सितंबर 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति सुदृढ़ सुरक्षा का संकेत देती है। 6 जनवरी, 2014 ई. के बाद सितम्बर, 2014 ई. के प्रथम सप्ताह तक की ग्रहस्थिति में महामहिम श्री प्रणवमुखर्जी महाभाग को स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना होगा। ऐसे प्रबुद्ध एवं योग्य राजनीतिज्ञ के संरक्षण में भारतीय गणतन्त्र प्रगतिपथ पर रहे– यही ईश्वर से प्रार्थना है।

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के सह सम्पादक श्री संयमी शर्मा ज्योतिषाचार्य, M.A. ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान सन् 2011 ई. में U.S. प्रैसकॉन्फ्रेंस में इनके बारे में स्पष्ट घोषणा इस प्रकार की थी,–

" Sanyami Sharma, who was on a tour of the U.S., spoke to India Tribune about his hall mark predictions.

He claims that he and his father have accurately predicted the Indonesian and Japanese' tsunamis, Barack Obama's ascendance to the Presidency of the USA, A.B. Vajpayee becoming the Prime Minister of India, the assassination of the former Indian Prime Minister Indira Gandhi, the end of royalty in Nepal replaced by Maoist-backed government, and terrorist attack on Taj Hotel in Mumbai. He observed that the continuation of Dr. Manmohan Singh as the Prime Minister of India is doubtful for two reasons-his frail health and the pressure exerted by the Opposition parties.

But the future is very bright for Union Finance Minister Parnab Mukherjee, who will rise in his stature because the stars are in his favour for growth.

"श्री मार्त्तण्ड पंचांग" सं. 2069 वि. में पृ. 41 पर 20 अक्तूबर, सन् 2012 ई. तक इन्हें विशेष पदाप्ति का योग बनने की बात लिखी थी जोकि अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

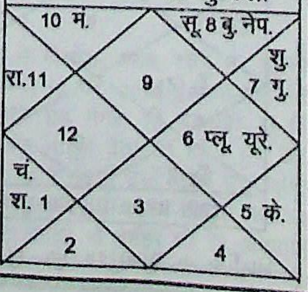

कांग्रेस– संवत् 2071 वि. में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु 18 जून, 2014 ई. तक मिथुन राशि में ही रहकर धनुराशि (लग्न) पर पूर्णदृष्टि से देखता रहेगा। जोकि कांग्रेस पार्टी की शासन–सत्ता को दिए गए प्रलोभनों से लाभ की ही आशा में रखेगा। लेकिन शनि, मंगल एवं राहु–ये तीनों क्रूरग्रह वक्रगति से चलेंगे। 2 मार्च, सन् 2014 ई. से 19 मई, 2014 ई. तक गोचर ग्रहस्थिति कांग्रेस पार्टी एवं अधिकारीवर्ग के लिए विशेष प्रतिष्ठाप्रद नहीं है। विशेषतः 4 फरवरी, सन् 2014 ई. से 24 मार्च,

2014 ई. तक शनि, मंगल, राहु–ये तीनों ग्रह तुला राशि में ही चलेंगे। यह समय राजनीतिक पार्टियों के लिए विषम परिस्थिति वाला है। गतवर्ष के पञ्चांग सं. 2070 वि. में हमने कांग्रेस पार्टी के बारे में पृष्ठ 46, कॉलम 1–2, पर स्पष्ट लिखा था कि–

“सं. 2070 वि. में 18 अगस्त, 2013 ई. से लगभग 5 अक्तूबर तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ दृष्टि सम्बन्ध भारत की राजनीति में भारी उलटफेर का संकेतक है। इस दौरान राजनैतिक पार्टियों की स्वार्थ परकता एवं सत्तालोलुपता तीसरे मोर्चे का गठन करेगी, जिसका प्रभाव बड़ी पार्टी कांग्रेस पर आंशिकरूप से होगा, लेकिन सत्ता प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा फलवती नहीं होगी। तीसरा मोर्चा कुछ राजनीतिज्ञों के लिए मृगतृष्णामात्र सिद्ध होगा। त्रिशंकु सरकार ही बनेगी।

4 फरवरी, 2014 ई. को मंगल, शनि, राहु– ये तीनों खलग्रह तुला राशि में 24 मार्च, 2014 ई. तक एकराशि में ही रहेंगे। विशेषतः 1 मार्च से 24 मार्च 2014 ई. तक मंगल वक्रगति से शनि–राहु के साथ चलेगा।

इस समयावधि में (फरवरी से मार्च, 2014 तक) कांग्रेस पार्टी के कई दिग्गज नेता जनता को लुभाने के लिए अनेक वायदे करने पर भी जनता से पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे;– परिणाम कांग्रेस पार्टी के लिए आश्चर्यजनक रहेंगे। प्रधानमन्त्रीपद के लिए यदि युवा नेता का नाम आगे आए तो पार्टी संभल सकेगी। ”

लेकिन क्षेत्रीय पार्टियों के सहयोग से ही सत्ता प्राप्त करना संभव होगा। कांग्रेस पार्टी देश को आर्थिक–राजनैतिक एवम् घोटालों की दृष्टि से बैकफुट पर ले गई है– यह सब कांग्रेस की कुण्डली में नवमेश–दशमेश सूर्य–बुध के द्वादश भाव में होने से ही हुआ है।

शनि–राहु का वक्रत्व एवं 12 जुलाई के बाद राहु का कन्या राशि में प्रवेश तथा 14 जुलाई से 3 सितंबर तक शनि–मंगल की एकसाथ स्थिति कांग्रेस पार्टी के लिए बहुत विषम परिस्थितियों को लेकर आ रही है। प्रधान नेतागण एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों को इस समय (जुलाई से सिम्तबर, 2014 ई. तक) बहुत सावधानी से सीमाप्रान्तों पर घटित हो रही चीन या पाक की नीति से राष्ट्र के हित में सोचना होगा एवं अपनी सुरक्षा–व्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना होगा। भारी कष्टप्रद घटना घटित होने का योग है। ध्यान दें– आश्विन शुक्ल पक्ष में शुक्र का अस्त होना एवं 8 अक्तूबर को चन्द्रग्रहण कहीं सीरिया आदि में युद्धाग्नि को प्रज्वलित होने से महंगाई कांग्रेस एवं भाजपा को परेशानी में डाल सकती है–

“ शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा।
राजपुत्र–सहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।”

इसवर्ष मंहगाई, भ्रष्टाचार एवं घोटाले बहुत अधिक होने से कांग्रेस की साख कमजोर एवं दयनीय रहेगी।

भारतीय जनता पार्टी– संवत् 2070 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष शनि–मंगल एवं राहु–ये तीनों क्रूरग्रह लगभग 1 मार्च सन् 2014 ई. से ही 19 मई, तक वक्री पोजीशन में रहेंगे। शनि भाजपा की कुण्डली में अष्टमेश एवं नवमेश है। बृहस्पति कर्मेश होकर 18 जून तक मिथुनराशि में ही रहकर भाग्यस्थान को एवं भाग्येश तुलाराशिस्थ शनि को देखेगा। यह योग भाजपा के लिए प्रतिष्ठा देने वाला अवश्य है, लेकिन **भाजपा में प्रधानपद के लिए हो रहा अन्तर्कलह सारा काम बिगाड़ सकता है।** ग्रहगति के अनुसार हम घोषणा कर देना उचित समझते हैं कि– कांग्रेस की केन्द्रीय शासन सत्ता तो लकवाग्रस्त छवि के कारण सं. 2071 वि. के प्रारम्भ में ही भाजपा को सत्ताप्राप्ति के लिए अग्रेसर होने के लिए प्रेरित कर सकती है। लेकिन शनि, मंगल, राहु, बृहस्पति की गति, वक्र–मार्ग एवं उदयास्त वाली ग्रहस्थिति आगे इस पार्टी के प्रधानपद को सर्वसम्मति से स्वीकार करने में ऐकमत्य न होने से भाजपा भी पूर्ण बहुमत से दूर रह सकती है। भाजपा को क्षेत्रीय पार्टियों का असहयोग होना ही कमज़ोरी है। 2014 ई. में त्रिशंकु संसद ही बनेगी।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

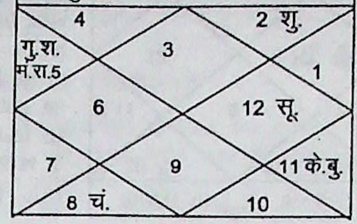

ध्यान दें– 1 मार्च से 19 मई, सन् 2014 ई. तक शनि–मंगल–राहु के **वक्रत्वकाल में कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष नीति की दुहाई देकर** भारतीय जनता पार्टी के ऊपर हावी रहेगी। श्री नरेन्द्रमोदी के नेतृत्व को लेकर भाजपा अल्पसंख्यकों का भरोसा जीतने में सक्षम होगी, इसमें सन्देह है। मई, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार ऐसी स्थिति में प्रधानमन्त्री का औहदा कोई लोकप्रिय व्यक्ति ही लेगा। यह जनता के लिए आश्चर्य–जनक होगा।

14 जुलाई से 3 सितंबर, 2014 ई. तक शनि–मंगल का तुला राशि में एकसाथ रहना, 10 से 24 सितंबर तक बन रहा खप्परयोग एवं 8 अक्तूबर के लगभग की ग्रहस्थिति राष्ट्र एवं राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। राष्ट्र का हित देखकर ही सारी राजनैतिक–पार्टियों को एकराय होकर ही काम करना चाहिए।

26 नवंबर से 12 फरवरी (सन् 2015 ई.) तक राष्ट्रनायकों के लिए शत्रुराष्ट्र की तरफ से एवं सीमाप्रान्त पर समय भारी हानिकारक है। लिखने का तात्पर्य यह है कि– 3 सितंबर, 2014 ई. से फरवरी, 2015 ई तक का समय भाजपा एवं कांग्रेस पार्टी के लिए अग्निपरीक्षा का है।

भारतीय राजनीति में संभावित तीसरा मोर्चा एवं बहुजन समाज पार्टी– समाजवादी पार्टी एवं अन्य समूह क्षेत्रीय–पार्टियों की ग्रहस्थिति का चिन्तन करने से ज्ञात होता है कि– केन्द्रीय–शासन में कांग्रेस किंवा भाजपा को केन्द्र में सत्तासुख दिलाने के लिए क्षेत्रीय पार्टियों का सहयोग विशेषरूप से अनिवार्य होगा। आगामी संसद मिली–जुली पार्टियों के सहयोग से ही बनेगी।

बहुजन समाजपार्टी केन्द्रीय–शासनसत्ता के पक्ष में रहेगी, लेकिन इस पार्टी के लिए अभी दिल्ली कोसों दूर है। यह बात भी ग्रहस्थिति से स्पष्ट मालूम देती है कि– गठबन्धन वाली आगामी सरकार का जीवन किंवा कार्यकाल अधिक मालूम नहीं देता। इस बारे विशेष विचार अगले वर्ष लिख रहे हैं।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्रीमती सोनिया गांधी– सं 2071 वि. के प्रारम्भ में वक्री शनि–मंगल–राहु की 19 मई तक की स्थिति श्रीमती सोनियागांधी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति से विपरीत स्थिति को दर्शाती है। अतः इन की राजनैतिक स्थिति को चिन्ताजनक स्थिति में लाकर खड़ा कर देने वाली है। राजनैतिक क्षेत्र एवं प्रशासकीय दिशाविहीनता एवं कठिनाइयों से भरपूर समय आ रहा है। आगे लगभग जुलाई से 3 सितंबर, 2014 ई. तक का समय श्रीमती सोनिया गांधी की सेहत के लिए चिन्ताजनक है। इनको अपने स्वास्थ्य–सुरक्षा की दृष्टि से विशेष सावधान रहना अनिवार्य है।

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी,
जन्म 9 दिसं.,1946, 21$^{घं.}$ 15$^{मि.}$ (स्टैं.टा.)
TURIN (ITALY)

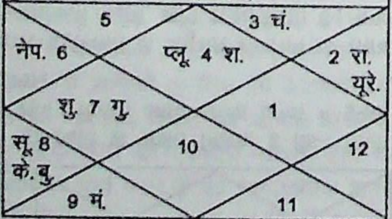

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह– सं. 2071 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि, मंगल एवं राहु– ये तीनों ग्रह वक्री पोज़ीशन में हैं। अब तक की विपरीत राजनैतिक परिपेक्ष्य में भी इन्हें सत्ता में बने रहने का सुख मिला है,– यह बात गतवर्ष के श्री मार्त्तण्ड पंचांग में हमने स्पष्टरूप से लिखी थी, पढ़ें– पृ. 47, कॉलम 2, स्टैंज़ा 1 पर–

जन्माङ्ग प्रधानमन्त्री, डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं., 1932, 14 घं. 0 मि. (गाहा–पाक)

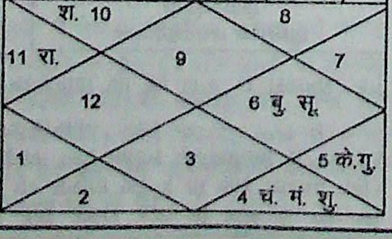

"वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी की ग्रहस्थिति के अनुसार जन्मकालिक– ग्रहस्थिति के आधार पर गोचर में योजनास्थान (पंचमभाव) पर राहुयुत– शनि की नीच दृष्टि है। द्वितीयेश एवं तृतीयेश– शनि जोकि इनकी देश की समृद्धि एवं हित में लिए गए निर्णयों को असामयिक होने से विपक्षीदल नकारने की नीति अपनाएंगे, जिससे इन्हें राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

आगे राहु की महादशा में मंगलान्तर 1 फरवरी, 2014 तक, तदुपरान्त गुरु में गुरु का अन्तर 18 मार्च, 2016 ई. तक चलेगा। राहु में मंगलान्तर इसवर्ष 19 मई, सन् 2014 ई. तक इनकी सेहत एवं प्रशासकीय–क्षमता को क्षीण कर देगा। आगे सत्ता–सुख से वञ्चित भी होना पड़ेगा– ऐसी ग्रहस्थिति है।

श्रीराहुल गान्धी– इससे पहले कि– संवत् 2071 वि. में श्री राहुल महाभाग के बारे में कुछ लिखें, हम सं. 2070 वि. के पंचांग में अंकित कुछ पंक्तियों को उदधृत करना चाहेंगे। श्री मार्त्तण्ड पंचांग, संवत् 2070 वि., पृ. 47, कॉलम 2 पर पढ़ें;–

जन्मकुण्डली श्रीराहुल गांधी
19 जून, 1970 ई., नई दिल्ली (5-05 A.M)

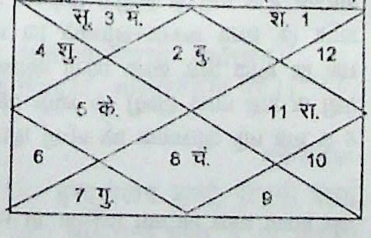

" श्री राहुल गांधी जी की जन्मकालिक दशा के अनुसार 27 अगस्त, 2013 ई. तक चन्द्रमा में शनि का अन्तर इन्हें राजनैतिक–उच्चपदाप्ति में यद्यपि बाधक होने पर भी शनि–भाग्येश एवं कर्मेश होकर इन्हें फिर भी राजनीति में प्रतिष्ठित जगह पर स्थापित अवश्य करता है।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता कांगेस–पार्टी के महा सचिव एवं कांग्रेस में नं. 2 की पदाप्ति होने से स्पष्ट सिद्ध हो गई है।

श्री राहुल गान्धी जी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय चन्द्रमा की महदशा में बुधान्तर अगस्त, सन् 2015 ई. तक प्रभारी रहेगा। बुध चन्द्रमा का मित्र है। लेकिन जन्मकालीन कुण्डली में चन्द्र तृतीयेश होकर सप्तमभाव में नीच है। जोकि विरोधीपक्ष के सामने मनोबल को कमज़ोर करता है। क्योंकि चन्द्रमा बुध के साथ शत्रुभाव रखता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जन्मकुण्डली में भाग्येश–कर्मेश दोनों का स्वामी शनि तुलाराशि में उच्च एवं राहु के साथ होकर मार्च से 19 मई, 2014 ई. तक वक्रगति से चलते रहेंगे एवं साथ ही विपक्षीवर्ग का प्रतिनिधि ग्रह मंगल भी वक्रगति से ही चलेगा। जोकि अभी इन्हें संभावित पदप्राप्ति में बाधक मालूम देता है। हां ! गुरु ग्रह के कर्कराशि में आने पर (अर्थात् 19 जून, 2014 ई. के लगभग) इन्हें उच्च पद प्राप्ति संभव है। विचारणीय बात यह है कि– "देहली–दीपकन्याय" से अगर दीपक को घर की देहली पर अन्दर की ओर रखा जाए तो रौशनी देहली से बाहिर भी तो आएगी।

इसलिए यदि इनके यथालब्ध जन्मसमय में कुछ अन्तर हुआ तो कर्क के गुरु की भाग्यस्थान पर दृष्टि इन्हें संभावित प्रमुख पद पर आसीन कर दे तो कोई आश्चर्य नहीं। लेकिन 3 सितंबर, 2014 ई. तक का समय इनके लिए कठिन परिस्थितियों से भरा है। इन्हें अपनी सुरक्षा–व्यवस्था को भी सुदृढ़ रखना होगा।

श्री नरेन्द्रमोदी महाभाग– श्री नरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितम्बर, सन् 1950 ई. में गुजरात स्थित महेसाना में 11.00 A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

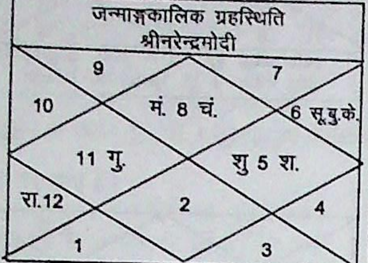
जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति
श्रीनरेन्द्रमोदी

यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय चन्द्र में राहु का अन्तर एवं गुरु का प्रत्यन्तर 2 अक्तूबर 2013 ई. तक चलेगा। यह ग्रहस्थिति इन्हें भारी अन्तर्द्वन्द में रखेगी। बृहस्पति पञ्चमेश होकर मित्रवर्ग में है एवं राहु योजनास्थान में। स्पष्ट है कि– इन्हें सहयोगी दलों की राजनैतिक स्वीकृति प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– निजी पार्टी के आन्तरिक कलह का भी ये शिकार रहेंगे। दिल्ली आदि अनेक प्रान्तों में इनके व्यक्तित्व का प्रभाव निर्वाचन क्षेत्रों में अनुभव होगा।

चन्द्रमा लग्न में नीच है, लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार निर्वाचन के समय श्री मोदी चन्द्र में केत्वन्तर किंवा शुक्रान्तर के प्रभाव में चलेंगे, शनि शत्रुक्षेत्री भी है। चन्द्र शुक्र शत्रु हैं। अतः मार्च, 2014 ई. से मई, 2014 ई. तक शनि, मंगल, राहु– ये सब वक्र स्थिति में होने से इनका राष्ट्र के प्रधानपद पर बैठना सामयिक परिस्थिति के अनुसार क्षेत्रीय पार्टियों पर निर्भर करेगा। आगे ईश्वरेच्छा बलवती है।

आगामी लोकसभा निर्वाचन में दो राष्ट्रस्तरीय पार्टियों का शक्तिपरीक्षण आकर्षक घोषणाओं के बावजूद जनतन्त्र में जागृति के रूप में उभर कर आएगा। वंशवाद से जनमानस का मोह भी क्षीण होने लगेगा। यह निर्वाचन गणतन्त्र की विजय के रूप में देखा जाएगा। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है। मीन राशि का स्वामी गुरु मिथुन राशि में हैं एवं मिथुन–राशि एवं कन्या राशि का स्वामी बुध 13 अप्रैल, 2014 ई. तक सूर्य के साथ बुधादित्य योग बना रहा है। लेकिन मंगल की इन पर दृष्टि भी है। मंगल मजदूर एवं कृषि कर्मियों का प्रतिनिधि है। सूर्य–बुध औद्योगिक–क्षेत्र के अधिपति हैं। लेकिन शनि अयस्क–निर्माण एवं उद्योगक्षेत्र के विकास का सूचक है। ध्यान दें– शनि, मंगल एवं राहु –ये तीनों मई, 2014 ई. तक वक्रगति से चल रहे हैं। अतः पंजाब के उद्योगाधिपति उद्योगों सहित पंजाब सरकार की नीति के कारण अन्यत्र जाने लगेंगे, जिससे पंजाब की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगेगी। नोट करें– कन्याराशि में 12 जुलाई, सन् 2014 ई. को राहु प्रवेश करेगा एवं जुलाई से सितम्बर तक शनि–मंगल के एकसाथ होने पर कुछ अपराधी तत्व बाहरी देशों से यहां के वातावरण को खराब करने का प्रयास करेंगे। लेकिन पंजाब के जत्थेदार साहिबान (अकाली लीडरशिप) एवं बादल साहब की आलोचना करने वालों से सावधान रहना होगा। पंजाब के सुयोग्य शासक श्री प्रकाश सिंह बादल उन्हें निरस्त कर सकेंगे। पंजाब के किसानों एवं उद्यमियों के हुनर को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य में प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्र बनेंगे। किसानों को एग्रो–फोरैस्ट्री की तरफ ध्यान देने पर भी सरकार ध्यान दिलाएगी ताकि जल की कमी एवं बिजली संकट का भी सामना किया जा सके। पंजाब में नए टैक्सों से जनता में आक्रोश बढ़ेगा। औद्योगिक क्षेत्रों की स्थिति भी भारी संकट में आ सकती है। कुछ ज़िलों में उग्रवादी अपनी उपस्थिति जाहिर करेंगे, जोकि जनता में क्षोभ पैदा कर सकता है। मार्च, 2014 ई. से आगे विशेषतः फरवरी, 2014 ई. से संवत् 2071 वि. के अन्त तक का समय पंजाब की स्थिति एवं राजनीतिज्ञों के लिए संकटापन्न है।

हरियाणा– इस प्रान्त की नाम राशि मिथुन एवं प्रभावराशि मीन होने से 2 मार्च, 2014 ई. से सितम्बर तक शनि, राहु एवं मंगल की स्थिति प्रधान नेता के लिए भारी चक्रव्यूह वाली है। अपने ही विश्वस्त–व्यक्ति विरोध करके सत्ता प्राप्ति की ओर बढ़ने का प्रयास करेंगे। इसवर्ष शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टियों भाजपा–कांग्रेस एवं अन्य सहयोगी पार्टियों के लिए भारी चक्रव्यूह की रचना वाला है। इस समयावधि में भारतीय राजनीति को एक विशेष दिशा मिलेगी एवं स्वच्छ पारदर्शी छवि वाली पार्टी के हाथ ही सत्ता रहेगी। हरियाणा का राजनैतिक इतिहास इस बात का गवाह है कि राज्य की राजनीति में होने वाले बदलाव हमेशा आश्चर्यजनक ही रहे हैं।

हरियाणा जनहित पार्टी एवं भाजपा का गठबन्धन भी अन्तर्कलह के कारण सत्ता तक पहुंचने में 2014 ई. के लोकसभा एवं विधानसभाई निर्वाचनों में विशेष सफलता प्राप्त करता मालूम नहीं देता।

इनैलो के प्रति जनता की सहानूभति से विधानसभाई निर्वाचनों में इन्हें अच्छी गति मिल सकती है। लेकिन सत्ता तो सुप्रीमो के निर्देश पर व्यक्ति विशेष को ही प्राप्त

होगी। वैसे यह प्रान्त सर्वतो भावेन प्रगतिपथ पर रहेगा।

हिमाचलप्रदेश– इस प्रान्त की नामराशि कर्क और प्रभावराशि मीन है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जून, 2014 ई. तक हि. प्र. में सत्ताधारी कांग्रेस तथा प्रतिपक्ष भाजपा में राजनैतिक जंग तेज होगी। श्रीशान्ताकुमार एवं श्री प्रेमकुमार धूमल जी का परस्पर सहयोग यहां लोकसभा निर्वाचनों में रंग ला सकता है। लेकिन सत्तारूढ़पक्ष श्रीवीरभद्र सिंह जी पर विपक्ष विधानसभा के बाहिर एवं अन्दर एकजुट होकर राजनैतिक प्रहार करेंगे। राज्य की आर्थिक स्थिति में गिरावट के आसार फलों की आयात नीति से और अधिक बनेंगे। वित्तायोग से हि.प्र. की जनता एवं सेवा कर्मियों को भारी लाभ होगा। जुलाई, 2014 ई. के लगभग बृहस्पति के कर्क में आने पर इस प्रान्त में सत्तारुढ दल का मनोबल बढ़ेगा। लेकिन 14 जून से सितम्बर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति से यहां यानदुर्घटना आदि से जनधनहानि के योग बनते हैं।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की प्रभावराशि तुला एवं नामराशि मकर है। शनि एवं मंगल दोनों वक्री पोजीशन में संवत् के प्रारम्भ से पूर्व ही मार्च, 2014 ई. 11 जुलाई, 2014 ई. तक तुलाराशि में ही रहेंगे। ध्यान दें– शनि, मंगल, राहु– ये तीनों ग्रह 19 मई तक वक्री चलेंगे। जोकि इस प्रान्त के शासकों के लिए एवं आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे कुकृत्यों द्वारा इस प्रान्त को नारकीय स्थिति का आभास कराएंगे। आगे 14 जुलाई से सितम्बर, 2014 ई. तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध होने पर यहां उग्रवादियों द्वारा भयंकर खून–खराबा होने के योग बनते हैं एवं साम्प्रदायिक झगड़े भी होंगे। एक वर्गविशेष स्थानान्तरण करने पर विवश होगा। सरकार इस स्थिति का हल करने के लिए असमर्थ मालूम देगी। गतवर्ष सं. 2070 वि. के पंचांग में इस प्रान्त के बारे में की गई भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है– पढ़ें 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' पृ. 48, कॉलम 2 पर–

" गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 7 जुलाई, 2013 ई. तक एवं 18 अगस्त के लगभग से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक इस प्रान्त में भयंकर प्राकृतिक आपदा एवं भीषण उग्रवादजन्य विस्फोटक–स्थिति से भारी जनधनहानि के योग हैं। सीमाप्रान्तों पर आपसी झड़पों से अशान्ति रहेगी। Tourism को बढ़ावा देने के बावजूद इस प्रान्त की आर्थिक–राजनैतिक–सामाजिक स्थिति चिन्तनीय रहेगी। आगे फरवरी, 2014 से संवत् 2070 वि. के अन्त तक भी यह प्रान्त उग्रवाद एवं प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त रहेगा; ऐसा गोचर ग्रहस्थिति से मालूम देता है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।"

काश्मीर के कुपवाड़ा एवं अन्य क्षेत्रों में भी होने वाले उपद्रव जगज़ाहिर हैं। सीमाप्रान्तों पर पाक, चीन का अतिक्रमण भी स्पष्टरूप से राजनीतिज्ञों के लिए सिरदर्द बना है। भूकम्प, बाढ़ आदि से भी जो हानि गतवर्ष काश्मीर में हुई है, वह भी इस भविष्यवाणी की सत्यता के प्रमाण हैं।

इसवर्ष काश्मीर को विशेष संवैधानिक दर्जे की मांग देश के हित में नहीं होगी। स्थिति इसवर्ष भी चिन्तनीय रहेगी।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
28 अगस्त, सन् 2013 ई.
(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(अजीतगढ़– मोहाली), (पंजाब)।

"अभिजित् प्रकाशन" की पुस्तकें कहां से खरीदें ?

"अभिजित् प्रकाशन", 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरि.) द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत शर्मा की पुस्तकें भारतीय ज्योतिष जगत् की अपूर्व प्रकाशन मानी गईं हैं। इनकी लोकप्रियता देखकर कुछ धूर्त बुक्सेलर्स इनकी नकली प्रतियां बेचते हुए पकड़े गए हैं। ऐसे किसी भी बुक्सेलर से खरीदी गई अवैध पुस्तक की अपूर्णता, मुद्रण आदि सम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि अथवा अन्य किसी भी त्रुटि के लिए हम कदापि उत्तरदायी नहीं हैं। इन पुस्तकों को बेचने का अधिकार दिल्ली या अन्य किसी भी नगर के किसी भी बुक्सेलर को हमने बिल्कुल नहीं दिया है। इन पुस्तकों को प्राप्त करने के लिए ग्राहक केवल सीधा हमसे ['अभिजित् प्रकाशन', 59/6 (अभिजित्) P. O. पंचकूला (हरियाणा) से] ही सम्पर्क करें। अवैधरूप से इन प्रकाशनों का विक्रय करने वाले बुक्सेलर्स के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने के लिए हम बाधित हैं। हमारी पुस्तकें बेचने वाले ऐसे किसी भी बुक्सेलर की सूचना देने वाले महानुभाव के हम आभारी होंगे।

प्रियव्रत शर्मा

संवत् 2071 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा–विचार

– संयमी शर्मा,

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि–उत्पादन-- ये प्राकृतिक चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा;– ऐसी मान्यता है। लेकिन " जल एवं वायु "– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्न स्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2071 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। आशा करते हैं कि-- **यह संक्षिप्त लेख किसानों/बाग़वानों के लिए एक दिशा–निर्देशक सिद्ध** होगा।

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से ही भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन माना जाता है।

इसवर्ष (सं. 2071 वि.) की आर्द्रा–प्रवेशकुण्डली के अनुसार अश्विनी नक्षत्र के समय 22 जून, 2014 ई. को 10 घं. 39 मि. पर सिंह लग्न के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। ग्रहचाल के अनुसार मध्याहन से पहले ही आर्द्रानक्षत्र में सूर्य प्रविष्ट होगा; जोकि कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बनाए। **कहीं दक्षिण–पूर्वी व उत्तरी भूभाग एवं समुद्र में तूफान (सुनामी) किंवा कहीं भयंकर भूकम्प से इसवर्ष जानी–माली भारी नुक्सान होने के योग बन रहे हैं।** शासन इस स्थिति से निपटने में अशक्त अनुभव करेगा।

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(22 जून, 2014 ई., 10 घं. 39 मि.)(भा.स्टैं.टा.)

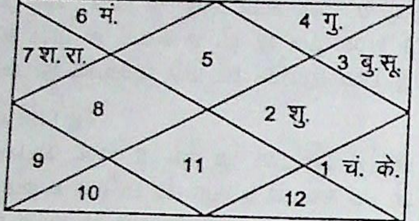

आर्द्राप्रवेश–कुण्डली में मिथुनस्थ सूर्य–बुध वृषस्थ शुक्र एवं कर्कस्थ गुरु से आक्रान्त हैं। अतः कहीं भयंकर बाढ एवं कहीं सूखाग्रस्त भूमि पर सरकार को मुआवज़ा देना पड़े। महाराष्ट्र, उ.प्र. का कुछ भाग, केरल, उड़ीसा, तामिलनाडु एवं बिहार–छत्तीसगढ़ का कुछ भाग प्राकृतिक प्रकोप से ग्रस्त रहेगा।

इस संवत् में नवमेघविचार/चतुर्मेघ विचार से 'वायु' एवं 'पुष्कर' नामक मेघ हैं। अनेकत्र मन्दवृष्टि होने से काश्मीर एवं हि.प्र. में फल, कन्दमूल को हानि पहुंचे। उत्तरी भारत में भारी बादल होने पर भी वायुवेग से बादल छंट जाएं एवं वर्षा की कमी अनुभव हो, खड़ी फसलों को हानि पहुंचे एवं कहीं अकाल की स्थिति बने।

इसवर्ष रोहिणी का वास 'सन्धि' में होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा काफी अनुकूल रहेगी। कहीं धूप, कहीं बादलचाल रहे, कहीं खण्डवृष्टि हो।

शनि की दृष्टि पश्चिम की ओर ही रहेगी। अतः पश्चिमी प्रान्तों किंवा महानगरों में कहीं भयंकर भूकम्प, वायुवेग, समुद्री तूफान से हानि के योग हैं।

सप्तवायुविचार से आंधी--तूफान से देश के दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर एवं विश्व के समुद्र--तटवर्त्ती देशों में समुद्री तूफान (सुनामी), भूचाल किंवा भारी बाढ़–वर्षा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष जनजीवन को अस्त--व्यस्त करेंगे। शासन इस स्थिति को संभालने में असमर्थ अनुभव करेगा। भूमध्यगत–तरंगों से होने वाले इस प्राकृतिक प्रकोप का परिणाम अनेक देशों के लिए विध्वंसकारी रहेगा।

सं. 2071 वि. में जलस्तम्भ एवं वायुस्तम्भ-विचार से--

इसवर्ष 'जलस्तम्भ' 94. 22 प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर वर्षा एवं भारी बाढ़ से विनाशकारी दृश्य उपस्थित होगा। कहीं समुद्री तूफान, सुनामी से प्रलयंकारी दुःखद घटनाएं घटित होंगी। बहुजल–प्रधान अन्न जीरी, चावल, बाजरा आदि की फसलें काफी अच्छी होंगी। भूजल के स्तर में काफी उठाव बने।

सं. 2071 वि. में 'वायुस्तम्भ' 22. 52 प्रतिशत होने से निर्दल है। इसवर्ष तूफान, बवंडर आदि से जनधनहानि के योग बनते हैं। 1 जून के लगभग लू , गर्म हवाओं एवं नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। क्योंकि, बादलों का सञ्चालन वायुवेग से ही होता है, अतः कहीं महावृष्टि तो कहीं सूखे से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी। मानसून के अव्यवस्थित होने से गर्मी से जनजीवन क्षुब्ध रहने का योग भी बनता है।

इसवर्ष मेघेश सूर्य होने से कुछ प्रान्तों में अकाल की स्थिति बने।

गत सन् 2013 ई. में घटित उत्तराखण्ड की त्रासदी का संकेत

इस प्राकृतिक आपदा का संकेत "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में " भारत की जलवायु एवं वर्षाविचार" शीर्षक के अन्तर्गत पृ. 49, कॉलम 2 पर स्पष्टरूप से निम्नांकित शब्दों में दिया गया था–

" इसवर्ष (सं 2070 वि. में) रोहिणी का वास 'समुद्र' में होने से कुछ प्रान्तों में महावृष्टि का योग है। महावृष्टि से अभिप्राय कहीं सुनामी एवं कहीं बाढ़ का संकेत समझें। कहीं वायुवेग, आंधी, तूफान से हानि भी होगी। कहीं ज्वालामुखी– विस्फोट किंवा भूचाल आदि से हानि भी संभव है।"

तदनुसार उत्तराखण्ड में प्रलयंकारी बाढ़–महावृष्टि भी हुई। हि. प्र. में बादल फटने की घटना से विनाश एवं काश्मीर में भूकम्प से हानि भी हुई।

अब गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सं. 2071 वि. का वर्षाविचार लिख रहे हैं –

ध्यान दें–यहां जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों में वर्षा यत्र–तत्र अवश्य होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि समयाभाव के कारण प्रत्येक स्थानविशेष के लिए वर्षा का निर्देश करना संभव नहीं है।

संवत् 2071 वि. के प्रारम्भ से ही शनि–मंगल 19 मई तक राहु के साथ वक्रगति से चलेंगे। इन पर सूर्य की दृष्टि भी है एवं शनि–राहु पर गुरु की दृष्टि है। अतः लगभग मई तक महाराष्ट्र , केरल, बंगाल एवं बंगलादेश, आसाम में कहीं भारी वर्षा रहे। उत्तरभारत में वर्षा के भयंकर अवरोध से हानि के योग हैं।

मार्च / अप्रैल– मार्च 31 एवं अप्रैल 4, 6, 13, 14, 18, 20, 24, 26, 27 एवं 30 को बंगलादेश, मुंबई, हि.प्र., भूटान, सिक्किम, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं। जम्मू–काश्मीर एवं उत्तरीभारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि संभव है।

मई– 1, 2, 4, 7, 9, 10, 11, 12, 14, 15, 17, 20, 22, 23, 25 एवं 30 मई को मुम्बई सैंट्रल, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार, भूटान, उत्तराखण्ड, उ.प्र., हि.प्र. तथा काश्मीर के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बादल–वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में आंधी–तूफान के साथ कहीं खण्डवृष्टि संभव है।

शनि–मंगल के वक्रत्वकाल (अर्थात अप्रैल से मई, 2014 ई. के मध्य) में किसी महानगर एवं गुजरात, उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू–काश्मीर आदि क्षेत्रों में भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप या सूखे से हानि के योग हैं। उग्रवादजन्य जनधनहानि भी इस दौरान संभावित है। अप्रैल से मई तक बुध के अतिचारी होने एवं शनि–मंगल–राहु के वक्रत्व के कारण कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रहें; ऐसा आभास होता है–

"क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः।
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्र– भयप्रदाः।। "

20 मई को मंगल के मार्गी होने पर मई के अन्त तक अनेकत्र अच्छी वर्षा हो।

जून– 1, 4, 5, 6, 8, 9 10, 11 एवं 15 से 27 जून तक एवं 29, 30 जून को हि. प्र., उ.प्र., काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, बिहार, उ.खण्ड, दिल्ली, चण्डीगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

जून मास में वक्री शनि–राहु का शुक्र के साथ समसप्तकयोग एवं शनि–राहु पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से हि. प्र., उत्तराखण्ड, मुम्बई, दिल्ली, बिहार, आसाम आदि में प्राकृतिक प्रकोप किंवा अतिवर्षा हो। उत्तरी भारत के कुछ प्रान्तों में वर्षा न होने से अकाल की स्थिति भी बनेगी। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी।

नोट– पर्यावरण–शास्त्रियों अनुसार एवं ग्रहगति के अध्ययन से प्रकृति के सौम्य किंवा वास्तविक रूप की छवि को बिगाड़ने से उ.खण्ड, उ.प्र., आसाम, बंगाल, केरल किंवा हि.प्र. आदि में बादल फटना आदि से भयंकर हानि आदि प्राकृतिक आपदाओं की आशंका बनी रहेगी।

ध्यान दें :– जून में गुरु पुनर्वसु के चतुर्थ चरण में आकर कर्कराशि में प्रवेश करेगा। फलस्वरूप, दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। कहीं भारी बाढ़ से फसलों को हानि हो–

"पुन. पुष्याश्लेषासु गुरुर्कर्के प्रजायते।
अनावृष्टिस्तदा घोरा दुर्भिक्षं सर्वमण्डले।।"

जुलाई– 1, 6, 11, 12 से 17, 18 से 22 एवं 27 से 30 जुलाई तक भारत के दक्षिण –पश्चिमी भूभाग, उत्तरभारत, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तराखण्ड, आसाम, हि.प्र., उ.प्र. एवं केन्द्रशासित राज्यों में अच्छी वर्षा होगी। राजस्थान, उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों के कुछ खण्डों में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। 13, 14, 20 एवं 26 जुलाई को कहीं अतिवृष्टि संभव है। कहीं बादल फटने किंवा बिजली गिरने से हानि भी हो।

अगस्त– ध्यान दें– 26 जुलाई से लगभग अगस्त के पहले हफ्ते तक बुध अतिचारी रहेगा। गुरुकर्क राशि में सूर्य के साथ चल रहा है। कहीं अतिवृष्टि से हानिभय है;– " कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशः चौरजं भयम्।।"

ध्यान दें;– 14 जुलाई से मंगल तुला राशि में आकर शनि के साथ 3 सितम्बर तक एक–साथ चलेगा। यह योग अनेक प्रान्तों में भयंकर बाढ़ से हानिकारक मालूम देता है–

" शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।
तदा स्यात्तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी।।"

इस समय बुध–शुक्र 11 अगस्त तक एक–साथ रहेंगे;– यह योग भी अतिवर्षा का संकेत देता है;– "बुध–शुक्रौ समीपस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्।"

लेकिन शुक्र, बुध के साथ सूर्य भी होने से– " तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्"– इस प्रमाण के अनुसार कहीं वर्षा की खैंच रहने से किसान परेशानी में रहें।

वर्षा के विचार से अगस्त में 3, 4, 5, 6, 10, 12, 17, 19, 22 एवम् 27 से 29 एवं 31 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, हि. प्र., जम्मू–काश्मीर, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र, केरल, नेपाल, दार्जीलिंग, बिहार, उ.खण्ड आदि में कहीं अतिवर्षा संभावित है। बादलचाल, वायुवेग के चलते भी कुछ क्षेत्रों में भारी वर्षा की कमी रहे। कुछ क्षेत्रों में सूखा पड़ने से भारत सरकार चिन्तित रहे।

सितम्बर– 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 14, 16 से 23, 26, 27, 29 एवं 30 सितंबर को भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। हि.प्र. एवं काश्मीर के कुछ क्षेत्रों में हिमपात हो। उत्तरी भारत में शीत ऋतु का आगाज़ बने।

नोट– 3 सितंबर तक शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध समाप्त हो जाता है। 4/5 सितंबर को मंगल वृश्चिक राशि में आकर अच्छी वर्षा करके मौसम में शीत का वातावरण बनाएगा। आगे केवल वायु का जोर रहे। मौसम खुला रहे।

अक्तूबर– 2, 3, 8, 9, 10, 13, 18, 19 एवं 24 से 28 अक्तूबर तक काश्मीर, हि.प्र. एवं उत्तर–दक्षिणी भारत में कहीं बादलचाल व वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। हिमाचल के उन्नत शृंग एवं काश्मीर के कुछ क्षेत्रों में हिमपात हो। शीत जोर पकड़े।

नवम्बर– मासारम्भ में ही शनि अस्त होकर 5 दिसंबर तक अस्त रहेगा। ध्यान दें;– 2 नवंबर को शनि वृश्चिक राशि में आएगा। " चलत्यंगारके वृष्टिः"– प्रमाणानुसार यह वर्षा करके शीत को बढ़ावा देगा। **26 नवंबर को शुक्रोदय वर्षा में अवरोध करता है।**

1, 2, 3, 4, 6, 9, 12, 14, 15, 16, 17, 19, 22 एवं 24 से 30 नवंबर तक जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं उत्तरी भारत में सूखी शीतलहर चलेगी। इस पक्ष में वायुवेग के साथ कुछ प्रान्तों में वर्षा एवं उत्तराखण्ड, हिमाचल, काश्मीर में जोरदार बर्फ पड़े।

दिसम्बर– 26 नवम्बर, 2014 ई. से 12 फरवरी, 2015 ई. तक मंगल अतिचारी पोजीशन में चलेगा। 6 दिसंबर को शनि उदित होगा।

2 से 11 दिसंबर तक एवं 16, 17, 20, 21 एवं 27 से 31 दिसंबर तक उत्तरी भारत, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान में सर्वत्र शीतलहर चलेगी। धुन्द से यातायात प्रभावित होगा। पर्वतीय उन्नत शृंग हिमाच्छादित रहें।

जनवरी (सन् 2015 ई.)– 1, 3, 4, 6, 7, 11, 13, 14, 17, 21, 22, 24, 28, 30, 31 जनवरी को उ.भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में रहेगा। कुछ प्रान्तों में कहीं बादलचाल, बून्दाबान्दी व खण्डवृष्टि हो। भयंकर शीतलहर एवं धुन्द से अनेकत्र यातायात बाधित रहेगा।

ध्यान दें– 4/5 जनवरी को मंगल कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ राशि की अदला–बदली करेगा। मंगल अतिचारी है। अतः वर्षा की कमी से रोग बढ़े।

फरवरी (सन् 2015 ई.)– 5 से 16 फरवरी तक एवं 19, 20 फरवरी को लंका के पूर्वी–छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तर भारत में हवा का जोर रहेगा। फरवरी में ऋतु–परिवर्तन अनुभव होगा।

मार्च (सन् 2015 ई.)– 3, 4, 5, 6, 8, 12 से 15, 18, 21 मार्च एवम् 22 से 29 मार्च के मध्य मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम में कहीं बादलचाल एवं बूंदाबांदी रहे। उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे, हवा का जोर एवं गर्मी अनुभव होने लगे।

पाठको! कुछ गतवर्षो एवं आगामी वर्षों की ग्रहस्थिति के परिशीलन से ज्ञात होता है कि भारत में वर्षा से होने वाली एवं प्राकृतिक दुर्घटनाएं बढ़ेंगी और मध्यमवर्षा का दौर कम होता जाएगा। आगे सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

शनि–मंगल एवं राहु का रोल जलवायु–वर्षा, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं में सर्वाधिक है; जैसे लिखा भी है;–

" भौमे वक्रे त्वनावृष्टिः शनौ वक्रे महाभयम्।
द्विवक्रे तु महाकष्टं राहुः स्यादग्निकारकः।।"

व्यापार–विमर्श (संवत् 2071 वि.)

(संवत् 2071 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेजी–मंदी ' कहते हैं। तेज़ी–मन्दी – इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को भाग्य में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । इस विज्ञान के युग में समस्त संसार का गठबन्धन हो चुका है। किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति या राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव तत्काल दूसरे राष्ट्र किंवा विश्वजनीन व्यापारक्षेत्र पर अमूमन देखा गया है। आजकल व्यापार के दो अंग महत्त्वपूर्ण हैं; पहला वायदा (सट्टा) एवम् दूसरा हाज़र। अमेरिकी या विश्व के किसी भी बाज़ार या घटनाओं से विशेषतः सोना, चान्दी, पैट्रोलियम आदि सभी प्रकार के बाज़ारों में जब उठापटक होती है, तो लाखों रुपयों का नफा–नुक्सान मिनटों में होता है। इसप्रकार प्रत्येक प्रमुख देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्रहगोचर को अच्छी तरह आंक कर ही हम इस व्यापार–विमर्श में कुछ व्यापारिक तेज़ी–मन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2071 वि. में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् सोना, चान्दी, तांबा में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2071 वि. में व्यापारिक बन्धु दालवाना, गुड़, ग्वार, सोना, चान्दी आदि धातु; चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज; तेल, तिलहन, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः *प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें।* 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2070 वि. में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी रुई, दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेज़ी से और आश्चर्यजनक तेज़ी एवं मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। *व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2014 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला*

आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

Note- व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

ध्यान दें– किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते, अर्थात् व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2071 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2071 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2071 वि. '**प्लवंग**' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

" तुषधान्यानि नश्यंति मेघो वर्षति माधवे।
प्लवंगे पीड़िता सर्वे भूमिकम्पो क्वचिद् भवेत्।।"

अर्थात्– चावल, जौ, चना, बाजरा आदि अनाजों की फसलें प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण नष्ट हो जाती हैं। (वैशाख मास में) अकालिक वर्षा से किसान चिन्तित रहें। महर्घता से जनता परेशान रहे। भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी संभव है।

इस संवत् 2071 वि. का राजा एवं मन्त्री दोनों पद 'चन्द्रमा' को ही प्राप्त हैं। चावल आदि बहुजलीय अनाजों की फसलें उत्तम होंगी। वृक्ष, वनस्पति, जड़ी–बूटियों एवं तिलहन की उपज अच्छी हो। वर्षा काफी हो। इसवर्ष चावल, तिलहन एवं सोना–चान्दी के व्यापारी जोरदार मन्दी किंवा तेजी से पर्याप्त लाभ उठा सकेंगे।

हमारे साथ सम्पर्क रखने वाले व्यापारी जानते हैं कि-- गतवर्ष सं. 2070 वि. में सोना–चान्दी के व्यापारी भारी तेजी में न रहकर जोरदार मन्दी से भरसक लाभ उठा चुके हैं।

इसवर्ष भी राजा– मन्त्री दोनों पद चन्द्र के पास होने से व्यापारी आश्चर्यजनक तेजी–मन्दी से लाभ उठा सकेंगे।

वर्तमान संवत् (2071 वि.) में धान्येश मंगल होने से गेहूं, सरसों, चना, मूंग, मोठ, माह आदि अनाज एवं तिलहन, सोना,–तांबा, पीतल में तेजी से लाभ मिलेगा।

इस संवत् के **मेघेशों पर विचार** करने से **पुष्कर** एवं **वायु** नामक मेघ होने से अनेक प्रान्तों में तिलहन, दालवाना एवं अन्य अनाजों, रुई की फसलों को भारी हानि पहुंचेगी। कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे। **परिणामस्वरूप, महंगाई से व्यापारी बहुत लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापारी नोट करें;– इस साल रुई, सोना, चान्दी के व्यापारी संवत् के शुरु में ही सम्पर्क करें, हम उत्तम लाभ के चान्स देंगे, सोना बरसेगा।**

शरत्सस्यजातक–ग्रहस्थिति के अनुसार गन्ना, मक्का, चावल, ज्वार, बाजरा, अरहर, मूंग, तिल एवं कपास की फसल का झाड़ किसान के लिए निराशाजनक रहेगा।

ग्रीष्मसस्यजातक–कुण्डली के अनुसार इस वर्ष गेहूं, जौ, चना, दालों एवं सरसों आदि तिलहन में किसान विशेष लाभ न लेकर, तेजी से व्यापारी उत्तम लाभ ले लेंगे।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2071 वि. में *ग्रहों के वक्र–मार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना–चान्दी में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे।* **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं** या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की

फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स / प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।

सज्जनो ! संवत् के आरम्भ से पहले सं. 2070 वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति के अनुसार 25 मार्च, सन् 2014 ई. से मार्च के अन्त तक तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, तांबा, घी, दालवाना एवं शेयरों में तेज़ी के व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

अप्रैल (सन् 2014 ई.)

मासारम्भ में ही शनि–राहु–मंगल ये तीनों खल ग्रह वक्रगति से चल रहे हैं, जोकि राष्ट्र में राजनैतिक गतिविधि को प्रभावित करेंगे, जिसका प्रभाव व्यापार पर स्पष्टतः पड़ेगा। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल तेज रहें। गुड़, खाण्ड, सूत, चान्दी, दालवाना मन्दे रहें।

1 अप्रैल को सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। अनाजों के वायदा बाजार तेज रहें। 3 अप्रैल तक सावधानी से काम करें। 4 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर पापग्रह मंगल की दृष्टि भी है। अतः रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी की उम्मीद होने पर भी बाजार तेज रहेंगे। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। यह तेजी उत्तम–मध्यमरूप से लगभग 12 अप्रैल तक चल सकती है। परन्तु इस दौरान जब भी अच्छा लाभ मिले, तुरन्त लें, आखरी तारीख का इन्तजार न करें।

13 अप्रैल को वक्री मंगल हस्त में आकर घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेज़ी का झटका लाएगा। लेकिन यह 13 अप्रैल को केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लाल– चन्दन, गेहूं, लालमिर्च एवं लालरंग की चीजों में तेजी करे। गुड़, खाण्ड, घी, तिल, तेल, सरसों एवं चान्दी में अचानक मन्दा बने।

14 अप्रैल को बुध के पूर्व में अस्त होने पर अनाज, घी मन्दे रहें। रुई में घटाबढ़ी– पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेजी बने। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

14 अप्रैल को सावधानी से काम करें, क्योंकि इसदिन सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होगा। साथ ही बुध पूर्व में अस्त हो रहा है। मेषस्थ सूर्य–केतु पर शनि–राहु की दृष्टि है। किञ्च– 15 अप्रैल से बुध अतिचारी हो जाता है। इस समय बुध पर वक्री मंगल की नजर भी है। बुध अफवाहें फैलाने वाला ग्रह है। अलसी आदि तिलहन, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालचन्दन, नारियल, सुपारी, बादाम, हींग, सूत, मेथी, लौंग, इलायची, किशमिश, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, चना, जौ, मटर आदि मन्दे हों। यह स्थिति 17 अप्रैल तक घटाबढ़ी के साथ चलेगी।

18 अप्रैल को शुक्र पू. भा. में आकर शनि की नजर में 26 अप्रैल तक रहेगा। कुम्भराशि का शुक्र तेल, तिलहन, दालवाना, चावल आदि अनाजों एवं वायदा बाजारों में मन्दी करेगा। इस समय रुई में तेजी बन सकती है। 19 अप्रैल को भी उल्लिखित रूप से बाजार चलेंगे।

20 अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर सूर्य–केतु के साथ मेल करेगा। जब भी बुध का सूर्य के साथ मेल होता है, तब बुध क्रूर हो जाता है, तेजी की इसकी पावर बढ़ जाती है। मेष राशिस्थ सूर्य–बुध–केतु पर वक्री मंगल एवं वक्री शनि–राहु की दृष्टि भी है।

ध्यान दें– यद्यपि मेष राशि का बुध बाजारों में मन्दी करता है, लेकिन क्रूरग्रहदृष्टि एवं मेल से हमें यहां जोरदार तेजी मालूम देती है, फिर भी बाजार के रुख को देखकर सावधानी से काम करें। हमारे विचार से गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, घी, मूंगा, मोती, जवाहरात, सोना, चान्दी आदि धातु, रुई, कपास में जोरदार तेजी या मन्दा बनेगा। यदि इस समय पहले मन्दी बने तो खूब माल पकड़ें, जल्दी ही तेजी से लाभ मिलेगा। यदि पहले जोरदार तेजी बने तो मन्दे का विचार छोड़ दें। तेजी अच्छी आने पर लाभ लें। क्योंकि 24 अप्रैल के लगभग पुनर्वसु नक्षत्र का गुरु बाजारों में विशेषतः रुई, चान्दी में मन्दी करे, अनाज तेज रहें।

आगे 26, 27 अप्रैल को बुध एवं सूर्य भरणी नक्षत्र में आ जाते हैं। रुई, अलसी मन्दे रहें। सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंगी, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं घी तेज ही रहेंगे।

ध्यान दें– 27 अप्रैल को शुक्र मीन राशि में आकर मंगल की पूरी नज़र में रहेगा। शुक्र ग्रह विशेषतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी करता है। यद्यपि अकेला शुक्र चान्दी में साधारण मन्दी के बाद तेजी करता है। अनाज, तेल, तिलहन एवं गुड़, खाण्ड में मन्दी करता है, लेकिन इस समय सरकार की Export & Import की नीति से बाजारों में उठपटक चलेगी। वायदा बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी आएगी।

हमारे विचार से उच्च–शुक्र पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से 27/28 अप्रैल को चान्दी में धमाके की जोरदार तेजी बनेगी।

29 अप्रैल को भौमवती अमावस एवं 30 अप्रैल के लगभग उ.भा. का शुक्र एवं 30 अप्रैल को ही बुधवारी चन्द्रदर्शन भी चावल, चान्दी, रुई, कपास, कपूर, नमक, खाण्ड, शक्कर, बारदाना, अफीम आदि में मन्दी का झटका लाकर तेजी करेगा या तेजी का झटका आकर मन्दी बने,– सावधानी से काम करें।

मई (सन् 2014 ई.)

(मासारम्भ में उ.भा. का शुक्र एवं चन्द्रदर्शन की स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें रुई, कपास, चान्दी, सोना आदि में मन्दी–तेजी की प्रतिक्रिया जारी रहने की उम्मीद है।)

1 मई को वक्री शनि विशाखा नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शनि ग्रह का तेजी का भयंकर योग समाप्त होता है। धीरे–धीरे बाजार नीचे आने लगते हैं। तेलवाना, रुई, कपास, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, बारदाना आदि बाजारों में अचानक मन्दा आ सकता है। सवाधानी से काम करें।

2 मई अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र सुभिक्ष एवं मन्दी का संकेत देता है;– "अक्षयाख्य–तृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी।" इस समय सोना–चान्दी की खरीददारी अधिक होगी, सोना–चान्दी के व्यापारी अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे।

3 मई को चान्दी तथा अफीम में खास घटाबढ़ी के बाद मन्दी आएगी। अनाज एवं रुई तेज रहें।

4 मई को वृषराशि का बुध, रुई में मन्दी के बाद तेजी करे। गेहूं, जौ, चना, मटर, रुई, अफीम, तिल, तेल आदि में तेजी बनेगी। ध्यान दें– वायदा बाजारों में मन्दे का ही वातावरण रहेगा। रुई, शेयर बाजार, ग्वार, चना, चावल एवं सोना–चान्दी के वायदा बाजार मन्दे रहें।

7 मई तक बुध अतिचारी रहता है, अतः हाजर बाजार तेज रहें।

8 मई को बुध पश्चिम में उदित होकर रुई, शेयर बाजार, तिलहन में जोरदार मन्दे का झटका लाकर तेजी करेगा। इस समय माल पकड़ें।

9 मई को बुध रोहिणी में आकर रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग एवं शेयर–बाजारों में तेजी करेगा।

10 मई को राहु चित्रा 3 एवं केतु अश्विनी 1 में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना ही रहा है। सूर्य–केतु के साथ समसप्तक–योग भी चल रहा है। अतः यह योग भी हाजर एवं वायदा व्यापार में तेजी ही करेगा। घी, रुई, तेल, तिलहन, चान्दी, गुड़, खाण्ड एवं दालवाना में तेजी करेगा।

11 मई से 15 दिन में घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी। क्योंकि इस समय सूर्य कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करेगा।

[9 से 11 मई तक शेयरों एवं हाजर/वायदा बाजारों में तेजी का ही माहौल रहेगा।]

12 मई को शुक्र रेवती नक्षत्र में आकर रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात में 13 मई तक अचानक मन्दा बनाएगा।

14 मई को बुधवारी वैशाख–शुक्ल पूर्णिमा वाले दिन सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। बुध–सूर्य दोनों एकसाथ हैं। पूर्णिमा एवं प्रतिपदा दोनों बुधवारी हैं। संक्रान्ति–मुहूर्त्त 45 है। अतः यह योग तेजी का है। चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन अच्छे तेज रहें। जौ, चना, गेहूं, अरहर, मटर, मूंग, चावल में भी सामान्य तेजी ही रहे। लेकिन 15 मई को गुरु पुनर्वसु के द्वितीय चरण में आकर चान्दी, रुई में अचानक कुछ मन्दी का झटका ला सकता है, सावधानी से काम करें। लेकिन हमें मोटे अनाज एवं दालवाना में तेजी ही दिखाई देती है।

17 मई को बुध मृग. नक्षत्र में आकर रुई में तेजी एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी करे। गेहूं, तिल, सरसों, उड़द मन्दे हों।

ध्यान दें– शनि एवं मंगल– ये दोनों क्रूरग्रह 1 मार्च, 2014 ई. से वक्रगति से चल रहे हैं। 20 मई को मंगल मार्गी होगा। इस समय जो चीजें तेज चल रही थीं, उनमें जल्दी मन्दा, जो मन्दी थीं, उनमें तेजी बनेगी;– यहां ध्यान रखकर व्यापार करें। लेकिन शनि अभी भी वक्री ही है। अनुभव के आधार पर हम लिख देना उचित समझते हैं कि– इस समय वायदा बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी, बाद में मन्दा बनेगा– सावधानी से काम करें। और भी नोट करें कि– इस समय से तीन दिन बाद रुई में बहुत बड़ी मन्दी या भयंकर तेजी का झटका आएगा। तेल, तिलहन एवं चान्दी में तेजी रहे।

22 मई को बुध मिथुन राशि में आएगा एवं गुरु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। अतः यह रुई, सोना–चान्दी में मन्दा करे एवं सरसों आदि तिलहन मन्दे हों।

23 मई को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर शनि–राहु के साथ समसप्तक–योग बनाएगा। यह हाजर एवं वायदा बाजारों में अच्छी तेजी करेगा। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, रुई, ऊन, सोंठ, जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ में मन्दे की हवा होने पर भी तेजी आए, गुड़, शक्कर, बारदाना एवं घी में भी तेजी ही मालूम देती है। सोना तेजी में विशेष तेजी के झटके आ सकते हैं।

25 मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य तिलहन, तेल, गुड़, खाण्ड, घी गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, मिर्च एवं राई में तेजी करे। चान्दी नरम रहे।

[20 से 28/29 मई तक हाजर एवं वायदा बाजार तेज रहेंगे।]

30 मई को आर्द्रा नक्षत्र का बुध एवं चन्द्रोदय गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, मोठ, सरसों, तिल, तेल मन्दे करें। रुई, सूत, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। 30/31 मई तक बाजार अनिश्चित रहें।

जून (सन् 2014 ई.)

[विहंगम दृष्टि से ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से प्रतीत होता है कि– इस मास का पूर्वार्ध बाजारों में उथल–पुथल वाला ही है। पुनरपि, प्रत्येक दिन की ग्रहगति का विचार करना उचित होगा।]

1 जून को गुरु पुन. के तीसरे चरण में आकर चान्दी एवम् रुई में मन्दी का झटका लाएगा। 4 जून को भरणी नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश होगा। शुक्र की दृष्टि शनि–राहु पर है। मंगल की दृष्टि भी शुक्र–केतु पर है। अतः लोगों की खरीद–शक्ति बढ़ेगी। ऊन, कपड़ा व सूत का उठाव अधिक होगा। सरकार **Export** कोटा का ऐलान कर सकती है। रुई के बाजार में जोरदार तेजी बने। किञ्च– सोना, चान्दी, अफीम, रक्तवस्तु, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में कुछ मन्दी के बाद तुरन्त बाजार तेज रहेंगे। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, तूअर में घटाबढ़ी चले।

5 जून को गुरु ग्रह के पास स्थित बुध मिथुन राशि में वक्री होगा। मिथुन राशि के अन्तर्गत रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, हल्दी, कपास की फसलें आती हैं। लेकिन गुरु ग्रह के साथ बुध का मेल होने से यहां जोरदार मन्दा रहे। हाजर एवं वायदा बाजार, विशेषतः गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं रुई, कपास, सरसों, तोड़िया, एरण्ड आदि तिलहन, हल्दी में जोरदार मन्दी आकर भयंकर तेजी बनेगी। मन्दी में माल पकड़ें। 7 जून तक उत्तम–मध्यमरूप से बाजार ऊपर–नीचे रहेंगे। जब मन्दा हो, माल पकड़ें, तेजी में लाभ लेते रहें।

8 जून को सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, अलसी, नारियल, खरबूजा आदि सभी फल तेज रहेंगे।

10 जून को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। बुध बृहस्पति के साथ है। रुई, हैसियन, शेयर बाजार, सोना, चान्दी में मन्दा बनेगा। यह मन्दी 14 जून तक चल सकती है।

15 जून को सूर्य लगभग 11 A.M. पर मिथुन राशि में आकर गुरु एवं वक्री और अस्त बुध के साथ मेल करेगा। 16 जून को बुध मृग. नक्षत्र में आ जाता है। ध्यान दें– इस समय सूर्य भी मृगशिरा नक्षत्र में ही है। इसी दिन शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आ रहा है। बारदाना, रेशम, सूत, सण, रुई, कपास, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल, सोना, चान्दी में तेजी आकर मन्दे हों।

ध्यान दें– मिथुन के सूर्य–बुध तेजी करते हैं, लेकिन कृत्तिका का शुक्र मन्दा करता है। अतः हाजर एवं वायदा बाजारों में तेजी के बाद तुरन्त मन्दा बन सकता है। सावधानी से काम करें। हमारे विचार से 16 से 18 जून तक बाजारों में प्रायः मन्दे का ही रुख रहेगा।

18 जून को शुक्र वृष राशि में आकर रुई–कपास में अच्छी मन्दी; सोना, चान्दी में पहले घटाबढ़ी, अन्त में तेजी करे। अनाज व दालवाना में मन्दे का रुख रहे।

19 जून को दिन में लगभग 8 बजकर 45 मि. पर गुरु अपनी उच्चराशि कर्क में दाखिल होगा। ठीक, इसी दिन वक्री शनि विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में अर्धरात्रि के बाद प्रवेश करेगा। कर्कस्थ गुरु पर राहुयुत वक्री शनि की दृष्टि भी है। ध्यान दें– कर्कराशि के गुरु का सबसे अधिक प्रभाव रुई, कपास पर अनुभव हुआ है। कर्क का गुरु भारी तेजीकारक माना गया है। इसका प्रभाव रुई, कपास, तेलवाना एवं शेयर–बाजारों तथा तमाम हाजर एवं वायदा बाजारों में तेजी का तूफान लाने वाला अनुभव किया गया है। गतवर्षों के हमारे अनुभव के मुताबिक कर्क के गुरु में रुई में अढाई–गुणा लाभ व्यापारियों ने प्राप्त किया था। नोट– व्यापारी, रुई एवं गेहूं चना, चावल आदि अनाजों का स्टॉक गुरु के राशि–प्रवेश से पहले ही कर लें। आगे उत्तम लाभ प्राप्त होगा। हमारे विचार से गुरु के कर्क में आने से पहले ही थोड़ा–थोड़ा माल पकड़ें, बाद में भी जब मन्दा आए पकड़ते जाएं। गुरु के वक्री

होने पर भारी तेजी Top की होगी।

तेज़ी आने के कारण– गोचर ग्रहस्थिति के कारण कर्कस्थ गुरु जब पुष्य 4 में आता है, वर्षा कम होती है। वर्षा कम होने से कहीं अकाल की स्थिति बनती है अतः, वायदा एवं हाजर व्यापार में तेजी बन जाती है;–

“ बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति।
राज्ञां तु विग्रहस्तत्र दुर्भिक्षं वै तदा भवेत्।।

किञ्च–

“ पुनपुष्याश्लेषासु गुरुर्कर्के प्रजायते।
अनावृष्टिस्तदा घोरा दुर्भिक्षं सर्वमंडले।।”

इन योगों के कारण बाजार एवं व्यापारियों की मनोवृत्ति तेजी की तरफ बढ़ती है। इस साल के अन्त तक रुई, कपास, तिलहन, चान्दी, सोना एवं शेयरों में भारी तेजी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा में आकर रुई, सूत, सण, कपास, तेल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, चान्दी तेज करे। सोने में घटाबढ़ी रहे।

26 जून को रोहिणी नक्षत्र का शुक्र 12 दिन में सोना, चान्दी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दे का वातावरण बनाए। यदि इस समय बाजार मन्दे हों तो स्टॉक करें। लेकिन हमारे विचार में यह मन्दी बिल्कुल स्थायी नहीं है।

28 जून को चित्रा नक्षत्र का मंगल गेहूं, चावल, चना, रुई, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल में तेजी लाएगा।

29 जून को वक्री बुध के पूर्व में उदित होने पर रुई में पहले थोड़ी मन्दी आकर 25 दिन तक अच्छी तेजी बनेगी। अनाज, घी, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च में भी तेजी ही रहे। 29 जून को कर्कस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन भी बाजारों में तेजी ही करे।

[नोट–19 जून से मासान्त तक अनाजों, कपास, रुई एवं शेयरों में तेजी एवं जोरदार मन्दी प्रधान रहेगी। व्यापारी–वर्ग इस समय 50,000/– (पचास हजार) रुपए फीस भेजकर, ताजा मशवरा लें, लाखों का लाभ ले सकेंगे।]

जुलाई (सन् 2014 ई.)

मासारम्भ में ही बुध मार्गी हो रहा है। रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेजी बनेगी। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज होंगे। इस समय तेल, तिलहन, कपूर, चन्दन, अगर आदि पदार्थ मन्दे हों।

[1 से 12 जुलाई तक रुई, तेल, तिलहन का स्टॉक करें, जल्दी ही लाभ मिलेगा।]

4 जुलाई को गुरु ग्रह पुष्य के प्रथम चरण में आकर रुई आदि सभी चीजों में तेजी करेगा।

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आकर रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजु, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं करयाणा में तेजी लाए।

8 जुलाई को मृगशिरा का शुक्र 12 दिन के अन्दर गेहूं, जौ, चना, ज्वार में मन्दी करे। गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी करे।

11 जुलाई को कर्कस्थ गुरु अस्त होगा। इस पर शनि की दृष्टि भी है। इस समय रुई एवं शेयरों में तेजी; सोना–चान्दी एवं अनाज मन्दे हों।

12 जुलाई को राहु चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण एवं कन्याराशि में आता है तथा केतु रेवती 4–मीन राशि में दाखिल होगा। यूरेनस भी रेवती नक्षत्र एवं मीन में ही है। अतः 2 मास में चावल, पिप्पली, कपूर, चन्दन, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ तेज होंगे। नोट करें– शेयरों, रुई, चान्दी एवं तिलहन में भी जोरदार तेजी या मन्दे का योग है। इस समय पहले से ही ताजा मशवरा प्राप्त करें।

13 जुलाई को शुक्र मिथुन राशि में एवं बुध आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। 15 दिन में रुई, सोना, चान्दी, सरसों, गेहूं, उड़द, तिल, जौ, चना, मूंग, मोठ में मन्दी बने, स्टॉक करें।

14 जुलाई को मंगल तुला राशि आकर 20 जुलाई तक वक्री पोजीशन में चल रहे शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। नोट करें–कि यह शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध आगे 3 सितम्बर (2014 ई.) तक बना रहेगा। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव राजनैतिक पटल पर अप्रैल (2014 ई.) से ही दिखने लगेगा, जिससे व्यापार–जगत् भी प्रभावित होगा।

तुलाराशिस्थ शनि–मंगल रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों एवं तिलहन में अच्छी तेजी करेगे। 20 जुलाई तक लाभ लें। ध्यान दें– तुलाराशि वायदा बाजारों, विशेषकर रुई, कपास, बारदाना से सम्बन्ध रखती है। अतः तुलाराशि में शनि–मंगल का रहना उल्लिखित चीजों में अच्छी तेजी से लाभ देगा। इस समय तेल, तिलहन के व्यापारी भी पूरा लाभ उठा सकेंगे। पहले ही फोन से ताजा मशवरा प्राप्त करें, अत्युत्तम लाभ मिलेगा।

16 जुलाई को सूर्य कर्कराशि में आकर गुरु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। लेकिन इन पर राहु–मंगल–शनि की दृष्टि भी है। अतः रुई, सूत, कपास, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना तेज रहें।

19 जुलाई को शुक्र आर्द्रा में एवं अस्त गुरु पुष्य–2 में आता है। गेहूं, दालवाना में अचानक मन्दा बने। रुई, सोने–चान्दी में तेजी रहे।

20 जुलाई को सूर्य पुष्य में पदार्पण करेगा। गुरु भी इस समय पुष्य नक्षत्र में ही है। इसी दिन विशाखा नक्षत्र का शनि अपनी वक्रगति को छोड़कर मार्गीगति को अपना लेता है। इस समय बाजार का रुख अचानक बदल सकता है। बाजार के रुख को देखकर काम करें। सामान्यतः हमारे विचार से तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, मिर्च, लाख, सण, ऊनीवस्त्र, सिक्का, सोना, चान्दी तेज रहें। 6 दिन में रुई में तेजी–मन्दी के झटके आते रहें।

23 जुलाई को बुध पुनर्वसु में आकर 8 दिन में रुई, चान्दी मन्दी करे। बुध–शुक्र एकसाथ होने से वायदा व्यापार में जोरदार उठापटक होगी;– सावधानी से काम करें।

27 जुलाई को स्वाती नक्षत्र का मंगल एवं बुध का पूर्व में अस्त होना मन्दा बना सकता है। लेकिन रुई, ऊन, तिलहन तेज रहें। चान्दी में घटाबढ़ी; सोना, घी कुछ मन्दे रहें।

28 जुलाई को चन्द्रवारी चन्द्रदर्शन एवं इससे पहले 26 जुलाई को शनैश्चरी अमावस वाले दिन कर्कस्थ चन्द्र एवं गुरु का एकराशिसम्बन्ध कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है, जिससे व्यापार प्रभावित होगा;– " कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य नाशः चौरजं भयम्।"

अतः व्यापार बाजार के रुख को देखकर करें।

28 जुलाई को कर्क में बुध सूर्य–गुरु के साथ मेल करेगा। यह योग गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी करता है। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी चलेगी।

30 जुलाई को बुध पुष्य एवं शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आ रहा है। सोना, चान्दी, कपास, सूत मन्दे एवं रुई में झटके की मन्दी आए। चना, जौ, चावल, बिनौला तेज रहें।

अगस्त (सन् 2014 ई.)

अगस्त के प्रारम्भ में बाजार को परख कर व्यापार करें।

3 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इसी दिन गुरु पुष्य नक्षत्र के तृतीय चरण में आता है। इस समय सूर्य, बुध, गुरु– ये तीनों कर्क में ही हैं। बुध भी पुष्य नक्षत्र में ही चल रहा है। 3 अगस्त को ही शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आ रहा है। 14 दिन में सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भाव तेज हों। कहने का तात्पर्य यह है कि– सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा।

4 अगस्त को गुरु उदित होगा। चान्दी, धान्य तेज; सोना मन्दा रहे।

6 अगस्त को बुध आश्लेषा में आएगा। इस प्रकार सूर्य एवं बुध (दोनों) आश्लेषा नक्षत्र में ही होंगे। तिल, तेल, सरसों, मूंगफली आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग में तेजी बने।

7 अगस्त को शुक्र कर्कराशि में आकर गुरु–बुध–सूर्य के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय यदि 30 अगस्त तक रुई में अच्छी मन्दी बने तो स्टॉक करें, बाद में तेजी से लाभ मिलेगा। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर मन्दे रह सकते हैं, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें। क्योंकि इस मास में शनि–मंगल एकराशि में ही चल रहे हैं, जोकि कहीं भयंकर वर्षा–बाढ़ से धन–धान्य एवं जनहानि कर सकते हैं। कुछ प्रान्तों में वर्षा के अभाव में दुर्भिक्ष की स्थिति बनने की ग्रहस्थिति है;–

" शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।
तदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी।।"

लगभग 7 अगस्त के बाद बुध–शुक्र भी जलराशिस्थ होने से भयंकर

वर्षा–बाढ़ का संकेत देते हैं;– " बुध–शुक्रावेकस्थौ कुरुत एकवर्णवां महीम्।"

लेकिन सूर्य के साथ बुध–शुक्र होने से कुछ भारतीय प्रान्तों में दुर्भिक्ष (अकाल) की स्थिति बनेगी– " तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।"

इस मास में इस प्रकार अतिवर्षा एवं दुर्भिक्ष की स्थिति सरकार को चिन्ता में डालेगी, जिसका प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा।

10 अगस्त को शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व धान्य तेज रहें। हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, अफीम में मन्दे का रुख रहे।

[मासारम्भ से 10/11 अगस्त तक वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार मन्दा या तेजी बने। हमारा विचार इन दिनों मन्दे का ही है, फिर भी बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ावें।]

12 अगस्त को अस्त बुध मघा सिंह में प्रवेश करेगा। चान्दी, सोना, रुई, सूत, ऊनीवस्त्र, देवदारु, खट्टे पदार्थ तेज हों। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रसपदार्थ मन्दे हों।

16 अगस्त को सूर्य मघा–सिंह में प्रवेश करेगा। यहां बुध भी सिंह में है। 15 दिन में रुई सोना, चान्दी, मूंग, ज्वार, बाजरा, दाख, मिर्च, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, सरसों, तिल, एरण्ड एवं लाल रंग की चीजें , शेयर व अनाज कुछ तेज रहें।

18 अगस्त को गुरु पुष्य के चतुर्थ चरण में आकर गेहूं, चावल, रुई आदि सभी वस्तुओं में तेजी करेगा।

[12 से 18 अगस्त तक बाजार तेजी की तरफ रहेंगे।]

19 अगस्त को मंगल विशाखा एवं बुध पू.फा. नक्षत्र में आएगा। 10 दिन में गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज पहले मन्दे होकर बाद में तेज हों। रुई में तेजी रहे। 20 अगस्त को शनि विशाखा के दूसरे चरण में आकर गेहूं, चावल, चान्दी में तेजी करे। 21 अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र 12 दिन में रुई, अरहर, गेहूं, चावल मन्दे करे।

22 अगस्त को बुध पश्चिम में उदित होगा। रुई, वस्त्र एवं शेयरों में 15 दिन में मन्दा बने।

बुध सिंह राशि में सूर्य के साथ होने से यहां मन्दे की जगह कदाचित् तेजी भी बन सकती है– सावधान रहें।

27 अगस्त को चन्द्रदर्शन बुधवार को होगा एवं 27 अगस्त को ही बुध उ.फा. एवं 29 अगस्त को बुध कन्या में आकर राहु के साथ मेल करेगा। रुई, चान्दी, गेहूं, चना, जौ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी आए। धातुएं भी तेज रहें।

30 अगस्त को सूर्य पू.फा. एवं 31 अगस्त को शुक्र मघा–सिंह राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। 14 दिन में जीरा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, जौ, चना, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत, सोना, तांबा, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, घी में तेजी रहेगी।

[19, 20 और 25 से 31 अगस्त तक बाजार तेज रहेंगे। वायदा एवं हाजर बाजार भी तेज रहेंगे।]

सितम्बर (सन् 2014 ई.)

मासारम्भ में बाजार तेज रहें।

नोट– 14 जुलाई (2014 ई.) से 3 सितंबर तक शनि–मंगल तुला राशि में ही चलते हैं। इसलिए 4 सितंबर को बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। 3 सितंबर को गुरु आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में दाखिल होगा। यह योग तेजी का बहु बड़ा फैक्टर है। इस समय घी, तेल, रुई, कपास, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, तिलहन बाजारों में तेजी की लाईन बनेगी, बहुत लाभप्रद चांस है।

नोट करें कि– 4 सितंबर को मंगल, शनि का साथ छोड़कर अपनी राशि वृश्चिक में आ जाता है। इस समय वृश्चिकस्थ मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है। इसी दिन बुध हस्त में भी आ रहा है। मंगल–शनि दोनों 9 सित. तक विशाखा नक्षत्र में ही चलते रहेंगे। रुई, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों एवं सोना–चान्दी में तेजी रहेगी। मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से विशेष तेजी नहीं बनेगी।

9 सितंबर को मंगल अनुराधा में आता है। रुई, कपास, गेहूं, लालमिर्च, लालचन्दन, सोना एवं लालरंग की चीजें तेज रहें।

[1 से 10 सितंबर तक बाजार उत्तम–मध्यमरूप से तेजी में रहेंगे।]

11 सितंबर को पू.फा. नक्षत्र का शुक्र मनुष्यगण में रहेगा। सरकार को दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्रों मारवाड़, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में गेहूं, जौ, बाजरा, उड़द,

मूंग, चना आदि सस्ता भेजना पड़े। लेकिन अन्यत्र घी, सोना, चान्दी, कपास, रुई, सूत एवं उक्त सभी अनाजों में तेजी ही रहेगी।

13 सितंबर को सूर्य उ.फा. में आएगा। इस समय सूर्य–शुक्र दोनों उ.फा. में ही चलेंगे। इसी दिन (13 सितंबर को ही) राहु चित्रा प्रथम पाद एवं केतु रेवती के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। रुई, कपास, रेशम, सूत, लोहा, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील तेज हों। सोने, चान्दी एवं शेयरों में मन्दा रहे।

14 सितंबर को बुध चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में दाखिल होगा। ध्यान दें;– इस समय राहु एवं बुध चित्रा नक्षत्र में ही हैं। बुध–राहु का एकराशि–सम्बन्ध भी चल रहा है। आश्विन–कृष्ण पक्ष में बुधवारी अमावस एवं बुधवारी संक्रान्ति भी है, अतः यहां 'खप्पर–योग' बन रहा है। 19 सितंबर तक राहु, बुध एकसाथ रहेंगे। रुई, कपास, तेल, सभी तिलहन, पाट, बारदाना, हल्दी में हमारे विचार से जोरदार तेजी बनेगी। बुध अफवाहों का ग्रह होने से कई बार मन्दे के झटके भी ला देता है;– समय पर ताजा मशवरा प्राप्त करें।

16 सितंबर को सूर्य कन्याराशि में आकर राहु एवं बुध के साथ 20 सितंबर तक एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इस समय पश्चिमी देशों में कोई अशान्ति का कारण बनेगा। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होगा। एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, शेयर–बाजार, रुई, हल्दी एवं कालीमिर्च, नारियल, सुपारी, मजीठ, लालमिर्च एवं लालरंग की चीजों में भी विशेष तेजी बनेगी। ध्यान दें;– सूर्य–राहु का संयोग होने से प्रत्येक वायदा एवं हाजर के व्यापार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

20 सितंबर को बुध तुला राशि में एवं इसी दिन गुरु आश्लेषा 2 में प्रविष्ट होगा। नोट करें;– तुला राशि का बुध इस समय शनि के साथ मेल करेगा। यद्यपि तुलाराशि में बुध बाजारों में मन्दा करता है, लेकिन तेल, तिलहन में जोरदार घटाबढ़ी करेगा–ऐसा विचार है। मन्दे में खरीदें, तेजी में माल निकाल कर लाभ लेते रहें। हमारे विचार से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, घी, तेल तेज एवं चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में जोरदार मन्दी एवं तेजी के झटके आएंगे।

22 सितंबर को शुक्र उ.फा. में आएगा। शुक्र–सूर्य एकनक्षत्र, भिन्नचरण में हैं। इस समय गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, रुई, कपास, तिलहन के व्यापारी बहुत विचारपूर्वक बाजार के रुख को देखकर काम करें। जोरदार मन्दी या तेजी भी बन सकती है। हमारे विचार से अनाज, दालवाना एवं रुई तेज रहे। सोने–चान्दी में घटाबढ़ी चले।

25 सितंबर को कन्या राशि में शुक्र, राहु एवं सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य–शुक्र–राहु की यह ग्रहस्थिति तेल, तिलहन, दालवाना, चावल, गेहूं, चान्दी आदि में जोरदार तेजी करेगी। हमारे विचार से चान्दी में घटाबढ़ी के बाद उत्तम तेजी से लाभ मिलेगा। गेहूं आदि अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, तिलहन, विशेषतः चावलों में झटके की तेजी से लाभ मिलेगा।

26 सितंबर को चन्द्रदर्शन तेल, तिलहन, गेहूं, चावल, उड़द, चना में घटाबढ़ी के साथ तेजी करे। रुई, चान्दी, सोना, सूत, कपास में भी तेजी का संकेत देता है।

27 सितंबर को हस्त नक्षत्र का सूर्य 15 दिन में गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी करे, लेकिन मासान्त में 29 सितंबर को स्वाती नक्षत्र का बुध एवं ज्येष्ठा नक्षत्र का मंगल चान्दी एवं रुई में घटाबढ़ी, अफीम में तेजी बनाता है।

हमारे विचार से सितंबर के अन्त में मंगल पर गुरु की दृष्टि है एवं बुध–शनि एकत्र हैं, अतः वायदा एवं हाजर बाजारों में उठापटक चलेगी। फिर भी तेजी प्रधान रहेगी।

अक्तूबर (सन् 2014 ई.)

1 अक्तूबर को बुधवार, मूल नक्षत्र एवं सौभाग्य योग है। बाजार तेज रहें। 2 अक्तूबर को शुक्र पूर्व में अस्त हो जाता है। शुक्र, सूर्य एवं राहु– ये तीनों कन्या राशि में ही हैं। कन्या राशि का शुक्र नीच है, लेकिन सूर्य–शुक्र हस्त नक्षत्र में हैं, राहु का साथ है। अतः दो–तीन दिन बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें। यद्यपि कन्या का शुक्र मन्दी करता है, परन्तु ग्रहचाल के मुताबिक शुक्र देवतागण में अस्त हुआ है। अतः रुई में मन्दी, चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। अनाज, चान्दी, सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, तिलहन में तेजी के रिएक्शनज़ आएं, यदि पहले तेजी हो तुरन्त लाभ लें। यदि पहले मन्दी हो तो माल पकड़ें, जल्दी लाभ मिलेगा।

3 अक्तूबर को शनि विशाखा के तीसरे चरण में एवं इसी दिन शुक्र हस्त में आ जाता है। यदि इस समय अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे अच्छा लाभ जल्दी मिलेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहे। गेहूं, रुई, चावल, सोना, चान्दी में तेजी रहे।

4 अक्तूबर को बुध वक्री होगा। बुध–शनि तुलाराशि में हैं। 24 दिन में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं तेल, तिलहन में अच्छी तेजी की उम्मीद है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे रहें।

8 अक्तूबर, बुधवार को भारत में दृश्य चन्द्रग्रहण मीन राशि में होगा। इस समय शुक्र–राहु–सूर्य की चन्द्र पर दृष्टि है। अनाज, घी, तिल, तेल, गुड़, चीनी में तेजी से लाभ मिलेगा।

[मासारम्भ से 8 अक्तूबर तक अनाजों में उठापटक, शेयरों एवं तेल–तिलहन, चीनी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे।]

9 अक्तूबर, गुरुवार को गुरु आश्लेषा के तीसरे चरण में एवं वक्री बुध चित्रा में दाखिल होगा। घी, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी बने। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। हरप्रकार के अनाजों एवं व्यापारिक वस्तुओं में तेजी रहे।

10 अक्तूबर को बुध पश्चिम में अस्त होगा। इसी दिन सूर्य चित्रा में एवं 13 अक्तूबर को शुक्र भी चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। बुध वक्रगति से चल रहा है। सूर्य शुक्र–राहु के साथ कन्या राशि में हैं। रुई में झटके की मन्दी बने तो माल पकड़ लें। चान्दी तेज, पाट हैसियन एवं शेयरों में मन्दा बने। सूत, सोना, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर में तेजी रहे।

16 अक्तूबर को वक्री बुध कन्या एवं 17 अक्तूबर को सूर्य तुला में आएगा। यहां सूर्य ने शनि के साथ एवं वक्री बुध ने राहु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाया है। गेहू, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, अलसी आदि सभी तिलहन, सोने, ताम्बा में तेजी आएगी। रुई, चान्दी में मन्दा रहे। लालचन्दन, श्रीफल, सुपारी में कुछ तेजी रहे।

18 अक्तूबर को मंगल मूल–धनु में आएगा। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है। इस समय रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी; चान्दी, सोना आदि धातु, लकड़ी, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी एवं सभी अनाज तेज रहेंगे।

19 अक्तूबर को शुक्र तुला में दाखिल होकर सूर्य–शनि के साथ मेल करेगा। यह योग हाजर एवं वायदा व्यापार में जोरदार तेजी का है–

" तुलाराशौ यदा भानुर्हेम–धान्ये महर्घता।"

नोट करें;– शनि, सूर्य, शुक्र– ये तीनों चित्रा नक्षत्र में हैं। लोगों की खरीद–शक्ति बढ़ेगी। सूत, कपड़ा, रुई, तिलहन में भारी तेजी आएगी। जौ, गेहूं, चना, अलसी, सोना, तांबा, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

[16 से 20 अक्तूबर तक चीनी, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन, रुई, कपास एवं अनाज तेज रहेंगे।]

23 अक्तूबर को वक्री एवं अस्त बुध हस्त नक्षत्र में आकर गेहूं आदि अनाजों में मन्दी बनाए। राहु तो वक्र है ही एवं ये (बुध–राहु) कन्या राशि में ही हैं। अतः गेहूं आदि अनाजों में मन्दी आएगी।

24 अक्तूबर को बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में पहले मन्दी होकर 25 दिन बाद झटके की तेजी से लाभ मिलेगा। गेहूं, चना, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेजी बनेगी। ध्यान दें कि– 24 अक्तूबर को सूर्य एवं शुक्र स्वाती नक्षत्र में आ रहे हैं। जोकि तेल, तिलहन, रुई, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी ही करेंगे।

25 अक्तूबर को बुध मार्गी होगा एवं मासान्त तक की ग्रहस्थिति, शनिवारी चन्द्रदर्शन, 26 अक्तूबर को मुहर्रम, 28 अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का बुध– यह ग्रहस्थिति रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी करे। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना, चावल, दालवाना, ग्वार आदि में तेजी बनेगी। रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, सरसों, तेल, मूंगफली आदि तिलहन में अच्छी तेजी आएगी।

[10 अक्तूबर से मासान्त तक उत्तम लाभ के चांस हैं। समय पर ताज़ा मशवरा प्राप्त कर सकते हैं।]

नवम्बर (सन् 2014 ई.)

मासारम्भ में ही (1 नवंबर को) तुला राशि में शुक्र सूर्य के साथ बैठा है, शनि अस्त हो रहा है। 1 नवंबर से 5 दिसंबर तक शनि अस्त रहेगा। इस समयावधि में रुई , वस्त्र, सोना, शेयर एवं तेल, तिलहन में जोरदार मन्दा आएगा। शनैः–शनैः माल पकड़ते जाएं। रुई एवं तिलहन में आगे भयंकर तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।

2 नवंबर को शनि वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। इस शत्रुक्षेत्रस्थ शनि का प्रभाव समझ लें। शनि ग्रह के अधिकारक्षेत्र में विशेषतः तिलहन बाजार एवं शेयर बाजार आते हैं। मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास, सरसों तथा सभी खाद्य तेलों पर शनि का विशेष प्रभाव हमने अनुभव किया है। शनि का सीधा प्रभाव कच्ची चीजों की फसलों एवं पैदावार पर पड़ता है। फसल नष्ट हो जाने से बाजार तेजी की तरफ बढ़ते हैं।

इस समय शनि विशाखा नक्षत्र में चल रहा है। अतः चावल, गेहूं आदि अनाजों की फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचे। जिससे अनाजों के वायदा व्यापार में भारी तेजी बनेगी। लेकिन रुई, शेयर बाजार एवं सोना तेज रहें–" स्वल्पं धान्यमलौ जने नृपभयं पीड़ापि शलभादिजा।"

ध्यान दें – 2 नवंबर को वृश्चिक राशि का वक्री शनि स्वतन्त्र है। अनुभव के आधार पर वृश्चिक का शनि जोरदार मन्दी का झटका बाजारों में देता है। लेकिन पुरातन शास्त्रानुसार यह तेजी देता है। ध्यान दें;– यदि इस समय बाजारों में मन्दी आए तो खूब स्टॉक करें, 8 दिसंबर के बाद उत्तम लाभ मिलेगा।

ग्रह–गोचर के अनुसार अनाज, दालवाना, तिल, तेल, अजवायन, मेथी, रुई, घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चान्दी में जोरदार तेजी व मन्दे का झटका आएगा। हमारा विचार यहां तेजी का है।

3 नवंबर को गुरु आश्लेषा के चतुर्थ चरण में आएगा। इस समय यह घी, तेल, तिलहन एवं दालवाना में तेजी करेगा। हरप्रकार की व्यापारिक वस्तुओं एवं सोना में भी तेजी करेगा।

4 नवंबर को बुध तुलाराशि में दाखिल होकर सूर्य–शुक्र के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र विशाखा नक्षत्र में आएगा। शनि एवं शुक्र– दोनों इस समय विशाखा नक्षत्र में ही हैं।

रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम तेज रहें। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, अनाज मन्दे होकर तेजी पकड़ें।

5 नवंबर को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल–तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी ही करे। गेहूं आदि अनाज मन्दे रहेंगे। 6 नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का सूर्य 14 दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम तेज करे। अलसी और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। नोट– 6 नवंबर से सूर्य एवं सवंत् के प्रारम्भ से ही शनि– दोनों 18 नवंबर तक एक साथ विशाखा नक्षत्र में ही रहेंगे, अतः तेजी का ही विचार समझें।

8 नवंबर को बुध स्वाती नक्षत्र में आएगा। रुई में 8 दिन में मन्दी बने।

12 नवंबर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। अस्त शनि एवं शुक्र का यह सम्बन्ध बाजारों में अनिश्चितता रखता है; हमारे विचार से 2/3 दिन बाजार को जांचकर व्यापार को बढ़ाएं। ग्रहचाल के मुताबिक इस समय रुई, शेयर बाजार, चान्दी एवं अफीम में पहले मन्दी आकर तेजी बनेगी। गुड़ में घटाबढ़ी चले गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, चावल, चना, बाजरा आदि में तेजी; इस समय तेल–तिलहन भी तेज ही रहें।

[नोट– मासारम्भ से 6 नवंबर तक एवं 12, 13 नवंबर को तेल, तिलहन, अनाज एवं दालवाना तेज रहें।]

14 नवंबर को अनुराधा में शुक्र एवं हस्त के चतुर्थ चरण में राहु तथा रेवती–2 में केतु का सञ्चार होगा। गुड़, खाण्ड, चावल, नमक एवं अनाजों, दालों के बाजार एवं सोना–चान्दी कमजोर रहें।

16 नवंबर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर शनि एवं शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा।

इस समय सरकार की आयात–निर्यात (**Export-Import**) की नीति पर ध्यान रखें। इस समय कोई प्राकृतिक आपदा किंवा किसी दुर्घटना से भी शेयर एवं हाजर बाजारों में उठापटक संभव है। हमारे विचार से इस समय रुई, तांबा, चान्दी, सोना, ऊनीवस्त्र, तेल–तिलहन तेज रहें। लेकिन रिस्क न लें;– बाजार के रुख को नजर–अन्दाज़ न करें। क्योंकि, इस समय शुक्र–शनि एवं बुध अस्त हैं, अतः बाजार उलटे भी चल सकते हैं।

17 नवंबर को बुध विशाखा नक्षत्र में आकर रुई के भाव में अच्छी मन्दी लाएगा। 19 नवंबर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में एवं 22 नवंबर को शनैश्चरी अमा वाले दिन मंगल उ.षा. में आएगा। ग्रह–गत्यनुसार गेहूं, जौ, चना, चावल आदि में तेजी रहे। सोना, चान्दी, तांबा, लालमिर्च में मन्दी के बाद तेजी; रुई में विशेष तेजी का झटका आएगा। घी, तेल, सरसों, उड़द में भी तेजी बनेगी।

23 नवंबर को रविवारी चन्द्रदर्शन, 24 नवंबर को वृश्चिकराशि में बुधसंक्रमण एवं सूर्य–शनि–शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध, 25 नवंबर को ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्र का संचार होगा। शुक्र, बुध अस्त हैं।

इस समय व्यापारी नोट कर लें– यदि बाजार मन्दे हों तो शुक्र–बुध का मेल जबरदस्त मन्दा करेगा। यदि तेजी चल रही हो तो जोरदार तेजी का उछाला आएगा– यह ध्यान में रखें।

हमारे विचार से यदि तेल, तिलहन, रुई, चान्दी एवं दालों में मन्दा बने तो भरपूर स्टॉक करें; आगे 26 नवंबर से 12 फरवरी, सन् 2015 ई. तक भारी लाभ मिलेगा।

लेकिन मौजूदा ग्रहचाल के अनुसार हमें घी, तेल, सरसों, रुई, चान्दी,

सोना में तेजी मालूम देती है।

26 नवंबर को अनुराधा नक्षत्र का बुध एवं इसी दिन शुक्र का पश्चिम में उदय होना घी में कुछ मन्दा करे। लेकिन शुक्र–शनि–सूर्य एवं बुध का एकत्र होना रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, तिल, चावल में तेजी से लाभ देगा।

27 नवंबर को मंगल अपनी उच्चराशि मकर में प्रवेश करेगा। शनि एवं बृहस्पति की इस पर दृष्टि भी रहेगी। लेकिन नोट करें कि– इस समय मंगल अतिचारी भी चल रहा है; जिसका बहुत महत्त्व है। बाजारों में एकतरफा लाईन बन सकती है। हमारे विचार से तिलहन, घी, रुई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड एवं सभी बाजारों में तूफानी तेजी आएगी।

30 नवंबर को शनि के अनुराधा नक्षत्र में आने पर काली एवं लालमिर्च, नमक, मसाले, केसर, चन्दन, कपूर एवं तेल–तिलहन में तेजी से अच्छा लाभ मिलेगा।

[नोट– 27 नवंबर से मासान्त तक तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, रुई एवं मसालों के व्यापारी उत्तम लाभ लेंगे। आगे भी तेजी चलेगी।]

दिसम्बर (सन् 2014 ई.)

दिसंबर के प्रारम्भ में (3 दिसंबर को) सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। इस समय सूर्य, शुक्र, बुध, शनि– एकसाथ हैं। बुध–सूर्य–शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में ही हैं। अनेकत्र वर्षा का अभाव एवं शीत की मार से फसलें खराब होंगी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, चान्दी, सोना, तांबा, घी, गुड़, खाण्ड, चावल एवं शेयर बाजार तेज रहें।

5 दिसंबर को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर मेदिनी ग्रह प्लूटो से मेल करता है। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयरों में तेजी होगी। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने या पहले तेजी, बाद में मन्दी बने।

6 दिसंबर शनिवार को शनि उदित होगा। 8 दिन में रुई, शेयर, अलसी आदि सारे तिलहन मन्दे होंगे। सज्जी, लोहा, जस्ता, सीसा, रंग आदि, काले पदार्थ, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे।

8 दिसंबर को गुरु आश्लेषा नक्षत्र में वक्री होगा। गुरु पर मंगल की दृष्टि भी है। कर्कराशि में गुरु के वक्री होने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, तेल, रुई, ऊन, कपास में निस्सन्देह लाभ होगा;–

" रसादि–सर्वसंयोगो घृततैलादि–खण्डकम्।
कार्पासादीनि वस्तुनि लाभं दद्युर्न संशयः।।"

हमारा विचार है कि– सुगन्धित पदार्थ, सभी रसपदार्थ, गेहूं, चना, चावल आदि सभी व्यापारिक वस्तुएं तेज हों। तीन मास तक तेजी रहे। दिसंबर के प्रारम्भ में ताजा मशवरा प्राप्त करें तो अच्छा रहेगा।

10 दिसंबर को मंगल श्रवण नक्षत्र में आकर गेहूं जौ, चना, चावल आदि अनाजों, अफीम, सोना, चान्दी में तेजी करेगा। रुई में घटाबढ़ी चले।

13 दिसंबर को बुध मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में दाखिल होगा। इस समय धनुराशि में शुक्र भी है। इस समय व्यापारी नोट करें कि– बाजार मन्दे हैं या तेज। बुध–शुक्र इकट्ठे होकर बाजार के चलते रुख को जोरदार बढ़ावा देते हैं। चल रही मन्दी में जोरदार मन्दी व तेजी में जोरदार तेजी बना देना इनका स्वभाव है। अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें।

हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी।

16 दिसंबर को सूर्य भी मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में प्रवेश करेगा। ध्यान दें;– इस समय शुक्र एवं बुध भी धनुराशि में ही हैं। 16 दिसंबर को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। धनुराशि में तीन ग्रहों का एकसाथ होना एवं मंगल का अतिचारी होना ज़ोरदार तेजी का सूचक है। हमारे विचार से रुई, कपास, वस्त्र, सूत, चान्दी, सोना, घी, तिल, तेल, तिलहन एवं दालें तेज हों।

21 दिसंबर को बुध भी पू.षा. नक्षत्र में आ जाता है। इस समय बिनौला तेज रहे; अनाजों एवं सोने–चान्दी में जोरदार मन्दी आने का योग है।

23 दिसंबर को मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से मोटे अनाज, दालवाना एवं व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बने। रुई, सोने–चान्दी में घटाबढ़ी रहे।

27 दिसंबर को मंगल धनिष्ठा में एवं शुक्र उ.षा. में पदार्पण करेगा। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा, अलसी, एरण्ड, रुई, जौ, पीपल तेज रहें। गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी एवं अनाज कुछ मन्दे रहें।

29 दिसंबर को पू.षा. नक्षत्र का सूर्य तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनीवस्त्र, सण एवं चान्दी में तेजी करेगा। 29 दिसंबर को ही शुक्र मकरराशि में आकर मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा।

शुक्र–मंगल का योग शेयर बाजार, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना, चावल, सोना, चान्दी, रुई में तेजी का ही संकेत देता है।

30 दिसंबर को बुध उ.षा. नक्षत्र में एवं शनि अनुराधा नक्षत्र के दूसरे चरण में आएगा। बुध पर शनि की दृष्टि भी है। अतः मिर्च, नमक, केसर, कपूर में तेजी; तेल, तिलहन अनाजों एवं दलहन में भी तेजी से लाभ मिले। 31 दिसंबर तक तेल, तिलहन एवं रुई के व्यापारी लाभ में रहेंगे।

जनवरी (सन् 2015 ई.)

1 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध पश्चिम में उदित होगा। इन पर शनि की दृष्टि भी है। मकर राशि का शुक्र सभी अनाजों की फसलों को हानि पहुंचाता है। अतः तेजी बनती है;–

" मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्।
जायन्ते च महर्घाण नात्र कार्या विचारणा।।"

मकर राशि का मंगल घी, तेल, तिलहन में भारी तेजी करता है। ध्यान दें कि– मंगल का अतिचार भी बना हुआ है। अतः अनाज, दालें, रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन में भारी तेजी लेकर चलें;– " मकरे च स्थिते भौमे घृत–तैलमहर्घता।" शेयर बाजारों में भी तेजी आकर आगे 15 दिन में मन्दी आने का योग है।

4 जनवरी (2015 ई.) को मंगल कुम्भराशि में आकर शनि के साथ राशिव्यत्यय (राशि की अदला–बदली) भी कर रहा है। अर्थात्– मंगल की राशि में शनि एवं शनि की राशि में मंगल है। मंगल अतिचारी ही है।

इस समय रुई और चान्दी में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। गेहूं, चना, चावल, बाजरा आदि मोटे अनाज एवं गुड़, खाण्ड, सोना–चान्दी तेज रहेंगे। **नोटः– आगे 3 जनवरी को पौष शुक्ल त्रयोदशी शनिवारी होने से भी सभी अनाजों में तेजी ही रहेगी;– ऐसा शास्त्रवाक्य है। यदि कभी मन्दा हो तो स्टॉक कर सकते हैं।**

6/7 जनवरी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। शुक्र–बुध दोनों मकर–राशि में बृहस्पति एवं शनि की नजर में हैं। इस समय बुध भी श्रवण नक्षत्र में ही है। **नोटः– व्यापारी विशेष सावधान रहें। बाजार की चाल ध्यान में रखें। अगर 6 जनवरी से पहले तेजी चल रही है तो तेजी और ज्यादा होगी, यदि बाजार मन्दे के हैं तो मन्दी भयंकर रूप से आएगी।**

हमारे विचार से चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द आदि अनाजों में मन्दा संभव है। आगे 10 दिन में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावलों में तेजी बनेगी। तेल–तिलहन तेज रहेंगे– ऐसा विचार है। फिर भी पहले दिए गए नोट पर ध्यान जरूर दें।

11 जनवरी (2015 ई.) को सूर्य उ.षा. में एवं 12 जनवरी को वक्री गुरु आश्लेषा के तृतीय चरण में आएगा। ध्यान रहे;– इस समय सूर्य स्वतन्त्ररूप से धनुराशि में ही चल रहा है। अतः वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी रहेगी। उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लालशक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, मूंज, पट्टसूत्र में तेजी रहे। घी, तेल, तिलहन किंवा सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहता है।

[मासारम्भ से 12 जनवरी, 2015 ई. तक बाजार तेजी में रहेंगे। फिर भी ताजा मशवरा लेते रहें तो ठीक रहेगा।]

13 जनवरी को अतिचारी मंगल शतभिषा नक्षत्र में आता है। अनाज के भाव मन्दे, रुई, सोना, चान्दी पहले मन्दे होकर फिर तेज होंगे। यदि मन्दा बने तो तुरन्त लाभ लें या स्टॉक करें।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर बुध के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय इन पर गुरु की दृष्टि भी है। बाजार जबरदस्त घटाबढ़ी में रहेंगे। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली आदि तिलहन, तेल, सोना, शेयर बाजार, हल्दी, कालीमिर्च, जीरा आदि मसालों एवं घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं रुई में भयंकर तेजी या मन्दी बनेगी। गेहूं आदि अनाज व बारदाना के व्यापारी भी समझ से काम करें।

[13 से 16 जनवरी (2015 ई.) तक यदि तेल, तिलहन, रुई, कपास एवं दालों में से किसी भी चीज में मन्दा आए तो माल पकड़ लेने में कोई हर्ज नहीं, आगे एक मास में जब भी लाभ मिले, लाभ ले लें, अन्त तक जाने की जरूरत नहीं।]

17 जनवरी को धनिष्ठा का शुक्र बुध, सूर्य के साथ आ जाता है। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, कपास में मन्दी बने। 17 जनवरी को ही राहु हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में मंगल की दृष्टि में आता है। रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, दालवाना, तिल, तिलहन तेज रहें; सोना–चान्दी मन्दे हों।

नोट– धनिष्ठा का शुक्र यद्यपि मन्दी करता है, लेकिन शुक्र, बुध, सूर्य

का एकत्र होना उपरोक्त चीजों में अचानक तेजी भी कर सकता है, ध्यान से काम करें।

21 जनवरी को मकर राशि में बुध वक्री हो रहा है। सूर्य भी मकरस्थ है। इन पर शनि–बृहस्पति की दृष्टि है। घी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे रहें। 21 जनवरी को बुधवारी चन्द्रदर्शन होने से सोना, चान्दी, रुई, सूत, सण, बारदाना, जूट एवं चीनी मन्दी हो।

23 जनवरी से (वक्री बुध श्रवण नक्षत्र में होने से) 10 दिन में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेजी बनेगी।

24 जनवरी को सूर्य भी श्रवण में आ जाता है। 14 दिन में गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग एवं पीपल तेज रहें। इसी दिन वक्री बुध पश्चिम में अस्त भी हो रहा है। रुई में शीघ्र ही झटके से मन्दी हो; चान्दी तेज, पाट, हैसियन और शेयरों में मन्दी बने।

28 जनवरी को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चान्दी तेज रहें।

30 जनवरी को मंगल के पू.भा. में आने पर 31 जनवरी किंवा कुछ आगे तक तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, सरसों, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, सोना एवं चान्दी में तेजी से मासान्त तक लाभ मिलेगा।

फरवरी (सन् 2015 ई.)

लगभग 12 फरवरी तक मंगल अतिचारी रहेगा। मंगल ग्रह का प्रभाव मौसम, हवा, बरसात पर खास तौर से पड़ता है। मंगल ग्रह के कारण बरसात के समयानुकूल न होने से बाजारों में तूफानी तेजी आती है। मंगल का प्रभाव तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना तथा शेयर बाजारों पर विशेषतः अनुभव किया गया है।

5 फरवरी को मकर राशि में स्थित वक्री बुध उ.षा. में प्रविष्ट होगा। इस समय बुध पर शनि एवं गुरु की दृष्टि भी है। 6 फरवरी को बुध पूर्व में उदित होगा। इसी दिन सूर्य धनिष्ठा में प्रवेश करेगा। 15 दिन में सोना, चान्दी, मोती–मणि आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाज एवं अलसी, रुई तेज हों। रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी रहे। तिलहन, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च तेज रहें।

7 फरवरी को पू.भा. नक्षत्र का शुक्र रुई, चान्दी, कपास में तेजी करेगा।

8 फरवरी को वक्री गुरु आश्लेषा के दूसरे चरण में दाखिल होगा। घी, तेल एवं सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहेगा।

10 फरवरी को शनि अनुराधा के तीसरे चरण में प्रविष्ट होगा एवं 11 फरवरी को बुध मार्गी होगा। लाल–कालीमिर्च, सभी मसाले, चन्दन, केसर, कपूर, गेहूं, जौ, चना, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, मूंगफली, खण्ड आदि के बाजारों में उठापटक चलेगी। रुई में मन्दी के बाद तेजी, सोना तेज रहे।

11 फरवरी को बुध मार्गी हो जाता है। यहां व्यापारी ध्यान दें कि– बाजारों में अचानक रुख बदल सकता है। यदि बाजार तेज हों, तो मन्दे हो जाएंगे; यदि बाजार मन्दे चल रहे हों तो तेज हो सकते हैं। होशियारी से काम करें। हमारे विचार से रुई में मन्दी के बाद तेजी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, कपूर, रसकस में मन्दे की चाल बने। सोना तेजी की तरफ रहे।

12 फरवरी को मंगल का अतिचार लगभग समाप्त हो रहा है। इस दिन मंगल मीन में आकर केतु के साथ है। इस समय सोना, रुई, तृण, काष्ठ, लकड़ी से निर्मित वस्तुएं तेज रहें। चान्दी में घटाबढ़ी। पहले मन्दी, फिर तेजी रहे।

[मासारम्भ से लगभग 12 फरवरी तक बाजार तेज रहेंगे। आगे सावधानी से काम करें।]

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। कुम्भ राशि का मालिक शनि, सूर्य का शत्रु है। अतः बाजारों में मन्दी या तेजी का उछाल आएगा। हमारे विचार से घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेजी बने। रुई, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन एवं गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

15 फरवरी को शुक्र मीन में आकर मगल–केतु के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। मीन राशि पर गुरु की विशेष दृष्टि है। अनाज, सरसों, तेल, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड में मन्दी रहे। रुई में तेजी आए। ध्यान रहे– मंगल, केतु के साथ शुक्र होने से चान्दी में धमाके की तेजी आ सकती है।

16 फरवरी को मंगल उ.भा. में आएगा। मंगल इस समय मीन राशि में शुक्र–केतु के साथ है। बृहस्पति की इन पर दृष्टि भी है। चान्दी, सोना, रुई, गेहूं, जौ, चना सामान्यतः तेज रहें। एक मास में देवदारू, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ भी प्रायः तेज रहें।

18 फरवरी को बुध श्रवण में एवं शुक्र उ.भा. में आएगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल तेज रहें एवं चन्दन, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि में मन्दी रहे।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आकर गुरु की दृष्टि में है। रेशम, सोना, चान्दी, गेहूं, सूत, सण, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़ तेज होकर मन्दे हों।

[13 फरवरी से 28 फरवरी तक तेल, तिलहन, दालवाना, रुई, चावल आदि के बाजारों में जोरदार तेजी–मन्दी के झटके आएंगे–सावधानी से काम करें।]

मार्च (सन् 2015 ई.)

1 मार्च को शुक्र रेवती में आता है। शुक्र, मंगल, केतु एकराशि में ही हैं। इन पर वक्री बृहस्पति की दृष्टि भी है। रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं जवाहरात मन्दे हों।

3 मार्च को मकरस्थ बुध धनिष्ठा में आता है। इस पर शनि की विशेष दृष्टि है। बुध मकर में आकर मन्दी के झटके एवं मन्दी की अफवाहों के साथ बाजारों में उठापटक करता है। सावधानी से काम करें। बुध की खास विशेषता यह है कि– जब बुध क्रूर ग्रहों–(सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि) के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाता है, तो क्रूर एवं तेजीकारक हो जाता है।

इस समय तेल, तिलहन, दालें, चावल, सोना, चान्दी में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी का झटका बनेगा।

5 मार्च को मंगल रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। स्पष्ट है कि– शुक्र, केतु, मंगल मीन राशि में एकसाथ ही हैं। गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में जोरदार मन्दी या तेजी बनेगी, सवाधानी से काम करें। मंगल आदि पर वक्री गुरु की दृष्टि भी है। बाजार की चाल को देखकर काम करें। हमारा विचार मन्दे का ही है। चान्दी, सोना तेज रहें। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

8 मार्च को वक्री गुरु आश्लेषा के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। यह भी जबरदस्त तेजी देने वाला है। रुई, कपास, तिलहन, चान्दी, सोना, शेयर, घी, तेल, दालवाना आदि सभी प्रमुख बाजारों में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा।

ध्यान दें– 8 मार्च को ही बुध शनि की राशि (कुम्भ) में प्रविष्ट होगा। अलसी, रुई, चान्दी में मन्दी के बाद कुछ तेजी बने। घी, तेल, रसकस, गुड़, खाण्ड तेज रहें। दलहन भी तेज रहें।

ध्यान दें;– चैत्रकृष्ण पंचमी को (11 मार्च के दिन) बुधवार होने से गेहूं, दालवाना, चना, तिलहन एवं घी में तेजी रहेगी–

"चैत्रस्य प्रथमे पक्षे बुधवारेऽस्ति पंचमी।
भौमे वा महर्घ स्यात् गोधूमस्य घृतस्य च ।।"

12 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आएगा। जौ, चना आदि सभी अनाज, घी एवं सोने, चान्दी में खास तेजी आती है। गुड़, खाण्ड, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ऊन, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड आदि में कुछ मन्दी रहे।

13 मार्च को बुध शतभिषा में आकर सोना, चान्दी एवं अनाजों के भावों में कुछ तेजी करेगा।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर मंगल एवं केतु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। वक्र गुरु की इन पर विशेष दृष्टि है। इसी दिन वृश्चिक राशि का शनि वक्रगति से चलने लगेगा।

इन दिनों तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना, सिक्का, कली, गेहूं, पीतल, चावल, घी, सरसों, सीमेण्ट, तम्बाखू तेज रहेंगे।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. में आकर 14 दिन में चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल, तिलहन में तेजी करेगा।

21 मार्च (शनिवार) को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, वस्त्र, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी बने।

22 मार्च को बुध पू.भा. में आएगा। बुध कुम्भ राशि में है। रुई में घटाबढ़ी रहेगी। सोना, चान्दी, तांबा, लोहा एवं अनाजों में मन्दा रहे।

23 मार्च को मंगल आश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। यह योग बाजारों में झटके के साथ तेजी करेगा। ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, मोठ, गेहूं, गुड़, खाण्ड, रुई, सोना, तांबा, मूंगा, मोती, ऊन, कपास, पाट, बारदाना एवं रसादि पदार्थ तेज रहेंगे। **यह फल प्रायः 15 दिन तक प्रभावी होगा।**

27 मार्च को बुध मीन राशि में आकर पूर्व में अस्त होगा। यह सूर्य, केतु के साथ मेल करेगा। सोना, चान्दी एवं रुई में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी

फिर उतनी ही मन्दी बने। बिनौला तेज रहे। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। अनाज, घी आदि मन्दे हों।

29 मार्च के लगभग बुध उ.भा. में आकर सूर्य के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएगा। इस समय चान्दी में घटाबढ़ी एवं रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि में बाजार खड़े रहें, अनिश्चित रहें– सावधानी से काम करें।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर केतु के साथ नक्षत्र–सम्बन्ध बना रहा है। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं चावलों में तेजी से लाभ रहे।

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी–मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

–: व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा :–

तेजी–मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

(अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट)

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2014 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस **Rs.** 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

ध्यान दें–यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी–मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश, किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

PHON: 0160-2641 277
0160-2641 577

नोटः– गुरुवार को
कार्यालय में अवकाश रहता है।

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

आपके स्वप्न क्या संकेत देते हैं ?

(डॉ. आशुतोष शर्मा)

[पुरातन घटना है, कि– अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री इब्राहीम लिंकन की धर्मपत्नी को स्वप्न आया, कि– " U.S.A. के सर्वोच्च सेनाधिकारी रो रहे हैं।" कारण पूछने पर उत्तर मिला कि– " राष्ट्रपति इब्राहीम लिंकन की मृत्यु हो गई।" इस स्वप्न ने Mrs. लिंकन को चिन्तित कर दिया। पूरी सुरक्षा की व्यवस्था रखी गई। **लेकिन एक सप्ताह के अन्दर ही थियेटर के अन्दर प्रदर्शन कर रहे 'बूथ' ने गोली मारकर उनकी जीवनलीला समाप्त कर दी।]** – क्या पूर्व स्वप्न का यह निदर्शन नहीं था ? – **स्पष्ट है, स्वप्न के संकेत को समझें; ये कुछ कहते जरूर हैं। " भाग्यवश स्वप्न पहले न देखी गई घटनाओं को भी मनुष्यों को स्वप्न के माध्यम से पहले ही दिखा देते हैं;– " अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात् करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्।" (नैषधचरित)**

– सम्पादक।

जिस समय पांच कर्मेन्द्रियां एवं पांच ज्ञानेन्द्रियां और मन– ये सब जब अपनी–अपनी क्रिया से रहित होते हैं और व्यक्ति अपने आप को शान्त अनुभव करता है, उस अवस्था में कुछ विचित्र अनुभूति होती है। उसी अनुभूति को 'स्वप्न' कहते हैं। स्वप्न में उस अनुभूति को समझना कठिन है; क्योंकि स्वप्नसंकेत आपको बोलकर नहीं बता सकते। स्वप्न भूत–भविष्यत् तथा वर्तमान की जानकारी से आपको सावधान कर सकते हैं। आइए देखें कि– " **स्वप्न आपको क्या बतलाते हैं ?**"

स्वप्न दो प्रकार के होते हैं– (1) इष्टफल–संकेतक,(2) दुष्टफल–संकेतक। इन्हीं के बारे में संक्षिप्त जानकारी हम यहां दे रहे हैं–

स्वप्न में बादाम देखना आने वाली बीमारी का सूचक है। स्वप्न में किसी पर क्रोध करने का अभिप्राय है कि– आप उस व्यक्ति से बेहद प्यार करते हैं। **नाराज़** होने पर भी यही फल है।

नदी या समुद्र में तैरना, आकाश में उड़ना, सूर्य को उदित होते देखना, प्रचण्ड अग्नि को देखना, सूर्यादि ग्रहों किंवा अश्विनी आदि नक्षत्रों को यथावस्थ देखना, ध्रुव तारे को देखना, महल, गृह, शिवालय आदि के शिखर पर चढ़ना– इत्यादि स्वप्न व्यक्तिविशेष की **कार्यसिद्धि** एवं **प्रगति** के सूचक हैं।

जापान में वैज्ञानिकों ने **M.R.I.** स्कैन से नींद की शुरुआती अवस्था में देखी गई चीजों का अनुमान लगाया है। शोधकर्ताओं के दल में तीन लोगों पर सोते वक्त **M.R.I.** स्कैन से परीक्षण किए। स्कैनर के अन्दर निद्रा लेने वाले व्यक्तियों को जगाकर, "उन्होंने क्या देखा एवं क्या अनुभव किया"; इस बात को याद करने को कहा गया। सब कुछ नोट किया गया। इस प्रक्रिया को 200 बार दोहराने पर शोधकर्ताओं ने दिमागी हलचलों एवं नींद में देखे गए स्वप्नों को 60 प्रतिशत सही पाया। शोधकार्य जारी है।

स्वप्न में मद्यपान, चर्बी–मांसभक्षण, कीटों का खाना, शरीर पर कीड़े लगना किंवा शरीर पर विष्ठा का लेपन देखना, देह पर रुधिरलेपन, दही–भात–खाना, श्वेत–चन्दन लगाना, नाना प्रकार के सफेद अलंकार धारण करना अथवा सफेद आभूषण पहने व्यक्ति को देखना शुभ है। अभीष्ट **कार्यसिद्धि** होगी।

स्वप्न में देवता, ब्राह्मण, चन्द्र, छत्र, राजा, श्वेतकलश, श्वेतवस्त्र, नानाविध अलंकारों से अलंकृत–स्त्री, बैल, पर्वत, दूध, फलयुक्त–वृक्ष किंवा बट–पीपलादि वृक्ष–दर्शन एवं इन वृक्षों पर चढ़ना, मांस किंवा फूलमाला मिलना, अथाह जल में तैरना – **ये स्वप्न अथाह द्रव्यलाभ के सूचक हैं। यदि शरीर में रोग हो (व्यक्ति रोगी हो) तो रोग से मुक्त होगा। ऐसे स्वप्न से सुख–समृद्धि एवं प्रगतिकारक वातावरण बनते हैं।**

अभीष्ट फल द्योतक स्वप्न–

(i) स्वप्न में राजा, हाथी, घोड़ा, बैल, गाय को देखना;– **ये स्वप्न कुटुम्ब की वृद्धि का संकेत देते हैं।**

(ii) स्वप्न में गाय, हाथी, बैल, शिवालय या पर्वत पर या फलयुक्त वृक्ष पर चढ़ना, स्वयं को मरा हुआ देखना, अयोग्य–स्त्री–संगम करना;– **ये स्वप्न दीर्घायु एवं यश–प्रदान करते हैं।**

(iii) स्वप्न में दूध मिलना, फलान्वित–वृक्ष (बटवृक्ष) आदि पर अकेले चढ़ना एवं तुरन्त आंख का खुल जाना;– **ये स्वप्न जल्दी ही धनलाभ, परीक्षा में सफलता तथा अच्छी सर्विस का लाभ प्रदान करते हैं।**

(iv) स्वप्न में जो व्यक्ति अपने हाथ पर सफेद–रंग के सांप द्वारा कटता देखे, **उसको दस दिन के भीतर ही आकस्मिक धनप्राप्ति होती है।**

(v) स्वप्न में जल के भीतर बिच्छू काटे, **उसको राजकार्य में विजय, मनोरथ सिद्ध हों किंवा पुत्रलाभ हो।**

(vi) स्वप्न में पर्वत पर चढ़े एवं समुद्र पार करे, **वह व्यक्ति गरीब घर में पैदा होकर भी राजपद को प्राप्त करता है।**

(vii) जो पुरुष तालाब में उत्पन्न सम्पूर्ण कमल–पत्र पर घृत–खीर का भोजन करे;– **ऐसा स्वप्न सार्वभौम वैभव–सम्पन्न होने का संकेत देता है।**

(viii) बगुला, मुर्गी, क्रौंचपक्षी– इनको स्वप्न में देखते ही जाग जाए, तो **उसे कुलीन, मधुंरभाषिणी–कन्या भार्यारूप में प्राप्त होती है।**

(ix) जो पुरुष स्वप्न में हाथ–पावों में जंजीर बन्धी हुई देखे, **तो उसे पुत्र अथवा धन जल्दी प्राप्त होगा, इसमें सन्देह नहीं।**

(x) जो स्वप्न में अपना आसन, बिछौना, पालकी, अपनी देह, गाड़ी आदि को जलते हुए देखे तो, **उसे व्यापार में आशातीत धनलाभ हो।**

(xi) जो स्वप्न में केवल सूर्यमण्डल को देखे तो उसका रोग **दूर हो अथवा लक्ष्मी किंवा यशप्राप्ति हो।**

(xii) स्वप्न में रुधिर व मद्यपान करता दीखे तो **विद्यार्थी को विद्याप्राप्ति व अन्य को धनलाभ हो।**

(xiii) यदि स्वप्न में श्वेतवस्त्र पहने हुए स्त्री, सफेद चन्दन लेप करके स्नान करती दिखाई दे तो **धनधान्यसमृद्धि हो।**

(xiv) स्वन्न में खड़ाऊं का जोड़ा, छत्र, अच्छी धार की तलवार मिले, तुरन्त निद्रा खुले तो **जमीन जायदाद का लाभ एवं अन्न लाभ हो।**

अशुभ स्वप्न

(क) स्वप्न में सूर्य–चन्द्र को निस्तेज देखना, ध्रुवादि तारों को टूटता देखना– **मनुष्य को अशुभ–समाचार, मृत्यु किंवा शोकाकुल बनाता है।**

(ख) स्वप्न में अशोक, कनेर, बांस वृक्ष को फूल लगे हुए देखे तो **शोक–समाचार से दुःख हो।**

(ग) लालवस्त्र पहिने, लालचन्दन लगाए हुए स्त्री, स्नान करे या आपको स्नान कराए तो **मृत्युतुल्य कष्ट हो।**

(घ) स्वप्न में तैल लगाकर काले वस्त्रपहने हुए कोई व्यक्ति दक्षिण दिशा में गमन करे **तो दुर्घटना में मृत्युभय है या भयंकर रोगग्रस्त हो।**

(च) स्वप्न में सिर से केश स्वयं गिर जाएं, दांत टूट गिरे तो **धनहानि एवं पुत्रकष्ट व मृत्युभय हो।**

(छ) स्वप्न में गधा, ऊंट अथवा महिष (भैंसे) से लगे वाहन पर बैठे सवारी करे (विशेषतः दक्षिण दिशा की तरफ जाए) तो मरणभय किंवा महारोग से जीवन व्यतीत करना पड़े।

सामान्यतया नेष्टफल–द्योतक स्वप्न–

स्वप्न में यज्ञ के खम्भे अथवा नीम एवं पलाश–वृक्ष पर चढ़ना, वल्मीक पर चढ़ना, तेल, कपास, रुई, लोहा आदि धातु का मिलना, स्वप्न में रतिक्रीड़ा करना, लाल कपड़ा पहिनना व ओढना, नदी का मार्ग बदलना, पके मांस का खाना;– **ऐसे स्वप्न आगामी विपत्ति के सूचक हैं।**

अन्य प्रकार के अशुभ स्वप्न– निम्नलिखित समुदाय के दर्शन अनिष्ट फलप्रद जानने चाहिएं;– राक्षस, जलती हुई देह, रक्त, हड्डी, कपाल, रुई, राख, शुष्क–कांटेदार वृक्ष तथा उन पर अकेला चढ़ना, फांसी लगाना, नाभि के अतिरिक्त अंग से तृण, वृक्ष या पुष्पों की उत्पत्ति, घृत–तैलपान; गधा, हाथी का बच्चा, बन्दर, जंगली जानवर, सर्प आदि के दर्शन, उन पर आरोहण अथवा उनके साथ क्रीड़ा; शरीर पर कीचड़ युक्त जल, स्याही, काजल, घृत, तैल का लेप करना, आंख जिह्वा, दाढ़ी, दन्तपंक्ति तथा केशों का पतन; रिक्तपात्र, पानी का स्रोत, अपमान, भ्रमण, रज्जु का काटना, बुद्धि में विक्षिप्तता, माता के शरीर में प्रवेश, शरीर या किसी अंग का कंपन, लाल या काले वस्त्रधारण करना, गुप्तेन्द्रियों का मर्दन, मैदान में कोमल पशुओं और कीटों से क्रीड़ा; जलप्रायः देश में विचरण, गुड़ आदि का भक्षण, गोबर या उष्णोदक का भक्षण–पान, विष्ठा–मूत्र, मलिनवस्त्र, पितृकार्यों का सम्पादन, उच्चस्थान से अवरोह, सांप का कान–नाक में प्रवेश, सांप का शरीर से लिपटना, क्षीणकाय, क्रोधित तथा भयभीत व्यक्ति, ब्राह्मण, मृत पितरों का विकृत रूप में दर्शन, सम्बन्धी तथा देवता; मेघाच्छन्न आकाश, रसोई घर, लाल पुष्पों का वन, आंधी आना, गन्दा जल, नंगे पुरुष–स्त्री, भैंसा, काले घोड़े के दर्शन अथवा उन पर बैठकर दक्षिण दिशा की यात्रा, तीन जीभें होना, गाना–बजाना, क्रीड़ा करना, हंसना, खुशियां मनाना, किसी को ललकारना, सूर्य–चन्द्र–नक्षत्रों का पात, दल–दल में डूबना, जलाशयों का पानी सूख जाना, कनेर व अशोक वृक्ष, लताओं में फंस जाना, काले वस्त्र पहने हुए स्त्री से आलिंगन, स्वयं का धुएं के सदृश वर्ण का होना, लाल पुष्पों से शरीर को अलंकृत करना, लाल–वस्त्र पहने हुए पुरुष से लिपटना या हाथ मिलाना, मुर्गा, बिल्ली, नेवला, सांप, मक्खी, मच्छर, बिच्छू, वस्त्रालंकार तथा उपभोग्य वस्तु की चोरी, शरीर के अवयवों का छेदन, मुण्डन, रोग से आर्त्त होना, कबूतर, बाज, चील, रीछ, उल्लू, कौआ, खरहा, कुत्ता; कचौड़ी, मालपुवा, खिचड़ी, पक्कान्न का भक्षण, बिना सूर्य का दिन, सूर्य–चन्द्रग्रहण, बिना चन्द्र–तारों की रात्रि; भूत, प्रेत, पिशाच या चाण्डालों के साथ मिलाप, दक्षिण की यात्रा; सीसा, पीतल, जस्ता, कांसा, तांबा, लोहा या रांगा, सुनार, लुहार, चमार तथा बढ़ई; देवालय, छत्र या शिखर का गिरना, कोलाहल, स्वनिन्दा श्रवण, पराजय, राजभय, अकाल तथा सींग वाले जंतुओं का भागना;– ये सब स्वप्न में देखना अशुभ है।

दुःस्वप्न–दर्शन के परिहार

(1) शुभ स्वप्न आने पर जल्दी ही उठ जाना चाहिए एवं अनिष्ट स्वप्न देखने पर पुनः सो जाना चाहिए, चाहे सूर्योदय भी क्यों न हो।

(2) अशुभ स्वप्न देखने पर उसे साधुओं, मित्रों तथा ब्राह्मणों को सुनाना चाहिए, ताकि उनके आशीर्वाद से दुष्ट फल कम हो जाए;–

"स्वप्ने दृष्टे शोभनेनैव विद्यात् पश्चाद् दृष्टो यस्सपाकं विधत्ते।
तद् वक्तव्यं साधुमित्रद्विजेभ्यो ते चाशीभिर्वर्धयेयुर्नरेन्द्रम्।।"

(3) दुष्ट स्वप्नदर्शन के पश्चात् पुनः निद्रा लेकर उठने पर स्वप्न को किसी से तत्काल ही न कहना चाहिए अर्थात् गंगाजल से स्नानादि करके **'महामृत्युंजय'** का जाप तथा स्वस्तिवाचन–पूर्वक होम व शान्ति का निष्पादन पहले करें।

(4) पीपल एवम् गायों की पूजा व ब्राह्मणों का अभिनन्दन करके, उन्हें यथाशक्ति तिल, अन्न तथा सुवर्ण प्रदान करें। तत्पश्चात् किसी विद्वान् ब्राह्मण से भागवत, महाभारतादि का श्रवण करें।

(5) बृहस्पति के द्वारा रचित **'स्वप्नाध्याय'** का पठन या श्रवण करने से अशुभ स्वप्न के दोष का निवारण होता है। **उक्तं च–**
"बृहस्पतिप्रणीतं च स्वप्नाध्यायं पठेदपि।।"

(6) दुःस्वप्नद्रष्टा प्रातः स्नानादि करके घृतयुक्त तिलों या लाल–सरसों का गायत्री–मन्त्र से होम करे;– यह प्रयोग दोष–निवृत्तिकारक है।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2014 ई. से 20 मार्च, सन् 2015 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2014 ई.					
20 जन.	02	58	20 जन.	15	46
18 फर.	17	06	19 फर.	05	54
20 मार्च	16	02	21 मार्च	04	50
20 अप्रै.	3	02	20 अप्रै.	15	50
21 मई	2	05	21 मई	14	53
21 जून	9	57	21 जून	22	45
22 जुला.	20	47	23 जुला.	9	35
23 अग.	3	52	23 अग.	16	40
23 सितं.	1	35	23 सितं.	14	23
23 अक्तू.	11	03	23 अक्तू.	23	51
22 नवं.	8	44	22 नवं.	21	32
21 दिसं.	22	08	22 दिसं	10	56
सन् 2015 ई.					
20 जन.	8	48	20 जन.	21	36
18 फर.	22	56	19 फर.	11	44
20 मार्च	21	51	21 मार्च	10	39

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2014 ई.					
26 जन.	12	33	27 जन.	05	02
06 फर.	17	34	07 फर.	02	31
20 फर.	02	40	20 फर.	09	18
03 मार्च	17	42	03 मार्च	23	07
29 मार्च	00	34	29 मार्च	05	38
10 अप्रै.	18	29	11 अप्रै.	01	09
23 अप्रै.	01	23	23 अप्रै.	08	17
5 मई	04	22	5 मई	15	46
5 अग.	08	25	5 अग.	22	01
16 अग.	15	12	16 अग.	23	24
30 अग.	00	30	30 अग.	07	16
10 सितं.	19	07	11 सितं.	00	18
23 सितं.	22	17	24 सितं.	04	19
06 अक्तू.	02	55	06 अक्तू.	08	05
18 अक्तू.	10	53	18 अक्तू.	18	05
31 अक्तू.	00	39	31 अक्तू.	08	41
11 नवं.	09	23	12 नवं.	01	23
सन् 2015 ई.					
29 जन.	16	29	30 जन.	12	39
11 फर.	17	31	12 फर.	02	31
23 फर.	04	04	23 फर.	10	18
08 मार्च	06	29	08 मार्च	13	01
20 मार्च	07	51	20 मार्च	12	45

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

ध्यान दें– इस वर्ष (संवत् 2071 वि. में) चन्द्र की परमक्रान्ति 18° से 19° अंशों के मध्य रहेगी। अतः सन् 2014 ई. के मई, जून, जुला. तथा नवं., दिसं. मासों एवं सन् 2015 ई. के जनवरी मास में, जहां चन्द्र की परमक्रान्ति से सूर्यक्रान्ति अधिक रहेगी, वहां सूर्य और चन्द्र की क्रान्तियां परस्पर समान नहीं हो पाएंगी, जिससे इस अवधि में इसवर्ष क्रान्तिसाम्य(महापात)दोष घटित नहीं होगा।

वारुणी पर्व (सन् 2014 ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त	
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं. मि.
28 मार्च	7	52	28 मार्च	सूर्यास्त
(सन् 2015 ई.)				
18 मार्च	17	38	18 मार्च	सूर्यास्त

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 24 देखिए।

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षो से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) प्रज्ञावर्धन–स्तोत्र

(विद्यार्थियों की बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाने एवं विद्या में सफलता हेतु अनुभूत पाठ)

प्रज्ञावर्धन स्तोत्र का पाठ प्रातः (सूर्योदय के लगभग) रविपुष्य या गुरुपुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करके आगामी पुष्यनक्षत्र तक **शिवपुत्र स्कन्द** जी का ध्यान करके पीपल वृक्ष की जड़ में आसन लगाकर प्रतिदिन 10 बार पढ़ें । 27 दिन में एक पुरश्चरण पूर्ण होगा। फिर प्रतिदिन श्रद्धानुसार पाठ करते रहें। पाठक प्रतिभा–सम्पन्न एवं विद्या–बुद्धि का धनी होकर सफलता की तरफ अग्रेसर हो जाता है। दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग के बाद जलत्याग करके, स्तोत्रपाठ का प्रारम्भ करें।

विनियोगः – ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् शिव–ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द–कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः। – (. यहां जल का त्याग करें।)

अथ स्तोत्रम्

ॐ योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमार : सेनानी स्वामी शंकरसंभव :।।1।।

गाङ्गेयस्ताम्रचूड़श्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।। 2।।

शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुह :।
सनत्कुमारो भगवान् भोग–मोक्षप्रदः प्रभुः।। 3।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागम–प्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः ।। 4।।

अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः'पठेत्।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। 5।।

महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत् ।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। 6।।
पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च ।
अश्वत्त्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। 7।।
सप्तविंश–दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत्।।

।। प्रज्ञावर्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

(2) विद्या–बुद्धि–लाभार्थ वागीश्वरी मन्त्र

" ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वाग्वादिनि स्वाहा ॐ।।"

यह मन्त्र पठन–पाठन किंवा कम्पीटीशन्ज़ में संलग्न सभी आयुवर्ग के साधकों के लिए अभीष्ट फलप्रद है। विशेषकर कमज़ोर बुद्धि–छात्रों के लिए तो यह तीक्ष्ण औषध का कार्य करने वाला प्रयोग है। इसके नित्यजाप से बुद्धि में तीव्रता आती है, समझने की शक्ति प्रबल होती है किंवा अपने लक्ष्य में अच्छी स्थिति बनती है। 108 मन्त्र हररोज़ जपें। मन्दबुद्धि की स्थिति में इस मन्त्र का 5 लाख अनुष्ठान संयमपूर्वक एकाग्रता से करें। 41 दिनों में यह पुरश्चरण पूरा करें। इस अनुष्ठान के समय वागीश्वरी भगवती **श्री सरस्वती** मां की अन्तःकरणस्थिति सर्वथा अनिवार्य है। जाप हमेशा पूर्वोत्तर मुख व पद्मासन मुद्रा में करें–अभीष्ट प्राप्ति होगी।

(3) नेत्रज्योति को सुरक्षित रखने के लिए अद्भुत प्रयोग–''चाक्षुषी विद्या''

इस चाक्षुषी विद्या को **'चाक्षुषोपनिषद'** एवं **'कृष्ण यजुर्वेद'** में **'चाक्षुषीविद्या'** के नाम से जाना जाता है। इस विद्या का श्रद्धापूर्वक नियमित रूप से प्रातः सूर्य के सामने बैठकर पाठ करने से नेत्र–सम्बन्धित समस्त रोग स्वतः शान्त हो जाते हैं, औषध सद्यः फल देने लगती है। नेत्रज्योति स्थिर रहती है। जिस परिवार में इस चमत्कारी चाक्षुषी विद्या का नित्यप्रति पाठ किया जाता है, उस कुल में कोई भी व्यक्ति दैविक–प्रकोप किंवा किसी भी प्रकार के नेत्ररोग से अन्धा नहीं होता। पाठ के पूर्ण होने पर गन्ध, पुष्पादि युक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए और अर्घ्य देते समय जल के माध्यम से सूर्य को देखना चाहिए। आजकल नेत्ररोग एवं अन्धेपन से अनेकों लोग अपने जीवन को संकटापन्न अनुभव करते हैं, उन सभी लोगों के लिए यह निम्नांकित **'चाक्षुषीविद्या विधान'** अवश्यमेव वरदान सिद्ध हो सकता है, इसमें सन्देह नहीं ।

विधान इस प्रकार है :–

विनियोगः – (जल दाएं हाथ में लेकर) **" ॐ अस्याश्चाक्षुषी– विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।"**

(इस विनियोग का उच्चारण करके सूर्य भगवान् के समक्ष जलत्याग करें।) – तत्पश्चात् निम्नांकित 'चाक्षुषी विद्या' का पाठ सूर्याभिमुख होकर करें ,–

अथ नेत्रोपनिषद्

" ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षू – रोगान् शमय–शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय–दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्याम् तथा कल्पय–कल्पय। कल्याणं कुरु–कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षू–प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय–निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजो–दात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। यः इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी–अहोवाहिनी स्वाहा।। "

यदि इस पाठ के बाद हवन करने की इच्छा हो तो " ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी–अहोवाहिनी स्वाहा " – इस मन्त्र से कम से कम 108 आहुतियां डालें।

उल्लिखित प्रयोग अनेक विद्वान् पण्डितों एवं नेत्ररोगियों द्वारा अनुभूत एवं परीक्षित है, पाठक आवश्यकता में पाठ करके फल अनुभव करें।

(4) भूत–पिशाच बाधा से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्रप्रयोग

मन्त्र – " ॐ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षो–भूत–पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ॐ।।

विधि :– (क) उल्लिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में 11 हजार बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन करना भी अनिवार्य है।

यदि घर में नित्यकलह, अकारण भय–बाधा बनी रहे, धनहानि हो, दरिद्रता–आतंक रहे, भूत–प्रेत–पिशाच की छाया हो, किसी ने घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया हो, तो इस चामत्कारिक मन्त्र को शुभवेला में, शुद्ध कागज पर अनार की कलम से लिखकर, मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप–दीप करने के बाद दाईं भुजा में बांधने पर या लाल कपड़े में बांधकर घर में शुद्ध स्थान पर रखने से सर्वविधि शान्तिलाभ होता है।

(ख) यदि सारे घर के सदस्य भूत–प्रेत–बाधा से परेशान हों तो घर में ही इस मन्त्र का जाप करावें। मन्त्रजाप पूरा होने पर दशांश हवन कराएं। हवन पूर्ण होने पर खैर की लकड़ी, 8 लोहे की कीलें, 8 पीली कौड़ी, 8 हल्दी की गांठें, डोडी वाले 8 लौंग लेकर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, मन्त्रोच्चारण करते हुए आग्नेय कोण से शुरु करके आठों दिशाओं में एक–एक हाथ का गड्ढा खोदकर, इन चीजों को कौड़ी चित्त करके गाड़ें। ऐसा करने से भूत–प्रेत बाधा से घर पूर्णतया सुरक्षित रहेगा। यह प्रयोग अनेकत्र अनुभूत है। उल्लिखित मन्त्र से उपद्रवग्रस्त स्थान भी सुखद होता देखा गया है।

(5) मृतवत्सा (अठराहा) रोगनिवृत्ति–मन्त्र

मन्त्र – "ॐ परब्रह्म परमात्मने 'अमुकी ' गर्भे दीर्घजीवि–सुतं कुरु कुरु स्वाहा।"

मृतवत्सादोष–निवारण के लिए ज्येष्ठमास की पूर्णमासी को 1008 बार मंत्र को विधिपूर्वक जपें एवं दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय जाप से सिद्ध करें। तत्पश्चात् मन्त्र में **'अमुकी'** शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम लिखें। मन्त्र को अष्टगंधादि से लिखकर, स्त्री अपने पास भुजा आदि पर बांधे रखे, मृतवत्सा रोग शान्त होगा।

(6) प्रेतपीड़ा या टोने आदि से बचने के लिए मन्त्र

बारह वर्ष से कम आयु की कन्या के काते हुए कच्चे सूत के सात धागे लेकर, उन पर सात गांठे लगा लें। प्रत्येक गांठ पर सात बार निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें –

मन्त्र– " ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म – शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ–घोराणि तैरक्षांस्मान् तथा भुवम्।। "

यह प्रयोग अत्यन्त सफल है। गर्भावस्था में गर्भपातभय से मुक्ति एवं शत्रुकृत टोना किंवा प्रेतादि शान्ति के लिए अनुभूत है।

(7) पति–पत्नी में परस्पर मेल हो – वैदिक मन्त्र

किसी वजह से पति–पत्नी में विवाद उठ खड़ा हो, दोनों के विचार विरोधी दिशाओं में चलते हों तो निम्नमन्त्र का जाप करें। विरोध शान्त हो जाएगा और मधुरता उत्पन्न होकर पुनः मिलन होगा।

मन्त्र –"यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः ।
एवा कामस्य विच्छिन्नं संधेहि वीर्यावति।।

अक्ष्यौ नौ मधु संकाशे अनीक नौ समञ्जनम्।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ महासति।।"

(8) पति–वशीकरण मन्त्र

आजकल अनेकत्र देखा गया है कि पति अन्यासक्त या क्रोधाभिभूत होने के कारण अपनी पत्नी को सम्मान नहीं देता एवं पति–पत्नी में संघर्ष रहता है। एतदर्थ हम एक अनुभूत पति–वशीकरण मन्त्र लिखते हैं,–

मन्त्र –"ऊँ क्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। "

विधि :– उल्लिखित मन्त्र को जपने से पूर्व साधक इसप्रकार ध्यान करे कि महामाया भगवती अपने दृढ़पाश (रज्जू) से साध्य (पति) को बांधकर साधिका (मन्त्र करने वाली) के पैरों में डाल रही है, उस त्रिनेत्रों वाली भगवती के एक हाथ में तलवार है। ऐसी महामाया शक्तिरूपा दुर्गा को मैं पतिवशीकरणार्थ नमस्कार करती हूँ। इसप्रकार ध्यान करके साधिका 41 दिन (दोनों समय 1100/1100) मन्त्र का जाप प्रातःपूर्वाभिमुख एवं सायं को उत्तराभिमुख होकर करे। अष्टमी एवं चतुर्दशी को तीन कन्या एवं एक बटुक को खीर–पूरी का भोजन करावें। निश्चय ही साधिका पतिवशीकरण में सफल होगी।

(9) ग़ायब (खोया हुआ) व्यक्ति वापिस लौटे–

शास्त्रीय मन्त्र

मन्त्र–" ऊँ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ।।
ऊँ कार्तवीर्याय नमः 'अमुकं' शीघ्रमानय स्वाहा।।"

विधि – गायब व्यक्ति के पहिने हुए बिनाधुले वस्त्र पर केसर व लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा इस उपरोक्त मन्त्र को लिखें, फिर उस कपड़े को धूप–दीप करके, दो पत्थरों (चक्की के पाटों के बीच) में दबा दें। 21 दिन तक पत्थरों में रखे कपड़े को हिलाएं नहीं, बाद में वस्त्र उठाकर, बन्दर व कुत्तों को रोटियां खिलाएं। मन्त्र में जहां ' अमुकं ' लिखा है, वहां गायब (खोए हुए) व्यक्ति का नाम लिखें।

नोट :–मन्त्र–यन्त्र लिखने के लिए, पुष्यनक्षत्र में विधिवत् बनाई अनार की कलम काम देगी। इस विधान के प्रभाव से वह व्यक्ति यदि जीवित हुआ तो आ जाएगा, अन्यथा पता चल जाएगा ।

(10) ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्

"ऊँ सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ।।

त्रिपुरेस्तु वधात् पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थ विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

महिषस्य वधे देव्याः गणनाथः प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छविसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

वृत्रस्य नाशनार्थाय शक्रेण परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

देवैः समुद्रमथने प्रारम्भे परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

।। दारिद्र्यनाशकं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णमिदम् ।।

(11) अनुभूत सिद्ध लक्ष्मीमन्त्र

'श्रीसूक्त' से उद्धृत इस मन्त्र को बिल्ववृक्ष के नीचे बैठकर श्रद्धा–विश्वासपूर्वक विधिवत् जाप करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र का अनुष्ठान–प्रकार जनहितार्थ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

विधिः– श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान, मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप–दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर लक्ष्मी मन्त्र की 31,000 आवृत्ति 40 दिन के अन्दर करके हवन, तर्पण, ब्राह्मणभोजन आदि कराके उसे सिद्ध किया जाता है। सात्त्विक आहार, ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन के साथ–साथ सभी यमनियमों का पालन करते हुए नित्य नियम से निश्चित संख्या का जाप किया जाता है। शुद्ध घृत का अखण्ड दीपक जलाया जाता है। एकाग्रचित और श्रद्धाविश्वास के साथ विधिपूर्वक साधना करने से 31000 जप से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कोई न कोई अलौकिक अनुभव होता है। जैसे-दीपक की लौ पर ध्यान करते हुए मन्त्रजाप कर रहे हों तो वह ज्योति शरीर में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है या महालक्ष्मी की मूर्ति अथवा चित्र प्रकाश व तेज से पूर्ण हो जाता है, उसमें से तेज निकल कर तुम्हारे शरीर में प्रवेश करता हुआ प्रतीत होगा, आदि–आदि। महालक्ष्मी का सिद्धमन्त्र निम्नप्रकार हैः–

" ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ताम्।
तर्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ।। "

उपरोक्त मन्त्र **'श्रीसूक्त'** के 16 मन्त्रों में से एक प्रमुख है। इसके सिद्ध करने से न केवल दरिद्रता का नाश होता है, अपितु सुख–समृद्धि, उत्तम–बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की भी वृद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका नित्य जाप करते रहना चाहिए और होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के अवसर पर भी जप, हवन आदि करते रहना चाहिए। इससे आपको धन की कमी कभी नहीं होगी। आवश्यकता के अनुसार धनार्जन के साधन बनते रहेंगे, आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति निर्विघ्न होती रहेगी। जब भी कभी आपको अपने किसी उचित कार्य के लिए विशेष द्रव्य की आवश्यकता पड़े, इस मन्त्र की कुछ मालाएं जपें, आप देखेंगे कि किस प्रकार दैवी सहायता प्राप्त होती है; अनुभूत है।

(12) आर्थिक लाभ के लिए लक्ष्मी–मन्त्रसाधना

मन्त्र-" ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठ– तिष्ठ स्वाहा ॐ।।"

यह महालक्ष्मी जी का मन्त्र है। इसके पुरुश्चरण व नियमित जाप से गृह में सर्वदा लक्ष्मी का वास बना रहता है, आर्थिक भण्डार में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आती। पांच लाख जपने से सिद्ध होता है। साधनाकाल में यदि गोघृत का दीपक लगातार जलता रहे तो शीघ्र लाभ किंवा सफलता के अवसर बनते हैं, लक्ष्मी जी की अपूर्व कृपा प्राप्त होती है। इस मन्त्र का जाप हमेशा पूर्वाभिमुख हो **'कमलासन'** मुद्रा में करना चाहिए।

(13) नौकरी(कारोबार)प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र –"ऊँ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार–धार मार–मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि– मृगछाल (मृगचर्म) पर बिनासिला कपड़ा पहन कर बैठें। 108 बार रुद्राक्ष की माला से इस मन्त्र का जाप करके, खीर की 108 आहुतियां डालें, आहुतियां एकसप्ताह जाप करके डालें, आजीविका का साधन बन जाएगा। शुक्लपक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरु करें।

(14) स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि–ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम से कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जाएगा, अनुभव करें ।

मन्त्र –" ऊँ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ऊँ।।"

अक्ष्यौ नौ मधु संकाशे अनीक नौ समञ्जनम्।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ महासति।।"

(8) पति–वशीकरण मन्त्र

आजकल अनेकत्र देखा गया है कि पति अन्यासक्त या क्रोधाभिभूत होने के कारण अपनी पत्नी को सम्मान नहीं देता एवं पति–पत्नी में संघर्ष रहता है। एतदर्थ हम एक अनुभूत पति–वशीकरण मन्त्र लिखते हैं,–

मन्त्र –"ऊँ क्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। "

विधि :– उल्लिखित मन्त्र को जपने से पूर्व साधक इसप्रकार ध्यान करे कि महामाया भगवती अपने दृढ़पाश (रज्जू) से साध्य (पति) को बांधकर साधिका (मन्त्र करने वाली) के पैरों में डाल रही है, उस त्रिनेत्रों वाली भगवती के एक हाथ में तलवार है। ऐसी महामाया शक्तिरूपा दुर्गा को मैं पतिवशीकरणार्थ नमस्कार करती हूँ। इसप्रकार ध्यान करके साधिका 41 दिन (दोनों समय 1100/1100) मन्त्र का जाप प्रातःपूर्वाभिमुख एवं सायं को उत्तराभिमुख होकर करे। अष्टमी एवं चतुर्दशी को तीन कन्या एवं एक बटुक को खीर–पूरी का भोजन करावें। निश्चय ही साधिका पतिवशीकरण में सफल होगी।

(9) ग़ायब (खोया हुआ) व्यक्ति वापिस लौटे–

शास्त्रीय मन्त्र

मन्त्र–" ऊँ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ।।
ऊँ कार्तवीर्याय नमः 'अमुकं' शीघ्रमानय स्वाहा।।"

विधि – गायब व्यक्ति के पहिने हुए बिनाधुले वस्त्र पर केसर व लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा इस उपरोक्त मन्त्र को लिखें, फिर उस कपड़े को धूप–दीप करके, दो पत्थरों (चक्की के पाटों के बीच) में दबा दें। 21 दिन तक पत्थरों में रखे कपड़े को हिलाएं नहीं, बाद में वस्त्र उठाकर, बन्दर व कुत्तों को रोटियां खिलाएं। मन्त्र में जहां ' अमुकं ' लिखा है, वहां गायब (खोए हुए) व्यक्ति का नाम लिखें।

नोट :–मन्त्र–यन्त्र लिखने के लिए, पुष्यनक्षत्र में विधिवत् बनाई अनार की कलम काम देगी। इस विधान के प्रभाव से वह व्यक्ति यदि जीवित हुआ तो आ जाएगा, अन्यथा पता चल जाएगा ।

(10) ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्

"ऊँ सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ।।

त्रिपुरेस्तु वधात् पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थं विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

महिषस्य वधे देव्याः गणनाथः प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छविसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

शशिना कान्तिवृद्धयर्थं पूजितो गणनायकः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

वृत्रस्य नाशनार्थाय शक्रेण परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

देवैः समुद्रमथने प्रारम्भे परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

।। दारिद्र्यनाशकं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णमिदम् ।।

(11) अनुभूत सिद्ध लक्ष्मीमन्त्र

'श्रीसूक्त' से उद्धृत इस मन्त्र को बिल्ववृक्ष के नीचे बैठकर श्रद्धा–विश्वासपूर्वक विधिवत् जाप करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र का अनुष्ठान–प्रकार जनहितार्थ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

विधिः– श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान, मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप–दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर लक्ष्मी मन्त्र की 31,000 आवृत्ति 40 दिन के अन्दर करके हवन, तर्पण, ब्राह्मणभोजन आदि कराके उसे सिद्ध किया जाता है। सात्त्विक आहार, ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन के साथ–साथ सभी यमनियमों का पालन करते हुए नित्य नियम से निश्चित संख्या का जाप किया जाता है। शुद्ध घृत का अखण्ड दीपक जलाया जाता है। एकाग्रचित और श्रद्धाविश्वास के साथ विधिपूर्वक साधना करने से 31000 जप से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कोई न कोई अलौकिक अनुभव होता है। जैसे–दीपक की लौ पर ध्यान करते हुए मन्त्रजाप कर रहे हों तो वह ज्योति शरीर में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है. या महालक्ष्मी की मूर्ति अथवा चित्र प्रकाश व तेज से पूर्ण हो जाता है, उसमें से तेज निकल कर तुम्हारे शरीर में प्रवेश करता हुआ प्रतीत होगा, आदि–आदि। महालक्ष्मी का सिद्धमन्त्र निम्नप्रकार हैः–

" ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ताम्।
तर्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ।। "

उपरोक्त मन्त्र **'श्रीसूक्त'** के 16 मन्त्रों में से एक प्रमुख है। इसके सिद्ध करने से न केवल दरिद्रता का नाश होता है, अपितु सुख–समृद्धि, उत्तम–बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की भी वृद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका नित्य जाप करते रहना चाहिए और होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के अवसर पर भी जप, हवन आदि करते रहना चाहिए। इससे आपको धन की कमी कभी नहीं होगी। आवश्यकता के अनुसार धनार्जन के साधन बनते रहेंगे, आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति निर्विघ्न होती रहेगी। जब भी कभी आपको अपने किसी उचित कार्य के लिए विशेष द्रव्य की आवश्यकता पड़े, इस मन्त्र की कुछ मालाएं जपें, आप देखेंगे कि किस प्रकार दैवी सहायता प्राप्त होती है; अनुभूत है।

(12) आर्थिक लाभ के लिए लक्ष्मी–मन्त्रसाधना

मन्त्र-" ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठ– तिष्ठ स्वाहा ॐ।।"

यह महालक्ष्मी जी का मन्त्र है। इसके पुरुश्चरण व नियमित जाप से गृह में सर्वदा लक्ष्मी का वास बना रहता है, आर्थिक भण्डार में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आती। पांच लाख जपने से सिद्ध होता है। साधनाकाल में यदि गोघृत का दीपक लगातार जलता रहे तो शीघ्र लाभ किंवा सफलता के अवसर बनते हैं, लक्ष्मी जी की अपूर्व कृपा प्राप्त होती है। इस मन्त्र का जाप हमेशा पूर्वाभिमुख हो **'कमलासन'** मुद्रा में करना चाहिए।

(13) नौकरी(कारोबार)प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र –'ऊँ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार–धार मार–मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि– मृगछाल (मृगचर्म) पर बिनासिला कपड़ा पहन कर बैठें। 108 बार रुद्राक्ष की माला से इस मन्त्र का जाप करके, खीर की 108 आहुतियां डालें, आहुतियां एकसप्ताह जाप करके डालें, आजीविका का साधन बन जाएगा। शुक्लपक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरु करें।

(14) स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि–ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम से कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जाएगा, अनुभव करें ।

मन्त्र –" ऊँ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ऊँ।।"

(15) भूमिलाभार्थ मन्त्रप्रयोग

भूमि, मकान आदि सुख/लाभ के लिए इस (निम्न) मन्त्रप्रयोग की साधना उपयुक्त मानी गई है। एक लाख जाप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। सिद्धि के उपरान्त जीवन में सभी भौतिक सुखों की उपलब्धि सहज हो जाती है। मन्त्र इसप्रकार है–

" ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा ॐ।।"

(16) घर में कलह–क्लेश मिटाने हेतु प्रयोग

पति–पत्नी या परिवार में छोटे–मोटे कलह–क्लेश कई बार भयंकर रूप धारण करके सम्बन्धविच्छेद का कारण भी बन जाते हैं, एतदर्थ आप 'एक नारियल' को लाल कपड़े में बांधकर 11 दिनों तक 7 बार निम्नांकित मन्त्र पढ़ते रहें। साथ ही छोटी इलायची, लौंग, मिसरी एक बर्तन में रखें। मन्त्रजाप के बाद इनमें हाथ घुमा दें। इलायची आदि परिवार में बांटकर खा लें;– प्रेम सद्भाव का वातावरण बहुत जल्दी बनेगा।

मन्त्रः– " ॐ क्रीम् क्रीम् सर्वविवाद–निवारणाय फट्।।"

प्रयोगसमाप्ति के बाद नारियल को किसी तालाब या शुद्ध जल में प्रवाहित कर दें।

(17) भुवनेश्वरी कर्णपिशाचिनी–मन्त्र

मन्त्र – "ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदातायैः नमः ऊँ। "

जलप्रवाह में खड़ा होकर पांच सौ बार इस मन्त्र का जाप करें। जाप के बाद तर्पण–मार्जन– होम एवं ब्रह्मभोज कराएं, फिर यहां अंकित यन्त्र 10,000 बार जमीन पर लिखें।

–: यन्त्र :–

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
हीं ४	हीं ९	हीं २

शासक भी वश में हों, जो भी वचन निकलेगा, सत्य होगा। इस मन्त्र साधना से प्राणी भूत–भविष्य एवं वर्तमान की बातें अनायास ही जान लेता है।

(18) कुछ यन्त्र

(i) मनोकामना पूर्ति यंत्रः–

सफेद कागज पर केसर, चन्दन, कपूर, गंगाजल व खस की रोशनाई बनाकर अनार की कलम से शुक्लपक्ष की दूज से प्रारम्भ करके प्रतिदिन 24 बार लिखकर, आटे की 24–24 गोलियां, 24 दिन तक बनाएं । यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिखें; अन्तिम रोज 576 गोलियां लेकर एक–एक करके नदी में बहा देने से जिस उद्देश्य से यंत्र लिखा होगा, ईश्वर की कृपा से पूर्ण होगा । यह सब कामों का सिद्धिदायक यंत्र है, जैसे नौकरी मिलना, परीक्षा में सफलता; मुकद्दमे में विजय/ निवारण आदि।

मनोकामना पूर्ति यन्त्र			
१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	९	१६	३
१५	४	५	१०

(ii) परीक्षा में सफलता का यंत्र

जिस विद्यार्थी को परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी हो; वह इस यंत्र को परीक्षा के 15 दिन पूर्व केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करे। सोलहवें दिन एक यंत्र को पूजा करके तावीज में मढ़वाकर अपनी दाहिनी भुजा या गले में धारण कर ले। पढ़ाई में मन लगेगा एवं परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

परीक्षा में सफलता का यन्त्र			
२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

(iii) विवाद या मुकद्दमे में विजयार्थ यन्त्र

सामने दिए गए यन्त्र को भोजपत्र या शुद्ध कपड़े पर लाल चन्दन, केसर एवं कस्तूरी की स्याही से शुभमुहूर्त्त में अंकित करें। यन्त्रमध्य में जहां **'अमुक'** लिखा है, वहां अपने प्रतिवादी (शत्रु) किंवा विपक्ष के प्रधान व्यक्ति का नाम लिखें। प्रतिवादी के नाम (जो कि यन्त्रमध्य में लिखा है) पर थोड़ी पीली सरसों रख दें एवं पीले अकीक रत्न की माला से 5 माला निम्नांकित मन्त्रजाप करें–

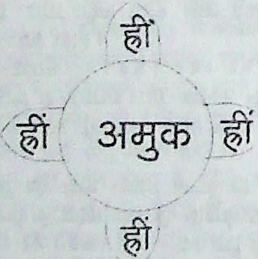

मन्त्र– "ॐ क्लीम् ह्रीम् महामाये विजयसिद्धिं मे देहि ॐ फट्।।"

कोर्ट–कचहरी या पंचायत में जाते समय यन्त्र को धूप देकर दाएं बाजू पर लाल कपड़े से बांधकर ले जाएं, पलड़ा आपका भारी रहेगा। विजय प्राप्त होगी। 7 दिन का प्रयोग हैं।

(iv) धनधान्य–वृद्धि यन्त्र–

इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि में लिखकर अन्नभण्डार में रख दें, धन–धान्य समृद्धि रहेगी।

धनधान्य–वृद्धि यन्त्र		
वं	ॐ	ह्रीं
	देहि	
कं	नमः	ह्रीं

(v) शीतला माता शान्त्यर्थ यन्त्र–

इस शीतलायन्त्र को अष्टगन्ध से लिखकर सिरहाने धरें तो शीतला माता का प्रकोप शान्त हो जाएगा।

शीतला माता–शान्त्यर्थ यन्त्र			
४२०००	४८०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०००	५११०००	४४०००	५११०००
१०००	७०	१६	६०८

(vi) रोज़ी–प्राप्ति के लिए यन्त्र– इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में कांसी या चांदी के पत्र और यदि असमर्थ हो तो भोजपत्र पर लिखकर धूप–दीप करके अपने पास रखें या तावीज़ में मढ़ाकर गंगाजल, दूध से धोकर गले में लाल धागे से धारण करें, जल्दी ही रोज़ी मिलेगी। इन्टरव्यू में सफलता मिलेगी।

रोज़ी–प्राप्ति यन्त्र		
६	७	२
१	५	९
८	३	४

(19) सिद्ध सन्तों के अनुभूत टोटके

(i) दिमाग की कमजोरी को दूर करने के लिए– दस गिरी बादाम रात को पानी में भिगोकर बारीक करके एक तोला मक्खन एवं मिसरी मिलाकर एक मास तक प्रतिदिन सेवन करें। बुद्धि में धारणाशक्ति पैदा होगी, भूलने की बीमारी न रहेगी, स्वास्थ्य भी सुन्दर होगा।

(ii) बुखार के लिए– तुलसी के पत्तों का पानी 10 तोला, छोटी इलायची के दाने 1 तोला– दोनों को खरल में बारीक करके 2–2 रत्ती की गोलियां बना लें। बुखार की हालत में 2 गोली एक साथ 1–1 घण्टे के अन्तर पर पानी के साथ लें। हर प्रकार का बुखार शांत हो जाता है।

*****

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, संदिग्ध व्रत-पर्व आदि, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

प्रसूति–लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो ा तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, लक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र ल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में ादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और ई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या र्ग वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम े। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में ार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के ग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में क कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय ान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण ।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते र्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– र्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां क कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके ाया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**–अधिकांश जिस लग्र के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से मण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। **दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।।** केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्यां शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तन्धन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः **सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।**"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि**– पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो॰:– "द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगृ मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभदन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब मान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरनत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक ताम्रगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस मे कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु मृग बसैं बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोडी, माघ मे भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोडी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोडकर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ मे भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :–जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाहृवो:	हस्ते	गुह्यो:	जंघा:	जान्वो:	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः
सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।				

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वो:	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्यो:	जान्वो:	पादयो:
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणीं स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पतिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	लाजवर्तं	लाजवर्तं

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है।

सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टा:– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढे पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूडे, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राझया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोमूत्र, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूडे, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूडियां, 1 प्रहर दिन चढे पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोमूत्र, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उडदों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापडी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग-नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन-संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो-अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्माययेति	सर्प को दूध-दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो-अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर-धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोररराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र-संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु- इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर मे गुरु-चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्-पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें- ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिङ्ग/गुह्य	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोह्य	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोह्य	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही **मंगलव्रत के दिन** अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत के दिन** गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत के दिन** भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत के दिन** इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के दिन** काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोट:– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशि→	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः ।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2071 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (14 अप्रैल से 13 मई, सन् 2014 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य–केतु का शनि–राहु के साथ समसप्तक इराक, पाक, अफग़ानिस्तान, अमेरिका एवं इटली आदि में कहीं उग्रवाद से अशान्ति, कहीं प्राकृतिक आपदा से भारी हानि का कारण बने। भारत की राजनीति में विभिन्न राजनैतिक–दलों में विघटन एवं तालमेल राजनैतिक दृष्टि से आश्चर्यजनक स्थिति बनाए। चन्द्र–मंगल का मेल घी, गुड़, तेल एवं सोना–चान्दी में भारी तेज़ी–मन्दी के झटके लाएगा।

वैशाखसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

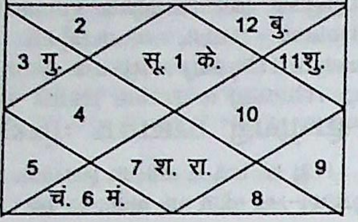

मेषसंक्रान्ति प्रवेशकाल =14 अप्रैल, 2014 ई.; 7 घं. 36 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल 14/00 तक,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– शनि–राहु की सूर्य–केतु पर दृष्टि आपकी सेहत को खराब करे। पेट में विकार एवं पेशाब–सम्बन्धित विकार से परेशानी रहे। विद्यार्थियों के लिए समय विशेष सावधानी का है। यात्रा में कष्टभय है। कारोबार ठीक रहे। **अप्रैल** 18, 19, 26, 27; **मई** 5, 6, 7 अशुभ हैं।

वृष– शुक्र मित्रक्षेत्र में गुरु से दृष्ट है। आर्थिक स्थिति अच्छी रहे। व्यापार में एवं नई योजनाओं से लाभ हो। धोखेबाजों से सावधान रहें। कम्पीटीशन में सफलता मिले। विरोधी–पक्ष कमजोर रहे। विद्यार्थी जीवन में प्रगति हो। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29; **मई** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मिथुन– सेहत में वायु–विकार से परेशानी रहे। लग्नस्थ गुरु मित्रवर्ग से लाभ देगा। परीक्षा–परिणाम ठीक रहे। व्यापारी वर्ग को कार्यक्षेत्र में विशेष सफलता मिले। लेकिन कार्यक्षेत्र में विशेष रद्दोबदल के योग हैं। **अप्रैल** 14, 22, 23, 30; **मई** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

कर्क– सेहत गड़बड़ रहे। निजीलोगों से लाभ रहे। चतुर्थभाव में शनि–राहु का मेल जमीन–जायदाद सम्बन्धी परेशानी बढ़ाए। स्त्रीपक्ष से कष्ट, कारोबार में अच्छा लाभ मिले। **अप्रैल** 15, 16, 17, 24, 25; **मई** 3, 4, 13, 14 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहे। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मन परेशान हो। निजी लोगों से अनबन रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ मिले। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। शनि–राहु का दान करें। **अप्रैल** 18, 19, 26, 27; **मई** 5, 6, 7 अशुभ।

कन्या– वायुविकार से परेशानी, क्रोध बढ़े। आर्थिक–हानि से मन खिन्न रहे। गुप्त शत्रु से भय रहे। बन्धु–मित्र से लाभ मिले। कारेबार में लाभ की स्थिति रहे। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29; **मई** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

तुला– रक्त–पित्त विकार रहे। निजीजनों से अनबन हो। स्त्रीपक्ष से परेशानी रहे। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। राजपक्ष से लाभ की संभावना है। **अप्रैल** 14, 22, 23, 30; **मई** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक– शरीर कष्ट, गुप्तशत्रु ये सावधान, आर्थिक–संकट से परेशानी, बन्धुओं से सहायता मिले। विरोधीपक्ष कमजोर हो, जल व अग्नि से भय रहे। **अप्रैल** 15, 16, 17, 24, 25; **मई** 3, 4, 13, 14 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे। धनेश शनि, राहु के साथ होने से उत्तम लाभ होकर वृथाव्यय हो। बन्धु–सुख रहे। विद्यार्थियों को सफलता, कारोबार ठीक रहे। **अप्रैल** 18, 19, 26, 27; **मई** 5, 6, 7 अशुभ हैं।

मकर– उदर विकार रहे, धनलाभ हो। निजीजन कष्ट, सट्टे के व्यापार से हानि लेकिन कार्यान्तर से लाभ हो। जमीन–जायदाद सम्बन्धी कार्यों में लाभ रहे। अचानक धनहानि संभव है। **अप्रैल** 19, 20, 21, 28, 29; **मई** 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कुम्भ– लग्नस्थ शुक्र पर गुरु की दृष्टि है। शत्रुपक्ष कमजोर रहे। सुखलाभ मिले। उलझे काम ठीक हों। धनधान्य–समृद्धि रहे।। अप्रैल 14, 22, 23, 30; मई 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

मीन– लगनस्थ बुध राजपक्ष से भय करता है। कारोबार में लाभ हो, वृथाव्यय भी हो। सन्तानपक्ष से चिन्ता, क्रोध बढ़े, गुप्तशत्रु से सावधान रहें। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25; मई 3, 4, 13, 14 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 14 जून, सन् 2014 ई.)

(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सूर्य एवं बुध लग्नस्थ हैं, नीचस्थ चन्द्र की इन पर दृष्टि है। कहीं सूखा पड़े। महाराष्ट्र आदि में भयंकर प्राकृतिक आपदा से हानि के योग हैं। कहीं अचानक राजनैतिक हिलजुल होगी। खाद्य पदार्थों में भारी महंगाई होने से जनता में आक्रोश रहेगा। घी, कपास, चीनी, तिलहन में तेज़ी रहे। पाक, अफग़ानिस्तान एवं महानगरों में कहीं उग्रवादजन्य हानि भी हो।

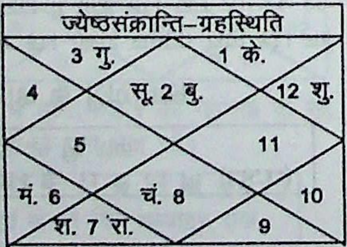
ज्येष्ठसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

वृषसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मई, 2014 ई.; 28 घं. 28 मि. (I.S.T.)
मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सूर्य–बुध लग्नस्थ हैं। सेहत ठीक रहे, लेकिन नीचस्थ चन्द्र मानसिक उलझनें पैदा करेगा। स्थिर सम्पदा कां लाभ हो। विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। मई 15, 16, 23, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

वृष– लग्नस्थ गुरु शुभ कार्यों में मन लगाए। स्थिर सम्पदा विवाद बढ़े। नई योजना से हानि हो। स्त्रीपक्ष से लाभ मिले। आय से व्यय अधिक हो। मई 17, 18, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

मिथुन– चन्द्र नीच है। बुध क्षीण है। घरेलु उलझनें अधिक परेशान करें। फिजूल खर्ची अधिक हो। बन्धु–कष्ट एवं सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। कारोबार ठीक रहे। मई 19, 20, 28, 29; जून 7, 8 अशुभ।

कर्क– कफ़–वायु विकार, कर्जा सिर चढ़े। सम्पत्ति बेचने की योजना बने। कार्यान्तर से लाभ हो। मासान्त में शुभ समाचार मिले। मई 21, 22, 30, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।

सिंह– सूर्य–बुध लाभप्रद योजनाएं बनाएंगे। क्रोध बढ़ेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। स्थिर सम्पत्ति का लाभ हो। मास–मध्य में शुभ सन्देश मिले। मई 15, 16, 23, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कन्या– चन्द्र–राहु–शनि की स्थिति आपके अनुकूल नहीं। अचानक कष्टभय है। वृथा व्यय, शत्रु प्रबल, राजपक्ष से हानि हो। स्त्रीपक्ष एवं बन्धुवर्ग से लाभ हो। मई 17, 18, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे। अचानक चिन्ता का कारण बने। स्त्रीपक्ष से अनबन। आय से व्यय अधिक रहे। सम्पदा लाभ हो। शनि–राहु का दान करें। मई 19, 20, 28, 29; जून 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक-- वायु–विकार से परेशानी। मित्र–बन्धु का सहयोग रहे। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। मासान्त में आय से व्यय अधिक रहे। मई 21, 22, 30, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।

धनु– सेहत का विशेष ध्यान रखें। अचानक रोगभय है। कारोबार कमज़ोर रहे। पार्टनरशिप में धोखा संभव। भाई–बन्धु का सहयोग मिले। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। मई 15, 16, 23, 24, 25; जून 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

मकर– कारोबार सम्बन्धित समस्याएं अधिक परेशानी दें। ज़मीन–जायदाद से विशेष लाभ मिले। यात्रा सुखद रहे। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। सेहत गड़बड़। मई 17, 18, 26, 27; जून 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक रहे। आर्थिक लाभ हो। नई योजना व कारोबार से लाभ रहे। भाई–बन्धु से स्नेह–सौहार्द रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से मदद, मनोबल प्रबल रहे। मई 19, 20, 28, 29; जून 7, 8 अशुभ।

मीन– पेट में विकार रहे। वृथा धनहानि के योग हैं। भाई की तरफ से शुभ समाचार मिले। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। कारोबार ठीक रहे। मासान्त में विशेष खर्च हो। मई 21, 22, 30, 31; जून 1, 9, 10 अशुभ।

आशाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई, सन् 2014 ई.)

(क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में बुधादित्ययोग गुरु के सन्निकर्ष में है। यह मास राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करेगा। भारत में राजनैतिक विशेष परिवर्तन संभव हैं। मुस्लिमराष्ट्र, ब्रिटेन, अमेरिका एवं अन्यत्र कहीं राजनैतिक परिवर्तन एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी सम्भव है। अनाज, चीनी, घी एवं दालवाना तेज़ रहें।

आषाढ़संक्रान्ति–ग्रहस्थिति

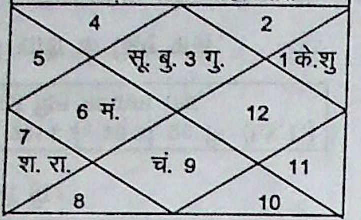

मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशकाल =15 जून, 2014 ई., 11 घं. 02 मि. (I.S.T.)
मु. 45, पुण्यकाल 17 घं. 26 मि. तक,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे। उत्साहवृद्धि हो। स्थिर सम्पदा लाभ हो। नई योजना से हानि। स्त्रीपक्ष से लाभ हो। कारोबार में वृद्धि हो। जून 20, 21, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

वृष– रक्त–पित्त विकार, अर्थहानि, निजी लोगों से अनबन रहे। यात्रा में कष्ट, नई योजना असफल रहे। कारोबार में रद्दोबदल हो। मासान्त में विशेष लाभ हो। जून 15, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– सेहत गड़बड़ रहे। वृथा व्यय, परिवार में कलह, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। नई योजना किंवा स्त्रीपक्ष से लाभ हो। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

कर्क– रक्त–पित्त विकार। विरोधीगण प्रबल रहें। कर्ज़ा सिर चढ़े, मित्र से मदद मिले। कारोबार में विशेष परिवर्तन से अचानक लाभ हो। जून 17, 18, 19, 26, 27, 28; जुलाई 6, 7, 8, 15 अशुभ।

सिंह– वायुरोग से परेशानी, विशेष कष्टयोग है। भाई–बन्धु से सहयोग, कारोबार में तरक्की से लाभ मिले। लेकिन मासान्त में आय से अधिक व्यय हो। यान–दुर्घटना से सावधान रहें। जून 20, 21, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या– शूगर आदि से अचानक परेशानी बढ़े। सावधान रहें। सांझेदारी में हानि। क्रोध बढ़े। मित्र –बन्धु से मदद। कार्यान्तर से लाभ मिले। जून 15, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे। उत्साह बढ़े, कारोबार में रुकावट एवं मासान्त में वृथा व्यय हो। यात्रा सुखद रहे। सन्तानपक्ष से सुख मिले। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक– त्वचा रोग किंवा पित्त–विकार। वृथाव्यय हो। सन्तानपक्ष से चिन्ता। स्त्रीपक्ष से मदद मिले। कारोबार में विशेष हानि एवं रद्दोबदल हो। शनि–राहु का दान करें। जून 17, 18, 19, 26, 27, 28; जुलाई 6, 7, 8, 15 अशुभ।

धनु– क्रोध बढ़े, धनलाभ होकर हाथ से निकले। जमीन–जायदाद का लाभ। कारोबार में रुकावट, मासान्त में वृथाव्यय हो। जून 20, 21, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

मकर– गुप्त शत्रु से भय, अच्छे लोगों से मेल हो, लेकिन विरोधी प्रबल रहें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। मासान्त में उत्तम लाभ हो। जून 15, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– सिर व नेत्रकष्ट, धनलाभ हो, बन्धु से लाभ, सन्तान से सुख। शत्रु कमजोर। स्त्रीपक्ष से अनबन। धर्म–कर्म में रुचि रहे। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, धनलाभ अच्छा हो। बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता। शत्रु सिर उठाएं। राजपक्ष से भय। धर्म–कर्म में रुचि रहे। जून 17, 18, 19, 26, 27, 28; जुलाई 6, 7, 8, 15 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 16 अगस्त, सन् 2014 ई.)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

संक्रान्तिकालीन् गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश चन्द्र अष्टम भाव में शत्रुक्षेत्री है। प्रधान शासकों को इस मास में भारी राजनैतिक विपत्तियों का सामना करना होगा। शनि–मंगल का चतुर्थ भाव में होना कहीं भीषण प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है। व्ययस्थ शुक्र–बुध भीषण वर्षा–बाढ़ से हानि करें। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन हो। मुस्लिम देशों में राजनैतिक गतिरोध पैदा हो। भारत में विपक्षीदल केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल को महंगाई के मुद्दे पर घेरेंगे। ग्वार, सरसों, तेल, घी, चीनी, सोना के भाव तेज़ रहें।

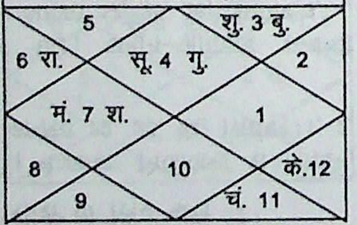
श्रावणसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

कर्कसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 जुलाई, 2014 ई.; 21 घं. 53 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल 9 घं. 53 मि. बाद एवं अगले दिन मध्याह्न तक,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– शनि–मंगल का एकराशि में होना कष्टप्रद है, वाहन से चोटभय है। शनि–मंगल का दान करें। धनलाभ होकर हानि हो। निजी लोगों से अनबन। मासान्त में राजपक्ष से भय रहे। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अगस्त 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

वृष– सेहत कमजोर, सम्पत्तिविवाद उलझें। निजी लोगों से अनबन हो। शत्रु प्रबल हों, नई योजना से लाभ। मासान्त में अच्छे लोगों से लाभ हो। जुलाई 19, 20, 29, 30; अगस्त 7, 8, 15, 16 अशुभ।

मिथुन– उदरविकार। नेत्र व मस्तक–पीड़ा। शिष्य व पुत्र से मदद मिले। कारोबार में मित्र की मदद से लाभ मिले। नए उद्योग की योजना बने। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कर्क– रक्तचाप (B.P.) की शिकायत रहे। नेत्रकष्ट, वृथाव्यय। बन्धु से सहयोग, योजनाएं असफल। कारोबार में प्रगति के योग हैं। जुलाई 16, 24, 25; अगस्त 3, 4, 11, 12 अशुभ।

सिंह– चोटभय है। धनलाभ हो। निजीजन सुख। सन्तानपक्ष से अशान्ति। अच्छे लोगों से मेल। आय से व्यय अधिक हो। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अगस्त 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

कन्या– सेहत ,ठीक रहे। धनलाभ हो। भाई को कष्ट। मित्र से अनबन, स्त्रीसुख। कारोबार में हानि किंवा रद्दोबदल हो। मासान्त में कर्ज़ा सिर चढ़े। जुलाई 19, 20, 29, 30; अगस्त 7, 8, 15, 16 अशुभ।

तुला– मन अशान्त रहे। गुप्त चिन्ता, घरेलू–झंझट, स्त्रीपक्ष से मदद। शत्रु प्रबल। राजपक्ष से भय। मासान्त में कर्जे से मुक्ति के लिए सम्पत्ति बेचने का विचार बने। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 2, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक– गुप्त चिन्ता, धनलाभ होकर हानि हो। निजीजन कष्ट, सन्तान से सुख, मासान्त में अशुभ समाचार। जुलाई 16, 24, 25; अगस्त 3, 4, 11, 12 अशुभ।

धनु– उदर–विकार, मित्र–बन्धु से मेल। सन्तानपक्ष शुभ। नई योजना, अधोभाग में चोटभय। पार्टनर द्वारा हानि का योग। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अगस्त 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

मकर– गुप्त शत्रु से भय। आर्थिक लाभ। मासमध्य में विशेष व्यय, नई योजना बने। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। कारोबार ठीक। जुलाई 19, 20, 29, 30; अगस्त 7, 8, 15, 16 अशुभ।

कुम्भ– अचानक धनलाभ हो। निजीजन–सहयोग, नए उद्योग व योजना से हानि। शत्रुपक्ष कमजोर। मासान्त में विशेष हानि का योग है। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मीन– स्थानान्तरण का योग, राजपक्ष से भय, मित्र से अर्थलाभ। सन्ततिकष्ट। कारोबार में प्रगति के योग बनें। जुलाई 16, 24, 25 अगस्त 3, 4, 11, 12 अशुभ।

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (17 अगस्त से 16 सितंबर, सन् 2014 ई.)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में बुधादित्य–योग राजनैतिक प्रक्रिया को व्यवस्थित करेगा। लेकिन देश की आर्थिक स्थिति कमज़ोर रहेगी। शनि–मंगल का तृतीय भाव में एकसाथ होना उग्रवादजन्य घातक स्थिति का संकेत देता है। किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त हो। मुस्लिम–देशों की स्थिति कमज़ोर रहे। पैट्रोलियम प्रोडक्ट महंगे होंगे। तेल, तिलहन, घी, चीनी, अनाज महंगे होंगे।

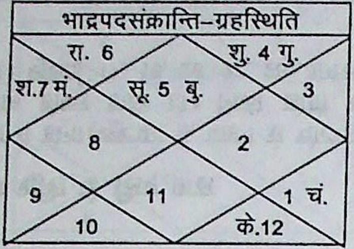

सिंहसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 17 अगस्त, 2014 ई.; 6 घं. 15 मि. (I.S.T.)
मु. 15, पुण्यकाल 12 घं. 39 मि. तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– धनलाभ होकर हानि हो। नेत्रकष्ट, निजीजनों से अनबन, घरेलू झंझट बढ़ें। कारेबार में लाभ हो। अगस्त 22, 23, 24; सितंबर 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

वृष– उदरविकार, कर्जा सिर चढ़े। जमीन–जायदाद सम्बन्धी विवाद। गुप्तचिन्ता। कारोबार में लाभ रहे। अगस्त 17, 25, 26; सितंबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मिथुन– गुप्त शत्रु से सावधान। लड़ाई–झगड़े से दूर रहें। यात्रा में कष्ट। मित्र–बन्धु से सहयोग मिले। धर्म–कर्म में रुचि, आय से व्यय अधिक हो। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28, 29; सितंबर 6, 7, 14, 15 अशुभ।

कर्क– गुप्त शत्रु से सावधान रहें । राजपक्ष से भय। क्रोध बढ़े, कारोबार में रुकावट। स्त्रीपक्ष से लाभ। शनि–मंगल का दान करें। अगस्त 20, 21, 30, 31; सितंबर 8, 9, 16 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहे। स्थानान्तरण का विचार। नेत्र व शिरकष्ट। यात्रा में कष्टभय। कार्यान्तर का विचार। मासान्त में हानि या शत्रु से भय हो। अगस्त 22, 23, 24; सितंबर 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कन्या– सुखलाभ, कार्यक्षेत्र में उत्साह बने। मित्र–बन्धु से अनबन। स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार में भारी हानि संभव। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। अगस्त 17, 25, 26; सितंबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

तुला– रक्त–वायुविकार। स्त्रीसुख, अर्थहानि। घरेलू समस्याएं उलझें। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार। पार्टनरशिप में हानि एवं मासान्त कष्टप्रद रहे। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28, 29; सितंबर 6, 7, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक– उदरविकार, वृथाव्यय हो। निजीजन–कष्ट। आय से व्यय अधिक हो। नई योजनाएं बनें। शत्रुपक्ष प्रबल। कारोबार गड़बड़ रहे। अगस्त 20, 21, 30, 31; सितंबर 8, 9, 16 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, अकस्मात् लाभ हो। निजीजन–सहयोग मिले। जमीन–जायदाद लेने की योजना बने। गुप्त शत्रु से सावधान रहें, अपमानभय। कारोबार ठीक रहे। अगस्त 22, 23, 24; सितंबर 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मकर– वायुविकार, धनलाभ होकर हानिभय। अच्छे लोगों से मेल हो। सन्तानपक्ष से चिन्ता। शत्रु प्रबल हों। कारोबार बिगड़े। अगस्त 17, 25, 26; सितंबर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक, अचानक धनलाभ। शुभ समाचार। मित्र–कष्टयोग है। सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। कारोबार में रद्दोबदल का योग बने। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28, 29; सितंबर 6, 7, 14, 15 अशुभ।

मीन– कष्टभय, विरोधीपक्ष कमजोर। उत्तम धनलाभ का योग बने। भ्रातृकष्ट। मित्रों से अनबन। स्त्रीपक्ष से मदद। कार्यान्तर का इरादा बने। अगस्त 20, 21, 30, 31; सितंबर 8, 9, 16 अशुभ।

आश्विन मास

कन्या–संक्रान्ति (17 सितम्बर से 16 अक्तूबर, सन् 2014 ई.)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश उच्च बुध सूर्य के साथ 'बुधादित्ययोग' बनाता है एवं राहु भी राजनीति में जागृति का प्रतीक है। अष्टमेश अपनी राशि का मंगल तृतीय स्थान में शत्रुक्षेत्री चन्द्र को देख रहा है, जोकि कहीं भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप का सूचक है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जन–जीवनोपयोगी वस्तुओं चावल आदि अनाज, जीरा, सौंफ, तेलवाना, घी में महंगाई से जनता परेशान रहे।

आश्विनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

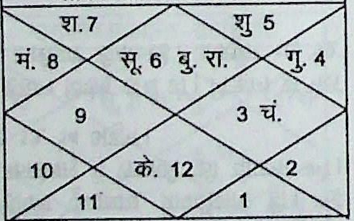

कन्या–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 सितंबर, 2014 ई.; 6 घं. 11 मि. (I.S.T.)
मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक, धनलाभ होकर धनहानियोग है। मासमध्य में अशुभ समाचार मिले। अपमानभय, कारोबार ठीक, नए व्यवसाय की योजना बने। सितंबर 19, 20, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 16 अशुभ।

वृष– शारीरिक परेशानी, अर्थहानि, नेत्रकष्ट। निजीजन–सहयोग, नई सफल योजना, गुप्त चिन्ता। कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक रहे। सितंबर 21, 22, 23; अक्तूबर 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन–सहयोग। असफल योजना, स्त्रीकष्ट। कारोबार ठीक लेकिन आय से व्यय अधिक हो। सितंबर 24, 25; अक्तूबर 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

कर्क– वायुरोग, निजीजन–कष्ट। धनलाभ, शुभ समाचार, स्त्री–सुख। स्थानान्तरण की योजना। कार्य ठीक, नए उद्यम की योजना बने। सितंबर 17, 18, 26, 27, 28; अक्तूबर 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

सिंह– सुखलाभ, उत्साह बढ़े। निजीजन–कष्ट, शत्रु प्रबल। घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से लाभ। भाग्य साथ दे। कारोबार ठीक रहे। सितंबर 19, 20, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 16 अशुभ।

कन्या– रक्त–पित्तविकार, वृथा धनहानि हो। सन्तानपक्ष से खुशी, मासमध्य में मानसिक उलझन बने। कार्यान्तर एवं नई योजना से लाभ हो। सितंबर 21, 22, 23; अक्तूबर 1, 2, 9, 10 अशुभ।

तुला– पेट में तकलीफ से परेशानी। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। गुप्त शत्रु से बचें। मित्र–बन्धु–सहयोग। कारोबार ठीक, अचानक अच्छा लाभ मिले। सितंबर 24, 25; अक्तूबर 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक– रोगभय, धनलाभ, निजीजन–सहयोग, जमीन–जायदाद–सम्बन्धी लाभ हो। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। अपमानभय है। कारोबार में सुधार हो। सितंबर 17, 18, 26, 27, 28; अक्तूबर 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्त–विकार। वृथाव्यय, भाई–बन्धु–सुख। सन्तान हेतु विशेष खर्च। विरोधीपक्ष कमजोर। स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। सितंबर 19, 20, 29, 30; अक्तूबर 7, 8, 16 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक रहे। धनलाभ हो। भ्रातृ–सुख, सुखद यात्रा। नई योजना से लाभ। सन्तानहेतु अधिक खर्च। शत्रु कमजोर, कारोबार में रद्दोबदल हो। सितंबर 21, 22, 23; अक्तूबर 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– अरिष्टभय से मुक्ति, धनलाभ हो। गुप्त शत्रु किंवा राजपक्ष से भय हो। सन्तान हेतु खर्च हो। स्त्रीपक्ष से मदद। कारोबार में हानिभय है। सितंबर 24, 25 ; अक्तूबर 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

मीन– विरोधीपक्ष कमजोर, धनलाभ होकर हानि, कर्जा उठाना पड़े। उत्साह बना रहे। गुप्त शत्रु से अपमानभय है। कारोबार ठीक, आय–व्यय ठीक रहे। सितंबर 17, 18, 26, 27, 28; अक्तूबर 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवम्बर, सन् 2014 ई.)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य एवं केन्द्रेश–त्रिकोणेश शनि सूर्य के साथ है, जो कि राजनीति में नई संभावनाओं को उजागर करता है। मंगल आर्थिक दृष्टि से भी नई योजनाओं को कार्यान्वित होने का संकेत देता है। तुलाराशि में क्रूरग्रह–सन्निधि एवं राहु, शुक्र, बुध का व्यय भाव में होना यावन–राष्ट्रों के लिए भयावह है। सोना आदि धातु, खाद्य पदार्थ महंगे हों।

कार्त्तिकसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

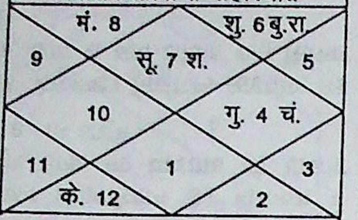

तुला–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 अक्तूबर, 2014 ई.; 18 घं. 10 मि. (I.S.T.)
मु. 15, पुण्यकाल 11 घं. 46 मि. बाद,

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– कफ–वायुविकार, धनलाभ होकर वृथाव्यय, प्रापर्टीलाभ हो। नई योजना में धोखा। पैर में चोटभय। स्त्रीकष्ट, कारोबार में तरक्की की योजना बने। अक्तूबर 17, 18, 26, 27; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे। अच्छा लाभ होकर विशेष खर्च हो। मित्रवर्ग से मेल हो। सन्तानपक्ष से चिन्ता। गुप्त शत्रु से भय। कारोबार ठीक रहे। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28, 29; नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ।

मिथुन– कफ–वायुविकार। नए उद्योग स्थापित करने की योजना बने। भाई–बन्धु से लाभ। स्त्रीकष्ट। कारोबार में बाधा। स्थानान्तरण का विचार बने। अक्तूबर 21, 22, 30, 31; नवम्बर 8, 9 अशुभ।

कर्क– उत्तम विचारों से लाभ। वृथाव्यय, निजीजन–कष्ट। सन्ततिसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार में अच्छा लाभ रहे। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह– रक्त–पित्तविकार। कारोबार सुव्यवस्थित करने की योजना बने। बन्धुकष्ट, यात्रासुख। विरोधीपक्ष प्रबल। कारोबार में रद्दोबदल। अक्तूबर 17, 18, 26, 27; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

कन्या– उदरविकार, झगड़े से दूर रहें, धनहानि होगी। बन्धु से अनबन, सन्तानपक्ष से सुख। गुप्तशत्रु से सावधान रहें, अपमानभय है। कारोबार ठीक रहे। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28, 29; नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ।

तुला– स्थानान्तरण का विचार बने। सुखद यात्रा हो। बन्धुसुख। कारोबार में प्रगति हो। स्त्रीपक्ष से अनबन। आय से व्यय अधिक हो। अक्तूबर 21, 22, 30, 31; नवम्बर 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– धनहानि से परेशानी, भ्रातृसुख। सन्तानहेतु विशेष खर्च हो। विरोधीपक्ष प्रबल। माता–पिता को कष्ट। कारोबार गड़बड़ रहे। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे। कारोबार में उत्तम लाभ मिले। बन्धु से अनबन, सन्ततिचिन्ता। विरोधपक्ष कमजोर। नए कारोबार से लाभ रहे। अक्तूबर 17, 18, 26, 27; नवम्बर 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक, धनहानि का योग है। भाई–बन्धु से अनबन। सम्पत्तिविवाद। यात्राकष्ट, कारोबार में हानिभय है। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28, 29 ; नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ।

कुम्भ– धनलाभ, वायुरोग। गुप्त शत्रुभय, मित्र–बन्धु–सुख। कारोबार ठीक, पार्टनरशिप में हानि हो। अक्तूबर 21, 22, 30, 31; नवम्बर 8, 9, अशुभ।

मीन– नेत्रकष्ट, धनलाभ होकर हानि–योग है। भाई–बन्धुसुख। स्त्रीकष्ट। कारोबार में लाभ। अक्तूबर 23, 24, 25; नवम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवम्बर, से 15 दिसम्बर, सन् 2014 ई.)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– वृश्चिक में सूर्य, शनि, शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि है। राजनैतिक दृष्टि से सिंह, तुला, वृष, मकर राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए समय अनुकूल नहीं है। यावन देशों के शासकों के लिए भी समय संघर्षपूर्ण है। देश की आर्थिक स्थिति में सुधार हो। सरकार महंगाई पर नियन्त्रण के लिए प्रयत्नशील रहे। ज्वार, बाजरा, चना, तिल एवं दालवाना महंगे ही रहें।

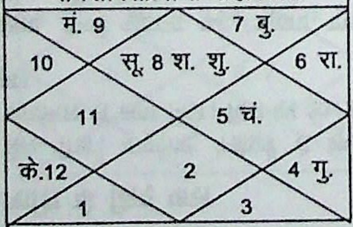
मार्गशीर्षसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

वृश्चिक–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 नवंबर, 2014 ई.; 18 घं. 01 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल 11 घं. 37 मि. बाद,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सम्पदा–हानि, शत्रु कमजोर। नेत्रकष्ट रहे। धनहानि के योग भी हैं। नई योजना बने। उच्च–गुरु यशवृद्धि एवं कारोबार में तरक्की करे। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृष– रक्त–पित्तविकार, वृथाव्यय अधिक हो। बन्धुचिन्ता, सन्तति हेतु विशेष व्यय। स्त्रीकष्ट। कार्यान्तर का विचार बने। नवम्बर 16, 24, 25; दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक रहे। धनलाभ होकर अचानक हानि हो। भ्रातृकष्ट। सन्तानपक्ष से खुशी। स्त्रीपक्ष से लाभ। मासान्त कष्टप्रद रहे। नवम्बर 17, 18, 19, , 26, 27, 28; दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ।

कर्क– आलस्य से काम पिछड़े। कर्ज़ा चढ़े। सुखद यात्रा। नई योजना से लाभ मिले। स्त्रीकष्ट। कारोबार में बाधा आए। नवंबर 20, 21, 28, 29, 30; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

सिंह– रोगभय, धनलाभ का योग है। बन्धु–सुख। सन्तानपक्ष एवं सफल योजना से मन प्रसन्न हो। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कारोबार प्रायः ठीक रहे। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कन्या– विरोधीपक्ष प्रबल, धनलाभ, मित्र–बन्धु से मदद मिले। स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। नवम्बर 16, 24, 25; दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे। धनलाभ होकर वृथाव्यय हो। बन्धुसुख। सन्तानपक्ष से परेशानी, गुप्त चिन्ता। कारोबार पूर्ववत्। नवम्बर 17, 18, 19, 26, 27, 28; दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक, धनलाभ हो। नई योजना से लाभ। बन्धुकष्ट, स्त्री से अनबन रहे। वृथाव्यय हो। कारोबार में रद्दोबदल हो। नवम्बर 20, 21, 28, 29, 30; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

धनु– पुराने झंझट समाप्त, धनलाभ, उत्साह बढ़े, बन्धुकष्ट, नई योजना फेल, यात्रा सुखद रहे। स्त्री–सुख, कार्यान्तर से लाभ रहे। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक। कर्ज़ा सिर चढ़े। बन्धु से मदद मिले। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। शत्रु परेशान करें। सम्पत्ति–विवाद बढ़े। कारोबार से लाभ रहे। नवम्बर 16, 24, 25; दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ– उदरविकार, धनलाभ, मित्र–बन्धुवर्ग से मदद, लेकिन गुप्त चिन्ता रहे। कारोबार ठीक रहे। नवम्बर 17, 18, 19, 26, 27, 28 ; दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ।

मीन– राजपक्ष से भय है। धनलाभ होकर हानि हो। निजीजन–विरोध। नई योजना असफल। स्त्री–पुत्रार्थ विशेष व्यय हो। कारोबार ठीक रहे। नवम्बर 20, 21, 28, 29, 30; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (16 दिसम्बर, 2014 से 13 जनवरी, सन् 2015 ई.)

(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सूर्य, बुध एवं शुक्र की स्थिति भारतीय शासनतन्त्र में संशोधन का संकेत देती है। मकर (उच्च) राशिस्थ मंगल आर्थिक स्थिति को ठीक करेगा। महंगाई का मुद्दा विशेष कमज़ोर पड़ेगा। उच्च मंगल पर उच्च गुरु की दृष्टि भारत की राजनीति में विशेष सुधारात्मक योजनाओं का सन्देश देती है।

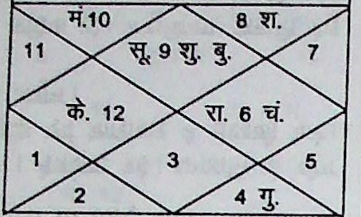
पौषसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

वृश्चिक राशिस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि मुस्लिम–राष्ट्रों में भी कहीं परिवर्तन का संकेत देती है।

धनु–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 दिसंबर, 2014 ई.; 8 घं. 42 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल 15 घं. 06 मि. तक,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत गड़बड़, नेत्र व सिर–पीड़ा। बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से शुभ–समाचार.। कारोबार में परेशानी। वृथाव्यय, कार्यान्तर से लाभ मिले। दिसम्बर 20, 21, 28, 29; जनवरी (2015 ई.) 6 ,7, 8 अशुभ।

वृष– रक्तचाप बढ़े। घरेलू झंझट, कर्जा उठाना पड़े। सुखद यात्रा हो। अपमानभय, कारोबार ठण्डा रहे। दिसम्बर 22, 23, 30, 31; जनवरी (2015 ई.) 8, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– उदरविकार, अर्थलाभ हो। गुप्त शत्रु से भय। शनि–बुधवार को वाहन से चोटभय। कारोबार में रुकावट हो। दिसम्बर 16, 24, 25; जनवरी (2015 ई.) 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कर्क– रक्तपित्त–विकार, धनलाभ, भाई–बन्धु सुख। नई योजना से लाभ। उत्साह बढ़े। कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च हो। दिसम्बर 17, 18, 19, 26, 27; जनवरी (2015 ई.) 4, 5, 13 अशुभ।

सिंह– रोगपीड़ा भय है। वृथाव्यय हो। सन्तति–चिन्ता। घरेलू झंझट। कारोबार में लाभ हो। दिसम्बर 20, 21, 28, 29; जनवरी (2015 ई.) 6, 7, 8 अशुभ।

कन्या– कफविकार। धन–प्राप्ति का योग बने। बन्धुकष्ट। राजकार्य में सफलता। उत्साह बढ़े। कारोबार में परिवर्तन करना पड़े। दिसम्बर 22, 23, 30, 31; जनवरी (2015 ई.) 8, 9, 10 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, बन्धुकष्ट, मित्र से सहायता मिले। सन्तान हेतु विशेष खर्च। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। कारोबार में रुकावट के बाद अच्छा लाभ मिले। दिसम्बर 16, 24, 25; जनवरी (2015 ई.) 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ

वृश्चिक– कारोबार में उत्साहवर्धक प्रगति। बन्धुपक्ष से चिन्ता। शत्रुपक्ष कमजोर। स्त्रीसुख। शनि–मंगलवार को चोट से बचें। दिसम्बर 17, 18, 19, 26, 27; जनवरी (2015 ई.) 4, 5, 13 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक। अकस्मात् विशेष खर्च आ पड़े। निजीजनों से अनबन। स्त्रीसुख। कारोबार में रद्दोबदल करना पड़े। दिसम्बर 20, 21, 28, 29; जनवरी (2015 ई.) 6, 7, 8 अशुभ।

मकर– पेट में गड़बड़। क्रोध बढ़े। धनलाभ हो। सन्तानपक्ष शुभ। स्त्री से अनबन। कारोबार प्रायः ठीक चले। दिसम्बर 22, 23, 30, 31; जनवरी (2015 ई.) 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– झगड़े–झंझट से बचें। बन्धु–सुख। धनलाभ होकर विशेष खर्च हो। सम्पत्तिलाभ। स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार में नए सुधार हों। दिसम्बर 16, 24, 25; जनवरी (2015 ई.) 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ

मीन– वायुविकार। धनलाभ होकर अचानक हानि हो। भाई–बन्धु से मेल हो। सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से मन–मुटाव। कारोबार ठीक चले। दिसम्बर 17, .18, 19, 26, 27; जनवरी (2015 ई.) 4, 5, 13 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी, से 12 फरवरी, सन् 2015 ई.)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– मकर–राशिस्थ सूर्य–बुध–शुक्र राजनैतिक गतिविधि को सुव्यवस्थित करेंगे। देश में सुधारात्मक सक्रिय पग उठेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार के प्रयास होंगे।

माघसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

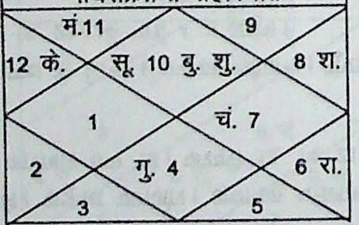

मुस्लिम–राष्ट्रों की स्थिति गंभीर रहेगी। इस मास में प्राकृतिक आपदाएं भी परेशान करेंगी। तिल, जौ, गुड़, तेल, तिलहन में तेजी से लाभ मिलेगा।

मकर--संक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जनवरी, 2015 ई.; 19 घं. 27 मि. (I.S.T.) मु. 15, पुण्यकाल 13 घं. 03 मि. बाद एवं अगले दिन 11 घं. 27 मि. तक,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मन घरेलू झंझटों से परेशान रहे। आर्थिक संकट बढ़ेगा। निजीजनों से मन–मुटाव रहे। स्त्रीपक्ष से आर्थिक लाभ लेना होगा। कारोबार में धोखे से सावधान। जनवरी (2015 ई.) 16, 17, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 12 अशुभ।

वृष– शारीरिक कष्ट। अर्थलाभ होकर हानि हो। भाई से सुख। मित्र से मेल। वृथाव्यय, स्त्रीकष्ट। कारोबार पूर्ववत्। जनवरी (2015 ई.) 18, 19, 26, 27, 28; फरवरी 5, 6 अशुभ।

मिथुन– उदर–विकार। धनलाभ हो। बन्धु–सुख। सन्तानपक्ष से खुशी मिले। गुप्त चिन्ता। नीच व्यक्ति से सावधान। आय से व्यय अधिक हो। जनवरी (2015 ई.) 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक। अच्छे लोगों से मेल हो। स्थानान्तरण व कार्यान्तरण का विचार बने। विरोधीपक्ष कमजोर रहे। जनवरी (2015 ई.) 14, 15, 22, 23, 31; फरवरी 1, 10, 11 अशुभ।

सिंह– कफ–वायुविकार। अर्थलाभ, बन्धु–सुख। सन्तानहेतु विशेष व्यय हो। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। कारोबार में प्रगति हो। जनवरी (2015 ई.) 16, 17, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 12 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहे। मित्र से अनबन, लेकिन उत्साह बना रहे। सन्तति–चिन्ता। गुप्त शुत्र से सावधान। कार्यान्तर से लाभ रहे। जनवरी 18, 19, 26, 27, 28; फरवरी 5, 6 अशुभ।

तुला– स्वास्थ्य ठीक। आर्थिक संकट बने। भ्रातृवर्ग से चिन्ता। राजपक्ष से भय। गुप्त चिन्ता, अपमानभय। कारोबार में बाधा आए। जनवरी(2015 ई.) 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

वृश्चिक– झगड़े से दूर रहें। कर्जा सिर चढ़े। मन परेशान रहे। निजीजन–कष्ट। कारोबार में लाभ की स्थिति बने। जनवरी (2015 ई.) 14, 15, 22, 23, 31; फरवरी 1, 10, 11 अशुभ।

धनु– उदर में विकार रहे। चोर–उच्चकों से सावधान। निजीलोगों से अनबन। सन्तति–सुख, स्त्रीकष्ट। कारोबार ठीक। जनवरी (2015 ई.) 16, 17, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 12 अशुभ।

मकर– अकस्मात् लाभ होकर हानि हो। मित्र–बन्धु–सुख। मन प्रसन्न, यात्रा सुखद रहे। नई योजना से अच्छा लाभ हो। जनवरी (2015 ई.) 18, 19, 26, 27, 28; फरवरी 5, 6 अशुभ।

कुम्भ– विरोधी प्रबल, लेकिन मित्र–बन्धु से मदद मिले। धनलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता। धर्म–कर्म में रुचि रहे। कारोबार ठीक रहे। जनवरी (2015 ई.) 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

मीन– उच्च गुरु प्रगतिप्रद है। आर्थिक चिन्ता से परेशानी रहे। नई योजना से लाभ। सन्तति–पक्ष से सुख। मानसिक चिन्ता। कारोबार में रद्दोबदल हो। जनवरी (2015 ई.) 14, 15, 22, 23, 31; फरवरी 1, 10, 11 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (13 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2015 ई.)

(गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– दशम भाव में शनि एवं नीच चन्द्र पर गुरु की दृष्टि आश्चर्यजनकरूप से राजनैतिक सुधार करने वाली है। पुराने राजनैतिक घोटाले शासन तन्त्र के सामने उजागर होंगें। अमेरिका एवं मुस्लिम–राष्ट्रों में भी अघटित घटनाचक्र चलेगा। गुड़, तेल, तिलहन एवं दालवाना तेज रहेंगे।

फाल्गुनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

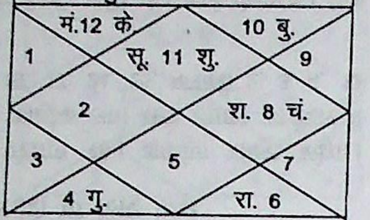

कुम्भसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 13 फरवरी, 2015 ई.; 8 घं. 26 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल 14 घं. 50 मि. तक

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्थानान्तरण से सुख मिले। शत्रुपक्ष कमजोर। अचानक धनलाभ का योग है। नेत्र व शिरोवेदना, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठप्प रहे। फरवरी 13, 14, 21, 22; मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ।

वृष– रोगभय, क्रोध बढ़े। सन्तानपक्ष से चिन्ता। असफल योजना। गुप्त चिन्ता। कारोबार ठीक रहे। फ़रवरी 14, 15, 16, 23, 24; मार्च 4, 5 अशुभ।

मिथुन– कफ–वायुविकार। धनलाभ होकर विशेष व्यय हो। नई योजना एवं सुखद यात्रा से लाभ हो। कारोबार में प्रगति हो। फरवरी 17, 18, 25, 26; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति कमजोर। निजीजन सुख। स्त्री एवं सन्ततिचिन्ता। कारोबार में बदलाव करना पड़े। मासान्त में अचानक ज्यादा खर्च हो। फरवरी 19, 20, 27, 28; मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ।

सिंह– ज्वर से परेशानी। अचानक उत्तम लाभ की स्थिति बने। निजीजन–सहयोग। मित्र से अनबन। शत्रु कमजोर। कारोबार ठीक रहे। फरवरी 13, 14, 21, 22; मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ।

कन्या– कारोबार उत्तम रहे। निजीजनों से अनबन। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। धनलाभ अच्छा हो, लेकिन व्यय भी हो। उत्साह बना रहे। फरवरी 14, 15, 16, 23, 24; मार्च 4, 5 अशुभ।

तुला– उदर–विकार, गुप्त चिन्ता, अपमानभय। धनहानि, यात्रा में कष्ट, कारोबार ठीक। आय से व्यय अधिक हो। फरवरी 17, 18, 25, 26; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत बिगड़े, निजीजनकष्ट। कारोबार के लिए कर्जा उठाना पड़े। शत्रु प्रबल, कारोबार में विशेष सुधार की योजना बने। फरवरी 19, 20, 27, 28; मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ।

धनु– समय कुछ उलझनपूर्ण है। मित्र–बन्धु से मदद मिले। नई योजना से लाभ। सांझेदारी में धोखा। आर्थिक संकट बने। फरवरी 13, 14, 21, 22; मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मकर– शनि–चन्द्र की स्थिति मानसिक उलझनें बढ़ाएगी। भाई–बन्धु से मेल हो। धर्म में रुचि। कारोबार ठीक। फरवरी 14, 15, 16, 23, 24; मार्च 4, 5 अशुभ।

कुम्भ– धन किंवा स्थाई सम्पति का लाभ हो। निजीजन चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से मदद , कारोबार में कुछ रद्दोबदल हो। फरवरी 17, 18, 25, 26; मार्च 6, 7, 8 अशुभ।

मीन– शनि एवं गुरु की दृष्टि शुभ कार्य में रुचि बनाए। धन–धान्यसमृद्धि रहे। निजीजन से अनबन। स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। फरवरी 19, 20, 27, 28; मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 13 अप्रैल, सन् 2015 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– चैत्र मास में भारत की प्रभावराशि मकर पर शनि की विशेष दृष्टि एवं उच्च गुरु की दृष्टि है। देश को नई दिशा मिले। नए आयाम, नई योजनाएं लागू होंगी। सूर्य, मंगल, केतु प्राकृतिक प्रकोप, अग्निकाण्ड आदि से कहीं हानि भी करे। अफग़ानिस्तान, ईरान, पाक आदि में राजनैतिक उलझनें एवं परेशानियां बढ़ें। पैट्रोल एवम् तिलहन, अनाज एवं गुड़ आदि में मन्दा रहे।

चैत्रसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

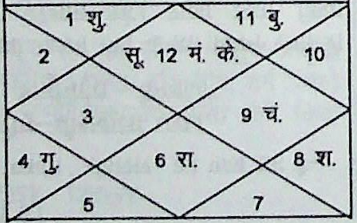

मीनसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मार्च, 2015 ई.; 29 घं. 18 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत गड़बड़ रहे। आर्थिक स्थिति में सुधार हो। बन्धु–सुख, सन्तति–सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। स्थानान्तरण एवं कार्यान्तरण से अच्छा लाभ मिले। मार्च 20, 21 29, 30; अप्रैल, 8, 9 अशुभ।

वृष– शुभकार्य में रुचि रहे। व्यापार में लाभ, यात्रा सुखद रहे। सन्तानपक्ष से खुशी। शत्रु कमजोर। मासान्त में विशेष खर्च हो। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मिथुन– त्वचारोग। नई योजना से हानि। मित्रों से मेल। आय से व्यय अधिक। कारोबार ठीक चले। गुप्त शत्रु से हानिभय है। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रैल 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कर्क– कारोबार अच्छा रहे, प्रगति हो। आर्थिक लाभ, मित्र से अनबन। सन्तानार्थ विशेष खर्च। गुप्त चिन्ता से परेशानी। मार्च 18, 19, 26, 27, 28; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहे। धनहानि का योग है। सम्पदा–विवाद, स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार से लाभ रहे। सन्तति–कष्ट से मन्न खिन्न रहे। मार्च 20, 21 29, 30,; अप्रैल, 8, 9 अशुभ।

कन्या– वायुरोग से कष्ट। बन्धु–सहयोग। शत्रु हत्प्रभ। नई योजना से लाभ। कारोबार में विशेष रद्दोबदल की योजना। स्थान–परिवर्तन भी हो। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 2, 10, 11 अशुभ।

तुला– मन परेशान रहे, अपमानभय। गुप्त शत्रु परेशान करें। निजीजन से अनबन। कारोबार में विश्वसनीय व्यक्ति के योगदान से लाभ मिले। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रैल 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक– मंगल की स्थिति ठीक है। सेहत एवं मनोबल बना रहे। धनलाभ होकर हानि हो। निजीजन–कष्ट। शत्रु प्रबल रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक रहे। मार्च 18, 19, 26, 27, 28; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्तविकार। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। निजीजन से स्नेह–सौहार्द रहे। स्त्री–सुख। कारोबार में तरक्की। मासान्त में कष्टभय है। मार्च 20, 21, 29, 30; अप्रैल, 8, 9 अशुभ।

मकर– तरक्की का योग, निजीजनकष्ट, मित्र से मदद मिले। यात्रा में परेशानी रहे। उलझनें बढ़ें, कारोबार में रद्दोबदल के विचार बनें। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रैल 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ– आर्थिक लाभ, घरेलू झंझटों से मुक्ति। अच्छे लोगों से मेल–मुलाकात। अच्छी योजना से लाभ। मन प्रसन्न। कारोबार ठीक रहे। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रैल 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मीन– राजपक्ष से भय, नेत्रकष्ट। वृथाव्यय हो। निजीजन से मदद मिले। जायदाद का लाभ हो। कोई परेशानी वाला समाचार मिले। कारोबार में रुकावट आए। मार्च 18, 19, 26, 27, 28; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

अथ वर्षराजादि–फलविचार (संवत् २०७१ वि.)

(सन् २०१४–१५ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९११५, सृष्टि संवत् १९५५८८५११५, श्रीविक्रम संवत् २०७१, शक संवत् १९३६, श्रीकृष्ण- जन्म संवत् ५२५०, कलि-संवत् ५११५, सप्तर्षि-संवत् ५०९०, श्रीजैन महावीर-निर्वाण-संवत् २५३९-४०, श्रीबुद्ध संवत् २६३७-३८, हिजरी सन् १४३५-३६, फसली सन् १४२१-२२, ईस्वी सन् २०१४-१५ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से शिव(रुद्र)विंशति का 'प्लवंग' नामक संवत्सर है । [यह शिव(रुद्र)विंशति का प्रथम संवत्सर है ।] इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

" तुषधान्यानि नश्यन्ति मेघो वर्षति माधवे।
प्लवंगे पीडिताः सर्वे भूमिकम्पो क्वचिद् भवेत्।।"

अर्थात्– तुषधान्य (चावल, जौ, चना, गेहूं, बाजरा आदि अनाजों) की फसलें प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण नष्ट हो जाती हैं। वैशाख मास में (वर्षा ऋतु से पूर्व) ही (अकालिक) वर्षा हो। अतः प्लवंग संवत् में खाद्यान्न की हानि व महर्घता के कारण जनता कष्ट में रहे। कहीं भूकम्प आदि भयंकर प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि भी संभावित है।

' भविष्यफल भास्कर ' के अनुसार 'प्लवंग' संवत्सर का फल यह है–

" प्लवंगे मध्यमः वृष्टिः रोग–चौराकुला धरा।
परस्परं द्विषन्तो वै शत्रुभिर्हृत - वैभवाः॥"

अर्थात् – ' प्लवंग ' संवत्सर में वर्षा मध्यम हो। जनता विषम रोगों से कष्ट पाए। चोर–उचक्कों से भी जनता परेशान रहे। राजा लोग किंवा शासकगण परस्पर शक्तिपरीक्षण के लिए सन्नद्ध रहें। कहीं राष्ट्र में सत्ता–हस्तान्तरण भी संभव है।

किञ्च– ' मेघ महोदय ' के अनुसार–

"प्लवंगनाम–संवत्सरे ब्रह्मा–स्वामी, चैत्रे–वैशाखे च महर्घता, ज्येष्ठमध्ये राजपीड़ा, आषाढ़ेऽल्प–मेघः भूमिकम्पः, हस्ति–पीड़ा, तुरंग– महर्घता, भाद्रपदाष्टमीतः श्रावणपर्यन्तं महामेघः, आश्विने रोग–बाहुल्यं, रस– महर्घता, फाल्गुने कण–कलशिका एका फदिया १० प्रमाणैः, अश्व–महिषी–पीड़ा, लोकपीड़ा चापि प्लवंगे कथिता।।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) चन्द्र, मन्त्री चन्द्र, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) बुध, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) मंगल, मेघेश (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) सूर्य, रसेश (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) शुक्र, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) बुध, फलेश (फल–फूल आदि के स्वामी) शनि, धनेश* (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) बुध/मंगल एवं दुर्गेश* (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) शनि हैं।

[* *ये दोनों ही पद* (धनेश *एवं* दुर्गेश *पद*) *इस वर्ष उभयग्रहशासित (दो–दो ग्रहों से शासित) हैं। इस बारे विस्तृत विवरण पृ.* 20 *पर देखें* ।]

संवत् २०७१ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इसप्रकार है –

(१) संवत्सर २०७१ वि. के राजा चन्द्र का फल–

"सम्पन्न - सस्य - क्षुप–शष्पशालि - प्ररूढ–गुल्मो बहुवर्षधारः।
रत्नौषधि–स्नेहपटु–प्रसेकश्चान्द्रो रति–स्त्रीसुख–वर्धनोऽब्दः।।"

अर्थात्– संवत्सरेश चन्द्र हो तो चावल आदि अनाजों की फसलें श्रेष्ठ हों। वृक्ष–वनस्पति–जड़ी–बूटियों एवं तिलहन की उपज अच्छी, वर्षा भी काफी हो। इस संवत्सर में (चन्द्र के वर्षेश होने से) यौन–सम्बन्धित अपराधों में वृद्धि हो। रत्नादि (कोल किंवा अन्य) खनिज पदार्थों किंवा स्रोतों की उपलब्धि तथा जनता में स्नेहिल भावनाओं का उभार अनुभव होगा। कानून-व्यवस्था में कमजोरी भी अनुभव होगी।

(२) मन्त्री चन्द्र का फल-

"शशिनि मन्त्रिपदे बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता।
बहुजला जलदा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि–समेधिताः।।"

अर्थात्– इस संवत् में चन्द्र को मन्त्रिपद प्राप्त होने से चावलादि की पैदावार अच्छी हो, जनजीवन सुखमय रहे। वर्षा बहुत हो, जनता में सुख–समृद्धि रहे।

(३) सस्येश बुध का फल-

"जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुख–समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणाः स्तुतिपाठ–रताः सदा प्रथम–सस्यपतौ सति बोधने।।"

अर्थात्– बुध सस्येश हो तो वर्षा ज्यादा हो, जन–जीवन में सुख–समृद्धि का वातावरण एवं सामाजिक स्थिति भी शान्तिपूर्ण रहे। बुद्धिजीवि वर्ग अपने कर्त्तव्यपथ पर चलते हुए शासक वर्ग को सन्मार्गानुसरणार्थ प्रेरित करें किंवा बुद्धिजीवि वर्ग द्वारा प्रशासन की प्रशंसा हो।

(४) धान्येश मंगल का फल-

" गोधूम–सर्षप–मुद्ग–तिल–माष–प्रवालकाः।
महर्घतां समायान्ति भौमे धान्याधिपे सति।।"

अर्थात्– मंगल धान्येश हो तो गेहूं, सरसों, मूंग–माष आदि दालें, तिलहन एवं मूंगा आदि समुद्रोत्पन्न पदार्थ महंगे होते हैं।

(५) मेघेश सूर्य का फल-

"द्रविणपे दिनपे सति जायते वणिजतो बहुद्रव्य–समागमः।
गज–तुरंगम–मेष–खरादिकान् धनचयं च तदा क्रय–विक्रयात्।।"

अर्थात्– सूर्य मेघेश हो तो व्यापारियों को अच्छे लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। हाथी, घोड़ा, गधा आदि मालवाहक पशुओं व दुधारू पशुओं की खरीदो–फरोख्त (व्यापार) से उत्तम धनलाभ होता है।

(६) रसेश शुक्र का फल-

" भृगुसुते रस–नायकतां गते जनपदा जलतोषित–मानसाः।
सुख–सुभिक्ष–प्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालन–तत्पराः।।"

अर्थात्– शुक्र रसेश हो तो पर्याप्त वर्षा के कारण जनता सन्तुष्ट रहे। जनता में सुख, अच्छी फसलें होने से सुभिक्ष एवं आनन्द–मंगल रहे। शासक वर्ग सुचारु रूप से जनता की सुख–समृद्धि के लिए तत्पर रहें।

(७) नीरसेश बुध का फल-

" चित्र–वस्त्रादिकं चैव शंख–चन्दन–हाटकाः।
सर्वे महर्घतां यान्ति नीरसेशो बुधो यदा।। "

अर्थात्– नीरसेश (सर्वविध धातु एवं व्यापार के स्वामी) बुध होने पर रंगीन एवं फैशन के कपड़े, शंख, चन्दन एवं स्वर्णादि धातुएं– ये सभी महंगे होते हैं।

(८) फलेश शनि का फल-

"अथ शनौ फलपे कलहो भवेत् वनज–पादप–पुष्प–गणो धनः।
अपि च दुष्टजनादिकृतं भयं जनपदा जनराशि–समाकुलाः।।"

अर्थात्– शनि फलेश हो तो जनता (किंवा राजनीतिज्ञों) में परस्पर कलह, जंगली पेड़, फूल (किंवा–जड़ी बूटियों) की उपलब्धता पर्याप्तमात्रा में हो। दुष्टों (दुराचारियों) से भय रहे। शहरों में जनसंख्या में भारी वृद्धि हो।

नोट– कुछ पुस्तकों में "जनराशि–समाकुलाः" की जगह " जलराशि–समाकुलाः" पाठ है। अतः यहां बाढ़ से भय एवम् जनसंख्या में वृद्धि अर्थ भी समझें ।

(९) धनेश का फल-

इसवर्ष धनेश पद दो ग्रहों बुध एवं मंगल को प्राप्त है।

देखिए– इसवर्ष १७ सितंबर, २०१४ ई. को कन्यार्क–प्रवेश ६ घं. ११ मि. (I.S.T.) पर हुआ है और चण्डीगढ़ में सूर्योदय भी ६ घं. ११ मि. पर होगा, अतः यहां **धनेश बुध** होगा–यह स्पष्ट है। **ध्यान दें**– इस दिन ६ घं. ११ मि. से परवर्ती सूर्योदय वाले स्थलों **अमृतसर, जालन्धर** आदि में तो **धनेश मंगल** ही होगा। (विशेष स्पष्टीकरण पृ. **21** पर देखें।)

(क) धनेश बुध का फल–

" बहुधान्ययुता पृथ्वी रसानां वै महर्घता।
नीति–युक्ताः सदा भूपाः बुधे धान्याधिपे सति।।"

अर्थात्– चावल, गेहूं आदि (सस्य) काफी मात्रा में उपलब्ध हों। रसपदार्थों (दूध, घी, गुड़ आदि) के भाव तेज़ रहेंगे। शासकजन जनता–जनार्दन के हित में नीति–निर्धारण करें।

(ख) धनेश मंगल का फल–

"धरणिजे धननायकतां गते शरदि ताम्रकरास्तुष–धान्यहा।
सकल–देश–जनाश्चलितास्तदा नरपतिर्नर–शोकविधायकाः।।"

अर्थात्– मंगल के धनपति होने पर शरद् ऋतु में मीठी धूप पड़ने एवं सामयिक वर्षा न होने से भूसे से प्राप्त होने वाले अनाज परिपक्व नहीं होते एवं फसल कम प्राप्त होती है। सारे देश के वासी परेशान किंवा अनिश्चितता की स्थिति में रहते हैं। शासन भी जनविरोधी नीति (तेवर) अपनाता है।

(१०) दुर्गेश का फल-

इसवर्ष १७ अगस्त, २०१४ ई. को **सिंहार्क–प्रवेश ६ घं. १५ मि.** पर है और **चण्डीगढ़** में सूर्यादय ५ घं. ५४ मि. है, अतः यहां दुर्गेश **रवि** होगा किंवा **६ घं. १५ मि.** से परवर्ती सूर्योदय वाले स्थलों पर यह पद **शनि** के पास रहेगा। (विशेष विवरण के लिए पृ. 20 देखें ।)

(क) दुर्गेश सूर्य का फल–

" नय–विशेष – करस्तरणिस्तदा गतभया नरराज–पुरोगमाः।
समधिको न तदा नृपजोऽन्यजः स्वपथि व्रजतां न भयं क्वचित्।।"

अर्थात्–सूर्य दुर्गेश हो तो शासक न्यायपरक रहे। राजद्वार में निर्भय होकर न्याय प्राप्त करें। राजवंशी एवं प्रजा समानरूप से अधिकृत रहें। न्यायोचित मार्ग का अनुसरण करने वाले जनसमूह निर्भय रहें।

(ख) दुर्गेश शनि का फल –

" रविसुतो यदि दुर्गपतिर्भवेत् सकल–देशजनाश्चलितास्तदा।
विविधवैर–विशेषित–नागराः कृषिधनं लभते न जनः क्वचित्।।"

अर्थात्– शनि दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा का स्वामी) हो तो सर्वत्र जनसमूह किंकर्त्तव्य–विमूढ़ रहता है। लोगों में परस्पर वैरभाव बढ़ता है। फसलों की स्थिति खराब होने से कृषिकर्म से कृषक लाभ नहीं ले सकते।

नोट– यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है। किन्तु विशेषतः **राजा का फल** काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री का फल** आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में; **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; **फलेश, दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १५, धान्य ६, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ७, तृषा ३, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १७, पाप १७, पुण्य ५, व्याधि ३, व्याधिनाश १७, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६, देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्भिज्ज १५, जरायुज ३, अण्डज ५, स्वेदज ७, टिड्डी १७, तोता १३, मूषक ३, सोना १७, तांबा १६, स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्विश्वा १२ हैं।

चतुर्मेघविचार :– आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'पुष्कर'** नामक मेघ है।

फल :– वर्षा कम होने से कन्दमूल–फलों व खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। पाप–कर्मों की वृद्धि हो, रोगों से जनता परेशान रहे– **" पुष्करे मन्दवृष्टिः।"**

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में **' वायु '** नामक मेघ है।

फल :– **" नवाम्बुवृष्टिं कुरुते सुरेशः समस्त–धान्याम्बर–कण्यनाशः।
धराधरः स्याद्यदि वायुनामा जनो व्रजेत्तर्हि विहीन–धामा।।"**

अर्थात्– वायु नामक मेघ होने से इसवर्ष वर्षा की कमी से सर्वविध धान्य किंवा अनाजों (दालवाना आदि) की फसलों को हानि पहुंचे तथा कहीं अकाल की स्थिति से जनता अपना घर छोड़ कर अन्यत्र जाने को विवश हो।

अनन्तादि अष्टनाग विचार– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष **'महापद्म'** नामक नाग है।

फल :-सं. 2071 वि. में इसवर्ष 'महापद्म' नामक नाग होने से चोर–उचक्कों से परेशानी एवं सर्पदंश आदि की घटनाएं अधिक हों। विषाक्त मद्य एवं नशीली वस्तुओं का प्रचलन दुःखमय रहे। शासन को कठोर पग उठाने पड़ें। शासकों के बड़े–बड़े घोटाले उजागर हों।

सुबुध्नादि द्वादशनाग विचार– सुबुध्नादि द्वादश नागों में इसवर्ष **'तक्षक'** नामक नाग है।

फल :– इस संवत् २०७१ वि. में बारह नागों में 'तक्षक' नामक नाग होने से भारत के अनेक प्रान्तों में समयानुकूल मध्यम वर्षा होने से फसल ठीक हो, कहीं ईतिभय हो, शासकों में शक्ति–परीक्षण (परस्पर दोषारोपण) किंवा कहीं युद्धमय वातावरण बने– "तक्षकाभिधः नागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके। मध्यमं वर्षणं ज्ञेयम् वग्रहो–विग्रहः क्वचित्।। किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त भी हो।

आवह आदि सप्तवायु–विचार– इस वर्ष **'वायुसप्तक'** में **'उद्वह'** नामक वायु है।

फल– आंधी–तूफान से देश के दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर एवं विश्व के समुद्र–तटवर्त्ती देशों में समुद्री तूफान (सुनामी), भूचाल किंवा भारी बाढ़–वर्षा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष जनजीवन को अस्त–व्यस्त करेंगे। शासन इस स्थिति को संभालने में असमर्थ अनुभव करेगा। भूमध्यगत–वायुतरंगों से होने वाले इस प्राकृतिक प्रकोप का परिणाम अनेक देशों के लिए विध्वंसकारी रहेगा।

संवत् २०७१ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'चन्द्र' होने से इस संवत् का वाहन "मृग" है। कुछ **संहिताकार** राजा **'चन्द्र'** होने पर सं. 2071 वि. का वाहन **'हाथी'** भी मानते हैं।

फल :– **'मृग'** किंवा **'हाथी'** संवत् का वाहन होने से सुभिक्ष, प्रजा में सुखशान्ति, वर्षा ऋतु में समयानुकूल वर्षा हो। फसलें अच्छी हों। खाद्यपदार्थ सस्ते हों। जनता में सुख–समृद्धि रहे– " मृगारुढे सुभिक्षं स्याद् योगक्षेमं प्रजासुखम्। वर्षासु शोभना वृष्टिः सुखिनः सर्वजन्तवः।।"

नोट– इस वर्ष मृगादि वन्यजीव–वृद्धि होने से वन्य सम्पत्ति एवं औषधादि की उपज भी अच्छी हो।

संवत् २०७१ वि. के चार स्तम्भ

(१) **जलस्तम्भ**–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ६४.२२ प्रतिशत है।

(२) **वायुस्तम्भ**–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) २२.५२ प्रतिशत है।

(३) **तृणस्तम्भ**–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ६१.३० प्रतिशत है।

(४) **अन्नस्तम्भ**–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ३५.१७ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ– इसवर्ष 'जलस्तम्भ' ६४.२२ प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर वर्षा एवं भारी बाढ़ से विनाशकारी दृश्य उपस्थित होगा। कहीं समुद्री तूफान, सुनामी से प्रलयंकारी दुःखद घटनाएं घटित होंगी। बहुजल–प्रधान अन्न जीरी, चावल, बाजरा आदि की फसलें काफी अच्छी होंगी। भूजल के स्तर में काफी उठाव बने।

(२) वायुस्तम्भ– सं. २०७१ वि. में 'वायुस्तम्भ' २२.५२ प्रतिशत होने से बहुत निर्बल है। इसवर्ष तूफान, बवंडर आदि से जन–धनहानि के योग बनते हैं। लू, गर्महवाओं एवं नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। क्योंकि, बादलों का सञ्चालन वायुवेग से ही होता है, अतः कहीं महावृष्टि तो कहीं सूखे से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी। मानसून के अव्ययस्थित होने से गर्मी से जनजीवन क्षुब्ध रहने का योग भी बनता है।

(३) तृणस्तम्भ– इसवर्ष (सं. २०७१ वि. में) 'तृणस्तम्भ' ६१.३० प्रतिशत होने से बहुत मजबूत है। भूसे से निकलने वाले प्रमुख अनाज, कृषि उपज, वनस्पतियां, जड़ी–बूटियां व अन्य पदार्थों की पैदावार व उपलब्धता सहज संभव रहेगी। पशुचारा अच्छा होगा। सब्जी, फल आदि पर्याप्त मात्रा में सुलभ रहें।

(४) अन्नस्तम्भ– इसवर्ष 'अन्नस्तम्भ' ३५.१७ प्रतिशत होने से काफी कमजोर है। घरेलू उत्पाद में कमी, खड़ी फसलों को हानि तथा देश में खाद्यान्न महंगे होंगे। प्रशासन से जनता का विश्वास क्षीण होगा। मानसून अनियमित एवं महंगाई से साधारण वर्ग क्षुब्ध रहे।

इस वर्ष स्तम्भों के विचार से कहीं बाढ़, कहीं सूखे से कृषक परेशान रहें। वायु–अन्नस्तम्भ कमजोर होने से शासनतन्त्र के समक्ष महंगाई का मुद्दा उठेगा। परिणाम दूरगामी होंगे।

आर्षमान–विचार (सं २०७१ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ६६.५७ प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष** (गत संवत् २०७० वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ७२.१७ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ६५ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष (कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र) का अभाव है।

इसवर्ष देश की रक्षा के लिए स्थापित उल्लिखित चार दुर्गों (किलों) के विचार से देश की सैन्य–समृद्धि, शासनसत्ता एवं केन्द्रशासित पार्टी की नीति एवं घोटालों के परिणामस्वरूप सं. २०७१ वि. में प्रतिष्ठा को घात पहुंचेगा। कार्तिक पूर्णिमा (६ नवंबर, सन् २०१४ ई.) से संवत् के अन्त तक की स्थिति देश की रूलिंग पार्टी के लिए आश्चर्यजनक परिणामों वाली प्रतीत होती है।

प्रथम तीन दुर्गों के प्रबल होने से देश की समृद्धि एवं जनता की सुख–सुविधाओं पर विशेष ध्यान रहेगा। सैन्यक्षमता की वृद्धि होगी।

प्रथम आर्ष– इसवर्ष प्रथम आर्ष ६६.५७ प्रतिशत होने से बहुत प्रबल है। परिणामस्वरूप अफगानिस्तान, पाक, इराक, ईरान, जापान, श्रीलंका, सीरिया आदि यावन देशों की आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी। **कहीं किसी देश विशेष का विभाजन व कहीं आन्तरिक क्रान्ति से परिणाम आश्चर्यजनक रहें।** लेकिन भारत की शासनसत्ता में भारी सुधारात्मक कार्यक्रम एवं जनहितार्थ नए प्रोग्राम बनें। कहीं भूकम्प एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से समुद्रतटवर्ती भूभाग एवं पर्वतीय क्षेत्र में हानि भी संभव है।

द्वितीय आर्ष – इसवर्ष द्वितीय आर्ष ७२.१७ प्रतिशत होने से जल–स्थल एवं वायुसेना की क्षमता में अभिवृद्धि होगी। सीमाप्रान्तों पर भारत का दबदबा बना रहेगा। भारत का वर्चस्व बढ़ेगा एवं नए आयाम, नई नीतियों से देश की समस्याओं को हल करने के प्रयास सराहनीय होंगे।

तृतीय आर्ष – सं. २०७१ वि. में श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र ६५ प्रतिशत है। यह आर्ष सशक्त है। पुरातन राजनैतिक घोटालों एवं राजनैतिक पार्टी–विशेष के कदाचारों से मुक्ति पाने के लिए जन–मानस उद्यत रहे। राजनैतिक सुसंस्कृतीकरण के लिए चेतना जागृत होगी।

चतुर्थ आर्ष– सं. २०७१ वि. में चतुर्थ आर्ष का अभाव होने से सैन्यशक्ति संवर्धन के लिए नई योजनाएं कार्यान्वित करने के लिए आर्थिक संकट रहेंगे। भारत को सीमाओं पर पाक, बंगलादेश, नेपाल, एवं विशेषतः चीन की कुनीति से सावधान रहना आवश्यक है। काश्मीर, लाहौलस्पीति, तिब्बत, त्रिपुरा आदि में भी स्थिति चिन्तनीय बने। भारत के महानगरों में आतंकवादी जनधन–हानि का कारण बनेंगे।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस संवत् में मेष संक्रान्ति हस्त नक्षत्र में लगी है, अतः रोहिणी का वास 'सन्धि' में है।

फल– रोहिणी का वास इसवर्ष 'सन्धि' में होने से "सन्धौ वणिक्गृहे **वासः**"– अनुसार समय का वास "बाणियों" के घर है। सर्वत्र अच्छी वर्षा की कमी रहे। कहीं धूप, कहीं छांव · एवम् कहीं खण्डवृष्टि होती रहे। पुनरपि, गेहूं आदि खाद्य अनाजों की उपज ठीक हो। कहीं खाद्यान्नों की हानि भी हो–

" ब्राह्मभं सन्धिसंस्थं चेज्जायते यत्र वत्सरे।
खण्डवृष्टिस्तदा ज्ञेया क्वचिद्धान्यस्य नाशनम्।।"

इसवर्ष संवत्सर किंवा समय का वास **'वणिक्'** के घर होने से व्यापारिक क्षेत्र में सरकार द्वारा नए कार्यक्रम बनाए जाएंगे। देश में नए–नए औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होगा।

शनि की दृष्टि– इसवर्ष संवत् २०७१ वि. के प्रारम्भ से २ नवंबर, सन् २०१४ ई. तक शनि तुलाराशि में रहेगा। तत्पश्चात् शनि संवत् २०७१ वि. के अन्त तक वृश्चिक राशि में ही रहेगा। अतः स्पष्ट है कि– संवत् २०७१ वि. में तुला एवं वृश्चिक राशिस्थ शनि की दृष्टि पश्चिम (पश्चिमी राष्ट्रों) की तरफ रहेगी। अतः संवत् २०७१ वि. में पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी) एवं कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध (सत्तापरिवर्तनार्थ) आन्दोलन, ज्वालामुखी– विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं। भारत भी इस वर्ष शनि की दृष्टि से अप्रभावित नहीं रह सकेगा। सिंह, कुम्भ एवं तुला राशि के नेताओं के लिए यह वर्ष विशेष उलझनें लेकर उपस्थित हो रहा है। संवत् २०७१ वि. का अन्तिम चरण सिंह, वृश्चिक, तुला एवं कुम्भ राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है, दुर्घटना संभव है। कहीं दुर्भिक्ष,कहीं बाढ़ से हानि व कहीं राजनैतिक उलटफेर (सत्तापरिवर्तन) भी हो–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०७१ वि. में अमावस्याएं–

(१) सोमवती अमावस्या वि. संवत् २०७१ में केवल एक ही है –
भाद्रपद कृष्णपक्ष (२५ अगस्त, सन् २०१४ ई.)

(२) भौमवती अमावस्याएं वि. सं. २०७१ में दो हैं –
(i) वैशाख कृष्णपक्ष (२६ अप्रैल, सन् २०१४ ई.)
(ii) माघ कृष्णपक्ष (२० जनवरी, सन् २०१५ ई.)

(३) शनिवारी अमावस्याएं सं. २०७१ वि. में दो हैं–
(i) श्रावण कृष्णपक्ष (२६ जुलाई, सन् २०१४ ई.)
(ii) मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (२२ नवंबर, सन् २०१४ ई.)

नोट– इसवर्ष सोमवती अमा (२५ अगस्त, सन् २०१४ ई.) को चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान–दान का महत्त्व है।

मंगलवारी अमा को गुड़ गायों को खिलाएं एवं लालवस्त्र, स्वर्णादि के दान का भी विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें :– उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्नान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०७१ वि. में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा बुधवार (तात्कालिक तिथि ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा), तदनुसार १४/१५ मई, सन् २०१४ ई. को विशाखा नक्षत्र, परिघ योग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव २८ घंटा २८ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर वृष राशि में प्रविष्ट होंगे। इस वृष राशि में सूर्य–संक्रमण के समय मेष लग्न रहेगा।

शरत्सस्य जातककुण्डली
(१४/१५ मई, सन् २०१४ ई., २८ घं. २८ मि.)

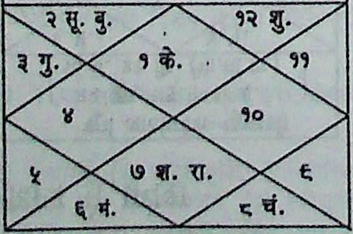

फल– शरत्सस्यजातक कुण्डली में अष्टम भाव में नीच चन्द्र एवं सूर्य से छठे भाव में क्रूरग्रह शनि–राहु होने से 'खरीफ' [शरत्सस्य (गन्ना, मक्का, चावल, ज्वार, अरहर, मूंग, बाजरा, तिल एवं कपास)] की फसल अच्छी होने पर भी किसान औसत से आधी फसल ही प्राप्त करेगा। सूर्य से सप्तमेश क्रूरग्रह मंगल लग्न से अष्टमेश होकर छठे भाव में है तथा लग्नकुण्डली में केन्द्रस्थ शनि–राहु खरीफ की फसलों की हानि का संकेत देते हैं–

" सूर्यात् सप्तमसंस्थः पापोऽन्य– केन्द्रगश्च हानिकरौ।"

लेकिन शनि–राहु पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि होने से खरीफ की फसलों में व्यापकरूप से हानि के योग नहीं हैं–

"सौम्य–ग्रहसंदृष्टौ न तथा सर्वत्र निर्दिष्टौ।"

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०७१ वि. में मार्ग. कृष्णपक्ष नवमी (तात्कालिक दशमी), रविवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१४ ई. को पू.फा. नक्षत्र, वैधृति योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय १८ घं. १ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर वृष लग्न के समय सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातककुण्डली
(१६ नवं., सन् २०१४ ई., १८ घं. १ मि.)

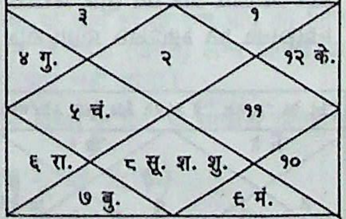

फल–ग्रीष्मसस्यकालीन कुण्डली में वृश्चिकस्थ सूर्य के सन्निकर्ष में सूर्य के शत्रुग्रह शनि एवं शुक्र हैं। अतः गेहूं, जौ, चना, दालें एवं सरसों आदि तिलहन की फसलों को भारी हानि संभव है–

" मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।"

लेकिन सूर्य–शनि–शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि होने से शासनतन्त्र ग्रीष्मान्नों की उपलब्धता कराने में सक्षम रहेगा। कुण्डली में सूर्य से द्वितीयभाव (अर्थ भाव) में मंगल होने से अगेती बोई हुई फसलें जलवायु की प्रतिकूलता से खराब हो सकती हैं। देरी से बोए ग्रीष्मान्न ठीक रहें। कुछ क्षेत्रीय कृषकजन असन्तुष्ट रहें–

"अर्थस्थाने भौमः सौम्यैरवीक्षितः।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद् व्यक्तम्।।"

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

सूर्य आर्द्राप्रवेश-कुण्डली
(२२ जून, सन् २०१४ ई.,
१० घं. ३६ मि. (भा.स्टैं.टा.)

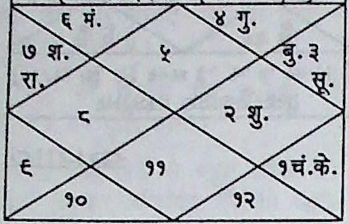

संवत् २०७१ वि. में आषाढ़ कृष्ण दशमी (तात्कालिक एकादशी), रविवार, तदनुसार २२ जून, सन् २०१४ ई. को अश्विनी नक्षत्र, अतिगण्ड योग, मेषस्थ चन्द्र एवं सिंह लग्न के समय १० घं. ३६ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में पदार्पण करेंगे।

फल— इस संवत् में सूर्य मध्याह्न से पहले ही आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा, जोकि कहीं भयंकर दुर्भिक्ष एवं प्राकृतिक आपदाओं का सूचक है;—

" दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जल—भक्षण—कारकः।"

यह प्रभाव महाराष्ट्र, राजस्थान एवं कुछ अन्य प्रान्तों में संभव है। लेकिन आर्द्राप्रवेश दशमी किंवा एकादशी तिथि में होने से अनेकत्र जलवायु अनुकूल रहेगी। रविवार एवं अतिगण्ड योग में आर्द्राप्रवेश पशुओं में रोगभय पैदा करता है।

आर्द्राप्रवेश—कुण्डली में मंगलक्षेत्र में केतुयुत चन्द्र के साथ शनि—राहु का समसप्तक बन रहा है एवं चन्द्र पर मंगल की दृष्टि भी है। अतः पूर्व—दक्षिण में तूफान, अतिवर्षण आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है। उ. भारत में कहीं सूखा, कहीं व्यापक वर्षा हो। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, गुजरात एवं दक्षिण—पूर्वी समुद्र में व अन्यत्र भी सुनामी आदि किंवा भूकम्प से हानि संभव है।

मिथुनस्थ सूर्य—बुध वृषस्थ शुक्र एवं कर्कस्थ गुरु से घिरे हैं। अतः कहीं भयंकर बाढ़, कहीं सूखे से हानि के योग भी हैं।

संवत् २०७१ वि. का शुभारम्भ

शुभ संवत् २०७१ वि. की
प्रवेशकालीन कुण्डली

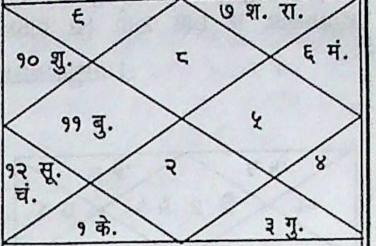

(३०/३१ मार्च, सन् २०१४ ई., २४ घं. १६ मि.)

गतसंवत् २०७० वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, रविवार, तदनुसार ३०/३१ मार्च, सन् २०१४ ई. को २४ घं. १६ मि. पर उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०७१ वि. का शुभारम्भ वृश्चिक लग्न में होगा।

फल— संवत् २०७१ वि. का शुभारम्भ वृश्चिक लग्न में हो रहा है। लग्नेश एवं षष्ठेश मंगल शत्रुक्षेत्र में स्थित होकर योजनास्थान एवं शत्रुभाव को देख रहा है। नई—नई योजनाओं की घोषणाएं एवं सुधारात्मक प्रयास कार्यान्वित होंगे। इसवर्ष सन् २०१४ ई. में राजनैतिक उलटफेर एवं जनजीवन में नई चेतना जागृत होगी। व्ययस्थान में उच्चस्थ शनि एवं राहु गुरुदृष्ट होने से देश की प्रगतिप्रद योजनाओं में व्यय अधिक होगा। लेकिन वृश्चिक राशि में नववर्ष का उदय होने से पश्चिमी प्रान्तविशेष में कहीं नौ मास तक दुर्भिक्ष की स्थिति बनने से शासकवर्ग कठिन परिस्थितियों में आ जाएंगे। उत्तर में विपरीत जलवायु के कारण फसलें प्रभावित हों। उपज आधी हाथ लगे। सोना—चान्दी एवं अन्य धातुओं में समर्घता (मन्दी) रहे;—

" वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम्।
उदीच्यामर्ध—निष्पत्तिः समर्घा धातवस्तथा।।"

पूर्व में राजविग्रह, जनता दुखी, मध्यप्रदेश में धान्यनाश हो। दक्षिण में कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से शासनसत्ता में परिवर्तन हो—

"पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखः मासत्रयं भवेत्।
पश्चात् सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते।
दक्षिणस्यां देशभंगो भाविवर्षे प्रजायते।।"

वर्षेश(जगत्)लग्न कुण्डली (सं. २०७१ वि.)

वर्षेश(जगत)लग्नकुण्डली
(संवत् २०७१ वि.)

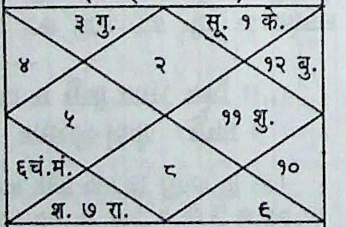

(१४ अप्रैल, सन् २०१४ ई., ७घं. ३६ मि.)

वर्तमान संवत् २०७१ वि. में चैत्र शुक्ल चतुर्दशी, चन्द्रवार, तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २०१४ ई. को ७ घं. ३६ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हस्त नक्षत्र, व्याघात योग, कन्यास्थ चन्द्र एवं वृष लग्न के समय सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करेंगे।

फल–सं. २०७१ वि. की जगत् लग्नकुण्डली में मेषस्थ सूर्य–केतु का शनि–राहु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। जोकि सीरिया, ईरान, पाकिस्तान एवं अमेरिका के किसी प्रान्त में प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि का संकेत देता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि यावनराष्ट्रों में कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं देश के विभाजन के लक्षण बनेंगे।

लग्नेश शुक्र मित्रक्षेत्र में है। शनि नवमेश एवं दशमेश होकर छठेभाव में होने से अरबराष्ट्र, कोरिया, बंगलादेश, चीन, जापान, लंका, नाइजीरिया, इटली में कहीं समुद्री तूफान, हैरिकेन एवं आन्तरिक आपदा से हानि संभव है। क्योंकि, शनि की दृष्टि इसवर्ष पश्चिमी भूभाग पर है एवं वर्षेश–प्रवेश वृषलग्न एवं व्याघात योग में हुआ है, अतः भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा, जम्मू–काश्मीर, बिहार, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल में आतंकी घटनाओं से जनधनहानि के योग भी हैं। भारत के दक्षिणी भूभाग पर समुद्री तूफान एवं कुछ प्रान्तों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि के योग भी इसवर्ष शासन को स्तब्ध कर सकते हैं।

श्रावण–भाद्रपद, आश्विन एवं माघ–फाल्गुन मास विशेष दुःखद घटनापूर्ण सिद्ध होंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिए–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि, (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म–कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख–साधनप्राप्ति, तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु–पराजयःस्यात्।।

स्त्री–सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।
लाभे लाभः सुख–धनचयो दुःख–दारिद्र्यमन्त्ये
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।"

यदि " जगत्लग्न " अपने ' जन्मलग्न ' से ६, ८, या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा– ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ–विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा–फल (सन् २०१४–१५ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

सवत् २०७० वि. में कार्तिक शुक्ल द्वितीया मंगलवार, तदनुसार ५ नवम्बर सन् २०१३ ई. को यकम (१) मुहर्रम वाले दिन मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३५ का उदय हुआ है।

यहां यकम मुहर्रम वाले दिन मंगलवार होने से इस हिजरी सन् १४३५ का बादशाह मंगल होगा।

फल– अनेक प्रान्तों एवम् मुस्लिम देशों में अनेकत्र अकाल की स्थिति बनेगी। वर्षा समय पर न हो, खड़ी फसलें नष्ट हों, व्यापारीवर्ग धान्य किंवा खाद्यफसलों की कमी से अनुचित लाभ लें। मुस्लिम राष्ट्रविशेष की स्थिति

चिन्तनीय हो, कहीं यावनराष्ट्र में आन्तरिक युद्ध की स्थिति बने। पशुओं को बीमारी से हानि हो। फल, धान की कमी रहे। गुड़, शक्कर, कपास, तिलहन, गेहूं, सोना, चान्दी के भाव आकाश को छूएं। कुछ स्थानों पर भयंकर अग्निकाण्ड, तूफान, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि हो।

सं. २०७१ वि. में कार्तिक शुक्ल तृतीया, इतवार, तदनुसार २६ अक्तूबर सन् २०१४ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३६ का प्रारम्भ होगा।

क्योंकि, यकम मुहर्रम वाले दिन इतवार है। अतः हिजरी सन् १४३६ का बादशाह सूर्य ही होगा।

फल– वर्षा पर्याप्त हो, धान सस्ते हों। सरकार महंगाई पर कंट्रोल करे। जनता सुखी रहे। पशुधन सुरक्षित रहे। दूध–घी का लाभ सब को मिले। अनेकत्र वायुवेग से हानि भी संभव है। गेहूं, धान एवं तेल–तिलहन की फसल अच्छी हो। कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो। कपास की उपज पर्याप्त हो। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में अशान्ति एवं कहीं हत्याकाण्ड व सत्तापरिवर्तन हो।

आय–व्यय–चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय–अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः श‍ृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

विशेष– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सैंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात–पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से भी मुक्ति मिलती है।

कुम्भ महापर्व की पूर्व सूचना

अगामीवर्ष सं. 2072 वि. में भाद्र. अमा, रविवार (13 सितंबर, 2015 ई.) को "नासिक कुम्भपर्व " का योग बन रहा है। इस महापुण्य के दिन पुण्यसलिला गोदावरी में स्नान कर पुण्यसञ्चय एवं निर्वाण के इच्छुक श्रद्धालुओं को तदर्थ पहिले ही प्रस्तुत हो जाना चाहिए। इस पर्वराज के पुण्य स्नानदिवसों का विस्तृत विवरण तथा ऐतत्सम्बद्ध सभी प्रकार की अन्य पूरी जानकारी विस्तार–पूर्वक अगले वर्ष (सं. 2072 वि.) के **पञ्चांग** में दी जाएगी। ध्यान रहे– नासिक के कुम्भपर्व को सिंहस्थ पर्व भी कहा जाता है।

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सैकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/– + डाकव्यय Rs. 35/– है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/– ही लिया जाएगा।

पुस्तक मिलने का पताः–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil, 'अभिजित् प्रकाशन,'
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109,
Phone: 0172- 2565 303

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(३१ मार्च से १५ अप्रैल तक, सन् २०१४ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः पूर्व में दिखाई दे रहा बु. पक्षान्त तक लुप्त हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्व में और श. मं. पश्चिम में होंगे । सायं गु. पश्चिम कपाल में होगा ।

प्लवंग संवत्सर

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															चैत्र	मार्च	चैत्र	ज.उ.ल.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	४९	१	चं.	४०	२०	रेव.	४५	२३	ऐं.	४४	२१	किं.	१२	३५	१८	३१	१०	२९	मेष	४५	२३	६	१७	१८	३७	११	१६	८	२७	सूर्य रेव. में २६/५७, शुक्र कुम्भ में ६/२२, चान्द्र संवत्सर (A)
३०	५४	२	मं.	३७	१३	अश्वि.	४४	१०	वै.	३९	६	बा.	८	४६	१९	अ.१	११	३०	मेष			६	१६	१८	३७	११	१७	७	४३	चन्द्रदर्शन मु. ३०, चन्द्रव्रत, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५८	३	बु.	३५	४५	भर.	४४	३६	वि.	३५	१०	तै.	६	२९	२०	२	१२	ज.१	वृष	५९	५८	६	१५	१८	३८	११	१८	६	५७	श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर),(B)
३१	३	४	गु.	३६	२	कृत्ति.	४६	४६	प्री.	३२	३८	व.	५	५३	२१	३	१३	२	वृष			६	१३	१८	३९	११	१९	६	९	भ. ५/५३ से ३६/०२ तक,
३१	८	५	शु.	३८	७	रोहि.	५०	३८	आ.	३१	२८	ब.	७	४	२२	४	१४	३	वृष			६	१२	१८	३९	११	२०	५	१९	बुध मीन में ३/१५, श्री(लक्ष्मी)पञ्चमी, नागपञ्चमी, हयव्रत,
३१	१२	६	श.	४१	४८	मृग.	५६	१	सौ.	३१	३५	कौ.	९	५७	२३	५	१५	४	मिथुन	२३	१२	६	११	१८	४०	११	२१	४	२६	स्कन्दषष्ठी,
३१	१७	७	र.	४६	४७	आर्द्रा	६०	०	शो.	३२	४४	ग.	१४	१७	२४	६	१६	५	मिथुन			६	१०	१८	४०	११	२२	३	३१	भ. ४६/४७ बाद, बुध उ.भा. में ४/४३, शुक्र शत. में (C)
३१	२१	८	चं.	५२	३७	आर्द्रा	२	३४	अ.	३४	३७	वि.	१९	४२	२५	७	१७	६	कर्क	५२	५८	६	९	१८	४१	११	२३	२	३४	भ. १९/४२ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी[पुनर्वसु नक्षत्र (D)
३१	२६	९	मं.	५८	४५	पुन.	९	५०	सु.	३६	५१	बा.	२५	४१	२६	८	१८	७	कर्क			६	७	१८	४२	११	२४	१	३५	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु नक्षत्र १० घं. ४ मि. तक), नवरात्र (E)
३१	३०	१०	बु.	६०	०	पुष्य	१७	१३	धृ.	३९	१	तै.	३१	४३	२७	९	१९	८	कर्क			६	६	१८	४२	११	२५	०	३३	नवरात्रपारणा,
३१	३५	१०	गु.	४	४१	आश्ले.	२४	१५	शू.	४०	४७	ग.	४	४१	२८	१०	२०	९	सिंह	२४	१५	६	५	१८	४३	११	२५	५९	२९	भ. ३७/१५ बाद,
३१	३९	११	शु.	९	५०	मघा	३०	२७	गं.	४१	५१	वि.	९	५०	२९	११	२१	१०	सिंह			६	४	१८	४४	११	२६	५८	२३	भ. ९/५० तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
३१	४४	१२	श.	१३	५४	पू.फा.	३५	३२	वृ.	४१	५९	बा.	१३	५४	३०	१२	२२	११	कन्या	५१	३६	६	३	१८	४४	११	२७	५७	१४	वक्री मंगल हस्त में ५४/३५, शनिप्रदोष व्रत, श्रीविष्णु (F)
३१	४८	१३	र.	१६	४०	उ.फा.	३९	१९	ध्रु.	४१	५	तै.	१६	४०	३१	१३	२३	१२	कन्या			६	२	१८	४५	११	२८	५६	३	बुध रेव. में ३८/००, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
३१	५३	१४	चं.	१८	२	हस्त	४१	४५	व्या.	३९	६	व.	१८	२	वै.१	१४	२४	१३	कन्या			६	०	१८	४५	११	२९	५४	५१	भ. १८/०२ से ४८/०२ तक, सं. सूर्य अश्विनी मेष में (G),
३१	५७	१५	मं.	१८	२	चित्रा	४२	५४	ह.	३६	४	ब.	१८	२	२	१५	२५	१४	तुला	१२	३०	५	५९	१८	४६	०	०	५३	३६	चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान् जयन्ती(द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ,

(A) २०७१ वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र प्राशन, (B) आन्दोलन तृतीया, जमद-उरसानी मु. प्रारम्भ, (C) ३०/३२, (D) ७ घं. ११ मि. बाद], (E) समाप्त, (F) दमनोत्सव, अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृ. 13), (G) ४/००, मु. ३०, पुण्यकाल २०/०० तक, प्लूटो वक्री ५८/०५, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ० मि., श्रीसत्यनारायण व्रत, मेषसंक्रान्ति, वैसाखी (पं.), श्रीशिवदमनोत्सव,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ २३ २ ३५	२ १९ ९ ३२	५ २५ ३६ १३	११ ४ ५० १४	२ १७ ५६ २७	१० ७ ९ ३६	६ २८ १५ १६	६ ५ ७ २४	० ५ ७ २४
५९ १	७१४ ५९	२२ ४९	१०२ २५	५ ४८	६४ १	३ १६	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. २	आर्द्रा ४	चित्रा १	उ.भा. १	आर्द्रा ४	शत. १	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

कुण्डली सूर्योदय (७ अप्रैल)

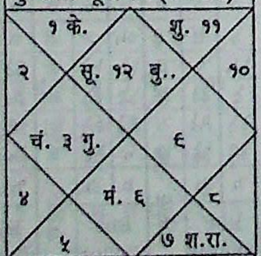

लोक-भविष्यः- इस चान्द्रमास (चैत्र) में पांच चन्द्रवार एवं पांच ही मंगलवार होने से प्रजा, विशेषतः राजनैतिक क्षेत्रों में नया उत्साह दिखाई दे। देश की शासन-सत्ता में युवा नेता के उदय किंवा नए विकल्प का संकेत मिलता है। "सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति। धन-धान्यसमृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा ।।" पांच मंगलवार यावन राष्ट्रों में कहीं आन्तरिक-क्रान्ति किंवा सत्तापरिवर्तन का संकेत भी देते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- शनि, मं. रा. के वक्रत्व के कारण पक्षारम्भ से ६ अप्रैल तक तेल, तिलहन, रुई, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना-चान्दी में कुछ उतार-चढ़ाव के साथ तेजी रहेगी। १३ अप्रैल को सोना, केसर, लालचन्दन, लालमिर्च तेज रहें। गुड़, खाण्ड, तिलहन, घी, चान्दी मन्दे हों तो स्टॉक करें । १४ अप्रैल को सभी वायदा बाजार तेज रहें ।

आकाशलक्षण :- मार्च ३१, अप्रैल ४, ६, १३, १४ के लगभग बंगलादेश, हि.प्र. भूटान, सिक्किम, आसाम में बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (१५ अप्रै.)

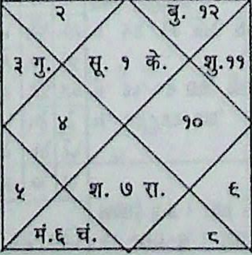

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० ० ५३ ३७	५ २७ ० ३८	५ २२ ३२ ५३	११ १९ ११ १८	२ १८ ४७ ०	१० १५ ४७ ४१	६ २७ ४७ १४	६ ४ ४१ ५८	० ४ ४१ ५८
५८ ४३	७९० १	२२ ३१	११४ २७	६ ५९	६६ ३८	३ ४६	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. १	चित्रा २	हस्त ४	रेव. १	आर्द्रा ४	शत. ३	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१६ से २६ अप्रैल तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में और श. पश्चिम में दिखाई देगा। सायं गुरु पश्चिम में और मं. पूर्व में होगा।
															प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. ज.उ.स्रा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१	१	बु.	१६	४६	स्वाती	४२	५१	व.	३२	५	कौ.	१६	४६	३	१६	२६	१५	तुला			५	५८	१८	४७	०	१	५२	१९	
३२	६	२	गु.	१४	२३	विशा.	४१	४६	सि.	२७	१४	ग.	१४	२३	४	१७	२७	१६	वृश्चिक	२७	८	५	५७	१८	४७	०	२	५१	१	भ. ४२/४२ बाद,
३२	१०	३	शु.	११	२	अनु.	३९	५१	व्य.	२१	३९	वि.	११	२	५	१८	२८	१७	वृश्चिक			५	५६	१८	४८	०	३	४९	४०	भ. ११/०२ तक, शुक्र पू.भा. में ४८/४०, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३२	१५	४	श.	६	५५	ज्येष्ठा	३७	१४	व.	१५	२९	बा.	६	५५	६	१९	२९	१८	धनु	३७	१४	५	५५	१८	४९	०	४	४८	१८	
३२	१९	५	र.	२	९	मूल	३४	७	प.	८	५०	तै.	२	९	७	२०	३०	१९	धनु			५	५४	१८	४९	०	५	४६	५४	भ. ५६/५९ बाद, बुध अश्वि. मेष में २९/१२, सूर्य (A)
अवम		६	र.	५६	५९	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३२	२३	७	चं.	५१	३१	पू.षा.	३०	३८	शि. सि.	१ ५४	४८ ३५	वि.	२४	१५	८	२१	वै.१	२०	मकर	४४	४२	५	५३	१८	५०	०	६	४५	२८	भ. २४/१५ तक, शक वैशाख प्रारम्भ,
३२	२७	८	मं.	४५	५४	उ.षा.	२६	५७	सा.	४७	१५	बा.	१८	४२	९	२२	२	२१	मकर			५	५२	१८	५१	०	७	४४	१	अगस्त्य अस्त,
३२	३२	९	बु.	४०	१५	श्रव.	२३	१२	शु.	३९	५५	तै.	१३	०४	१०	२३	३	२२	कुम्भ	५१	१९	५	५१	१८	५१	०	८	४२	३२	पंचक प्रारम्भ ५१/१९,
३२	३६	१०	गु.	३४	४४	धनि.	१९	३२	शु.	३२	४०	व.	७	२९	११	२४	४	२३	कुम्भ			५	५०	१८	५२	०	९	४१	१	भ. ७/२९ से ३४/४४ तक, गुरु पुन. १ में ३८/१५,
३२	४०	११	शु.	२९	३०	शत.	१६	६	ब्र.	२५	३९	ब.	२	७	१२	२५	५	२४	मीन	५८	४५	५	४९	१८	५३	०	१०	३९	२९	वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
३२	४४	१२	श.	२४	४४	पू.भा.	१३	५	ऐं.	१९	०	तै.	२४	४४	१३	२६	६	२५	मीन			५	४८	१८	५३	०	११	३७	५६	बुध भर. में ५१/४०, शनिप्रदोष व्रत,
३२	४८	१३	र.	२०	३५	उ.भा.	१०	३९	वै.	१२	५१	व.	२०	३५	१४	२७	७	२६	मीन			५	४७	१८	५४	०	१२	३६	२०	भ. २०/३५ से ४८/५५ तक, सूर्य भर. में ४४/१०, (B)
३२	५२	१४	चं.	१७	१६	रेव.	९	१	वि.	७	२१	श.	१७	१६	१५	२८	८	२७	मेष	९	१	५	४६	१८	५५	०	१३	३४	४३	पंचक समाप्त ९/०१,
३२	५६	३०	मं.	१४	५८	अश्वि.	८	२२	प्री. आ.	२ ५८	३७ ५२	ना.	१४	५८	१६	२९	९	२८	मेष			५	४५	१८	५५	०	१४	३३	५	भौमवती अमावस,

(A) सायन वृष में ८/५०, ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ, (B) शुक्र मीन में ४७/११,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२२ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० ७ ४४ १	९ ३ २३ ४४	५ २० १ २६	० ३ ३ ४०	२ १९ ३८ ४३	१० २३ ३० ४७	६ २७ १९ ४१	६ ४ १९ ४३	० ४ १९ ४३
५८ ३२	८५३ ४८	२० ६	१२४ २८	७ ५५	६६ ४७	४ ७	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	उ.षा. ३	हस्त ४	अश्वि. १	आर्द्रा ४	पू.भा. २	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

कुण्डली सूर्योदय (२२ अप्रैल)

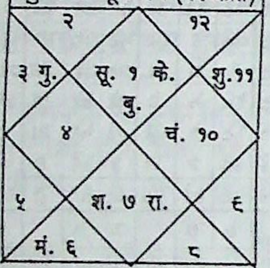

लोक-भविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं। प्रजा में सुख-समृद्धि रहे। लेकिन सूर्य-बुध का वक्र शनि-राहु के साथ समसप्तक योग होने से छत्तीसगढ़, बिहार एवं कहीं महानगरों में उग्रवादियों द्वारा भारी जनधन हानि भी संभव है। किसी विशिष्ट-व्यक्ति की हत्या किंवा निधन का योग है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- बुध-सूर्य-केतु का शनि-राहु के साथ समसप्तक के कारण भारी राजनैतिक उथल-पुथल के आसार से वायदा एवं शेयर बाज़ारों में भारी उठा-पटक रहेगी। अप्रैल २० से २५ तक अनाज, दालवाना, घी, तेल, तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना के वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में ज़ोरदार उठा-पटक से मन्दा प्रधान रहेगा। २६ से २९ अप्रैल तक घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें।

आकाशलक्षण:- अप्रैल १८, २०, २४, २६ एवं २७ को राजस्थान, आसाम, उड़ीसा, मुम्बई, उ.प्र. एवं हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२९ अप्रैल)

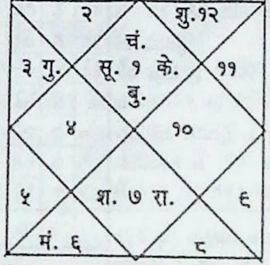

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२९ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० १४ ३३ ५	० ११ १९ ५०	५ १७ ५२ १८	० १७ ५३ ५९	२ २० ३६ ४६	११ १ २१ १०	६ २६ ५० १	६ ३ ५७ २८	० ३ ५७ २८
५८ २०	७९९ ५	१५ ५८	१२९ २	८ ४७	६७ ४२	४ २२	३ ११	३ ११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. १	अश्वि. ४	हस्त ३	भर. २	पुन. १	पू.भा. ४	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(३० अप्रैल से १४ मई तक, सन् २०१४ ई.)

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

८ मई के बाद बु. सायं पश्चिम में दिखाई देना शुरु हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में और श. पश्चिम में होगा । सायं गु. पश्चिम में और मं. पूर्व में दिखाई देगा । ४ मई को चं. गु. काफी समीप होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	वैशाख	ज.उ.स्सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	०	१	बु.	१३	५३	भर.	८	५३	सौ.	५६	९	ब.	१३	५३	१७	३०	१०	२९	वृष	२४	१२	५	४४	१८	५६	०	१५	३१	२४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र उ.भा. में ४४/४०, यूरेनस रेव.(A)
३३	४	२	गु.	१४	१०	कृत्ति.	१०	४४	शो.	५४	३४	कौ.	१४	१०	१८	म. १	११	र. १	वृष			५	४३	१८	५७	०	१६	२९	४२	वक्री शनि विशा. २ में १६/३५, श्रीपरशुराम जयन्ती, (B)
३३	८	३	शु.	१५	५३	रोहि.	१३	५९	अ.	५४	७	ग.	१५	५३	१९	२	१२	२	मिथुन	४६	७	५	४२	१८	५७	०	१७	२७	५८	भ. ४७/२७ बाद, अक्षय तृतीया (देखें पृ. 13),
३३	१२	४	श.	१९	२	मृग.	१८	३७	सु.	५४	४२	वि.	१९	२	२०	३	१३	३	मिथुन			५	४१	१८	५८	०	१८	२६	१२	भ. १९/०२ तक, बुध कृत्ति. में ५/३२,
३३	१६	५	र.	२३	२७	आर्द्रा	२४	२८	धृ.	५६	९	बा.	२३	२७	२१	४	१४	४	मिथुन			५	४०	१८	५९	०	१९	२४	२३	बुध वृष में ४१/११, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	१९	६	चं.	२८	५०	पुन.	३१	१६	शू.	५८	१२	तै.	२८	५०	२२	५	१५	५	कर्क	१४	३२	५	३९	१८	५९	०	२०	२२	३३	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
३३	२३	७	मं.	३४	४६	पुष्य	३८	३४	गं.	६०	०	ग.	१	४८	२३	६	१६	६	कर्क			५	३९	१९	०	०	२१	२०	४१	भ. ३४/४६ बाद, श्रीगंगा जन्म,
३३	२७	८	बु.	४०	४२	आश्ले.	४५	५२	गं.	०	२९	वि.	७	४४	२४	७	१७	७	सिंह	४५	५२	५	३८	१९	१	०	२२	१८	४८	भ. ७/४४ तक,
३३	३०	९	गु.	४६	४	मघा	५२	३४	वृ.	२	३७	बा.	१३	२३	२५	८	१८	८	सिंह			५	३७	१९	१	०	२३	१६	५२	बुध पश्चिम में उदित १९ घं. ०१ मि., श्रीजानकी जयन्ती,
३३	३४	१०	शु.	५०	२४	पू.फा.	५८	१२	ध्रु.	४	१२	तै.	१८	१४	२६	९	१९	९	सिंह			५	३६	१९	२	०	२४	१४	५४	बुध रोहि. में ४३/३०,
३३	३८	११	श.	५३	१६	उ.फा.	६०	०	व्या.	४	५४	व.	२१	५०	२७	१०	२०	१०	कन्या	१४	२६	५	३५	१९	२	०	२५	१२	५४	भ. २१/५० से ५३/१६ तक, राहु चित्रा ३, केतु अश्वि. (C)
३३	४१	१२	र.	५४	२८	उ.फा.	२	२५	ह.	४	२३	ब.	२३	५२	२८	११	२१	११	कन्या			५	३५	१९	३	०	२६	१०	५३	सूर्य कृत्ति. में २९/५५,
३३	४४	१३	चं.	५३	५५	हस्त	५	२	व. सि.	२ ५९	३४ २४	कौ.	२४	११	२९	१२	२२	१२	तुला	३५	४०	५	३४	१९	४	०	२७	८	५०	शुक्र रेव. में २६/४७, सोमप्रदोष व्रत,
३३	४८	१४	मं.	५१	४३	चित्रा	५	५४	व्य.	५४	५४	ग.	२२	४९	३०	१३	२३	१३	तुला			५	३३	१९	४	०	२८	६	४५	भ. ५१/४३ बाद, नेप्च्यून शत. ३ में २८/४७, श्रीनृसिंह (D)
३३	५१	१५	बु.	४८	३	स्वाती	५	११	व.	४९	१४	वि.	१९	५३	ज्ये.१	१४	२४	१४	वृश्चिक	४८	४०	५	३३	१९	५	०	२९	४	३९	भ. १९/५३ तक, सं. सूर्य वृष में ५७/१७, मु. ४५, (E)

(A) २ में ५४/३७, (B) श्रीशिवाजी जयन्ती, मई प्रारम्भ, रजब मु. प्रारम्भ, (C) १ में ४६/५५, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (D) जयन्ती, (E) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	५	१	२	११	६	६	०
२२	२०	१६	४	२१	१०	२६	३	३
१८	५०	५	४२	५०	२५	१४	३२	३२
४८	१७	३	१८	१६	४०	३०	२	२
५८	७१४	९	११८	९	६८	४	३	३
४	४७	५६	४३	४०	३०	३०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	आश्ले. २	हस्त २	कृत्ति. ३	पुन. १	उ.भा. ३	विशा. २	चित्रा ४	अश्वि. २

कुण्डली सूर्योदय (७ मई)

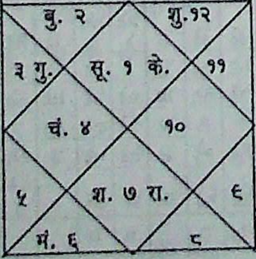

लोकभविष्यः- अक्षयतृतीया को रोहिणी नक्षत्र प्रजा में सुभिक्ष एवं धन-धान्य समृद्धि का संकेत देता है;- "अक्षयाख्य-तृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी ।" लेकिन राजनीतिज्ञों के लिए समय शक्तिपरीक्षण का होगा । प्रतिपदा को बुधवार होने से महंगाई से साधारण-जन परेशान रहे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३० अप्रैल से २ मई तक चावल, चान्दी, कपूर, खाण्ड, रुई, कपास, अफीम में बाज़ार ऊपर-नीचे चलें; मन्दी प्रधान रहे। गुड़, खाण्ड, चावल, चना, गेहूं, जौ में तेज़ी रहे। ४, ९, १०, ११ मई को रुई, तेल, तिलहन, लालमिर्च, शेयरों; सोना, चान्दी, सभी अनाज, दालवाना में तेज़ी रहे । १४ मई को अनाज मन्दे; चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई बादाम, सुपारी, नारियल एवं तिलहन तेज़ रहें ।

आकाशलक्षणः- अप्रैल ३०, मई १, २, ४, ७, ९, १०,११, १२, १४ को मध्य-मुंबई, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं । जम्मू-काश्मीर एवं उ.भारत के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (१४ मई)

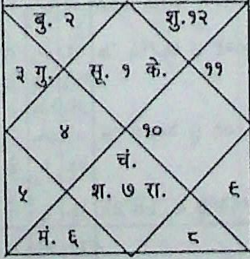

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	५	१	२	११	६	६	०
२९	१८	१५	१७	२२	१८	२५	३	३
४	४७	१२	३४	५९	२७	४२	९	९
३८	३८	१४	५५	५९	०	५७	४७	४७
५७	८२८	४	९७	१०	६९	४	३	३
५२	३०	२१	५६	२०	७	३०	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	स्वा. ४	हस्त २	रोहि. ३	पुन. १	रेव. १	विशा. २	चित्रा ३	अश्वि. १

श्री वि.सं. २०७१, शाक १९३६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१५ से २८ मई तक, सन् २०१४ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः शु. पूर्वक्षितिज के पास होगा । सायं बु. गु. पश्चिम में, मं. पूर्वकपाल में और श. पूर्व में होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	वैशाख	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५४	१	गु.	४३	९	विशा. अनु.	३ ५९	१ ४६	प.	४२	३६	बा.	१५	३६	२	१५	२५	१५	वृश्चिक			५	३२	१९	६	१	०	२	३१	गुरु पुन. २ में ५५/४०,
३३	५८	२	शु.	३७	२०	ज्येष्ठा	५५	४१	शि.	३५	१२	तै.	१०	१४	३	१६	२६	१६	धनु	५५	४१	५	३१	१९	६	१	१	०	२१	
३४	१	३	श.	३०	५६	मूल	५१	८	सि.	२७	१८	व.	४	८	४	१७	२७	१७	धनु			५	३१	१९	७	१	१	५८	१०	भ. ४/०८ से ३०/५६ तक, बुध मृग. में ४२/१०, (A)
३४	४	४	र.	२४	१६	पू.षा.	४६	२४	सा.	१९	१०	बा.	२४	१६	५	१८	२८	१८	धनु			५	३०	१९	८	१	२	५५	५८	
३४	७	५	चं.	१७	३५	उ.षा.	४१	४८	शु.	११	१	तै.	१७	३५	६	१९	२९	१९	मकर	०	१३	५	३०	१९	८	१	३	५३	४५	
३४	१०	६	मं.	११	११	श्रव.	२७	३४	शु. ब्र.	३ ५५	२ २८	व.	११	११	७	२०	३०	२०	मकर			५	२९	१९	९	१	४	५१	३०	भ. ११/११ से ३८/१३ तक, मंगल मार्गी ३/५०,
३४	१३	७	बु.	५	१६	धनि.	३३	५४	ऐं.	४८	२३	ब.	५	१६	८	२१	३१	२१	कुम्भ	५	४०	५	२९	१९	१०	१	५	४९	१४	पंचक प्रारम्भ ५/४०, सूर्य सायन मिथुन में ७/३०,
अवम		८	बु.	५९	५७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३४	१५	९	गु.	५५	२४	शत.	३०	५५	वै.	४१	५४	तै.	२७	४०	९	२२	ज्ये.१	२२	कुम्भ			५	२८	१९	१०	१	६	४६	५८	बुध मिथुन में ५२/२५, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१८	१०	शु.	५१	४०	पू.भा.	२८	४४	वि.	३६	५	व.	२३	३२	१०	२३	२	२३	मीन	१४	१३	५	२८	१९	११	१	७	४४	४०	भ. २३/३२ से ५१/४० तक, शुक्र अश्वि. मेष में ५८/५०,
३४	२१	११	श.	४८	४९	उ.भा.	२७	२४	प्री.	३०	५७	ब.	२०	१४	११	२४	३	२४	मीन			५	२७	१९	११	१	८	४२	२१	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
३४	२३	१२	र.	४६	५२	रेव.	२६	५७	आ.	२६	३३	कौ.	१७	५०	१२	२५	४	२५	मेष	२६	५७	५	२७	१९	१२	१	९	४०	१	पंचक समाप्त २६/५७, सूर्य रोहि. में २०/५५,
३४	२६	१३	चं.	४५	५१	अश्वि.	२७	२५	सौ.	२२	५३	ग.	१६	२१	१३	२६	५	२६	मेष			५	२६	१९	१३	१	१०	३७	४१	भ. ४५/५१ बाद, सोमप्रदोष व्रत,
३४	२८	१४	मं.	४५	५०	भर.	२८	५०	शो.	२०	०	वि.	१५	५०	१४	२७	६	२७	वृष	४४	२०	५	२६	१९	१३	१	११	३५	१९	भ. १५/५० तक,
३४	३०	३०	बु.	४६	५१	कृत्ति.	३१	१५	अ.	१७	५५	च.	१६	२०	१५	२८	७	२८	वृष			५	२६	१९	१४	१	१२	३२	५६	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा,

(A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२१ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	५	१	२	११	६	६	०
५	२८	१४	२७	२४	२६	२५	२	२
४९	४०	५८	४६	१४	३२	११	४७	४७
१४	१४	१७	५०	१०	२२	४५	३१	३१
५७	८४८	१	७२	१०	६९	७	३	३
४३	९	५	५३	५६	३८	२३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ३	धनि. २	हस्त २	मृग. २	पुन. २	रेव. ३	विशा. २	चित्रा ३	अश्वि. १

कुण्डली सूर्योदय (२१ मई)

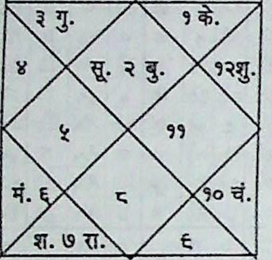

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं; पश्चिमी देशों (विशेषतः मुस्लिम राष्ट्रों) में युद्ध- विभीषिका बनेगी । कहीं उग्रवाद से जनधन हानि व विशिष्ट-व्यक्ति का पदरिक्त हो;- " विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं तदा भवेत् ।।" लेकिन इस मास में पांच शुक्रवार हैं एवं मंगल मार्गी होगा, जोकि भारत के शासन-तन्त्र को सुधारात्मक प्रक्रिया की ओर ले जाने वाले हैं ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १७ से २२ मई तक रुई, चान्दी, सोना, पीतल, गेहूं, दालवाना, तिलहन में घटाबढ़ी के बाद अच्छी मन्दी बने । २३ मई को दोपहर बाद सोना, चान्दी, घी, चीनी, दालवाना, गुड़, शक्कर में अच्छी घटाबढ़ी के बाद झटके की तेज़ी से २० मई के लगभग वायदा बाज़ार तेज़ होकर मन्दे हों । २५ मई को तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी, अनाज, मिर्च तेज़ रहें । चान्दी मन्दी हो ।

आकाशलक्षणः- मई १५, १७, २०, २२, २३ एवं २५ मई को महाराष्ट्र (मुम्बई), भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-काश्मीर, उ.प्र., हि. प्र. में वायुवेग के साथ बादल-वर्षा के योग हैं । उत्तर भारत में आंधी-तूफान के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२८ मई)

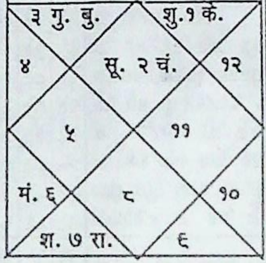

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२८ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	५	२	२	०	६	६	०
१२	३	१५	४	२५	४	२४	२	२
३२	२३	२१	५५	३२	४१	४१	२५	२५
५६	१६	३१	१६	२१	१०	४०	१६	१६
५७	७६२	६	४५	११	७०	४	३	३
३६	५९	१२	१	२७	५	९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. १	कृत्ति. ३	हस्त २	मृग. ४	पुन. २	अश्वि. २	विशा. २	चित्रा ३	अश्वि. १

श्री वि.सं. २०७१, शाक १९३६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२९ मई से १३ जून तक, सन् २०१४ ई.)

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

१० जून को बु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, सायं गु. पश्चिम में, मं. पूर्वकपाल में और श. पूर्व में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)			
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. रजब		घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३४	३३	१	गु.	४८	५७	रोहि.	३४	४४	सु.	१६	४०	किं.	१७	५४	१६	२९	८	२९	वृष			५	२५	१९	१४	१	१३	३०	३२
३४	३५	२	शु.	५२	१०	मृग.	३९	१८	धृ.	१६	१८	बा.	२०	३३	१७	३०	९	३०	मिथुन	६	५३	५	२५	१९	१५	१	१४	२८	७
३४	३७	३	श.	५६	२७	आर्द्रा	४४	५४	शू.	१६	४६	तै.	२४	१८	१८	३१	१०	शा.१	मिथुन			५	२५	१९	१६	१	१५	२५	४१
३४	३९	४	र.	६०	०	पुन.	५१	२५	गं.	१८	२	व.	२९	२	१९	जू.१	११	२	कर्क	३४	४४	५	२४	१९	१६	१	१६	२३	१३
३४	४१	४	चं.	१	३८	पुष्य	५८	३६	वृ.	१९	५७	वि.	१	३८	२०	२	१२	३	कर्क			५	२४	१९	१७	१	१७	२०	४४
३४	४३	५	मं.	७	२८	आश्ले.	६०	०	ध्रु.	२२	१६	बा.	७	२८	२१	३	१३	४	कर्क			५	२४	१९	१७	१	१८	१८	१४
३४	४४	६	बु.	१३	३१	आश्ले.	६	४	व्या.	२४	४०	तै.	१३	३१	२२	४	१४	५	सिंह	६	४	५	२४	१९	१८	१	१९	१५	४३
३४	४६	७	गु.	१९	१६	मघा	१३	१८	ह.	२६	४७	व.	१९	१६	२३	५	१५	६	सिंह			५	२४	१९	१८	१	२०	१३	१०
३४	४८	८	शु.	२४	११	पू.फा.	१९	४७	व.	२८	१३	ब.	२४	११	२४	६	१६	७	कन्या	३६	१५	५	२४	१९	१९	१	२१	१०	३७
३४	४९	९	श.	२७	४५	उ.फा.	२५	०	सि.	२८	३६	कौ.	२७	४५	२५	७	१७	८	कन्या			५	२३	१९	१९	१	२२	८	२
३४	५०	१०	र.	२९	३५	हस्त	२८	३२	व्य.	२७	३७	ग.	२९	३५	२६	८	१८	९	तुला	५९	३६	५	२३	१९	२०	१	२३	५	२६
३४	५२	११	चं.	२९	२८	चित्रा	३०	१०	व.	२५	७	वि.	२९	२८	२७	९	१९	१०	तुला			५	२३	१९	२०	१	२४	२	४९
३४	५३	१२	मं.	२७	२०	स्वाती	२९	४९	प.	२१	०	बा.	२७	२०	२८	१०	२०	११	तुला			५	२३	१९	२०	१	२५	०	११
३४	५४	१३	बु.	२३	१९	विशा.	२७	३८	शि.	१५	२१	तै.	२३	१९	२९	११	२१	१२	वृश्चिक	१३	२०	५	२३	१९	२१	१	२५	५७	३२
३४	५५	१४	गु.	१७	४१	अनु.	२३	५०	सि.	८	२०	व.	१७	४१	३०	१२	२२	१३	वृश्चिक			५	२३	१९	२१	१	२६	५४	५२
३४	५६	१५	शु.	१०	४५	ज्येष्ठा	१८	४६	सा. शु.	० ५१	१२ १५	ब.	१०	४५	३१	१३	२३	१४	धनु	१८	४६	५	२३	१९	२२	१	२७	५२	११

चन्द्रदर्शन, मु.३०, बुध आर्द्रा में ३१/३०,
रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती (राज). (A)
भ. २९/०२ बाद, बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (B)
भ. १/३८ तक, गुरु पुन. ३ में ४९/२५,

शुक्र भर. में २३/२७, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
भ. १९/१६ से ५१/४३ तक,

बुध वक्री ३०/०७,
भ. ५९/३१ बाद, सूर्य मृग. में १५/३२, श्रीगंगा (C)
भ. २९/२८ तक, नेप्च्यून वक्री ५०/०३, निर्जला (D)
बुध पश्चिम में अस्त १९ घं. २० मि., भौमप्रदोष व्रत,

भ. १७/४१ से ४४/१३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)

(A) शाबान मु. प्रारम्भ, (B) जून प्रारम्भ, (C) दशहरा (हस्तनक्षत्र १६ घं. ४८ मि. तक), (D) एकादशी व्रत (स.), (E) वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा में),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
६ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	५	२	२	०	६	६	०
२१	२२	१६	९	२७	१५	२४	१	१
१०	४३	४१	१	१७	१३	५	५६	५६
३७	४८	३६	१७	५३	४०	५३	३९	३९
५७	७३१	१२	४	१२	७०	३	३	३
२५	४०	६	३४	२	३२	४३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	पू.फा. ३	हस्त ३	आर्द्रा १	पुन. ३	भर. १	विशा. २	चित्रा ३	अश्वि. १

कुण्डली सूर्योदय (६ जून)

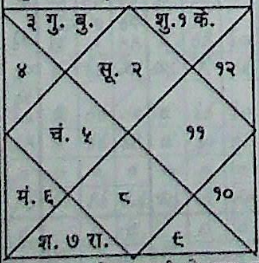

लोकभविष्य:- इस पक्ष में वक्री शनि-राहु का शुक्र-केतु के साथ समसप्तक-योग एवं मंगल-शुक्र का षडष्टक-योग चल रहा है; जो कि कहीं वायुवेग से भारी हानि करेगा । कहीं यान-दुर्घटना किंवा हिमाचल, उत्तराखण्ड, बिहार किंवा छत्तीसगढ़ में उग्रवाद से जनधनहानि का संकेत देता है। तृतीया को आर्द्रा नक्षत्र कहीं महादुर्भिक्ष करे-

> " ज्येष्ठ-शुक्ल-द्वितीयायां तृतीयायां प्रजायते ।
> नक्षत्रमार्द्रा तदा वृष्टिर्महादुर्भिक्ष-कारिणी ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- मई ३० एवम् जून १ से ७ तक चान्दी, रुई, सूत, सोना, तिलहन मन्दे एवं दालवाना में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने । ५ जून को वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें, अचानक लाईन बदल सकती है । ८/९ जून को बाज़ार तेज़ एवम् १०, ११ जून को रुई एवम् शेयर बाज़ार में अचानक अच्छी मन्दी आए ।

आकाशलक्षण:- मई ३०; जून १, ४, ५, ६, ८, ९, १०, ११ को उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. एवं कहीं उ.भा. के अन्य क्षेत्रों में भी वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (१३ जून)

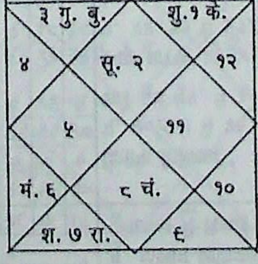

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	५	२	२	०	६	६	०
२७	२५	१८	८	२८	२३	२३	१	१
५२	२९	१८	१	४३	२८	४१	३४	३४
१०	०	१५	५०	१४	१९	८	२३	२३
५७	८८३	१६	२३	१२	७०	३	३	३
१९	५४	०	५९	२३	५२	१७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	ज्ये. ३	हस्त ३	आर्द्रा १	पुन. ३	भर. ४	विशा. २	चित्रा ३	अश्वि. १

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(१४ से २७ जून तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।

बु. अस्त है । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में होगा । सायं गु. पश्चिम-क्षितिजासन्न, मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और श. पूर्वकपाल में दिखाई देगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. शाबान	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५६	१	श.	२	५५	मूल	१२	५२	शु.	४१	४९	कौ.	२	५५	३२	१४	२४	१५	धनु			५	२३	१९	२२	१	२८	४९	३०	
अवम		२	श.	५४	३६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	५७	३	र.	४६	१२	पू.षा.	६	३४	ब्र.	३२	१४	व.	२०	२४	आ.१	१५	२५	१६	मकर	१९	५७	५	२३	१९	२२	१	२९	४६	४७	भ. २०/२४ से ४६/१२ तक, सं. सूर्य मिथुन में १४/०७,(A)
३४	५८	४	चं.	३८	८	उ.षा. श्रव.	० ५४	१७ २६	ऐं.	२२	५०	ब.	१२	१०	२	१६	२६	१७	मकर			५	२४	१९	२३	२	०	४४	५	वक्री बुध मृग. में ३/००, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५८	५	मं.	३०	४४	धनि.	४९	२०	वै.	१३	५५	कौ.	४	२६	३	१७	२७	१८	कुम्भ	२१	४५	५	२४	१९	२३	२	१	४१	२२	पंचक प्रारम्भ २१/४५,
३४	५८	६	बु.	२४	१७	शत.	४५	१८	वि. प्री.	५ ५८	४४ २८	व.	२४	१७	४	१८	२८	१९	कुम्भ			५	२४	१९	२३	२	२	३८	३८	भ. २४/१७ से ५१/३८ तक, शुक्र वृष में ३१/२५,
३४	५९	७	गु.	१९	०	पू.भा.	४२	२९	आ.	५२	१३	ब.	१९	०	५	१९	२९	२०	मीन	२८	४	५	२४	१९	२३	२	३	३५	५४	गुरु पुन. ४ कर्क में ८/२७, वक्री शनि विशा. १ में ५३/४२,
३४	५९	८	शु.	१५	१	उ.भा.	४०	५९	सौ.	४७	४	कौ.	१५	१	६	२०	३०	२१	मीन			५	२४	१९	२४	२	४	३३	१०	
३४	५९	९	श.	१२	२२	रेव.	४०	४८	शो.	४२	५८	ग.	१२	२२	७	२१	३१	२२	मेष	४०	४८	५	२४	१९	२४	२	५	३०	२६	भ. ४१/४१ बाद, पंचक समाप्त ४०/४८, सूर्य सायन (B)
३४	५९	१०	र.	११	१	अश्वि.	४१	५२	अ.	३९	५३	वि.	११	१	८	२२	आ.१	२३	मेष			५	२५	१९	२४	२	६	२७	४२	भ. ११/०१ तक, सूर्य आर्द्रा में १३/०५, शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५९	११	चं.	१०	५३	भर.	४४	४	सु.	३७	४४	बा.	१०	५३	९	२३	२	२४	वृष	५९	४७	५	२५	१९	२४	२	७	२४	५८	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५९	१२	मं.	११	५२	कृत्ति.	४७	१७	धृ.	३६	२४	तै.	११	५२	१०	२४	३	२५	वृष			५	२५	१९	२४	२	८	२२	१३	भौमप्रदोष व्रत,
३४	५८	१३	बु.	१३	५०	रोहि.	५१	२७	शू.	३५	५१	व.	१३	५०	११	२५	४	२६	वृष			५	२५	१९	२५	२	९	१९	२८	भ. १३/५० से ४५/१७ तक,
३४	५८	१४	गु.	१६	४४	मृग.	५६	२८	गं.	३५	५९	श.	१६	४४	१२	२६	५	२७	मिथुन	२३	५१	५	२६	१९	२५	२	१०	१६	४३	शुक्र रोहि. में ५६/२२,
३४	५७	३०	शु.	२०	३१	आर्द्रा	६०	०	वृ.	३६	४७	ना.	२०	३१	१३	२७	६	२८	मिथुन			५	२६	१९	२५	२	११	१३	५८	

(A) मु. ४५, पुण्यकाल ३०/०८ तक, शुक्र कृत्ति. में ४२/३०, (B) कर्क में २७/२२, वर्षाऋतु एवम् दक्षिणायन प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	५	२	३	१	६	६	०
४	७	२०	४	०	१	२३	१	१
३३	२४	२०	२८	१०	४५	१६	१२	१२
१०	५१	४०	३६	५५	१६	४२	८	८
५७	८१४	१६	३४	१२	७१	२	३	३
१६	३५	२३	८	४२	११	४६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ४	उ.भा. २	हस्त ४	मृग. ४	पुन. ४	कृत्ति. २	विशा. १	चित्रा ३	अश्वि. १

कुण्डली सूर्योदय (२० जून)

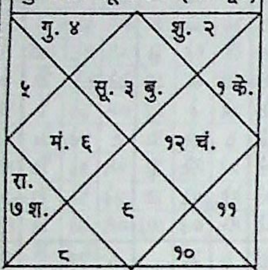

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं । प्राकृतिक-प्रकोप (भूकम्प, समुद्री तूफान, अतिवर्षण आदि) किवां किसी प्रान्त विशेष में उग्रवादजन्य हिंसा अथवा अग्निकाण्ड से ईशानकोण में जनधन हानि के योग हैं । सूर्य का दिन में आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कहीं भयंकर दुर्भिक्ष का भी संकेत देता है;-" दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जलभक्षण- कारकः ।" इस पक्ष में भारतीय राजनीति में विशेष परिवर्तन-संवर्धन होंगे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १५ जून को वारदाना, रेशम, सूत, सण, कपास, रुई, सरसों, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, दालवाना, चावल, सोना, चान्दी तेज़ रहें । १६ से १८ जून तक बाज़ारों में उठापटक के साथ मन्दी रहे । १६ से २२ जून तक रुई में ज़ोरदार तेज़ी की लाईन बनेगी । गुड़, खाण्ड, घी तेज़ रहें । अनाजों का संग्रह पहले ही करें, उत्तम लाभ होगा । २२ जून को बाज़ार नीचे जाएं ।

आकाशलक्षणः- १५ से २७ जून तक पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., उ.प्र., बिहार, उत्तराखण्ड, दिल्ली, चण्डीगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं । आकाशी बिजली से कहीं हानि का भी योग है ।

कुण्डली सूर्योदय (२७ जून)

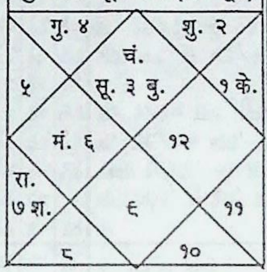

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२७ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	५	२	३	१	६	६	०
११	७	२२	१	१	१०	२३	०	०
१३	२५	४५	५	४०	४	२	४६	४६
५८	२१	४३	२४	३५	३२	२	५२	५२
५७	७२८	२२	१७	१२	७१	२	३	३
१४	५८	२५	४१	५७	२६	११	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा २	आर्द्रा १	हस्त ४	मृग. ३	पुन. ४	रोहि. १	विशा. १	चित्रा ३	अश्वि. १

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(२८ जून से १२ जुलाई तक, सन् २०१४ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

२९ जून को बु. पूर्व में उदित तथा ११ जुलाई को गु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में होगा । सायं मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और श. पूर्वकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															आषाढ़	जून	आषाढ़	शाबान												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५७	१	श.	२५	५	आर्द्रा	२	१८	घ्रु.	३८	११	ब.	२५	५	१४	२८	७	२९	कर्क	५२	९	५	२६	१९	२५	२	१२	११	१३	मंगल चित्रा में ३१/३०,
३४	५६	२	र.	३०	२२	पुन.	८	५०	व्या.	४०	७	कौ.	३०	२२	१५	२९	८	३०	कर्क			५	२७	१९	२५	२	१३	८	२७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पूर्व में उदित ५ घं. २७ मि., (A)
३४	५५	३	चं.	३६	१२	पुष्य	१५	५८	ह.	४२	२६	तै.	३	१७	१६	३०	९	र.१	कर्क			५	२७	१९	२५	२	१४	५	४१	रमज़ान मु. प्रारम्भ,
३४	५४	४	मं.	४२	२०	आश्ले.	२३	२९	व.	४४	५८	व.	९	१६	१७	जु.१	१०	२	सिंह	२३	२९	५	२७	१९	२५	२	१५	२	५५	भ. ९/१६ से ४२/२० तक, बुध मार्गी ३२/१०, जुलाई प्रा.,
३४	५३	५	बु.	४८	२३	मघा	३१	१	सि.	४७	२५	ब.	१५	२१	१८	२	११	३	सिंह			५	२८	१९	२५	२	१६	०	८	
३४	५२	६	गु.	५३	५३	पू.फा.	३८	९	व्य.	४९	२७	कौ.	२१	८	१९	३	१२	४	कन्या	५४	५०	५	२८	१९	२५	२	१६	५७	२१	कुमार षष्ठी,
३४	५१	७	शु.	५८	१९	उ.फा.	४४	२४	व.	५०	४३	ग.	२६	६	२०	४	१३	५	कन्या			५	२९	१९	२५	२	१७	५४	३४	भ. ५८/१९ बाद, गुरु पुष्य १ में ३७/३५, विवस्वत् सप्तमी,
३४	४९	८	श.	६०	०	हस्त	४९	१४	प.	५०	५०	वि.	२९	४६	२१	५	१४	६	कन्या			५	२९	१९	२५	२	१८	५१	४६	भ. २९/४६ तक,
३४	४८	८	र.	१	१३	चित्रा	५२	१८	शि.	४९	२९	ब.	१	१३	२२	६	१५	७	तुला	२१	१	५	२९	१९	२५	२	१९	४८	५८	सूर्य पुन. में ११/३७,
३४	४७	९	चं.	२	१४	स्वाती	५३	१९	सि.	४६	३१	कौ.	२	१४	२३	७	१६	८	तुला			५	३०	१९	२४	२	२०	४६	१०	वक्री नेप्च्यून शत. २ में ३३/०२,
३४	४५	१०	मं.	१	८	विशा.	५२	१३	सा.	४१	४९	ग.	१	८	२४	८	१७	९	वृश्चिक	३७	४१	५	३०	१९	२४	२	२१	४३	२२	भ. २९/३१ से ५७/५४ तक, शुक्र मृग. में ५/५५, गुरु (B)
अवम		११	मं.	५७	५४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३४	४३	१२	बु.	५२	४१	अनु.	४९	८	शु.	३५	२८	ब.	२५	१७	२५	९	१८	१०	वृश्चिक			५	३१	१९	२४	२	२२	४०	३४	हरिशयनी एकादशी व्रत (वैष्णव),
३४	४१	१३	गु.	४५	४७	ज्येष्ठा	४४	१९	शु.	२७	३८	कौ.	१९	१४	२६	१०	१९	११	धनु	४४	१९	५	३१	१९	२४	२	२३	३७	४५	प्रदोष व्रत,
३४	४०	१४	शु.	३७	३३	मूल	३८	१०	ब्र.	१८	३५	ग.	११	४०	२७	११	२०	१२	धनु			५	३२	१९	२४	२	२४	३४	५७	भ. ३७/३३ बाद, गुरु अस्त १९ घं. २४ मि., कोकिला (C)
३४	३८	१५	श.	२८	२६	पू.षा.	३१	६	ऐं. वै.	८ ५८	३८ १३	वि.	२	५९	२८	१२	२१	१३	मकर	४४	१४	५	३२	१९	२३	२	२५	३२	८	भ. २/५९ तक, राहु चित्रा २ कन्या, केतु रेव. ४ मीन (D)

गुरु अस्त
११ जुलाई

(A) रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव)पुरी (पुष्यनक्षत्र ८ घं. ५९ मि. बाद), (B)वार्धक्य प्रारम्भ १९ घं. २४ मि., हरिशयनी एकादशी व्रत (स्मा.), श्रीविष्णु शयनोत्सव, (C) व्रत (प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में), श्रीशिवशयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 13), (D) में ४०/४७, गुरुपूर्णिमा (व्यास-पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
६ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ १९ ४८ ५८	५ २५ ३५ १३	५ २६ २१ १८	२ १ ८ ८	३ ३ ३८ ४	१ २० ४६ १५	६ २२ ४५ ३३	६ ० २१ १५	० ० २१ १५
५७ १२	७६४ २६	२५ ४६	२४ ३८	१३ १०	७१ ४६	१ २३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	चित्रा १	चित्रा १	मृग. ३	पुष्य १	रोहि. ४	विशा. १	चित्रा ३	अश्वि. १

कुण्डली सूर्योदय (६ जुलाई)

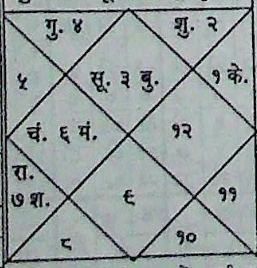

लोकभविष्य :- अमावस एवं प्रतिपदा शनिवारी है । बुध का पूर्व में उदय भी कहीं उत्पात वायुवेग से हानि एवं दुर्घटना का संकेत देता है;- " नोत्पात परित्यक्तश्चंद्रजो ब्रजत्युदयम् ।" ११ जुलाई को गुरु का अस्त शासकों के लिए भयावह है;- " कर्केऽस्ततो नृपभयम् "।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २८ से ३० जून तक गेहूं, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, घी, लालमिर्च तेज़ । १ से ७ जुलाई तक तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, ज्वार, बाजरा, मोठ, उड़द, चावल, नमक, केसर, मजीठ, गुग्गुल आदि तेज़ रहें । ११ जुलाई को रुई, शेयर तेज़ हों । १२ जुलाई को रुई, तिलहन में अच्छी मन्दी; चावल, कपूर, चन्दन आदि तेज़ रहें ।

आकाशलक्षण:- जून २८, २९, ३० एवम् जुलाई १, ६, ११, १२ को हि. प्र., जम्मू-काश्मीर एवम् भारत के दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों में अनेकत्र बादलचाल व वर्षा के योग हैं । ग्रहचाल के अनुसार आगे कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त रहें ।

कुण्डली सूर्योदय(१२ जुला.)

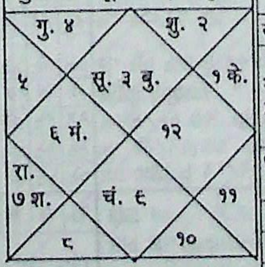

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१२ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २५ ३२ ८	८ १८ ४७ २६	५ २६ ० ४२	२ ४ ५० ४२	३ ४ ५७ १६	१ २८ ० ४६	६ २२ ३८ ४२	६ ० २ १०	० ० २ १०
५७ १२	९१० ३०	२७ ३६	५४ १५	१३ १६	७२ ४	० ४८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पू.षा. २	चित्रा २	मृग. ४	पुष्य १	मृग. २	विशा. १	चित्रा ३	अश्वि. १

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, श्रावण कृष्ण पक्ष ८															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१३ से २६ जुलाई तक, सन् २०१४ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. रमज़ान				सूर्योदय		सूर्यास्त						गु. अस्त है । प्रातः बु. शु. पूर्वक्षितिज में दीखेंगे । सायं श. याम्योत्तर-वृत्तासन्न और मं. इससे पश्चिम की ओर होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३६	१	र.	१८	५३	उ.षा.	२३	३९	वि.	४७	३८	कौ.	१८	५३	२९	१३	२२	१४	मकर			५	३३	१९	२३	२	२६	२९	२०	बुध आर्द्रा में ५५/५०, शुक्र मिथुन में ३९/०७, (A)
३४	३४	२	चं.	९	२२	श्रव.	१६	१६	प्री.	३७	१८	ग.	९	२२	३०	१४	२३	१५	कुम्भ	४२	४४	५	३३	१९	२३	२	२७	२६	३२	भ. ३५/५२ बाद, पंचक प्रारम्भ ४२/४४, मंगल तुला में (B)
३४	३१	३	मं.	२	२२	धनि.	९	२६	आ.	२७	३४	वि.	२	२२	३१	१५	२४	१६	कुम्भ			५	३४	१९	२२	२	२८	२३	४४	भ. २/२२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
अवम		४	मं.	५२	१४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	२९	५	बु.	४५	२१	शत. पू.भा.	३ ५९	३६ ३	सौ.	१८	४५	कौ.	१८	४७	श्रा.१	१६	२५	१७	मीन	४५	३	५	३४	१९	२२	२	२९	२०	५७	सं. सूर्य कर्क में ४०/४७, मु. ३०, पुण्यकाल १०/४६ (C)
३४	२७	६	गु.	३९	५९	उ.भा.	५६	५	शो.	११	६	ग.	१२	४०	२	१७	२६	१८	मीन			५	३५	१९	२२	३	०	१८	११	भ. ३९/५९ बाद,
३४	२४	७	शु.	३६	१७	रेव.	५४	४९	अ. सु.	४ ५९	४७ ५०	वि.	८	८	३	१८	२७	१९	मेष	५४	४९	५	३६	१९	२१	३	१	१५	२५	भ. ८/०८ तक, पंचक समाप्त ५४/४९,
३४	२२	८	श.	३४	१९	अश्वि.	५५	१४	धृ.	५६	१५	बा.	५	१८	४	१९	२८	२०	मेष			५	३६	१९	२१	३	२	१२	३९	गुरु पुष्य २ में ४३/०५, शुक्र आर्द्रा में ११/१७,
३४	१९	९	र.	३४	०	भर.	५७	१४	शू.	५३	५८	तै.	४	९	५	२०	२९	२१	मेष			५	३७	१९	२०	३	३	९	५५	सूर्य पुष्य में १०/१७, शनि मार्गी ५१/१५,
३४	१६	१०	चं.	३५	१२	कृत्ति.	६०	०	गं.	५२	४८	व.	४	३६	६	२१	३०	२२	वृष	१२	५७	५	३७	१९	२०	३	४	७	११	भ. ४/३६ से ३५/१२ तक,
३४	१४	११	मं.	३७	४१	कृत्ति.	०	३८	वृ.	५२	३६	ब.	६	२६	७	२२	३१	२३	वृष			५	३८	१९	१९	३	५	४	२८	यूरेनस वक्री ६/५५, सूर्य सायन सिंह में ५३/५२, (D)
३४	११	१२	बु.	४१	१४	रोहि.	५	११	ध्रु.	५३	११	कौ	९	२७	८	२३	श्रा.१	२४	मिथुन	३७	५१	५	३९	१९	१९	३	६	१	४६	बुध पुन. में ३५/५७, शक श्रावण प्रारम्भ,
३४	८	१३	गु.	४५	३८	मृग.	१०	४१	व्या.	५४	२३	ग.	१३	२६	९	२४	२	२५	मिथुन			५	३९	१९	१८	३	६	५९	५	भ. ४५/३८ बाद, प्रदोष व्रत,
३४	५	१४	शु.	५०	४३	आर्द्रा	१६	५५	ह.	५६	५	वि.	१८	१०	१०	२५	३	२६	मिथुन			५	४०	१९	१८	३	७	५६	२४	भ. १८/१० तक, श्रावण शिवरात्रि,
३४	२	३०	श.	५६	१८	पुन.	२३	४३	व.	५८	१०	च.	२३	३०	११	२६	४	२७	कर्क	६	५८	५	४०	१९	१७	३	८	५३	४४	हरियाली अमा, शनैश्चरी अमा,

(A) अशून्यशयन व्रत, (B) ७/४५, (C) बाद और अगले दिन मध्याह्न तक, (D) कामिका एकादशी व्रत(स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ जुला.,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	६	२	३	२	६	५	११
२	१	२	१२	६	६	२२	२९	२९
१२	६	२०	४८	३०	२६	३५	३९	३९
३९	२२	१९	३२	२२	६	३	५५	५५
५७	७९२	२९	८६	१३	७२	०	३	३
१६	२७	३८	१४	२०	२१	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	अश्वि. १	चित्रा ३	आर्द्रा २	पुष्य १	मृग. ४	विशा. १	चित्रा २	रेव. ४

कुण्डली सूर्योदय(१९ जुला.)

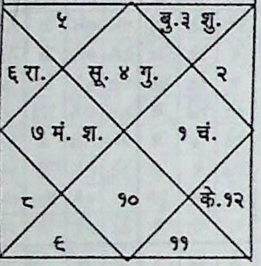

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं एवं शनि-मंगल तुलास्थ हैं । बुध-शुक्र आर्द्रा में हैं । अतः इस मास में भयंकर वर्षा से अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि हो । बाढ़ से भी अनेकत्र जनधन-हानि संभव है । कर्क के गुरु पर शनि की दृष्टि होने से प्राकृतिक-प्रकोप से हानि संभव है;- "**कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरजं भयम् ।**"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- तुला में मंगल-शनि का संयोग होने से सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों में अच्छी तेज़ी बनेगी । यह तेज़ी उत्तम-मध्यम रूप से १८ जुलाई तक चलेगी । १९ जुलाई को मन्दे का झटका आकर २० से २२ जुलाई तक तेज़ी का झटका आएगा ।

आकाशलक्षण:- जुलाई १३ से १७ एवं १८, १९, २० एवं २२ जुलाई को उत्तरी भारत, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तरा-खण्ड, आसाम, हि.प्र., उ.प्र. एवं केन्द्रशासित राज्यों में अच्छी वर्षा के योग हैं । कुछ प्रान्तों में बाढ़ से हानि हो या कई प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बने ।

कुण्डली सूर्योदय(२६ जुलाई)

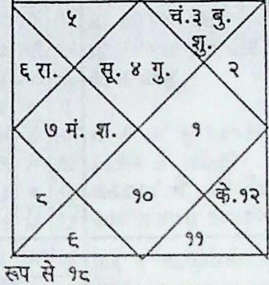

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ जुलाई,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	६	२	३	२	६	५	११
८	२८	५	२४	८	१४	२२	२९	२९
५३	३१	५३	१५	३	५३	३६	१७	१७
४४	३०	१२	२	४४	३०	९	३९	३९
५७	७१५	३१	११२	१३	७२	०	३	३
२१	२२	२६	४	२०	३९	३३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य. २	पुन. ३	चित्रा ४	पुन. २	पुष्य २	आर्द्रा ३	विशा. १	चित्रा २	रेव. ४

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, श्रावण शुक्ल पक्ष ६

(२७ जुलाई से १० अगस्त तक, सन् २०१४ ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

पक्षारम्भ में ही बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा । ४ अग. के बाद गु. प्रातः पूर्व में दिखाई देना शुरु हो जाएगा । शु. पूर्ववत् प्रातः पूर्वक्षितिज में होगा । सायं श. मं. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटे होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. श्रावण	तारीखें मु. रमज़ान	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५९	१	र.	६०	०	पुष्य	३०	५७	सि.	६०	०	किं.	२९	१६	१२	२७	५	२८	कर्क			५	४१	१९	१७	३	९	५१	५	मंगल स्वाती में २८/४२, बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ४१ मि.,
३३	५६	१	चं.	२	१५	आश्ले.	३८	२७	सि.	०	३१	ब.	२	१५	१३	२८	६	२९	सिंह	३८	२७	५	४२	१९	१६	३	१०	४८	२६	चन्द्रदर्शन, मु. १५, बुध कर्क में ५९/५२,
३३	५३	२	मं.	८	२१	मघा	४५	५९	व्य.	३	१	कौ.	८	२१	१४	२९	७	श.१	सिंह			५	४२	१९	१५	३	११	४५	४८	शव्वाल मु. प्रारम्भ,
३३	४९	३	बु.	१४	२६	पू.फा.	५३	१९	व.	५	२७	ग.	१४	२६	१५	३०	८	२	सिंह			५	४३	१९	१५	३	१२	४३	११	भ. ४७/१७ बाद, बुध पुष्य में ३९/४३, शुक्र पुन. में (A)
३३	४६	४	गु.	२०	८	उ.फा.	६०	०	प.	७	४१	वि.	२०	८	१६	३१	९	३	कन्या	१०	४	५	४३	१९	१४	३	१३	४०	३४	भ. २०/०८ तक,
३३	४३	५	शु.	२५	४	उ.फा.	०	४	शि.	९	२२	बा.	२५	४	१७	अ.१	१०	४	कन्या			५	४४	१९	१३	३	१४	३७	५८	नागपञ्चमी, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३९	६	श.	२८	५०	हस्त	५	४९	सि.	१०	१४	तै.	२८	५०	१८	२	११	५	तुला	३८	१५	५	४५	१९	१२	३	१५	३५	२३	श्री कल्कि जयन्ती,
३३	३६	७	र.	३१	१	चित्रा	१०	१२	सा.	९	५८	व.	३१	१	१९	३	१२	६	तुला			५	४५	१९	१२	३	१६	३२	४८	भ. ३१/०१ बाद, सूर्य आश्ले. में ६/५२, गुरु पुष्य ३ (B)
३३	३२	८	चं.	३१	१८	स्वाती	१२	४९	शु.	८	१७	वि.	१	९	२०	४	१३	७	वृश्चिक	५८	३२	५	४६	१९	११	३	१७	३०	१४	भ. १/०९ तक, गुरु उदित ५ घं. ४६ मि., श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	२९	९	मं.	२९	३३	विशा.	१३	२८	शु.	५	१	बा.	०	२५	२१	५	१४	८	वृश्चिक			५	४६	१९	१०	३	१८	२७	४०	
३३	२५	१०	बु.	२५	४३	अनु.	१२	४	ब्र. ऐं.	० ५३	६ ३२	ग.	२५	४३	२२	६	१५	९	वृश्चिक			५	४७	१९	९	३	१९	२५	७	भ. ५२/५१ बाद, बुध आश्ले. में ५/५५,
३३	२२	११	गु.	१९	५९	ज्येष्ठा	८	४२	वै.	४५	२९	वि.	१९	५९	२३	७	१६	१०	धनु	८	४२	५	४८	१९	८	३	२०	२२	३५	भ. १९/५९ तक, शुक्र कर्क में २५/४२, गुरुबाल्य (C)
३३	१८	१२	शु.	१२	३६	मूल पू.षा.	३ ५७	३८ १२	वि.	३६	१२	बा.	१२	३६	२४	८	१७	११	धनु			५	४८	१९	७	३	२१	२०	४	प्रदोष व्रत,
३३	१४	१३	श.	३	५८	उ.षा.	४९	५१	प्री.	२६	१	तै.	३	५८	२५	९	१८	१२	मकर	१०	२३	५	४९	१९	७	३	२२	१७	३४	भ. ५४/२८ बाद,
अवम		१४	श.	५४	२८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३	१०	१५	र.	४४	३४	श्रव.	४२	३	आ.	१५	१७	वि.	१९	३१	२६	१०	१९	१३	मकर			५	४९	१९	६	३	२३	१५	४	भ. १९/३१ तक, शुक्र पुष्य में ९/४३, रक्षाबन्धन (D)

गुरु उदित
४ अगस्त

(A) १२/२२, मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज), (B) में ४३/१७, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (C) समाप्त ५ घं. ४६ मि., पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (D) (राखी)(देखें पृ. 14), श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रावणी पूर्णिमा, श्रीअमरनाथ यात्रा (काश्मीर), शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, ऋक् उपाकर्म,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
४ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १७ ३० १४	६ १७ ५ ४०	६ १० ४४ २४	३ १२ १६ ०	३ १० ३ ३३	२ २५ ४८ ४२	६ २२ ४४ ३८	५ २८ ४९ २	११ २८ ४९ १
५७ २७	७८५ १०	३३ २८	१२५ ११	१३ १६	७२ ५९	१ २५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	स्वा. ४	स्वा. २	पुष्य ३	पुष्य ३	पुन. २	विशा. १	चित्रा २	रेव. ४

कुण्डली सूर्योदय (४ अग.)

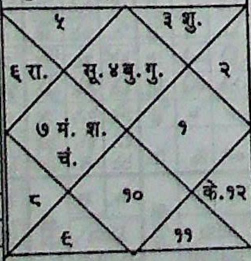

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-मंगल का एकत्र होना कहीं युद्ध-विभीषिका का वातावरण बनाए;- " युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ ।" श्रावण मास में गुरु का उदय एवं बुध-शुक्र का एकत्र होना भी विशेष वर्षा-बाढ़ का संकेत देता है;- " आरोग्यं श्रावणे वर्षाबाहुल्यं सुखिनो जनाः ।" श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का क्षय होने से कार्तिक मास में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से ३० जुलाई तक रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे । गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, कपास, सूत, मन्दे रहें । ३ से ७ अग. तक तिलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, मिर्च, सोना, चान्दी, दालवाना तेज़ हों । मासान्त में बाज़ार मन्दे रहें ।

आकाशलक्षणः- जुलाई २७, २९, ३० एवं अगस्त ३, ४, ५, ६ एवं १० अग. के लगभग कहीं भारी वर्षा से बाढ़, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी । हि.प्र., उ.प्र., जम्मू-काश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि में वर्षा के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (१० अग.)

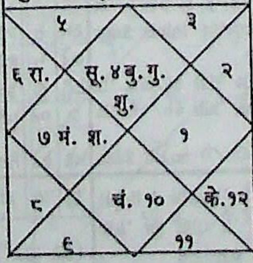

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१० अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २३ १५ ४	९ १२ २३ ८	६ १४ ८ ६	३ २४ ४० ५७	३ ११ २२ ५३	३ ३ ७ ११	६ २२ ५४ ३६	५ २८ २९ ५८	११ २८ २९ ५८
५७ ३२	९१९ २३	३४ ३९	१२१ २६	१३ १०	७३ १३	२ ०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	श्रव. १	स्वा. ३	आश्ले. ३	पुष्य ३	पुन. ४	विशा. १	चित्रा २	रेव. ४

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(११ से २५ अगस्त तक, सन् २०१४ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद् ऋतु। २२ अग. को बु. पश्चिम में उदित होगा । १९ अग. की प्रातः गु. शु. को क्षितिज में परमासन्न देखा जा सकेगा । सायं श. मं. पश्चिम कपाल में होंगे ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शव्वाल				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	७	१	चं.	३४	४६	धनि.	३४	१९	सौ. शो.	४ ५३	२२ ४३	बा.	९	४०	२७	११	२०	१४	कुम्भ	८	७	५	५०	१९	५	३	२४	१२	३५	पंचक प्रारम्भ ८/०७,
३३	३	२	मं.	२५	३०	शत.	२७	८	अ.	४३	३८	तै.	०	८	२८	१२	२१	१५	कुम्भ			५	५१	१९	४	३	२५	१०	८	भ. ५१/२१ बाद, बुध मघा सिंह में ३८/०७,
३२	५९	३	बु.	१७	१२	पू.भा.	२०	५६	सु.	३४	२९	वि.	१७	१२	२९	१३	२२	१६	मीन	७	२२	५	५१	१९	३	३	२६	७	४२	भ. १७/१२ तक, श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी व्रत (A)
३२	५५	४	गु.	१०	१६	उ.भा.	१६	८	धृ.	२६	३३	बा.	१०	१६	३०	१४	२३	१७	मीन			५	५२	१९	२	३	२७	५	१७	
३२	५१	५	शु.	४	५९	रेव.	१३	१	शू.	२०	२	तै.	४	५९	३१	१५	२४	१८	मेष	१३	१	५	५३	१९	१	३	२८	२	५३	पंचक समाप्त १३/०१, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४७	६	श.	१	३५	अश्वि.	११	४६	गं.	१५	४	व.	१	३५	३२	१६	२५	१९	मेष			५	५३	१९	०	३	२९	०	३१	भ. १/३५ से ३०/५१ तक,
३२	४३	७	र.	०	७	भर.	१२	२६	वृ.	११	३८	ब.	०	७	भा.१	१७	२६	२०	वृष	२७	५५	५	५४	१८	५९	३	२९	५८	११	सं. सूर्य मघा सिंह में ०/५२, मु. १५, पुण्यकाल १६/५२ (B)
३२	३९	८	चं.	०	३१	कृत्ति.	१४	५५	ध्रु.	९	४१	कौ.	०	३१	२	१८	२७	२१	वृष			५	५४	१८	५८	४	०	५५	५२	गुरु पुष्य ४ में ५६/४२, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.)(C)
३२	३५	९	मं.	२	३८	रोहि.	१९	०	व्या.	९	२	ग.	२	३८	३	१९	२८	२२	मिथुन	५१	३५	५	५५	१८	५७	४	१	५३	३५	भ. ३४/२३ बाद, मंगल विशा. में ५४/२८, बुध पू.फा. (D)
३२	३०	१०	बु.	६	९	मृग.	२४	२४	ह.	९	२८	वि.	६	९	४	२०	२९	२३	मिथुन			५	५६	१८	५६	४	२	५१	१९	भ. ६/९ तक, शनि विशा. २ में २७/३७,
३२	२६	११	गु.	१०	४९	आर्द्रा	३०	४६	व.	१०	४४	बा.	१०	४९	५	२१	३०	२४	मिथुन			५	५६	१८	५५	४	३	४९	५	शुक्र आश्ले. में ३/१०, अजा एकादशी व्रत (स.),
३२	२२	१२	शु.	१६	१५	पुन.	३७	४७	सि.	१२	३५	तै.	१६	१५	६	२२	३१	२५	कर्क	२०	५९	५	५७	१८	५४	४	४	४६	५३	बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ५४ मि., प्रदोष व्रत, (E)
३२	१८	१३	श.	२२	८	पुष्य	४५	९	व्य.	१४	४७	व.	२२	८	७	२३	भा.१	२६	कर्क			५	५७	१८	५२	४	५	४४	४२	भ. २२/०८ से ५५/११ तक, सूर्य सायन कन्या में (F)
३२	१४	१४	र.	२८	१५	आश्ले.	५२	३९	व.	१७	१०	श.	२८	१५	८	२४	२	२७	सिंह	५२	३९	५	५८	१८	५१	४	६	४२	३३	
३२	९	३०	चं.	३४	२०	मघा	६०	०	प.	१९	३४	च.	१	१७	९	२५	३	२८	सिंह			५	५८	१८	५०	४	७	४०	२५	कुशोत्पाटिनी अमा. पिठोरी अमा, सोमवती अमा.

(A) (चन्द्रोदय-देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, (B) तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (समार्त) (चन्द्रोदय - देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत(देखें पृ. 14), (C) (चन्द्रोदय - देखें पृ. 11), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (D) में ३८/४०, श्रीगुग्गानवमी, (E) पर्युषण पर्व (जैन), (F) १०/४७, शरद्ऋतु प्रारम्भ, शक भाद्रपद प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	६	४	३	३	६	५	११
०	६	१८	१०	१३	१२	२३	२८	२८
५५	३८	५०	१६	७	५४	१३	४	४
५२	८	२३	४७	३२	२	६	३२	३२
५७	७५२	३६	११०	१२	७३	२	३	३
४३	४०	५	४६	५८	३३	४३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	कृत्ति. ३	स्वा. ४	मघा ४	पुष्य ३	पुष्य ३	विशा. १	चित्रा २	रेव. ४

कुण्डली सूर्योदय (१८ अग.)

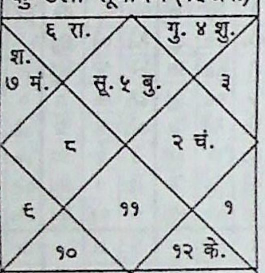

लोकभविष्यः- पक्षमध्य में शनि-मंगल विशाखा नक्षत्र एवं एक राशि में ही हैं । कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने । कहीं यान-दुर्घटना में जनधनहानि हो । किसी महानगर-विशेष में इसमास में उग्रवाद-जन्य जन-धनहानि से शासन चिन्तित रहे । गुरु-शुक्र एकराशिस्थ होने से कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि संभव है;-

> " गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १२ से १९ अगस्त तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, चान्दी, सोना, रुई, सूत, ऊन, ज्वार, चना, चावल, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, मिर्च तेज़ हों । २० अगस्त से पक्षान्त तक शेयर, अनाज, तूअर, चावल आदि में मन्दे का रुख रहे ।

आकाश लक्षणः- गुरु-शुक्र एवं शनि-मंगल एकराशिस्थ होने से अगस्त १२, १७, १९ से २२ अगस्त तक पंजाब, चण्डीगढ़, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र आदि में बादल चाल, कहीं वर्षा, कहीं वायुवेग रहे । कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति के भी योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२५ अग.)

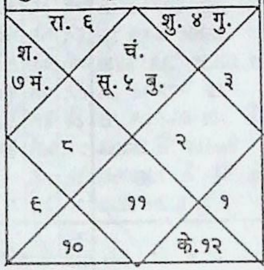

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	६	४	३	३	६	५	११
७	१	२३	२२	१४	२१	२३	२७	२७
४०	१३	६	४२	३७	२६	३३	४२	४२
२५	२५	३३	५८	३७	३८	५६	१७	१७
५७	७१२	३७	१०१	१२	७३	३	३	३
५४	०	१५	६	४३	४६	२०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	मघा १	विशा. १	पू.फा. ३	पुष्य ४	आश्ले. २	विशा. २	चित्रा २	रेव. ४

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(२६ अगस्त से ९ सितंबर तक, सन् २०१४ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद ऋतु।

प्रातः शु. पूर्व-क्षितिजासन्न और गु. कुछ ऊपर उठा होगा। सायं बु. पश्चिम-क्षितिजासन्न और श. मं. पश्चिम-कपाल में होंगे।

तारीखें · चन्द्रराशि - प्रवेशकाल · चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) · स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५	१	मं.	४०	१२	मघा	०	१	शि.	२१	५०	किं.	७	१६	१०	२६	४	२९	सिंह			५	५९	१८	४९	४	८	३८	१८	
३२	१	२	बु.	४५	३८	पू.फा.	७	७	सि.	२३	४८	बा.	१२	५५	११	२७	५	३०	कन्या	२३	५१	६	०	१८	४८	४	९	३६	१४	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध उ.फा. में २०/४७, मेला (A)
३१	५६	३	गु.	५०	२४	उ.फा.	१३	४३	सा.	२५	१९	तै.	१८	१	१२	२८	६	जि.१	कन्या			६	०	१८	४७	४	१०	३४	१०	श्रीवराह जयन्ती, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया (B)
३१	५२	४	शु.	५४	१४	हस्त	१९	३४	शु.	२६	१३	व.	२२	१९	१३	२९	७	२	तुला	५२	९	६	१	१८	४६	४	११	३२	८	भ. २२/१९ से ५४/१४ तक, बुध कन्या में २४/१०, (C)
३१	४८	५	श.	५६	५२	चित्रा	२४	२४	शु.	२६	१६	ब.	२५	३३	१४	३०	८	३	तुला			६	१	१८	४४	४	१२	३०	८	सूर्य पू.फा. में ५०/१७, ऋषिपञ्चमी,
३१	४३	६	र.	५८	१	स्वाती	२७	५६	ब्र.	२५	१६	कौ.	२७	२६	१५	३१	९	४	तुला			६	२	१८	४३	४	१३	२८	८	शुक्र मघा सिंह में ५३/००, सूर्यषष्ठी व्रत,
३१	३९	७	चं.	५७	३१	विशा.	२९	५५	ऐं.	२३	३	ग.	२७	४५	१६	सि.१	१०	५	वृश्चिक	१४	३५	६	२	१८	४२	४	१४	२६	११	भ. ५७/३१ बाद, सितंबर प्रारम्भ,
३१	३४	८	मं.	५५	१३	अनु	३०	१२	वै.	१९	२७	वि.	२६	२२	१७	२	११	६	वृश्चिक			६	३	१८	४१	४	१५	२४	१४	भ. २६/२२ तक, राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत (D)
३१	३०	९	बु.	५१	९	ज्येष्ठा	२८	४२	वि.	१४	२४	बा.	२३	११	१८	३	१२	७	धनु	२८	४२	६	४	१८	४०	४	१६	२२	१९	गुरु आश्ले. १ में ४४/१३, बाबा श्रीचन्द नवमी (E)
३१	२५	१०	गु.	४५	२५	मूल	२५	३०	प्री.	७	५७	तै.	१८	१७	१९	४	१३	८	धनु			६	४	१८	३८	४	१७	२०	२५	मंगल वृश्चिक में ५१/०५, बुध हस्त में ५६/३७,
३१	२१	११	शु.	३८	१७	पू.षा.	२०	४७	आ. सौ.	० ५१	१३ २१	व.	११	५१	२०	५	१४	९	मकर	३४	२३	६	५	१८	३७	४	१८	१८	३३	भ. ११/५१ से ३८/१७ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
३१	१७	१२	श.	३०	२	उ.षा.	१४	५०	शो.	४१	३८	ब.	४	९	२१	६	१५	१०	मकर			६	५	१८	३६	४	१९	१६	४२	शनिप्रदोष व्रत, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी,
३१	१२	१३	र.	२१	३	श्रव.	८	२	अ.	३१	२३	तै.	२१	३	२२	७	१६	११	कुम्भ	३४	२५	६	६	१८	३५	४	२०	१४	५३	पंचक प्रारम्भ ३४/२५,
३१	८	१४	चं.	११	४४	धनि. शत.	० ५३	५० ३६	सु.	२०	५५	व.	११	४४	२३	८	१७	१२	कुम्भ			६	६	१८	३३	४	२१	१३	५	भ. ११/४४ से ३७/०९ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F)
३१	३	१५	मं.	२	३४	पू.भा.	४६	५०	धृ.	१०	३६	ब.	२	३४	२४	९	१८	१३	मीन	३३	२५	६	७	१८	३२	४	२२	११	१९	मंगल अनु. में ५७/२८, पितृपक्ष (महालय) प्रारम्भ, (G)

(A) डेरा बाबा गोसाईआणां (कुराली)- पं., (B) ज़िल्काद मु. प्रारम्भ, (C) संवत्सरी महापर्व (जैन), सिद्धिविनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. ४९ मि.), साम उपाकर्म, हरितालिका चतुर्थी, (D) (देखें पृ. 14), श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (E) (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), अगस्त्य उदित, (F) प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध, श्री अनन्त चर्तुदशी व्रत, (G) प्रतिपदा का श्राद्ध,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	५	३	४	६	५	११
१५	९	२८	५	१६	१	२४	२७	२७
२४	३८	९	३४	१८	२१	२	१६	१६
१५	१०	०	५०	१५	१	५७	५१	५१
५८	८०७	३८	९०	१२	७४	३	३	३
५	२१	२८	३८	२२	३	५९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	अनु. २	विशा. ३	उ.फा. ३	पुष्य ४	मघा १	विशा. २	चित्रा २	रे. ४

कुण्डली सूर्योदय (२ सितं.)

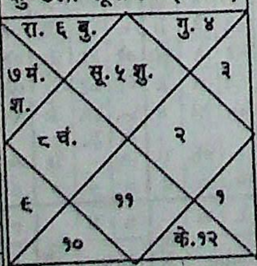

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच चन्द्रवार हैं। प्रजा में धनधान्य समृद्धि रहे। कहीं मन्त्रिमण्डल में उलटफेर, कहीं भूकम्प एवम् कहीं किसी अन्य प्राकृतिक आपदा से हानि के भी योग हैं। प्रजा महंगाई से परेशान रहे। शासकों में परस्पर द्वेष रहे;- "यदा वृश्चिक-राशिस्थो जायते च महीसुतः। मर्घ्यं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २७ से २९ अगस्त तक उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, गेहूं, चना, जौ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेज़ी आती है। रूई, बारदाना, एरण्ड में मन्दी रहे। ३० अगस्त को सोना, चान्दी, जीरा, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तिलहन, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रूई, सूत में तेज़ी बने। यह तेज़ी ३ सितं. तक रहे। ४ से ९ सितं. तक बाज़ार ऊपर-नीचे रहें।

आकाशलक्षणः- अगस्त २७, २९, ३१; सितंबर ३, ४, ५, ८, ९ को नेपाल, दार्जिलिंग, विन्ध्यप्रदेश एवं उ.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उ.भा. में मौसम साफ रहे।

कुण्डली सूर्योदय (९ सितं.)

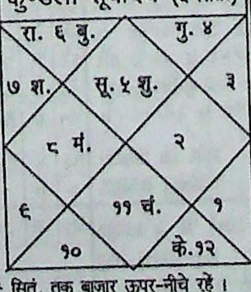

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
९ सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	७	५	३	४	६	५	११
२२	२१	२	१५	१७	१०	२४	२६	२६
११	१३	४१	४१	४३	०	३२	५४	५४
१९	४०	१५	४२	४५	५	२६	३६	३६
५८	८९९	३९	८१	१२	७४	४	३	३
१६	१६	२५	१६	०	१७	३०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
पू.फा. ३	पू.भा. १	विशा. ४	हस्त २	आश्ले. १	मघा ४	विशा. २	चित्रा २	रे ४

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, आश्विन कृष्ण पक्ष १२															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१० से २४ सितंबर तक, सन् २०१४ ई.) दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						सूर्योदय से पूर्व प्रातः शु. पूर्व में बहुत कम समय के लिए दिखाई देगा । गु. इससे कुछ ऊपर होगा । सायं बु. पश्चिम में, श. इससे ऊपर और मं. पश्चिमकपाल में होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	सितंबर	भाद्रपद	ज़िल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५३	५४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३०	५८	२	बु.	४६	११	उ.भा.	४०	५८	शू. ग.	० ५१	४९ ५१	तै.	२०	२	२५	१०	१९	१४	मीन			६	८	१८	३१	४	२३	९	३४	द्वितीया का श्राद्ध,
३०	५४	३	गु.	३९	४७	रेव.	३६	२४	वृ.	४३	५९	व.	१२	५९	२६	११	२०	१५	मेष	३६	२४	६	८	१८	३०	४	२४	७	५२	म. १२/५९ से ३९/४७, तक पंचक समाप्त ३६/२४,(A)
३०	४९	४	शु.	३५	२	अश्वि.	३३	२७	ध्रु.	३७	३०	ब.	७	२४	२७	१२	२१	१६	मेष			६	९	१८	२८	४	२५	६	११	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध,
३०	४५	५	श.	३२	९	भर.	३२	२०	व्या.	३२	३०	कौ.	३	३५	२८	१३	२२	१७	वृष	४७	२३	६	९	१८	२७	४	२६	४	३३	सूर्य उ.फा. में ३४/४७, राहु चित्रा १, केतु रेव. ३ में (B)
३०	४०	६	र.	३१	१४	कृत्ति.	३३	१०	ह.	२९	५	ग.	१	४१	२९	१४	२३	१८	वृष			६	१०	१८	२६	४	२७	२	५६	म. ३१/१४ बाद, बुध चित्रा में ५२/५०, षष्ठी का श्राद्ध,
३०	३६	७	चं.	३२	१७	रोहि.	३५	५५	व.	२७	१३	वि.	१	४५	३०	१५	२४	१९	वृष			६	१०	१८	२५	४	२८	१	२२	म. १/४५ तक, सप्तमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
३०	३१	८	मं.	३५	७	मृग.	४०	२२	सि.	२६	४४	बा.	३	४२	३१	१६	२५	२०	मिथुन	७	५६	६	११	१८	२३	४	२८	५९	४९	अष्टमी का श्राद्ध,
३०	२६	९	बु.	३९	२६	आर्द्रा	४६	१२	व्य.	२७	२५	तै.	७	१६	आ.१	१७	२६	२१	मिथुन			६	११	१८	२२	४	२९	५८	१९	सं. सूर्य कन्या में ०/०१, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न (C)
३०	२२	१०	गु.	४४	४९	पुन.	५३	१	व.	२८	५८	व.	१२	७	२	१८	२७	२२	कर्क	३६	१६	६	१२	१८	२१	५	०	५६	५१	म. १२/०७ से ४४/४९ तक, दशमी का श्राद्ध,
३०	१७	११	शु.	५०	५१	पुष्य	६०	०	प.	३१	५	ब.	१७	५०	३	१९	२८	२३	कर्क			६	१३	१८	१९	५	१	५५	२५	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध,
३०	१३	१२	श.	५७	५	पुष्य	०	२४	शि.	३३	२६	कौ.	२३	५८	४	२०	२९	२४	कर्क			६	१३	१८	१८	५	२	५४	२	बुध तुला में ५०/०७, गुरु आश्ले. २ में ३९/३२, (D)
३०	८	१३	र.	६०	०	आश्ले.	७	५४	सि.	३५	४५	ग.	३०	७	५	२१	३०	२५	सिंह	७	५४	६	१४	१८	१७	५	३	५२	४०	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध,
३०	३	१३	चं.	३	९	मघा	१५	१२	सा.	३७	४८	व.	३	९	६	२२	३१	२६	सिंह			६	१४	१८	१६	५	४	५१	२१	म. ३/९ से ३५/५६ तक, शुक्र उ.फा. में २३/५२, (E)
२९	५९	१४	मं.	८	४४	पू.फा.	२२	१	शु.	३९	२५	श.	८	४४	७	२३	आ.१	२७	कन्या	३८	३८	६	१५	१८	१४	५	५	५०	४	सूर्य सायन तुला में ४/२०, विषुव-दिन, दक्षिणगोल (F)
२९	५४	३०	बु.	१३	४०	उ.फा.	२८	९	शु.	४०	२६	ना.	१३	४०	८	२४	२	२८	कन्या			६	१५	१८	१३	५	६	४८	४८	नाना/नानी का श्राद्ध,

(A) शुक्र पू. फा. में ३९/५०, तृतीया का श्राद्ध, (B) ३३/५२, चन्द्रषष्ठी व्रत, पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, (C) तक, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, (D) द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (E) प्लूटो मार्गी ५९/३५, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (F) प्रारम्भ, सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, शक आश्विन प्रारम्भ,

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.)
१६ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २८ ५९ ५०	१ २८ ० १४	७ ७ १९ ५५	५ २४ ३८ ३६	३ १९ ६ २६	४ १८ ४० ४०	६ २५ ५ २८	५ २६ ३२ २१	११ २६ ३२ २१
५८ ३०	७३९ ४	४० १९	७० २	११ ३२	७४ २९	५ ०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	मूल. २	अनु. २	चित्रा १	आश्ले. १	पू.फा. २	विशा. २	चित्रा १	रेव. ३

कुण्डली सूर्योदय (१६ सितं.)

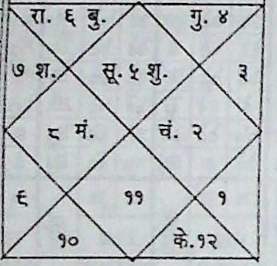

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास मे पांच बुधवार हैं । खाद्यान्नों की महंगाई प्रजा में आक्रोश पैदा करे । लेकिन शासक जल्दी ही इस समस्या का हल निकालेंगे । कन्या-संक्रान्ति पश्चिम में अशान्ति का संकेत देती है । तुला राशिस्थ बुध-शनि यावन (मुस्लिम) राष्ट्रों में भारी आन्तरिक-क्रान्ति के कारण बनें ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ११/१२ सितंबर को सभी अनाज मन्दे रहें । १३ सितं. को कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी आदि तिलहन, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील तेज़ हों । रुई, चान्दी, शेयर मन्दे रहें । १६ से २२ सितं. तक सारे बाज़ारों में अनिश्चितता रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (२४ सितं.)

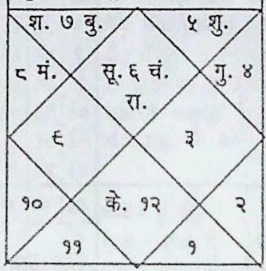

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.)
२४ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ६ ४८ ४९	५ ३ ५५ ३०	७ १२ ४५ ५१	६ २ ५७ २७	३ २० ३६ ५०	४ २८ ३७ २२	६ २५ ४७ १४	५ २६ ६ ५५	११ २६ ६ ५५
५८ ४६	७३० २	४१ १७	५० ३१	१० ५७	७४ ४२	५ ३०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	उ.फा. ३	अनु. ३	चित्रा ३	आश्ले. २	उ.फा. १	विशा. २	चित्रा १	रेव. ३

आकाशलक्षणः- सितंबर ११, १३, १४, १६, १७, २० से २२ सितं. के लगभग की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो । सूर्य-शुक्र सिंहस्थ होने से प्रायः सर्वत्र वर्षा न होगी । शरदृऋतु का आगमन अनुभव होने लगेगा ।

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(२५ सितंबर से ८ अक्तूबर तक, सन् २०१४ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु ।

२ अक्तू. को शु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा । प्रातः गु. पूर्व में होगा । सायं बु. श. पश्चिम में और मं. पश्चिम-कपाल में होगा । ८ अक्तू. को चन्द्रग्रहण दिखाई देगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															आश्विन	सितंबर	आश्विन	ज़िल्काद												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४९	१	गु	१७	४५	हस्त	३३	२६	ब्र	४०	४६	ब.	१७	४५	९	२५	३	२९	कन्या			६	१६	१८	१२	५	७	४७	३५	शुक्र कन्या में ४/२८, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा (A)
२९	४५	२	शु	२०	५२	चित्रा	३७	४६	ऐं.	४०	१९	कौ.	२०	५२	१०	२६	४	३०	तुला	५	४३	६	१७	१८	११	५	८	४६	२३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२९	४०	३	श.	२२	५४	स्वाती	४१	१	वै.	३९	१	ग.	२२	५४	११	२७	५	जि.१	तुला			६	१७	१८	९	५	९	४५	१४	म. ५३/२० बाद, सूर्य हस्त में १३/०५, ज़िल्हिज मु. (B)
२९	३६	४	र.	२३	४७	विशा.	४३	६	वि.	३६	४७	वि.	२३	४७	१२	२८	६	२	वृश्चिक	२७	४२	६	१८	१८	८	५	१०	४४	६	भ. २३/४७ तक,
२९	३१	५	चं.	२३	२४	अनु.	४२	५८	प्री.	३२	३३	बा.	२३	२४	१३	२९	७	३	वृश्चिक			६	१८	१८	७	५	११	४३	०	मंगल ज्येष्ठा में ३६/१०, बुध स्वाती में १०/२०, शुक्र (C)
२९	२६	६	मं.	२१	४४	ज्येष्ठा	४३	३२	आ.	२९	१७	तै.	२१	४४	१४	३०	८	४	धनु	४३	३२	६	१९	१८	५	५	१२	४१	५६	
२९	२२	७	बु.	१८	४५	मूल	४१	४९	सौ.	२३	५९	व.	१८	४५	१५	अ.१	९	५	धनु			६	२०	१८	४	५	१३	४०	५४	भ. १८/४५ से ४६/३७ तक, सरस्वती आवाहन, अक्तूबर (D)
२९	१७	८	गु	१४	२९	पू.षा.	३८	५२	शो.	१७	३९	ब.	१४	२९	१६	२	१०	६	मकर	५२	५७	६	२०	१८	३	५	१४	३९	५३	शुक्र पूर्व में अस्त ६ घं. २० मि., सरस्वती-पूजन, (E)
२९	१३	९	शु	९	३	उ.षा.	३४	५०	अ.	१०	२३	कौ.	९	३	१७	३	११	७	मकर			६	२१	१८	२	५	१५	३८	५४	शुक्र हस्त में ५/३५, शनि विशा. ३ में १०/४०, (F)
२९	८	१०	श.	२	३९	श्रव.	२९	५३	सु. धृ.	२ ५३	१९ ३४	ग.	२	३९	१८	४	१२	८	कुम्भ	५७	१०	६	२१	१८	१	५	१६	३७	५७	भ. २६/०३ से ५५/२७ तक, पंचक प्रारम्भ ५७/१०, (G)
अवम		११	श.	५५	२७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२९	३	१२	र.	४७	४४	धनि.	२४	१८	शू.	४४	२५	ब.	२१	३५	१९	५	१३	९	कुम्भ			६	२२	१७	५९	५	१७	३७	२	पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव),
२८	५९	१३	चं.	३९	५०	शत.	१८	२२	गं.	३५	४	कौ.	१३	४७	२०	६	१४	१०	मीन	५८	५६	६	२३	१७	५८	५	१८	३६	८	सोमप्रदोष व्रत,
२८	५४	१४	मं.	३२	५	पू.भा.	१२	२७	वृ.	२५	५०	ग.	५	५७	२१	७	१५	११	मीन			६	२३	१७	५७	५	१९	३५	१६	भ. ३२/०५ से ५८/२८ तक, ग्रहणशूल,श्रीसत्यनारायण(H)
२८	५०	१५	बु.	२४	५१	उ.भा.	६	५५	ध्रु.	१६	५८	ब.	२४	५१	२२	८	१६	१२	मीन			६	२४	१७	५६	५	२०	३४	२६	चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 24), कार्त्तिकस्नान (I)

शुक्र अस्त
२ अक्तूबर

चन्द्रग्रहण
८ अक्तूबर

(A) श्री अग्रसेन जयन्ती, (B) प्रारम्भ, (C) वार्धक्य प्रारम्भ ६ घं. २० मि., उपाङ्गललिता व्रत, श्रीललिता पंचमी, (D) प्रारम्भ, (E) श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए) (देखें पृ. 14), (F) सरस्वती के लिए बलिदान, महानवमी (बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 15), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (G) बुध वक्री ४०/२५, पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त), नवरात्रपारणा, सरस्वती विसर्जन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, भरतमिलाप, (H) व्रत (देखें पृ. 13), कोजागर व्रत, शरत् पूर्णिमा, (I) प्रारम्भ, श्रीवाल्मीकि जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	७	६	३	५	६	५	११
१४	१७	१८	७	२२	८	२६	२५	२५
३६	४	१६	५०	२	३५	३२	४१	४१
५४	१४	१३	३०	३	३२	४८	२६	२६
५९	८४६	४२	१४	१०	७४	५	३	३
१	६	८	२६	१४	५१	५६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त २	पू.षा. २	ज्ये. १	स्वा. १	आश्ले. २	उ.फा. ४	विशा. २	चित्रा १	रेव. ३

कुण्डली सूर्योदय(२ अक्तू.)

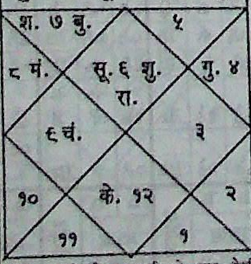

लोकभविष्यः- आश्विन शुक्ल दशमी/एकादशी को शनिवार होने से कहीं शासनसत्ता में आकस्मिक परिवर्तन हो , कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प आदि से हानि हो । कहीं उपद्रवी-तत्त्व सक्रिय रहें- " दशम्यां च शनौ तत्र छत्रभंगस्य कारणम् । नगर-ग्रामभंगः स्याद् वैरिचौराद्युपद्रवाः ।।"

बुध का वक्रत्व एवं शुक्र का अस्त भी कहीं प्रतिष्ठित-व्यक्ति के पदरिक्तता व मुस्लिम राष्ट्र-विशेष में भारी अस्थिरता व रक्तपात का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २५ सितंबर को चावलों में विशेष तेज़ी का झटका आए । कन्याराशिस्थ सूर्य-शुक्र-राहु एवं बुध का शनि के साथ योग अनाज, दालदाना, गुड़, खाण्ड, ऊन, रुई, कपास, मूंग, धनिया, हल्दी, नमक, अफीम में तेज़ी करे । सोना-चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने । १/२ अक्तू. से पक्षान्त तक गेहूं, मक्का, सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर तेज़ हों । ३ अक्तू. को यदि अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें ।

आकाशलक्षणः- सितंबर २५ से २९ तक एवं अक्तू. १ से ५ तक पश्चिमी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल, कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में तापमान गिरे।

कुण्डली सूर्योदय (८ अक्तू.)

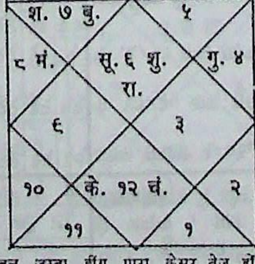

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
८ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	७	६	३	५	६	५	११
२०	१४	२२	७	२३	१६	२७	२५	२५
३४	२६	३३	३४	२	४	६	२२	२२
२७	३	३४	३५	३	५३	८	२५	२५
५९	८७०	४२	२६	९	७४	६	३	३
१२	४७	४३	८	३६	४७	१३	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ४	उ.भा. ४	ज्ये. २	स्वा. १	आश्ले. २	हस्त २	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(९ से २३ अक्तूबर तक, सन् २०१४ ई.)

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु ।

शु. अस्त है, बु. भी १० अक्तू. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा । प्रातः गु. पूर्वकपाल में होगा । सायं श. पश्चिमक्षितिज में और मं. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. 30 मि.				
															प्र. आश्विन	अं. अक्तू.	श. आश्विन	मु. ज़िल्हिज.				सूर्योदय		सूर्यास्त		भा. स्टैं. टा.				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४५	१	गु.	१८	२९	रेव. अश्वि.	२ ५८	९ २७	व्या.	८	४७	कौ.	१८	२९	२३	९	१७	१३	मेष	२	९	६	२५	१७	५४	५	२१	३३	३८	पंचक समाप्त २/०९, वक्री बुध चित्रा में ३८/४५,(A)
२८	४०	२	शु.	१३	१९	भर.	५६	११	ह. व.	१ ५५	३३ २८	ग.	१३	१९	२४	१०	१८	१४	मेष			६	२५	१७	५३	५	२२	३२	५२	भ. ४१/३० बाद, सूर्य चित्रा में ४५/२५, बुध पश्चिम (B)
२८	३६	३	श.	९	४१	कृत्ति.	५५	३५	सि.	५०	४३	वि.	९	४१	२५	११	१९	१५	वृष	१०	५१	६	२६	१७	५२	५	२३	३२	९	भ. ९/४१ तक, ग्रहणशूल, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C)
२८	३१	४	र.	७	४७	रोहि.	५६	४९	व्य.	४७	२७	बा.	७	४७	२६	१२	२०	१६	वृष			६	२६	१७	५१	५	२४	३१	२७	
२८	२७	५	चं.	७	४६	मृग.	५९	५२	व.	४५	३९	तै.	७	४६	२७	१३	२१	१७	मिथुन	२८	७	६	२७	१७	५०	५	२५	३०	४८	शुक्र चित्रा में ४५/४७,
२८	२२	६	मं.	९	३७	आर्द्रा	६०	०	प.	४५	१४	व.	९	३७	२८	१४	२२	१८	मिथुन			६	२८	१७	४९	५	२६	३०	११	भ. ९/३७ से ४१/२४ तक,
२८	१८	७	बु.	१३	१२	आर्द्रा	४	३५	शि.	४५	५९	ब.	१३	१२	२९	१५	२३	१९	कर्क	५४	६	६	२८	१७	४८	५	२७	२९	३६	अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा),
२८	१३	८	गु.	१८	१०	पुन.	१०	४२	सि.	४७	३७	कौ.	१८	१०	३०	१६	२४	२०	कर्क			६	२९	१७	४६	५	२८	२९	४	वक्री बुध कन्या में १६/४०,
२८	९	९	शु.	२४	५	पुष्य	१७	४६	सा.	४९	४६	ग.	२४	५	का.१	१७	२५	२१	कर्क			६	३०	१७	४५	५	२९	२८	३४	भ. ५७/१३ बाद, सं. सूर्य तुला में २९/१०, मु. १५, (D)
२८	४	१०	श.	३०	२२	आश्ले.	२५	१६	शु.	५२	३	वि.	३०	२२	२	१८	२६	२२	सिंह	२५	१६	६	३१	१७	४४	६	०	२८	६	भ. ३०/२२ तक, मंगल मूल धनु में १८/१०, वक्री (E)
२८	०	११	र.	३६	३२	मघा	३२	३७	शु.	५४	६	ब.	३	२७	३	१९	२७	२३	सिंह			६	३१	१७	४३	६	१	२७	४१	शुक्र तुला में ५/१७, रमा एकादशी व्रत (स.),
२७	५५	१२	चं.	४२	४	पू.फा.	३९	२७	ब्र.	५५	३६	कौ.	९	१८	४	२०	२८	२४	कन्या	५६	२	६	३२	१७	४२	६	२	२७	१८	गोवत्स द्वादशी,
२७	५१	१३	मं.	४६	३९	उ.फा.	४५	२१	ऐं.	५६	१९	ग.	१४	२१	५	२१	२९	२५	कन्या			६	३३	१७	४१	६	३	२६	५६	भ. ४६/३९ बाद, भौमप्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, (F)
२७	४७	१४	बु.	५०	३	हस्त	५०	८	वै.	५६	८	वि.	१८	२१	६	२२	३०	२६	कन्या			६	३३	१७	४०	६	४	२६	३७	भ. १८/२१ तक, नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), (G)
२७	४२	३०	गु.	५२	११	चित्रा	५३	४०	वि.	५४	५७	च.	२१	७	७	२३	का.१	२७	तुला	२२	३	६	३४	१७	३९	६	५	२६	२१	वक्री बुध हस्त में ११/३७, सूर्य सायन वृश्चिक में (H)

(A) गुरु आश्ले. ३ में ४९/५२, ग्रहणशूल, (B) में अस्त १७ घं. ५३ मि., ग्रहणशूल, (C) करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय २० घं. १३ मि.), (D) पुण्यकाल १३/१० बाद, (E) यूरेनस रेव. १ में ५९/४३, (F) यमप्रीत्यर्थ दीपदान, (G) श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (H) २७/१३, हेमन्तऋतु प्रारम्भ, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), शक कार्तिक प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २८ २९ ५	३ ० ४१ ४८	७ २८ १७ ५७	६ ० २३ २३	३ २४ १६ १२	५ २६ ४ ५५	६ २८ ० ४	५ २४ ५६ ५९	११ २४ ५६ ५९
५९ २९	७१७ २५	४३ २७	७३ १९	८ ४६	७५ ४	६ ३३	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा २	पुन. ४	ज्ये. ४	चित्रा ३	आश्ले. ३	चित्रा १	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३

कुण्डली सूर्योदय (१६ अक्तू.)

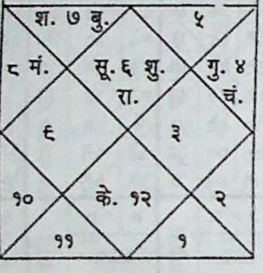

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं । पश्चिमी देशों/प्रान्तों में कहीं आन्तरिक-क्रान्ति, कहीं पश्चिमी/दक्षिणी प्रान्तों में उग्रवाद-जन्य अशान्ति किंवा प्राकृतिक आपदा से जन-धनहानि भी संभव है; -" विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं तदा भवेत् ।" शुक्र (चित्रा) राक्षसनक्षत्र में है एवं कार्तिक कृ. दशमी-त्रयोदशी क्रमशः शनि-मंगलवारी होने से जनता में रोगों से भारी कष्ट रहे एवं महंगाई बढ़े;-

" कार्तिके दशमीकृष्णा शनौ रोगकरी मता ।
भौमे कृष्ण-त्रयोदश्यां यत्र गोधूम-महर्घता ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख़:- पक्षारम्भ में घी, तेल एवं वायदा बाज़ार तेज़ रहें । रुई, चान्दी में ज़ोरदार घटाबढ़ी होकर मन्दी रहे । शेयर भी मन्दे हों । १०-१२ अक्तूबर को रुई, सूत, सोना, चान्दी, मोती, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, लालमिर्च तेज़ रहें । १६ से १९ अक्तूबर तक सोना-चान्दी की विक्री अधिक होगी । सभी चीज़ों में तेज़ी प्रधान रहेगी । २२ अक्तूबर को घटाबढ़ी रहेगी ।

कुण्डली सूर्योदय (२३ अक्तू.)

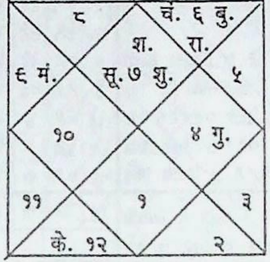

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ५ २६ २१	५ २४ ५० ९	८ ३ २३ ५८	५ २३ २६ १३	३ २५ १४ ५७	६ ४ ५० ४४	६ २८ ४६ ३७	५ २४ ३४ ४४	११ २४ ३४ ४४
५९ ४५	७५६ १७	४४ ३	२६ ६	७ ५३	७५ १०	६ ४६	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ४	चित्रा १	मूल २	चित्रा १	आश्ले. ३	चित्रा ४	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३

आकाशलक्षण:-९ से १९ अक्तूबर तक हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ेंगी । इस पक्ष में उत्तर-पूर्वी लंका, चिरापूंजी एवं हि.प्र. में अच्छी वर्षा हो । पर्वतों पर हिमपात हो ।

वि. सं. २०७१, शाक १९३६, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(२४ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक, सन् २०१४ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

पक्षारम्भ में ही बु. पूर्व में उदित हो जाएगा । शु. अस्त है, श. भी १ नवं. को अस्त हो जाएगा । प्रातः गु. पूर्वकपाल में और सायं मं. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	अक्तू.	कार्तिक	ज़िल्हिज.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३८	१	शु.	५३	१	स्वाती	५५	५९	प्री.	५२	४७	किं.	२२	३६	८	२४	२	२८	तुला			६	३५	१७	३८	६	६	२६	६	सूर्य स्वाती में ११/१५, शुक्र स्वाती में २४/३०, (A)
२७	३४	२	श.	५२	३९	विशा.	५७	७	आ.	४९	४०	बा.	२२	४९	९	२५	३	२९	वृश्चिक	४१	५५	६	३६	१७	३७	६	७	२५	५३	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध मार्गी ४५/२५, यमद्वितीया, (B)
२७	२९	३	र.	५१	१०	अनु.	५७	११	सौ.	४५	४१	तै.	२१	५४	१०	२६	४	मु.१	वृश्चिक			६	३६	१७	३६	६	८	२५	४२	मुहर्रम (हिजरी सन् १४३६) मु. प्रारम्भ,
२७	२५	४	चं.	४८	४३	ज्येष्ठा	५६	१७	शो.	४०	५४	व.	१९	५६	११	२७	५	२	धनु	५६	१७	६	३७	१७	३५	६	९	२५	३३	भ. १६/५६ से ४८/४३ तक,
२७	२१	५	मं.	४५	२४	मूल	५४	३४	अ.	३५	२६	ब.	१७	३	१२	२८	६	३	धनु			६	३८	१७	३४	६	१०	२५	२५	बुध चित्रा में २२/३४, ज्ञानपंचमी (जैन),
२७	१७	६	बु.	४१	२०	पू.षा.	५२	७	सु.	२९	२०	कौ.	१३	२२	१३	२९	७	४	धनु			६	३९	१७	३३	६	११	२५	२०	सूर्यषष्ठी (बिहार),
२७	१२	७	गु.	३६	३८	उ.षा.	४९	५	धृ.	२२	४४	ग.	८	५९	१४	३०	८	५	मकर	६	२३	६	३९	१७	३२	६	१२	२५	१६	भ. ३६/३८ बाद,
२७	८	८	शु.	३१	२६	श्रव.	४५	३२	शू.	१५	४०	वि.	४	२	१५	३१	९	६	मकर			६	४०	१७	३१	६	१३	२५	१४	भ. ४/०२ तक, गोपाष्टमी,
२७	४	९	श.	२५	४८	घनि .	४१	३८	गं.	८	१५	कौ.	२५	४८	१६	न.१	१०	७	कुम्भ	१३	३६	६	४१	१७	३१	६	१४	२५	१३	पंचक प्रारम्भ १३/३६, शनि अस्त १७ घं. ३१ मि.(C)
२७	०	१०	र.	१९	५४	शत .	३७	२९	वृ. ध्रु.	० ५२	३६ ४६	ग.	१९	५४	१७	२	११	८	कुम्भ			६	४२	१७	३०	६	१५	२५	१४	भ. ४६/५३ बाद, शनि विशा. ४ वृश्चिक में (D)
२६	५६	११	चं.	१३	५३	पू.भा.	३३	१७	व्या.	४४	५५	वि.	१३	५३	१८	३	१२	९	मीन	१९	१८	६	४३	१७	२९	६	१६	२५	१६	भ. १३/५३ तक, गुरु आश्ले. ४ में ५३/५५, (E)
२६	५२	१२	मं.	७	५६	उ.भा.	२९	१३	ह.	३७	१४	बा.	७	५६	१९	४	१३	१०	मीन			६	४३	१७	२८	६	१७	२५	२०	बुध तुला में ३६/२२, शुक्र विशा. में २/२५, (F)
२६	४८	१३	बु.	२	१६	रेव.	२५	३१	व.	२९	५२	तै.	२	१६	२०	५	१४	११	मेष	२५	३१	६	४४	१७	२७	६	१८	२५	२६	भ. ५७/१० बाद, पंचक समाप्त २५/३१, मंगल (G)
अवम		१४	बु.	५७	१०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२६	४४	१५	गु.	५२	४९	अश्वि.	२२	२६	सि.	२३	२	वि.	२४	५९	२१	६	१५	१२	मेष			६	४५	१७	२७	६	१९	२५	३३	भ. २४/५६ तक, सूर्य विशा. में ३१/१५, (H)

(A) बुध पूर्व में उदित ६ घं. ३५ मि., गोवर्धन पूजा, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, अन्नकूट, (B) भाईदूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (C) अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, नवम्बर प्रारम्भ, (D) ३५/३०, भीष्म पञ्चक प्रारम्भ (दिखें पृ. 15), (E) हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (F) भौमप्रदोष व्रत, तुलसी विवाह, हरिप्रबोधोत्सव, चातुर्मास्य व्रतनियमादि समाप्त, (G) पू.षा. में २०/१०, वैकुण्ठ चतुर्दशी, (H) कार्त्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्त्तिकस्नान समाप्त, भीष्म पञ्चक समाप्त, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज (राज.), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३१ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १३ २५ १४	९ ११ ५३ १७	८ ९ १८ ३६	५ २४ ५९ ५५	३ २६ १४ ९	६ १४ ५२ १५	६ २९ ४१ ३३	५ २४ ९ १८	११ २४ ९ १८
५९ ५९	८५० ४४	४४ ४०	५३ २८	५ ४६	७५ १३	६ ५८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ३	श्रव. १	मूल ३	चित्रा १	आश्ले. ३	स्वा. ३	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३

कुण्डली सूर्योदय (३१ अक्तू.)

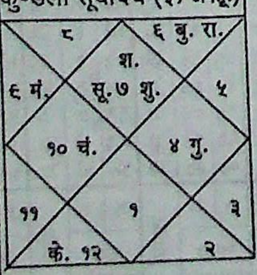

लोकभविष्य:- पक्षारम्भ से १ नवं. तक सूर्य, शनि, शुक्र का तुला राशि में संयोग राजतन्त्र में भारी कठिन-परिस्थितियों वाला है । २ नवं. को वृश्चिक राशि का शनि खाद्य पदार्थों में भारी तेज़ी करे । किसी विशिष्टव्यक्ति का पदरिक्त किंवा मृत्यु होने से शोक व्याप्त होगा;- " यदा वृश्चिकगः सौरि मेदिनी दुःखसंयुता ।
वर्षमात्रमथो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २४ से २९ अक्तू. तक गेहूं, चना, तिल, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च तेज़ रहे । सोना, गुड़, खाण्ड, बिनौला, रुई, गुग्गुल, सारे तिलहन भी तेज़ रहेंगे । रुई एवं चान्दी में घटाबढ़ी रहे । १ नवं. के लगभग बाजारों में उठापटक होगी । २-३ नवं. को तेल, तिलहन, अनाज में तेजी एवं रुई-चान्दी में खास तेज़ी का झटका आए । ५ नवं. को मन्दा आकर फिर बाज़ार तेज़ होंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (६ नवं.)

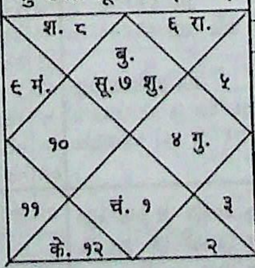

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
६ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १९ २५ ३४	० ७ २२ १४	८ १३ ४७ ३४	६ १ ४४ ५८	३ २६ ५२ २९	६ २२ २३ ३७	७ ० २३ ३८	५ २३ ५० १४	११ २३ ५० १४
६० ९	८३५ २७	४५ ३	८२ १५	५ ५१	७५ १४	७ ४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ
स्वा. ४	अश्वि. ३	पू.षा. १	चित्रा ३	आश्ले. ४	विशा. १	विशा. ४	चित्रा १	३

आकाशलक्षण:- अक्तूबर २४ से २८ एवं नवं. १ से ५ तक कश्मीर, हि.प्र. एवं उत्तर-दक्षिणी भारत में कहीं बादलचाल एवं वायुवेग से वर्षा हो । हिमाचल, काश्मीर में कहीं हिमपात से शीत ज़ोर पकड़ने लगे ।

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(७ से २२ नवम्बर तक, सन् २०१४ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						शु. श. अस्त हैं । प्रातः पूर्व में दिखाई दे रहा बु. १५ नवं. को लुप्त हो जाएगा । प्रातः गु. याम्योत्तर-वृत्तासन्न और सायं मं. पश्चिम में होगा ।
															कार्तिक	नवंबर	कार्तिक	मुहर्रम												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४०	१	शु.	४९	३२	भर.	२०	१७	व्य.	१६	५६	बा.	२१	१०	२२	७	१६	१३	वृष	३४	५५	६	४६	१७	२६	६	२०	२५	४२	
२६	३६	२	श.	४७	३६	कृत्ति.	१९	१८	व.	११	४७	तै.	१८	३४	२३	८	१७	१४	वृष			६	४७	१७	२५	६	२१	२५	५३	पद्मकयोग (१४ घं. ३० मि. तक) (पुष्करस्नान माहात्म्य) (A)
२६	३३	३	र.	४७	१२	रोहि.	१९	४४	प.	७	४४	व.	१७	२४	२४	९	१८	१५	मिथुन	५०	३४	६	४७	१७	२५	६	२२	२६	५	भ. १७/२४ से ४७/१२ तक, बुध स्वाती में २४/१७,
२६	२९	४	चं.	४८	३०	मृग.	२१	४५	शि.	४	५७	ब.	१७	५१	२५	१०	१९	१६	मिथुन			६	४८	१७	२४	६	२३	२६	२०	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२६	२५	५	मं.	५१	२८	आर्द्रा	२५	२५	सि.	३	२८	कौ.	१९	५९	२६	११	२०	१७	मिथुन			६	४९	१७	२३	६	२४	२६	३६	
२६	२२	६	बु.	५५	५८	पुन.	३०	३७	सा.	३	१५	ग.	२३	४३	२७	१२	२१	१८	कर्क	१४	११	६	५०	१७	२३	६	२५	२६	५५	भ. ५५/५८ बाद, शुक्र वृश्चिक में ०/३३,
२६	१८	७	गु.	६०	०	पुष्य	३७	४	शु.	४	७	वि.	२८	४७	२८	१३	२२	१९	कर्क			६	५१	१७	२२	६	२६	२७	१५	भ. २८/४७ तक,
२६	१५	७	शु.	१	३६	आश्ले.	४४	२२	शु.	५	५०	ब.	१	३६	२९	१४	२३	२०	सिंह	४४	२२	६	५२	१७	२१	६	२७	२७	३७	शुक्र अनु. में ३९/५२, श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी) ,
२६	११	८	श.	७	५५	मघा	५१	५२	ब्र.	८	०	कौ.	७	५५	३०	१५	२४	२१	सिंह			६	५३	१७	२१	६	२८	२८	१	राहु हस्त ४, केतु रेवती २ में २७/००, बुध पूर्व में (B)
२६	८	९	र.	१४	१७	पू.फा.	५९	३	ऐं.	१०	१२	ग.	१४	१७	मा.१	१६	२५	२२	सिंह			६	५३	१७	२०	६	२९	२८	२७	भ. ४७/११ बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में २७/५०, मु. ३०, (C)
२६	४	१०	चं.	२०	५	उ.फा.	६०	०	वै.	११	५९	वि.	२०	५	२	१७	२६	२३	कन्या	१५	४२	६	५४	१७	२०	७	०	२८	५५	भ. २०/०५ तक, बुध विशा. में ५९/५०,
२६	१	११	मं.	२४	४६	उ.फा.	५	१७	वि.	१२	५९	बा.	२४	४६	३	१८	२७	२४	कन्या			६	५५	१७	२०	७	१	२९	२५	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	५८	१२	बु.	२७	५८	हस्त	१०	१३	प्री.	१२	५४	तै.	२७	५८	४	१९	२८	२५	तुला	४२	८	६	५६	१७	१९	७	२	२९	५७	सूर्य अनु. में ४६/००,
२५	५५	१३	गु.	२९	३०	चित्रा	१३	३६	आ.	११	३४	व.	२९	३०	५	२०	२९	२६	तुला			६	५७	१७	१९	७	३	३०	३०	भ. २९/३० से ५९/२५ तक, प्रदोष व्रत,
२५	५२	१४	शु.	२९	२१	स्वाती	१५	२०	सौ.	८	५६	श.	२९	२१	६	२१	३०	२७	तुला			६	५८	१७	१८	७	४	३१	५	
२५	४९	३०	श.	२७	३८	विशा.	१५	३१	शो.	५	३	ना.	२७	३८	७	२२	मा.१	२८	वृश्चिक	०	३८	६	५९	१७	१८	७	५	३१	४१	मंगल उ.षा. में ५४/३०, सूर्य सायन धनु में २०/२२, (D)

(A)(देखें पृ. 15),(B) अस्त ६ घं. ५३ मि., (C) पुण्यकाल ११/५१ बाद, नेप्च्यून मार्गी १४/२६, (D) शनैश्चरी अमावस, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१५ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २८ २८ २	४ २ २५ ०	८ २० ३५ १०	६ १५ १० २२	३ २७ ३९ २१	७ ३ ४० ५८	७ १ २७ ३७	५ २३ २१ ३७	११ २३ २१ ३७
६० २६	७१० ३१	४५ ३५	९४ २९	४ २३	७५ १७	७ ९	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
विशा. ३	मघा १	पू.षा. ३	स्वा. ३	आश्ले. ४	अनु. १	विशा. ४	चित्रा १	रेव. ३

कुण्डली सूर्योदय (१५ नवं.)

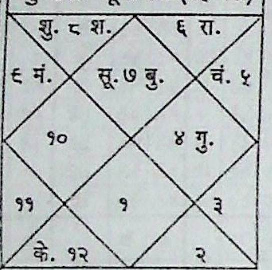

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में सूर्य-शनि-शुक्र एकत्र होने से किसी विशिष्ट-व्यक्ति के पदरिक्त होने का संकेत मिलता है । अमावस्या को शनिवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं रोग से प्रजाहानि, कहीं अकस्मात् सत्ता-हस्तान्तरण हो;- " अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगमः । जलशोषः प्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में बाजार ऊपर-नीचे रहेंगे । १२, १३ नवं. को गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा में तेज़ी; रुई, चान्दी, अफीम में पहले मन्दी, पीछे तेज़ी बने । १४ नवं. को गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, दालें मन्दी होकर तुरन्त तेज़ी पकड़ें । सोना-चान्दी मन्दे रहें । १६ से १९ नवं. तक रुई, चान्दी, तांबा, सोना, ऊर्नीवस्त्र तेज़ रहें । १७ नवं. को रुई में खासी मन्दी और २२ नवं. के लगभग विशेष तेज़ी बनेगी ।

आकाशलक्षणः- नवं. ८, १२, १४ से १६ तक एवं २२ नवं. को हरियाणा, जम्मू-काश्मीर एवं उत्तरी भारत में शीतलहर चलेगी । इस पक्ष में वायुवेग के साथ अनेकत्र वर्षा एवं हिमाचल आदि में ज़ोरदार बर्फबारी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२२ नवं.)

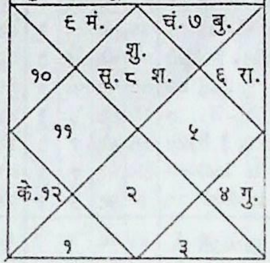

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२२ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ५ ३१ ४२	६ २९ २ ४१	८ २५ ५५ २४	६ २६ १५ ५५	३ २८ ६ १६	७ १२ २८ ६	७ २ १७ ४१	५ २२ ५९ २१	११ २२ ५९ २१
६० ३९	८०६ ५२	४५ ५७	९५ १८	३ ७	७५ १९	७ ८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
अनु. १	विशा. ३	पू.षा. ४	विशा. २	आश्ले. ४	अनु. ३	विशा. ४	हस्त ४	रेव. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२३ नवंबर से ६ दिसम्बर तक, सन् २०१४ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु । बु. अस्त है । श. पक्षान्त में उदित होगा और शु. २६ नवं. के बाद सायं पश्चिम में दृश्य हो जाएगा । प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त में और सायं मं. पश्चिम में होगा ।
															मार्गशीर्ष	नवंबर	मार्गशीर्ष	मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४६	१	र.	२४	३६	अनु.	१४	२१	अ. सु.	० ५४	४ ७	ब.	२४	३६	८	२३	२	२९	वृश्चिक			६	५९	१७	१८	७	६	३२	१९	चन्द्रदर्शन, मु. १५, शुक्र उदित- २६ नवम्बर
२५	४३	२	चं.	२०	३०	ज्येष्ठा	१२	६	धृ.	४७	२७	कौ.	२०	३०	९	२४	३	स.१	धनु	१२	६	७	०	१७	१७	७	७	३२	५८	बुध वृश्चिक में १७/२५, बलि. दिन श्रीगुरु तेग़बहादुर जी(A)
२५	४०	३	मं.	१५	३९	मूल	९	३	शू.	४०	१७	ग.	१५	३९	१०	२५	४	२	धनु			७	१	१७	१७	७	८	३३	३९	भ. ४२/५६ बाद, शुक्र ज्येष्ठा में १६/५२,
२५	३७	४	बु.	१०	२०	पूषा.	५	३०	गं.	३२	५०	वि.	१०	२०	११	२६	५	३	मकर	१९	३३	७	२	१७	१७	७	९	३४	२१	भ. १०/२० तक, बुध अनु. में २३/३५, शुक्र पश्चिम में (B)
२५	३५	५	गु.	४	४८	उ.षा. श्रव.	१ ५७	४३ ५७	वृ.	२५	१७	बा.	४	४८	१२	२७	६	४	मकर			७	३	१७	१७	७	१०	३५	४	मंगल मकर में १४/४७, स्कन्द-गुह-चम्पा षष्टी, बलिदान (C)
अवम		६	गु.	५९	१८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
२५	३२	७	शु.	५३	५५	धनि.	५४	१९	ध्रु.	१७	४८	ग.	२६	३६	१३	२८	७	५	कुम्भ	२६	५	७	४	१७	१७	७	११	३५	४८	भ. ५३/५५ बाद, पंचक प्रारम्भ २६/०५, मित्रसप्तमी,
२५	३०	८	श.	४८	४९	शत.	५०	५७	व्या.	१०	२८	वि.	२१	२२	१४	२९	८	६	कुम्भ			७	४	१७	१६	७	१२	३६	३३	भ. २१/२२ तक, शुक्र बाल्य समाप्त १७ घं. १७ मि.,
२५	२८	९	र.	४४	४	पू.भा.	४७	५६	ह. व.	३ ५६	२२ ३६	बा.	१६	२६	१५	३०	९	७	मीन	३३	३८	७	५	१७	१६	७	१३	३७	१९	शनि अनु. १ में ४१/४५,
२५	२५	१०	चं.	३९	४३	उ.भा.	४५	१८	सि.	५०	८	तै.	११	५३	१६	दि.१	१०	८	मीन			७	६	१७	१६	७	१४	३८	६	दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२३	११	मं.	३५	५०	रेव.	४३	९	व्य.	४४	३	व.	७	४६	१७	२	११	९	मेष	४३	९	७	७	१७	१६	७	१५	३८	५४	भ. ७/४६ से ३५/५० तक, पंचक समाप्त ४३/०६, सूर्य(D)
२५	२१	१२	बु.	३२	२९	अश्वि.	४१	३१	व.	३८	२३	ब.	४	९	१८	३	१२	१०	मेष			७	८	१७	१६	७	१६	३९	४३	
२५	१९	१३	गु.	२९	४७	भर.	४०	३३	प.	३३	१५	कौ.	१	८	१९	४	१३	११	वृष	५५	२६	७	९	१७	१६	७	१७	४०	३३	बुध ज्येष्ठा में ५०/५५, प्रदोष व्रत,
२५	१७	१४	शु.	२७	५२	कृत्ति.	४०	२३	शि.	२८	४४	व.	२७	५२	२०	५	१४	१२	वृष			७	९	१७	१६	७	१८	४१	२३	भ. २७/५२ से ५७/२४ तक, शुक्र मूल धनु में ५३/५५,
२५	१६	१५	श.	२६	५६	रोहि.	४१	११	सि.	२४	५८	ब.	२६	५६	२१	६	१५	१३	वृष			७	१०	१७	१६	७	१९	४२	१५	शनि उदित ७ घं. १० मि. श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,

(A) (ना.शा.), सफर मु. प्रारम्भ, (B) उदित १७ घं. १७ मि., (C) दिन श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (पुरातन परम्परा), (D) ज्येष्ठा में ५६/१३, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	९	७	३	७	७	५	११
१२	७	१	७	२८	२१	३	२२	२२
३६	५	१८	२१	२४	१५	७	३७	३७
३४	७	३	९	१२	१९	३२	६	६
६०	८४५	४६	९४	१	७५	७	३	३
४६	४७	१५	३८	४९	१९	५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अनु. ३	शत. १	उ.षा. २	अनु. २	आश्ले. ४	ज्ये. २	विशा. ४	हस्त ४	रेव. २

कुण्डली सूर्योदय (२६ नवं.)

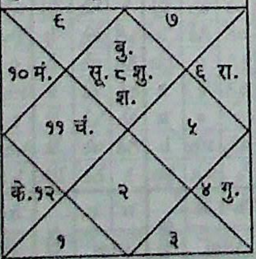

लोकभविष्यः- इस पक्ष में सूर्य, शुक्र, बुध, शनि- ये सभी कन्याराशि में हैं । राजनीतिज्ञों के लिए समय कठिन है । वृश्चिक में शनि का उदय एवं शनि का अनुराधा में प्रवेश सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत परेशानी करे । महानगरों में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि एवं कहीं उग्रवादियों द्वारा जनधनहानि भी संभव है;-

"अनुराधायां यदा सौरिर्यस्मिन् पक्षे प्रवर्तते ।
पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी तेज़, अनाज मन्दे रहें । २५ नवं. को सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग मन्दे रहें । २६-२७ नवं से २ दिसं. तक सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें । ४-५ दिसं. को घी, गुड़, खाण्ड, चावल, रूई, सोना, चान्दी, शेयर भी तेज़ रहें । ६ दिसं. को बाज़ार लड़खड़ा सकते हैं ।

आकाशलक्षणः- नवं २४ से ३० तक एवं दिसं. १ से ६ तक उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में रहेगा । धुन्द से परेशानी रहे । इन दिनों पर्वतीय-भूभाग हिमपात से कटा रहेगा । ६ दिसं. को उ.प्र., राज., म.प्र., पंजाब, हरियाणा में वर्षा भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (६ दिसं.)

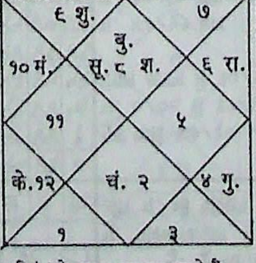

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
६ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	९	७	३	८	७	५	११
१९	१३	६	१८	२८	०	३	२२	२२
४२	२४	४२	२२	३२	२	५६	१४	१४
१६	५१	३५	०	५०	२७	४७	५०	५०
६०	७८५	४६	९४	०	७५	६	३	३
५३	२९	२९	१३	२७	१८	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये. १	रोहि. २	उ.षा. ४	ज्ये. १	आश्ले. ४	मूल १	अनु. १	हस्त ४	रेव. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, पौष कृष्ण पक्ष १८

(७ से २१ दिसम्बर तक, सन् २०१४ ई.)
दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु।

बु. पूर्ववत् अस्त है । प्रातः श. पूर्वक्षितिज पर और गु. पश्चिमकपाल में होगा । सायं शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न और मं. भी पश्चिम में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. सफर	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१४	१	र.	२७	९	मृग.	४३	९	सा.	२२	६	कौ.	२७	९	२२	७	१६	१४	मिथुन	१२	०	७	११	१७	१६	७	२०	४३	८	
२५	१२	२	चं.	२८	४०	आर्द्रा	४६	२५	शु.	२०	१४	ग.	२८	४०	२३	८	१७	१५	मिथुन			७	१२	१७	१७	७	२१	४४	१	गुरु वक्री ४७/३०,
२५	११	३	मं.	३१	३७	पुन.	५१	३	शु.	१९	२६	व.	०	८	२४	९	१८	१६	कर्क	३४	४६	७	१२	१७	१७	७	२२	४४	५६	भ. ०/०८ से ३१/३७ तक,
२५	१०	४	बु.	३५	५७	पुष्य	५६	५७	ब्र.	१९	४२	ब.	३	४७	२५	१०	१९	१७	कर्क			७	१३	१७	१७	७	२३	४५	५२	मंगल श्रवण में १०/१५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	८	५	गु.	४१	२९	आश्ले.	६०	०	ऐं.	२०	५४	कौ.	८	४३	२६	११	२०	१८	कर्क			७	१४	१७	१७	७	२४	४६	४९	
२५	७	६	शु.	४७	५१	आश्ले.	३	५३	वै.	२२	४९	ग.	१४	४०	२७	१२	२१	१९	सिंह	३	५३	७	१४	१७	१७	७	२५	४७	४७	भ. ४७/५१ बाद,
२५	६	७	श.	५४	२९	मघा	११	२७	वि.	२५	६	वि.	२१	१०	२८	१३	२२	२०	सिंह			७	१५	१७	१८	७	२६	४८	४६	भ. २१/१० तक, बुध मूल धनु में १६/४७,
२५	५	८	र.	६०	०	पू.फा.	१९	४	प्री.	२७	१९	बा.	२७	३६	२९	१४	२३	२१	कन्या	३५	५६	७	१६	१७	१८	७	२७	४९	४६	
२५	४	८	चं.	०	४४	उ.फा.	२६	६	आ.	२९	१	कौ.	०	४४	३०	१५	२४	२२	कन्या			७	१६	१७	१८	७	२८	५०	४८	
२५	४	९	मं.	५	५८	हस्त	३१	५७	सौ.	२९	४६	ग.	५	५८	पौ.१	१६	२५	२३	कन्या			७	१७	१७	१९	७	२९	५१	५०	भ. ३७/४८ बाद, सं. सूर्य मूल धनु में ३/३२, मु. ३०,(A)
२५	३	१०	बु.	९	३९	चित्रा	३६	८	शो.	२९	१४	वि.	९	३९	२	१७	२६	२४	तुला	४	१६	७	१८	१७	१९	८	०	५२	५३	भ. ६/३६ तक,
२५	३	११	गु.	११	२५	स्वाती	३८	२५	अ.	२७	१०	बा.	११	२५	३	१८	२७	२५	तुला			७	१८	१७	१९	८	१	५३	५७	सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	२	१२	शु.	११	८	विशा.	३८	४३	सु.	२३	३२	तै.	११	८	४	१९	२८	२६	वृश्चिक	२३	४८	७	१९	१७	२०	८	२	५५	२	प्रदोष व्रत,
२५	२	१३	श.	८	५१	अनु.	३७	१०	धृ.	१८	२३	व.	८	५१	५	२०	२९	२७	वृश्चिक			७	१९	१७	२०	८	३	५६	८	भ. ८/५१ से ३६/५० तक,
२५	२	१४	र.	४	५०	ज्येष्ठा	३४	३	शू.	११	५२	श.	४	५०	६	२१	३०	२८	धनु	३४	३	७	२०	१७	२१	८	४	५७	१५	बुध पू.षा. में ४४/४८, यूरेनस मार्गी ५२/२३, सूर्य (B)
अवम		३०	र.	५९	२४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) पुण्यकाल १६/३३ तक, शुक्र पू.षा. में ३१/०७, (B) सायन मकर में ५३/००, शिशिरऋतु एवम् उत्तरायण प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१५ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २८ ५० ४६	५ ३ ५४ २०	९ १३ ४२ १	८ २ ३१ ४	३ २८ २६ ५३	८ ११ २० ३	७ ४ ५८ ३५	५ २१ ४६ १३	११ २१ ४६ १३
६१ २	७२१ १८	४६ ४४	६४ ४३	१ १६	७५ १७	६ ४४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. ४	उ.फा. ३	श्रव. २	मूल १	आश्ले. ४	मूल ४	अनु. १	हस्त ४	रेव. २

कुण्डली सूर्योदय (१५ दिसं.)

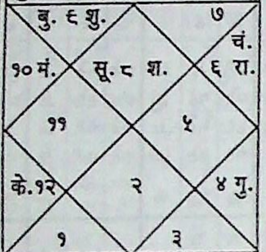

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में बृहस्पति कर्कराशि में वक्री हो रहा है । सूर्य, बुध, शुक्र धनु राशि में एकत्र हैं; शनि भी मंगल की दृष्टि में है और अमावस्या तिथिक्षय है - ये सारे योग जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेज़ी से आक्रेश के कारण बनेंगे । वर्षा के अभाव से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं दक्षिण भारत में प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प, तूफान आदि) से हानि हो ;- "कर्कराशिगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत् । तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं राजानो युद्धतत्पराः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ८ से १२ दिसंबर तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, जौ, चना, तिल, अफीम, सोना, चान्दी, गेहूं, चावल, नमक आदि खाद्य एवम् सुगन्धित पदार्थ अच्छे तेज़ हों । १३ से २१ दिसंबर तक रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, अलसी, दालदाना, तिलहन में अच्छी घटाबढ़ी रहे, लेकिन मन्दी प्रधान रहे । समझ से काम करें ।

आकाशलक्षणः- दिसं. ७ से ११ एवं १६, १७, २०, २१ दिसं. को उ.भारत में भयंकर शीत से हानि हो । अनेक प्रान्त धुन्द व वर्षा से प्रभावित हों ।

कुण्डली सूर्योदय (२१ दिसं.)

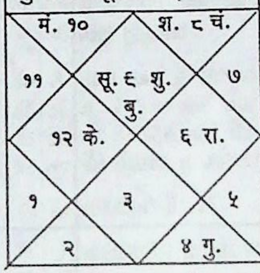

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२१ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ४ ५७ १६	७ २० ५४ ४७	९ १८ २२ ४६	८ १२ १ २२	३ २८ १६ ४	८ १८ ५१ ४४	७ ५ ३८ २६	५ २१ २७ ८	११ २१ २७ ८
६१ ७	८५० २८	४६ ५२	६५ ३२	२ २६	७५ १६	६ ३१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल २	ज्ये. २	श्रव. ३	मूल ४	आश्ले. ४	पू.षा. २	अनु. १	हस्त ४	रेव. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, पौष शुक्ल पक्ष १९

(२२ दिसंबर, २०१४ से ५ जनवरी सन् २०१५ ई. तक,)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

१ जन., २०१५ को बु. पश्चिम में उदित होगा । प्रातः श. पूर्व में और गु. पश्चिम में होगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज में और मं. भी पश्चिम में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	दिसंबर	पौष	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	चं.	५२	५६	मूल	२९	४३	ग. वृ.	४ ५५	१६ ५३	किं.	२६	१०	७	२२	पौ.१	२९	धनु			७	२०	१७	२१	८	५	५८	२२	शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	२	मं.	४५	५०	पू.षा.	२४	३७	ध्रु.	४७	०	बा.	१९	२३	८	२३	२	३०	मकर	३८	१५	७	२१	१७	२२	८	६	५९	२९	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
२५	२	३	बु.	३८	३२	उ.षा.	१९	९	व्या.	३७	५७	तै.	१२	११	९	२४	३	र.१	मकर			७	२१	१७	२२	८	८	०	३७	रबि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२५	२	४	गु.	३१	२४	श्रव.	१३	४२	ह.	२९	२	व.	४	५८	१०	२५	४	२	कुम्भ	४१	६	७	२२	१७	२३	८	९	१	४६	भ. ४/५८ से ३१/२४ तक,पंचक प्रारम्भ ४१/०६, क्रिस्मस डे,
२५	३	५	शु.	२४	४५	धनि.	८	३८	व.	२०	२९	बा.	२४	४५	११	२६	५	३	कुम्भ			७	२२	१७	२३	८	१०	२	५४	जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.),
२५	३	६	श.	१८	४८	शत.	४	१३	सि.	१२	३१	तै.	१८	४८	१२	२७	६	४	मीन	४६	२७	७	२३	१७	२४	८	११	४	३	मंगल धनि. में १५/३०, शुक्र उ.षा. में ८/३७,
२५	४	७	र.	१३	४५	पू.भा. उ.भा.	० ५८	३८ १	व्य. व.	५ ५८	१४ ४५	व.	१३	४५	१३	२८	७	५	मीन			७	२३	१७	२५	८	१२	५	११	भ. १३/४५ से ४१/४२ तक, अवतार दिन श्रीगुरु (A)
२५	५	८	चं.	९	४०	रेव.	५६	२०	प.	५३	१	ब.	९	४०	१४	२९	८	६	मेष	५६	२०	७	२३	१७	२५	८	१३	६	२०	पंचक समाप्त ५६/२०, सूर्य पू.षा. में ८/४०, शुक्र मकर (B)
२५	६	९	मं.	६	३३	अश्वि.	५५	३६	शि.	४८	३	कौ.	६	३३	१५	३०	९	७	मेष			७	२४	१७	२६	८	१४	७	२८	बुध उ.षा. में ५/१२, शनि अनु. २ में ३७/२२,
२५	७	१०	बु.	४	२५	भर.	५५	४७	सि.	४३	४९	ग.	४	२५	१६	३१	१०	८	मेष			७	२४	१७	२७	८	१५	८	३७	भ. ३३/४८ बाद,
२५	८	११	गु.	३	११	कृत्ति.	५६	४९	सा.	४०	१६	वि.	३	११	१७	ज.१	११	९	वृष	१०	५७	७	२४	१७	२७	८	१६	९	४५	भ. ३/११ तक, बुध मकर में १०/५२, बुध पश्चिम में (C)
२५	९	१२	शु.	२	५१	रोहि.	५८	४२	शु.	३७	२५	बा.	२	५१	१८	२	१२	१०	वृष			७	२४	१७	२८	८	१७	१०	५३	प्रदोष व्रत,
२५	१०	१३	श.	३	२४	मृग.	६०	०	शु.	३५	१६	तै.	३	२४	१९	३	१३	११	मिथुन	२९	५९	७	२५	१७	२९	८	१८	१२	१	
२५	१२	१४	र.	४	५४	मृग.	१	३०	ब्र.	३३	५१	व.	४	५४	२०	४	१४	१२	मिथुन			७	२५	१७	३०	८	१९	१३	९	भ.४/५४ से ३६/०९ तक, मंगल कुम्भ में ४६/२५, (D)
२५	१३	१५	चं.	७	२५	आर्द्रा	५	१६	ऐं.	३३	१४	ब.	७	२५	२१	५	१५	१३	कर्क	५३	४६	७	२५	१७	३०	८	२०	१४	१७	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

(A) गोविन्द सिंह जी, (B) में ४८/१०, (C) उदित १७ घं. २७ मि., पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), जनवरी (इंग्लिश नववर्ष सन् २०१५ ई.) प्रारम्भ, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२९ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	८	३	८	७	५	११
१३	१६	२४	२४	२७	२८	६	२१	२१
६	२	३८	४८	५३	५३	२९	१	१
२१	२०	५	१५	५३	४२	३१	४२	४२
६१	८२३	४६	९५	३	७५	६	३	३
८	१२	५८	५२	५८	१२	१०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	उ.भा. ४	धनि. १	पू.षा. ४	आश्ले. ४	उ.षा. १	अनु. १	हस्त ४	रेव. २

कुण्डली सूर्योदय (२९ दिसं.)

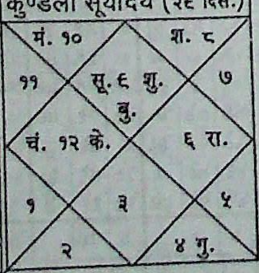

लोकभविष्य :- पक्ष के पूर्वार्ध में शनि की मंगल पर दृष्टि कहीं दुर्घटना में जानी व माली नुक्सान का संकेत देती है । सीमाप्रान्तों पर भी शत्रुदेश की गतिविधि से राष्ट्र के प्रहरियों को सावधान रहना आवश्यक है । इस पक्ष में शनि-मंगल का राशि-व्यत्यय, मंगल का राहु के साथ षडष्टक, मकरस्थ बुध-शुक्र पक्षान्त में महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं कुछ अन्य प्रान्तों में अवर्षण किंवा अतिवर्षण से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी । बुध का पश्चिम में उदय भी कहीं जल, कहीं अग्निकाण्ड, कृषिहानि किंवा मुस्लिमराष्ट्र में उपद्रव का संकेत देता है;-
"जल-दहन-यवनभयकृद्धान्यार्घ-क्षयविवृद्धये ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में वायदा बाज़ारों में तेज़ी रहेगी । रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने । [अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, रुई, सूत, अनाज, २७/२८ दिसं. को अचानक नीचे आ सकते हैं ।] २९ दिसं. को शेयर, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि अनाज तेज़ रहें । ३० दिसंबर से ४ जनवरी (२०१५) तक सभी चीज़ों में ज़ोरदार तेज़ी-मन्दी के झटके आएंगे ।

आकाशलक्षण :- २७ से ३१ दिसं तक एवं १, ४, ५ जनवरी, २०१५ ई. को उत्तरी भारत, दिल्ली, उ.प्र., उ.खण्ड, राज. आदि में सर्वत्र शीतलहर चलेगी । पर्वतीय उन्नतशृंग हिमाच्छादित रहेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (५ जन.)

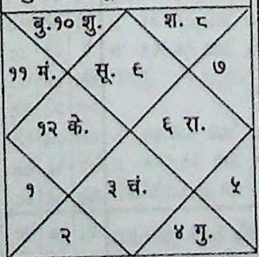

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
५ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	१०	९	३	९	७	५	११
२०	१७	०	५	२७	७	७	२०	२०
१४	५४	६	५१	२२	३९	११	३९	३९
१८	३८	५२	३४	२८	५३	४३	२६	२६
६१	७४३	४६	९१	५	७५	५	३	३
८	७	५९	५१	१०	७	४९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	आर्द्रा ४	धनि. ३	पू.षा. ३	आश्ले. ४	उ.षा. ४	अनु. २	हस्त ४	रेव. २

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, माघ कृष्ण पक्ष २०

(६ से २० जनवरी तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

प्रातः श. पूर्व में और गु. पश्चिम में होगा । १३/१४ जन. को सायं बु. शु. पश्चिमक्षितिज में परमासन्न दीखेंगे । इस समय मं. इनसे कुछ ऊपर उठा होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	तारीखें अं. जनवरी	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१५	१	मं.	१०	५९	पुन.	१०	३	वै.	३३	२६	कौ.	१०	५९	२२	६	१६	१४	कर्क			७	२५	१७	३१	८	२१	१५	२४	शुक्र श्रवण में ४७/०७,
२५	१७	२	बु.	१५	३९	पुष्य	१५	५२	वि.	३४	२६	ग.	१५	३९	२३	७	१७	१५	कर्क			७	२५	१७	३२	८	२२	१६	३२	भ. ४८/२९ बाद, बुध श्रवण में ३९/५२,
२५	१९	३	गु.	२१	१९	आश्ले.	२२	३९	प्री.	३६	८	वि.	२१	१९	२४	८	१८	१६	सिंह	२२	३९	७	२५	१७	३३	८	२३	१७	४०	भ. २१/१९ तक, श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत (A)
२५	२१	४	शु.	२७	४५	मघा	३०	७	आ.	३८	२२	बा.	२७	४५	२५	९	१९	१७	सिंह			७	२५	१७	३३	८	२४	१८	४८	
२५	२३	५	श.	३४	३५	पू.फा.	३७	५८	सौ.	४०	४९	कौ.	१	१०	२६	१०	२०	१८	कन्या	५४	५६	७	२५	१७	३४	८	२५	१९	५५	
२५	२५	६	र.	४१	१५	उ.फा.	४५	३८	शो.	४३	७	ग.	७	५५	२७	११	२१	१९	कन्या			७	२५	१७	३५	८	२६	२१	३	भ. ४१/१५ बाद, सूर्य उ.षा. में १३/४७,
२५	२७	७	चं.	४७	९	हस्त	५२	३२	अ.	४४	५०	वि.	१४	१२	२८	१२	२२	२०	कन्या			७	२५	१७	३६	८	२७	२२	११	भ. १४/१२ तक, वक्री गुरु आश्ले. ३ में २६/१५,
२५	२९	८	मं.	५१	४१	चित्रा	५८	६	सु.	४५	३३	बा.	१९	२५	२९	१३	२३	२१	तुला	२५	३३	७	२५	१७	३७	८	२८	२३	१८	मंगल शत. में १७/२५, लोहड़ी (पं., हरि., जम्मू-काश्मीर),
२५	३२	९	बु.	५४	२१	स्वाती	६०	०	धृ.	४४	५४	तै.	२३	१	मा.१	१४	२४	२२	तुला			७	२५	१७	३८	८	२९	२४	२६	सं. सूर्य मकर में ३०/०५, मु. १५, पुण्यकाल १४/०४ (B)
२५	३४	१०	गु.	५४	५१	स्वाती	१	५०	शू.	४२	३७	व.	२४	३६	२	१५	२५	२३	वृश्चिक	४८	१७	७	२५	१७	३९	९	०	२५	३४	भ. २४/३६ से ५४/५१ तक, पोंगल (द.भा.),
२५	३७	११	शु.	५३	७	विशा.	३	२९	गं.	३८	३७	ब.	२३	५९	३	१६	२६	२४	वृश्चिक			७	२५	१७	३९	९	१	२६	४१	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२५	३९	१२	श.	४९	१७	अनु.	२	५८	वृ.	३२	५५	कौ.	२१	१२	४	१७	२७	२५	वृश्चिक			७	२४	१७	४०	९	२	२७	४८	शुक्र धनि. में २६/५२, राहु हस्त ३,केतु रेव. १ में १९/२५,
२५	४२	१३	र.	४२	३६	ज्येष्ठा मूल	० ५६	२५ ७	ध्रु.	२५	४१	ग.	१६	२६	५	१८	२८	२६	धनु	०	२५	७	२४	१७	४१	९	३	२८	५५	भ. ४३/३६ बाद, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
२५	४५	१४	चं.	३६	२८	पू.षा.	५०	३०	व्या.	१७	१०	वि.	१०	२	६	१९	२९	२७	धनु			७	२४	१७	४२	९	४	३०	१	भ. १०/०२ तक,
२५	४८	३०	मं.	२८	१९	उ.षा.	४३	५९	ह. व.	७ ५७	४२ ३७	च.	२	२३	७	२०	३०	२८	मकर	३	५५	७	२४	१७	४३	९	५	३१	७	सूर्य सायन कुम्भ में १९/३०, मौनी अमावस, भौमवती अमावस,

(A) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (B) बाद तथा अगले दिन १०/०५ तक, मकर संक्रान्ति,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २८ २३ २०	५ २३ ५२ ४	१० ६ २२ ३७	९ १७ ६ ५७	३ २६ ३७ ०	९ १७ ४० २९	७ ७ ५६ ३८	५ २० १४ ०	११ २० १४ ०
६१ ७	७३२ १०	४६ ५८	६९ ५	६ १९	७५ १	५ २१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. १	चित्रा १	धनि. ४	श्रव. ३	आश्ले. ३	श्रव. ३	अनु. २	हस्त ४	रेव. २

कुण्डली सूर्योदय (१३ जन.)

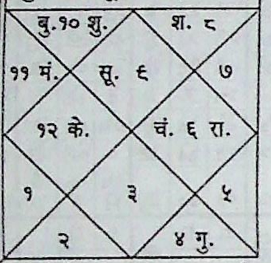

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं । शासकों में कहीं किसी मुस्लिमादि राष्ट्रों में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या हो किंवा सत्ता हस्तान्तरण हो ;-

> " यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः ।
> रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।"

मकर राशि में शनि-गुरुदृष्ट, सूर्य, बुध, शुक्र भी कहीं प्राकृतिक प्रकोप से महंगाई को [illegible] बना दें । प्राकृतिक-प्रकोप या उग्रवादियों से कहीं जनधनहानि भी हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ६ से १० जनवरी तक चान्दी-सोना, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द मन्दे रहें । ११ जन. से तिलहन, गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, उड़द, मोठ, मूंग आदि अनाज एवम् घी, तेल भी तेज़ रहें । १४ जनवरी को रसकस, अनाज, बारदाना में मन्दा आकर १७ जनवरी को अनाज, दालवाना, सोना, चान्दी, रुई, सूत में तेज़ी रहे ।

आकाशलक्षणः- जन. ६, ७, ११ से १७ एवं २० जन. के लगभग धुन्द एवं शीतलहर का ज़ोर रहे । अनेकत्र खण्डवृष्टि हो । काश्मीर एवं हि. प्र. में हिमपात हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२० जन.)

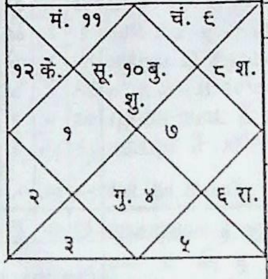

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२० जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ५ ३१ ९	८ २७ ५० ३९	१० ११ ५१ ११	९ २२ ४५ ४६	३ २५ ५० ११	९ २६ २५ १८	७ ८ ३२ ३९	५ १९ ५१ ४५	११ १९ ५१ ४५
६१ ५	८९९ ५	४६ ५५	१२ ५५	७ ७	७४ ५५	४ ५२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	उ.षा. १	शत. २	श्रव. ४	आश्ले. ३	धनि. १	अनु. २	हस्त ३	रेव. १

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२१ जनवरी से ३ फरवरी तक, सन् २०१५ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

बु. २४ जन. को अस्त होगा । प्रातः श. पूर्वकपाल में और गु. पश्चिम में होगा । सायं शु. मं. पश्चिमक्षितिज के नज़दीक होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															माघ	जनवरी	माघ	र.उ.ल.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५१	१	बु.	१९	३८	श्रव.	३७	४	सि.	४७	१९	ब.	१९	३८	८	२१	मा.१	२९.	मकर			७	२३	१७	४४	९	६	३२	१३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध वक्री ३५/००, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५४	२	गु.	१०	५१	धनि.	३०	१२	व्य.	३७	९	कौ.	१०	५१	९	२२	२	र.१	कुम्भ	३	३६	७	२३	१७	४५	९	७	३३	१८	पंचक प्रारम्भ ३/३६, शुक्र कुम्भ में ४७/१७, गौरी तृतीया(A)
२५	५७	३	शु.	२	२५	शत.	२३	५१	व.	२७	२५	ग.	२	२५	१०	२३	३	२	कुम्भ			७	२३	१७	४६	९	८	३४	२२	भ. २८/३३ से ५४/४२ तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
अवम		४	शु.	५४	४२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२६	०	५	श.	४८	३	पू.भा.	१८	२२	प.	१८	२६	ब.	२१	२२	११	२४	४	३	मीन	४	३८	७	२२	१७	४७	९	९	३५	२५	सूर्य श्रवण में १६/३०, बुध पश्चिम में अस्त (B)
२६	४	६	र.	४२	४२	उ.भा.	१४	२	शि.	१०	२४	कौ.	१५	२२	१२	२५	५	४	मीन			७	२२	१७	४७	९	१०	३६	२७	
२६	७	७	चं.	३८	४६	रेव.	११	४	सि. सा.	३ ५७	२७ ३९	ग.	१०	४४	१३	२६	६	५	मेष	११	४	७	२२	१७	४८	९	११	३७	२८	भ. ३८/४६ बाद, पंचक समाप्त ११/०४, प्लूटो पू.षा. (C)
२६	११	८	मं.	३६	२०	अश्वि.	९	३३	शु.	५३	३	वि.	७	३३	१४	२७	७	६	मेष			७	२१	१७	४९	९	१२	३८	२८	भ. ७/३३ तक, भीष्माष्टमी,
२६	१४	९	बु.	३५	२०	भर.	९	२७	शु.	४९	३३	बा.	५	५०	१५	२८	८	७	वृष	२४	४०	७	२१	१७	५०	९	१३	३९	२७	शुक्र शत. में ८/१६,
२६	१८	१०	गु.	३५	४१	कृत्ति.	१०	४४	ब्र.	४७	४	तै.	५	३०	१६	२९	९	८	वृष			७	२०	१७	५१	९	१४	४०	२५	
२६	२१	११	शु.	३७	१६	रोहि.	१३	१४	ऐं.	४५	३१	व.	६	२८	१७	३०	१०	९	मिथुन	४४	५४	७	१९	१७	५२	९	१५	४१	२१	भ. ६/२८ से ३७/१६ तक, मंगल पू. भा. में २१/४३, (D)
२६	२५	१२	श.	३९	५५	मृग.	१६	५०	वै.	४४	४७	ब.	८	३५	१८	३१	११	१०	मिथुन			७	१९	१७	५३	९	१६	४२	१६	भीष्म द्वादशी,
२६	२८	१३	र.	४३	३४	आर्द्रा	२१	२५	वि.	४४	४६	कौ.	११	४४	१९	फ.१	१२	११	मिथुन			७	१८	१७	५४	९	१७	४३	१०	प्रदोष व्रत, फरवरी प्रारम्भ,
२६	३२	१४	चं.	४८	५	पुन.	२६	५२	प्री.	४५	२६	ग.	१५	४९	२०	२	१३	१२	कर्क	१०	२६	७	१८	१७	५५	९	१८	४४	३	भ. ४८/०५ बाद,
२६	३६	१५	मं.	५३	२४	पुष्य	३३	५	आ.	४६	४१	वि.	२०	४४	२१	३	१४	१३	कर्क			७	१७	१७	५५	९	१९	४४	५५	भ. २०/४४ तक, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, (E)

(A) (गौंतरी), रबि-उस्सानी मु. प्रारम्भ, (B) १७ घं. ४७ मि., श्री(लक्ष्मी)पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (C) ३ में २६/१७, मर्यादा महोत्सव (जैन), भारत गणतंत्रता दिवस, आरोग्य सप्तमी, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (D) जया एकादशी व्रत (स.), (E) माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १२ ३८ २९	० १० ७ ४८	१० १७ १९ १४	९ २० २० २५	३ २४ ५८ २९	१० ५ ९ १२	७ ९ ५ ९	५ १९ २९ २९	११ १९ २९ २९
६० ५९	८०५ ५६	४६ ४७	६१ २३	७ ४०	७४ ४४	४ २०	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ श्रव.	४ अश्वि.	४ शत.	४ श्रव.	३ आश्ले.	४ धनि.	२ अनु.	३ हस्त	१ रेव.

कुण्डली सूर्योदय (२७ जन.)

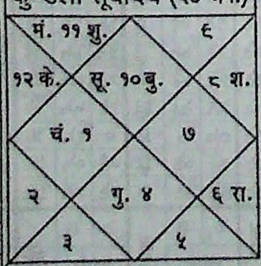

लोकभविष्य:– मंगल, शुक्र कुम्भ राशिस्थ हैं । बुध, गुरु दोनों वक्री हैं, मकरस्थ सूर्य-बुध, गुरु के साथ समसप्तक बना रहे हैं । जनता में रोगभय एवं महंगाई से जनजीवन त्रस्त रहे । सप्तमी चन्द्रवारी होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं शासकों में परस्पर वैमत्य किंवा प्रान्त-विशेष में कहीं शासकीय परिवर्तन भी संभव है ;–

> "सप्तम्यां चन्द्रवार: स्यान्माघेपक्षे सिते यदि ।
> दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :– पक्षारम्भ में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बने । गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, मूंग, ज्वार, बाजरा, घी, चीनी मन्दे हों । २३/२४ जन. को अनाज, दालवाना, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, सुपारी, लौंग तेज़ रहें । रुई, शेयर, पाट, हैसियन मन्दे हों । २८ से ३१ जन. तक गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सोना, चान्दी, सभी तिलहन, नारियल, सुपारी, कपास तेज़ रहें ।

आकाशलक्षण :– जन. २२ से २४, २८, ३० तक उ. भारत में शीत का प्रकोप जारी रहे । कुछ प्रान्तों में कहीं बादलचाल, बूंदाबांदी व खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (३ फर.)

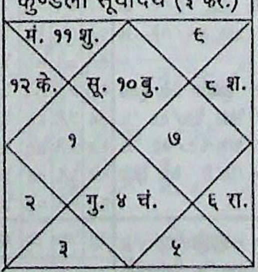

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १९ ४४ ५६	३ ९ ७ १६	१० २२ ४६ १९	९ १२ ८ २	३ २४ ३ ४७	१० १३ ५१ ४५	७ ९ ३३ ५०	५ १९ ७ १४	११ १९ ७ १४
६० ५१	७२१ ५९	४६ ३८	६३ २३	७ ५६	७४ ३१	३ ४६	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ श्रव.	२ पुष्य	१ पू.भा.	१ श्रव.	३ आश्ले.	३ शत.	२ अनु.	३ हस्त	१ रेव.

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(४ से १८ फरवरी तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर–वसन्त ऋतु।

६ फर. को बु. पूर्व में उदित हो जाएगा । प्रातः श. पूर्वकपाल में और गु. पश्चिम-क्षितिजासन्न होगा । सायं शु. मं. पश्चिमक्षितिज में होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	र.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४०	१	बु.	५९	२४	आश्ले.	४०	१	सौ.	४८	२८	बा.	२६	२४	२२	४	१५	१४	सिंह	४०	१	७	१६	१७	५६	९	२०	४५	४६	
२६	४४	२	गु.	६०	०	मघा	४७	२९	शो.	५०	४०	तै.	३०	१०	२३	५	१६	१५	सिंह			७	१६	१७	५७	९	२१	४६	३५	वक्री बुध उ.षा. में ५/१५,
२६	४८	२	शु.	५	५७	पू.फा.	५५	१८	अ.	५३	७	ग.	५	५७	२४	६	१७	१६	सिंह			७	१५	१७	५८	९	२२	४७	२३	भ. ३९/२१ बाद, सूर्य धनि. में २७/४७, बुध पूर्व में (A)
२६	५२	३	श.	१२	४६	उ.फा.	६०	०	सु.	५५	३६	वि.	१२	४६	२५	७	१८	१७	कन्या	१२	१८	७	१४	१७	५९	९	२३	४८	११	भ. १२/४६ तक, शुक्र पू.भा. में ५२/२५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२६	५६	४	र.	१९	२८	उ.फा.	३	९	धृ.	५७	४८	बा.	१९	२८	२६	८	१९	१८	कन्या			७	१३	१८	०	९	२४	४८	५७	वक्री गुरु आश्ले. २ में २५/३०,
२७	०	५	चं.	२५	३८	हस्त	१०	३४	शू.	५९	२३	तै.	२५	३८	२७	९	२०	१९	तुला	४३	५९	७	१३	१८	१	९	२५	४९	४२	
२७	४	६	मं.	३०	४४	चित्रा	१७	६	गं.	५९	५९	व.	३०	४४	२८	१०	२१	२०	तुला			७	१२	१८	२	९	२६	५०	२७	भ. ३०/४४ बाद, शनि अनु. ३ में २६/०२,
२७	८	७	बु.	३४	१७	स्वाती	२२	१५	वृ.	५९	१७	वि.	२	३०	२९	११	२२	२१	तुला			७	११	१८	२	९	२७	५१	१०	भ. २/३० तक, बुध मार्गी ३३/०७,
२७	१२	८	गु.	३५	५६	विशा.	२५	३८	ध्रु.	५७	२	बा.	५	६	३०	१२	२३	२२	वृश्चिक	१०	०	७	१०	१८	३	९	२८	५१	५२	मंगल मीन में १५/०७,
२७	१७	९	शु.	३५	२७	अनु.	२६	५९	व्या.	५३	७	तै.	५	४१	फा.१	१३	२४	२३	वृश्चिक			७	९	१८	४	९	२९	५२	३३	सं. सूर्य कुम्भ में ३/१२, मु. ३०, पुण्यकाल १९/१२ तक,
२७	२१	१०	श.	३२	४८	ज्येष्ठा	२६	१४	ह.	४७	३०	व.	४	७	२	१४	२५	२४	धनु	२६	१४	७	९	१८	५	१०	०	५३	१३	भ.४/०७ से ३२/४८ तक,
२७	२५	११	र.	२८	६	मूल	२३	२६	व.	४०	१९	ब.	०	२७	३	१५	२६	२५	धनु			७	८	१८	६	१०	१	५३	५२	शुक्र मीन में ५७/३५, विजया एकादशी व्रत (स.),
२७	३०	१२	चं.	२१	३८	पू.षा.	१८	५२	सि.	३१	४६	तै.	२१	३८	४	१६	२७	२६	मकर	३२	२७	७	७	१८	७	१०	२	५४	२९	मंगल उ.भा. में ३४/१०, सोमप्रदोष व्रत,
२७	३४	१३	मं.	१३	४६	उ.षा.	१२	५४	व्य.	२२	८	व.	१३	४६	५	१७	२८	२७	मकर			७	६	१८	७	१०	३	५५	६	भ. १३/४६ से ३९/२० तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
२७	३८	१४	बु.	४	५५	श्रव. धनि.	५ ५८	५६ २४	व.	११	४५	श.	४	५५	६	१८	२९	२८	कुम्भ	३२	९	७	५	१८	८	१०	४	५५	४१	पंचक प्रारम्भ ३२/०९, बुध श्रवण में ५३/३७, शुक्र (B)
अवम		३०	बु.	५५	३०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) उदित ७ घं. १५ मि., (B) उ.भा. में ३९/४७, सूर्य सायन मीन में ५५/३७, वसन्तऋतु प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१२ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २८ ५१ ५३	६ २७ ० २०	१० २९ ४५ ६	९ ७ १४ २३	३ २२ ५२ ११	१० २५ १ १६	७ १० ४ ३७	५ १८ ३८ ३७	११ १८ ३८ ३७
६० ४१	७६९ ५८	४६ २३	६ १२	७ ५३	७४ १३	२ ५९	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. २	विशा. ३	पू.भा. ३	उ.षा. ४	आश्ले. २	पू.भा. २	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

कुण्डली सूर्योदय (१२ फर.)

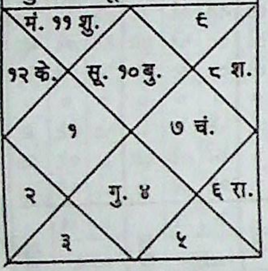

लोकभविष्यः- बुध का पूर्व में उदय, शनि की सूर्य-बुध पर दृष्टि एवं गुरुदृष्ट मंगल-शुक्र-केतु का मीन राशि में होना, कहीं आन्धी-तूफान (प्राकृतिक आपदा) एवं बिहार, छत्तीसगढ़, आसाम आदि में उग्रवादजन्य वारदात से जनता परेशान हो । सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का भी योग है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ५ से १० फरवरी तक अनाज, तिलहन, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च, सोना, चान्दी, जवाहरात, मूंग, मसूर, घी, तेल, नमक, चन्दन, केसर, कपूर में तेज़ी का वातावरण बनेगा । १२ फरवरी से पक्षान्त तक घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली आदि में तेज़ी । १५ फरवरी को सोना, चान्दी, रुई में धमाके की तेज़ी बन सकती है ।

कुण्डली सूर्योदय (१८ फर.)

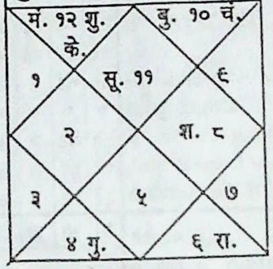

आकाशलक्षण :- ५ से १६ फरवरी तक श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बून्दा-बान्दी के योग हैं । उ.भारत में हवा का ज़ोर रहेगा और मौसम (ऋतु) परिवर्तन अनुभव होगा ।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१८ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ४ ५५ ४२	९ २० ४९ ५८	११ ४ २३ ३	९ ९ २२ १०	३ २२ ५ ३२	११ २ २६ २	७ १० २१ ४	५ १८ १९ ३३	११ १८ १९ ३३
६० ३३	९१३ ५७	४६ १३	३९ २४	७ ३४	७३ ५९	२ २५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	श्रव. ४	उ.भा. १	उ.षा. ४	आश्ले. २	पू.भा. ४	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(१९ फरवरी से ५ मार्च तक, सन् २०१५ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में और श. याम्योत्तरवृत्त में होगा । सायं गु. को पूर्व में उदय होता हुआ देखिए । इस समय शु. मं. पश्चिम में परम आसन्न दीखेंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	फरवरी	माघ	र.उ.स्सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	४३	१	गु.	४६	४	शत.	५०	५३	प. शि.	० ५०	५७ १०	किं.	२०	४७	७	१९	३०	२९	कुम्भ			७	४	१८	९	१०	५	५६	१४	सूर्य शत. में ३६/२८,
२७	४७	२	शु.	३७	०	पू.भा.	४३	४७	सि.	३९	४४	बा.	११	३२	८	२०	फा.१	३०	मीन	३०	२८	७	३	१८	१०	१०	६	५६	४६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, यूरेनस रेव. २ में ४६/३०, (A)
२७	५२	३	श.	२८	४४	उ.भा.	३७	३१	सा.	२९	५९	तै.	२	५२	९	२१	२	ज.१	मीन			७	२	१८	११	१०	७	५७	१७	भ. ५५/१० बाद, जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२७	५६	४	र.	२१	३७	रेव.	३२	२८	शु.	२१	११	वि.	२१	३७	१०	२२	३	२	मेष	३२	२८	७	१	१८	११	१०	८	५७	४५	भ. २१/३७ तक, पंचक समाप्त ३२/२८,
२८	१	५	चं.	१५	५८	अश्वि.	२८	५६	शु.	१३	३४	बा.	१५	५८	११	२३	४	३	मेष			७	०	१८	१२	१०	९	५८	१२	
२८	५	६	मं.	१२	०	भर.	२७	६	ब्र.	७	१९	तै.	१२	००	१२	२४	५	४	वृष	४१	५५	६	५९	१८	१३	१०	१०	५८	३७	होलाष्टक २६ फरवरी से ५ मार्च
२८	१०	७	बु.	९	५०	कृत्ति.	२७	२	ऐं. वै.	२ ५९	२९ २	व.	९	५०	१३	२५	६	५	वृष			६	५८	१८	१४	१०	११	५९	०	भ. ६/५० से ३६/३६ तक,
२८	१४	८	गु.	९	२८	रोहि.	२८	४३	वि.	५६	५८	ब.	९	२८	१४	२६	७	६	वृष			६	५७	१८	१४	१०	१२	५९	२१	होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	१९	९	शु.	१०	५०	मृग.	३२	१	प्री.	५६	८	कौ.	१०	५०	१५	२७	८	७	मिथुन	०	९	६	५६	१८	१५	१०	१३	५९	४०	
२८	२३	१०	श.	१३	४२	आर्द्रा	३६	४२	आ.	५६	१९	ग.	१३	४२	१६	२८	९	८	मिथुन			६	५५	१८	१६	१०	१४	५९	५७	भ. ४५/४७ बाद,
२८	२८	११	र.	१७	५२	पुन.	४२	३१	सौ.	५७	२०	वि.	१७	५२	१७	मा.१	१०	९	कर्क	२६	०	६	५३	१८	१७	१०	१६	०	१२	भ. १७/५२ तक, शुक्र रेव. में ३१/२५, नेप्च्यून शत. (B)
२८	३२	१२	चं.	२३	२	पुष्य	४९	११	शो.	५८	५९	बा.	२३	२	१८	२	११	१०	कर्क			६	५२	१८	१७	१०	१७	०	२५	गोविन्द द्वादशी,
२८	३७	१३	मं.	२८	५६	आश्ले.	५६	२८	अ.	६०	०	तै.	२८	५६	१९	३	१२	११	सिंह	५६	२८	६	५१	१८	१८	१०	१८	०	३७	बुध धनि. में ५८/३२, भौमप्रदोष व्रत (देखें पृ. 16),
२८	४२	१४	बु.	३५	१८	मघा	६०	०	अ.	१	५	ग.	२	८	२०	४	१३	१२	सिंह			६	५०	१८	१९	१०	१९	०	४६	भ. ३५/१८ बाद, सूर्य पू.भा. में ५५/४७,
२८	४६	१५	गु.	४१	५५	मघा	४	९	सु.	३	३०	वि.	८	३६	२१	५	१४	१३	सिंह			६	४९	१८	१९	१०	२०	०	५३	भ. ८/३६ तक, मंगल रेव. में ५९/०७, श्रीसत्यनारायण (C)

(A) शक फाल्गुन प्रारम्भ, अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) ३ में ४७/१७, आमला एकादशी व्रत (स.), मार्च प्रारम्भ, (C) व्रत, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	११	९	३	११	७	५	११
१२	१६	१०	१६	२१	१२	१०	१७	१७
५९	२३	३१	१६	७	१६	३७	५४	५४
२२	१	५१	५१	१२	३९	३७	७	७
६०	७६९	४५	६४	६	७३	१	३	३
१९	१४	५६	५३	५१	३६	३७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	रोहि. २	उ.भा. ३	श्रव. २	आश्ले. २	उ.भा. ३	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

कुण्डली सूर्योदय (२६ फर.)

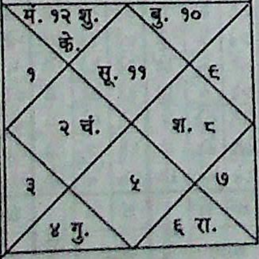

लोकभविष्यः- शुक्र-केतु रेवती नक्षत्र में हैं । मुस्लिम-राष्ट्रविशेष में अराजकता रहे । दक्षिणी प्रान्तों में अशान्ति रहे । पश्चिम में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने । कहीं पर्वतीय-भूभाग एवं दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार आदि में कहीं भूकम्प आदि से हानि का भी योग है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १३ से २० फरवरी तक सूत, सण, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़, उड़द, चना, ऊनीवस्त्र में मन्दी; रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी हो । १ से ३ मार्च तक रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं जवाहरात मन्दे रहें । ४ मार्च को सोना, चान्दी, अनाज, दालें, तिलहन तेज़ रहें । ५ मार्च को बाज़ार मन्दे रहें ।

कुण्डली सूर्योदय (५ मार्च)

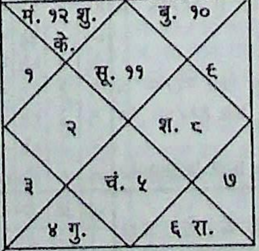

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	९	३	११	७	५	११
२०	११	१५	२४	२०	२०	१०	१७	१७
०	५२	५२	३४	२१	५०	४६	३१	३१
५४	०	३१	११	४०	३९	५३	५२	५२
६०	७०८	४५	७८	५	७३	०	३	३
५	५३	३८	१८	५९	१२	५६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	मघा ४	उ.भा. ४	धनि. १	आश्ले. २	रेव. २	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

आकाशलक्षणः- फरवरी १९, २०; मार्च १, ४, ५ को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदा-बांदी, बादलचाल हो । उत्तरी भारत में हवा का ज़ोर रहे किंवा गर्मी का आगमन अनुभव होने लगे ।

श्री वि. सं. २०७१, शाक १९३६, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(६ से २० मार्च तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				प्रातः बु. पूर्वक्षितिजासन्न और श. याम्योत्तरवृत्त में होगा । सायं गु. पूर्व में और शु. मं. पश्चिम में होंगे ।
															फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	ज.उ.ल.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५१	१	शु.	४८	३१	पू.फा.	११	५५	धृ.	५	५८	बा.	१५	१३	२२	६	१५	१४	कन्या	२८	५१	६	४८	१८	२०	१०	२१	०	५८	वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
२८	५६	२	श.	५४	५१	उ.फा.	१९	३४	शू.	८	२३	तै.	२१	४१	२३	७	१६	१५	कन्या			६	४७	१८	२१	१०	२२	१	२	
२९	०	३	र.	६०	०	हस्त	२६	५१	गं.	१०	३२	व.	२७	४४	२४	८	१७	१६	कन्या			६	४५	१८	२२	१०	२३	१	४	भ. २७/४४ बाद, बुध कुम्भ में ५६/२२, वक्री गुरु (A)
२९	५	३	चं.	०	३८	चित्रा	३३	२७	वृ.	१२	१३	वि.	०	३८	२५	९	१८	१७	तुला	०	१४	६	४४	१८	२२	१०	२४	१	४	भ. ०/३८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२९	१०	४	मं.	५	३५	स्वाती	३९	५	ध्रु.	१३	१३	बा.	५	३५	२६	१०	१९	१८	तुला			६	४३	१८	२३	१०	२५	१	२	
२९	१४	५	बु.	९	१८	विशा.	४३	२५	व्या.	१३	१७	तै.	९	१८	२७	११	२०	१९	वृश्चिक	२७	३०	६	४२	१८	२४	१०	२६	०	५९	
२९	१९	६	गु.	११	३२	अनु.	४६	११	ह.	१२	१२	व.	११	३२	२८	१२	२१	२०	वृश्चिक			६	४१	१८	२४	१०	२७	०	५४	भ. ११/३२ से ४१/४७ तक, शुक्र अश्वि. मेष में (B)
२९	२४	७	शु.	१२	३	ज्येष्ठा	४७	१३	व.	९	४९	ब.	१२	३	२९	१३	२२	२१	धनु	४७	१३	६	३९	१८	२५	१०	२८	०	४७	बुध शत. में ३६/२०,
२९	२८	८	श.	१०	४३	मूल	४६	२५	सि.	५	५९	कौ.	१०	४३	चै.१	१४	२३	२२	धनु			६	३८	१८	२६	१०	२९	०	३९	सं. सूर्य मीन में ५६/४०, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (C)
२९	३३	९	र	७	३२	पू.षा.	४३	५२	व्य. व.	० ५३	३९ ५६	ग.	७	३२	२	१५	२४	२३	मकर	५७	५७	६	३७	१८	२६	११	०	०	२९	भ. ३५/०४ बाद,
२९	३८	१०	चं.	२	३६	उ.षा.	३९	४२	प.	४५	५८	वि.	२	३६	३	१६	२५	२४	मकर			६	३६	१८	२७	११	१	०	१७	भ. २/३६ तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (समार्त),
अवम		११	चं.	५६	५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२९	४२	१२	मं.	४८	२२	श्रव.	३४	११	शि.	३६	५५	कौ.	२२	१३	४	१७	२६	२५	मकर			६	३५	१८	२८	११	२	०	४	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव),
२९	४७	१३	बु.	३९	४६	धनि.	२७	४२	सि.	२७	४	ग.	१४	४	५	१८	२७	२६	कुम्भ	१	१	६	३३	१८	२८	११	२	५९	४९	भ. ३६/४६ बाद, पंचक प्रारम्भ १/०१, सूर्य उ.भा. में (D)
२९	५२	१४	गु.	३०	३९	शत.	२०	३६	सा.	१६	४४	वि.	५	१२	६	१९	२८	२७	कुम्भ			६	३२	१८	२९	११	३	५९	३२	भ. ५/१२ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
२९	५७	३०	शु.	२१	२८	पू.भा.	१३	२०	शु. शु.	६ ५५	१४ ५०	ना.	२१	२८	७	२०	२९	२८	मीन	०	६	६	३१	१८	३०	११	४	५९	१३	सूर्यसायन मेष में ५४/२०, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव (E)

(A) आश्ले. १ में ४१/०२, (B) २८/३५, मेला श्रीशीतला माता (कुराली- पं.), (C) दिन मध्याह्न तक, शनि वक्री ३४/४७, श्रीशीतलाष्टमी, (D) १७/३७, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (१७ घं. ३८ मि. से सूर्यास्त तक), (E) दिन, चान्द्र संवत्सर (२०७१ वि.) पूर्ण,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
१४ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	११	१०	३	०	७	५	११
२६	२	२२	७	१६	१	१०	१७	१७
०	११	४१	११	३३	४७	५१	३	३
४०	५६	४६	०	०	१०	३३	१५	१५
५६	८१५	४५	६०	४	७२	०	३	३
५०	४६	१६	५०	३८	३८	१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ३	मूल १	रेव. २	शत. १	आश्ले. १	अश्वि. १	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

कुण्डली सूर्योदय (१४ मार्च)

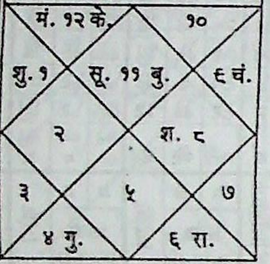

लोकभविष्यः- शनि-गुरु वक्री हैं । राहु का मंगल-सूर्य-केतु के साथ समसप्तकयोग भी है । भारत में कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं समुद्री तूफान; कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे । चैत्र कृष्णपंचमी को बुधवार है एवं शनिवारी सूर्यसंक्रान्ति होने से गेहूं, घी आदि खाद्यपदार्थ महंगे होंगे;- "चैत्रस्य प्रथमे पक्षे बुधवारेस्ति पंचमी । भौमे वा कुरुते समर्घ गोधूमस्य घृतस्य च ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ८ से ११ मार्च तक घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें । अलसी, रुई, चान्दी में मन्दी के बाद कुछ तेज़ी रहे । १२ से १८ मार्च तक गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिल, तेल, घी, सरसों, रुई, ऊन, सोंठ, जौ में तेज़ी ही रहे, तिलहन मन्दे; १४ मार्च के लगभग शनि के वक्रत्व में पीतल, तांबा, सिक्का, कली, चावल, घी, तेल, सरसो, तमाखू तेज़ रहें ।

कुण्डली सूर्योदय (२० मार्च)

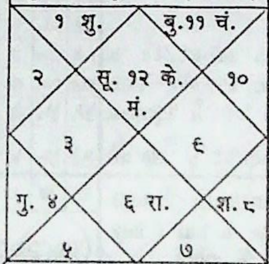

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.)
२० मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	१०	३	०	७	५	११
४	२६	२७	१६	१६	६	१०	१६	१६
५६	१८	१२	३४	७	१	५०	४४	४४
१४	५७	४८	५२	४७	५६	५	११	११
५९	६०८	४५	६८	३	७२	०	३	३
३६	६	१	२२	३६	१३	३५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. १	पू.भा. ३	रेव. ४	शत. ३	आश्ले. १	अश्वि. ३	अनु. ३	हस्त ३	रेव. १

आकाशलक्षण :- मार्च २, ८, १२, १३, १४, १५, १८ को हवा का ज़ोर रहे। मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदा-बांदी हो । उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे । गर्मी अनुभव होने लगे ।

"चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार-बार सिरनाय । संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय ।।"

श्री वि. सं 2070

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृ.	1	30	बु.	16	44	मूल	11	8	ध्रु.	25	50	धनु			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	इंग्लिश नववर्ष (2014 ई.) प्रारम्भ,
पौष शुक्ल	2	1	गु.	12	51	पू.षा./	8	1	व्या.	21	24	मकर	13	14	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45,
						उ.षा.	28	55																								
	3	2/	शु.	9	3	श्रव.	26	4	ह.	17	7	मकर			7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	
		3		29	31																											तृतीया तिथिक्षय,
	4	4	श.	26	27	धनि.	23	39	व.	13	7	कुम्भ	12	48	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ.15/59 से 26/27 तक, पंचक प्रारम्भ 12/48, राहु (A)
	5	5	र.	23	59	शत.	21	49	सि./	9	32	कुम्भ			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	शनि विशाखा 3 में 8/32, शुक्र अस्त– 9 जनवरी
									व्य.	30	29																					
	6	6	चं.	22	15	पू.भा.	20	41	व.	28	1	मीन	14	54	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	बुध उ.षा. में 12/49, वक्री शुक्र धनु में 23/36,(B)
	7	7	मं.	21	19	उ.भा.	20	20	प.	26	12	मीन			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 21/19 बाद, अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
	8	8	बु.	21	11	रेव.	20	46	शि.	25	0	मेष	20	46	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 9/15 तक, पंचक समाप्त 20/46, बुध मकर में (C)
	9	9	गु.	21	48	अश्वि.	21	55	सि.	24	23	मेष			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	शुक्र पश्चिम में अस्त 17/34, शुक्र उदित– 15 जनवरी
	10	10	शु.	23	4	भर.	23	42	सा.	24	14	वृष	30	13	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	सूर्य उ.षा. में 30/39,
	11	11	श.	24	50	कृत्ति.	25	57	शु.	24	27	वृष			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 11/57 से 24/50 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	12	12	र.	26	59	रोहि.	28	33	शु.	24	58	वृष			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	वक्री शुक्र पू.षा. में 12/36,
	13	13	चं.	29	21	मृग.	31	22	ब्र.	25	38	मिथुन	17	56	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पं.–हरि.–जम्मू–काश्मीर), सोमप्रदोष व्रत,
	14	14	मं.	–	–	आर्द्रा	–	–	ऐं.	26	25	मिथुन			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 13/12, मु. 15, पुण्यकाल सारा दिन, (D)
	15	14	बु.	7	50	आर्द्रा	10	17	वै.	27	14	कर्क	30	30	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 7/50 से 21/06 तक, शुक्र पूर्व में उदित 7/25, (E)
	16	15	गु.	10	22	पुन.	13	14	वि.	28	3	कर्क			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	वक्री गुरु आर्द्रा 4 में 15/11, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान (F)
माघ कृष्ण	17	1	शु.	12	52	पुष्य	16	9	प्री.	28	48	कर्क			7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	18	2	श.	15	17	आश्ले.	18	58	आ.	29	28	सिंह	18	58	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 28/24 बाद, शुक्रबाल्य समाप्त 7/24,
	19	3	र.	17	32	मघा	21	38	सौ.	29	59	सिंह			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 17/32 तक, बुध पश्चिम में उदित 17/42, श्रीगणेश (G)
	20	4	चं.	19	32	पू.फा.	24	3	शो.	30	17	कन्या	30	36	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 9/22,
	21	5	मं.	21	10	उ.फा.	26	6	अ.	30	15	कन्या			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	
	22	6	बु.	22	18	हस्त	27	38	सु.	29	49	कन्या			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	भ. 22/18 बाद, बुध धनि. में 14/41,
	23	7	गु.	22	49	चित्रा	28	33	धृ.	28	53	तुला	16	11	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 10/34 तक,
	24	8	शु.	22	37	स्वाती	28	46	शू.	27	22	तुला			7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 9/02,
	25	9	श.	21	38	विशा.	28	12	गं.	25	15	वृश्चिक	22	25	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	10	र.	19	53	अनु.	26	54	वृ.	22	32	वृश्चिक			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 8/45 से 19/53 तक, बुध कुम्भ में 23/54, भारत (H)
	27	11	चं.	17	25	ज्येष्ठा	24	56	ध्रु.	19	14	धनु	24	56	7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	नेप्च्यून शत. 2 में 29/12, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	28	12	मं.	14	21	मूल	22	25	व्या.	15	28	धनु			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भौमप्रदोष व्रत,
	29	13/	बु.	10	49	पू.षा.	19	30	ह./	11	20	मकर	24	44	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 10/49 से 20/55 तक, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),
		14		31	1				व.	30	59																					चतुर्दशी तिथिक्षय,
	30	30	गु.	27	8	उ.षा.	16	24	सि.	26	33	मकर			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	मौनी अमावस,
माघ शु.	31	1	शु.	23	22	श्रव.	13	17	व्य.	22	13	कुम्भ	23	48	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 23 ′48, शुक्र मार्गी (I)

(A) स्वाती 1, केतु अश्वि. 3 में 28/34, (B) शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 17/31, (C) 13/19, (D) मंगल चित्रा में 25/20, बुध श्रवण में 13/15, मकरसंक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) प्रारम्भ, (G) (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (H) गणतन्त्र दिवस, (I) 26/19,

श्री वि. सं 2070 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	2	श.	19	53	धनि.	10	23	व.	18	6	कुम्भ			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	चन्द्रदर्शन, मु. 15, बुध शत. में 14/48,
	2	3	र.	16	54	शत./	7	54	प.	14	24	मीन	24	25	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 27/44 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी), वरद–तिल– (A)
						पू.भा.	30	0																								
	3	4	चं.	14	34	उ.भा.	28	49	शि.	11	12	मीन			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 14/34 तक,
	4	5	मं.	13	1	रेव.	28	28	सि./	8	37	मेष	28	28	7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	पंचक समाप्त 28/28, मंगल तुला में 14/19, (B)
									सा.	30	42																					
	5	6	बु.	12	19	अश्वि.	28	57	शु.	29	28	मेष			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	
	6	7	गु.	12	23	भर.	30	13	शु.	28	52	मेष			7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 12/29 से 24/57 तक, सूर्य धनि. में 12/07, बुध (C)
	7	8	शु.	13	26	कृति.	–	–	ब्र.	28	49	वृष	12	39	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भीष्माष्टमी,
	8	9	श.	15	4	कृति.	8	11	ऐं.	29	11	वृष			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	बुध पश्चिम में अस्त 18/00,
	9	10	र.	17	12	रोहि.	10	41	वै.	29	52	मिथुन	24	3	7	13	18	1	7	8	18	3	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 30/25 बाद,
	10	11	चं.	19	38	मृग.	13	30	वि.	30	42	मिथुन			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 19/38 तक, जया एकादशी व्रत (स.),
	11	12	मं.	22	12	आर्द्रा	16	29	प्री.	–	–	मिथुन			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भीष्म द्वादशी,
	12	13	बु.	24	44	पुन.	19	29	प्री.	7	35	कर्क	12	44	7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 26/12, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (D)
	13	14	गु.	27	9	पुष्य	22	22	आ.	8	25	कर्क			7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 27/09 बाद,
	14	15	शु.	29	23	आश्ले.	25	5	सौ.	9	8	सिंह	25	5	7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 16/16 तक, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु (E)
फाल्गुन कृष्ण	15	1	श.	..	..	मघा	27	35	शो.	9	43	सिंह			7	7	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	16	1	र.	7	21	पू.फा.	29	48	अ.	10	6	सिंह			7	7	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	
	17	2	चं.	9	3	उ.फा.	–	–	सु.	10	16	कन्या	12	19	7	6	18	8	7	2	18	9	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 21/44 बाद,
	18	3	मं.	10	25	उ.फा.	7	43	धृ.	10	12	कन्या			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	भ. 10/25 तक, वक्री बुध मकर में 17/43, सूर्य सायन (F)
	19	4	बु.	11	23	हस्त	9	16	शू.	9	50	तुला	21	53	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 16/43,
	20	5	गु.	11	54	चित्रा	10	24	गं.	9	7	तुला			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	6	शु.	11	53	स्वाती	11	0	वृ./	8	0	वृश्चिक	29	6	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 11/53 से 23/35 तक, वक्री गुरु आर्द्रा 3 में (G)
									ध्रु.	30	26																					
	22	7	श.	11	17	विशा.	11	3	व्या.	28	23	वृश्चिक			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	बुध पूर्व में उदित 7/01,
	23	8	र.	10	4	अनु.	10	30	ह.	25	51	वृश्चिक			7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	
	24	9/	चं.	8	14	ज्येष्ठा	9	20	व.	22	50	धनु	9	20	6	59	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 19/02 से 29/50 तक,
		10		29	50																											दशमी तिथिक्षय,
	25	11	मं.	26	58	मूल/	7	38	सि.	19	25	धनु			6	58	18	14	6	54	18	14	6	59	18	21	6	28	17	54	25	विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
						पू.षा.	29	27																								
	26	12	बु.	23	44	उ.षा.	26	56	व्य.	15	41	मकर	10	50	6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	शुक्र मकर में 11/56, विजया एकादशी व्रत (वै.),
	27	13	गु.	20	18	श्रव.	24	14	व.	11	43	मकर			6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 20/18 से 30/34 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, प्रदोषव्रत,
	28	14	शु.	16	50	धनि.	21	32	प./	7	40	कुम्भ	10	52	6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	पंचक प्रारम्भ 10/52, बुध मार्गी 19/30,
									शि.	27	39																					

(A) कुन्द चतुर्थी, (B) श्री(वसन्त)पंचमी, लक्ष्मी/सरस्वती पूजा, (C) वक्री 27/12, रथ/आरोग्यसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादामहोत्सव (जैन), (D) मध्याह्न तक, वक्री बुध धनि. में 14/09, प्रदोषव्रत, (E) रविदास जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) मीन में 23/30, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,(G) 14/39, शुक्र उ.षा. में 14/01.

श्री वि. सं 2070–71

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गु.कृ.	1	30	श.	13	29	शत.	19	0	सि.	23	50	कुम्भ			6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	मंगल वक्री 21/55, यूरेनस रेवती 1 में 22/50, (A)
फाल्गुन शुक्ल	2	1	र.	10	28	पू.भा.	16	50	सा.	20	20	मीन	11	20	6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, शनि वक्री (B)
	3	2/	चं.	7	55	उ.भा.	15	11	शु.	17	18	मीन			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
		3		29	59																											तृतीया तिथिक्षय,
	4	4	मं.	28	48	रेव.	14	12	शु.	14	48	मेष	14	12	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 17/23 से 28/48 तक, पंचक समाप्त 14/12, (C)
	5	5	बु.	28	26	अश्वि.	13	59	ब्र.	12	55	मेष			6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	
	6	6	गु.	28	53	भर.	14	33	ऐं.	11	41	वृष	20	49	6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	59	6	गुरु मार्गी 16/13, होलाष्टक – 8 से 16 मार्च
	7	7	शु.	30	6	कृत्ति.	15	55	वै.	11	5	वृष			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	भ. 30/06 बाद,
	8	8	श.	–	–	रोहि.	17	57	वि.	11	2	वृष			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	0	8	भ. 19/01 तक, राहु चित्रा 4, केतु अश्वि. 2 में 26/21,(D)
	9	8	र.	7	55	मृग.	20	30	प्री.	11	26	मिथुन	7	10	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	
	10	9	चं.	10	11	आर्द्रा	23	22	आ.	12	9	मिथुन			6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	0	10	शुक्र श्रवण में 19/38,
	11	10	मं.	12	41	पुन.	26	22	सौ.	13	1	कर्क	19	37	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	भ. 25/56 बाद,
	12	11	बु.	15	11	पुष्य	29	17	शो.	13	54	कर्क			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	भ. 15/11 तक, बुध कुम्भ में 9/34, आमला एकादशी (E)
	13	12	गु.	17	32	आश्ले.	–	–	अ.	14	41	कर्क			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	
	14	13	शु.	19	37	आश्ले.	7	59	सु.	15	16	सिंह	7	59	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 23/06, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न (F)
	15	14	श.	21	20	मघा	10	22	धृ.	15	34	सिंह			6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	भ. 21/20 बाद,
	16	15	र.	22	38	पू.फा.	12	23	शू.	15	35	कन्या	18	50	6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 9/59 तक, होलिकादहन (प्रदोष में), होलाष्टक (G)
चैत्र कृष्ण	17	1	चं.	23	32	उ.फा.	14	1	गं.	15	17	कन्या			6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला (H)
	18	2	मं.	24	0	हस्त	15	14	वृ.	14	40	तुला	27	42	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 7/27, बुध शत. में 18/48,
	19	3	बु.	24	4	चित्रा	16	3	ध्रु.	13	44	तुला			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 12/02 से 24/04 तक, गुरु आर्द्रा 4 में 21/15,
	20	4	गु.	23	43	स्वाती	16	29	व्या.	12	29	तुला			6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 22/26, उत्तरगोल प्रारम्भ, (I)
	21	5	शु.	22	57	विशा.	16	30	ह.	10	54	वृश्चिक	10	32	6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	
	22	6	श.	21	46	अनु.	16	6	व.	9	0	वृश्चिक			6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	भ. 21/46 बाद, शक संवत् 1936 प्रारम्भ,
	23	7	र.	20	12	ज्येष्ठा	15	19	सि./	6	46	धनु	15	19	6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	35	6	3	18	7	23	भ. 8/59 तक,
									व्य.	28	14																					
	24	8	चं.	18	15	मूल	14	10	व.	25	24	धनु			6	26	18	32	6	25	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	शुक्र धनि. में 21/03, श्रीशीतलाष्टमी.
	25	9	मं.	15	57	पू.षा.	12	40	प.	22	18	मकर	18	14	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	भ. 26/40 बाद, वक्री मंगल कन्या में 9/52,
	26	10	बु.	13	24	उ.षा.	10	53	शि.	19	1	मकर			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ. 13/24 तक,
	27	11	गु.	10	40	श्रव.	8	55	सि.	15	37	कुम्भ	19	53	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	पंचक प्रारम्भ 19/53, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	28	12/	शु.	7	52	धनि./	6	52	सा.	12	10	कुम्भ			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	भ. 29/06 बाद, बुध पू.भा. में 20/10, वारुणीयोग (J)
		13		29	6	शत.	28	51																								त्रयोदशी तिथिक्षय,
	29	14	श.	26	31	पू.भा.	27	1	शु./	8	46	मीन	21	27	6	19	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	भ. 15/49 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.).
									शु.	29	33																					
	30	30	र.	24	15	उ.भा.	25	30	ब्र.	26	36	मीन			6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	चान्द्र संवत्सर 2070 वि. पूर्ण,
चै.शु.	31	1	चं.	22	25	रेव.	24	26	ऐं.	24	2	मेष	24	26	6	17	18	37	6	16	18	35	6	23	18	39	5	54	18	10	31	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 24/26, सूर्य रेवती(K)

(A) शनैश्चरी अमा, (B) 21/49, (C) सूर्य पू.भा. में 22/58, (D) होलाष्टक प्रारम्भ, (E) व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (F) बाद, प्रदोषव्रत, (G) समाप्त, जन्मदिन श्रीचैत्य महाप्रभु, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (I) महाविषुव दिन, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, श्रीशीतला पूजन, मेला श्रीशीतला माता (कुराली–पं.), (J) (7/52 से सूर्यास्त तक), प्रदोषव्रत, (K) में 18/16, शुक्र कुम्भ में 10/02, चान्द्र संवत्सर 2071 वि. प्रारम्भ, वासन्तनवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र–प्राशन,

श्री वि. सं 2071 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अप्रैल, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र शुक्ल	1	2	मं.	21	9	अश्वि.	23	56	वै.	21	54	मेष			6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	1	चन्द्रदर्शन, मु. 30, चन्द्रव्रत,
	2	3	बु.	20	33	भर.	24	5	वि.	20	19	मेष			6	15	18	38	6	14	18	36	6	21	18	40	5	52	18	11	2	गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,
	3	4	गु.	20	38	कृत्ति.	24	56	प्री.	19	17	वृष	6	14	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	भ. 8/35 से 20/38 तक,
	4	5	शु.	21	27	रोहि.	26	27	आ.	18	48	वृष			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	41	5	50	18	12	4	बुध मीन में 7/31, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	5	6	श.	22	54	मृग.	28	35	सौ.	18	49	मिथुन	15	27	6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	स्कन्द षष्ठी,
	6	7	र.	24	53	आर्द्रा	—	—	शो.	19	16	मिथुन			6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	48	18	13	6	भ. 24/53 बाद, बुध उ.भा. में 8/03, शुक्र शत. में 18/23,
	7	8	चं.	27	11	आर्द्रा	7	11	अ.	19	59	कर्क	27	20	6	9	18	41	6	9	18	38	6	15	18	43	5	47	18	13	7	भ. 14/02 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु (A)
	8	9	मं.	29	37	पुन.	10	4	सु.	20	52	कर्क			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	43	5	46	18	14	8	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु नक्षत्र 10/04 तक), नवरात्र समाप्त,
	9	10	बु.	—	—	पुष्य	13	0	धृ.	21	43	कर्क			6	6	18	42	6	6	18	39	6	13	18	44	5	45	18	14	9	नवरात्र पारणा,
	10	10	गु.	7	57	आश्ले.	15	47	शू.	22	24	सिंह	15	47	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	44	18	14	10	भ. 20/58 बाद,
	11	11	शु.	10	0	मघा	18	15	गं.	22	48	सिंह			6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	भ. 10/00 तक, दोलोत्सव, कामदा एकादशी व्रत (स.)
	12	12	श.	11	36	पू.फा.	20	16	वृ.	22	50	कन्या	26	41	6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	42	18	15	12	वक्री मंगल हस्त में 27/53, श्री विष्णु दमनोत्सव, अनंग (B)
	13	13	र.	12	41	उ.फा.	21	45	ध्रु.	22	28	कन्या			6	2	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	बुध रेवती में 21/14, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
	14	14	चं.	13	13	हस्त	22	43	व्या.	21	39	कन्या			6	0	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	40	18	16	14	भ. 13/13 से 25/13 तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 7/36,(C)
	15	15	मं.	13	12	चित्रा	23	9	ह.	20	25	तुला	10	59	5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	15	चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ,
वैशाख कृष्ण	16	1	बु.	12	41	स्वाती	23	7	व.	18	48	तुला			5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	17	2	गु.	11	42	विशा.	22	40	सि.	16	51	वृश्चिक	16	48	5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	भ. 23/01 बाद,
	18	3	शु.	10	21	अनु.	21	52	व्य.	14	36	वृश्चिक			5	56	18	48	5	57	18	45	6	4	18	48	5	37	18	18	18	भ. 10/21 तक, शुक्र पू.भा. में 25/24, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	19	4	श.	8	41	ज्येष्ठा	20	49	व.	12	6	धनु	20	49	5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	
	20	5/	र.	6	47	मूल	19	33	प.	9	26	धनु			5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	भ. 28/41 बाद, बुध अश्वि. मेष में 17/35, सूर्य सायन वृष (D)
		6		28	41																											षष्ठी तिथिक्षय,
	21	7	चं.	26	29	पू.षा.	18	8	शि./	6	37	मकर	23	46	5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	19	21	भ. 15/35 तक,
									सि.	27	43																					
	22	8	मं.	24	13	उ.षा.	16	39	सा.	24	46	मकर			5	52	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	अगस्त्य अस्त,
	23	9	बु.	21	57	श्रव.	15	8	शु.	21	49	कुम्भ	26	22	5	51	18	51	5	52	18	47	5	59	18	51	5	32	18	20	23	पंचक प्रारम्भ 26/22,
	24	10	गु.	19	43	धनि.	13	38	शु.	18	54	कुम्भ			5	50	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	भ. 8/50 से 19/43 तक, गुरु पुनर्वसु 1 में 21/08,
	25	11	शु.	17	37	शत.	12	15	ब्र.	16	4	मीन	29	19	5	49	18	53	5	50	18	49	5	58	18	52	5	31	18	21	25	श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, वरुथिनी एकादशी व्रत (स.),
	26	12	श.	15	41	पू.भा.	11	2	ऐं.	13	24	मीन			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	बुध भरणी में 26/28, शनिप्रदोष व्रत,
	27	13	र.	14	1	उ.भा.	10	2	वै.	10	55	मीन			5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	भ. 14/01 से 25/21 तक, सूर्य भरणी में 23/27, शुक्र (E)
	28	14	चं.	12	40	रेव.	9	22	वि.	8	42	मेष	9	22	5	46	18	55	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	पंचक समाप्त 9/22,
	29	30	मं.	11	44	अश्वि.	9	5	प्री./	6	49	मेष			5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	भौमवती अमा,
									आ.	29	17																					
वै.शु.	30	1	बु.	11	17	भर.	9	17	सौ.	28	12	वृष	15	25	5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	27	18	24	30	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र उ.भा. में (F)

(A) नक्षत्र 7/11 बाद), (B) त्रयोदशी (देखें पृ. 13), शनिप्रदोष व्रत, (C) मु. 30, पुण्यकाल 14/00 तक, प्लूटो वक्री 29/14, बुध पूर्व में अस्त 6/00, श्रीशिवदमनोत्सव, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) में 9/26, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (E) मीन में 24/40, (F) 23/36, यूरेनस रेवती 2 में 27/35,

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मई, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र--प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख शुक्ल	1	2	गु.	11	23	कृत्ति.	10	0	शो.	27	33	वृष			5	43	18	57	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	वक्री शनि विशाखा 2 में 12/21,श्रीपरशुराम जयन्ती, (A)
	2	3	शु.	12	3	रोहि.	11	18	अ.	27	21	मिथुन	24	9	5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	भ. 24/40 बाद, अक्षय तृतीया (देखें पृ. 13),
	3	4	श.	13	18	मृग.	13	8	सु.	27	34	मिथुन			5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	भ. 13/18 तक, बुध कृत्ति. में 7/54,
	4	5	र.	15	3	आर्द्रा	15	28	धृ.	28	8	मिथुन			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	बुध वृष में 22/08, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	5	6	चं.	17	11	पुन.	18	10	शू.	28	56	कर्क	11	28	5	39	18	59	5	41	18	55	5	50	18	58	5	23	18	26	5	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	6	7	मं.	19	33	पुष्य	21	4	गं.	—	—	कर्क			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	भ. 19/33 बाद, श्रीगंगा जन्म,
	7	8	बु.	21	55	आश्ले.	23	59	गं.	5	50	सिंह	23	59	5	38	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	भ. 8/44 तक,
	8	9	गु.	24	3	मघा	26	38	वृ.	6	41	सिंह			5	37	19	1	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	बुध पश्चिम में उदित 19/01, श्री जानकी जयन्ती,
	9	10	शु.	25	46	पू.फा.	28	53	ध्रु.	7	18	सिंह			5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	28	9	बुध रोहिणी में 23/00,
	10	11	श.	26	54	उ.फा.	—	—	व्या.	7	33	कन्या	11	22	5	35	19	2	5	38	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	भ. 14/20 से 26/54 तक, राहु चित्रा 3, केतु अश्वि. (B)
	11	12	र.	27	22	उ.फा.	6	34	ह.	7	21	कन्या			5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	29	11	सूर्य कृत्ति. में 17/33,
	12	13	चं.	27	8	हस्त	7	35	व./ सि.	6 29	36 20	तुला	19	50	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	शुक्र रेवती में 16/17, सोमप्रदोष व्रत,
	13	14	मं.	26	15	चित्रा	7	55	व्य.	27	31	तुला			5	33	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	भ. 26/15 बाद, नेप्च्यून शत. 3 में 17/04, श्रीनृसिंह (C)
	14	15	बु.	24	46	स्वाती	7	37	व.	25	14	वृश्चिक	25	1	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	18	18	31	14	भ. 13/31 तक, सं. सूर्य वृष में 28/28, मु. 45, (D)
ज्येष्ठ कृष्ण	15	1	गु.	22	48	विशा./ अनु.	6 29	45 26	प.	22	34	वृश्चिक			5	32	19	6	5	35	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु पुन. 2 में 27/48,
	16	2	शु.	20	28	ज्येष्ठा	27	48	शि.	19	36	धनु	27	48	5	31	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	
	17	3	श.	17	53	मूल	25	58	सि.	16	26	धनु			5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	भ. 7/10 से 17/53 तक, बुध मृग. में 22/23. (E)
	18	4	र.	15	13	पू.षा.	24	4	सा.	13	10	धनु			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	
	19	5	चं.	12	32	उ.षा.	22	13	शु.	9	54	मकर	5	36	5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	
	20	6	मं.	9	58	श्रव.	20	31	शु./ ब्र.	6 27	43 40	मकर			5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	भ. 9/58 से 20/47 तक, मंगल मार्गी 7/01.
	21	7/ 8	बु.	7 29	35 27	धनि.	19	2	ऐं.	24	50	कुम्भ	7	45	5	29	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	पंचक प्रारम्भ 7/45, सूर्य सायन मिथुन में 8/29, अष्टमी तिथिक्षय,
	22	9	गु.	27	38	शत.	17	50	वै.	22	14	कुम्भ			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	बुध मिथुन में 26/26,
	23	10	शु.	26	8	पू.भा.	16	57	वि.	19	54	मीन	11	9	5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	36	23	भ. 14/53 से 26/08 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 29/00,
	24	11	श.	24	59	उ.भा.	16	25	प्री.	17	50	मीन			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
	25	12	र.	24	12	रेव.	16	14	आ.	16	4	मेष	16	14	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	37	25	पंचक समाप्त 16/14, सूर्य रोहि. में 13/49,
	26	13	चं.	23	47	अश्वि.	16	24	सौ.	14	36	मेष			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	भ. 23/47 बाद, सोमप्रदोष व्रत,
	27	14	मं.	23	46	भर.	16	58	शो.	13	26	वृष	23	10	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	10	5	13	18	38	27	भ. 11/47 तक,
	28	30	बु.	24	10	कृत्ति.	17	56	अ.	12	36	वृष			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावका अमा.
ज्ये. शु.	29	1	गु.	25	0	रोहि.	19	19	सु.	12	5	वृष			5	25	19	14	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	30	2	शु.	26	17	मृग.	21	8	धृ.	11	56	मिथुन	8	10	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	चन्द्र दर्शन, मु. 30, बुध आर्द्रा में 18/01,
	31	3	श.	28	0	आर्द्रा	23	22	शू.	12	7	मिथुन			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	39	31	रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),

(A) श्री शिवाजी जयन्ती, (B) 1 में 24/21, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (C) जयन्ती, (D) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

श्री वि. सं. 2071 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जून, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति. काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ शुक्ल	1	4	र.	—	—	पुन.	25	59	गं.	12	37	कर्क	19	18	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	भ. 17/02 बाद, बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
	2	4	चं.	6	4	पुष्य	28	51	वृ.	13	23	कर्क			5	24	19	17	5	28	19	11	5	37	19	13	5	11	18	40	2	भ. 6/04 तक, गुरु पुन. 3 में 25/10,
	3	5	मं.	8	23	आश्ले.	—	—	ध्रु.	14	18	कर्क		.	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	
	4	6	बु.	10	48	आश्ले.	7	49	व्या.	15	16	सिंह	7	49	5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	13	5	11	18	41	4	शुक्र भरणी में 14/47, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्यषष्ठी,
	5	7	गु.	13	6	मघा	10	43	ह.	16	7	सिंह			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भ. 13/06 से 26/05 तक,
	6	8	शु.	15	4	पू.फा.	13	18	व.	16	41	कन्या	19	53	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	
	7	9	श.	16	30	उ.फा.	15	23	सि.	16	50	कन्या			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	बुध वक्री 17/26,
	8	10	र.	17	14	हस्त	16	48	व्य.	16	26	तुला	29	14	5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 29/12 बाद, सूर्य मृग. में 11/36, श्रीगंगा दशहरा (A)
	9	11	चं.	17	10	चित्रा	17	27	व.	15	26	तुला			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	भ. 17/10 तक, नेप्च्यून वक्री 25/24, निर्जला एकादशी (B)
	10	12	मं.	16	19	स्वाती	17	19	प.	13	47	तुला			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	बुध पश्चिम में अस्त 19/20, भौमप्रदोष व्रत,
	11	13	बु.	14	43	विशा.	16	26	शि.	11	32	वृश्चिक	10	43	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	
	12	14	गु.	12	28	अनु.	14	55	सि.	8	43	वृश्चिक			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	भ. 12/28 से 23/05 तक, वटसावित्री व्रत (C)
	13	15	शु.	9	41	ज्येष्ठा	12	54	सा./ शु.	5 25	28 53	धनु	12	54	5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	
आषाढ़ कृष्ण	14	1/ 2	श.	6 27	33 14	मूल	10	32	शु.	22	7	धनु			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, द्वितीया तिथिक्षय,
	15	3	र.	23	52	पू.षा.	8	1	ब्र.	18	17	मकर	13	23	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	भ. 13/33 से 23/52 तक, सं. सूर्य मिथुन में 11/02,(D)
	16	4	चं.	20	39	उ.षा./ श्रव.	5 27	30 10	ऐं.	14	32	मकर			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	वक्री बुध मृग. में 6/36, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	17	5	मं.	17	41	धनि.	25	8	वै.	10	58	कुम्भ	14	6	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	पंचक प्रारम्भ 14/06,
	18	6	बु.	15	7	शत.	23	31	वि./ प्री.	7 28	41 47	कुम्भ			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 15/07 से 26/04 तक, शुक्र वृष में 17/58,
	19	7	गु.	13	0	पू.भा.	22	24	आ.	26	17	मीन	16	37	5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	गुरु पुन. 4 कर्क में 8/47, वक्री शनि विशा. 1 में 26/53,
	20	8	शु.	11	25	उ.भा.	21	48	सौ.	24	14	मीन			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	
	21	9	श.	10	21	रेव.	21	44	शो.	22	36	मेष	21	44	5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	भ. 22/05 बाद, पंचक समाप्त 21/44, सूर्य सायन (E)
	22	10	र.	9	49	अश्वि.	22	9	अ.	21	22	मेष			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	भ. 9/49 तक, सूर्य आर्द्रा में 10/39,
	23	11	चं.	9	46	भर.	23	2	सु.	20	30	वृष	29	19	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	24	12	मं.	10	10	कृत्ति.	24	20	धृ.	19	59	वृष			5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भौमप्रदोष व्रत,
	25	13	बु.	10	57	रोहि.	26	0	शू.	19	46	वृष			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 10/57 से 23/33 तक,
	26	14	गु.	12	7	मृग.	28	1	गं.	19	49	मिथुन	14	58	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	शुक्र रोहि. में 27/59,
	27	30	शु.	13	38	आर्द्रा	—	—	वृ.	20	9	मिथुन			5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	
आषाढ़ शुक्ल	28	1	श.	15	28	आर्द्रा	6	21	ध्रु.	20	43	कर्क	26	18	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मंगल चित्रा में 18/02,
	29	2	र.	17	36	पुन.	8	59	व्या.	21	29	कर्क			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पूर्व में उदित 5/27, रथ यात्रा (F)
	30	3	चं.	19	56	पुष्य	11	50	ह.	22	26	कर्क			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	

(A) (हस्त नक्षत्र 16/48 तक), (B) व्रत (स.) (C) (पूर्णिमापक्ष) (चतुर्दशीविद्धा पूर्णिमा में), श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) मु. 45, पुण्यकाल 17/26 तक, शुक्र कृत्तिका में 22/23.(E) कर्क में 16/21, दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, (F) (श्रीजगदीश रथोत्सव)–पुरी (पुष्यनक्षत्र 8/59 बाद) .

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जुलाई, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ शुक्ल	1	4	मं.	22	23	आश्ले.	14	51	व.	23	26	सिंह	14	51	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	भ. 9/09 से 22/23 तक, बुध मार्गी 18/19,
	2	5	बु.	24	49	मघा	17	52	सि.	24	26	सिंह			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	
	3	6	गु.	27	1	पू.फा.	20	44	व्य.	25	15	कन्या	27	24	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	कुमार षष्ठी.
	4	7	शु.	28	48	उ.फा.	23	14	व.	25	46	कन्या			5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	भ. 28/48 बाद, गुरु पुष्य 1 में 20/31, विवस्वत् सप्तमी.
	5	8	श.	—	—	हस्त	25	11	प.	25	49	कन्या			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	भ. 17/24 तक, गुरु अस्त– 11 जुलाई
	6	8	र.	5	58	चित्रा	26	25	शि.	25	17	तुला	13	54	5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	सूर्य पुन. में 10/08,
	7	9	चं.	6	23	स्वाती	26	49	सि.	24	6	तुला			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	वक्री नेप्च्यून शत. 2 में 18/43,
	8	10/	मं.	5	57	विशा.	26	24	सा.	22	14	वृश्चिक	20	35	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 17/18 से 28/40 तक, शुक्र मृग. में 7/52, (A)
		11		28	40																											एकादशी तिथिक्षय,
	9	12	बु.	26	35	अनु.	25	10	शु.	19	42	वृश्चिक			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	हरिशयनी एकादशी व्रत (वै.),
	10	13	गु.	23	50	ज्येष्ठा	23	15	शु.	16	35	धनु	23	15	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	प्रदोष व्रत.
	11	14	शु.	20	33	मूल	20	48	ब्र.	12	58	धनु			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	भ. 20/33 बाद, गुरु अस्त 19/24, श्रीसत्यनारायण (B)
	12	15	श.	16	55	पू.षा.	17	59	ऐं./	9	0	मकर	23	15	5	32	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	भ. 6/44 तक, राहु चित्रा 2 कन्या, केतु रेवती 4 (C)
									वै.	28	50																					
श्रावण कृष्ण	13	1	र.	13	6	उ.षा.	15	0	वि.	24	36	मकर			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध आर्द्रा में 27/53, शुक्र (D)
	14	2	चं.	9	18	श्रव.	12	4	प्री.	20	29	कुम्भ	22	40	5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	भ. 19/30 बाद, पंचक प्रारम्भ 22/40, मंगल तुला (E)
	15	3/	मं.	5	42	धनि.	9	20	आ.	16	36	कुम्भ			5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	भ. 5/42 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत.
		4		26	28																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	16	5	बु.	23	43	शत./	7	0	सौ.	13	5	मीन	23	36	5	34	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 21/53, मु. 30, पुण्यकाल 9/53 (F)
						पू.भा.	29	12																								
	17	6	गु.	21	35	उ.भा.	28	1	शो.	10	1	मीन			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 21/35 बाद,
	18	7	शु.	20	7	रेव.	27	31	अ./	7	30	मेष	27	31	5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 8/51 तक, पंचक समाप्त 27/31,
									सु.	29	32																					
	19	8	श.	19	20	अश्वि.	27	42	धृ.	28	6	मेष			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	22	18	46	19	गुरु पुष्य 2 में 22/50, शुक्र आर्द्रा में 10/07,
	20	9	र.	19	13	भर.	28	30	शू.	27	12	मेष			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सूर्य पुष्य में 9/44, शनि मार्गी 26/07,
	21	10	चं.	19	42	कृत्ति.	—	—	गं.	26	45	वृष	10	48	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	23	18	45	21	भ. 7/28 से 19/42 तक,
	22	11	मं.	20	42	कृत्ति.	5	53	वृ.	26	41	वृष			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	यूरेनस वक्री 8/24, सूर्य सायन सिंह में 27/11, (G)
	23	12	बु.	22	8	रोहि.	7	43	ध्रु.	26	55	मिथुन	20	47	5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	बुध पुन. में 20/02,
	24	13	गु.	23	55	मृग.	9	56	व्या.	27	25	मिथुन			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	भ. 23/55 बाद, प्रदोष व्रत,
	25	14	शु.	25	57	आर्द्रा	12	26	ह.	28	6	मिथुन			5	40	19	18	5	42	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 12/56 तक, श्रावण शिवरात्रि,
	26	30	श.	28	11	पुन.	15	10	व.	28	56	कर्क	8	28	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	हरियाली अमा, शनैश्चरी अमा,
श्रावण शुक्ल	27	1	र.	—	—	पुष्य	18	4	सि.	—	—	कर्क			5	41	19	17	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मंगल स्वाती मे 17/10, (H)
	28	1	चं.	6	35	आश्ले.	21	4	सि.	5	54	सिंह	21	4	5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	चन्द्र दर्शन, मु. 15, बुध कर्क में 29/39,
	29	2	मं.	9	3	मघा	24	6	व्य.	6	54	सिंह			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	
	30	3	बु.	11	29	पू.फा.	27	3	व.	7	54	सिंह			5	43	19	15	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	41	30	भ. 24/38 बाद, बुध पुष्य में 21/36, शुक्र पुनर्वसु में (I)
	31	4	गु.	13	47	उ.फा.	—	—	प.	8	48	कन्या	9	45	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	भ. 13/47 तक,

(A) गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 19/24, हरिशयनी एकादशी व्रत (स्मा.), श्रीविष्णुशयनोत्सव, (B) व्रत (देखें पृ. 13), कोकिला व्रत (प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में), श्रीशिवशयनोत्सव, (C) मीन में 21/51, गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ, (D) मिथुन में 21/12, अशून्यशयन व्रत, (E) में 8/39, (F) बाद एवं अगले दिन मध्याह्न तक, (G) कामिका एकादशी व्रत(स.), (H). बुध पूर्व में अस्त 6/41, (I) 10/40, मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज),

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अगस्त, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
श्रावण शुक्ल	1	5	शु.	15	46	उ.फा.	5	45	शि.	9	29	कन्या			5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	नागपंचमी,
	2	6	श.	17	17	हस्त	8	4	सि.	9	50	तुला	21	2	5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	श्रीकल्कि जयन्ती,
	3	7	र.	18	10	चित्रा	9	50	सा.	9	44	तुला			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	30	18	38	3	भ. 18/10 बाद, सूर्य आश्ले. में 8/30, गुरु पुष्य 3 में (A)
	4	8	चं.	18	17	स्वाती	10	54	शु.	9	5	वृश्चिक	29	10	5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	4	भ. 6/14 तक, गुरु उदित 5/46, श्रीदुर्गाष्टमी,
	5	9	मं.	17	36	विशा.	11	10	शु.	7	47	वृश्चिक			5	46	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	
	6	10	बु.	16	4	अनु.	10	37	ब्र./ ऐं.	5 27	49 12	वृश्चिक			5	47	19	9	5	49	19	4	5	57	19	7	5	31	18	36	6	भ. 26/55 बाद, बुध आश्ले. में 8/09,
	7	11	गु.	13	47	ज्येष्ठा	9	16	वै.	23	59	धनु	9	16	5	48	19	8	5	50	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	7	भ. 13/47 तक, शुक्र कर्क में 16/05, गुरुबाल्य समाप्त (B)
	8	12	शु.	10	51	मूल/ पूषा.	7 28	15 41	वि.	20	17	धनु			5	48	19	7	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	8	प्रदोष व्रत,
	9	13/ 14	श.	7 27	24 36	उ.षा.	25	45	प्री.	16	13	मकर	9	59	5	49	19	7	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	भ. 27/36 बाद, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	10	15	र.	23	39	श्रव.	22	39	आ.	11	56	मकर			5	49	19	6	5	51	19	1	5	59	19	4	5	33	18	33	10	भ. 13/38 तक, शुक्र पुष्य में 9/42, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C)
भाद्रपद कृष्ण	11	1	चं.	19	45	धनि.	19	34	सौ./ शो.	7 27	35 19	कुम्भ	9	5	5	50	19	5	5	52	19	0	6	0	19	4	5	33	18	33	11	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 9/05,
	12	2	मं.	16	3	शत.	16	42	अ.	23	18	कुम्भ			5	51	19	4	5	52	18	59	6	0	19	3	5	34	18	32	12	भ. 26/23 बाद, बुध मघा सिंह में 21/06,
	13	3	बु.	12	44	पू.भा.	14	14	सु.	19	39	मीन	8	48	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	13	भ. 12/44 तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (D)
	14	4	गु.	9	58	उ.भा.	12	19	धृ.	16	29	मीन			5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	35	18	30	14	
	15	5	शु.	7	52	रेव.	11	5	शू.	13	54	मेष	11	5	5	53	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	29	15	पंचक समाप्त 11/05, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	6	श.	6	31	अश्वि.	10	36	गं.	11	55	मेष			5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	35	18	29	16	भ. 6/31 से 18/14 तक,
	17	7	र.	5	56	भर.	10	52	वृ.	10	33	वृष	17	3	5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	28	17	सं. सूर्य मघा सिंह में 6/15 मु. 15, पुण्यकाल 12/39(E)
	18	8	चं.	6	6	कृति.	11	52	ध्रु.	9	47	वृष			5	54	18	58	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	गुरु पुष्य 4 में 28/35, , श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (F)
	19	9	मं.	6	58	रोहि.	13	31	व्या.	9	32	मिथुन	26	33	5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	भ. 19/40 बाद, मंगल विशा. में 27/42, बुध पू.फा. में (G)
	20	10	बु.	8	23	मृग.	15	41	ह.	9	43	मिथुन			5	56	18	56	5	57	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	20	भ. 8/23 तक, शनि विशा. 2 में 16/59,
	21	11	गु.	10	16	आर्द्रा	18	15	व.	10	14	मिथुन			5	56	18	55	5	57	18	51	6	5	18	55	5	38	18	24	21	शुक्र आश्ले. में 7/12, अजा एकादशी व्रत (स.),
	22	12	शु.	12	27	पुन.	21	4	सि.	10	59	कर्क	14	20	5	57	18	54	5	58	18	50	6	5	18	54	5	38	18	23	22	बुध पश्चिम में उदित 18/54, प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व (जैन),
	23	13	श.	14	49	पुष्य	24	1	व्य.	11	52	कर्क			5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	53	5	38	18	22	23	भ. 14/49 से 28/03 तक, सूर्य सायन कन्या में 10/16, (H)
	24	14	र.	17	16	आश्ले.	27	1	व.	12	50	सिंह	27	1	5	58	18	51	5	59	18	48	6	6	18	52	5	39	18	21	24	
	25	30	चं.	19	42	मघा	—	—	प.	13	48	सिंह			5	58	18	50	5	59	18	47	6	7	18	51	5	39	18	20	25	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा, सोमवती अमा,
भाद्रपद शुक्ल	26	1	मं.	22	4	मघा	5	59	शि.	14	43	सिंह			5	59	18	49	6	0	18	46	6	7	18	50	5	40	18	19	26	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	27	2	बु.	24	15	पू.फा.	8	51	सि.	15	31	कन्या	15	32	6	0	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	18	27	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध उ.फा. में 14/19, मेला डेरा (I)
	28	3	गु.	26	10	उ.फा.	11	30	सा.	16	8	कन्या			6	0	18	47	6	1	18	44	6	8	18	48	5	40	18	17	28	श्रीवराह जयन्ती, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया,
	29	4	शु.	27	42	हस्त	13	51	शु.	16	30	तुला	26	52	6	1	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	41	18	16	29	भ. 14/56 से 27/42 तक, बुध कन्या में 15/41, (J)
	30	5	श.	28	46	चित्रा	15	47	शु.	16	32	तुला			6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	46	5	41	18	15	30	सूर्य पू.फा. में 26/08, ऋषिपंचमी,
	31	6	र.	29	15	स्वाती	17	12	ब्र.	16	8	तुला			6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	शुक्र मघा सिंह में 27/14, सूर्यषष्ठी व्रत,

गुरु उदित
4 अगस्त

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत कब ?
(पृष्ठ 17 देखें)

(A) 23/04, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (B) 5/46, पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (C) रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृ. 14), श्रावणीपूर्णिमा, श्री अमरनाथ यात्रा काश्मीर, शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म, ऋक् उपाकर्म, (D) (चन्द्रोदय– देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, (E) तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदय– देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (F) (चन्द्रोदय– देखें पृ. 11), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (G) 21/23, श्री गुग्गानवमी, (H) शरद् ऋतु प्रारम्भ, (I) बाबा गोसाईं आणां, कुराली (पं.), (J) श्रीसिद्धिविनायक व्रत, साम उपाकर्म, हरितालिका चतुर्थी, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध)(चन्द्रास्त 20/49), संवत्सरी महापर्व (जैन),

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) सितम्बर, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपद शुक्ल	1	7	चं.	29	3	विशा.	18	1	ऐं.	15	16	वृश्चिक	11	52	6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	भ. 29/03 बाद,
	2	8	मं.	28	8	अनु.	18	8	वै.	13	50	वृश्चिक			6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	42	5	42	18	12	2	भ. 16/36 तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (A)
	3	9	बु.	26	31	ज्येष्ठा	17	32	वि.	11	49	धनु	17	32	6	4	18	40	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	गुरु आश्ले. 1 में 23/45, अगस्त्य उदित, बाबाश्रीचन्द (B)
	4	10	गु.	24	14	मूल	16	16	प्री.	9	15	धनु		.	6	4	18	38	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	10	4	मंगल वृश्चिक में 26/30, बुध हस्त में 28/43,
	5	11	शु.	21	24	पू.षा.	14	24	आ./	6	9	मकर	19	50	6	5	18	37	6	5	18	34	6	11	18	39	5	44	18	9	5	भ. 10/49 से 21/24 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
									सौ.	26	37																					
	6	12	श.	18	6	उ.षा.	12	2	शो.	22	45	मकर			6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	शनिप्रदोष व्रत, श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी,
	7	13	र.	14	31	श्रव.	9	19	अ.	18	39	कुम्भ	19	53	6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	पंचक प्रारम्भ 19/53,
	8	14	चं.	10	48	धनि./	6	26	सु.	14	28	कुम्भ			6	6	18	33	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	भ. 10/48 से 20/58 तक, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा (C)
						शत.	27	33																								
	9	15/	मं.	7	8	पू.भा.	24	51	धृ.	10	22	मीन	19	30	6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	मंगल अनु. में 29/06, पितृपक्ष(महालय)प्रारम्भ, प्रतिपदा (D)
आश्विन कृष्ण		1		27	41																											आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	10	2	बु.	24	36	उ.भा.	22	31	शू./	6	27	मीन			6	8	18	31	6	7	18	29	6	14	18	33	5	45	18	4	10	द्वितीया का श्राद्ध,
									गं.	26	52																					
	11	3	गु.	22	3	रेव.	20	42	वृ.	23	44	मेष	20	42	6	8	18	30	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	भ. 11/19 से 22/03 तक, पंचक समाप्त 20/42, (E)
	12	4	शु.	20	9	अश्वि.	19	31	ध्रु.	21	9	मेष			6	9	18	28	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध,
	13	5	श.	19	1	भर.	19	5	व्या.	19	9	वृष	25	6	6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	सूर्य उ.फा. में 20/04, राहु चित्रा 1, केतु रेवती 3 में (F)
	14	6	र.	18	40	कृत्ति.	19	26	ह.	17	48	वृष			6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	भ. 18/40 बाद, बुध चित्रा में 27/18, षष्ठी का श्राद्ध,
	15	7	चं.	19	5	रोहि.	20	32	व.	17	4	वृष			6	10	18	25	6	10	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	भ. 6/53 तक, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, सप्तमी का श्राद्ध,
	16	8	मं.	20	14	मृग.	22	20	सि.	16	52	मिथुन	9	21	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	27	5	48	17	58	16	अष्टमी का श्राद्ध,
	17	9	बु.	21	58	आर्द्रा	24	40	व्य.	17	9	मिथुन			6	11	18	22	6	11	18	20	6	17	18	26	5	48	17	56	17	सं. सूर्य कन्या में 6/11, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न तक,(G)
	18	10	गु.	24	8	पुन.	27	25	व.	17	47	कर्क	20	42	6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	24	5	48	17	55	18	भ. 11/03 से 24/08 तक, दशमी का श्राद्ध,
	19	11	शु.	26	33	पुष्य	—	—	प.	18	39	कर्क			6	13	18	19	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध,
	20	12	श.	29	3	पुष्य	6	22	शि.	19	36	कर्क			6	13	18	18	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	बुध तुला में 26/16, गुरु आश्ले. 2 में 22/02, द्वादशी (H)
	21	13	र.	—	—	आश्ले.	9	23	सि.	20	32	सिंह	9	23	6	14	18	17	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध,
	22	13	चं.	7	29	मघा	12	19	सा.	21	22	सिंह			6	14	18	16	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 7/29 से 20/37 तक, शुक्र उ.फा. में 15/47, (I)
	23	14	मं.	9	45	पू.फा.	15	3	शु.	22	1	कन्या	21	42	6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	सूर्य सायन तुला में 7/59, विषुवदिन, दक्षिणगोल (J)
	24	30	बु.	11	44	उ.फा.	17	31	शु.	22	26	कन्या			6	15	18	13	6	14	18	12	6	20	18	18	5	51	17	49	24	नाना-नानी का श्राद्ध,
आश्विन शुक्ल	25	1	गु.	13	22	हस्त	19	39	ब्र.	22	35	कन्या			6	16	18	12	6	15	18	11	6	20	18	16	5	51	17	48	25	आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र कन्या में 8/03, शारद (K)
	26	2	शु.	14	38	चित्रा	21	23	ऐं.	22	24	तुला	8	34	6	17	18	11	6	15	18	9	6	20	18	15	5	51	17	47	26	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	27	3	श.	15	27	स्वाती	22	42	वै.	21	54	तुला			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	46	27	भ. 27/38 बाद, सूर्य हस्त में 11/31,
	28	4	र.	15	49	विशा.	23	32	वि.	21	1	वृश्चिक	17	22	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	45	28	भ. 15/49 तक,
	29	5	चं.	15	40	अनु.	23	54	प्री.	19	44	वृश्चिक		,	6	18	18	7	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	मंगल ज्येष्ठा में 20/46, बुध स्वाती में 10/26, शुक्र (L)
	30	6	मं.	15	1	ज्येष्ठा	23	44	आ.	18	2	धनु	23	44	6	19	18	5	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	42	30	

(A) दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (B) नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (C) श्राद्ध, श्रीसत्यनाराण व्रत, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत, (D) का श्राद्ध, (E) शुक्र पू. फा. में 22/04, तृतीया का श्राद्ध, (F) 19/42, पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, (G) नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, (H) का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (I) प्लूटो मार्गी 30/04, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (J) प्रारम्भ, सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्युतिथि/चतुर्दशी/अमा/पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, (K) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती, (L) वार्धक्य प्रारम्भ 6/20, श्रीउपांगललिता व्रत (श्रीललिता पंचमी),

श्री वि. सं. 2071 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **अक्तूबर, सन् 2014 ई.**

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं	मि.		
आश्विन शुक्ल	1	7	बु.	13	50	मूल	23	3	सौ.	15	55	धनु			6	20	18	4	6	18	18	4	6	23	18	10	5	54	17	41	1	भ. 13/50 से 24/59 तक, श्रीसरस्वती आवाहन
	2	8	गु.	12	8	पू.षा.	21	53	शो.	13	24	मकर	27	31	6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	9	5	54	17	40	2	शुक्र पूर्व में अस्त 6/20, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (A)
	3	9	शु.	9	58	उ.षा.	20	17	अ.	10	30	मकर			6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	शुक्र हस्त में 8/35, शनि विशा. 3 में 10/37, (B)
	4	10/	श.	7	25	श्रव.	18	19	सु./	7	16	कुम्भ	29	13	6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	भ.17/58 से 28/32 तक, पंचक प्रारम्भ 29/13, बुध (C)
		11		28	32				धृ.	27	47																					एकादशी तिथिक्षय, शुक्र अस्त–2 अक्तू.
	5	12	र.	25	28	धनि.	16	5	शू.	24	8	कुम्भ			6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	पापांकुशा एकादशी व्रत (वै.), चन्द्रग्रहण–8 अक्तू.
	6	13	चं.	22	19	शत.	13	44	गं.	20	24	मीन	29	57	6	23	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	56	17	36	6	सोमप्रदोष व्रत,
	7	14	मं.	19	13	पू.भा.	11	22	वृ.	16	43	मीन			6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	3	5	56	17	35	7	भ. 19/13 से 29/47 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (D)
	8	15	बु.	16	20	उ.भा.	9	10	ध्रु.	13	11	मीन			6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	57	17	34	8	श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण (E)
कार्तिक कृष्ण	9	1	गु.	13	48	रेव./	7	15	व्या.	9	55	मेष	7	15	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक समाप्त 7/15, वक्री (F)
						अश्वि.	29	48																								
	10	2	शु.	11	45	भर.	28	54	ह./	7	2	मेष			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	57	17	32	10	भ. 23/01 बाद, सूर्य चित्रा में 24/35, बुध पश्चिम (G)
									व.	28	36																					
	11	3	श.	10	18	कृत्ति.	28	40	सि.	26	43	वृष	10	46	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	भ. 10/18 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (H)
	12	4	र.	9	33	रोहि.	29	10	व्य.	25	25	वृष			6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	
	13	5	चं.	9	33	मृग.	30	24	व.	24	43	मिथुन	17	42	6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	शुक्र चित्रा में 24/46,
	14	6	मं.	10	19	आर्द्रा	—	—	प.	24	33	मिथुन			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	भ. 10/19 से 23/02 तक,
	15	7	बु.	11	45	आर्द्रा	8	19	शि.	24	52	कर्क	28	7	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	अहोई अष्टमी (पंजाब--हरियाणा),
	16	8	गु.	13	45	पुन.	10	46	सि.	25	32	कर्क			6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	वक्री बुध कन्या में 13/09,
	17	9	शु.	16	8	पुष्य	13	36	सा.	26	24	कर्क			6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	25	17	भ. 29/24 बाद, सं. सूर्य तुला में 18/10, मु. 15, (I)
	18	10	श.	18	40	आश्ले.	16	36	शु.	27	20	सिंह	16	36	6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	24	18	भ. 18/40 तक, मंगल मूल धनु में 13/47, वक्री (J)
	19	11	र.	21	8	मघा	19	34	शु.	28	10	सिंह			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	शुक्र तुला में 8/38, रमा एकादशी व्रत (स.),
	20	12	चं.	23	22	पू.फा.	22	19	ब्र.	28	46	कन्या	28	56	6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	2	17	23	20	गोवत्स द्वादशी,
	21	13	मं.	25	12	उ.फा.	24	41	ऐं.	29	4	कन्या			6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	भ. 25/12 बाद, भौमप्रदोष व्रत, धनत्रयोदशी, यमप्रीत्यर्थ (K)
	22	14	बु.	26	35	हस्त	26	37	वै.	29	1	कन्या			6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	भ. 13/54 तक, नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), (L)
	23	30	गु.	27	26	चित्रा	28	2	वि.	28	33	तुला	15	23	6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	वक्री बुध हस्त में 11/13, सूर्य सायन वृश्चिक में (M)
कार्तिक शुक्ल	24	1	शु.	27	47	स्वाती	28	58	प्री.	27	42	तुला			6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	4	17	19	24	कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सूर्य स्वाती में 11/05, शुक्र, (N)
	25	2	श.	27	39	विशा.	29	26	आ.	26	28	वृश्चिक	23	22	6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	46	6	5	17	19	25	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध मार्गी 24/46, यमद्वितीया, (O)
	26	3	र.	27	5	अनु.	29	29	सौ.	24	53	वृश्चिक			6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	6	17	18	26	हिजरी सन् 1436 प्रारम्भ,
	27	4	चं.	26	6	ज्येष्ठा	29	8	शो.	22	59	धनु	29	8	6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	भ. 14/35 से 26/06 तक,
	28	5	मं.	24	47	मूल	28	27	अ.	20	48	धनु			6	38	17	34	6	34	17	35	6	37	17	43	6	7	17	16	28	बुध चित्रा में 15/40, ज्ञानपंचमी (जैन),
	29	6	बु.	23	11	पू.षा.	27	30	सु.	18	23	धनु			6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	7	17	15	29	सूर्यषष्ठी (बिहार),
	30	7	गु.	21	19	उ.षा.	26	17	धृ.	15	45	मकर	9	13	6	39	17	32	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	30	भ. 21/19 बाद,
	31	8	शु.	19	14	श्रव.	24	53	शू.	12	56	मकर			6	40	17	31	6	36	17	33	6	39	17	41	6	9	17	14	31	भ. 8/17 तक, गोपाष्टमी,

(A) सरस्वती पूजन,, महानवमी (पूजा एवम् उपवास के लिए) (देखें पृ.14), (B) महानवमी (बलिदान के लिए), सरस्वती के लिए बलिदान, नवरात्र समाप्त, दशहरा (विजयादशमी) (देखें पृ.15), आयुध पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (C) वक्री 22/31, पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मा.), श्रीमाध्वाचार्य जनन्ती, श्रीसरस्वती विसर्जन, भरतमिलाप, (D) (देखें पृ. 13), कोजागर व्रत, शरतपूर्णिमा, ग्रहणवेध, (E) (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 24), (F) बुध चित्रा में 21/55, गुरु आश्ले. 3 में 26/22, ग्रहणवेध, (G) में अस्त 17/53, ग्रहणवेध, (H) (करवा चौथ) (चन्द्रोदय 20/13), ग्रहणवेध, (I) पुण्यकाल 11/46 बाद, ,(J) यूरेनस रेवती 1 में 30/24, (K) दीपदान, (L) श्रीहनुमान् जयन्ती, (उ.भा.), (M) 17/27, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (N) स्वाती में 16/23, बुध पूर्व में उदित 6/35, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीडा, (O) भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा–पूजा,

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवम्बर, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक शुक्ल	1	9	श.	17	0	घनि.	23	20	गं.	9	59	कुम्भ	12	7	6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	पंचक प्रारम्भ 12/07, शनि अस्त 17/31, अक्षयनवमी, (A)
	2	10	र.	14	40	शत.	21	42	वृ./	6	55	कुम्भ			6	42	17	30	6	37	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	भ. 25/28 बाद, शनि विशा. 4 वृश्चि. में 20/54, (B)
									ध्रु.	27	48																					
	3	11	चं.	12	16	पू.भा.	20	1	व्या.	24	41	मीन	14	26	6	43	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	भ. 12/16 तक, गुरु आश्ले. 4 में 28/17, हरिप्रबोधिनी (C)
	4	12	मं.	9	54	उ.भा.	18	24	ह.	21	37	मीन			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	बुध तुला में 21/16, शुक्र विशा. में 7/41, भौमप्रदोष (D)
	5	13/	बु.	7	39	रेव.	16	56	व.	18	41	मेष	16	56	6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 29/36 बाद, पंचक समाप्त 16/56, मंगल पू.षा. (E)
		14		29	36																											चुतर्दशी तिथिक्षय,
	6	15	गु.	27	53	अश्वि.	15	44	सि.	15	58	मेष			6	45	17	27	6	40	17	29	6	44	17	37	6	12	17	10	6	भ. 16/45 तक, सूर्य विशा. में 19/15, त्रिपुरोत्सव, (F)
मार्गशीर्ष कृष्ण	7	1	शु.	26	35	भर.	14	53	व्य.	13	32	वृष	20	44	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	8	2	श.	25	49	कृत्ति.	14	30	व.	11	29	वृष			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	पद्मक योग (14/30 तक), (पुष्करस्नान–माहात्म्य) (G)
	9	3	र.	25	40	रोहि.	14	41	प.	9	53	मिथुन	27	1	6	47	17	25	6	43	17	27	6	46	17	35	6	14	17	9	9	भ. 13/44 से 25/40 तक, बुध स्वाती में 16/30,
	10	4	चं.	26	12	मृग.	15	30	शि.	8	47	मिथुन			6	48	17	24	6	44	17	26	6	46	17	34	6	15	17	8	10	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	11	5	मं.	27	25	आर्द्रा	16	59	सि.	8	12	मिथुन			6	49	17	23	6	44	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	
	12	6	बु.	29	13	पुन.	19	5	सा.	8	8	कर्क	12	30	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	भ. 29/13 बाद, शुक्र वृश्चिक में 7/03,
	13	7	गु.	—	—	पुष्य	21	41	शु.	8	30	कर्क			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	भ. 18/19 तक,
	14	7	शु.	7	30	आश्ले.	24	36	शु.	9	12	सिंह	24	36	6	52	17	21	6	47	17	24	6	49	17	32	6	18	17	6	14	शुक्र अनु. में 22/49, श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
	15	8	श.	10	3	मघा	27	38	ब्र.	10	5	सिंह			6	53	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	राहु हस्त 4, केतु रेवती 2 में 17/41, बुध पूर्व में अस्त (H)
	16	9	र.	12	36	पू.फा.	30	31	ऐं.	10	58	सिंह			6	53	17	20	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	भ. 25/46 बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में 18/01, मु. 30, (I)
	17	10	चं.	14	56	उ.फा.	—	—	वै.	11	42	कन्या	13	11	6	54	17	20	6	49	17	23	6	52	17	31	6	20	17	5	17	भ. 14/56 तक, बुध विशा. में 30/50,
	18	11	मं.	16	49	उ.फा.	9	2	वि.	12	7	कन्या			6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	19	12	बु.	18	7	हस्त	11	1	प्री.	12	6	तुला	23	47	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	सूर्य अनु. में 25/20,
	20	13	गु.	18	45	चित्रा	12	23	आ.	11	35	तुला			6	57	17	19	6	51	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 18/45 से 30/44 तक, प्रदोष व्रत,
	21	14	शु.	18	42	स्वाती	13	6	सौ.	10	32	तुला			6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	
	22	30	श.	18	2	विशा.	13	11	शो.	9	0	वृश्चिक	7	13	6	59	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	4	22	मंगल उ.षा. में 28/47, सूर्य सायन धनु में 15/08, (J)
मार्गशीर्ष शुक्ल	23	1	र.	16	50	अनु.	12	44	अ./	7	0	वृश्चिक			6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
									सु.	28	38																					
	24	2	चं.	15	13	ज्येष्ठा	11	50	धृ.	25	59	धनु	11	50	7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	बुध वृश्चिक में 13/58, बलिदानदिन श्रीगुरु तेगबहादुर (K)
	25	3	मं.	13	17	मूल	10	38	शू.	23	8	धनु			7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	भ. 24/13 बाद, शुक्र ज्येष्ठा में 13/46,
	26	4	बु.	11	10	पू.षा.	9	14	गं.	20	10	मकर	14	52	7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	27	17	3	26	भ. 11/10 तक, बुध अनु. में 16/28, शुक्र पश्चिम में (L)
	27	5/	गु.	8	58	उ.षा./	7	44	वृ.	17	10	मकर			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	मंगल मकर में 12/58, स्कन्द–(M) शुक्र उदित–26 नवं.
		6		30	46	श्रव.	30	14																								षष्ठी तिथिक्षय,
	28	7	शु.	28	38	धनि.	28	47	ध्रु.	14	11	कुम्भ	17	30	7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 28/38 बाद, पंचक प्रारम्भ 17/30, मित्रसप्तमी,
	29	8	श.	26	36	शत.	27	27	व्या.	11	16	कुम्भ			7	4	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 15/37 तक, शुक्रबाल्य समाप्त 17/17,
	30	9	र.	24	43	पू.भा.	26	16	ह./	8	26	मीन	20	33	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	30	शनि अनु. 1 में 23/47.
									व.	29	44																					

(A) कूष्मांड नवमी, (B) भीष्म पंचक प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 15), (C) एकादशी व्रत (स.), (D) व्रत, तुलसीविवाह, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त, हरिप्रबोधोत्सव, (E) से 14/48 वैकुण्ठ चतुर्दशी, (F) भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिकस्नान समाप्त, श्रीगुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.), श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) (देखें पृ 15), (H) 6/53, (I) पुण्यकाल 11/37 बाद, नेप्च्यून मार्गी 12/40, (J) शनैश्चरी अमा, (K) जी (ना.शा.), (L) उदित 17/17, (M) गुह–चम्पाषष्ठी, बलिदानदिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी (पुरातन परम्परा).

श्री वि. सं 2071 तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.) दिसम्बर, सन् 2014 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष शुक्ल	1	10	चं.	23	0	उ.भा.	25	14	सि.	27	10	मीन			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	
	2	11	मं.	21	27	रेव.	24	22	व्य.	24	44	मेष	24	22	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	भ. 10/13 से 21/27 तक, पंचक समाप्त 24/22, (A),
	3	12	बु.	20	8	अश्वि.	23	44	व.	22	29	मेष			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	
	4	13	गु.	19	3	भर.	23	22	प.	20	26	वृष	29	19	7	9	17	16	7	3	17	20	7	4	17	29	6	32	17	3	4	बुध ज्येष्ठा में 27/31, प्रदोष व्रत,
	5	14	शु.	18	18	कृति.	23	18	शि.	18	39	वृष			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	भ. 18/18 से 30/07 तक, शुक्र मूल धनु में 28/43,
	6	15	श.	17	56	रोहि.	23	39	सि.	17	9	वृष			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	शनि उदित 7/10, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,
पौष कृष्ण	7	1	र.	18	2	मृग.	24	27	सा.	16	1	मिथुन	11	59	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	34	17	4	7	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	8	2	चं.	18	40	आर्द्रा	25	46	शु.	15	17	मिथुन			7	12	17	17	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	गुरु वक्री 26/12,
	9	3	मं.	19	51	पुन.	27	38	शु.	14	59	कर्क	21	7	7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	भ. 7/16 से 19/51 तक,
	10	4	बु.	21	36	पुष्य	30	0	ब्र.	15	6	कर्क			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	36	17	4	10	मंगल श्रवण में 11/19, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	11	5	गु.	23	50	आश्ले.	—	—	ऐं.	15	35	कर्क			7	14	17	17	7	8	17	21	7	9	17	30	6	37	17	5	11	
	12	6	शु.	26	23	आश्ले.	8	48	वै.	16	22	सिंह	8	48	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	भ. 26/23 बाद,
	13	7	श.	29	3	मघा	11	50	वि.	17	18	सिंह			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	38	17	5	13	भ. 15/43 तक, बुध मूल धनु में 15/10,
	14	8	र.	—	—	पू.फा.	14	53	प्री.	18	12	कन्या	21	38	7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	
	15	8	चं.	7	34	उ.फा.	17	43	आ.	18	53	कन्या			7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	
	16	9	मं.	9	41	हस्त	20	4	सौ.	19	12	कन्या			7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	भ. 22/25 बाद, सं. सूर्य मूल धनु में 8/42, मु. 30, (B)
	17	10	बु.	11	9	चित्रा	21	45	शो.	18	59	तुला	9	0	7	18	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 11/09 तक,
	18	11	गु.	11	52	स्वाती	22	40	अ.	18	11	तुला			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	सफला एकादशी व्रत (स.),
	19	12	शु.	11	46	विशा.	22	48	सु.	16	44	वृश्चिक	16	50	7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	प्रदोष व्रत,
	20	13	श.	10	52	अनु.	22	11	धृ.	14	41	वृश्चिक			7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	भ. 10/52 से 22/04 तक,
	21	14/ 30	र.	9 31	16 6	ज्येष्ठा	20	57	शू.	12	5	धनु	20	57	7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	बुध पू.षा. में 25/15, यूरेनस मार्गी 28/17, सूर्य सायन(C) अमावस तिथिक्षय,
पौष शुक्ल	22	1	चं.	28	31	मूल	19	14	गं./ वृ.	9 29	3 42	धनु			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	23	2	मं.	25	41	पू.षा.	17	12	ध्रु.	26	9	मकर	22	40	7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	चन्द्रदर्शन, मु.. 45,
	24	3	बु.	22	46	उ.षा.	15	1	व्या.	22	32	मकर			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	
	25	4	गु.	19	56	श्रव.	12	51	ह.	18	59	कुम्भ	23	49	7	22	17	23	7	16	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	25	भ. 9/21 से 19/56 तक, पंचक प्रारम्भ 23/49, (D)
	26	5	शु.	17	16	धनि.	10	50	व.	15	34	कुम्भ			7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	37	6	45	17	11	26	जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
	27	6	श.	14	54	शत.	9	4	सि.	12	23	मीन	25	58	7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	मंगल धनिष्ठा में 13/35, शुक्र उ.षा. में 10/50,
	28	7	र.	12	53	पू.भा./ उ.भा.	7 30	38 35	व्य./ व.	9 30	29 53	मीन			7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	भ. 12/53 से 24/04 तक, ज. दि. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
	29	8	चं.	11	15	रेव.	29	55	प.	28	36	मेष	29	55	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	पंचक समाप्त 29/55, सूर्य पू.षा. में 10/51, शुक्र (E)
	30	9	मं.	10	1	अश्वि.	29	38	शि.	26	37	मेष			7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	30	बुध उ.षा. में 9/29, शनि अनु. 2 में 22/21,
	31	10	बु.	9	10	भर.	29	43	सि.	24	56	मेष			7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	40	6	47	17	14	31	भ. 20/55 बाद,

(A) सूर्य ज्येष्ठा में 29/36, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, (B) पुण्यकाल 15/06 तक, शुक्र पू. षा. में 19/44, (C) मकर में 28/32, उत्तर अयन एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (D) क्रिस्मस डे, (E) मकर में 26/39,

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जनवरी, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शु.	1	11	गु.	8	41	कृति.	30	8	सा.	23	31	वृष	11	47	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	भ. 8/41 तक, बुध मकर में 11/45,बुध पश्चिम में (A)
	2	12	शु.	8	33	रोहि.	30	53	शु.	22	22	वृष			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	प्रदोष व्रत,
	3	13	श.	8	46	मृग.	—	—	शु.	21	31	मिथुन	19	24	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	
	4	14	र.	9	23	मृग.	8	1	ब्र.	20	57	मिथुन			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 9/23 से 21/53 तक, मंगल कुम्भ में 25/59, (B)
	5	15	चं.	10	23	आर्द्रा	9	31	ऐं.	20	43	कर्क	28	55	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	6	1	मं.	11	49	पुन.	11	26	वै.	20	48	कर्क			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रवण में 26/16,
	7	2	बु.	13	41	पुष्य	13	46	वि.	21	12	कर्क			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 26/49 बाद, बुध श्रवण में 23/22,
	8	3	गु.	15	57	आश्ले.	16	28	प्री.	21	53	सिंह	16	28	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 15/57 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय (C)
	9	4	शु.	18	31	मघा	19	28	आ.	22	46	सिंह			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	5	श.	21	15	पू.फा.	22	36	सौ.	23	45	कन्या	29	23	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	
	11	6	र.	23	55	उ.फा.	25	41	शो.	24	40	कन्या			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 23/55 बाद, सूर्य उ.षा. में 12/56,
	12	7	चं.	26	17	हस्त	28	26	अ.	25	21	कन्या			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 13/06 तक, वक्री गुरु आश्ले. 3 में 17/55,
	13	8	मं.	28	6	चित्रा	30	39	सु.	25	38	तुला	17	38	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	मंगल शत. में 14/23, लोहड़ी (पं., हरि., ज.का.),
	14	9	बु.	29	9	स्वाती	—	—	धृ.	25	23	तुला			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 19/27, मु. 15, पुण्यकाल 13/03 (D)
	15	10	गु.	29	21	स्वाती	8	9	शू.	24	28	वृश्चिक	26	43	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 17/15 से 29/21 तक, पोंगल (द.भा.),
	16	11	शु.	28	40	विशा.	8	48	गं.	22	52	वृश्चिक			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	17	12	श.	27	7	अनु.	8	36	वृ.	20	35	वृश्चिक			7	24	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	शुक्र धनि. में 18/09, राहु हस्त 3, केतु रेवती 1 में 15/10,
	18	13	र.	24	51	ज्ये./	7	34	ध्रु.	17	41	धनु	7	34	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 24/51 बाद, प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
						मूल	29	51																								
	19	14	चं.	21	59	पू.षा.	27	36	व्या.	14	16	धनु			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 11/25 तक,
	20	30	मं.	18	44	उ.षा.	24	59	ह./	10	29	मकर	8	58	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 15/12, मौनी अमा, भौमवती अमा,
									व.	30	27																					
माघ शुक्ल	21	1	बु.	15	15	श्रव.	22	13	सि.	26	19	मकर			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 21/23, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	22	2	गु.	11	44	धनि.	19	28	व्य.	22	15	कुम्भ	8	50	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	पंचक प्रारम्भ 8/50, शुक्र कुम्भ में 26/18, गौरी तृतीया (E)
	23	3/	शु.	8	21	शत.	16	55	व.	18	21	कुम्भ			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 18/49 से 29/16 तक, तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी, चतुर्थी तिथिक्षय,
		4		29	16																											
	24	5	श.	26	36	पू.भा.	14	43	प.	14	45	मीन	9	14	7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 15/10, बुध पश्चिम में अस्त 17/47, (F)
	25	6	र.	24	27	उ.भा.	12	59	शि.	11	31	मीन			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	7	चं.	22	52	रेव.	11	47	सि./	8	44	मेष	11	47	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 22/52 बाद, पंचक समाप्त 11/47, प्लूटो पू.षा. 3 (G)
									सा.	30	25																					
	27	8	मं.	21	53	अश्वि.	11	10	शु.	28	34	मेष			7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	0	6	47	17	34	27	भ. 10/23 तक, भीष्माष्टमी,
	28	9	बु.	21	29	भर.	11	8	शु.	27	10	वृष	17	12	7	21	17	50	7	16	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	शुक्र शत. में 10/40,
	29	10	गु.	21	37	कृत्ति.	11	38	ब्र.	26	10	वृष			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	
	30	11	शु.	22	14	रोहि.	12	37	ऐं.	25	32	मिथुन	25	17	7	19	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	भ. 9/55 से 22/14 तक, मंगल पू.भा. में 16/00, (H)
	31	12	श.	23	17	मृग.	14	3	वै.	25	14	मिथुन			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	45	17	37	31	भीष्म द्वादशी,

(A) उदित 17/27, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), इंग्लिश नववर्ष 2015 ई. प्रारम्भ, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) देखें पृ. 11), (D) बाद एवं अगले दिन 11/27 तक, मकर संक्रान्ति, (E) (गोंतरी), (F) श्री(लक्ष्मी)पंचमी, वसन्तपंचमी, लक्ष्मी एवं सरस्वती–पूजन, (G) में 17/53, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, भारत गणतन्त्र दिवस, मर्यादा महोत्सव (जैन),(H) जया एकादशी व्रत (स.),

श्री वि. सं. 2071 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शु.	1	13	र.	24	44	आर्द्रा	15	52	वि.	25	13	मिथुन			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	प्रदोष व्रत,
	2	14	चं.	26	32	पुन.	18	2	प्री.	25	28	कर्क	11	28	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	भ. 26/32 बाद,
	3	15	मं.	28	39	पुष्य	20	31	आ.	25	58	कर्क			7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 15/36 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा, (A)
फाल्गुन कृष्ण	4	1	बु.	31	2	आश्ले.	23	17	सौ.	26	40	सिंह	23	17	7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	5	2	गु.	—	—	मघा	26	16	शो.	27	32	सिंह			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	वक्री बुध उ.षा. में 9/22,
	6	2	शु.	9	38	पू.फा.	29	22	अ.	28	30	सिंह			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 22/59 बाद, सूर्य धनि. में 18/22, बुध पूर्व में उदित (B)
	7	3	श.	12	21	उ.फा.	—	—	सु.	29	29	कन्या	12	9	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 12/21 तक, शुक्र पू.भा. में 28/12, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	8	4	र.	15	1	उ.फा.	8	29	धृ.	30	21	कन्या			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	वक्री गुरु आश्ले. 2 में 17/25,
	9	5	चं.	17	28	हस्त	11	27	शू.	30	58	तुला	24	48	7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	
	10	6	मं.	19	29	चित्रा	14	2	गं.	31	11	तुला			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 19/29 बाद, शनि अनु. 3 में 17/37,
	11	7	बु.	20	54	स्वाती	16	5	वृ.	30	54	तुला			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 8/12 तक, बुध मार्गी 20/26,
	12	8	गु.	21	33	विशा.	17	26	ध्रु.	29	59	वृश्चिक	11	10	7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	मंगल मीन में 13/13,
	13	9	शु.	21	20	अनु.	17	57	व्या.	28	24	वृश्चिक			7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 8/26, मु. 30, पुण्यकाल 14/50 तक,
	14	10	श.	20	16	ज्येष्ठा	17	38	ह.	26	9	धनु	17	38	7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 8/48 से 20/16 तक,
	15	11	र.	18	22	मूल	16	30	व.	23	15	धनु			7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	47	15	शुक्र मीन में 30/10, विजया एकादशी व्रत (स.),
	16	12	चं.	15	46	पू.षा.	14	40	सि.	19	49	मकर	20	6	7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	मंगल उ.भा. में 20/47, सोमप्रदोष व्रत,
	17	13	मं.	12	36	उ.षा.	12	15	व्य.	15	57	मकर			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 12/36 से 22/50 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	18	14/	बु.	9	3	श्रव./	9	27	व.	11	47	कुम्भ	19	58	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	49	18	पंचक प्रारम्भ 19/58, बुध श्रवण में 28/32, शुक्र उ.भा.(C)
		30		29	17	धनि.	30	27																								अमावस तिथिक्षय,
फाल्गु. शुक्ल	19	1	गु.	25	30	शत.	27	25	प./	7	28	कुम्भ			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सूर्य शत. में 22/51,
									शि.	27	8																					
	20	2	शु.	21	51	पू.भा.	24	34	सि.	22	57	मीन	19	15	7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, यूरेनस रेवती 2 में 25/39, .(D)
	21	3	श.	18	31	उ.भा.	22	2	सा.	19	1	मीन			7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 29/06 बाद,
	22	4	र.	15	40	रेव.	20	0	शु.	15	29	मेष	20	0	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	भ. 15/40 तक, पंचक समाप्त 20/00,
	23	5	चं.	13	23	अश्वि.	18	34	शु.	12	26	मेष			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	
	24	6	मं.	11	47	भर.	17	49	ब्र.	9	54	वृष	23	45	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	7	बु.	10	54	कृत्ति.	17	47	ऐं./	7	57	वृष			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 10/54 से 22/49 तक,
									वै.	30	35																					
	26	8	गु.	10	44	रोहि.	18	26	वि.	29	44	वृष			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	होलाष्टक प्रारम्भ,
	27	9	शु.	11	16	मृग.	19	44	प्री.	29	23	मिथुन	7	0	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	10	श.	12	24	आर्द्रा	21	35	आ.	29	26	मिथुन			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 25/13 बाद,

होलाष्टक
26 फरवरी से 5 मार्च

(A) माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, .(B) 7/15, (C) में 23/00, सूर्य सायन मीन में 29/20, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, .(D) अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,

श्री वि. सं. 2071 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — मार्च, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	11	र.	14	2	पुन.	23	54	सौ.	29	50	कर्क	17	17	6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	1	भ. 14/02 तक, शुक्र रेवती में 19/27, नेप्च्यून शत. (A)
	2	12	चं.	16	5	पुष्य	26	33	शो.	30	28	कर्क			6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	गोविन्द द्वादशी,
	3	13	मं.	18	26	आश्ले.	29	27	अ.	—	—	सिंह	29	27	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	बुध धनि. में 30/16, भौमप्रदोष व्रत (देखें पृ. 16),
	4	14	बु.	20	58	मघा	—	—	अ.	7	17	सिंह			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 20/58 बाद, सूर्य पू.भा. में 29/09,
	5	15	गु.	23	35	मघा	8	29	सु.	8	13	सिंह			6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	भ. 10/17 तक, मंगल रेवती में 30/28, श्रीसत्यनारायण (B)
चैत्र कृष्ण	6	1	शु.	26	12	पू.फा.	11	34	धृ.	9	11	कन्या	18	20	6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला (C)
	7	2	श.	28	43	उ.फा.	14	36	शू.	10	8	कन्या			6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	3	र.	—	—	हस्त	17	30	गं.	10	58	कन्या			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	भ. 17/52 बाद, बुध कुम्भ में 30/30, वक्री गुरु आश्ले. (D)
	9	3	चं.	7	1	चित्रा	20	7	वृ.	11	37	तुला	6	51	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 7/01 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	10	4	मं.	8	57	स्वाती	22	21	ध्रु.	12	0	तुला			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	16	18	0	10	
	11	5	बु.	10	25	विशा.	24	4	व्या.	12	1	वृश्चिक	17	41	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	
	12	6	गु.	11	18	अनु.	25	9	ह.	11	34	वृश्चिक			6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	1	12	भ. 11/18 से 23/24 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 18/07, (E)
	13	7	शु.	11	29	ज्येष्ठा	25	33	व.	10	35	धनु	25	33	6	39	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	बुध शत. में 21/11,
	14	8	श.	10	55	मूल	25	12	सि.	9	2	धनु			6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 29/18, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (F)
	15	9	र.	9	38	पू.षा.	24	10	व्य./ व.	6 28	54 12	मकर	29	48	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	भ. 20/38 बाद,
	16	10/ 11	चं.	7 29	38 2	उ.षा.	22	29	प.	24	59	मकर			6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 7/38 तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), एकादशी तिथिक्षय,
	17	12	मं.	25	55	श्रव.	20	15	शि.	21	21	मकर			6	35	18	28	6	33	18	26	6	38	18	32	6	9	18	4	17	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	18	13	बु.	22	28	धनि.	17	38	सि.	17	23	कुम्भ	6	59	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	भ. 22/28 बाद, पंचक प्रारम्भ 6/59, सूर्य उ.भा. में (G)
	19	14	गु.	18	48	शत.	14	47	सा.	13	14	कुम्भ			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 8/38 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	20	30	शु.	15	6	पू.भा.	11	51	शु./ शु.	9 28	0 51	मीन	6	35	6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 28/15, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव- (H)

(A) 3 में 25/48, आमला एकादशी व्रत (स.), (B) व्रत, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु , होलाष्टक समाप्त, (C) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (D) 1 में 23/10, (E) मेला श्रीशीतला माता (कुराली) पं., (F) मध्याह्न तक, शनि वक्री 20/33, श्रीशीतलाष्टमी, (G) 13/36, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (17/38 से सूर्यास्त तक) , (H) दिन, चान्द्र संवत्सर 2071 वि. पूर्ण,

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्" द्वारा रचित एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन – व्रत–पर्व विवेक

जो कि व्रत–पर्व पर आधारित एक ऐसा विशिष्ट संकलन है, जिसमें 50 वर्षों (सन् 2001 से 2050 ई. तक) के सभी धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, जैन एवम् क्रिश्चियन) के व्रत–पर्वों की तारीखें और उनके निर्णायक सिद्धान्तों (Criteria) के इलावा हिन्दू व्रत–पर्वों से सम्बन्धित व्रत–कथाएं तथा देवी–देवताओं की पूजा–अर्चनार्थ आरतियां भी दी गईं हैं। डायरी, पंचांग, जन्त्री तथा कैलेण्डर के निर्माता–प्रकाशकों, ज्योतिषियों एवं धर्मनिष्ठ लोगों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है।

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मूल	14	6	19	23	0	39	5	54
1/ 2	पू.षा.	11	8	16	22	21	35	2	48
2	उ.षा.	8	1	13	14	18	27	23	41
3	श्रव.	4	55	10	11	15	27	20	45
4	धनि.	2	5	7	25	12	48	18	12
4/ 5	शत.	23	39	5	8	10	39	16	13
5/ 6	पू.भा.	21	49	3	28	9	9	14	54
6/ 7	उ.भा.	20	41	2	31	8	24	14	21
7/ 8	रेव.	20	20	2	22	8	27	14	35
8/ 9	अश्वि.	20	46	2	59	9	15	15	34
9/10	भर.	21	55	4	18	10	44	17	12
10/11	कृत्ति.	23	42	6	13	12	46	19	21
12	रोहि.	1	57	8	35	15	13	21	53
13/14	मृग.	4	33	11	15	17	56	0	39
14/15	आर्द्रा	7	22	14	5	20	49	3	33
15/16	पुन.	10	17	17	1	23	45	6	30
16/17	पुष्य	13	14	19	58	2	42	9	25
17/18	आश्ले.	16	9	22	52	5	34	12	17
18/19	मघा	18	58	1	39	8	20	14	59
19/20	पू.फा.	21	38	4	16	10	53	17	29
21	उ.फा.	0	3	6	36	13	8	19	37
22	हस्त	2	5	8	32	14	56	21	18
23	चित्रा	3	38	9	56	16	11	22	23
24	स्वाती	4	33	10	40	16	45	22	47
25	विशा.	4	45	10	41	16	35	22	25
26	अनु.	4	12	9	57	15	39	21	18
27	ज्येष्ठा	2	54	8	28	14	0	19	29
28	मूल	0	56	6	21	11	44	17	5
28/29	पू.षा.	22	25	3	43	8	59	14	15
29/30	उ.षा.	19	30	0	44	5	57	11	10
30/31	श्रव.	16	23	21	37	2	50	8	3

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	धनि.	13	17	18	32	23	48	5	5
1/ 2	शत.	10	23	15	44	21	5	2	29
2/ 3	पू.भा.	7	54	13	22	18	52	0	25
3	उ.भा.	6	0	11	38	17	19	23	3
4	रेव.	4	49	10	39	16	32	22	28
5	अश्वि.	4	28	10	30	16	36	22	45
6	भर.	4	57	11	12	17	29	23	50
7/ 8	कृत्ति.	6	13	12	39	19	8	1	38
8/ 9	रोहि.	8	11	14	46	21	23	4	1
9/10	मृग.	10	41	17	21	0	3	6	46
10/11	आर्द्रा	13	30	20	14	2	59	9	44
11/12	पुन.	16	29	23	14	5	59	12	44
12/13	पुष्य	19	28	2	13	8	56	15	39
13/14	आश्ले.	22	22	5	4	11	45	18	25
15	मघा	1	5	7	44	14	22	20	58
16	पू.फा.	3	34	10	9	16	43	23	16
17/18	उ.फा.	5	48	12	19	18	48	1	16
18/19	हस्त	7	43	14	9	20	33	2	55
19/20	चित्रा	9	16	15	36	21	53	4	9
20/21	स्वाती	10	24	16	36	22	46	4	54
21/22	विशा.	11	0	17	4	23	6	5	6
22/23	अनु.	11	3	16	58	22	51	4	41
23/24	ज्येष्ठा	10	30	16	16	21	59	3	41
24/25	मूल	9	20	14	57	20	33	2	6
25/26	पू.षा.	7	37	13	7	18	35	0	2
26	उ.षा.	5	27	10	50	16	13	21	35
27	श्रव.	2	56	8	16	13	36	18	55
28	धनि.	0	14	5	33	10	52	16	12

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	शत.	21	32	2	53	8	14	13	36
1/ 2	पू.भा.	19	0	0	25	5	52	11	20
2/ 3	उ.भा.	16	50	22	22	3	56	9	32
3/ 4	रेव.	15	11	20	52	2	36	8	23
4/ 5	अश्वि.	14	12	20	4	1	59	7	57
5/ 6	भर.	13	59	20	3	2	10	8	20
6/ 7	कृत्ति.	14	33	20	49	3	8	9	30
7/ 8	रोहि.	15	55	22	22	4	51	11	23
8/ 9	मृग.	17	57	0	32	7	10	13	49
9/10	आर्द्रा	20	30	3	12	9	54	16	38
10/11	पुन.	23	22	6	7	12	52	19	37
12	पुष्य	2	21	9	6	15	50	22	34
13/14	आश्ले.	5	17	11	59	18	40	1	20
14/15	मघा	7	59	14	37	21	13	3	48
15/16	पू.फा.	10	22	16	55	23	26	5	55
16/17	उ.फा.	12	23	18	50	1	15	7	39
17/18	हस्त	14	1	20	21	2	40	8	58
18/19	चित्रा	15	14	21	29	3	42	9	53
19/20	स्वाती	16	3	22	12	4	19	10	24
20/21	विशा.	16	28	22	31	4	32	10	32
21/22	अनु.	16	29	22	26	4	21	10	14
22/23	ज्येष्ठा	16	6	21	57	3	46	9	33
23/24	मूल	15	19	21	4	2	47	8	29
24/25	पू.षा.	14	10	19	49	1	27	7	4
25/26	उ.षा.	12	39	18	14	23	48	5	21
26/27	श्रव.	10	53	16	24	21	55	3	25
27/28	धनि.	8	55	14	24	19	53	1	23
28	शत.	6	52	12	21	17	51	23	21
29	पू.भा.	4	51	10	22	15	54	21	27
30	उ.भा.	3	1	8	36	14	13	19	51
31	रेव.	1	30	7	11	12	54	18	39

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2014 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अश्वि.	0	26	6	15	12	7	18	0
1/ 2	भर.	23	56	5	55	11	55	17	59
3	कृत्ति.	0	5	6	14	12	25	18	39
4	रोहि.	0	56	7	15	13	37	20	1
5	मृग.	2	27	8	56	15	27	22	0
6/ 7	आर्द्रा	4	35	11	12	17	50	0	30
7/ 8	पुन.	7	11	13	53	20	36	3	20
8/ 9	पुष्य	10	4	16	48	23	32	6	16
9/10	आश्ले.	13	0	19	43	2	25	9	6
10/11	मघा	15	47	22	26	5	4	11	40
11/12	पू.फा.	18	14	0	47	7	19	13	48
12/13	उ.फा.	20	15	2	41	9	4	15	26
13/14	हस्त	21	45	4	2	10	18	16	31
14/15	चित्रा	22	42	4	52	10	59	17	5
15/16	स्वाती	23	9	5	11	11	11	17	9
16/17	विशा.	23	6	5	2	10	56	16	48
17/18	अनु.	22	40	4	29	10	18	16	6
18/19	ज्येष्ठा	21	52	3	38	9	22	15	6
19/20	मूल	20	48	2	30	8	12	13	52
20/21	पू.षा.	19	32	1	12	6	51	12	30
21/22	उ.षा.	18	8	23	46	5	24	11	1
22/23	श्रव.	16	38	22	16	3	53	9	30
23/24	धनि.	15	7	20	45	2	22	8	0
24/25	शत.	13	38	19	17	0	56	6	35
25/26	पू.भा.	12	15	17	56	23	37	5	19
26/27	उ.भा.	11	1	16	45	22	30	4	15
27/28	रेव.	10	2	15	50	21	39	3	30
28/29	अश्वि.	9	22	15	15	21	10	3	7
29/30	भर.	9	5	15	6	21	7	3	11

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	कृत्ति.	9	17	15	25	21	35	3	46
1/ 2	रोहि.	10	0	16	17	22	35	4	55
2/ 3	मृग.	11	18	17	42	0	9	6	37
3/ 4	आर्द्रा	13	8	19	40	2	14	8	50
4/ 5	पुन.	15	28	22	6	4	47	11	28
5/ 6	पुष्य	18	10	0	53	7	36	14	20
6/ 7	आश्ले.	21	4	3	48	10	32	17	15
7/ 8	मघा	23	58	6	40	13	21	20	0
9	पू.फा.	2	38	9	15	15	50	22	22
10/11	उ.फा.	4	53	11	22	17	48	0	12
11/12	हस्त	6	34	12	53	19	9	1	23
12/13	चित्रा	7	35	13	44	19	50	1	54
13/14	स्वाती	7	55	13	54	19	51	1	45
14/15	विशा.	7	37	13	27	19	15	1	1
15	अनु.	6	45	12	28	18	9	23	48
16	ज्येष्ठा	5	26	11	3	16	39	22	14
17	मूल	3	48	9	21	14	54	20	26
18	पू.षा.	1	58	7	29	13	1	18	32
19	उ.षा.	0	4	5	36	11	8	16	40
19/20	श्रव.	22	13	3	46	9	20	14	55
20/21	धनि.	20	31	2	7	7	45	13	23
21/22	शत.	19	2	0	43	6	24	12	7
22/23	पू.भा.	17	50	23	35	5	21	11	9
23/24	उ.भा.	16	57	22	47	4	39	10	31
24/25	रेव.	16	25	22	20	4	17	10	14
25/26	अश्वि.	16	14	22	14	4	16	10	20
26/27	भर.	16	24	22	31	4	38	10	47
27/28	कृत्ति.	16	58	23	10	5	24	11	39
28/29	रोहि.	17	56	0	14	6	34	12	56
29/30	मृग.	19	19	1	44	8	10	14	38
30/31	आर्द्रा	21	8	3	39	10	12	16	47

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पुन.	23	22	6	0	12	38	19	18
2	पुष्य	1	59	8	40	15	23	22	7
3/ 4	आश्ले.	4	51	11	35	18	20	1	5
4/ 5	मघा	7	49	14	34	21	17	4	1
5/ 6	पू.फा.	10	43	17	24	0	4	6	42
6/ 7	उ.फा.	13	18	19	53	2	25	8	56
7/ 8	हस्त	15	23	21	48	4	11	10	31
8/ 9	चित्रा	16	48	23	2	5	14	11	22
9/10	स्वाती	17	27	23	29	5	29	11	25
10/11	विशा.	17	19	23	10	4	58	10	43
11/12	अनु.	16	26	22	7	3	45	9	21
12/13	ज्येष्ठा	14	55	20	27	1	58	7	26
13/14	मूल	12	54	18	20	23	45	5	9
14/15	पू.षा.	10	32	15	55	21	17	2	39
15/16	उ.षा.	8	1	13	23	18	45	0	8
16	श्रव.	5	30	10	54	16	18	21	44
17	धनि.	3	10	8	37	14	6	19	36
18	शत.	1	8	6	41	12	16	17	53
18/19	पू.भा.	23	31	5	11	10	53	16	37
19/20	उ.भा.	22	24	4	12	10	2	15	54
20/21	रेव.	21	48	3	44	9	42	15	42
21/22	अश्वि.	21	43	3	47	9	53	16	0
22/23	भर.	22	9	4	20	10	32	16	47
23/24	कृत्ति.	23	2	5	19	11	38	17	58
25	रोहि.	0	20	6	43	13	7	19	33
26	मृग.	2	0	8	28	14	58	21	29
27	आर्द्रा	4	1	10	34	17	9	23	44
28/29	पुन.	6	21	12	59	19	38	2	18
29/30	पुष्य	8	58	15	40	22	23	5	6

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	आश्ले.	11	50	18	35	1	20	8	5
1/ 2	मघा	14	51	21	36	4	22	11	7
2/ 3	पू.फा.	17	52	0	36	7	20	14	2
3/ 4	उ.फा.	20	44	3	24	10	2	16	39
4/ 5	हस्त	23	14	5	47	12	17	18	45
6	चित्रा	1	11	7	34	13	54	20	10
7	स्वाती	2	24	8	36	14	43	20	48
8	विशा.	2	49	8	48	14	43	20	35
9	अनु.	2	24	8	9	13	52	19	32
10	ज्येष्ठा	1	10	6	45	12	17	17	47
10/11	मूल	23	15	4	41	10	5	15	27
11/12	पू.षा.	20	48	2	7	7	25	12	42
12/13	उ.षा.	17	59	23	15	4	30	9	45
13/14	श्रव.	15	0	20	16	1	31	6	47
14/15	धनि.	12	4	17	21	22	40	3	59
15/16	शत.	9	20	14	43	20	7	1	33
16	पू.भा.	7	0	12	30	18	2	23	36
17	उ.भा.	5	12	10	51	16	32	22	15
18	रेव.	4	1	9	50	15	41	21	35
19	अश्वि.	3	31	9	30	15	31	21	35
20	भर.	3	42	9	50	16	2	22	15
21	कृत्ति.	4	30	10	48	17	8	23	29
22/23	रोहि.	5	53	12	18	18	44	1	13
23/24	मृग.	7	43	14	14	20	47	3	20
24/25	आर्द्रा	9	55	16	31	23	9	5	47
25/26	पुन.	12	26	19	6	1	46	8	28
26/27	पुष्य	15	10	21	52	4	36	11	20
27/28	आश्ले.	18	4	0	48	7	33	14	19
28/29	मघा	21	4	3	50	10	35	17	21
30	पू.फा.	0	6	6	51	13	35	20	19
31	उ.फा.	3	2	9	45	16	26	23	6

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/ 2	हस्त	5	45	12	23	18	58	1	32
2/ 3	चित्रा	8	4	14	34	21	2	3	27
3/ 4	स्वाती	9	50	16	10	22	27	4	42
4/ 5	विशा.	10	54	17	2	23	8	5	10
5/ 6	अनु.	11	10	17	6	22	59	4	49
6/ 7	ज्येष्ठा	10	36	16	21	22	2	3	41
7/ 8	मूल	9	16	14	49	20	20	1	49
8	पू.षा.	7	15	12	39	18	1	23	22
9	उ.षा.	4	41	9	59	15	15	20	31
10	श्रव.	1	45	6	59	12	12	17	26
10/11	धनि.	22	39	3	52	9	5	14	19
11/12	शत.	19	34	0	49	6	5	11	23
12/13	पू.भा.	16	42	22	2	3	24	8	48
13/14	उ.भा.	14	14	19	42	1	12	6	44
14/15	रेव.	12	19	17	57	23	37	5	19
15/16	अश्वि.	11	5	16	53	22	45	4	39
16/17	भर.	10	36	16	36	22	38	4	44
17/18	कृत्ति.	10	52	17	3	23	17	5	33
18/19	रोहि.	11	52	18	14	0	37	7	3
19/20	मृग.	13	31	20	1	2	33	9	6
20/21	आर्द्रा	15	41	22	17	4	55	11	34
21/22	पुन.	18	14	0	56	7	38	14	20
22/23	पुष्य	21	3	3	47	10	32	17	16
24	आश्ले.	0	1	6	46	13	31	20	16
25	मघा	3	1	9	46	16	31	23	15
26/27	पू.फा.	5	59	12	43	19	26	2	9
27/28	उ.फा.	8	50	15	32	22	12	4	51
28/29	हस्त	11	30	18	7	0	43	7	17
29/30	चित्रा	13	51	20	22	2	52	9	21
30/31	स्वाती	15	47	22	11	4	34	10	54

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	विशा.	17	12	23	28	5	41	11	52
1/ 2	अनु.	18	0	0	6	6	9	12	10
2/ 3	ज्येष्ठा	18	8	0	3	5	55	11	45
3/ 4	मूल	17	32	23	17	4	59	10	39
4/ 5	पू.षा.	16	16	21	51	3	24	8	55
5/ 6	उ.षा.	14	23	19	50	1	16	6	39
6/ 7	श्रव.	12	1	17	22	22	42	4	1
7/ 8	धनि.	9	19	14	36	19	53	1	9
8	शत.	6	26	11	42	16	59	22	16
9	पू.भा.	3	33	8	51	14	10	19	30
10	उ.भा.	0	51	6	14	11	38	17	3
10/11	रेव.	22	31	4	0	9	32	15	6
11/12	अश्वि.	20	42	2	20	8	1	13	45
12/13	भर.	19	32	1	21	7	13	13	8
13/14	कृत्ति.	19	5	1	6	7	10	13	16
14/15	रोहि.	19	26	1	38	7	54	14	12
15/16	मृग.	20	32	2	55	9	21	15	49
16/17	आर्द्रा	22	19	4	52	11	26	18	2
18	पुन.	0	40	7	20	14	0	20	42
19	पुष्य	3	25	10	8	16	52	23	37
20/21	आश्ले	6	22	13	7	19	53	2	38
21/22	मघा	9	23	16	8	22	52	5	36
22/23	पू.फा.	12	19	19	1	1	43	8	24
23/24	उ.फा.	15	3	21	42	4	19	10	56
24/25	हस्त	17	31	0	5	6	37	13	9
25/26	चित्रा	19	38	2	7	8	34	14	59
26/27	स्वाती	21	23	3	45	10	6	16	24
27/28	विशा.	22	41	4	57	11	11	17	22
28/29	अनु.	23	32	5	40	11	47	17	51
29/30	ज्येष्ठा	23	53	5	54	11	52	17	49

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	मूल	23	44	5	36	11	27	17	16
1/ 2	पू.षा.	23	3	4	48	10	31	16	13
2/ 3	उ.षा.	21	53	3	31	9	8	14	43
3/ 4	श्रव.	20	17	1	49	7	20	12	50
4/ 5	घनि.	18	19	23	46	5	13	10	39
5/ 6	शत.	16	5	21	30	2	55	8	19
6/ 7	पू.भा.	13	44	19	8	0	32	5	57
7/ 8	उ.भा.	11	22	16	48	22	14	3	42
8/ 9	रेव.	9	10	14	39	20	10	1	42
9/10	अश्वि.	7	15	12	51	18	28	0	7
10	भर.	5	47	11	31	17	16	23	4
11	कृत्ति.	4	54	10	46	16	42	22	39
12	रोहि.	4	40	10	43	16	49	22	58
13/14	मृग.	5	10	11	24	17	42	0	1
14/15	आर्द्रा	6	24	12	49	19	16	1	46
15/16	पुन.	8	18	14	53	21	29	4	7
16/17	पुष्य	10	46	17	27	0	9	6	52
17/18	आश्ले.	13	36	20	21	3	6	9	51
18/19	मघा	16	36	23	21	6	6	12	51
19/20	पू.फा.	19	34	2	17	8	59	15	39
20/21	उ.फा.	22	18	4	56	11	33	18	8
22	हस्त	0	41	7	13	13	42	20	10
23	चित्रा	2	36	9	1	15	23	21	44
24	स्वाती	4	2	10	19	16	34	22	47
25	विशा.	4	58	11	8	17	16	23	22
26	अनु.	5	26	11	29	17	30	23	30
27	ज्येष्ठा	5	29	11	25	17	21	23	15
28	मूल	5	8	10	59	16	50	22	39
29	पू.षा.	4	27	10	14	16	0	21	45
30	उ.षा.	3	30	9	13	14	55	20	37
31	श्रव.	2	17	7	57	13	36	19	15

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	घनि.	0	53	6	31	12	7	17	44
1/ 2	शत.	23	20	4	56	10	31	16	6
2/ 3	पू.भा.	21	41	3	16	8	51	14	26
3/ 4	उ.भा.	20	1	1	37	7	12	12	48
4/ 5	रेव.	18	24	0	1	5	39	11	17
5/ 6	अश्वि.	16	56	22	37	4	18	10	0
6/ 7	भर.	15	44	21	29	3	15	9	3
7/ 8	कृत्ति.	14	53	20	44	2	37	8	32
8/ 9	रोहि.	14	30	20	29	2	31	8	35
9/10	मृग.	14	41	20	50	3	1	9	14
10/11	आर्द्रा	15	30	21	49	4	10	10	33
11/12	पुन.	16	59	23	27	5	58	12	30
12/13	पुष्य	19	5	1	41	8	19	14	59
13/14	आश्ले.	21	41	4	23	11	7	17	51
15	मघा	0	36	7	21	14	7	20	52
16	पू.फा.	3	37	10	22	17	6	23	49
17/18	उ.फा.	6	31	13	11	19	50	2	27
18/19	हस्त	9	2	15	35	22	6	4	35
19/20	चित्रा	11	1	17	25	23	47	6	6
20/21	स्वाती	12	23	18	37	0	49	6	59
21/22	विशा.	13	6	19	10	1	13	7	13
22/23	अनु.	13	11	19	7	1	1	6	53
23/24	ज्येष्ठा	12	44	18	33	0	20	6	6
24/25	मूल	11	50	17	34	23	16	4	58
25/26	पू.षा.	10	38	16	18	21	57	3	36
26/27	उ.षा.	9	14	14	52	20	29	2	7
27/28	श्रव.	7	44	13	21	18	59	0	36
28	घनि.	6	14	11	52	17	30	23	8
29	शत.	4	47	10	27	16	6	21	47
30	पू.भा.	3	27	9	9	14	50	20	33

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.भा.	2	16	7	59	13	43	19	28
2	रेव.	1	13	7	0	12	46	18	34
3	अश्वि.	0	22	6	12	12	2	17	52
3/ 4	भर.	23	44	5	37	11	31	17	26
4/ 5	कृत्ति.	23	22	5	19	11	17	17	17
5/ 6	रोहि.	23	18	5	21	11	25	17	31
6/ 7	मृग.	23	39	5	48	11	59	18	12
8	आर्द्रा	0	27	6	43	13	2	19	23
9	पुन.	1	46	8	11	14	38	21	7
10	पुष्य	3	37	10	10	16	45	23	22
11/12	आश्ले.	6	0	12	40	19	21	2	4
12/13	मघा	8	48	15	32	22	18	5	4
13/14	पू.फा.	11	50	18	36	1	22	8	8
14/15	उ.फा.	14	53	21	38	4	21	11	3
15/16	हस्त	17	43	0	21	6	58	13	32
16/17	चित्रा	20	4	2	33	9	0	15	24
17/18	स्वाती	21	45	4	3	10	18	16	31
18/19	विशा.	22	40	4	46	10	50	16	50
19/20	अनु.	22	48	4	43	10	35	16	24
20/21	ज्येष्ठा	22	11	3	56	9	38	15	18
21/22	मूल	20	57	2	33	8	8	13	42
22/23	पू.षा.	19	14	0	45	6	14	11	43
23/24	उ.षा.	17	12	22	40	4	7	9	34
24/25	श्रव.	15	1	20	28	1	55	7	23
25/26	घनि.	12	51	18	19	23	49	5	19
26/27	शत.	10	49	16	21	21	54	3	29
27/28	पू.भा.	9	4	14	40	20	18	1	58
28/29	उ.भा.	7	38	13	20	19	4	0	49
29/30	रेव.	6	35	12	23	18	12	0	3
30	अश्वि.	5	55	11	49	17	44	23	40
31	भर.	5	38	11	37	17	38	23	39

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	कृत्ति.	5	43	11	47	17	52	23	59
2/ 3	रोहि.	6	8	12	17	18	28	0	40
3/ 4	मृग.	6	53	13	8	19	24	1	42
4/ 5	आर्द्रा	8	1	14	21	20	43	3	6
5/ 6	पुन.	9	31	15	58	22	26	4	55
6/ 7	पुष्य	11	26	17	59	0	33	7	9
7/ 8	आश्ले.	13	46	20	25	3	5	9	46
8/ 9	मघा	16	28	23	12	5	57	12	42
9/10	पू.फा.	19	28	2	15	9	2	15	49
10/11	उ.फा.	22	36	5	23	12	10	18	56
12	हस्त	1	40	8	24	15	7	21	47
13/14	चित्रा	4	26	11	3	17	38	0	10
14/15	स्वाती	6	39	13	6	19	30	1	51
15/16	विशा.	8	9	14	24	20	35	2	43
16/17	अनु.	8	48	14	50	20	48	2	44
17/18	ज्येष्ठा	8	36	14	25	20	11	1	54
18/19	मूल	7	34	13	12	18	47	0	20
19	पू.षा.	5	51	11	20	16	47	22	12
20	उ.षा.	3	36	8	58	14	19	19	40
21	श्रव.	0	59	6	18	11	36	16	55
21/22	घनि.	22	13	3	31	8	50	14	9
22/23	शत.	19	28	0	48	6	9	11	32
23/24	पू.भा.	16	55	22	20	3	46	9	14
24/25	उ.भा.	14	43	20	14	1	47	7	22
25/26	रेव.	12	59	18	38	0	19	6	2
26/27	अश्वि.	11	47	17	35	23	24	5	16
27/28	भर.	11	10	17	6	23	5	5	5
28/29	कृत्ति.	11	8	17	12	23	19	5	27
29/30	रोहि.	11	38	17	50	0	4	6	20
30/31	मृग.	12	37	18	56	1	17	7	39

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	आर्द्रा	14	3	20	28	2	55	9	23
1/ 2	पुन.	15	52	22	23	4	55	11	28
2/ 3	पुष्य	18	2	0	38	7	15	13	52
3/ 4	आश्ले.	20	31	3	11	9	52	16	34
4/ 5	मघा	23	17	6	0	12	45	19	30
6	पू.फा.	2	15	9	2	15	48	22	35
7/ 8	उ.फा.	5	22	12	9	18	56	1	43
8/ 9	हस्त	8	29	15	15	22	0	4	44
9/10	चित्रा	11	27	18	8	0	48	7	26
10/11	स्वाती	14	2	20	37	3	9	9	38
11/12	विशा.	16	5	22	30	4	51	11	10
12/13	अनु.	17	26	23	38	5	48	11	54
13/14	ज्येष्ठा	17	57	23	57	5	54	11	47
14/15	मूल	17	38	23	25	5	10	10	51
15/16	पू.षा.	16	30	22	6	3	40	9	11
16/17	उ.षा	14	40	20	6	1	31	6	54
17/18	श्रव	12	15	17	35	22	53	4	11
18/19	घनि.	9	27	14	43	19	58	1	12
19	शत.	6	27	11	41	16	55	22	10
20	पू.भा.	3	25	8	41	13	57	19	15
21	उ.भा.	0	34	5	53	11	15	16	38
21/22	रेव.	22	3	3	29	8	57	14	28
22/23	अश्वि.	20	0	1	35	7	13	12	52
23/24	भर.	18	35	0	19	6	7	11	57
24/25	कृत्ति.	17	49	23	45	5	43	11	43
25/26	रोहि.	17	47	23	53	6	1	12	12
26/27	मृग.	18	26	0	42	7	0	13	21
27/28	आर्द्रा	19	44	2	9	8	36	15	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	पुन.	21	35	4	8	10	42	17	17
1/ 2	पुष्य	23	54	6	32	13	11	19	51
3	आश्ले.	2	33	9	15	15	58	22	42
4/ 5	मघा	5	26	12	11	18	57	1	42
5/ 6	पू.फा.	8	29	15	15	22	1	4	47
6/ 7	उ.फा.	11	34	18	20	1	6	7	51
7/ 8	हस्त	14	36	21	21	4	4	10	48
8/ 9	चित्रा	17	30	0	11	6	51	13	30
9/10	स्वाती	20	7	2	43	9	18	15	50
10/11	विशा.	22	21	4	50	11	17	17	41
12	अनु.	0	4	6	24	12	42	18	57
13	ज्येष्ठा	1	9	7	19	13	26	19	31
14	मूल	1	33	7	32	13	28	19	21
15	पू.षा.	1	12	7	1	12	46	18	29
16	उ.षा.	0	10	5	48	11	23	16	57
16/17	श्रव.	22	28	3	58	9	25	14	51
17/18	घनि.	20	15	1	38	6	59	12	19
18/19	शत.	17	38	22	56	4	13	9	30
19/20	पू.भा.	14	46	20	3	1	19	6	35
20/21	उ.भा.	11	51	17	8	22	25	3	43
21/22	रेव.	9	2	14	22	19	43	1	6
22	अश्वि.	6	29	11	55	17	22	22	52
23	भर.	4	23	9	57	15	32	21	11
24	कृत्ति.	2	51	8	35	14	21	20	10
25	रोहि.	2	1	7	55	13	53	19	53
26	मृग.	1	56	8	2	14	11	20	23
27	आर्द्रा	2	38	8	56	15	16	21	39
28	पुन.	4	4	10	32	17	2	23	35
29/30	पुष्य	6	9	12	45	19	23	2	3
30/31	आश्ले.	8	44	15	26	22	10	4	54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 20"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	42	17	8	16	25	28	8	9	44	36	5	17	35	22	8	18	1	39	2	22	3	41	9	2	50	39	6	26	18	8	6	10	12	36	6	11	29	2	-23	1	-19	5	4	18
2	6	46	13	8	17	26	38	8	25	3	36	5	18	1	54	8	19	38	38	2	21	55	37	9	2	25	18	6	26	23	32	6	10	9	25	6	11	19	6	-22	56	-17	17	4	51
3	6	50	10	8	18	27	49	9	10	21	56	5	18	28	12	8	21	15	57	2	21	47	32	9	1	57	57	6	26	28	52	6	10	6	14	6	11	8	36	-22	51	-14	15	5	2
4	6	54	6	8	19	28	59	9	25	28	16	5	18	54	15	8	22	53	36	2	21	39	25	9	1	28	44	6	26	34	9	6	10	3	3	6	10	58	49	-22	45	-10	19	4	53
5	6	58	3	8	20	30	9	10	10	13	29	5	19	20	4	8	24	31	36	2	21	31	18	9	0	57	48	6	26	39	21	6	9	59	53	6	10	50	51	-22	38	-5	50	4	24
6	7	1	59	8	21	31	19	10	24	31	53	5	19	45	39	8	26	9	56	2	21	23	10	9	0	25	21	6	26	44	29	6	9	56	42	6	10	45	21	-22	32	-1	9	3	39
7	7	5	56	8	22	32	29	11	8	21	26	5	20	10	58	8	27	48	37	2	21	15	3	8	29	51	35	6	26	49	33	6	9	53	31	6	10	42	26	-22	24	3	27	2	43
8	7	9	53	8	23	33	38	11	21	43	14	5	20	36	3	8	29	27	38	2	21	6	57	8	29	16	42	6	26	54	33	6	9	50	20	6	10	41	35	-22	17	7	44	1	39
9	7	13	49	8	24	34	47	0	4	40	24	5	21	0	51	9	1	6	59	2	20	58	51	8	28	40	57	6	26	59	28	6	9	47	9	6	10	41	50	-22	8	11	31	0	32
10	7	17	46	8	25	35	55	0	17	17	9	5	21	25	24	9	2	46	37	2	20	50	47	8	28	4	33	6	27	4	19	6	9	43	59	6	10	41	56	-22	0	14	41	-0	35
11	7	21	42	8	26	37	3	0	29	37	57	5	21	49	41	9	4	26	32	2	20	42	44	8	27	27	47	6	27	9	5	6	9	40	48	6	10	40	37	-21	51	17	6	-1	38
12	7	25	39	8	27	38	11	1	11	47	5	5	22	13	41	9	6	6	42	2	20	34	43	8	26	50	54	6	27	13	48	6	9	37	37	6	10	36	52	-21	41	18	42	-2	37
13	7	29	35	8	28	39	17	1	23	48	14	5	22	37	24	9	7	47	3	2	20	26	45	8	26	14	9	6	27	18	25	6	9	34	26	6	10	30	5	-21	31	19	27	-3	27
14	7	33	32	8	29	40	23	2	5	44	26	5	23	0	51	9	9	27	32	2	20	18	50	8	25	37	49	6	27	22	58	6	9	31	15	6	10	20	10	-21	21	19	19	-4	7
15	7	37	28	9	0	41	29	2	17	37	57	5	23	24	0	9	11	8	5	2	20	10	57	8	25	2	8	6	27	27	27	6	9	28	5	6	10	7	33	-21	10	18	19	-4	37
16	7	41	25	9	1	42	34	2	29	30	30	5	23	46	51	9	12	48	37	2	20	3	8	8	24	27	21	6	27	31	50	6	9	24	54	6	9	53	5	-20	59	16	32	-4	55
17	7	45	22	9	2	43	39	3	11	23	23	5	24	9	24	9	14	29	1	2	19	55	23	8	23	53	43	6	27	36	9	6	9	21	43	6	9	37	54	-20	48	14	4	-4	59
18	7	49	18	9	3	44	43	3	23	17	48	5	24	31	39	9	16	9	9	2	19	47	42	8	23	21	26	6	27	40	24	6	9	18	32	6	9	23	16	-20	36	11	1	-4	51
19	7	53	15	9	4	45	47	4	5	15	6	5	24	53	34	9	17	48	51	2	19	40	5	8	22	50	44	6	27	44	33	6	9	15	22	6	9	10	22	-20	24	7	30	-4	30
20	7	57	11	9	5	46	50	4	17	17	7	5	25	15	10	9	19	27	57	2	19	32	33	8	22	21	47	6	27	48	38	6	9	12	11	6	9	0	7	-20	11	3	40	-3	56
21	8	1	8	9	6	47	53	4	29	26	17	5	25	36	26	9	21	6	13	2	19	25	6	8	21	54	44	6	27	52	37	6	9	9	0	6	8	52	59	-19	58	-0	21	-3	12
22	8	5	4	9	7	48	56	5	11	45	42	5	25	57	22	9	22	43	23	2	19	17	45	8	21	29	46	6	27	56	32	6	9	5	49	6	8	48	56	-19	44	-4	25	-2	17
23	8	9	1	9	8	49	58	5	24	19	9	5	26	17	57	9	24	19	8	2	19	10	29	8	21	6	58	6	28	0	21	6	9	2	38	6	8	47	21	-19	31	-8	22	-1	16
24	8	12	57	9	9	51	0	6	7	10	48	5	26	38	10	9	25	53	7	2	19	3	19	8	20	46	27	6	28	4	5	6	8	59	28	6	8	47	12	-19	16	-12	2	-0	8
25	8	16	54	9	10	52	1	6	20	24	50	5	26	58	1	9	27	24	55	2	18	56	16	8	20	28	17	6	28	7	45	6	8	56	17	6	8	47	9	-19	2	-15	12	1	1
26	8	20	51	9	11	53	2	7	4	4	52	5	27	17	30	9	28	54	4	2	18	49	19	8	20	12	33	6	28	11	18	6	8	53	6	6	8	45	53	-18	47	-17	38	2	9
27	8	24	47	9	12	54	2	7	18	12	57	5	27	36	35	10	0	20	3	2	18	42	29	8	19	59	16	6	28	14	47	6	8	49	55	6	8	42	22	-18	32	-19	5	3	12
28	8	28	44	9	13	55	1	8	2	48	33	5	27	55	17	10	1	42	16	2	18	35	46	8	19	48	28	6	28	18	10	6	8	46	45	6	8	36	3	-18	16	-19	20	4	4
29	8	32	40	9	14	56	0	8	17	47	36	5	28	13	35	10	3	0	4	2	18	29	11	8	19	40	10	6	28	21	28	6	8	43	34	6	8	27	3	-18	0	-18	14	4	41
30	8	36	37	9	15	56	58	9	3	2	25	5	28	31	28	10	4	12	45	2	18	22	44	8	19	34	21	6	28	24	40	6	8	40	23	6	8	16	7	-17	44	-15	51	4	59
31	8	40	33	9	16	57	55	9	18	22	20	5	28	48	55	10	5	19	32	2	18	16	24	8	19	31	0	6	28	27	47	6	8	37	12	6	8	4	25	-17	28	-12	20	4	55

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 24"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 30	9 17 58 51	10 3 35 37	5 29 5 57	10 6 19 38	2 18 10 13	8 19 30 6	6 28 30 48	6 8 34 1	6 7 53 18	-17 11	-8 3	4 31
2	8 48 26	9 18 59 46	10 18 31 32	5 29 22 32	10 7 12 14	2 18 4 11	8 19 31 37	6 28 33 44	6 8 30 51	6 7 43 58	-16 54	-3 19	3 48
3	8 52 23	9 20 0 40	11 3 2 10	5 29 38 40	10 7 56 33	2 17 58 18	8 19 35 31	6 28 36 34	6 8 27 40	6 7 37 14	-16 36	1 28	2 52
4	8 56 20	9 21 1 33	11 17 3 21	5 29 54 21	10 8 31 47	2 17 52 33	8 19 41 44	6 28 39 18	6 8 24 29	6 7 33 17	-16 19	6 1	1 46
5	9 0 16	9 22 2 24	0 0 34 30	6 0 9 34	10 8 57 16	2 17 46 58	8 19 50 13	6 28 41 56	6 8 21 18	6 7 31 44	-16 1	10 7	0 37
6	9 4 13	9 23 3 14	0 13 37 51	6 0 24 18	10 9 12 25	2 17 41 33	8 20 0 55	6 28 44 29	6 8 18 8	6 7 31 39	-15 42	13 34	-0 32
7	9 8 9	9 24 4 2	0 26 17 23	6 0 38 34	10 9 16 49	2 17 36 17	8 20 13 47	6 28 46 56	6 8 14 57	6 7 31 52	-15 24	16 16	-1 38
8	9 12 6	9 25 4 49	1 8 37 57	6 0 52 19	10 9 10 16	2 17 31 11	8 20 28 45	6 28 49 17	6 8 11 46	6 7 31 8	-15 5	18 8	-2 37
9	9 16 2	9 26 5 34	1 20 44 36	6 1 5 34	10 8 52 48	2 17 26 15	8 20 45 45	6 28 51 33	6 8 8 35	6 7 28 25	-14 46	19 8	-3 28
10	9 19 59	9 27 6 18	2 2 42 5	6 1 18 19	10 8 24 44	2 17 21 30	8 21 4 44	6 28 53 42	6 8 5 25	6 7 23 4	-14 27	19 15	-4 9
11	9 23 55	9 28 7 0	2 14 34 35	6 1 30 32	10 7 46 44	2 17 16 55	8 21 25 38	6 28 55 45	6 8 2 14	6 7 14 55	-14 7	18 31	-4 39
12	9 27 52	9 29 7 41	2 26 25 34	6 1 42 14	10 6 59 45	2 17 12 30	8 21 48 24	6 28 57 43	6 7 59 3	6 7 4 15	-13 47	16 59	-4 57
13	9 31 49	10 0 8 20	3 8 17 43	6 1 53 23	10 6 5 0	2 17 8 16	8 22 12 57	6 28 59 35	6 7 55 52	6 6 51 47	-13 27	14 44	-5 2
14	9 35 45	10 1 8 57	3 20 13 0	6 2 3 58	10 5 4 3	2 17 4 13	8 22 39 13	6 29 1 20	6 7 52 42	6 6 38 33	-13 7	11 52	-4 53
15	9 39 42	10 2 9 33	4 2 12 51	6 2 14 0	10 3 58 34	2 17 0 20	8 23 7 10	6 29 3 0	6 7 49 31	6 6 25 39	-12 47	8 29	-4 32
16	9 43 38	10 3 10 8	4 14 18 25	6 2 23 27	10 2 50 24	2 16 56 39	8 23 36 44	6 29 4 33	6 7 46 20	6 6 14 12	-12 26	4 44	-3 59
17	9 47 35	10 4 10 41	26 30 42	6 2 32 19	10 1 41 24	2 16 53 9	8 24 7 51	6 29 6 1	6 7 43 9	6 6 5 4	-12 5	0 46	-3 14
18	9 51 31	10 5 11 13	5 8 51 0	6 2 40 34	10 0 33 20	2 16 49 49	8 24 40 27	6 29 7 23	6 7 39 59	6 5 58 46	-11 44	-3 17	-2 19
19	9 55 28	10 6 11 44	5 21 21 0	6 2 48 13	9 29 27 50	2 16 46 42	8 25 14 29	6 29 8 38	6 7 36 48	6 5 55 20	-11 23	-7 15	-1 17
20	9 59 24	10 7 12 13	6 4 2 55	6 2 55 15	9 28 26 20	2 16 43 45	8 25 49 54	6 29 9 47	6 7 33 37	6 5 54 18	-11 1	-10 57	-0 10
21	10 3 21	10 8 12 41	6 16 59 26	6 3 1 38	9 27 30 0	2 16 41 0	8 26 26 39	6 29 10 50	6 7 30 27	6 5 54 50	-10 40	-14 12	0 59
22	10 7 18	10 9 13 8	7 0 13 27	6 3 7 22	9 26 39 45	2 16 38 26	8 27 4 40	6 29 11 48	6 7 27 16	6 5 55 48	-10 18	-16 48	2 6
23	10 11 14	10 10 13 33	7 13 47 43	6 3 12 27	9 25 56 14	2 16 36 4	8 27 43 54	6 29 12 38	6 7 24 5	6 5 56 3	-9 56	-18 31	3 9
24	10 15 11	10 11 13 58	7 27 44 6	6 3 16 51	9 25 19 51	2 16 33 54	8 28 24 18	6 29 13 23	6 7 20 54	6 5 54 40	-9 34	-19 10	4 1
25	10 19 7	10 12 14 20	8 12 2 53	6 3 20 33	9 24 50 48	2 16 31 56	8 29 5 49	6 29 14 1	6 7 17 44	6 5 51 7	-9 12	-18 37	4 41
26	10 23 4	10 13 14 41	8 26 41 55	6 3 23 35	9 24 29 8	2 16 30 9	8 29 48 25	6 29 14 34	6 7 14 33	6 5 45 25	-8 50	-16 51	5 3
27	10 27 0	10 14 15 1	9 11 36 11	6 3 25 53	9 24 14 45	2 16 28 34	9 0 32 2	6 29 15 0	6 7 11 22	6 5 38 5	-8 27	-13 56	5 5
28	10 30 57	10 15 15 19	9 26 38 0	6 3 27 29	9 24 7 25	2 16 27 11	9 1 16 39	6 29 15 19	6 7 8 11	6 5 30 1	-8 5	-10 4	4 46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 27"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 34 53	10 16 15 36	10 11 38 1	6 3 28 21	9 24 6 52	2 16 26 0	9 2 2 12	6 29 15 33	6 7 5 1	6 5 22 15	-7 42	-5 35	4 8
2	10 38 50	10 17 15 50	10 26 26 43	6 3 28 29	9 24 12 46	2 16 25 1	9 2 48 39	6 29 15 40	6 7 1 50	6 5 15 47	-7 19	-0 48	3 13
3	10 42 47	10 18 16 3	11 10 56 3	6 3 27 53	9 24 24 46	2 16 24 13	9 3 35 59	6 29 15 42	6 6 58 39	6 5 11 15	-6 56	3 55	2 7
4	10 46 43	10 19 16 14	11 25 0 33	6 3 26 31	9 24 42 31	2 16 23 38	9 4 24 8	6 29 15 36	6 6 55 29	6 5 8 53	-6 33	8 18	0 54
5	10 50 40	10 20 16 23	0 8 37 50	6 3 24 25	9 25 5 38	2 16 23 15	9 5 13 5	6 29 15 25	6 6 52 18	6 5 8 28	-6 10	12 6	-0 19
6	10 54 36	10 21 16 30	0 21 48 14	6 3 21 33	9 25 33 47	2 16 23 3	9 6 2 48	6 29 15 8	6 6 49 7	6 5 9 23	-5 47	15 10	-1 29
7	10 58 33	10 22 16 35	1 4 34 17	6 3 17 56	9 26 6 37	2 16 23 4	9 6 53 16	6 29 14 44	6 6 45 56	6 5 10 50	-5 23	17 22	-2 33
8	11 2 29	10 23 16 38	1 16 59 52	6 3 13 32	9 26 43 49	2 16 23 16	9 7 44 26	6 29 14 14	6 6 42 46	6 5 11 56	-5 0	18 41	-3 27
9	11 6 26	10 24 16 39	1 29 9 42	6 3 8 23	9 27 25 5	2 16 23 41	9 8 36 17	6 29 13 39	6 6 39 35	6 5 11 58	-4 37	19 5	-4 11
10	11 10 22	10 25 16 37	2 11 8 43	6 3 2 27	9 28 10 9	2 16 24 17	9 9 28 47	6 29 12 57	6 6 36 24	6 5 10 24	-4 13	18 37	-4 44
11	11 14 19	10 26 16 34	2 23 1 43	6 2 55 45	9 28 58 46	2 16 25 5	9 10 21 55	6 29 12 9	6 6 33 13	6 5 7 6	-3 50	17 20	-5 3
12	11 18 16	10 27 16 28	3 4 53 5	6 2 48 17	9 29 50 42	2 16 26 4	9 11 15 40	6 29 11 15	6 6 30 3	6 5 2 10	-3 26	15 18	-5 10
13	11 22 12	10 28 16 20	3 16 46 34	6 2 40 3	10 0 45 43	2 16 27 15	9 12 10 0	6 29 10 15	6 6 26 52	6 4 56 2	-3 3	12 38	-5 4
14	11 26 9	10 29 16 9	3 28 45 14	6 2 31 3	10 1 43 39	2 16 28 38	9 13 4 55	6 29 9 10	6 6 23 41	6 4 49 16	-2 39	9 26	-4 44
15	11 30 5	11 0 15 57	4 10 51 28	6 2 21 18	10 2 44 19	2 16 30 12	9 14 0 22	6 29 7 58	6 6 20 31	6 4 42 36	-2 15	5 48	-4 11
16	11 34 2	11 1 15 43	4 23 6 57	6 2 10 46	10 3 47 33	2 16 31 58	9 14 56 21	6 29 6 41	6 6 17 20	6 4 36 43	-1 52	1 54	-3 27
17	11 37 58	11 2 15 27	5 5 32 47	6 1 59 29	10 4 53 12	2 16 33 55	9 15 52 51	6 29 5 17	6 6 14 9	6 4 32 8	-1 28	-2 10	-2 31
18	11 41 55	11 3 15 8	5 18 9 41	6 1 47 28	10 6 1 9	2 16 36 3	9 16 49 50	6 29 3 48	6 6 10 58	6 4 29 13	-1 4	-6 11	-1 28
19	11 45 51	11 4 14 48	6 0 58 11	6 1 34 41	10 7 11 17	2 16 38 22	9 17 47 18	6 29 2 14	6 6 7 48	6 4 28 2	-0 40	-9 59	-0 19
20	11 49 48	11 5 14 26	6 13 58 47	6 1 21 11	10 8 23 29	2 16 40 53	9 18 45 14	6 29 0 33	6 6 4 37	6 4 28 20	-0 17	-13 22	0 52
21	11 53 45	11 6 14 3	6 27 12 8	6 1 6 58	10 9 37 40	2 16 43 35	9 19 43 36	6 28 58 47	6 6 1 26	6 4 29 37	0 7	-16 7	2 1
22	11 57 41	11 7 13 37	7 10 38 57	6 0 52 2	10 10 53 44	2 16 46 28	9 20 42 23	6 28 56 55	6 5 58 16	6 4 31 18	0 31	-18 2	3 5
23	12 1 38	11 8 13 10	7 24 19 51	6 0 36 25	10 12 11 37	2 16 49 31	9 21 41 36	6 28 54 58	6 5 55 5	6 4 32 41	0 54	-18 56	4 0
24	12 5 34	11 9 12 41	8 8 15 7	6 0 20 7	10 13 31 16	2 16 52 46	9 22 41 12	6 28 52 55	6 5 51 54	6 4 33 17	1 18	-18 43	4 42
25	12 9 31	11 10 12 10	8 22 24 12	6 0 3 9	10 14 52 37	2 16 56 11	9 23 41 10	6 28 50 47	6 5 48 44	6 4 32 47	1 42	-17 20	5 7
26	12 13 27	11 11 11 38	9 6 45 26	5 29 45 34	10 16 15 37	2 16 59 47	9 24 41 31	6 28 48 33	6 5 45 33	6 4 31 9	2 5	-14 52	5 14
27	12 17 24	11 12 11 4	9 21 15 41	5 29 27 22	10 17 40 14	2 17 3 34	9 25 42 13	6 28 46 14	6 5 42 22	6 4 28 41	2 29	-11 26	5 1
28	12 21 20	11 13 10 28	10 5 50 18	5 29 8 35	10 19 6 25	2 17 7 32	9 26 43 15	6 28 43 50	6 5 39 11	6 4 25 47	2 52	-7 19	4 29
29	12 25 17	11 14 9 50	10 20 23 27	5 28 49 15	10 20 34 8	2 17 11 39	9 27 44 36	6 28 41 21	6 5 36 1	6 4 22 59	3 16	-2 45	3 39
30	12 29 14	11 15 9 10	11 4 48 51	5 28 29 23	10 22 3 23	2 17 15 58	9 28 46 17	6 28 38 46	6 5 32 50	6 4 20 45	3 39	1 56	2 36
31	12 33 10	11 16 8 28	11 19 0 37	5 28 9 2	10 23 34 7	2 17 20 26	9 29 48 15	6 28 36 7	6 5 29 39	6 4 19 22	4 2	6 26	1 23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 30"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	37	7	11	17	7	44	0	2	54	5	5	27	48	15	10	25	6	20	2	17	25	5	10	0	50	30	6	28	33	22	6	5	26	29	6	4	18	57	4	26	10	31	0	8
2	12	41	3	11	18	6	58	0	16	26	18	5	27	27	2	10	26	40	1	2	17	29	54	10	1	53	3	6	28	30	33	6	5	23	18	6	4	19	22	4	49	13	55	-1	6
3	12	45	0	11	19	6	10	0	29	36	16	5	27	5	27	10	28	15	9	2	17	34	53	10	2	55	51	6	28	27	39	6	5	20	7	6	4	20	23	5	12	16	30	-2	15
4	12	48	56	11	20	5	20	1	12	24	44	5	26	43	32	10	29	51	44	2	17	40	2	10	3	58	55	6	28	24	40	6	5	16	56	6	4	21	40	5	35	18	11	-3	15
5	12	52	53	11	21	4	27	1	24	54	2	5	26	21	20	11	1	29	47	2	17	45	21	10	5	2	14	6	28	21	36	6	5	13	46	6	4	22	53	5	58	18	55	-4	5
6	12	56	49	11	22	3	33	2	7	7	34	5	25	58	53	11	3	9	17	2	17	50	49	10	6	5	48	6	28	18	29	6	5	10	35	6	4	23	46	6	20	18	44	-4	42
7	13	0	46	11	23	2	35	2	19	9	32	5	25	36	13	11	4	50	14	2	17	56	27	10	7	9	36	6	28	15	16	6	5	7	24	6	4	24	10	6	43	17	43	-5	5
8	13	4	43	11	24	1	36	3	1	4	31	5	25	13	24	11	6	32	39	2	18	2	15	10	8	13	37	6	28	12	0	6	5	4	13	6	4	24	3	7	6	15	55	-5	16
9	13	8	39	11	25	0	34	3	12	57	12	5	24	50	28	11	8	16	32	2	18	8	11	10	9	17	52	6	28	8	39	6	5	1	3	6	4	23	30	7	28	13	28	-5	13
10	13	12	36	11	25	59	30	3	24	52	5	5	24	27	28	11	10	1	54	2	18	14	17	10	10	22	20	6	28	5	15	6	4	57	52	6	4	22	38	7	50	10	27	-4	57
11	13	16	32	11	26	58	24	4	6	53	15	5	24	4	26	11	11	48	45	2	18	20	32	10	11	27	0	6	28	1	46	6	4	54	41	6	4	21	38	8	12	6	58	-4	27
12	13	20	29	11	27	57	15	4	19	4	17	5	23	41	25	11	13	37	7	2	18	26	56	10	12	31	52	6	27	58	14	6	4	51	31	6	4	20	41	8	34	3	9	-3	45
13	13	24	25	11	28	56	4	5	1	28	2	5	23	18	27	11	15	26	59	2	18	33	29	10	13	36	57	6	27	54	37	6	4	48	20	6	4	19	56	8	56	-0	51	-2	52
14	13	28	22	11	29	54	52	5	14	6	27	5	22	55	36	11	17	18	23	2	18	40	10	10	14	42	13	6	27	50	58	6	4	45	9	6	4	19	27	9	18	-4	55	-1	50
15	13	32	18	0	0	53	37	5	27	0	38	5	22	32	53	11	19	11	18	2	18	47	0	10	15	47	41	6	27	47	14	6	4	41	58	6	4	19	15	9	40	-8	51	-0	40
16	13	36	15	0	1	52	20	6	10	10	39	5	22	10	22	11	21	5	45	2	18	53	59	10	16	53	19	6	27	43	28	6	4	38	48	6	4	19	16	10	1	-12	25	0	32
17	13	40	12	0	2	51	1	6	23	35	47	5	21	48	5	11	23	1	44	2	19	1	6	10	17	59	9	6	27	39	38	6	4	35	37	6	4	19	24	10	22	-15	25	1	45
18	13	44	8	0	3	49	41	7	7	14	36	5	21	26	3	11	24	59	13	2	19	8	21	10	19	5	9	6	27	35	44	6	4	32	26	6	4	19	32	10	43	-17	36	2	53
19	13	48	5	0	4	48	18	7	21	5	7	5	21	4	20	11	26	58	12	2	19	15	44	10	20	11	19	6	27	31	48	6	4	29	16	6	4	19	34	11	4	-18	47	3	51
20	13	52	1	0	5	46	54	8	5	5	6	5	20	42	58	11	28	58	38	2	19	23	16	10	21	17	39	6	27	27	49	6	4	26	5	6	4	19	29	11	25	-18	49	4	37
21	13	55	58	0	6	45	29	8	19	12	7	5	20	21	59	0	1	0	29	2	19	30	56	10	22	24	8	6	27	23	46	6	4	22	54	6	4	19	20	11	45	-17	42	5	6
22	13	59	54	0	7	44	1	9	3	23	44	5	20	1	26	0	3	3	40	2	19	38	43	10	23	30	47	6	27	19	41	6	4	19	43	6	4	19	11	12	6	-15	29	5	17
23	14	3	51	0	8	42	33	9	17	37	32	5	19	41	20	0	5	8	8	2	19	46	38	10	24	37	34	6	27	15	34	6	4	16	33	6	4	19	9	12	26	-12	20	5	9
24	14	7	47	0	9	41	2	10	1	51	1	5	19	21	44	0	7	13	45	2	19	54	41	10	25	44	30	6	27	11	24	6	4	13	22	6	4	19	20	12	46	-8	28	4	41
25	14	11	44	0	10	39	30	10	16	1	36	5	19	2	40	0	9	20	25	2	20	2	52	10	26	51	35	6	27	7	12	6	4	10	11	6	4	19	44	13	5	-4	8	3	57
26	14	15	41	0	11	37	56	11	0	6	31	5	18	44	10	0	11	27	57	2	20	11	10	10	27	58	47	6	27	2	57	6	4	7	0	6	4	20	18	13	25	0	25	2	59
27	14	19	37	0	12	36	21	11	14	2	59	5	18	26	15	0	13	36	12	2	20	19	36	10	29	6	8	6	26	58	40	6	4	3	50	6	4	20	52	13	44	4	54	1	50
28	14	23	34	0	13	34	44	11	27	48	14	5	18	8	57	0	15	44	57	2	20	28	9	11	0	13	35	6	26	54	22	6	4	0	39	6	4	21	15	14	3	9	5	0	36
29	14	27	30	0	14	33	5	0	11	19	50	5	17	52	18	0	17	53	59	2	20	36	49	11	1	21	10	6	26	50	1	6	3	57	28	6	4	21	13	14	22	12	43	-0	39
30	14	31	27	0	15	31	25	0	24	35	55	5	17	36	20	0	20	3	1	2	20	45	36	11	2	28	52	6	26	45	39	6	3	54	17	6	4	20	40	14	41	15	37	-1	50

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 33"

मई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	35	23	0	16	29	42	1	7	35	26	5	17	21	4	0	22	11	47	2	20	54	30	11	3	36	40	6	26	41	16	6	3	51	7	6	4	19	32	14	59	17	39	-2	54
2	14	39	20	0	17	27	58	1	20	18	16	5	17	6	31	0	24	20	0	2	21	3	31	11	4	44	35	6	26	36	51	6	3	47	56	6	4	17	53	15	17	18	45	-3	48
3	14	43	16	0	18	26	12	2	2	45	25	5	16	52	42	0	26	27	22	2	21	12	39	11	5	52	36	6	26	32	24	6	3	44	45	6	4	15	57	15	35	18	55	-4	29
4	14	47	13	0	19	24	24	2	14	58	53	5	16	39	37	0	28	33	34	2	21	21	54	11	7	0	44	6	26	27	57	6	3	41	34	6	4	13	57	15	53	18	10	-4	58
5	14	51	10	0	20	22	34	2	27	1	37	5	16	27	19	1	0	38	19	2	21	31	15	11	8	8	57	6	26	23	29	6	3	38	24	6	4	12	11	16	10	16	37	-5	13
6	14	55	6	0	21	20	42	3	8	57	19	5	16	15	48	1	2	41	19	2	21	40	42	11	9	17	16	6	26	19	0	6	3	35	13	6	4	10	57	16	27	14	23	-5	14
7	14	59	3	0	22	18	48	3	20	50	17	5	16	5	3	1	4	42	18	2	21	50	16	11	10	25	40	6	26	14	30	6	3	32	2	6	4	10	23	16	44	11	32	-5	2
8	15	2	59	0	23	16	52	4	2	45	4	5	15	55	7	1	6	41	1	2	21	59	56	11	11	34	10	6	26	10	0	6	3	28	51	6	4	10	36	17	0	8	14	-4	37
9	15	6	56	0	24	14	54	4	14	46	24	5	15	45	58	1	8	37	15	2	22	9	42	11	12	42	45	6	26	5	30	6	3	25	41	6	4	11	30	17	17	4	33	-4	0
10	15	10	52	0	25	12	55	4	26	58	51	5	15	37	37	1	10	30	47	2	22	19	34	11	13	51	26	6	26	0	59	6	3	22	30	6	4	12	53	17	33	0	37	-3	11
11	15	14	49	0	26	10	53	5	9	26	29	5	15	30	4	1	12	21	27	2	22	29	31	11	15	0	12	6	25	56	28	6	3	19	19	6	4	14	22	17	48	-3	25	-2	13
12	15	18	45	0	27	8	50	5	22	12	38	5	15	23	19	1	14	9	7	2	22	39	35	11	16	9	3	6	25	51	57	6	3	16	8	6	4	15	33	18	3	-7	25	-1	6
13	15	22	42	0	28	6	45	6	5	19	27	5	15	17	23	1	15	53	38	2	22	49	44	11	17	17	59	6	25	47	27	6	3	12	58	6	4	16	0	18	19	-11	10	0	6
14	15	26	39	0	29	4	38	6	18	47	38	5	15	12	14	1	17	34	55	2	22	59	59	11	18	27	0	6	25	42	57	6	3	9	47	6	4	15	24	18	33	-14	26	1	19
15	15	30	35	1	0	2	30	7	2	36	8	5	15	7	53	1	19	12	51	2	23	10	19	11	19	36	7	6	25	38	27	6	3	6	36	6	4	13	36	18	48	-16	59	2	29
16	15	34	32	1	1	0	21	7	16	42	7	5	15	4	20	1	20	47	23	2	23	20	45	11	20	45	17	6	25	33	58	6	3	3	25	6	4	10	41	19	2	-18	33	3	32
17	15	38	28	1	1	58	10	8	1	1	10	5	15	1	34	1	22	18	26	2	23	31	15	11	21	54	33	6	25	29	29	6	3	0	15	6	4	6	59	19	16	-18	59	4	22
18	15	42	25	1	2	55	58	8	15	27	53	5	14	59	35	1	23	45	58	2	23	41	51	11	23	3	54	6	25	25	2	6	2	57	4	6	4	3	1	19	29	-18	10	4	56
19	15	46	21	1	3	53	44	8	29	56	33	5	14	58	23	1	25	9	54	2	23	52	33	11	24	13	19	6	25	20	35	6	2	53	53	6	3	59	25	19	42	-16	11	5	12
20	15	50	18	1	4	51	30	9	14	22	2	5	14	57	57	1	26	30	12	2	24	3	19	11	25	22	48	6	25	16	9	6	2	50	42	6	3	56	44	19	55	-13	12	5	7
21	15	54	14	1	5	49	14	9	28	40	14	5	14	58	17	1	27	46	50	2	24	14	10	11	26	32	22	6	25	11	45	6	2	47	31	6	3	55	18	20	7	-9	27	4	44
22	15	58	11	1	6	46	57	10	12	48	23	5	14	59	22	1	28	59	43	2	24	25	6	11	27	42	0	6	25	7	22	6	2	44	21	6	3	55	11	20	19	-5	13	4	4
23	16	2	8	1	7	44	40	10	26	44	55	5	15	1	13	2	0	8	48	2	24	36	7	11	28	51	42	6	25	3	0	6	2	41	10	6	3	56	7	20	31	-0	45	3	9
24	16	6	4	1	8	42	21	11	10	29	10	5	15	3	49	2	1	14	3	2	24	47	13	0	0	1	28	6	24	58	41	6	2	37	59	6	3	57	32	20	43	3	43	2	5
25	16	10	1	1	9	40	1	11	24	1	2	5	15	7	9	2	2	15	23	2	24	58	23	0	1	11	18	6	24	54	22	6	2	34	48	6	3	58	44	20	54	7	55	0	54
26	16	13	57	1	10	37	40	0	7	20	38	5	15	11	13	2	3	12	45	2	25	9	38	0	2	21	12	6	24	50	6	6	2	31	37	6	3	59	0	21	4	11	40	-0	18
27	16	17	54	1	11	35	19	0	20	28	3	5	15	16	0	2	4	6	4	2	25	20	57	0	3	31	9	6	24	45	52	6	2	28	27	6	3	57	43	21	15	14	47	-1	28
28	16	21	50	1	12	32	56	1	3	23	16	5	15	21	31	2	4	55	16	2	25	32	21	0	4	41	10	6	24	41	40	6	2	25	16	6	3	54	36	21	25	17	6	-2	33
29	16	25	47	1	13	30	32	1	16	6	15	5	15	27	43	2	5	40	17	2	25	43	48	0	5	51	15	6	24	37	31	6	2	22	5	6	3	49	40	21	34	18	32	-3	29
30	16	29	43	1	14	28	7	1	28	37	5	5	15	34	38	2	6	21	1	2	25	55	20	0	7	1	22	6	24	33	24	6	2	18	54	6	3	43	13	21	43	19	1	-4	13
31	16	33	40	1	15	25	40	2	10	56	19	5	15	42	14	2	6	57	26	2	26	6	56	0	8	11	33	6	24	29	19	6	2	15	44	6	3	35	51	21	52	18	36	-4	45

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 37''

जून	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	37	37	1	16	23	13	2	23	5	4	5	15	50	30	2	7	29	25	2	26	18	37	0	9	21	47	6	24	25	17	6	2	12	33	6	3	28	18	22	1	17	19	-5	3
2	16	41	33	1	17	20	44	3	5	5	13	5	15	59	26	2	7	56	57	2	26	30	20	0	10	32	4	6	24	21	18	6	2	9	22	6	3	21	17	22	9	15	18	-5	8
3	16	45	30	1	18	18	14	3	16	59	25	5	16	9	2	2	8	19	56	2	26	42	8	0	11	42	23	6	24	17	22	6	2	6	11	6	3	15	29	22	16	12	39	-5	0
4	16	49	26	1	19	15	43	3	28	51	5	5	16	19	16	2	8	38	20	2	26	54	0	0	12	52	46	6	24	13	29	6	2	3	0	6	3	11	19	22	24	9	29	-4	38
5	16	53	23	1	20	13	10	4	10	44	19	5	16	30	7	2	8	52	7	2	27	5	55	0	14	3	12	6	24	9	39	6	1	59	50	6	3	8	58	22	31	5	57	-4	5
6	16	57	19	1	21	10	37	4	22	43	48	5	16	41	36	2	9	1	17	2	27	17	53	0	15	13	40	6	24	5	53	6	1	56	39	6	3	8	18	22	37	2	8	-3	21
7	17	1	16	1	22	8	2	5	4	54	28	5	16	53	42	2	9	5	51	2	27	29	55	0	16	24	12	6	24	2	10	6	1	53	28	6	3	8	52	22	43	-1	50	-2	26
8	17	5	12	1	23	5	26	5	17	21	18	5	17	6	22	2	9	5	50	2	27	42	0	0	17	34	46	6	23	58	30	6	1	50	17	6	3	9	56	22	49	-5	48	-1	24
9	17	9	9	1	24	2	49	6	0	8	48	5	17	19	38	2	9	1	21	2	27	54	9	0	18	45	23	6	23	54	54	6	1	47	6	6	3	10	39	22	54	-9	38	-0	16
10	17	13	6	1	25	0	10	6	13	20	31	5	17	33	28	2	8	52	30	2	28	6	20	0	19	56	3	6	23	51	22	6	1	43	56	6	3	10	12	22	59	-13	7	0	54
11	17	17	2	1	25	57	31	6	26	58	26	5	17	47	51	2	8	39	28	2	28	18	35	0	21	6	45	6	23	47	53	6	1	40	45	6	3	7	55	23	4	-16	1	2	4
12	17	20	59	1	26	54	51	7	11	2	16	5	18	2	47	2	8	22	30	2	28	30	53	0	22	17	31	6	23	44	29	6	1	37	34	6	3	3	29	23	8	-18	3	3	9
13	17	24	55	1	27	52	10	7	25	29	0	5	18	18	15	2	8	1	50	2	28	43	14	0	23	28	19	6	23	41	8	6	1	34	23	6	2	57	4	23	11	-18	59	4	3
14	17	28	52	1	28	49	29	8	10	12	54	5	18	34	15	2	7	37	51	2	28	55	37	0	24	39	11	6	23	37	51	6	1	31	12	6	2	49	12	23	15	-18	40	4	42
15	17	32	48	1	29	46	47	8	25	6	5	5	18	50	45	2	7	10	54	2	29	8	4	0	25	50	5	6	23	34	39	6	1	28	2	6	2	40	48	23	17	-17	5	5	2
16	17	36	45	2	0	44	4	9	9	59	45	5	19	7	46	2	6	41	26	2	29	20	33	0	27	1	2	6	23	31	31	6	1	24	51	6	2	32	56	23	20	-14	20	5	2
17	17	40	41	2	1	41	21	9	24	45	40	5	19	25	16	2	6	9	57	2	29	33	5	0	28	12	2	6	23	28	27	6	1	21	40	6	2	26	31	23	22	10	42	4	42
18	17	44	38	2	2	38	38	10	9	17	24	5	19	43	15	2	5	36	57	2	29	45	39	0	29	23	5	6	23	25	27	6	1	18	29	6	2	22	11	23	24	-6	29	4	4
19	17	48	35	2	3	35	54	10	23	30	58	5	20	1	43	2	5	2	59	2	29	58	16	1	0	34	10	6	23	22	32	6	1	15	18	6	2	20	2	23	25	-1	58	3	12
20	17	52	31	2	4	33	10	11	7	24	51	5	20	20	40	2	4	28	39	3	0	10	55	1	1	45	19	6	23	19	42	6	1	12	8	6	2	19	41	23	26	2	34	2	9
21	17	56	28	2	5	30	26	11	20	59	26	5	20	40	3	2	3	54	31	3	0	23	37	1	2	56	30	6	23	16	56	6	1	8	57	6	2	20	15	23	26	6	51	1	0
22	18	0	24	2	6	27	42	0	4	16	18	5	20	59	55	2	3	21	11	3	0	36	22	1	4	7	44	6	23	14	15	6	1	5	46	6	2	20	38	23	26	10	43	-0	10
23	18	4	21	2	7	24	57	0	17	17	37	5	21	20	13	2	2	49	13	3	0	49	8	1	5	19	0	6	23	11	38	6	1	2	35	6	2	19	44	23	26	13	59	-1	19
24	18	8	17	2	8	22	13	1	0	5	32	5	21	40	57	2	2	19	9	3	1	1	57	1	6	30	19	6	23	9	7	6	0	59	24	6	2	16	38	23	25	16	31	-2	22
25	18	12	14	2	9	19	28	1	12	41	55	5	22	2	7	2	1	51	31	3	1	14	48	1	7	41	41	6	23	6	40	6	0	56	14	6	2	10	51	23	23	18	12	-3	17
26	18	16	10	2	10	16	43	1	25	8	11	5	22	23	42	2	1	26	48	3	1	27	40	1	8	53	5	6	23	4	19	6	0	53	3	6	2	2	21	23	22	18	59	-4	2
27	18	20	7	2	11	13	58	2	7	25	21	5	22	45	43	2	1	5	24	3	1	40	35	1	10	4	32	6	23	2	2	6	0	49	52	6	1	51	35	23	20	18	51	-4	35
28	18	24	4	2	12	11	12	2	19	34	19	5	23	8	8	2	0	47	43	3	1	53	32	1	11	16	1	6	22	59	51	6	0	46	41	6	1	39	22	23	17	17	51	-4	55
29	18	28	0	2	13	8	27	3	1	36	1	5	23	30	58	2	0	34	3	3	2	6	31	1	12	27	32	6	22	57	45	6	0	43	30	6	1	26	43	23	14	16	4	-5	1
30	18	31	57	2	14	5	41	3	13	31	46	5	23	54	10	2	0	24	41	3	2	19	31	1	13	39	6	6	22	55	44	6	0	40	20	6	1	14	42	23	11	13	37	-4	54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 42"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	35	53	2	15	2	55	3	25	23	26	5	24	17	47	2	0	19	51	3	2	32	33	1	14	50	42	6	22	53	49	6	0	37	9	6	1	4	17	23	7	10	38	-4	35
2	18	39	50	2	16	0	8	4	7	13	34	5	24	41	45	2	0	19	41	3	2	45	36	1	16	2	20	6	22	51	58	6	0	33	58	6	0	56	9	23	3	7	13	-4	4
3	18	43	46	2	16	57	21	4	19	5	27	5	25	6	6	2	0	24	22	3	2	58	41	1	17	14	0	6	22	50	14	6	0	30	47	6	0	50	35	22	59	3	31	-3	22
4	18	47	43	2	17	54	34	5	1	3	10	5	25	30	49	2	0	33	58	3	3	11	47	1	18	25	43	6	22	48	35	6	0	27	36	6	0	47	31	22	54	-0	22	-2	31
5	18	51	39	2	18	51	46	5	13	11	24	5	25	55	53	2	0	48	32	3	3	24	55	1	19	37	28	6	22	47	1	6	0	24	26	6	0	46	23	22	48	-4	17	-1	32
6	18	55	36	2	19	48	58	5	25	35	13	5	26	21	18	2	1	8	8	3	3	38	4	1	20	49	15	6	22	45	33	6	0	21	15	6	0	46	18	22	43	-8	7	-0	27
7	18	59	33	2	20	46	10	6	8	19	42	5	26	47	4	2	1	32	46	3	3	51	14	1	22	1	4	6	22	44	10	6	0	18	4	6	0	46	9	22	37	-11	41	0	40
8	19	3	29	2	21	43	22	6	21	29	22	5	27	13	9	2	2	2	26	3	4	4	25	1	23	12	56	6	22	42	53	6	0	14	53	6	0	44	52	22	30	-14	47	1	47
9	19	7	26	2	22	40	33	7	5	7	29	5	27	39	34	2	2	37	5	3	4	17	37	1	24	24	50	6	22	41	42	6	0	11	42	6	0	41	32	22	23	-17	11	2	51
10	19	11	22	2	23	37	45	7	19	15	7	5	28	6	18	2	3	16	43	3	4	30	50	1	25	36	46	6	22	40	37	6	0	8	32	6	0	35	42	22	16	-18	39	3	46
11	19	15	19	2	24	34	56	8	3	50	15	5	28	33	21	2	4	1	16	3	4	44	4	1	26	48	45	6	22	39	37	6	0	5	21	6	0	27	28	22	8	-18	56	4	29
12	19	19	15	2	25	32	8	8	18	47	26	5	29	0	42	2	4	50	42	3	4	57	19	1	28	0	46	6	22	38	42	6	0	2	10	6	0	17	26	22	0	-17	56	4	55
13	19	23	12	2	26	29	20	9	3	57	56	5	29	28	21	2	5	44	57	3	5	10	35	1	29	12	50	6	22	37	54	5	29	58	59	6	0	6	42	21	52	-15	39	5	0
14	19	27	8	2	27	26	32	9	19	11	12	5	29	56	18	2	6	43	59	3	5	23	51	2	0	24	56	6	22	37	11	5	29	55	48	5	29	56	28	21	43	-12	18	4	44
15	19	31	5	2	28	23	44	10	4	16	30	6	0	24	33	2	7	47	44	3	5	37	8	2	1	37	5	6	22	36	34	5	29	52	38	5	29	47	52	21	34	-8	10	4	8
16	19	35	2	2	29	20	57	10	19	4	57	6	0	53	4	2	8	56	9	3	5	50	26	2	2	49	16	6	22	36	?	5	29	49	27	5	29	41	41	21	24	-3	36	3	17
17	19	38	58	3	0	18	10	11	3	30	39	6	1	21	53	2	10	9	8	3	6	3	44	2	4	1	30	6	22	35	37	5	29	46	16	5	29	38	4	21	14	1	4	2	13
18	19	42	55	3	1	15	24	11	17	31	2	6	1	50	58	2	11	26	37	3	6	17	3	2	5	13	47	6	22	35	17	5	29	43	5	5	29	36	39	21	4	5	33	1	4
19	19	46	51	3	2	12	39	0	1	6	22	6	2	20	19	2	12	48	32	3	6	30	22	2	6	26	6	6	22	35	3	5	29	39	55	5	29	36	29	20	54	9	37	-0	8
20	19	50	48	3	3	9	55	0	14	18	49	6	2	49	57	2	14	14	46	3	6	43	42	2	7	38	27	6	22	34	55	5	29	36	44	5	29	36	23	20	43	13	5	-1	17
21	19	54	44	3	4	7	11	0	27	11	36	6	3	19	51	2	15	45	12	3	6	57	2	2	8	50	51	6	22	34	53	5	29	33	33	5	29	35	6	20	31	15	49	-2	20
22	19	58	41	3	5	4	28	1	9	48	12	6	3	50	0	2	17	19	42	3	7	10	22	2	10	3	18	6	22	34	56	5	29	30	22	5	29	31	38	20	20	17	43	-3	15
23	20	2	37	3	6	1	46	1	22	11	56	6	4	20	25	2	18	58	8	3	7	23	42	2	11	15	48	6	22	35	6	5	29	27	11	5	29	25	23	20	8	18	45	-4	0
24	20	6	34	3	6	59	4	2	4	25	37	6	4	51	6	2	20	40	18	3	7	37	3	2	12	28	19	6	22	35	21	5	29	24	1	5	29	16	17	19	55	18	53	-4	33
25	20	10	30	3	7	56	24	2	16	31	33	6	5	22	2	2	22	26	1	3	7	50	24	2	13	40	53	6	22	35	42	5	29	20	50	5	29	4	46	19	43	18	9	-4	53
26	20	14	27	3	8	53	44	2	28	31	30	6	5	53	12	2	24	15	2	3	8	3	44	2	14	53	30	6	22	36	9	5	29	17	39	5	28	51	40	19	30	16	36	-5	0
27	20	18	24	3	9	51	5	3	10	26	52	6	6	24	38	2	26	7	6	3	8	17	4	2	16	6	9	6	22	36	42	5	29	14	28	5	28	38	2	19	16	14	22	-4	54
28	20	22	20	3	10	48	26	3	22	19	0	6	6	56	18	2	28	1	57	3	8	30	25	2	17	18	50	6	22	37	21	5	29	11	18	5	28	25	1	19	3	11	33	-4	35
29	20	26	17	3	11	45	48	4	4	9	24	6	7	28	12	2	29	59	15	3	8	43	44	2	18	31	34	6	22	38	6	5	29	8	7	5	28	13	37	18	49	8	16	-4	4
30	20	30	13	3	12	43	11	4	16	0	0	6	8	0	20	3	1	58	41	3	8	57	4	2	19	44	20	6	22	38	57	5	29	4	56	5	28	4	37	18	34	4	40	-3	23
31	20	34	10	3	13	40	35	4	27	53	15	6	8	32	43	3	3	59	55	3	9	10	23	2	20	57	8	6	22	39	53	5	29	1	45	5	27	58	22	18	20	0	52	-2	32

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 47"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	38	6	3	14	37	59	5	9	52	19	6	9	5	18	3	6	2	37	3	9	23	41	2	22	9	58	6	22	40	56	5	28	58	34	5	27	54	49	18	5	-3	0	-1	34
2	20	42	3	3	15	35	23	5	22	1	5	6	9	38	7	3	8	6	24	3	9	36	59	2	23	22	50	6	22	42	4	5	28	55	24	5	27	53	29	17	50	-6	48	-0	31
3	20	45	59	3	16	32	48	6	4	23	57	6	10	11	9	3	10	10	59	3	9	50	17	2	24	35	45	6	22	43	18	5	28	52	13	5	27	53	30	17	34	-10	23	0	35
4	20	49	56	3	17	30	14	6	17	5	40	6	10	44	24	3	12	16	0	3	10	3	33	2	25	48	42	6	22	44	38	5	28	49	2	5	27	53	47	17	19	-13	35	1	40
5	20	53	53	3	18	27	41	7	0	10	50	6	11	17	52	3	14	21	11	3	10	16	49	2	27	1	41	6	22	46	3	5	28	45	51	5	27	53	15	17	3	-16	12	2	43
6	20	57	49	3	19	25	8	7	13	43	13	6	11	51	31	3	16	26	15	3	10	30	4	2	28	14	42	6	22	47	35	5	28	42	41	5	27	50	58	16	46	-18	1	3	39
7	21	1	46	3	20	22	36	7	27	44	57	6	12	25	23	3	18	30	58	3	10	43	18	2	29	27	46	6	22	49	11	5	28	39	30	5	27	46	26	16	30	-18	48	4	23
8	21	5	42	3	21	20	4	8	12	15	26	6	12	59	27	3	20	35	6	3	10	56	31	3	0	40	52	6	22	50	54	5	28	36	19	5	27	39	41	16	13	-18	25	4	53
9	21	9	39	3	22	17	34	8	27	10	40	6	13	33	42	3	22	38	29	3	11	9	42	3	1	54	0	6	22	52	42	5	28	33	8	5	27	31	13	15	56	-16	46	5	3
10	21	13	35	3	23	15	4	9	12	23	8	6	14	8	9	3	24	40	57	3	11	22	53	3	3	7	11	6	22	54	36	5	28	29	58	5	27	21	59	15	39	-13	55	4	53
11	21	17	32	3	24	12	36	9	27	42	31	6	14	42	48	3	26	42	23	3	11	36	3	3	4	20	24	6	22	56	36	5	28	26	47	5	27	13	6	15	21	-10	7	4	22
12	21	21	28	3	25	10	8	10	12	57	31	6	15	17	37	3	28	42	39	3	11	49	11	3	5	33	39	6	22	58	41	5	28	23	36	5	27	5	37	15	3	-5	39	3	32
13	21	25	25	3	26	7	42	10	27	57	43	6	15	52	38	4	0	41	42	3	12	2	18	3	6	46	57	6	23	0	51	5	28	20	25	5	27	0	16	14	45	-0	53	2	28
14	21	29	22	3	27	5	17	11	12	35	21	6	16	27	50	4	2	39	28	3	12	15	24	3	8	0	17	6	23	3	7	5	28	17	15	5	26	57	15	14	27	3	48	1	16
15	21	33	18	3	28	2	54	11	26	46	3	6	17	3	12	4	4	35	53	3	12	28	28	3	9	13	39	6	23	5	29	5	28	14	4	5	26	56	19	14	8	8	9	0	1
16	21	37	15	3	29	0	32	0	10	28	48	6	17	38	45	4	6	30	55	3	12	41	31	3	10	27	4	6	23	7	56	5	28	10	53	5	26	56	42	13	49	11	54	-1	12
17	21	41	11	3	29	58	11	0	23	45	7	6	18	14	29	4	8	24	33	3	12	54	32	3	11	40	32	6	23	10	28	5	28	7	42	5	26	57	24	13	30	14	55	-2	19
18	21	45	8	4	0	55	52	1	6	38	8	6	18	50	23	4	10	16	47	3	13	7	32	3	12	54	2	6	23	13	6	5	28	4	32	5	26	57	23	13	11	17	6	-3	16
19	21	49	4	4	1	53	35	1	19	11	48	6	19	26	28	4	12	7	36	3	13	20	30	3	14	7	35	6	23	15	49	5	28	1	21	5	26	55	48	12	52	18	22	-4	3
20	21	53	1	4	2	51	19	2	1	30	14	6	20	2	44	4	13	56	59	3	13	33	26	3	15	21	9	6	23	18	37	5	27	58	10	5	26	52	5	12	32	18	45	-4	37
21	21	56	57	4	3	49	5	2	13	37	19	6	20	39	9	4	15	44	58	3	13	46	20	3	16	34	47	6	23	21	31	5	27	54	59	5	26	46	10	12	12	18	15	-4	58
22	22	0	54	4	4	46	53	2	25	36	33	6	21	15	45	4	17	31	33	3	13	59	12	3	17	48	26	6	23	24	30	5	27	51	49	5	26	38	19	11	52	16	57	-5	6
23	22	4	51	4	5	44	42	3	7	30	48	6	21	52	31	4	19	16	44	3	14	12	3	3	19	2	8	6	23	27	35	5	27	48	38	5	26	29	9	11	32	14	55	-5	1
24	22	8	47	4	6	42	33	3	19	22	27	6	22	29	27	4	21	0	32	3	14	24	51	3	20	15	52	6	23	30	44	5	27	45	27	5	26	19	31	11	12	12	17	-4	42
25	22	12	44	4	7	40	25	4	1	13	25	6	23	6	33	4	22	42	58	3	14	37	37	3	21	29	38	6	23	33	59	5	27	42	17	5	26	10	17	10	51	9	8	-4	11
26	22	16	40	4	8	38	19	4	13	5	25	6	23	43	48	4	24	24	4	3	14	50	20	3	22	43	27	6	23	37	19	5	27	39	6	5	26	2	16	10	31	5	38	-3	30
27	22	20	37	4	9	36	14	4	25	0	8	6	24	21	13	4	26	3	49	3	15	3	2	3	23	57	17	6	23	40	43	5	27	35	55	5	25	56	3	10	10	1	53	-2	39
28	22	24	33	4	10	34	11	5	6	59	26	6	24	58	48	4	27	42	14	3	15	15	41	3	25	11	9	6	23	44	13	5	27	32	44	5	25	52	0	9	49	-1	57	-1	40
29	22	28	30	4	11	32	9	5	19	5	31	6	25	36	32	4	29	19	21	3	15	28	17	3	26	25	4	6	23	47	48	5	27	29	34	5	25	50	5	9	27	-5	45	-0	36
30	22	32	26	4	12	30	8	6	1	21	6	6	26	14	26	5	0	55	10	3	15	40	51	3	27	39	0	6	23	51	28	5	27	26	23	5	25	49	59	9	6	-9	22	0	30
31	22	36	23	4	13	28	9	6	13	49	22	6	26	52	28	5	2	29	41	3	15	53	22	3	28	52	58	6	23	55	13	5	27	23	12	5	25	51	3	8	45	-12	37	1	36

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 50''

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	40	20	4	14	26	11	6	26	33	51	6	27	30	40	5	4	2	54	3	16	5	50	4	0	6	59	6	23	59	2	5	27	20	1	5	25	52	31	8	23	-15	21	2	39
2	22	44	16	4	15	24	15	7	9	38	10	6	28	9	0	5	5	34	50	3	16	18	15	4	1	21	1	6	24	2	57	5	27	16	51	5	25	53	32	8	1	-17	22	3	36
3	22	48	13	4	16	22	20	7	23	5	31	6	28	47	28	5	7	5	28	3	16	30	37	4	2	35	4	6	24	6	56	5	27	13	40	5	25	53	26	7	39	-18	28	4	22
4	22	52	9	4	17	20	26	8	6	58	2	6	29	26	6	5	8	34	49	3	16	42	57	4	3	49	10	6	24	10	59	5	27	10	29	5	25	51	50	7	17	-18	31	4	54
5	22	56	6	4	18	18	33	8	21	15	59	7	0	4	51	5	10	2	51	3	16	55	13	4	5	3	17	6	24	15	8	5	27	7	19	5	25	48	40	6	55	-17	25	5	10
6	23	0	2	4	19	16	43	9	5	57	3	7	0	43	45	5	11	29	35	3	17	7	26	4	6	17	27	6	24	19	20	5	27	4	8	5	25	44	17	6	33	-15	9	5	6
7	23	3	59	4	20	14	53	9	20	55	57	7	1	22	47	5	12	54	59	3	17	19	36	4	7	31	38	6	24	23	38	5	27	0	57	5	25	39	18	6	10	-11	51	4	42
8	23	7	55	4	21	13	5	10	6	4	43	7	2	1	57	5	14	19	1	3	17	31	42	4	8	45	51	6	24	28	0	5	26	57	46	5	25	34	26	5	48	-7	43	3	57
9	23	11	52	4	22	11	19	10	21	13	40	7	2	41	15	5	15	41	42	3	17	43	45	4	10	0	5	6	24	32	26	5	26	54	36	5	25	30	23	5	25	-3	5	2	56
10	23	15	49	4	23	9	35	11	6	12	56	7	3	20	40	5	17	2	58	3	17	55	45	4	11	14	22	6	24	36	56	5	26	51	25	5	25	27	39	5	3	1	41	1	43
11	23	19	45	4	24	7	53	11	20	54	8	7	4	0	14	5	18	22	47	3	18	7	41	4	12	28	40	6	24	41	31	5	26	48	14	5	25	26	26	4	40	6	17	0	25
12	23	23	42	4	25	6	12	0	5	11	23	7	4	39	55	5	19	41	8	3	18	19	34	4	13	43	1	6	24	46	10	5	26	45	4	5	25	26	34	4	17	10	23	-0	53
13	23	27	38	4	26	4	33	0	19	1	48	7	5	19	43	5	20	57	57	3	18	31	23	4	14	57	23	6	24	50	54	5	26	41	53	5	25	27	40	3	54	13	46	-2	6
14	23	31	35	4	27	2	57	1	2	25	13	7	5	59	40	5	22	13	11	3	18	43	8	4	16	11	47	6	24	55	41	5	26	38	42	5	25	29	8	3	31	16	18	-3	9
15	23	35	31	4	28	1	22	1	15	23	34	7	6	39	44	5	23	26	46	3	18	54	49	4	17	26	12	6	25	0	33	5	26	35	31	5	25	30	22	3	8	17	54	-4	1
16	23	39	28	4	28	59	50	1	28	0	14	7	7	19	55	5	24	38	36	3	19	6	26	4	18	40	40	6	25	5	28	5	26	32	21	5	25	30	53	2	45	18	33	-4	39
17	23	43	24	4	29	58	20	2	10	19	18	7	8	0	14	5	25	48	38	3	19	17	59	4	19	55	9	6	25	10	28	5	26	29	10	5	25	30	21	2	22	18	19	-5	3
18	23	47	21	5	0	56	52	2	22	25	10	7	8	40	40	5	26	56	44	3	19	29	28	4	21	9	41	6	25	15	32	5	26	25	59	5	25	28	42	1	59	17	14	-5	14
19	23	51	18	5	1	55	26	3	4	22	8	7	9	21	14	5	28	2	48	3	19	40	53	4	22	24	14	6	25	20	39	5	26	22	49	5	25	26	4	1	36	15	24	-5	10
20	23	55	14	5	2	54	2	3	16	14	12	7	10	1	55	5	29	6	42	3	19	52	14	4	23	38	48	6	25	25	50	5	26	19	38	5	25	22	44	1	12	12	56	-4	54
21	23	59	11	5	3	52	41	3	28	4	51	7	10	42	43	6	0	8	18	3	20	3	30	4	24	53	24	6	25	31	6	5	26	16	27	5	25	19	7	0	49	9	57	-4	25
22	0	3	7	5	4	51	21	4	9	57	3	7	11	23	39	6	1	7	25	3	20	14	41	4	26	8	2	6	25	36	25	5	26	13	16	5	25	15	39	0	26	6	33	-3	44
23	0	7	4	5	5	50	4	4	21	53	15	7	12	4	42	6	2	3	52	3	20	25	48	4	27	22	41	6	25	41	47	5	26	10	6	5	25	12	42	0	2	2	52	-2	53
24	0	11	0	5	6	48	49	5	3	55	30	7	12	45	51	6	2	57	27	3	20	36	50	4	28	37	22	6	25	47	14	5	26	6	55	5	25	10	35	-0	21	-0	57	-1	55
25	0	14	57	5	7	47	35	5	16	5	32	7	13	27	8	6	3	47	58	3	20	47	47	4	29	52	4	6	25	52	44	5	26	3	44	5	25	9	25	-0	44	-4	47	-0	50
26	0	18	53	5	8	46	24	5	28	24	53	7	14	8	32	6	4	35	7	3	20	58	39	5	1	6	48	6	25	58	17	5	26	0	34	5	25	9	10	-1	8	-8	28	0	18
27	0	22	50	5	9	45	14	6	10	55	3	7	14	50	2	6	5	18	40	3	21	9	27	5	2	21	32	6	26	3	54	5	25	57	23	5	25	9	42	-1	31	-11	50	1	26
28	0	26	47	5	10	44	7	6	23	37	36	7	15	31	40	6	5	58	18	3	21	20	9	5	3	36	18	6	26	9	34	5	25	54	12	5	25	10	43	-1	54	-14	41	2	31
29	0	30	43	5	11	43	1	7	6	34	14	7	16	13	23	6	6	33	40	3	21	30	45	5	4	51	5	6	26	15	18	5	25	51	1	5	25	11	52	-2	18	-16	52	3	30
30	0	34	40	5	12	41	57	7	19	46	38	7	16	55	13	6	7	4	25	3	21	41	17	5	6	5	53	6	26	21	5	5	25	47	51	5	25	12	52	-2	41	-18	11	4	18

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 52''

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं	क	वि	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	38	36	5	13	40	54	8	3	16	19	7	17	37	10	6	7	30	10	3	21	51	42	5	7	20	42	6	26	26	54	5	25	44	40	5	25	13	28	-3	4	-18	30	4	54
2	0	42	33	5	14	39	54	8	17	4	14	7	18	19	13	6	7	50	30	3	22	2	3	5	8	35	32	6	26	32	48	5	25	41	29	5	25	13	33	-3	28	-17	45	5	14
3	0	46	29	5	15	38	55	9	1	10	23	7	19	1	21	6	8	4	59	3	22	12	17	5	9	50	23	6	26	38	44	5	25	38	19	5	25	13	10	-3	51	-15	55	5	15
4	0	50	26	5	16	37	57	9	15	33	23	7	19	43	36	6	8	13	10	3	22	22	26	5	11	5	15	6	26	44	43	5	25	35	8	5	25	12	28	-4	14	-13	3	4	57
5	0	54	22	5	17	37	2	10	0	10	6	7	20	25	57	6	8	14	37	3	22	32	29	5	12	20	8	6	26	50	45	5	25	31	57	5	25	11	37	-4	37	-9	21	4	20
6	0	58	19	5	18	36	8	10	14	55	33	7	21	8	24	6	8	8	55	3	22	42	27	5	13	35	2	6	26	56	50	5	25	28	46	5	25	10	51	-5	0	-5	1	3	25
7	1	2	16	5	19	35	17	10	29	43	16	7	21	50	56	6	7	55	40	3	22	52	18	5	14	49	57	6	27	2	58	5	25	25	36	5	25	10	18	-5	23	-0	23	2	17
8	1	6	12	5	20	34	27	11	14	26	3	7	22	33	34	6	7	34	35	3	23	2	3	5	16	4	53	6	27	9	8	5	25	22	25	5	25	10	1	-5	46	4	17	0	59
9	1	10	9	5	21	33	39	11	28	56	50	7	23	16	17	6	7	5	27	3	23	11	42	5	17	19	50	6	27	15	21	5	25	19	14	5	25	10	0	-6	9	8	37	-0	21
10	1	14	5	5	22	32	53	0	13	9	42	7	23	59	7	6	6	28	13	3	23	21	14	5	18	34	48	6	27	21	37	5	25	16	4	5	25	10	9	-6	32	12	22	-1	38
11	1	18	2	5	23	32	10	0	27	0	36	7	24	42	1	6	5	43	4	3	23	30	41	5	19	49	47	6	27	27	56	5	25	12	53	5	25	10	20	-6	54	15	19	-2	48
12	1	21	58	5	24	31	28	1	10	27	34	7	25	25	2	6	4	50	22	3	23	40	0	5	21	4	46	6	27	34	17	5	25	9	42	5	25	10	27	-7	17	17	20	-3	46
13	1	25	55	5	25	30	49	1	23	30	41	7	26	8	7	6	3	50	52	3	23	49	14	5	22	19	47	6	27	40	40	5	25	6	31	5	25	10	28	-7	40	18	22	-4	30
14	1	29	51	5	26	30	12	2	6	11	49	7	26	51	18	6	2	45	34	3	23	58	20	5	23	34	49	6	27	47	6	5	25	3	21	5	25	10	23	-8	2	18	26	-5	0
15	1	33	48	5	27	29	37	2	18	34	10	7	27	34	35	6	1	35	51	3	24	7	20	5	24	49	51	6	27	53	34	5	25	0	10	5	25	10	17	-8	24	17	36	-5	15
16	1	37	45	5	28	29	5	3	0	41	48	7	28	17	57	6	0	23	23	3	24	16	12	5	26	4	55	6	28	0	4	5	24	56	59	5	25	10	16	-8	46	15	59	-5	16
17	1	41	41	5	29	28	34	3	12	39	13	7	29	1	24	5	29	10	4	3	24	24	58	5	27	19	59	6	28	6	37	5	24	53	49	5	25	10	25	-9	8	13	42	-5	3
18	1	45	38	6	0	28	7	3	24	31	7	7	29	44	57	5	27	58	2	3	24	33	36	5	28	35	5	6	28	13	12	5	24	50	38	5	25	10	47	-9	30	10	52	-4	37
19	1	49	34	6	1	27	41	4	6	22	0	8	0	28	34	5	26	49	22	3	24	42	8	5	29	50	11	6	28	19	49	5	24	47	27	5	25	11	25	-9	52	7	35	-3	59
20	1	53	31	6	2	27	18	4	18	16	1	8	1	12	17	5	25	46	9	3	24	50	31	6	1	5	18	6	28	26	28	5	24	44	16	5	25	12	12	-10	14	3	59	-3	11
21	1	57	27	6	3	26	57	5	0	16	50	8	1	56	6	5	24	50	15	3	24	58	48	6	2	20	26	6	28	33	9	5	24	41	6	5	25	13	3	-10	35	0	12	-2	14
22	2	1	24	6	4	26	38	5	12	27	27	8	2	39	59	5	24	3	12	3	25	6	56	6	3	35	35	6	28	39	52	5	24	37	55	5	25	13	44	-10	57	-3	40	-1	10
23	2	5	20	6	5	26	21	5	24	50	9	8	3	23	58	5	23	26	13	3	25	14	57	6	4	50	44	6	28	46	37	5	24	34	44	5	25	14	5	-11	18	-7	26	-0	2
24	2	9	17	6	6	26	6	6	7	26	26	8	4	8	1	5	23	0	7	3	25	22	50	6	6	5	54	6	28	53	23	5	24	31	33	5	25	13	53	-11	39	-10	57	1	7
25	2	13	14	6	7	25	53	6	20	17	1	8	4	52	9	5	22	45	20	3	25	30	35	6	7	21	4	6	29	0	11	5	24	28	23	5	25	13	3	-12	0	-14	0	2	14
26	2	17	10	6	8	25	43	7	3	21	58	8	5	36	22	5	22	41	54	3	25	38	11	6	8	36	15	6	29	7	1	5	24	25	12	5	25	11	36	-12	20	-16	24	3	16
27	2	21	7	6	9	25	33	7	16	40	45	8	6	20	40	5	22	49	37	3	25	45	40	6	9	51	26	6	29	13	53	5	24	22	1	5	25	9	41	-12	41	-17	58	4	8
28	2	25	3	6	10	25	26	8	0	12	30	8	7	5	2	5	23	7	59	3	25	53	0	6	11	6	38	6	29	20	46	5	24	18	50	5	25	7	35	-13	1	-18	32	4	47
29	2	29	0	6	11	25	20	8	13	56	2	8	7	49	29	5	23	36	22	3	26	0	12	6	12	21	50	6	29	27	40	5	24	15	40	5	25	5	40	-13	21	-18	2	5	10
30	2	32	56	6	12	25	16	8	27	50	6	8	8	34	1	5	24	13	57	3	26	7	15	6	13	37	3	6	29	34	36	5	24	12	29	5	25	4	18	-13	41	-16	28	5	15
31	2	36	53	6	13	25	14	9	11	53	17	8	9	18	36	5	24	59	55	3	26	14	9	6	14	52	15	6	29	41	33	5	24	9	18	5	25	3	44	-14	0	-13	54	5	2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 55''

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अ.	क.	अं.	क.
1	2	40	49	6	14	25	13	9	26	4	1	8	10	3	16	5	25	53	23	3	26	20	55	6	16	7	28	6	29	48	31	5	24	6	7	5	25	4	2	-14	20	-10	29	4	31
2	2	44	46	6	15	25	14	10	10	20	20	8	10	47	59	5	26	53	31	3	26	27	32	6	17	22	42	6	29	55	30	5	24	2	57	5	25	5	4	-14	39	- 6	26	3	43
3	2	48	43	6	16	25	17	10	24	39	45	8	11	32	47	5	27	59	28	3	26	34	0	6	18	37	55	7	0	2	31	5	23	59	46	5	25	6	29	-14	58	- 2	0	2	40
4	2	52	39	6	17	25	21	11	8	59	7	8	12	17	39	5	29	10	29	3	26	40	19	6	19	53	9	7	0	9	32	5	23	56	35	5	25	7	46	-15	17	2	33	1	28
5	2	56	36	6	18	25	26	11	23	14	40	8	13	2	34	6	0	25	52	3	26	46	29	6	21	8	23	7	0	16	35	5	23	53	24	5	25	8	24	-15	35	6	57	0	10
6	3	0	32	6	19	25	34	0	7	22	14	8	13	47	34	6	1	44	58	3	26	52	29	6	22	23	37	7	0	23	38	5	23	50	14	5	25	7	57	-15	53	10	56	- 1	7
7	3	4	29	6	20	25	43	0	21	17	41	8	14	32	37	6	3	7	13	3	26	58	20	6	23	38	51	7	0	30	42	5	23	47	3	5	25	6	9	-16	11	14	13	- 2	19
8	3	8	25	6	21	25	54	1	4	57	21	8	15	17	43	6	4	32	7	3	27	4	2	6	24	54	6	7	0	37	47	5	23	43	52	5	25	3	2	-16	29	16	39	- 3	21
9	3	12	22	6	22	26	6	1	18	18	32	8	16	2	54	6	5	59	14	3	27	9	34	6	26	9	21	7	0	44	52	5	23	40	41	5	24	58	54	-16	46	18	7	- 4	11
10	3	16	18	6	23	26	21	2	1	19	58	8	16	48	8	6	7	28	11	3	27	14	57	6	27	24	36	7	0	51	59	5	23	37	31	5	24	54	11	-17	3	18	34	- 4	47
11	3	20	15	6	24	26	37	2	14	1	50	8	17	33	25	6	8	58	37	3	27	20	10	6	28	39	52	7	0	59	5	5	23	34	20	5	24	49	31	-17	20	18	4	- 5	7
12	3	24	12	6	25	26	55	2	26	25	50	8	18	18	46	6	10	30	17	3	27	25	13	6	29	55	8	7	1	6	13	5	23	31	9	5	24	45	28	-17	36	16	43	- 5	13
13	3	28	8	6	26	27	16	3	8	34	58	8	19	4	11	6	12	2	56	3	27	30	6	7	1	10	24	7	1	13	21	5	23	27	58	5	24	42	30	-17	53	14	38	- 5	4
14	3	32	5	6	27	27	38	3	20	33	8	8	19	49	39	6	13	36	21	3	27	34	49	7	2	25	41	7	1	20	29	5	23	24	48	5	24	40	54	-18	8	11	57	- 4	42
15	3	36	1	6	28	28	2	4	2	25	0	8	20	35	10	6	15	10	22	3	27	39	21	7	3	40	58	7	1	27	37	5	23	21	37	5	24	40	41	-18	24	8	48	- 4	8
16	3	39	58	6	29	28	28	4	14	15	31	8	21	20	45	6	16	44	51	3	27	43	44	7	4	56	15	7	1	34	46	5	23	18	26	5	24	41	37	-18	39	5	18	- 3	23
17	3	43	54	7	0	28	56	4	26	9	46	8	22	6	24	6	18	19	40	3	27	47	56	7	6	11	33	7	1	41	55	5	23	15	15	5	24	43	16	-18	54	1	34	- 2	30
18	3	47	51	7	1	29	26	5	8	12	38	8	22	52	5	6	19	54	43	3	27	51	57	7	7	26	51	7	1	49	4	5	23	12	5	5	24	44	58	-19	9	- 2	16	- 1	29
19	3	51	47	7	2	29	57	5	20	28	27	8	23	37	50	6	21	29	56	3	27	55	48	7	8	42	9	7	1	56	14	5	23	8	54	5	24	46	3	-19	23	- 6	5	- 0	23
20	3	55	44	7	3	30	31	6	3	0	45	8	24	23	38	6	23	5	14	3	27	59	28	7	9	57	28	7	2	3	23	5	23	5	43	5	24	45	50	-19	37	- 9	44	0	45
21	3	59	41	7	4	31	6	6	15	51	51	8	25	9	30	6	24	40	35	3	28	2	58	7	11	12	47	7	2	10	32	5	23	2	32	5	24	43	50	-19	50	-13	1	1	52
22	4	3	37	7	5	31	42	6	29	2	41	8	25	55	24	6	26	15	55	3	28	6	16	7	12	28	6	7	2	17	41	5	22	59	21	5	24	39	52	-20	4	-15	43	2	55
23	4	7	34	7	6	32	20	7	12	32	33	8	26	41	21	6	27	51	13	3	28	9	23	7	13	43	25	7	2	24	49	5	22	56	11	5	24	34	4	-20	16	-17	38	3	50
24	4	11	30	7	7	32	59	7	26	19	9	8	27	27	22	6	29	26	27	3	28	12	20	7	14	58	44	7	2	31	58	5	22	53	0	5	24	26	59	-20	29	-18	34	4	32
25	4	15	27	7	8	33	40	8	10	18	55	8	28	13	25	7	1	1	35	3	28	15	5	7	16	14	3	7	2	39	6	5	22	49	49	5	24	19	27	-20	41	-18	23	4	59
26	4	19	23	7	9	34	22	8	24	27	30	8	28	59	30	7	2	36	38	3	28	17	39	7	17	29	22	7	2	46	13	5	22	46	38	5	24	12	23	-20	53	-17	4	5	8
27	4	23	20	7	10	35	5	9	8	40	29	8	29	45	39	7	4	11	35	3	28	20	1	7	18	44	41	7	2	53	20	5	22	43	27	5	24	6	41	-21	4	-14	42	4	58
28	4	27	16	7	11	35	49	9	22	54	0	9	0	31	50	7	5	46	25	3	28	22	12	7	20	0	0	7	3	0	26	5	22	40	17	5	24	2	56	-21	15	-11	27	4	30
29	4	31	13	7	12	36	34	10	7	5	7	9	1	18	3	7	7	21	9	3	28	24	12	7	21	15	19	7	3	7	32	5	22	37	6	5	24	1	17	-21	25	- 7	33	3	46
30	4	35	10	7	13	37	20	10	21	11	54	9	2	4	18	7	8	55	47	3	28	26	1	7	22	30	38	7	3	14	37	5	22	33	55	5	24	1	24	-21	35	- 3	14	2	48

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 59"

दिसंबर	सम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	39	6	7	14	38	7	11	5	13	11	9	2	50	36	7	10	30	20	3	28	27	38	7	23	45	57	7	3	21	41	5	22	30	44	5	24	2	28	-21	45	1	14	1	40
2	4	43	3	7	15	38	55	11	19	8	11	9	3	36	56	7	12	4	47	3	28	29	3	7	25	1	15	7	3	28	44	5	22	27	34	5	24	3	25	-21	54	5	37	0	26
3	4	46	59	7	16	39	44	0	2	56	8	9	4	23	18	7	13	39	10	3	28	30	17	7	26	16	33	7	3	35	46	5	22	24	23	5	24	3	10	-22	3	9	40	-0	48
4	4	50	56	7	17	40	34	0	16	35	56	9	5	9	42	7	15	13	29	3	28	31	20	7	27	31	51	7	3	42	48	5	22	21	12	5	24	0	49	-22	11	13	9	-1	58
5	4	54	52	7	18	41	25	1	0	6	7	9	5	56	7	7	16	47	46	3	28	32	11	7	28	47	9	7	3	49	48	5	22	18	1	5	23	55	50	-22	19	15	53	-3	1
6	4	58	49	7	19	42	16	1	13	24	51	9	6	42	35	7	18	22	0	3	28	32	50	8	0	2	27	7	3	56	47	5	22	14	50	5	23	48	13	-22	27	17	44	-3	53
7	5	2	45	7	20	43	9	1	26	30	20	9	7	29	4	7	19	56	13	3	28	33	17	8	1	17	45	7	4	3	44	5	22	11	40	5	23	38	28	-22	34	18	35	-4	31
8	5	6	42	7	21	44	3	2	9	21	7	9	8	15	36	7	21	30	25	3	28	33	33	8	2	33	2	7	4	10	41	5	22	8	29	5	23	27	26	-22	41	18	28	-4	55
9	5	10	39	7	22	44	57	2	21	56	37	9	9	2	9	7	23	4	38	3	28	33	37	8	3	48	20	7	4	17	36	5	22	5	18	5	23	16	11	-22	47	17	27	-5	4
10	5	14	35	7	23	45	53	3	4	17	19	9	9	48	43	7	24	38	53	3	28	33	29	8	5	3	37	7	4	24	30	5	22	2	7	5	23	5	47	-22	53	15	37	-4	58
11	5	18	32	7	24	46	50	3	16	24	53	9	10	35	19	7	26	13	10	3	28	33	9	8	6	18	54	7	4	31	22	5	21	58	56	5	22	57	9	-22	58	13	7	-4	39
12	5	22	28	7	25	47	48	3	28	22	10	9	11	21	57	7	27	47	31	3	28	32	38	8	7	34	11	7	4	38	13	5	21	55	46	5	22	50	49	-23	3	10	7	-4	8
13	5	26	25	7	26	48	47	4	10	12	58	9	12	8	37	7	29	21	56	3	28	31	55	8	8	49	29	7	4	45	2	5	21	52	35	5	22	46	59	-23	7	6	44	-3	27
14	5	30	21	7	27	49	48	4	22	1	57	9	12	55	18	8	0	56	27	3	28	31	0	8	10	4	46	7	4	51	50	5	21	49	24	5	22	45	20	-23	11	3	5	-2	36
15	5	34	18	7	28	50	49	5	3	54	20	9	13	42	1	8	2	31	4	3	28	29	53	8	11	20	3	7	4	58	35	5	21	46	13	5	22	45	14	-23	15	-0	42	-1	39
16	5	38	14	7	29	51	51	5	15	55	38	9	14	28	45	8	4	5	47	3	28	28	34	8	12	35	20	7	5	5	19	5	21	43	2	5	22	45	44	-23	18	-4	31	-0	36
17	5	42	11	8	0	52	54	5	28	11	14	9	15	15	30	8	5	40	38	3	28	27	4	8	13	50	37	7	5	12	1	5	21	39	52	5	22	45	43	-23	20	-8	13	0	29
18	5	46	8	8	1	53	59	6	10	46	2	9	16	2	17	8	7	15	37	3	28	25	21	8	15	5	54	7	5	18	41	5	21	36	41	5	22	44	9	-23	22	-11	39	1	34
19	5	50	4	8	2	55	4	6	23	43	49	9	16	49	6	8	8	50	43	3	28	23	27	8	16	21	11	7	5	25	19	5	21	33	30	5	22	40	13	-23	24	-14	38	2	37
20	5	54	1	8	3	56	10	7	7	6	46	9	17	35	55	8	10	25	59	3	28	21	21	8	17	36	27	7	5	31	55	5	21	30	19	5	22	33	33	-23	25	-16	56	3	32
21	5	57	57	8	4	57	16	7	20	54	47	9	18	22	46	8	12	1	22	3	28	19	4	8	18	51	44	7	5	38	29	5	21	27	8	5	22	24	17	-23	26	-18	19	4	17
22	6	1	54	8	5	58	23	8	5	5	15	9	19	9	38	8	13	36	54	3	28	16	35	8	20	7	0	7	5	45	0	5	21	23	58	5	22	13	7	-23	26	-18	38	4	48
23	6	5	50	8	6	59	31	8	19	32	56	9	19	56	31	8	15	12	34	3	28	13	54	8	21	22	16	7	5	51	30	5	21	20	47	5	22	1	10	-23	26	-17	45	5	1
24	6	9	47	8	8	0	39	9	4	10	50	9	20	43	25	8	16	48	21	3	28	11	2	8	22	37	31	7	5	57	56	5	21	17	36	5	21	49	43	-23	25	-15	42	4	54
25	6	13	43	8	9	1	47	9	18	51	11	9	21	30	20	8	18	24	15	3	28	7	58	8	23	52	47	7	6	4	20	5	21	14	25	5	21	40	1	-23	24	-12	38	4	28
26	6	17	40	8	10	2	55	10	3	26	53	9	22	17	15	8	20	0	13	3	28	4	44	8	25	8	1	7	6	10	42	5	21	11	14	5	21	32	56	-23	22	-8	48	3	45
27	6	21	37	8	11	4	4	10	17	52	30	9	23	4	11	8	21	36	14	3	28	1	18	8	26	23	15	7	6	17	1	5	21	8	4	5	21	28	44	-23	20	-4	30	2	48
28	6	25	33	8	12	5	12	11	2	4	44	9	23	51	8	8	23	12	16	3	27	57	41	8	27	38	29	7	6	23	17	5	21	4	53	5	21	27	2	-23	17	0	1	1	41
29	6	29	30	8	13	6	21	11	16	2	20	9	24	38	5	8	24	48	15	3	27	53	53	8	28	53	42	7	6	29	31	5	21	1	42	5	21	26	53	-23	14	4	26	0	29
30	6	33	26	8	14	7	29	11	29	45	32	9	25	25	3	8	26	24	7	3	27	49	55	9	0	8	54	7	6	35	41	5	20	58	31	5	21	26	56	-23	11	8	34	-0	44
31	6	37	23	8	15	8	38	0	13	15	22	9	26	12	0	8	27	59	49	3	27	45	46	9	1	24	6	7	6	41	49	5	20	55	20	5	21	25	46	-23	7	12	11	-1	53

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 5"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 41 19	8 16 9 46	0 26 33 3	9 26 58 59	8 29 35 14	3 27 41 26	9 2 39 17	7 6 47 54	5 20 52 10	5 21 22 13	-23 2	15 6	- 2 54
2	6 45 16	8 17 10 54	1 9 39 32	9 27 45 57	9 1 10 16	3 27 36 57	9 3 54 27	7 6 53 56	5 20 48 59	5 21 15 34	-22 58	17 12	- 3 45
3	6 49 12	8 18 12 2	1 22 35 19	9 28 32 55	9 2 44 47	3 27 32 17	9 5 9 36	7 6 59 55	5 20 45 48	5 21 5 43	-22 52	18 23	- 4 24
4	6 53 9	8 19 13 10	2 5 20 25	9 29 19 54	9 4 18 37	3 27 27 27	9 6 24 45	7 7 5 50	5 20 42 37	5 20 53 11	-22 46	18 37	- 4 49
5	6 57 6	8 20 14 18	2 17 54 38	10 0 6 52	9 5 51 34	3 27 22 28	9 7 39 53	7 7 11 43	5 20 39 26	5 20 38 55	-22 40	17 56	- 4 59
6	7 1 2	8 21 15 26	3 0 17 45	10 0 53 51	9 7 23 25	3 27 17 18	9 8 55 0	7 7 17 32	5 20 36 16	5 20 24 11	-22 33	16 24	- 4 55
7	7 4 59	8 22 16 34	3 12 30 3	10 1 40 49	9 8 53 54	3 27 12 0	9 10 10 6	7 7 23 17	5 20 33 5	5 20 10 16	-22 26	14 9	- 4 38
8	7 8 55	8 23 17 41	3 24 32 27	10 2 27 47	9 10 22 43	3 27 6 32	9 11 25 12	7 7 29 0	5 20 29 54	5 19 58 17	-22 18	11 19	- 4 8
9	7 12 52	8 24 18 49	4 6 26 47	10 3 14 46	9 11 49 29	3 27 0 55	9 12 40 17	7 7 34 39	5 20 26 43	5 19 49 1	-22 10	8 3	- 3 27
10	7 16 48	8 25 19 57	4 18 15 48	10 4 1 44	9 13 13 48	3 26 55 9	9 13 55 21	7 7 40 14	5 20 23 32	5 19 42 44	-22 2	4 30	- 2 38
11	7 20 45	8 26 21 4	5 0 3 12	10 4 48 42	9 14 35 11	3 26 49 14	9 15 10 24	7 7 45 46	5 20 20 22	5 19 39 18	-21 53	0 47	- 1 42
12	7 24 41	8 27 22 12	5 11 53 34	10 5 35 40	9 15 53 6	3 26 43 11	9 16 25 27	7 7 51 14	5 20 17 11	5 19 38 2	-21 44	- 3 0	- 0 41
13	7 28 38	8 28 23 20	5 23 52 4	10 6 22 37	9 17 6 57	3 26 37 0	9 17 40 29	7 7 56 38	5 20 14 0	5 19 37 57	-21 34	- 6 41	0 23
14	7 32 35	8 29 24 27	6 6 4 14	10 7 9 35	9 18 16 2	3 26 30 41	9 18 55 30	7 8 1 59	5 20 10 49	5 19 37 53	-21 24	-10 10	1 26
15	7 36 31	9 0 25 35	6 18 35 35	10 7 56 32	9 19 19 38	3 26 24 14	9 20 10 30	7 8 7 15	5 20 7 38	5 19 36 38	-21 13	-13 18	2 27
16	7 40 28	9 1 26 42	7 1 31 1	10 8 43 29	9 20 16 55	3 26 17 39	9 21 25 30	7 8 12 28	5 20 4 28	5 19 33 17	-21 2	-15 52	3 23
17	7 44 24	9 2 27 49	7 14 54 11	10 9 30 25	9 21 7 3	3 26 10 57	9 22 40 29	7 8 17 37	5 20 1 17	5 19 27 17	-20 51	-17 41	4 9
18	7 48 21	9 3 28 56	7 28 46 39	10 10 17 21	9 21 49 9	3 26 4 9	9 23 55 26	7 8 22 42	5 19 58 6	5 19 18 41	-20 39	-18 32	4 43
19	7 52 17	9 4 30 3	8 13 7 2	10 11 4 17	9 22 22 20	3 25 57 13	9 25 10 23	7 8 27 42	5 19 54 55	5 19 8 6	-20 27	-18 15	5 0
20	7 56 14	9 5 31 9	8 27 50 39	10 11 51 11	9 22 45 46	3 25 50 11	9 26 25 18	7 8 32 39	5 19 51 45	5 18 56 33	-20 14	-16 45	4 58
21	8 0 10	9 6 32 14	9 12 49 44	10 12 38 6	9 22 58 41	3 25 43 4	9 27 40 13	7 8 37 31	5 19 48 34	5 18 45 21	-20 1	-14 6	4 36
22	8 4 7	9 7 33 19	9 27 54 37	10 13 24 59	9 23 0 30	3 25 35 50	9 28 55 6	7 8 42 18	5 19 45 23	5 18 35 43	-19 48	-10 29	3 54
23	8 8 4	9 8 34 23	10 12 55 22	10 14 11 52	9 22 50 50	3 25 28 32	10 0 9 58	7 8 47 1	5 19 42 12	5 18 28 34	-19 34	- 6 12	2 57
24	8 12 0	9 9 35 26	10 27 43 31	10 14 58 44	9 22 29 34	3 25 21 8	10 1 24 49	7 8 51 40	5 19 39 1	5 18 24 15	-19 20	- 1 36	1 48
25	8 15 57	9 10 36 28	11 12 13 11	10 15 45 35	9 21 56 55	3 25 13 39	10 2 39 38	7 8 56 14	5 19 35 51	5 18 22 31	-19 5	3 0	0 33
26	8 19 53	9 11 37 29	11 26 21 24	10 16 32 25	9 21 13 32	3 25 6 6	10 3 54 26	7 9 0 44	5 19 32 40	5 18 22 30	-18 51	7 19	- 0 42
27	8 23 50	9 12 38 29	0 10 7 48	10 17 19 14	9 20 20 25	3 24 58 29	10 5 9 12	7 9 5 9	5 19 29 29	5 18 23 2	-18 36	11 8	- 1 53
28	8 27 46	9 13 39 28	0 23 33 44	10 18 6 1	9 19 19 2	3 24 50 49	10 6 23 56	7 9 9 29	5 19 26 18	5 18 22 47	-18 20	14 16	- 2 56
29	8 31 43	9 14 40 26	1 6 41 28	10 18 52 48	9 18 11 9	3 24 43 5	10 7 38 39	7 9 13 45	5 19 23 8	5 18 20 40	-18 4	16 35	- 3 48
30	8 35 39	9 15 41 22	1 19 33 33	10 19 39 33	9 16 58 48	3 24 35 18	10 8 53 20	7 9 17 56	5 19 19 57	5 18 15 58	-17 48	18 1	- 4 27
31	8 39 36	9 16 42 17	2 2 12 22	10 20 26 17	9 15 44 11	3 24 27 28	10 10 7 59	7 9 22 2	5 19 16 46	5 18 8 33	-17 32	18 31	- 4 52

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 9''

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	43	33	9	17	43	11	2	14	39	57	10	21	12	59	9	14	29	30	3	24	19	37	10	11	22	36	7	9	26	3	5	19	13	35	5	17	58	45	-17	15	18	6	-5	3
2	8	47	29	9	18	44	4	2	26	57	51	10	21	59	40	9	13	16	50	3	24	11	43	10	12	37	11	7	9	29	59	5	19	10	25	5	17	47	23	-16	58	16	51	-5	0
3	8	51	26	9	19	44	56	3	9	7	16	10	22	46	19	9	12	8	2	3	24	3	47	10	13	51	45	7	9	33	50	5	19	7	14	5	17	35	29	-16	41	14	51	-4	43
4	8	55	22	9	20	45	47	3	21	9	15	10	23	32	57	9	11	4	39	3	23	55	51	10	15	6	16	7	9	37	36	5	19	4	3	5	17	24	9	-16	23	12	13	-4	14
5	8	59	19	9	21	46	36	4	3	4	55	10	24	19	34	9	10	7	55	3	23	47	53	10	16	20	46	7	9	41	17	5	19	0	52	5	17	14	23	-16	5	9	7	-3	33
6	9	3	15	9	22	47	24	4	14	55	45	10	25	6	9	9	9	18	41	3	23	39	55	10	17	35	13	7	9	44	53	5	18	57	42	5	17	6	51	-15	47	5	40	-2	43
7	9	7	12	9	23	48	12	4	26	43	46	10	25	52	42	9	8	37	30	3	23	31	56	10	18	49	39	7	9	48	23	5	18	54	31	5	17	1	55	-15	28	2	0	-1	47
8	9	11	8	9	24	48	58	5	8	31	39	10	26	39	14	9	8	4	38	3	23	23	57	10	20	4	2	7	9	51	49	5	18	51	20	5	16	59	29	-15	10	-1	44	-0	46
9	9	15	5	9	25	49	43	5	20	22	52	10	27	25	44	9	7	40	5	3	23	15	59	10	21	18	24	7	9	55	9	5	18	48	9	5	16	59	8	-14	51	-5	25	0	18
10	9	19	2	9	26	50	27	6	2	21	33	10	28	12	13	9	7	23	45	3	23	8	2	10	22	32	43	7	9	58	24	5	18	44	59	5	17	0	6	-14	31	-8	55	1	22
11	9	22	58	9	27	51	11	6	14	32	23	10	28	58	40	9	7	15	18	3	23	0	6	10	23	47	0	7	10	1	33	5	18	41	48	5	17	1	28	-14	12	-12	6	2	23
12	9	26	55	9	28	51	53	6	27	0	20	10	29	45	6	9	7	14	23	3	22	52	11	10	25	1	16	7	10	4	37	5	18	38	37	5	17	2	15	-13	52	-14	49	3	19
13	9	30	51	9	29	52	34	7	9	50	18	11	0	31	29	9	7	20	35	3	22	44	18	10	26	15	29	7	10	7	36	5	18	35	26	5	17	1	42	-13	32	-16	53	4	7
14	9	34	48	10	0	53	14	7	23	6	29	11	1	17	52	9	7	33	26	3	22	36	27	10	27	29	40	7	10	10	29	5	18	32	16	5	16	59	18	-13	12	-18	7	4	43
15	9	38	44	10	1	53	53	8	6	51	41	11	2	4	12	9	7	52	27	3	22	28	39	10	28	43	49	7	10	13	16	5	18	29	5	5	16	54	59	-12	52	-18	21	5	5
16	9	42	41	10	2	54	30	8	21	6	21	11	2	50	31	9	8	17	12	3	22	20	53	10	29	57	56	7	10	15	58	5	18	25	54	5	16	49	8	-12	31	-17	28	5	8
17	9	46	37	10	3	55	7	9	5	47	48	11	3	36	48	9	8	47	15	3	22	13	11	11	1	12	0	7	10	18	34	5	18	22	43	5	16	42	26	-12	10	-15	24	4	52
18	9	50	34	10	4	55	42	9	20	49	58	11	4	23	3	9	9	22	10	3	22	5	32	11	2	26	2	7	10	21	4	5	18	19	33	5	16	35	48	-11	49	-12	16	4	16
19	9	54	31	10	5	56	15	10	6	3	55	11	5	9	16	9	10	1	34	3	21	57	58	11	3	40	1	7	10	23	29	5	18	16	22	5	16	30	6	-11	28	-8	17	3	21
20	9	58	27	10	6	56	47	10	21	19	7	11	5	55	27	9	10	45	7	3	21	50	27	11	4	53	58	7	10	25	47	5	18	13	11	5	16	26	3	-11	7	-3	44	2	12
21	10	2	24	10	7	57	17	11	6	25	15	11	6	41	37	9	11	32	27	3	21	43	1	11	6	7	52	7	10	28	0	5	18	10	0	5	16	23	55	-10	45	1	1	0	54
22	10	6	20	10	8	57	46	11	21	13	51	11	7	27	44	9	12	23	19	3	21	35	40	11	7	21	43	7	10	30	8	5	18	6	50	5	16	23	35	-10	23	5	37	-0	26
23	10	10	17	10	9	58	13	0	5	39	16	11	8	13	49	9	13	17	24	3	21	28	25	11	8	35	32	7	10	32	9	5	18	3	39	5	16	24	34	-10	2	9	46	-1	43
24	10	14	13	10	10	58	38	0	19	38	57	11	8	59	52	9	14	14	30	3	21	21	15	11	9	49	17	7	10	34	4	5	18	0	28	5	16	26	6	-9	40	13	13	-2	52
25	10	18	10	10	11	59	1	1	3	12	54	11	9	45	52	9	15	14	22	3	21	14	10	11	11	3	0	7	10	35	53	5	17	57	17	5	16	27	22	-9	17	15	51	-3	48
26	10	22	6	10	12	59	22	1	16	23	1	11	10	31	51	9	16	16	51	3	21	7	12	11	12	16	39	7	10	37	37	5	17	54	7	5	16	27	40	-8	55	17	33	-4	31
27	10	26	3	10	13	59	41	1	29	12	15	11	11	17	47	9	17	21	44	3	21	0	21	11	13	30	15	7	10	39	14	5	17	50	56	5	16	26	33	-8	33	18	17	-4	59
28	10	30	0	10	14	59	58	2	11	44	2	11	12	3	40	9	18	28	52	3	20	53	36	11	14	43	48	7	10	40	46	5	17	47	45	5	16	23	52	-8	10	18	7	-5	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 12''

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 33 56	10 16 0 13	2 24 1 50	11 12 49 31	9 19 38 9	3 20 46 58	11 15 57 17	7 10 42 11	5 17 44 35	5 16 19 49	- 7 47	17 5	- 5 10
2	10 37 53	10 17 0 26	3 6 8 54	11 13 35 20	9 20 49 25	3 20 40 27	11 17 10 43	7 10 43 31	5 17 41 24	5 16 14 49	- 7 25	15 18	- 4 54
3	10 41 49	10 18 0 37	3 18 8 2	11 14 21 6	9 22 2 35	3 20 34 4	11 18 24 5	7 10 44 45	5 17 38 13	5 16 9 29	- 7 2	12 53	- 4 26
4	10 45 46	10 19 0 46	4 0 1 42	11 15 6 50	9 23 17 32	3 20 27 48	11 19 37 24	7 10 45 52	5 17 35 2	5 16 4 23	- 6 39	9 56	- 3 46
5	10 49 42	10 20 0 54	4 11 52 0	11 15 52 31	9 24 34 11	3 20 21 40	11 20 50 39	7 10 46 53	5 17 31 52	5 16 0 3	- 6 16	6 36	- 2 57
6	10 53 39	10 21 0 59	4 23 40 53	11 16 38 9	9 25 52 29	3 20 15 41	11 22 3 51	7 10 47 49	5 17 28 41	5 15 56 54	- 5 52	3 0	- 2 0
7	10 57 35	10 22 1 3	5 5 30 18	11 17 23 46	9 27 12 19	3 20 9 50	11 23 16 59	7 10 48 38	5 17 25 30	5 15 55 6	- 5 29	- 0 42	- 0 57
8	11 1 32	10 23 1 4	5 17 22 21	11 18 9 19	9 28 33 40	3 20 4 7	11 24 30 3	7 10 49 22	5 17 22 20	5 15 54 38	- 5 6	- 4 24	0 8
9	11 5 29	10 24 1 4	5 29 19 27	11 18 54 50	9 29 56 29	3 19 58 33	11 25 43 4	7 10 49 59	5 17 19 9	5 15 55 17	- 4 43	- 7 57	1 13
10	11 9 25	10 25 1 3	6 11 24 28	11 19 40 19	10 1 20 41	3 19 53 8	11 26 56 1	7 10 50 30	5 17 15 58	5 15 56 41	- 4 19	-11 12	2 16
11	11 13 22	10 26 0 59	6 23 40 37	11 20 25 45	10 2 46 16	3 19 47 52	11 28 8 54	7 10 50 55	5 17 12 47	5 15 58 22	- 3 56	-14 1	3 14
12	11 17 18	10 27 0 54	7 6 11 30	11 21 11 9	10 4 13 12	3 19 42 45	11 29 21 43	7 10 51 14	5 17 9 37	5 15 59 53	- 3 32	-16 14	4 3
13	11 21 15	10 28 0 48	7 19 0 49	11 21 56 30	10 5 41 27	3 19 37 48	0 0 34 29	7 10 51 27	5 17 6 26	5 16 0 52	- 3 8	-17 42	4 42
14	11 25 11	10 29 0 40	8 2 11 59	11 22 41 49	10 7 11 0	3 19 33 0	0 1 47 10	7 10 51 33	5 17 3 15	5 16 1 4	- 2 45	-18 16	5 8
15	11 29 8	11 0 0 30	8 15 47 45	11 23 27 5	10 8 41 50	3 19 28 22	0 2 59 48	7 10 51 34	5 17 0 5	5 16 0 28	- 2 21	-17 48	5 17
16	11 33 4	11 1 0 18	8 29 49 23	11 24 12 19	10 10 13 56	3 19 23 55	0 4 12 22	7 10 51 28	5 16 56 54	5 15 59 13	- 1 57	-16 16	5 8
17	11 37 1	11 2 0 5	9 14 16 7	11 24 57 30	10 11 47 17	3 19 19 37	0 5 24 52	7 10 51 17	5 16 53 43	5 15 57 35	- 1 34	-13 41	4 39
18	11 40 58	11 2 59 50	9 29 4 28	11 25 42 39	10 13 21 54	3 19 15 30	0 6 37 17	7 10 50 59	5 16 50 32	5 15 55 55	- 1 10	-10 9	3 52
19	11 44 54	11 3 59 33	10 14 8 14	11 26 27 45	10 14 57 45	3 19 11 33	0 7 49 39	7 10 50 35	5 16 47 22	5 15 54 34	- 0 46	- 5 54	2 47
20	11 48 51	11 4 59 14	10 29 18 57	11 27 12 48	10 16 34 52	3 19 7 47	0 9 1 56	7 10 50 5	5 16 44 11	5 15 53 44	- 0 22	- 1 14	1 31
21	11 52 47	11 5 58 53	11 14 27 3	11 27 57 49	10 18 13 14	3 19 4 11	0 10 14 9	7 10 49 30	5 16 41 0	5 15 53 29	0 1	3 30	0 8
22	11 56 44	11 6 58 30	11 29 23 19	11 28 42 47	10 19 52 52	3 19 0 46	0 11 26 18	7 10 48 48	5 16 37 50	5 15 53 46	0 25	7 57	- 1 14
23	12 0 40	11 7 58 5	0 14 0 10	11 29 27 42	10 21 33 45	3 18 57 32	0 12 38 22	7 10 48 0	5 16 34 39	5 15 54 22	0 49	11 50	- 2 30
24	12 4 37	11 8 57 38	0 28 12 31	0 0 12 34	10 23 15 56	3 18 54 29	0 13 50 21	7 10 47 6	5 16 31 28	5 15 55 6	1 12	14 53	- 3 34
25	12 8 33	11 9 57 8	1 11 58 3	0 0 57 23	10 24 59 23	3 18 51 37	0 15 2 15	7 10 46 6	5 16 28 17	5 15 55 44	1 36	16 59	- 4 24
26	12 12 30	11 10 56 37	1 25 16 56	0 1 42 10	10 26 44 8	3 18 48 56	0 16 14 4	7 10 45 0	5 16 25 7	5 15 56 9	2 0	18 4	- 4 58
27	12 16 27	11 11 56 3	2 8 11 14	0 2 26 54	10 28 30 11	3 18 46 27	0 17 25 48	7 10 43 49	5 16 21 56	5 15 56 18	2 23	18 10	- 5 15
28	12 20 23	11 12 55 26	2 20 44 18	0 3 11 34	11 0 17 34	3 18 44 8	0 18 37 27	7 10 42 32	5 16 18 45	5 15 56 14	2 47	17 22	- 5 17
29	12 24 20	11 13 54 48	3 3 0 13	0 3 56 12	11 2 6 16	3 18 42 1	0 19 49 1	7 10 41 9	5 16 15 35	5 15 56 3	3 10	15 46	- 5 4
30	12 28 16	11 14 54 7	3 15 3 15	0 4 40 47	11 3 56 18	3 18 40 6	0 21 0 29	7 10 39 40	5 16 12 24	5 15 55 51	3 33	13 30	- 4 33
31	12 32 13	11 15 53 23	3 26 57 34	0 5 25 18	11 5 47 42	3 18 38 21	0 22 11 51	7 10 38 6	5 16 9 13	5 15 55 45	3 57	10 41	- 4 0

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत-शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2071 वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2015 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2015 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	1 अप्रै.	द. 19	30 अप्रै.	द. 5	30 मई	उ. 11	29 जून	उ. 23	28 जुला.	उ. 36	27 अग.	उ. 37	25 सितं.	उ. 31	25 अक्तू.	उ. 19	23 नवं.	द. 1	23 दिसं.	द. 12	21 जन.	द. 23	20 फर.	द. 22
+ 15°	1 "	द. 8	30 "	उ. 5	30 "	उ. 21	29 "	उ. 33	28 "	उ. 46	27 "	उ. 48	26 "	उ. 43	25 "	उ. 29	23 "	उ. 9	23	द. 1	21 "	द. 13	20 "	द. 12
+ 25°	1 "	उ. 2	30 "	उ. 16	30 "	उ. 31	29 "	उ. 44	29 "	उ. 53	27 "	उ. 57	26 "	उ. 52	25 "	उ. 39	23 "	उ. 19	23 "	उ. 10	21 "	द. 3	20 "	द. 1
+ 35°	1 "	उ. 13	30 "	उ. 26	30 "	उ. 41	29 "	उ. 53	29 "	उ. 62	27 "	उ. 67	26 "	उ. 62	25 "	उ. 49	24 "	उ. 36	23 "	उ. 20	21 "	उ. 7	20 "	उ. 10

नोट– यहां दिए गए शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्' द्वारा लिखित संग्रहणीय प्रकाशन

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सेकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/– + डाकव्यय Rs. 35/– है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/– ही लिया जाएगा।

(पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।)

पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,
कोठी नं. 59, सैक्टर- 6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा)
Pin- 134 109 , PHONE- 0172-2565303

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

तारीख	जनवरी 2014				फरवरी 2014				मार्च 2014				अप्रैल 2014				मई 2014				जून 2014				जुलाई 2014				अगस्त 2014				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	6	47	17	41	7	55	19	50	6	27	18	32	7	3	20	27	7	8	21	5	8	20	22	7	8	50	21	56	10	14	22	12	1
2	7	44	18	50	8	38	20	56	7	9	19	38	7	46	21	26	7	56	21	57	9	13	22	45	9	42	22	30	11	8	22	47	2
3	8	36	19	59	9	18	21	59	7	50	20	42	8	31	22	23	8	46	22	45	10	5	23	21	10	34	23	3	12	4	23	26	3
4	9	22	21	6	9	58	23	1	8	30	21	44	9	17	23	17	9	37	23	29	10	57	23	56	11	27	23	36	13	1	--	--	4
5	10	5	22	11	10	37	--	--	9	12	22	44	10	6	--	--	10	29	--	--	11	49	--	--	12	21	--	--	13	59	0	9	5
6	10	44	23	14	11	18	24	0	9	55	23	41	10	56	0	6	11	22	0	10	12	42	0	29	13	16	0	11	14	59	0	57	6
7	11	23	--	--	12	0	0	57	10	39	--	--	11	47	0	52	12	14	0	47	13	36	1	3	14	14	0	48	15	58	1	51	7
8	12	0	0	14	12	44	1	52	11	26	0	35	12	39	1	34	13	6	1	23	14	32	1	37	15	14	1	30	16	56	2	50	8
9	12	39	1	12	13	30	2	44	12	14	1	26	13	31	2	13	13	59	1	57	15	30	2	14	16	15	2	16	17	50	3	55	9
10	13	19	2	9	14	19	3	32	13	4	2	14	14	23	2	50	14	53	2	30	16	30	2	54	17	17	3	9	18	40	5	4	10
11	14	1	3	4	15	9	4	18	13	55	2	57	15	16	3	25	15	49	3	5	17	32	3	39	18	16	4	7	19	27	6	13	11
12	14	46	3	57	16	1	5	1	14	47	3	38	16	10	3	59	16	47	3	41	18	35	4	29	19	13	5	11	20	11	7	22	12
13	15	33	4	48	16	53	5	40	15	39	4	16	17	6	4	33	17	46	4	20	19	35	5	25	20	5	6	19	20	53	8	29	13
14	16	23	5	36	17	46	6	17	16	32	4	52	18	2	5	8	18	48	5	3	20	33	6	27	20	52	7	28	21	34	9	34	14
15	17	14	6	20	18	39	6	52	17	26	6	4	19	1	5	46	19	50	5	50	21	26	7	32	21	36	8	36	22	16	10	38	15
16	18	6	7	2	19	33	7	26	18	20	6	0	20	1	6	26	20	51	6	43	22	14	8	39	22	17	9	42	22	58	11	39	16
17	18	58	7	40	20	27	8	0	19	16	6	35	21	1	7	10	21	49	7	41	22	58	9	46	22	57	10	46	23	42	12	38	17
18	19	51	8	16	21	22	8	34	20	12	7	10	22	1	7	58	22	43	8	42	23	39	10	51	23	37	11	49	--	--	13	34	18
19	20	44	8	51	22	18	9	9	21	10	7	48	23	0	8	52	23	32	9	47	--	--	11	54	--	--	12	49	0	29	14	26	19
20	21	37	9	24	23	16	9	47	22	9	8	28	23	55	9	50	--	--	10	51	0	18	12	56	0	18	13	48	1	17	15	16	20
21	22	31	9	57	--	--	10	28	23	9	9	13	--	--	10	51	0	17	11	55	0	57	13	56	1	0	14	45	2	6	16	1	21
22	23	26	10	31	0	15	11	14	--	--	10	2	0	46	11	54	0	58	12	58	1	36	14	55	1	44	15	39	2	57	16	44	22
23	--	--	11	7	1	14	12	5	0	7	10	56	1	33	12	58	1	38	14	0	2	17	15	53	2	30	16	30	3	49	17	23	23
24	0	24	11	46	2	13	13	2	1	4	11	55	2	16	14	2	2	17	15	1	2	59	16	49	3	19	17	18	4	41	17	59	24
25	1	23	12	30	3	11	14	4	1	58	12	57	2	58	15	5	2	55	16	1	3	45	17	43	4	10	18	3	5	33	18	34	25
26	2	24	13	19	4	5	15	9	2	48	14	2	3	37	16	8	3	35	17	1	4	32	18	34	5	1	18	44	6	25	19	7	26
27	3	26	14	15	4	56	16	17	3	35	15	7	4	17	17	10	4	17	17	59	5	22	19	21	5	53	19	22	7	17	19	41	27
28	4	27	15	17	5	43	17	25	4	19	16	13	4	57	18	11	5	2	18	55	6	14	20	4	6	45	19	58	8	10	20	14	28
29	5	25	16	23					5	1	17	18	5	38	19	11	5	48	19	49	7	6	20	44	7	37	20	32	9	4	20	49	29
30	6	20	17	32					5	41	18	22	6	22	20	10	6	37	20	39	7	58	21	22	8	29	21	5	9	58	21	26	30
31	7	10	18	42					6	22	19	25					7	28	21	24					9	21	21	38	10	54	22	7	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014—15 ई.

तारीख	सितंबर 2014				अक्तूबर 2014				नवंबर 2014				दिसंबर 2014				जनवरी 2015				फरवरी 2015				मार्च 2015				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	11	51	22	52	12	35	23	28	13	46	0	27	13	49	1	31	14	37	3	29	15	53	4	59	14	42	3	42	1
2	12	48	23	41	13	28	--	--	14	29	1	31	14	29	2	33	15	24	4	27	16	46	5	44	15	34	4	25	2
3	13	46	--	--	14	18	0	29	15	10	2	35	15	11	3	35	16	14	5	22	17	39	6	26	16	27	5	4	3
4	14	42	0	37	15	5	1	32	15	50	3	40	15	55	4	36	17	6	6	14	18	31	7	4	17	19	5	41	4
5	15	36	1	37	15	50	2	38	16	32	4	44	16	41	5	36	17	59	7	2	19	24	7	40	18	11	6	16	5
6	16	27	2	42	16	33	3	44	17	16	5	47	17	30	6	35	18	52	7	46	20	15	8	14	19	2	6	49	6
7	17	14	3	49	17	15	4	51	18	2	6	50	18	21	7	30	19	45	8	27	21	7	8	47	19	54	7	22	7
8	18	0	4	57	17	58	5	57	18	50	7	50	19	14	8	21	20	38	9	5	21	59	9	20	20	47	7	55	8
9	18	43	6	6	18	41	7	2	19	41	8	48	20	8	9	8	21	30	9	40	22	51	9	54	21	40	8	30	9
10	19	26	7	13	19	26	8	6	20	33	9	41	21	1	9	50	22	22	10	13	23	45	10	29	22	34	9	7	10
11	20	8	8	19	20	13	9	8	21	26	10	30	21	54	10	29	23	13	10	46	--	--	11	7	23	28	9	46	11
12	20	52	9	23	21	2	10	6	22	19	11	14	22	46	11	5	--	--	11	19	0	40	11	48	--	--	10	30	12
13	21	37	10	25	21	53	11	1	23	12	11	55	23	38	11	40	0	6	11	53	1	36	12	34	0	24	11	18	13
14	22	23	11	24	22	45	11	51	--	--	12	32	--	--	12	13	1	0	12	30	2	33	13	25	1	19	12	10	14
15	23	12	12	19	23	37	12	37	0	4	13	7	0	30	12	46	1	55	13	10	3	29	14	22	2	12	13	8	15
16	--	--	13	11	--	--	13	19	0	56	13	40	1	23	13	20	2	52	13	55	4	25	15	25	3	5	14	10	16
17	0	2	13	58	0	29	13	58	1	48	14	14	2	17	13	56	3	50	14	45	5	18	16	31	3	54	15	15	17
18	0	53	14	42	1	21	14	34	2	41	14	48	3	12	14	35	4	49	15	41	6	8	17	39	4	42	16	23	18
19	1	44	15	22	2	13	15	8	3	35	15	23	4	10	15	18	5	47	16	43	6	55	18	48	6	14	17	31	19
20	2	36	15	59	3	5	15	42	4	30	16	1	5	9	16	7	6	42	17	48	7	40	19	57	6	12	18	39	20
21	3	28	16	35	3	58	16	15	6	28	16	42	6	9	17	1	7	34	18	56	8	24	21	4	6	56	19	47	21
22	4	20	17	9	4	51	16	50	6	26	17	28	7	8	18	1	8	22	20	4	9	7	22	9	7	40	20	54	22
23	5	13	17	42	5	46	17	26	7	25	18	19	8	4	19	4	9	7	21	11	9	50	23	13	8	25	21	58	23
24	6	5	18	16	6	42	18	6	8	24	19	15	8	56	20	9	9	49	22	17	10	35	--	--	9	13	23	0	24
25	6	59	18	51	7	39	18	48	9	20	20	15	9	44	21	15	10	31	23	21	11	21	0	14	10	2	23	57	25
26	7	53	19	27	8	37	19	35	10	13	21	17	10	29	22	20	11	12	--	--	12	9	1	12	10	52	--	--	26
27	8	49	20	7	9	35	20	27	11	2	22	21	11	11	23	24	11	54	0	23	12	59	2	6	11	44	0	50	27
28	9	46	20	50	10	31	21	23	11	47	23	25	11	51	--	--	12	37	1	23	13	50	2	56	12	37	1	39	28
29	10	43	21	38	11	25	22	22	12	29	--	--	12	31	0	27	13	23	2	22					13	30	2	23	29
30	11	40	22	31	12	15	23	24	13	10	0	28	13	11	1	29	14	11	3	17					14	22	3	4	30
31					13	2	--	--					13	53	2	29	15	1	4	10					15	14	3	41	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2014 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 14 37	10 9 10	8 17 12	-2 36	2 10	-24 44	-1 51	22 35	0 7	-18 13	2 36	-15 44	2 10	2 49	-0 41	-10 57	-0 40	-20 13	2 45
4	11 14 40	10 9 15	8 17 18	-3 5	2 12	-24 21	-2 0	22 38	0 8	-17 42	3 23	-15 48	2 11	2 50	-0 41	-10 55	-0 40	-20 13	2 44
7	11 14 43	10 9 20	8 17 25	-3 33	2 14	-23 43	-2 5	22 42	0 8	-17 14	4 9	-15 52	2 11	2 51	-0 41	-10 53	-0 40	-20 13	2 44
10	11 14 46	10 9 25	8 17 31	-4 0	2 17	-22 52	-2 7	22 45	0 9	-16 49	4 52	-15 55	2 11	2 52	-0 41	-10 51	-0 40	-20 13	2 44
13	11 14 50	10 9 31	8 17 37	-4 25	2 19	-21 47	-2 5	22 48	0 9	-16 28	5 29	-15 59	2 12	2 54	-0 41	-10 49	-0 40	-20 12	2 44
16	11 14 54	10 9 36	8 17 43	-4 50	2 21	-20 28	-1 59	22 51	0 10	-16 12	6 1	-16 1	2 12	2 56	-0 41	-10 47	-0 40	-20 12	2 43
19	11 14 59	10 9 42	8 17 50	-5 13	2 23	-18 56	-1 47	22 54	0 10	-15 59	6 26	-16 4	2 13	2 58	-0 40	-10 45	-0 40	-20 12	2 43
22	11 15 4	10 9 48	8 17 56	-5 35	2 25	-17 13	-1 28	22 56	0 10	-15 51	6 43	-16 7	2 13	3 0	-0 40	-10 43	-0 40	-20 11	2 43
25	11 15 9	10 9 54	8 18 2	-5 56	2 27	-15 21	-1 3	22 59	0 11	-15 47	6 54	-16 9	2 14	3 2	-0 40	-10 41	-0 40	-20 11	2 43
28	11 15 15	10 10 0	8 18 8	-6 15	2 29	-13 25	-0 31	23 1	0 11	-15 47	6 58	-16 11	2 15	3 4	-0 40	-10 39	-0 40	-20 11	2 43
31	11 15 21	10 10 6	8 18 13	-6 33	2 31	-11 32	0 10	23 3	0 11	-15 49	6 57	-16 13	2 15	3 7	-0 40	-10 36	-0 40	-20 10	2 42
फर. 1	11 15 23	10 10 8	8 18 15	-6 38	2 32	-10 57	0 25	23 4	0 11	-15 51	6 56	-16 14	2 15	3 8	-0 40	-10 36	-0 40	-20 10	2 42
4	11 15 30	10 10 15	8 18 21	-6 54	2 34	-9 25	1 13	23 6	0 12	-15 57	6 49	-16 15	2 16	3 10	-0 40	-10 33	-0 40	-20 10	2 42
7	11 15 37	10 10 22	8 18 26	-7 8	2 36	-8 21	2 4	23 8	0 12	-16 4	6 38	-16 17	2 17	3 13	-0 40	-10 31	-0 40	-20 10	2 42
10	11 15 44	10 10 28	8 18 31	-7 21	2 38	-7 56	2 51	23 9	0 12	-16 13	6 24	-16 18	2 17	3 16	-0 40	-10 28	-0 40	-20 9	2 42
13	11 15 52	10 10 35	8 18 37	-7 32	2 40	-8 13	3 26	23 11	0 13	-16 21	6 9	-16 19	2 18	3 19	-0 40	-10 26	-0 40	-20 9	2 42
16	11 16 0	10 10 42	8 18 42	-7 41	2 42	-9 4	3 42	23 12	0 13	-16 28	5 51	-16 19	2 18	3 23	-0 40	-10 23	-0 40	-20 8	2 42
19	11 16 8	10 10 48	8 18 46	-7 48	2 44	-10 15	3 38	23 13	0 13	-16 34	5 32	-16 20	2 19	3 26	-0 39	-10 21	-0 40	-20 8	2 42
22	11 16 17	10 10 55	8 18 51	-7 53	2 46	-11 29	3 16	23 14	0 14	-16 37	5 13	-16 20	2 20	3 29	-0 39	-10 19	-0 40	-20 8	2 42
25	11 16 26	10 11 2	8 18 55	-7 57	2 47	-12 35	2 42	23 15	0 14	-16 39	4 52	-16 20	2 20	3 33	-0 39	-10 16	-0 40	-20 7	2 41
28	11 16 35	10 11 9	8 18 59	-7 58	2 49	-13 26	2 3	23 15	0 14	-16 37	4 32	-16 20	2 21	3 36	-0 39	-10 14	-0 40	-20 7	2 41
मार्च 1	11 16 38	10 11 11	8 19 1	-7 58	2 49	-13 39	1 49	23 15	0 14	-16 36	4 25	-16 19	2 21	3 38	-0 39	-10 13	-0 40	-20 7	2 41
4	11 16 47	10 11 18	8 19 5	-7 56	2 50	-14 6	1 9	23 16	0 14	-16 29	4 4	-16 19	2 22	3 41	-0 39	-10 10	-0 40	-20 7	2 41
7	11 16 57	10 11 25	8 19 8	-7 52	2 51	-14 16	0 31	23 16	0 15	-16 19	3 42	-16 18	2 22	3 45	-0 39	-10 8	-0 40	-20 7	2 41
10	11 17 6	10 11 32	8 19 11	-7 46	2 51	-14 10	-0 4	23 16	0 15	-16 6	3 21	-16 17	2 23	3 49	-0 39	-10 5	-0 40	-20 6	2 41
13	11 17 16	10 11 38	8 19 15	-7 38	2 51	-13 49	-0 36	23 16	0 15	-15 48	3 1	-16 16	2 23	3 53	-0 39	-10 3	-0 41	-20 6	2 41
16	11 17 26	10 11 45	8 19 17	-7 28	2 51	-13 13	-1 4	23 16	0 15	-15 26	2 40	-16 14	2 24	3 57	-0 39	-10 1	-0 41	-20 6	2 41
19	11 17 36	10 11 51	8 19 20	-7 16	2 50	-12 24	-1 28	23 16	0 16	-15 0	2 20	-16 13	2 25	4 1	-0 39	-9 58	-0 41	-20 6	2 41
22	11 17 46	10 11 58	8 19 22	-7 2	2 49	-11 22	-1 47	23 15	0 16	-14 29	2 0	-16 11	2 25	4 5	-0 39	-9 56	-0 41	-20 5	2 41
25	11 17 56	10 12 4	8 19 24	-6 46	2 47	-10 7	-2 3	23 15	0 16	-13 55	1 41	-16 9	2 26	4 9	-0 39	-9 54	-0 41	-20 5	2 41
28	11 18 6	10 12 10	8 19 26	-6 28	2 45	-8 41	-2 15	23 14	0 16	-13 16	1 22	-16 7	2 26	4 13	-0 39	-9 52	-0 41	-20 5	2 41
31	11 18 17	10 12 16	8 19 28	-6 9	2 41	-7 4	-2 22	23 13	0 16	-12 33	1 4	-16 4	2 26	4 17	-0 39	-9 49	-0 41	-20 5	2 41

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2014 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 18 20	10 12 18	8 19 28	-6 2	2 40	-6 29	-2 24	23 13	0 16	-12 18	0 58	-16 3	2 27	4 18	-0 39	-9 49	-0 41	-20 5	2 41
4	11 18 30	10 12 24	8 19 29	-5 42	2 36	-4 38	-2 25	23 12	0 17	-11 31	0 41	-16 1	2 27	4 22	-0 39	-9 47	-0 41	-20 5	2 41
7	11 18 41	10 12 29	8 19 30	-5 21	2 31	-2 37	-2 23	23 10	0 17	-10 39	0 25	-15 58	2 27	4 26	-0 39	-9 45	-0 41	-20 5	2 41
10	11 18 51	10 12 35	8 19 31	-5 0	2 26	-0 27	-2 16	23 9	0 17	-9 45	0 9	-15 55	2 28	4 30	-0 39	-9 43	-0 41	-20 5	2 41
13	11 19 1	10 12 40	8 19 31	-4 40	2 20	1 52	-2 4	23 7	0 17	-8 47	-0 6	-15 52	2 28	4 34	-0 39	-9 41	-0 41	-20 5	2 41
16	11 19 11	10 12 45	8 19 31	-4 19	2 14	4 19	-1 48	23 5	0 17	-7 46	-0 20	-15 49	2 28	4 38	-0 39	-9 39	-0 41	-20 5	2 40
19	11 19 21	10 12 50	8 19 31	-4 1	2 7	6 52	-1 27	23 3	0 17	-6 42	-0 33	-15 46	2 29	4 42	-0 39	-9 37	-0 41	-20 5	2 40
22	11 19 31	10 12 54	8 19 30	-3 43	1 59	9 29	-1 2	23 1	0 18	-5 36	-0 45	-15 43	2 29	4 46	-0 39	-9 36	-0 41	-20 5	2 40
25	11 19 41	10 12 59	8 19 29	-3 27	1 52	12 7	-0 34	22 59	0 18	-4 28	-0 57	-15 39	2 29	4 49	-0 39	-9 34	-0 42	-20 5	2 40
28	11 19 51	10 13 3	8 19 28	-3 14	1 44	14 42	-0 3	22 56	0 18	-3 18	-1 7	-15 36	2 29	4 53	-0 39	-9 33	-0 42	-20 5	2 40
मई 1	11 20 0	10 13 7	8 19 27	-3 2	1 36	17 10	0 29	22 54	0 18	-2 6	-1 16	-15 32	2 29	4 57	-0 39	-9 31	-0 42	-20 6	2 40
4	11 20 10	10 13 10	8 19 26	-2 53	1 28	19 23	1 0	22 51	0 18	-0 52	-1 25	-15 29	2 29	5 0	-0 39	-9 30	-0 42	-20 6	2 40
7	11 20 19	10 13 14	8 19 24	-2 47	1 20	21 19	1 28	22 48	0 18	0 22	-1 33	-15 25	2 29	5 4	-0 39	-9 29	-0 42	-20 6	2 40
10	11 20 28	10 13 17	8 19 22	-2 44	1 12	22 53	1 52	22 44	0 19	1 37	-1 39	-15 22	2 29	5 7	-0 39	-9 28	-0 42	-20 6	2 40
13	11 20 37	10 13 20	8 19 19	-2 43	1 5	24 4	2 9	22 41	0 19	2 53	-1 45	-15 18	2 29	5 11	-0 39	-9 27	-0 42	-20 7	2 40
16	11 20 45	10 13 22	8 19 17	-2 45	0 57	24 53	2 20	22 37	0 19	4 9	-1 50	-15 15	2 29	5 14	-0 39	-9 26	-0 42	-20 7	2 40
19	11 20 53	10 13 24	8 19 14	-2 49	0 50	25 22	2 22	22 33	0 19	5 25	-1 54	-15 12	2 29	5 17	-0 39	-9 25	-0 42	-20 7	2 40
22	11 21 1	10 13 26	8 19 11	-2 56	0 43	25 32	2 17	22 29	0 19	6 40	-1 57	-15 8	2 28	5 20	-0 39	-9 25	-0 42	-20 8	2 39
25	11 21 9	10 13 28	8 19 8	-3 5	0 36	25 27	2 4	22 24	0 19	7 55	-1 59	-15 5	2 28	5 23	-0 39	-9 24	-0 43	-20 8	2 39
28	11 21 16	10 13 29	8 19 5	-3 17	0 29	25 9	1 43	22 20	0 20	9 9	-2 1	-15 2	2 28	5 26	-0 39	-9 24	-0 43	-20 9	2 39
31	11 21 24	10 13 31	8 19 1	-3 31	0 23	24 39	1 14	22 15	0 20	10 22	-2 1	-14 59	2 27	5 29	-0 39	-9 23	-0 43	-20 9	2 39
जून 1	11 21 26	10 13 31	8 19 0	-3 36	0 21	24 28	1 2	22 13	0 20	10 45	-2 1	-14 58	2 27	5 29	-0 39	-9 23	-0 43	-20 9	2 39
4	11 21 32	10 13 32	8 18 56	-3 53	0 15	23 47	0 23	22 8	0 20	11 56	-2 0	-14 55	2 27	5 32	-0 39	-9 23	-0 43	-20 10	2 39
7	11 21 39	10 13 32	8 18 52	-4 12	0 9	23 2	-0 22	22 3	0 20	13 4	-1 59	-14 53	2 26	5 34	-0 40	-9 23	-0 43	-20 10	2 39
10	11 21 45	10 13 32	8 18 48	-4 33	0 3	22 12	-1 12	21 57	0 20	14 11	-1 57	-14 50	2 26	5 37	-0 40	-9 23	-0 43	-20 11	2 38
13	11 21 50	10 13 32	8 18 44	-4 55	-0 2	21 22	-2 3	21 51	0 21	15 14	-1 54	-14 48	2 25	5 39	-0 40	-9 23	-0 43	-20 12	2 38
16	11 21 56	10 13 31	8 18 40	-5 19	-0 7	20 34	-2 52	21 45	0 21	16 15	-1 51	-14 46	2 25	5 41	-0 40	-9 23	-0 43	-20 12	2 38
19	11 22 1	10 13 31	8 18 36	-5 44	-0 12	19 50	-3 35	21 39	0 21	17 12	-1 46	-14 44	2 24	5 42	-0 40	-9 24	-0 43	-20 13	2 38
22	11 22 5	10 13 30	8 18 32	-6 11	-0 16	19 16	-4 9	21 32	0 21	18 6	-1 42	-14 42	2 23	5 44	-0 40	-9 24	-0 43	-20 13	2 38
25	11 22 9	10 13 28	8 18 27	-6 39	-0 21	18 52	-4 30	21 25	0 21	18 56	-1 37	-14 41	2 23	5 46	-0 40	-9 25	-0 44	-20 14	2 37
28	11 22 13	10 13 27	8 18 23	-7 8	-0 25	18 42	-4 38	21 18	0 22	19 42	-1 31	-14 39	2 22	5 47	-0 40	-9 26	-0 44	-20 15	2 37

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2014 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 22 16	10 13 25	8 18 18	-7 39	-0 29	18 46	-4 34	21 11	0 22	20 23	-1 25	-14 38	2 21	5 48	-0 40	-9 26	-0 44	-20 16	2 37
4	11 22 19	10 13 23	8 18 14	-8 10	-0 33	19 2	-4 18	21 4	0 22	21 0	-1 18	-14 38	2 21	5 49	-0 40	-9 27	-0 44	-20 16	2 36
7	11 22 21	10 13 20	8 18 9	-8 42	-0 37	19 29	-3 53	20 56	0 22	21 32	-1 11	-14 37	2 20	5 50	-0 40	-9 28	-0 44	-20 17	2 36
10	11 22 23	10 13 18	8 18 5	-9 15	-0 40	20 3	-3 21	20 49	0 23	21 59	-1 4	-14 37	2 19	5 51	-0 40	-9 29	-0 44	-20 18	2 36
13	11 22 25	10 13 15	8 18 0	-9 49	-0 43	20 42	-2 44	20 41	0 23	22 20	-0 56	-14 37	2 18	5 51	-0 41	-9 30	-0 44	-20 18	2 35
16	11 22 26	10 13 12	8 17 56	-10 23	-0 47	21 20	-2 4	20 33	0 23	22 36	-0 48	-14 37	2 18	5 51	-0 41	-9 32	-0 44	-20 19	2 35
19	11 22 27	10 13 9	8 17 51	-10 58	-0 50	21 53	-1 23	20 24	0 23	22 46	-0 40	-14 37	2 17	5 52	-0 41	-9 33	-0 44	-20 20	2 35
22	11 22 27	10 13 5	8 17 47	-11 33	-0 53	22 15	-0 42	20 16	0 24	22 50	-0 32	-14 38	2 16	5 52	-0 41	-9 34	-0 44	-20 21	2 34
25	11 22 27	10 13 1	8 17 43	-12 8	-0 55	22 22	-0 3	20 7	0 24	22 48	-0 24	-14 39	2 15	5 52	-0 41	-9 36	-0 44	-20 21	2 34
28	11 22 26	10 12 57	8 17 39	-12 44	-0 58	22 8	0 32	19 58	0 24	22 41	-0 16	-14 40	2 14	5 51	-0 41	-9 37	-0 45	-20 22	2 34
31	11 22 25	10 12 53	8 17 35	-13 20	-1 1	21 32	1 0	19 49	0 24	22 28	-0 8	-14 42	2 14	5 51	-0 41	-9 39	-0 45	-20 23	2 33
अग. 1	11 22 24	10 12 52	8 17 33	-13 31	-1 1	21 14	1 9	19 46	0 24	22 22	-0 5	-14 42	2 13	5 50	-0 41	-9 39	-0 45	-20 23	2 33
4	11 22 23	10 12 48	8 17 29	-14 7	-1 4	20 7	1 28	19 37	0 25	22 1	0 3	-14 44	2 13	5 50	-0 41	-9 41	-0 45	-20 24	2 33
7	11 22 21	10 12 43	8 17 26	-14 43	-1 6	18 38	1 40	19 28	0 25	21 34	0 11	-14 46	2 12	5 49	-0 41	-9 43	-0 45	-20 25	2 32
10	11 22 18	10 12 39	8 17 22	-15 19	-1 8	16 53	1 46	19 19	0 25	21 1	0 18	-14 48	2 11	5 48	-0 41	-9 44	-0 45	-20 25	2 32
13	11 22 15	10 12 34	8 17 19	-15 54	-1 10	14 54	1 44	19 9	0 26	20 23	0 26	-14 51	2 10	5 47	-0 41	-9 46	-0 45	-20 26	2 31
16	11 22 12	10 12 29	8 17 16	-16 29	-1 12	12 48	1 38	19 0	0 26	19 40	0 33	-14 54	2 9	5 45	-0 41	-9 48	-0 45	-20 27	2 31
19	11 22 8	10 12 25	8 17 13	-17 4	-1 14	10 35	1 27	18 50	0 26	18 51	0 40	-14 57	2 9	5 44	-0 42	-9 50	-0 45	-20 28	2 30
22	11 22 00	10 12 20	8 17 10	-17 38	-1 16	8 20	1 12	18 41	0 27	17 58	0 46	-15 0	2 8	5 42	-0 42	-9 52	-0 45	-20 28	2 30
25	11 21 60	10 12 15	8 17 8	-18 12	-1 17	6 3	0 54	18 31	0 27	17 0	0 52	-15 3	2 7	5 41	-0 42	-9 54	-0 45	-20 29	2 29
28	11 21 55	10 12 10	8 17 5	-18 45	-1 19	3 47	0 34	18 21	0 27	15 58	0 58	-15 7	2 7	5 39	-0 42	-9 55	-0 45	-20 30	2 29
31	11 21 50	10 12 5	8 17 3	-19 17	-1 20	1 33	0 12	18 12	0 28	14 52	1 3	-15 10	2 6	5 37	-0 42	-9 57	-0 45	-20 30	2 28
सित. 1	11 21 48	10 12 3	8 17 2	-19 27	-1 21	0 49	0 4	18 8	0 28	14 29	1 5	-15 12	2 6	5 36	-0 42	-9 58	-0 45	-20 30	2 28
4	11 21 43	10 11 58	8 17 1	-19 58	-1 22	-1 21	-0 20	17 59	0 28	13 18	1 9	-15 15	2 5	5 34	-0 42	-10 0	-0 45	-20 31	2 28
7	11 21 37	10 11 54	8 16 59	-20 28	-1 23	-3 27	-0 44	17 49	0 28	12 3	1 13	-15 20	2 4	5 32	-0 42	-10 2	-0 45	-20 32	2 27
10	11 21 31	10 11 49	8 16 58	-20 57	-1 25	-5 27	-1 9	17 39	0 29	10 46	1 17	-15 24	2 4	5 29	-0 42	-10 3	-0 45	-20 32	2 27
13	11 21 25	10 11 44	8 16 57	-21 25	-1 26	-7 22	-1 34	17 30	0 29	9 25	1 20	-15 28	2 3	5 27	-0 42	-10 5	-0 45	-20 33	2 26
16	11 21 18	10 11 39	8 16 56	-21 51	-1 27	-9 10	-1 59	17 20	0 30	8 3	1 22	-15 33	2 2	5 24	-0 42	-10 7	-0 45	-20 34	2 26
19	11 21 12	10 11 35	8 16 56	-22 16	-1 27	-10 49	-2 22	17 11	0 30	6 38	1 24	-15 37	2 2	5 22	-0 42	-10 9	-0 45	-20 34	2 25
22	11 21 5	10 11 30	8 16 55	-22 39	-1 28	-12 18	-2 44	17 1	0 30	5 11	1 25	-15 42	2 1	5 19	-0 42	-10 10	-0 45	-20 35	2 25
25	11 20 58	10 11 26	8 16 55	-23 1	-1 29	-13 35	-3 4	16 52	0 31	3 44	1 26	-15 47	2 1	5 16	-0 42	-10 12	-0 45	-20 35	2 24
28	11 20 51	10 11 21	8 16 56	-23 22	-1 29	-14 37	-3 20	16 43	0 31	2 15	1 26	-15 52	2 0	5 14	-0 42	-10 13	-0 45	-20 36	2 24

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2014 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 20 44	10 11 17	8 16 56	-23 40	-1 30	-15 20	-3 32	16 34	0 32	0 45	1 25	-15 57	2 0	5 11	-0 42	-10 15	-0 45	-20 36	2 23
4	11 20 36	10 11 13	8 16 57	-23 57	-1 30	-15 39	-3 36	16 25	0 32	-0 45	1 24	-16 2	1 59	5 8	-0 42	-10 16	-0 45	-20 37	2 23
7	11 20 29	10 11 10	8 16 58	-24 12	-1 31	-15 27	-3 30	16 17	0 33	-2 16	1 23	-16 7	1 59	5 5	-0 42	-10 18	-0 45	-20 37	2 22
10	11 20 22	10 11 6	8 17 0	-24 25	-1 31	-14 39	-3 11	16 8	0 33	-3 46	1 20	-16 13	1 58	5 2	-0 42	-10 19	-0 45	-20 37	2 22
13	11 20 14	10 11 3	8 17 2	-24 35	-1 31	-13 10	-2 36	16 0	0 34	-5 15	1 17	-16 18	1 58	5 0	-0 42	-10 20	-0 45	-20 38	2 21
16	11 20 7	10 11 00	8 17 4	-24 44	-1 31	-11 7	-1 46	15 52	0 34	-6 44	1 14	-16 23	1 58	4 57	-0 42	-10 21	-0 45	-20 38	2 21
19	11 20 0	10 10 57	8 17 6	-24 51	-1 31	-8 51	-0 45	15 45	0 35	-8 11	1 10	-16 29	1 57	4 54	-0 42	-10 22	-0 45	-20 38	2 20
22	11 19 53	10 10 55	8 17 8	-24 55	-1 31	-6 52	0 15	15 38	0 35	-9 37	1 6	-16 34	1 57	4 51	-0 42	-10 23	-0 45	-20 39	2 20
25	11 19 46	10 10 52	8 17 11	-24 57	-1 31	-5 36	1 6	15 31	0 36	-11 1	1 1	-16 39	1 57	4 49	-0 42	-10 24	-0 45	-20 39	2 19
28	11 19 39	10 10 50	8 17 14	-24 57	-1 31	-5 11	1 41	15 24	0 37	-12 22	0 56	-16 45	1 56	4 46	-0 42	-10 25	-0 45	-20 39	2 19
31	11 19 33	10 10 48	8 17 18	-24 54	-1 31	-5 34	2 3	15 18	0 37	-13 41	0 50	-16 50	1 56	4 44	-0 42	-10 25	-0 45	-20 39	2 18
नवं. 1	11 19 31	10 10 48	8 17 19	-24 53	-1 30	-5 51	2 7	15 16	0 37	-14 6	0 48	-16 52	1 56	4 43	-0 42	-10 25	-0 45	-20 39	2 18
4	11 19 24	10 10 47	8 17 22	-24 47	-1 30	-7 0	2 11	15 11	0 38	-15 21	0 42	-16 57	1 56	4 41	-0 42	-10 26	-0 45	-20 40	2 17
7	11 19 18	10 10 45	8 17 26	-24 39	-1 29	-8 29	2 7	15 5	0 39	-16 32	0 36	-17 3	1 55	4 38	-0 42	-10 26	-0 45	-20 40	2 17
10	11 19 13	10 10 45	8 17 30	-24 28	-1 29	-10 10	1 57	15 1	0 39	-17 39	0 29	-17 8	1 55	4 36	-0 42	-10 26	-0 45	-20 40	2 17
13	11 19 7	10 10 44	8 17 34	-24 15	-1 28	-11 57	1 42	14 56	0 40	-18 42	0 23	-17 13	1 55	4 34	-0 41	-10 27	-0 45	-20 40	2 16
16	11 19 2	10 10 44	8 17 39	-24 0	-1 28	-13 43	1 25	14 53	0 41	-19 41	0 16	-17 18	1 55	4 32	-0 41	-10 27	-0 45	-20 40	2 16
19	11 18 57	10 10 44	8 17 44	-23 42	-1 27	-15 27	1 5	14 49	0 41	-20 34	0 8	-17 23	1 55	4 30	-0 41	-10 26	-0 45	-20 40	2 15
22	11 18 53	10 10 45	8 17 48	-23 22	-1 26	-17 6	0 45	14 47	0 42	-21 23	0 1	-17 29	1 55	4 29	-0 41	-10 26	-0 45	-20 40	2 15
25	11 18 48	10 10 45	8 17 54	-22 59	-1 25	-18 39	0 24	14 44	0 43	-22 5	-0 6	-17 34	1 55	4 27	-0 41	-10 26	-0 45	-20 40	2 14
28	11 18 45	10 10 46	8 17 59	-22 35	-1 24	-20 3	0 4	14 43	0 43	-22 42	-0 13	-17 38	1 55	4 26	-0 41	-10 25	-0 44	-20 40	2 14
दिसं. 1	11 18 41	10 10 48	8 18 4	-22 8	-1 23	-21 19	-0 17	14 42	0 44	-23 13	-0 21	-17 43	1 55	4 25	-0 41	-10 25	-0 44	-20 40	2 13
4	11 18 38	10 10 49	8 18 10	-21 38	-1 22	-22 26	-0 36	14 41	0 45	-23 38	-0 28	-17 48	1 55	4 24	-0 41	-10 24	-0 44	-20 40	2 13
7	11 18 36	10 10 51	8 18 15	-21 7	-1 20	-23 23	-0 55	14 41	0 45	-23 56	-0 35	-17 53	1 55	4 23	-0 41	-10 24	-0 44	-20 40	2 13
10	11 18 34	10 10 54	8 18 21	-20 34	-1 19	-24 9	-1 12	14 42	0 46	-24 7	-0 41	-17 57	1 55	4 22	-0 41	-10 23	-0 44	-20 40	2 12
13	11 18 32	10 10 56	8 18 27	-19 58	-1 18	-24 44	-1 28	14 43	0 47	-24 12	-0 48	-18 1	1 55	4 21	-0 40	-10 22	-0 44	-20 39	2 12
15	11 18 31	10 10 59	8 18 33	-19 21	-1 16	-25 7	-1 41	14 45	0 48	-24 10	-0 54	-18 6	1 55	4 21	-0 40	-10 21	-0 44	-20 39	2 12
19	11 18 30	10 11 2	8 18 39	-18 42	-1 15	-25 17	-1 53	14 47	0 48	-24 2	-1 0	-18 10	1 55	4 21	-0 40	-10 19	-0 44	-20 39	2 11
22	11 18 30	10 11 6	8 18 45	-18 1	-1 14	-25 15	-2 2	14 50	0 49	-23 46	-1 6	-18 14	1 55	4 21	-0 40	-10 18	-0 44	-20 39	2 11
25	11 18 30	10 11 9	8 18 51	-17 19	-1 12	-24 59	-2 8	14 53	0 50	-23 24	-1 11	-18 18	1 55	4 21	-0 40	-10 17	-0 44	-20 38	2 11
28	11 18 31	10 11 13	8 18 58	-16 34	-1 10	-24 29	-2 11	14 57	0 50	-22 56	-1 16	-18 22	1 56	4 22	-0 40	-10 15	-0 44	-20 38	2 10
31	11 18 32	10 11 18	8 19 4	-15 49	-1 9	-23 46	-2 10	15 2	0 51	-22 21	-1 20	-18 25	1 56	4 22	-0 40	-10 14	-0 44	-20 38	2 10

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2015 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2015 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 18 33	10 11 19	8 19 6	-15 33	- 1 8	-23 28	- 2 8	15 4	0 51	-22 8	- 1 21	-18 26	1 56	4 22	- 0 40	-10 13	- 0 44	-20 38	2 10
4	11 18 35	10 11 24	8 19 12	-14 46	- 1 6	-22 26	- 2 0	15 9	0 52	-21 26	- 1 25	-18 30	1 56	4 23	- 0 40	-10 11	- 0 44	-20 37	2 10
7	11 18 37	10 11 28	8 19 19	-13 57	- 1 5	-21 13	- 1 46	15 14	0 53	-20 37	- 1 28	-18 33	1 56	4 24	- 0 39	-10 10	- 0 44	-20 37	2 9
10	11 18 39	10 11 33	8 19 25	-13 7	- 1 3	-19 49	- 1 25	15 20	0 53	-19 44	- 1 31	-18 36	1 57	4 25	- 0 39	-10 8	- 0 44	-20 37	2 9
13	11 18 43	10 11 39	8 19 31	-12 16	- 1 1	-18 18	- 0 56	15 27	0 54	-18 45	- 1 33	-18 39	1 57	4 27	- 0 39	-10 6	- 0 44	-20 36	2 9
16	11 18 46	10 11 44	8 19 37	-11 24	- 0 59	-16 48	- 0 18	15 33	0 54	-17 41	- 1 34	-18 42	1 57	4 28	- 0 39	-10 4	- 0 44	-20 36	2 9
19	11 18 50	10 11 50	8 19 43	-10 31	- 0 57	-15 27	0 29	15 40	0 55	-16 33	- 1 35	-18 45	1 58	4 30	- 0 39	-10 2	- 0 44	-20 36	2 8
22	11 18 55	10 11 55	8 19 49	- 9 37	- 0 55	-14 25	1 22	15 48	0 56	-15 21	- 1 35	-18 47	1 58	4 32	- 0 39	-10 0	- 0 44	-20 35	2 8
25	11 19 0	10 12 1	8 19 55	- 8 42	- 0 53	-13 52	2 16	15 55	0 56	-14 5	- 1 35	-18 49	1 58	4 34	- 0 39	- 9 57	- 0 44	-20 35	2 8
28	11 19 5	10 12 7	8 20 1	- 7 47	- 0 51	-13 54	3 2	16 3	0 56	-12 46	- 1 33	-18 51	1 59	4 36	- 0 39	- 9 55	- 0 44	-20 34	2 8
31	11 19 11	10 12 14	8 20 7	- 6 52	- 0 49	-14 24	3 31	16 10	0 57	-11 23	- 1 32	-18 53	1 59	4 38	- 0 39	- 9 53	- 0 44	-20 34	2 7
फर. 1	11 19 13	10 12 16	8 20 9	- 6 33	- 0 49	-14 39	3 35	16 13	0 57	-10 55	- 1 31	-18 54	1 59	4 39	- 0 39	- 9 52	- 0 44	-20 34	2 7
4	11 19 19	10 12 22	8 20 15	- 5 37	- 0 47	-15 30	3 35	16 21	0 57	- 9 30	- 1 28	-18 56	2 0	4 41	- 0 38	- 9 50	- 0 44	-20 33	2 7
7	11 19 25	10 12 29	8 20 20	- 4 40	- 0 45	-16 21	3 17	16 28	0 58	- 8 1	- 1 25	-18 57	2 0	4 44	- 0 38	- 9 47	- 0 44	-20 33	2 7
10	11 19 32	10 12 35	8 20 26	- 3 43	- 0 43	-17 6	2 48	16 36	0 58	- 6 32	- 1 21	-18 59	2 0	4 47	- 0 38	- 9 45	- 0 44	-20 33	2 7
13	11 19 40	10 12 42	8 20 31	- 2 46	- 0 41	-17 41	2 13	16 43	0 58	- 5 0	- 1 16	-19 0	2 1	4 50	- 0 38	- 9 42	- 0 44	-20 32	2 7
16	11 19 47	10 12 49	8 20 36	- 1 49	- 0 38	-18 4	1 36	16 51	0 59	- 3 28	- 1 11	-19 1	2 1	4 53	- 0 38	- 9 40	- 0 44	-20 32	2 6
19	11 19 55	10 12 55	8 20 41	- 0 52	- 0 36	-18 15	1 0	16 58	0 59	- 1 54	- 1 6	-19 2	2 2	4 56	- 0 38	- 9 37	- 0 44	-20 32	2 6
22	11 20 3	10 13 2	8 20 45	0 5	- 0 34	-18 14	0 26	17 4	0 59	- 0 20	- 0 59	-19 3	2 2	4 59	- 0 38	- 9 35	- 0 44	-20 31	2 6
25	11 20 12	10 13 9	8 20 50	1 2	- 0 32	-18 0	- 0 5	17 11	0 59	1 14	- 0 52	-19 3	2 3	5 3	- 0 38	- 9 32	- 0 44	-20 31	2 6
28	11 20 20	10 13 16	8 20 54	1 59	- 0 30	-17 34	- 0 33	17 17	0 59	2 48	- 0 45	-19 4	2 3	5 6	- 0 38	- 9 30	- 0 44	-20 31	2 6
मार्च 1	11 20 23	10 13 18	8 20 55	2 17	- 0 29	-17 23	- 0 42	17 19	0 59	3 19	- 0 42	-19 4	2 3	5 7	- 0 38	- 9 29	- 0 44	-20 30	2 6
4	11 20 32	10 13 25	8 20 59	3 13	- 0 27	-16 41	- 1 6	17 25	0 59	4 52	- 0 35	-19 4	2 4	5 11	- 0 38	- 9 26	- 0 44	-20 30	2 6
7	11 20 41	10 13 32	8 21 3	4 9	- 0 25	-15 47	- 1 27	17 30	0 59	6 25	- 0 26	-19 4	2 4	5 14	- 0 38	- 9 24	- 0 44	-20 30	2 6
10	11 20 51	10 13 38	8 21 7	5 4	- 0 23	-14 41	- 1 44	17 35	0 59	7 56	- 0 17	-19 4	2 5	5 18	- 0 38	- 9 21	- 0 44	-20 30	2 6
13	11 21 0	10 13 45	8 21 10	5 59	- 0 21	-13 24	- 1 58	17 39	0 59	9 25	- 0 8	-19 3	2 5	5 22	- 0 38	- 9 19	- 0 44	-20 29	2 5
16	11 21 10	10 13 52	8 21 13	6 53	- 0 19	-11 55	- 2 8	17 43	0 59	10 53	0 1	-19 3	2 6	5 25	- 0 37	- 9 17	- 0 44	-20 29	2 5
19	11 21 20	10 13 58	8 21 16	7 46	- 0 17	-10 16	- 2 15	17 46	0 59	12 18	0 11	-19 2	2 6	5 29	- 0 37	- 9 14	- 0 44	-20 29	2 5
22	11 21 30	10 14 5	8 21 18	8 38	- 0 14	- 8 25	- 2 17	17 49	0 59	13 41	0 21	-19 2	2 7	5 33	- 0 37	- 9 12	- 0 44	-20 29	2 5
25	11 21 40	10 14 11	8 21 20	9 30	- 0 12	- 6 24	- 2 16	17 52	0 58	15 1	0 31	-19 1	2 7	5 37	- 0 37	- 9 9	- 0 44	-20 29	2 5
28	11 21 50	10 14 17	8 21 22	10 20	- 0 10	- 4 13	- 2 10	17 54	0 58	16 17	0 41	-19 0	2 8	5 41	- 0 37	- 9 7	- 0 44	-20 28	2 5
31	11 22 0	10 14 23	8 21 24	11 10	- 0 8	- 1 53	- 1 59	17 55	0 58	17 31	0 51	-18 58	2 8	5 45	- 0 37	- 9 5	- 0 44	-20 28	2 5

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2014 से 20 मार्च, 2015 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2014–2015 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		पू.षा.	2	11	12
4		पू.षा.	3	17	40
8		पू.षा.	4	0	09
11		उ.षा.	1	6	39
14	मकर	उ.षा.	2	13	12
17		उ.षा.	3	19	47
21		उ.षा.	4	2	24
24		श्रव.	1	9	02
27		श्रव.	2	15	43
30		श्रव.	3	22	27
फरवरी 3		श्रव.	4	5	14
6		धनि.	1	12	07
9		धनि.	2	19	06
13	कुम्भ	धनि.	3	2	12
16		धनि.	4	9	25
19		शत.	1	16	43
23		शत.	2	0	07
26		शत.	3	7	37
मार्च 1		शत.	4	15	13
4		पू.भा.	1	22	58
8		पू.भा.	2	6	51
11		पू.भा.	3	14	53
14	मीन	पू.भा.	4	23	06
18		उ.भा.	1	7	27
21		उ.भा.	2	15	57
25		उ.भा.	3	0	35
28		उ.भा.	4	9	21
31		रेव.	1	18	16
प्रैल 4		रेव.	2	3	20
7		रेव.	3	12	35
10		रेव.	4	22	00

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	7	36
17		अश्वि.	2	17	21
21		अश्वि.	3	3	15
24		अश्वि.	4	13	17
:7		भर.	1	23	27
मई 1		भर.	2	9	44
4		भर.	3	20	11
8		भर.	4	6	48
11		कृत्ति.	1	17	33
15	वृष	कृत्ति.	2	4	28
18		कृत्ति.	3	15	29
22		कृत्ति.	4	2	36
25		रोहि.	1	13	49
29		रोहि.	2	1	07
जून 1		रोहि.	3	12	30
4		रोहि.	4	24	00
8		मृग.	1	11	36
11		मृग.	2	23	17
15	मिथुन	मृग.	3	11	02
18		मृग.	4	22	50
22		आर्द्रा	1	10	39
25		आर्द्रा	2	22	30
29		आर्द्रा	3	10	21
जुलाई 2		आर्द्रा	4	22	13
6		पुन.	1	10	08
9		पुन.	2	22	03
13		पुन.	3	9	59
16	कर्क	पुन.	4	21	53
20		पुष्य	1	9	44
23		पुष्य	2	21	31
27		पुष्य	3	9	14

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (मा.स्टैं.टा.)	मि.
जुलाई 30		पुष्य	4	20	54
अगस्त 3		आश्ले.	1	8	30
6		आश्ले.	2	20	04
10		आश्ले.	3	7	33
13		आश्ले.	4	18	58
17	सिंह	मघा	1	6	15
20		मघा	2	17	25
24		मघा	3	4	27
27		मघा	4	15	21
31		पू.फा.	1	2	08
सितंबर 3		पू.फा.	2	12	48
6		पू.फा.	3	23	22
10		पू.फा.	4	9	47
13		उ.फा.	1	20	04
17	कन्या	उ.फा.	2	6	11
20		उ.फा.	3	16	08
24		उ.फा.	4	1	54
27		हस्त	1	11	31
30		हस्त	2	21	00
अक्तूबर 4		हस्त	3	6	20
7		हस्त	4	15	32
11		चित्रा	1	0	35
14		चित्रा	2	9	28
17	तुला	चित्रा	3	18	10
21		चित्रा	4	2	42
24		स्वाती	1	11	05
27		स्वाती	2	19	18
31		स्वाती	3	3	24
नवंबर 3		स्वाती	4	11	23
6		विशा.	1	19	15
10		विशा.	2	2	58

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (मा.स्टैं.टा.)	मि.
नवंबर 13		विशा.	3	10	34
16	वृश्चिक	विशा.	4	18	01
20		अनु.	1	1	20
23		अनु.	2	8	32
26		अनु.	3	15	38
29		अनु.	4	22	39
दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	5	36
6		ज्येष्ठा	2	12	29
9		ज्येष्ठा	3	19	18
13		ज्येष्ठा	4	2	02
16	धनु	मूल	1	8	42
19		मूल	2	15	18
22		मूल	3	21	50
26		मूल	4	4	21
29		पू.षा.	1	10	51
सन् 2015 ई.					
जनवरी 1		पू.षा.	2	17	22
4		पू.षा.	3	23	53
8		पू.षा.	4	6	24
11		उ.षा.	1	12	56
14	मकर	उ.षा.	2	19	27
18		उ.षा.	3	1	59
21		उ.षा.	4	8	33
24		श्रव.	1	15	10
27		श्रव.	2	21	50
31		श्रव.	3	4	36
फरवरी 3		श्रव.	4	11	27
6		धनि.	1	18	22
10		धनि.	2	1	22
13	कुम्भ	धनि.	3	8	26
16		धनि.	4	15	36

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2014 से 20 मार्च, 2015 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
फरवरी 19		शत.	1	22	51
23		शत.	2	6	13
26		शत.	3	13	43
मार्च 1		शत.	4	21	21
5		पू.भा.	1	5	09
8		पू.भा.	2	13	04
11		पू.भा.	3	21	07
15	मीन	पू.भा.	4	5	18
18		उ.भा.	1	13	36

मंगल–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 6		हस्त	4	19	04
15		चित्रा	1	1	20
24		चित्रा	2	7	42
फरवरी 4	तुला	चित्रा	3	14	19
25		चित्रा	4	1	36
मार्च 1	वक्री			21	55
6		चित्रा	3	16	24
25	कन्या	चित्रा	2	9	52
अप्रैल 4		चित्रा	1	9	21
13		हस्त	4	3	53
22		हस्त	3	7	12
मई 4		हस्त	2	4	47
20	मार्गी			7	01
जून 6		हस्त	3	2	13
19		हस्त	4	3	17
28		चित्रा	1	18	02
जुलाई 6		चित्रा	2	22	57
14	तुला	चित्रा	3	8	39
21		चित्रा	4	5	37
27		स्वाती	1	17	10

मंगल–चार (सन् 2014–15 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
अगस्त 2		स्वाती	2	21	25
8		स्वाती	3	19	55
14		स्वाती	4	13	46
20		विशा.	1	3	42
25		विशा.	2	14	11
30		विशा.	3	21	39
सितंबर 5	वृश्चिक	विशा.	4	2	30
10		अनु.	1	5	06
15		अनु.	2	5	40
20		अनु.	3	4	22
25		अनु.	4	1	21
29		ज्येष्ठा	1	20	46
अक्तूबर 4		ज्येष्ठा	2	14	48
9		ज्येष्ठा	3	7	35
13		ज्येष्ठा	4	23	13
18	धनु	मूल	1	13	47
23		मूल	2	3	20
27		मूल	3	15	58
नवंबर 1		मूल	4	3	45
5		पू.षा.	1	14	48
10		पू.षा.	2	1	11
14		पू.षा.	3	10	58
18		पू.षा.	4	20	09
23		उ.षा.	1	4	47
27	मकर	उ.षा.	2	12	58
दिसंबर 1		उ.षा.	3	20	44
6		उ.षा.	4	4	10
10		श्रवण	1	11	19
14		श्रवण	2	18	12
19		श्रवण	3	0	50
23		श्रवण	4	7	17
दिसंबर 27		धनि.	1	13	35
31		धनि.	2	19	48
सन् 2015 ई.					
जनवरी 5	कुम्भ	धनि.	3	1	59
9		धनि.	4	8	11
13		शत.	1	14	23
17		शत.	2	20	38
22		शत.	3	2	57
26		शत.	4	9	23
30		पू.भा.	1	16	00
फरवरी 3		पू.भा.	2	22	50
8		पू.भा.	3	5	54
12	मीन	पू.भा.	4	13	13
16		उ.भा.	1	20	47
21		उ.भा.	2	4	40
25		उ.भा.	3	12	52
मार्च 1		उ.भा.	4	21	28
6		रेव.	1	6	28
10		रेव.	2	15	54
15		रेव.	3	1	44
19		रेव.	4	12	02

बुध–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
जनवरी 2		पू.षा.	3	10	46
4		पू.षा.	4	11	58
6		उ.षा.	1	12	49
8	मकर	उ.षा.	2	13	19
10		उ.षा.	3	13	31
12		उ.षा.	4	13	28
14		श्रव.	1	13	15
16		श्रव.	2	13	00
जनवरी 18		श्रव.	3	12	56
20		श्रव.	4	13	20
22		धनि.	1	14	41
24		धनि.	2	17	45
26	कुम्भ	धनि.	3	23	54
29		धनि.	4	12	05
फरवरी 1		शत.	1	14	48
7	वक्री			3	12
12		धनि.	4	14	09
15		धनि.	3	19	05
18	मकर	धनि.	2	17	43
22		धनि.	1	5	23
28	मार्गी			19	30
मार्च 8		धनि.	2	3	02
12	कुम्भ	धनि.	3	9	34
15		धनि.	4	19	03
18		शत.	1	18	48
21		शत.	2	12	33
24		शत.	3	2	06
26		शत.	4	12	25
28		पू.भा.	1	20	10
31		पू.भा.	2	1	46
अप्रैल 2		पू.भा.	3	5	30
4	मीन	पू.भा.	4	7	31
6		उ.भा.	1	8	03
8		उ.भा.	2	7	12
10		उ.भा.	3	5	04
12		उ.भा.	4	1	43
13		रेव.	1	21	14
15		रेव.	2	15	43
17		रेव.	3	9	14

बुध–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
अप्रैल 19		रेव.	4	1	50
20	मेष	अश्वि.	1	17	35
22		अश्वि.	2	8	39
23		अश्वि.	3	23	03
25		अश्वि.	4	12	57
27		भर.	1	2	28
28		भर.	2	15	44
30		भर.	3	4	56
मई 1		भर.	4	18	16
3		कृत्ति.	1	7	54
4	वृष	कृत्ति.	2	22	08
6		कृत्ति.	3	13	10
8		कृत्ति.	4	5	18
9		रोहि.	1	23	00
11		रोहि.	2	18	33
13		रोहि.	3	16	29
15		रोहि.	4	17	28
17		मृग.	1	22	23
20		मृग.	2	8	34
23	मिथुन	मृग.	3	2	26
26		मृग.	4	8	46
30		आर्द्रा	1	18	01
जून 7	वक्री			17	26
16		मृग.	4	6	36
22		मृग.	3	6	23
जुलाई 1	मार्गी			18	19
10		मृग.	4	7	16
14		आर्द्रा	1	3	53
17		आर्द्रा	2	2	30
19		आर्द्रा	3	14	15
21		आर्द्रा	4	19	25
23		पुन.	1	20	02

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
जुलाई 25		पुन.	2	17	23
27		पुन.	3	12	23
29	कर्क	पुन.	4	5	39
30		पुष्य	1	21	36
अगस्त 1		पुष्य	2	12	45
3		पुष्य	3	3	23
4		पुष्य	4	17	46
6		आश्ले.	1	8	09
7		आश्ले.	2	22	43
9		आश्ले.	3	13	38
11		आश्ले.	4	5	02
12	सिंह	मघा	1	21	06
14		मघा	2	13	51
16		मघा	3	7	25
18		मघा	4	1	55
19		पू.फा.	1	21	23
21		पू.फा.	2	17	54
23		पू.फा.	3	15	30
25		पू.फा.	4	14	17
27		उ.फा.	1	14	19
29	कन्या	उ.फा.	2	15	41
31		उ.फा.	3	18	27
सितंबर 2		उ.फा.	4	22	45
5		हस्त	1	4	43
7		हस्त	2	12	39
9		हस्त	3	22	43
12		हस्त	4	11	24
15		चित्रा	1	3	18
17		चित्रा	2	23	36
21	तुला	चित्रा	3	2	16
24		चित्रा	4	16	13
29		स्वाती	1	10	26

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
अक्तूबर 4	वक्री			22	31
9		चित्रा	4	21	55
13		चित्रा	3	16	51
16	कन्या	चित्रा	2	13	09
19		चित्रा	1	9	03
23		हस्त	4	11	13
26	मार्गी			0	46
28		चित्रा	1	15	40
नवंबर 2		चित्रा	2	0	06
4	तुला	चित्रा	3	21	16
7		चित्रा	4	9	07
9		स्वाती	1	16	30
11		स्वाती	2	21	34
14		स्वाती	3	1	18
16		स्वाती	4	4	16
18		विशा.	1	6	50
20		विशा.	2	9	13
22		विशा.	3	11	34
24	वृश्चिक	विशा.	4	13	58
26		अनु.	1	16	28
28		अनु.	2	19	04
30		अनु.	3	21	48
दिसंबर 3		अनु.	4	0	38
5		ज्येष्ठा	1	3	31
7		ज्येष्ठा	2	6	28
9		ज्येष्ठा	3	9	25
11		ज्येष्ठा	4	12	19
13	धनु	मूल	1	15	10
15		मूल	2	17	54
17		मूल	3	20	30
19		मूल	4	22	57

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
				(भा.स्टैं.टा.)	
दिसंबर 22		पू.षा.	1	1	15
24		पू.षा.	2	3	24
26		पू.षा.	3	5	27
28		पू.षा.	4	7	26
30		उ.षा.	1	9	29
सन् 2015 ई.					
जनवरी 1	मकर	उ.षा.	2	11	45
3		उ.षा.	3	14	31
5		उ.षा.	4	18	09
7		श्रव.	1	23	22
10		श्रव.	2	7	20
12		श्रव.	3	20	44
15		श्रव.	4	22	25
21	वक्री			21	23
27		श्रव.	3	13	29
30		श्रव.	2	11	33
फरवरी 2		श्रव.	1	4	27
5		उ.षा.	4	9	22
11	मार्गी			20	26
19		श्रव.	1	4	32
23		श्रव.	2	6	35
26		श्रव.	3	14	04
मार्च 1		श्रव.	4	12	52
4		धनि.	1	6	16
6		धनि.	2	19	47
9	कुम्भ	धनि.	3	6	30
11		धनि.	4	14	49
13		शत.	1	21	11
16		शत.	2	1	52
18		शत.	3	5	01
20		शत.	4	6	45

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2014 से 20 मार्च, 2015 ई. तक)

गुरु–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 16		आर्द्रा	4	15 11
फरवरी 21		आर्द्रा	3	14 39
मार्च 6	मार्गी			16 13
19		आर्द्रा	4	21 15
अप्रैल 24		पुन.	1	21 08
मई 16		पुन.	2	3 48
जून 3		पुन.	3	1 10
19	कर्क	पुन.	4	8 47
जुलाई 4		पुष्य	1	20 31
19		पुष्य	2	22 50
अगस्त 3		पुष्य	3	23 04
19		पुष्य	4	4 35
सितंबर 3		आश्ले.	1	23 45
20		आश्ले.	2	22 02
अक्तूबर 10		आश्ले.	3	2 22
नवंबर 4		आश्ले.	4	4 17
दिसंबर 9	वक्री			2 12

(सन् 2015 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 12		आश्ले.	3	17 55
फरवरी 8		आश्ले.	2	17 25
मार्च 8		आश्ले.	1	23 10

शुक्र–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 6	धनु	उ.षा.	1	23 36
12		पू.षा.	4	12 36
18		पू.षा.	3	6 36
27		पू.षा.	2	4 02
फरवरी 1	मार्गी			2 19
6		पू.षा.	3	3 37
15		पू.षा.	4	16 04
21		उ.षा.	1	14 01
फरवरी 26	मकर	उ.षा.	2	11 56
मार्च 2		उ.षा.	3	21 27
6		उ.षा.	4	23 13
10		श्रव.	1	19 38
14		श्रव.	2	12 03
18		श्रव.	3	1 22
21		श्रव.	4	12 13
24		धनि.	1	21 03
28		धनि.	2	4 14
31	कुम्भ	धनि.	3	10 02
अप्रैल 3		धनि.	4	14 42
6		शत.	1	18 23
9		शत.	2	21 12
12		शत.	3	23 15
16		शत.	4	0 38
19		पू.भा.	1	1 24
22		पू.भा.	2	1 37
25		पू.भा.	3	1 22
28	मीन	पू.भा.	4	0 40
30		उ.भा.	1	23 36
मई 3		उ.भा.	2	22 12
6		उ.भा.	3	20 30
9		उ.भा.	4	18 31
12		रेव.	1	16 17
15		रेव.	2	13 47
18		रेव.	3	11 04
21		रेव.	4	8 08
24	मेष	अश्वि.	1	5 00
27		अश्वि.	2	1 40
29		अश्वि.	3	22 11
जून 1		अश्वि.	4	18 33
जून 4		भर.	1	14 47
7		भर.	2	10 53
10		भर.	3	6 51
13		भर.	4	2 41
15		कृत्ति.	1	22 23
18	वृष	कृत्ति.	2	17 58
21		कृत्ति.	3	13 25
24		कृत्ति.	4	8 45
27		रोहि.	1	3 59
29		रोहि.	2	23 06
जुलाई 2		रोहि.	3	18 07
5		रोहि.	4	13 02
8		मृग.	1	7 52
11		मृग.	2	2 35
13	मिथुन	मृग.	3	21 12
16		मृग.	4	15 43
19		आर्द्रा	1	10 07
22		आर्द्रा	2	4 24
24		आर्द्रा	3	22 36
27		आर्द्रा	4	16 41
30		पुन.	1	10 40
अगस्त 2		पुन.	2	4 34
4		पुन.	3	22 22
7	कर्क	पुन.	4	16 05
10		पुष्य	1	9 42
13		पुष्य	2	3 14
15		पुष्य	3	20 39
18		पुष्य	4	13 59
21		आश्ले.	1	7 12
24		आश्ले.	2	0 20
26		आश्ले.	3	17 23
अगस्त 29		आश्ले.	4	10 21
सितंबर 1	सिंह	मघा	1	3 14
3		मघा	2	20 03
6		मघा	3	12 48
9		मघा	4	5 28
11		पू.फा.	1	22 04
14		पू.फा.	2	14 36
17		पू.फा.	3	7 04
19		पू.फा.	4	23 27
22		उ.फा.	1	15 47
25	कन्या	उ.फा.	2	8 03
28		उ.फा.	3	0 16
30		उ.फा.	4	16 27
अक्तूबर 3		हस्त	1	8 35
6		हस्त	2	0 41
8		हस्त	3	16 45
11		हस्त	4	8 46
14		चित्रा	1	0 46
16		चित्रा	2	16 43
19	तुला	चित्रा	3	8 38
22		चित्रा	4	0 31
24		स्वाती	1	16 23
27		स्वाती	2	8 14
30		स्वाती	3	0 04
नवंबर 1		स्वाती	4	15 53
4		विशा.	1	7 41
6		विशा.	2	23 29
9		विशा.	3	15 17
12	वृश्चिक	विशा.	4	7 03
14		अनु.	1	22 49
17		अनु.	2	14 34

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2014 से 20 मार्च, 2015 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2014–15 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 20		अनु.	3	6 18
22		अनु.	4	22 02
25		ज्येष्ठा	1	13 46
28		ज्येष्ठा	2	5 30
30		ज्येष्ठा	3	21 14
दिसंबर 3		ज्येष्ठा	4	12 58
6	धनु	मूल	1	4 43
8		मूल	2	20 28
11		मूल	3	12 14
14		मूल	4	3 59
16		पू.षा.	1	19 44
19		पू.षा.	2	11 30
22		पू.षा.	3	3 16
24		पू.षा.	4	19 03
27		उ.षा.	1	10 50
30	मकर	उ.षा.	2	2 39
(सन् 2015 ई.)				
जनवरी 1		उ.षा.	3	18 30
4		उ.षा.	4	10 22
7		श्रव.	1	2 16
9		श्रव.	2	18 12
12		श्रव.	3	10 09
15		श्रव.	4	2 08
17		घनि.	1	18 09
20		घनि.	2	10 12
23	कुम्भ	घनि.	3	2 18
25		घनि.	4	18 27
28		शत.	1	10 40
31		शत.	2	2 56
फरवरी 2		शत.	3	19 17

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 5		शत.	4	11 42
8		पू.भा.	1	4 12
10		पू.भा.	2	20 46
13		पू.भा.	3	13 26
16	मीन	पू.भा.	4	6 10
18		उ.भा.	1	23 00
21		उ.भा.	2	15 56
24		उ.भा.	3	8 59
27		उ.भा.	4	2 09
मार्च 1		रेव.	1	19 27
4		रेव.	2	12 54
7		रेव.	3	6 29
10		रेव.	4	0 14
12	मेष	अश्वि.	1	18 07
15		अश्वि.	2	12 11
18		अश्वि.	3	6 24
21		अश्वि.	4	0 48

शनि–चार (सन् 2014–15 ई.)

जनवरी 5		विशा.	3	8 32
मार्च 2	वक्री			21 49
मई 1		विशा.	2	12 21
जून 20		विशा.	1	2 53
जुलाई 21		मार्गी		2 07
अगस्त 20		विशा.	2	16 59
अक्तूबर 3		विशा.	3	10 37
नवंबर 2	वृश्चिक	विशा.	4	20 54
30		अनु.	1	23 47
दिसंबर 30		अनु.	2	22 21
फरवरी 10		अनु.	3	17 37
मार्च 14	वक्री			20 33

राहु–चार (सन् 2014–15 ई.)

तारीख 2014-15 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 5		स्वाती	1	4 34
मार्च 9		चित्रा	4	2 21
मई 11		चित्रा	3	0 21
जुलाई 12	कन्या	चित्रा	2	21 51
सितंबर 13		चित्रा	1	19 42
नवंबर 15		हस्त	4	17 41
जनवरी 17		हस्त	3	15 10
मार्च 21		हस्त	2	13 05

केतु–चार (सन् 2014–15 ई.)

जनवरी 5		अश्वि.	3	4 34
मार्च 9		अश्वि.	2	2 21
मई 11		अश्वि.	1	0 21
जुलाई 12	मीन	रेव.	4	21 51
सितंबर 13		रेव.	3	19 42
नवंबर 15		रेव.	2	17 41
जनवरी 17		रेव.	1	15 10
मार्च 21		उ.भा.	4	13 05

यूरेनस–चार (सन् 2014–15 ई.)

मार्च 1		रेव.	1	22 50
मई 1		रेव.	2	3 35
जुलाई 22	वक्री			8 24
अक्तूबर 19		रेव.	1	6 24
दिसंबर 22	मार्गी			4 17
फरवरी 21		रेव.	2	1 39

ग्रहों के वक्र/मार्ग, उदय/अस्त अगले पृष्ठ पर देखें।

नेप्च्यून–चार (सन् 2014–15 ई.)

तारीख 2014–15 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 28		शत.	2	5 12
मई 13		शत.	3	17 04
जून 10	वक्री			1 24
जुलाई 7		शत.	2	18 43
नवंबर 16	मार्गी			12 40
मार्च 2		शत.	3	1 48

प्लूटो–चार (सन् 2014–15 ई.)

अप्रैल 15	वक्री			5 14
सितंबर 23	मार्गी			6 04
जनवरी 26		पू.षा.	3	17 53

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2014 से 20 मार्च 2015 ई. तक)

ग्रह	वक्र/ मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/ अस्त	तारीख
मंगल	वक्री	1 मार्च, 2014 ई.	मंगल	वि. संवत् 2071 में साल भर उदित रहेगा।	
मंगल	मार्गी	20 मई, 2014 ई.			
बुध	वक्री	7 फरवरी, 2014 ई.	बुध	प. में उदित	19 जनवरी, 2014 ई.
बुध	मार्गी	28 फरवरी, 2014 ई.	बुध	प. में अस्त	8 फरवरी, 2014 ई.
बुध	वक्री	7 जून, 2014 ई.	बुध	पुर्व में उदित	22 फरवरी, 2014 ई.
बुध	मार्गी	1 जुलाई, 2014 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	14 अप्रैल, 2014 ई.
बुध	वक्री	4 अक्तूबर, 2014 ई.	बुध	प. में उदित	8 मई, 2014 ई.
बुध	मार्गी	26 अक्तूबर, 2014 ई.	बुध	प. में अस्त	10 जून, 2014 ई.
बुध	वक्री	21 जनवरी, 2015 ई.	बुध	पूर्व में उदित	29 जून, 2014 ई.
बुध	मार्गी	11 फरवरी, 2015 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	27 जुलाई, 2014 ई.
			बुध	प. में उदित	22 अगस्त, 2014 ई.
गुरु	मार्गी	6 मार्च, 2014 ई.	बुध	प. में अस्त	10 अक्तूबर, 2014 ई.
गुरु	वक्री	9 दिसंबर, 2014 ई.	बुध	पूर्व में उदित	24 अक्तूबर, 2014 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	15 नवंबर, 2014 ई.
			बुध	प. में उदित	1 जनवरी, 2015 ई.
शुक्र	मार्गी	1 फरवरी, 2014 ई.	बुध	प. में अस्त	24 जनवरी, 2015 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	6 फरवरी, 2015 ई.
शनि	वक्री	2 मार्च, 2014 ई.			
शनि	मार्गी	21 जुलाई, 2014 ई.	गुरु	अस्त	11 जुलाई, 2014 ई.
शनि	वक्री	14 मार्च 2015 ई.	गुरु	उदित	4 अगस्त, 2014 ई.
यूरेनस	वक्री	22 जुलाई, 2014 ई.	शुक्र	पश्चिम में अस्त	9 जनवरी, 2014 ई.
यूरेनस	मार्गी	22 दिसंबर, 2014 ई.	शुक्र	पूर्व में उदित	15 जनवरी, 2014 ई.
			शुक्र	पूर्व में अस्त	2 अक्तूबर, .2014 ई.
नेप्च्यून	वक्री	10 जून, 2014 ई.	शुक्र	पश्चिम में उदित	26 नवंबर, 2014 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	16 नवंबर, 2014 ई.			
			शनि	अस्त	1 नवंबर, 2014 ई.
प्लूटो	वक्री	15 अप्रैल, 2014 ई.	शनि	उदित	6 दिसंबर, 2014 ई.
प्लूटो	मार्गी	23 सितंबर, 2014 ई.			
—	—	—	—	—	—

ग्रहोदयास्त निर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणितप्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणित– प्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 63° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 48 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है। जिससे विश्व के उत्तरी या दक्षिणी अक्षांश के किसी भी स्थल का सूर्योदयास्तकाल स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. में तुरन्त जाना जा सकता है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए 'उन्नतांश पद्धति' से निर्णीत वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप–पूर्वदर्शन या पूर्वलोप-पश्चिम– दर्शन किस तारीख को होगा ?–यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप (ज्योतिषानभिज्ञ सामान्य व्यक्ति भी) तुरन्त विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन सर्वथा अपनी ही तरह का है।

मूल्य Rs. 300/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक मिलने का पताः–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59/6
P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109,
Phone: 0172- 2565 303

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ऑंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकुरं	(क.)	13 21	77 05	−21 40
दूटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	−17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
दुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें –	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीमीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें −	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12					

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
राभवन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुडकी	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बडी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. रो.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्दवानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये१	५ ३४											

अंग्रेज़ी तारीख		ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४१	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३४	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा१	५ ३५											

अंग्रेज़ी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद प्रविष्टे	भाद्रपद											
			सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन प्रविष्टे	आश्विन											
			कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ४३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

	ंग्रेज़ी ारीख	कार्तिक प्रविष्टे	कार्तिक											
			तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	मार्गशीर्ष											
			वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ.१	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	पौष											
			धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	माघ											
			मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन तिथि	फाल्गुन											
			कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र तिथि	चैत्र											
			मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-२	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-२०	-२३	-२४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+२४	+२६	+२५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	[illegible]	+९
गुड़गाव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	[illegible]	+१
गुरदासपुर	+२	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	१	२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३२	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	-३	±३	+१	-१	३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	±२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	±१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-६४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एव वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एव श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए. नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए. किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है. क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:--

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घडी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घडी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घडी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घडी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घडी--पल" यदि 60 घडी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी–पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घडी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण-- मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. है, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोडा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी--पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घडी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घडी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घडी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष.घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ८।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष.घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का **अन्तर ५ पल है**। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोडने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. **निरयण दशमलग्न** स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १३	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे हैं । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''**अक्षांशादि सारणी** '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अत: इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ;

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांश सारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये हैं । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद-के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. ९ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का (१२घं ४८ मि. ४१ से.) जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ से. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक न.(३)वाला संस्कार तो ० है। अब १९घं. २९ मि. ५१से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं १९मि ४० से. जोड़ा तो २९घं. ४९मि. ३१ से. हुए। इसमें कोष्टक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२से. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक है अत:२४ घं. घटाए तो ५घं ५१ मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें.-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकत्ता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क. (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है । स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. , २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम की स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ को १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)"से १० फर. के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह "स्थूलतम लग्न"है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षाशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षाशों की लग्नगति " की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "३ अक्षाशों की लग्नगति" के धन, ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह "स्थूलतम लग्न"है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें " स्थूलतम लग्न " में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. "स्थूल लग्न "हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)		सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न				दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४	१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७	१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६	१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४	१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२	१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३	१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८	१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६	१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८	१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५	१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४	१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७	१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३	१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६	१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५	१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२	२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४	२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२	२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७	२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८	२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६	२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४	२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३	२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६	२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क.
और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की '' ३ अक्षांश की गति'' है। क्योंकि लग्न
३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है।
इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३
अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे ''स्थूल लग्न'' में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन
का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा,
हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में

में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह ''स्थूल दशमलग्न'' है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा ''गणकमार्तण्ड'' में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अंक्षाश २३° (उ.) लग्न		अंक्षाश २६° (उ.) लग्न		अंक्षाश २९° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४७	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अंक्षाश २३° (उ.) लग्न		अंक्षाश २६° (उ.) लग्न		अंक्षाश २९° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	१९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५८	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२४	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	४०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	१४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	४०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	४९	१०२	२६	१०३	५७	१०४	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.
१९७१	६	३९	०७	१९७८	६	४०	१६	१९८५	६	४१	३२	१९९२	६	३८	४७	१९९९	६	३९	५९	२००६	६	४१	११	२०१३	६	४२	२३	२०२०	६	३९	३९
१९७२	६	३८	१०	१९७९	६	३९	२२	१९८६	६	४०	३५	१९९३	६	४१	४६	२०००	६	३९	०२	२००७	६	४०	१४	२०१४	६	४१	२६	२०२१	६	४२	३८
१९७३	६	४१	१०	१९८०	६	३८	२४	१९८७	६	३९	३८	१९९४	६	४०	४९	२००१	६	४२	०१	२००८	६	३९	१७	२०१५	६	४०	२९	२०२२	६	४१	४०
१९७४	६	४०	१२	१९८१	६	४१	२३	१९८८	६	३८	४०	१९९५	६	३९	५२	२००२	६	४१	०४	२००९	६	४२	१६	२०१६	६	३९	३१	२०२३	६	४०	४३
१९७५	६	३९	१५	१९८२	६	४०	२६	१९८९	६	४१	३९	१९९६	६	३८	५४	२००३	६	४०	०७	२०१०	६	४१	१९	२०१७	६	४२	३१	२०२४	६	३९	४६
१९७६	६	३८	१७	१९८३	६	३९	२९	१९९०	६	४०	४१	१९९७	६	४१	५३	२००४	६	३९	०९	२०११	६	४०	२१	२०१८	६	४१	३३	२०२५	६	४२	४५
१९७७	६	४१	१६	१९८४	६	३८	३२	१९९१	६	३९	४४	१९९८	६	४०	५६	२००५	६	४२	०९	२०१२	६	३९	२४	२०१९	६	४०	३६	२०२६	६	४१	४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	९	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	[illegible]	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पू.फा. मू. रे.	रो. उ.फा. पू.षा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दो को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट मे से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) मे से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा– **वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्–** इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी मे जो वारादि अक है, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घडी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष मे सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टो के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोडकर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जाने। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमे से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जाने।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू.,मं.,बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–**दिन के वर्षेष्ट मे पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

∴ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। **फल–** कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ∴ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। **फल–** कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।∴ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। **फल–** शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगडना आदि फल होते हैं।∴ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। **फल–** कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन मे वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचो मे से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। **फल–** वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष मे सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर मे हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घ. मि.	गताब्द	वार घ. मि	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घ. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र–ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद्	चतुष्पद	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददशा (मास–दिन)		
सं.	२	२०
सि.	२	२०
उ.	२	०
भ.	१	२०
भ्रा.	१	१०
धा.	१	०
पिं.	०	२०
मं.	०	१०

गर्भयोग–

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–**तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरोग्य	मरण	कृषता	व्याधि	सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में, ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोडकर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्म वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोडकर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ १/२ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवमांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख ''**पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति**'' पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'**नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्**' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'**एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते**'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'**नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्**' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक ''**ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन**'' में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों। २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों। ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों। ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि, वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए। यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है। इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है। लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है। साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है। नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा है,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पांच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प. फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा।'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' को उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अवकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	व.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाडी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.
राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाडी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष,
व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

अब प्रकाशित है

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

अब प्रकाशित है

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद निर्णयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है।' दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6.पो. पंचकूला-134109

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग व भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	26 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष! भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ त ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयग
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 य न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्ण दोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरगेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गास्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाडकर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १$\frac{१}{२}$ मास, कुल वालों के मरण से २२$\frac{१}{२}$ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– "झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–
दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्यस्थित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., म., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू. फा.	अभि.	उ. षा.	श्रव.	रेव.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ. फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रे.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्यःयोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिध, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३.	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

'भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाहलिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैविद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण मे वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण मे ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी

दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने

कर्तरी दोषः– *लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः।* तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेदः भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्त्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र य़ोगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतद्‌भिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये-भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में. बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहा तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लग अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में पंड़दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७।

से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष और

१०। २१। २४ में षड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च**– सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।		

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः–मध्य–पूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्– अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्–वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ–भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता–विशेषेण लग्नम्:– सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०–शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेष:– यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे–हवने कृते शान्तिः–क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र–मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण

अथ ऋणी–धनी विचार– **स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।**(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च**– यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्:– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा–भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं

सूचनाः– यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो

सम्मुखे **चन्द्रप्रशंसा**—*भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं* कुतिथिकुलिकदोषं *यामयामार्धदोषम्*। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः *सम्मुखस्थः॥*

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोडकर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राहमण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३।।।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७।।	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८।।।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२।।	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिका, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा—मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.—एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र—तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. —एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— **प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।**

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौं.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम—दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं— **अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य–पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **"मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारंपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह– रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु ।।
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्	

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जाने। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उडद, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh at Kanwal

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष आश्विन शुक्ल अष्टमी, गुरुवार (२ अक्तूबर, २०१४ ई.) को पूर्व में अस्त होकर मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी, बुधवार (२६ नवंबर, २०१४ ई.) को पश्चिम में उदित होगा ।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी, शुक्रवार (११ जुलाई, २०१४ ई.) को अस्त होकर श्रावण शुक्ल अष्टमी, चन्द्रवार (४ अगस्त, २०१४ ई.) को उदित हो जाएगा ।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है । क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए ।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु—शुक्र का उदय—अस्त 'सं. २०७१ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२८ सितं., '१४ई.	३० सितं., '१४ई.	२ अक्तू., '१४ई.	२ अक्तू., '१४ई.
शुक्र पश्चिम में उदित	१८ नवं., '१४ई.	२० नवं., '१४ई.	२३ नवं., '१४ई.	२८ नवं., '१४ई.
गुरु अस्त	१३ जुला., '१४ई.	१३ जुला., '१४ई.	१२ जुला., '१४ई.	१० जुला., '१४ई.
गुरु उदित	४ अग., '१४ ई.	४ अग., '१४ ई.	४ अग., '१४ ई.	४ अग., '१४ ई.

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते ।

ध्यान दें - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें ।

दैवज्ञ ध्यान दें-

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्त देखने से आपको ज्ञात होगा कि- गत वर्ष से शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है । दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है ।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है । ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो । इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु- केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं । लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए तब संहिताकारों का कहना है कि- उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं । ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरीतरह निवारण करते हैं । यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है । संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने गत वर्ष से लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्णय किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है ।

ध्यान दें- गतवर्ष हमने शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया था, जिनका वहां परिहार हुआ है । इसवर्ष यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है । विशेष स्पष्टता के लिए पृष्ठ 264 पर **"विवाहमुहूर्त्तशोधन में लग्नभंग-परिहार"** लेख पढ़िए ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
चैत्र शु. १५ मं.	वैशा. २	अप्रै. १५	चित्रा	कन्या	मेष	मिथुन	।। ऽरा. ।ऽबु. ।। ऽ ।।	दि.ल. २(८/०७ तक), (८/०७ बाद मृत्युबाण), (१०/५६ बाद राहुयुति अपरिहार्य),
वैशा. कृ. १ बु.	वैशा. ३	अप्रै. १६	स्वा.	तुला	मेष	मिथुन	ऽमं. ।। ऽशु. ऽसू. ऽअ. ।ऽ।।	दि.ल. २(८/३६ बाद), ३, ६, रा.ल. ८(२३/०७ तक), (शुक्रवेध परिहार),
वैशा. कृ. ३ शु.	वैशा. ५	अप्रै. १८	अनु.	वृश्चिक	मेष	मिथुन	।ऽ ।। ।ऽनृ. ऽ। ।।	दि.ल. ५(१४/३६ बाद), ६, गोधू., ८(२१/५२ तक),
वैशा. कृ. ४ श.	वैशा. ६	अप्रै. १९	मूल	धनु	मेष	मिथुन	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ८(२२/४४ बाद), १०, ११, १२,
वैशा. कृ. ५ र.	वैशा. ७	अप्रै. २०	मूल	धनु	मेष	मिथुन	।। ।। ।ऽचौ. ऽ। ।।	दि.ल. २, ३, ६, गोधू.,
वैशा. कृ. ७ चं.	वैशा. ८	अप्रै. २१	उ.षा.	धनु/मकर	मेष	मिथुन	ऽशु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(१८/०८ बाद), गोधू., ८, १०, ११, १२,
वैशा. कृ. ८ मं.	वैशा. ९	अप्रै. २२	उ.षा.	मकर	मेष	मिथुन	ऽशु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. २, ३, ६(१६/३९ तक),
वैशा. कृ. ८ मं.	वैशा. ९	अप्रै. २२	श्रव.	मकर	मेष	मिथुन	ऽबु.रा. ऽ ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ६(१६/३९ बाद), गोधू., ८, १०(२५/२३ तक), (२५/२३ बाद क्रान्तिसाम्य),
वैशा. कृ. ९ बु.	वैशा. १०	अप्रै. २३	श्रव.	मकर	मेष	मिथुन	ऽबु.रा. ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. २, ३, (८/१७ तक क्रान्तिसाम्य),
वैशा. कृ. ९ बु.	वैशा. १०	अप्रै. २३	धनि.	मकर/कुम्भ	मेष	मिथुन	ऽश.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६, गोधू., ८, १०, ११, १२,
वैशा. कृ. १० गु	वैशा. ११	अप्रै. २४	धनि.	कुम्भ	मेष	मिथुन	ऽश.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. २(८/५० तक),
वैशा. शु. २ गु.	वैशा. १८	मई. १	रोहि.	वृष	मेष	मिथुन	।। ।। ।ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. ३(१०/०० बाद), ४, ६, रा.ल. ८, ९, १०, ११(२७/३३ तक),
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. १९	मई. २	रोहि.	वृष	मेष	मिथुन	।। ।। ।ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. २, ३, ४(११/१८ तक),
वैशा. शु. ३ शु.	वैशा. १९	मई. २	मृग.	वृष/मिथुन	मेष	मिथुन	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल.४(११/१८ बाद), ६, रा.ल. ८, ९, १०(२४/४० तक),
वैशा. शु. ८ बु.	वैशा. २४	मई. ७	मघा	सिंह	मेष	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. १०(२४/४७ बाद), ११, १२,
वैशा. शु. ९ गु.	वैशा. २५	मई. ८	मघा	सिंह	मेष	मिथुन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. २, ३, ४, ६, गोधू., ८, ९, १०, ११(२६/३८ तक),
वैशा. शु. ११ श.	वैशा. २७	मई. १०	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	मिथुन	ऽगु.। ।। ।। ऽ। ।।	दि.ल.२, ३, ४, ५(१४/२० तक), रा.ल. १२(२६/५४ बाद),
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २८	मई. ११	उ.फा.	कन्या	मेष	मिथुन	ऽगु.। ।। ।ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. २(६/३४ तक),
वैशा. शु. १२ र.	वैशा. २८	मई. ११	हस्त	कन्या	मेष	मिथुन	ऽसू.ऽऽमं.ऽशु.ऽशु.ऽरो.।।।।	दि.ल. ३(८/३३ बाद), ४, ५, ६, गोधू., ८, ९, १०, ११, १२, (भौमयुतिपरिहार), (शुक्रवेधपरिहार),
वैशा. शु. १३ चं.	वैशा. २९	मई. १२	हस्त	कन्या	मेष	मिथुन	ऽसू.ऽ ऽमं.ऽशु. ऽशु. ।।।।।	दि.ल. २(७/३५ तक), (भौमयुतिपरिहार), (शुक्रवेधपरिहार),
वैशा. शु. १३ चं.	वैशा. २९	मई. १२	चित्रा	कन्या	मेष	मिथुन	ऽसू.। ऽरा.। ऽशु.। ।। ।।	दि.ल. ३(७/३५ बाद), ४, ६, गोधू., ८(१९/५० तक), (१९/५० बाद राहुयुति अपरिहार्य),
ज्ये.कृ. १ गु.	ज्ये. २	मई १५	अनु.	वृश्चिक	वृष	मिथुन	।। ।। ऽसू.। ऽऽ ।।	दि.ल. ४(११/५४ बाद), ६, गोधू.,८, ९, १०, ११, १२,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
ज्ये.कृ. ३ श.	ज्ये. ४	मई १७	मूल	धनु	वृष	मिथुन	।। ।ऽगु. ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ७(१७/५३ बाद), गोधू., ९, १०, ११(२५/५८ तक), (गुरुवेधपरिहार),
ज्ये.कृ. ४ र.	ज्ये. ५	मई १८	उ.षा.	धनु	वृष	मिथुन	।। ।ऽबु. ऽगु.। ।ऽ ।।	ल. १०(२४/०४ बाद), ११, १२, (बुधवेधपरिहार),
ज्ये.कृ. ५ चं.	ज्ये. ६	मई १९	उ.षा.	मकर	वृष	मिथुन	।। ।ऽबु. ऽगु. ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. ३, ६, ७, गोधू., ९(२२/१३ तक), (बुधवेधपरिहार),
ज्ये.कृ. ५ चं.	ज्ये. ६	मई १९	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	ऽचं.रा.। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. ९(२२/१३ बाद),१०, ११, १२,
ज्ये.कृ. ६ मं.	ज्ये. ७	मई २०	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	ऽचं.रा.। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ३, ४(९/५८ तक),
ज्ये.कृ. ६ मं.	ज्ये. ७	मई २०	धनि.	मकर	वृष	मिथुन	ऽशु.श.। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., ९, १०, ११, १२,
ज्ये.कृ. ७ बु.	ज्ये. ८	मई २१	धनि.	मकर/कुम्भ	वृष	मिथुन	ऽशु.श.। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. ३, ४, ६, ७,
ज्ये.कृ. ११ श.	ज्ये. ११	मई २४	रेव.	मीन	वृष	मिथुन	।। ।। ऽमं.। ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१६/२५ बाद), गोधू., ९, १०, ११, १,
ज्ये.कृ. १२ र.	ज्ये. १२	मई २५	रेव.	मीन	वृष	मिथुन	।। ।। ऽमं.। ।ऽ ।।	दि.ल. ३, ४, ५, ६(१३/४९ तक), (१३/४९ बाद मृत्युबाण),
ज्ये. शु. १ गु.	ज्ये. १६	मई २९	मृग.	वृष	वृष	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ११, १२, १,
ज्ये. शु. २ शु.	ज्ये. १७	मई ३०	मृग.	वृष/मिथुन	वृष	मिथुन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ३, ४, ५(११/५६ तक), ६(१३/५६ बाद), ७, ९(२१/०८ तक),
ज्ये. शु. ६ बु.	ज्ये. २२	जून ४	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ११(२४/०१ बाद), १२, १, (२४/०१ तक मृत्युबाण),
ज्ये. शु. ७ गु.	ज्ये. २३	जून ५	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ३, ४, ५(१०/४३ तक),
ज्ये. शु. ८ शु.	ज्ये. २४	जून ६	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	मिथुन	ऽगु.। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६(१३/१८ बाद), ७, गोधू., ९, १०, ११, १२, १,
ज्ये. शु. ९ श.	ज्ये. २५	जून ७	उ.फा.	कन्या	वृष	मिथुन	ऽगु.। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ३, ४, ५, ६, ७(१५/२३ तक),
ज्ये. शु. ९ श.	ज्ये. २५	जून ७	हस्त	कन्या	वृष	मिथुन	।। ऽमं.। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१५/२३ से १६/५० तक), (भौमयुतिपरिहार),
ज्ये. शु. १० र.	ज्ये. २६	जून ८	चित्रा	कन्या	वृष	मिथुन	।। ऽरा.। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१६/४८ बाद), गोधू., ९, १०, ११, १, (राहुयुतिपरिहार),
ज्ये. शु. १२ मं.	ज्ये. २८	जून १०	स्वा.	तुला	वृष	मिथुन	ऽमं.। ।। ऽके.। ऽ। ।।	दि.ल. ३, ४, ५, ६, ७(१७/१९ तक),
ज्ये. शु. १३ बु.	ज्ये. २९	जून ११	अनु.	वृश्चिक	वृष	मिथुन	।। ।ऽशु. ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१६/२६ बाद), ९, ११, १, (शुक्रवेधपरिहार), (मकर और मीनलग्न में शुक्रवेधदोष है ।),
ज्ये. शु. १४ गु.	ज्ये. ३०	जून १२	अनु.	वृश्चिक	वृष	मिथुन	।। ।ऽशु ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ३, (शुक्रवेधपरिहार), (कर्क और सिंहलग्न में शुक्रवेधदोष है ।),
आषा. कृ. ४ चं.	आषा. २	जून १६	श्रव.	मकर	मिथुन	मिथुन	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ४, ५(१२/०९ तक), (१२/०९ बाद मृत्युबाण),
आषा. कृ. ५ मं.	आषा. ३	जून १७	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	मिथुन	ऽश.ऽ ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६(१३/१७ बाद), ७, गोधू., १०, ११, १२(२५/०८ तक), (१३/१७ तक मृत्युबाण),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
आषा. कृ. ८ शु.	आषा. ६	जून २०	रेव.	मीन	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽमं.। ।ऽ ।।	ल. १०(२१/४८ बाद), ११, १२, १, २,
आषा. कृ. ९ श.	आषा. ७	जून २१	रेव.	मीन	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽमं.। ।ऽ ।।	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८, गोधू.,
आषा. शु. ४ मं.	आषा. १७	जुला. १	मघा	सिंह	मिथुन	कर्क	।। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ११(२२/२३ बाद), १२, १, २,
आषा. शु. ५ बु.	आषा. १८	जुला. २	मघा	सिंह	मिथुन	कर्क	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८ (१७/५२ तक),
आषा. शु. ६ गु.	आषा. १९	जुला. ३	उ.फा.	सिंह/कन्या	मिथुन	कर्क	ऽगु.ऽ ।। ।ऽरो. ऽऽ ।।	ल. १(२५/१५ बाद), २,
आषा. शु. ७ शु.	आषा. २०	जुला. ४	उ.फा.	कन्या	मिथुन	कर्क	ऽगु.ऽ ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ४, ५, ६, ७, ८, गोधू., १०, ११(२३/१४ तक),
आषा. शु. ७ शु.	आषा. २०	जुला. ४	हस्त	कन्या	मिथुन	कर्क	ऽगु.। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. १२(२३/१४ बाद), १(२५/४६ तक),
आषा. शु. ८ र.	आषा. २२	जुला. ६	चित्रा	कन्या	मिथुन	कर्क	।। ऽमं.रा.। ।ऽअ ऽऽ ।।	दि. ल. ५(१०/०७ बाद), ६, ७(१३/५४ तक), (१०/०७ तक मृत्युबाण), (१३/५४ बाद भौम-राहुयुति अपरिहार्य),
आषा. शु. ८ र.	आषा. २२	जुला. ६	स्वा.	तुला	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽके.ऽअ. ।। ।।	ल. २(२६/२५ बाद),
आषा. शु. ९ चं.	आषा. २३	जुला. ७	स्वा.	तुला	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽके.ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ४,५, ६, ७, ८, गोधू., १०, ११, १२, १, २(२६/४९ तक),
श्राव. शु. १३ श.	श्राव. २५	अग. ९	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	कर्क	।। ।। ऽशु.ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. ७, ८, रा.ल. ११, १२, १,
श्राव. शु. १५ र.	श्राव. २६	अग. १०	श्रव.	मकर	कर्क	कर्क	ऽरा.। ।। ऽगु.शु.। ।ऽ ।।	दि.ल. ८(१३/३८ बाद), ११, १२, १(२२/३९ तक),
भाद्र. कृ. ३ बु.	श्राव. २९	अग. १३	उ.भा.	मीन	कर्क	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ८(१४/१४ बाद), ९, गोधू. ११, १२, १, २,
भाद्र. कृ. ४ गु.	श्राव. ३०	अग. १४	उ.भा.	मीन	कर्क	कर्क	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ५, ६, ७(१२/१९ तक),
भाद्र. कृ. ९ मं.	भाद्र. ३	अग. १९	रोहि.	वृष	सिंह	कर्क	ऽबु.शु.। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	दि.ल. ७, ८(१३/३१ तक), (८/१० तक मृत्युबाण),
भाद्र. कृ. ९ मं.	भाद्र. ३	अग. १९	मृग.	वृष	सिंह	कर्क	।ऽ ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ८(१३/३१ बाद), ९, १०, गोधू.
भाद्र. कृ. १० बु.	भाद्र. ४	अग. २०	मृग.	मिथुन	सिंह	कर्क	ऽबु.ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१०/५५ बाद), ८, ९(१५/४१ तक),
भाद्र. शु. ३ गु.	भाद्र. १२	अग. २८	हस्त	कन्या	सिंह	कर्क	ऽगु.ऽ ।। । ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ९(१६/१० बाद), १०, १२, १, २, ४, (१६/१० तक मृत्युबाण),
भाद्र. शु. ४ शु.	भाद्र. १३	अग. २९	हस्त	कन्या	सिंह	कर्क	ऽगु.ऽ ।। । ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ७, ८(१३/५१ तक),
भाद्र. शु. ४ शु.	भाद्र. १३	अग. २९	चित्रा	कन्या	सिंह	कर्क	।। ऽरा.। ऽके.ऽअ. ।। ।।	दि.ल. १०, रा.ल. १२, १, २, (राहुयति परिहार), (२४/३० बाद क्रान्तिसाम्य),
भाद्र. शु. ५ श.	भाद्र. १४	अग. ३०	स्वा.	तुला	सिंह	कर्क	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. १०, गोधू., १२, १, २, ३, ४,
भाद्र. शु. ६ र.	भाद्र. १५	अग. ३१	स्वा.	तुला	सिंह	कर्क	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ७, ८, ९, १०(१७/१२ तक),
भाद्र. शु. ८ मं.	भाद्र. १७	सितं. २	अनु.	वृश्चिक	सिंह	कर्क	।ऽ ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. १०(१६/३६ बाद),

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४-१५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
भाद्र.शु. ९ बु.	भाद्र. १८	सितं. ३	मूल	धनु	सिंह	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., १२, १, २, ३, ४,
भाद्र.शु. १० गु.	भाद्र- १९	सितं. ४	मूल	धनु	सिंह	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ६, ७, ८, ९, १०(१६/१६ तक),
भाद्र.शु. ११ शु.	भाद्र २०	सितं. ५	उ.षा.	मकर	सिंह	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	ल. १(२१/२४ बाद), २(२२/३५ तक), (२२/३५ बाद मृत्युबाण),
भाद्र.शु. १२ श.	भाद्र २१	सितं. ६	श्रव.	मकर	सिंह	कर्क	ऽसू.रा.। ।ऽशु.।ऽअ. ऽ। ।।	ल. ३(२५/०९ बाद), ४, (शुक्रवेधपरिहार), (२३/२१ तक मृत्युबाण),
भाद्र.शु. १३ र.	भाद्र. २२	सितं. ७	श्रव.	मकर	सिंह	कर्क	ऽसू.रा.। ।ऽशु.।ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ७(९/१९ तक), (शुक्रवेधपरिहार),
भाद्र.शु. १३ र.	भाद्र. २२	सितं. ७	धनि.	मकर/कुम्भ	सिंह	कर्क	ऽश.। ।ऽगु.ऽगु. ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ७(९/१९ बाद), ८, ९, १०, गोधू., १२, १, २, ३, ४, (गुरुवेधपरिहार),
आश्वि.शु. १ गु.	आश्वि. ९	सितं. २५	हस्त	कन्या	कन्या	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ९(१३/२२ बाद), १०, ११, गोधू., १(१९/३९ तक),
आश्वि.शु. १ गु.	आश्वि. ९	सितं. २५	चित्रा	कन्या	कन्या	कर्क	ऽगु.।ऽबु.रा.ऽचं.ऽके.ऽरो.।।।।	ल. १(१९/३९ बाद), ४, (राहुयुतिपरिहार), (मिथुन लग्न में अपरिहार्य चन्द्रवेध)
आश्वि.शु. २ शु.	आश्वि.१०	सितं. २६	चित्रा	कन्या	कन्या	कर्क	ऽगु.।ऽबु.रा.ऽचं.ऽके.ऽरो.।।।।	दि.ल. ७(८/३४ तक), (चन्द्रवेधपरिहार), (८/३४ बाद राहुयुति अपरिहार्य),
आश्वि.शु. २ शु.	आश्वि.१०	सितं. २६	स्वा.	तुला	कन्या	कर्क	।ऽ ।। ।। ऽ। ।।	ल. २(२१/२३ से २२/२४ तक),
मार्ग. शु. ११ मं.	मार्ग. १७	दिसं. २	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कर्क	ऽसू.ऽ ।। ।। ऽ। ।।	ल. ७,
मार्ग. शु. १२ बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १०, ११, १२, १, गोधू., ४(२२/२९ तक),
माघ शु. १ बु.	माघ ८	जन. २१	श्रव.	मकर	मकर	कर्क	।। ऽबु.। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., ६(२२/१३ तक),
माघ शु. १ बु.	माघ ८	जन. २१	धनि.	मकर	मकर	कर्क	।। ऽशु.ऽगु. ऽगु.। ।। ।।	ल. ६(२२/१३ बाद), ७(२६/१९ तक), (गुरुवेधपरिहार),
माघ शु. ७ चं.	माघ १३	जन. २६	अश्वि.	मेष	मकर	कर्क	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. २(१२/३५ बाद), गोधू., ६(२२/५२ तक)
माघ शु. ८ मं.	माघ १४	जन. २७	अश्वि.	मेष	मकर	कर्क	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. १२ (१०/२३ बाद), १(११/१० तक),
माघ शु. १० गु.	माघ १६	जन. २९	रोहि.	वृष	मकर	कर्क	।। ।। ऽश.। ।ऽ ।।	दि.ल. १(११/३८ बाद), २, ३(१६/२९ तक), (१६/२९ बाद क्रान्तिसाम्य),
माघ शु. ११ शु.	माघ १७	जन. ३०	मृग.	वृष/मिथुन	मकर	कर्क	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ६(२२/१४ बाद), ७(२५/३२ तक),
फाल्गु. कृ. ४ र.	माघ २६	फर. ८	हस्त	कन्या	मकर	कर्क	।। ऽरा.। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. ११(८/२९ बाद), १२, १, २, ३, गोधू., ६, ७, ८, (राहुयुतिपरिहार),
फाल्गु. कृ. ५ चं.	माघ २७	फर. ९	हस्त	कन्या	मकर	कर्क	।। ऽरा.। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११, १२, १(११/२७ तक), (राहुयुतिपरिहार),
फाल्गु. कृ. ६ मं.	माघ २८	फर. १०	स्वा.	तुला	मकर	कर्क	ऽचं.बु. ऽ ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ३(१४/०२ बाद), गोधू.,
फाल्गु. कृ. ७ बु.	माघ २९	फर. ११	स्वा.	तुला	मकर	कर्क	ऽचं.बु. ऽ ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ११(८/१२ बाद), १२(८/५८ तक), (८/५८ बाद मृत्युबाण),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
फाल्गु. कृ. ११ र.	फाल्गु. ३	फर. १५	मूल	धनु	कुम्भ	कर्क	।ऽ ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२, १, २, ३, ४(१६/३० तक), (७/५५ तक मृत्युबाण),
फाल्गु. शु. ४ र.	फाल्गु. १०	फर. २२	अश्वि.	मेष	कुम्भ	कर्क	ऽमं. ।। ।। ।। ऽ ।।	ल. ६(२०/४८ बाद), ७, ८, ९(२८/०४ तक), (२८/०४ बाद क्रान्तिसाम्य),
चैत्र कृ. २ श.	फाल्गु. २३	मार्च ७	हस्त	कन्या	कुम्भ	कर्क	।ऽ ऽरा. ।। ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ४(१४/३६ बाद), गोधू., ६, ७, ८, ९, १०, (राहुयुतिपरिहार),
चैत्र कृ. ३ र.	फाल्गु. २४	मार्च ८	हस्त	कन्या	कुम्भ	कर्क	।ऽ ऽरा. ।। ।। ।। ।	दि.ल. ३(१३/०१ बाद), ४, गोधू., (राहुयुतिपरिहार), (१३/०१ तक क्रान्तिसाम्य),
चैत्र कृ. ३ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ९	स्वा.	तुला	कुम्भ	कर्क	।। ।। ।ऽवै. ।ऽ ।।	ल. ७, ८, ९,
चैत्र कृ. ४ मं.	फाल्गु. २६	मार्च १०	स्वा.	तुला	कुम्भ	कर्क	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. १२, १, २, ३(१२/१० तक), ४(१५/३६ बाद), गोधू., ७(२२/२१ तक),

आगामी सं. २०७२ वि. में गुरु-शुक्रास्त- आगामी सं. २०७२ वि. में गुरु लगभग १२ अगस्त से ७ सितम्बर, २०१५ ई. तक अस्त रहेगा। शुक्र लगभग ४ से १६ अगस्त, २०१५ ई. तक अस्त रहेगा। इस संवत् में १७ जून से १६ जुलाई तक आषाढ़ अधिकमास होगा। १४ से ३० सितंबर, २०१५ ई. तक गुरु सिंहराशि के सिंहांशक में रहेगा। आगामी वर्ष संवत् २०७२ वि. के सम्भावित विवाहमुहूर्तों की तारीखें अगले पृष्ठ पर देखें।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध—युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- *वेध परिहार-* सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को; द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। *युतिदोष का परिहार-* नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार-* मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार-* मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-* नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार-* मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-* शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे- ये लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में ला रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने गत वर्ष (सं. २०७० वि.) से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसके लिए पृष्ठ 264 पर दिया " विवाहमुहूर्तशोधन में लग्नभंग-परिहार" लेख पढ़ना चाहिए।

वि. सं. 2072 में (21 मार्च, 2015 ई. से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के **Phone Calls** / पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि– आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त* किन–किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ गत वर्ष से प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि– आगामी वर्ष के किन–किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त* संभावित हैं और किन–किन दिनों में नहीं। यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है। — प्रियव्रत शर्मा

तारीख	मार्च '15	अप्रै. '15	मई '15	जून '15	जुला'15	अग.'15	सितं.'15	अक्तू.'15	नवं.'15	दिसं.'15	जन.'16	फर.'16	मार्च '16	अप्रै.'16	तारीख
1	–	×			×		×	×	×		×			×	1
2	–	×			×	×	×	×	×		×			×	2
3	–	×			×	×	×	×	×		×			×	3
4	–	×			×	×	×	×			×			×	4
5	–	×			×	×	×	×			×			×	5
6	–	×			×	×	×	×			×	×		×	6
7	–	×			×	×	×	×			×	×	×	×	7
8	–	×			×	×	×	×			×	×	×	– –	8
9	–	×		×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	– –	9
10	–	×			×	×	×	×	×	×	×		×	– –	10
11	–	×			×	×	×	×	×	×	×		×	– –	11
12	–	×			×	×	×	×			×	×	×	– –	12
13	–	×			×	×	×	×			×	×	×	– –	13
14	–	×		×	×	×					×		×	– –	14
15	–	×		×	×	×	×		×	×			×	– –	15
16	–	×	×	×	×	×	×	×	×	×			×	– –	16
17	–	×	×	×		×	×	×		×			×	– –	17
18	–	×	×	×		×	×			×		×	×	– –	18
19	–	×		×		×	×			×		×	×	– –	19
20	–			–×		×	×		×	×		×	×	– –	20
21	×		×	×		×	×			×			×	– –	21
22	×		×	×		×	×			×	×		×	– –	22
23	×		×	×		×	×			×	×		×	– –	23
24	×	×		×		×	×	×		×	×		×	– –	24
25	×	×		×		×	×			×			×	– –	25
26	×	×		×		×	×			×			×	– –	26
27	×			×		×	×			×			×	– –	27
28	×			×		×	×		×	×			×	– –	28
29	×			×		×	×		×	×			×	– –	29
30	×			×		×	×		×	×		– –	×	– –	30
31	×			– –		×	– –		– –	×		– –	×	– –	31

इस वर्ष (सं. 2072) में इन निम्नांकित दोषों के कारण ये निम्नांकित तारीखें विवाहादि सभी मंगल–कृत्यों में निषिद्ध हैं।

मीनस्थ सूर्यदोष
(21 मार्च से 13 अप्रैल, 2015 ई.)

चन्द्रग्रहण(4 अप्रै.'15) वेधदोष
(3 से 7 अप्रै.'15)

आषाढ़ अधिकमास-दोष
(17 जून से 16 जुला. '15)

शुक्र वार्धक्य–अस्त–बाल्यदोष
(2 से 23 अग., '15)

गुरु वार्धक्य–अस्त–बाल्यदोष
(9 अग. से 10 सितं., '15)

सिंह नवांश में सिंहस्थ–गुरु–दोष
(14 सितं. से 30 सितं., '15)

आश्विन कृष्ण(श्राद्ध)पक्ष-दोष
(28 सितं. से 12 अक्तू., 15)

धनुःस्थ सूर्यदोष
(16 दिसं. '15 से 13 जन. '16)

सूर्यग्रहण (9 मार्च '16) वेधदोष
(8 से 12 मार्च, 16)

मीनस्थ सूर्यदोष
(14 मार्च से 7 अप्रै., 16)

ध्यान दें– सभी मंगलकृत्यों में निषिद्ध इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७१ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह–निर्णय के लिए निर्बल–शुद्धि

सं. २०७१ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७१ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७१ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 254 पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और सिंहराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०७१ वि. में अगस्त (२०१४ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे अगस्त, २०१४ ई. की १९, २०, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें है, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि सिंह के आगे अगस्त की ९, १०, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१ तारीखें है । इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त, २०१४ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अगस्त की केवल १९, २०, २८, २९, ३०, ३१ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-सिंह) वाले कॉलमो (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है । इस वर्ष मिथुनराशिस्थ गुरु कर्क, वृश्चिक और मीन राशि वालों के लिए पूज्य रहेगा, किन्तु कर्कस्थ गुरु उच्चस्थ होने से किसी के लिए पूज्य नहीं है।

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७१ वि.) (३१ मार्च, सन् २०१४ ई. से २० मार्च, सन् २०१५ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रैल १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. १९, २०, २८, २९, ३० , ३१; सितं. ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	अप्रैल १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. ९, १०, १३, १४, १९, २०, २८ २९, ३० , ३१; सितं. ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	- - -
वृष	मई १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ६(१९/५३ बाद), ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. ३(२७/२४ बाद), ४, ६, ७; अग. ९(९/५९ बाद), १०, १३, १४; सितं. २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रैल १५, १६, १८, २१(२३/४६ बाद), २२, २३, २४; मई १, २, १०(११/२२ बाद), ११, १२, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ६(१९/५३ बाद), ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. ३(२७/२४ बाद), ४, ६, ७; अग. ९(९/५९ बाद), १०, १३, १४, १९, २०, २८ २९, ३० , ३१; सितं. २, ५, ६, ७, २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७१ वि.) (३१ मार्च, सन् २०१४ ई. से २० मार्च, सन् २०१५ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टै. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	अप्रैल १६, १८, १९, २०, २१(२३/४६ तक), २३(२६/२२ बाद), २४; मई १, २, ७, ८, १०(११/२२ तक) ; जून १७(१६/०६ बाद), २०, २१; जुला. १, २, ३(२७/२४ तक), ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९(९/५९ तक), १३, १४, १९, २०, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ७(१९/५३ बाद); दिसं. २, ३, फर. १५, २२; मार्च ९, १०;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १८, १९, २०, २१(२३/४६ तक), २३(२६/२२ बाद), २४; मई १, २, ७, ८, १०(११/२२ तक), १५, १७, १८, २१(७/४५ बाद), २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६(१९/५३ तक), १०, ११, १२, १७(१६/०६ बाद), २०, २१; जुला. १, २, ३(२७/२४ तक), ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९(९/५९ तक), १३, १४, १९, २०, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ७(१९/५३ बाद), २६(८/३४ बाद); दिसं. २, ३; जन. २६, २७, २९, ३०; फर. १०, ११, १५, २२; मार्च ९, १०;	---
कर्क	अप्रैल १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३(२६/२२ तक); मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१(७/४५ तक), २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, ११, १२; अग. ९, १०, १३, १४, १९, २०, २८ २९; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७(१९/५३ तक), २५, २६(८/३४ तक); दिसं. २, ३, जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९;	माघ,	अप्रैल १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३(२६/२२ तक); मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१(७/४५ तक), २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, १६, १७(१४/०६ तक), २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६(१३/५४ तक); अग. ९, १०, १३, १४, १९, २०, २८, २९; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७(१९/५३ तक), २५, २६(८/३४ तक); दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १५, २२; मार्च ७, ८;	मिथुन
सिंह	अप्रैल १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, १६, १७; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. १९, २०, २८ २९, ३०, ३१; सितं. ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, १६, १७; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. ९, १०, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	---
कन्या	मई १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. ९(९/५९ बाद), १०, १३, १४; सितं. २५, २६; जन. २१, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११; मार्च ७, ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	अप्रैल १५, १६, १८, २१(२३/४६ बाद), २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. ९(९/५९ बाद), १०, १३, १४, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ५, ६, ७, २५, २६; जन. २१, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११; मार्च ७, ८, ९, १०;	---
तुला	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१(२३/४६ तक), २३(२६/२२ बाद), २४; मई २(२४/०९ बाद), ७, ८, १०, ११, १२; जून १७(१४/०६ बाद), २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९(९/५९ तक), १३, १४, २०, २८ २९, ३० , ३१; सितं. २, ३, ४, ७(१९/५३ बाद); दिसं. २, ३; फर. १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१(२३/४६ तक), २३(२६/२२ बाद), २४; मई २(२४/०९ बाद), ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, २१(७/४५ बाद), २४, २५, ३०(८/१० बाद); जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १७(१४/०६ बाद), २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९(९/५९ तक), १३, १४, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ७(१९/५३ बाद), २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २६, २७, ३०(२५/१७ बाद) ; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	---

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७१ वि.) (३१ मार्च, सन् २०१४ ई. से २० मार्च, सन् २०१५ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
वृश्चिक	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३(२६/२२ तक); मई १, २(२४/०९ तक), ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१(७/४५ तक), २४, २५, २९, ३०(८/१० तक) ; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२; अग. ९, १३, १४, १९, २८, २९, ३० , ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६; ७(१९/५३ तक), २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०(२५/१७ तक) ; फर. ८, ९, १०, ११;	ज्येष्ठ,	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३(२६/२२ तक); मई १, २(२४/०९ तक), ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१(७/४५ तक), २४, २५, २९, ३०(८/१० तक); जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७(१४/०६ तक), २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६(१३/५४ तक), ७; अग. ९, १३, १४, १९, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७(१९/५३ तक), २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०(२५/१७ तक) ; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	मिथुन
धनु	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७; जुला. १, २, ३ ४, ६, ७; अग. १९, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	आषाढ़ , माघ,	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०; जून ४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७; जुला. १, २, ३, ४, ६, ७; अग. ९, १०, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५, २२; मार्च ७, ८, ९, १०;	- - -
मकर	मई १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ६(१९/५३ बाद), ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. ३(२७/२४ बाद), ४, ६, ७; अग. ९, १०, १३, १४; सितं. २५, २६; जन. २१, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५; मार्च ७, ८, ९, १०;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रैल १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २, १०(११/२२ बाद), ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०; जून ६(१९/५३ बाद), ७, ८, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. ३(२७/२४ बाद), ४, ६, ७; अग. ९, १०, १३, १४, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६; जन. २१, २९, ३०; फर. ८, ९, १०, ११, १५; मार्च ७, ८, ९, १०;	- - -
कुम्भ	अप्रैल १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई २(२४/०९ बाद), ७, ८, १०(११/२२ तक); जून १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३(२७/२४ तक), ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९, १०, १३, १४, २०, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७; दिसं. २, ३; फर. १५, २२; मार्च ९, १०;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई २(२४/०९ बाद), ७, ८, १०(११/२२ तक), १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, ३०(८/१० बाद); जून ४, ५, ६(१९/५३ तक), १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३(२७/२४ तक), ६(१३/५४ बाद), ७; अग. ९, १०, १३, १४, २०, ३०, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २६(८/३४ बाद); दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, ३०(२५/१७ बाद); फर. १०, ११, १५, २२; मार्च ९, १०;	- - -
मीन	अप्रैल १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २(२४/०९ तक), ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०(८/१० तक); जून ४, ५, ६, ७, ८, ११, १२; अग. ९, १०, १३, १४, १९, २८, २९; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६(८/३४ तक); दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०(२५/१७ तक); फर. ८, ९ ;	आश्विन,	अप्रैल १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४; मई १, २(२४/०९ तक), ७, ८, १०, ११, १२, ,१५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०(८/१० तक); जून ४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, १६, १७, २०, २१; जुला. १, २, ३, ४, ६(१३/५४ तक); अग. ९, १०, १३, १४, १९, २८, २९; सितं. २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६(८/३४ तक); दिसं. २, ३; जन. २१, २६, २७, २९, ३०(२५/१७ तक) ; फर. ८, ९, १५, २२; मार्च ७, ८;	मिथुन

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2011

विवाहमुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार

[गत वर्ष (सं. 2070 वि. में) भी यह लेख हमने 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में प्रकाशित किया था। हम चाहते हैं कि दैवज्ञ लोग इसको फिर से अच्छी तरह समझ लें। इसीलिए इसे हम कुछ और संवर्धन एवम् स्पष्टीकरण के साथ इस वर्ष पुनः प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे इन लग्नभंग–परिहारों के बारे में उन्हें किसी भी प्रकार की अस्पष्टता न रहे।]

(लेखक–प्रियव्रत शर्मा)

(मुहूर्त्तगजानन से उद्धृत)

गत वर्ष से "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में हमने विवाहलग्नशोधन–प्रक्रिया में लग्नभंग के परम्परागत परिहारों के अलावा कई ऐसे अन्य दस परिहारों का भी प्रयोग प्रारम्भ किया है, जिन्हें संहिताकारों ने विवाहलग्न को सर्वथा दोषमुक्तकारक व अत्यन्त शक्तिशाली बनाने की क्षमता वाले बतलाया है। ध्यान रहे– इन परिहारों के अपनाने से विवाह के लिए ग्राह्य लग्नों की संख्या में वृद्धि हो जाने पर विवाह जैसे मंगलकृत्य के लिए शुभकाल पूर्वापेक्षया कहीं अधिक हमें प्राप्त हो रहा है और वह काल अपेक्षाकृत अधिक मंगलकारी भी है।

नीचे दिया जा रहा यह लेख दैवज्ञों को ध्यान से पढ़ना चाहिए, इससे उन्हें परम्परागत लग्नभंग–परिहारों की अपूर्णता स्पष्ट हो जाएगी और हमारे द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले इन दस परिहारों की प्रामाणिकता भी वे समझ सकेंगे।

" लग्नभंग " की स्थिति में लग्न विवाह के अयोग्य हो जाता है, **बशर्त्ते** कि, वहां लग्नभंगदोष का कोई परिहार सम्भव न हो। लग्नभंग **कब,** किन–किन स्थितियों में होता है, उसका शास्त्रसमर्थित यथार्थ **परिहार किन–किन स्थितियों में सम्भव है, इसका यहां विवेचन किया जाएगा। इससे पूर्व हम लग्नभंगकारक सात स्थितियों का निर्देश कर देना उचित समझते हैं।**

लग्नभंग इन सात स्थितियों में होता है :–

(1) लग्न में पापनवांश या वर्गोत्तम से भिन्न कोई अन्तिम नवांश हो।

(2) लग्नकर्त्तरी या चन्द्रकर्त्तरी हो।

(3) लग्न में चन्द्र या पापग्रह हो।

(4) षष्ठ में चन्द्र–शुक्र या लग्नेश हो।

(5) सप्तम में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु या केतु हो।

(6) अष्टम में चन्द्र, मंगल, लग्नेश या कोई शुभग्रह हो।

(7) चरराशिस्थ चन्द्र के समय चर लग्न का चरनवांश हो।

लग्नशोधन की आजकल प्रचलित परम्परा में पंचांगकर्त्ता दैवज्ञ **लग्नभंग की इन उपरोक्त स्थितियों में से कुछेक को परिहार्य** (जिनका परिहार सम्भव है) **और कुछेक को अपरिहार्य** (जिनका परिहार सम्भव नहीं है) **मानते हैं, जिसका विवरण इस प्रकार है –**

(1) लग्न में पापनवांश तथा अन्तिम नवांश का परिहार नहीं माना गया।

(2) लग्नकर्त्तरी या चन्द्रकर्त्तरी को परिहार्य माना गया है। कर्त्तरी–कारक ग्रह यदि नीचस्थ शत्रुराशिस्थ या अस्त हों तो लग्न एवं चन्द्रकर्त्तरी–दोष नहीं रहता अर्थात् तब उसका परिहार हो जाता है। द्वितीयस्थ शुभग्रह या द्वादशस्थ गुरु से लग्नकर्त्तरी का और चन्द्र से द्वितीयस्थ शुभग्रह या द्वादशस्थ गुरु होने पर चन्द्रकर्त्तरी–दोष का परिहार हो जाता है।

(3) लग्नस्थ चन्द्र या पापग्रह के दोष का परिहार नहीं माना गया।

(4) षष्ठस्थ चन्द्र नीचराशि या नीचांश में हो तो इसका दोष नहीं रहता। इसी तरह नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र का भी षष्ठस्थिति–दोष नहीं रहता, लग्नेश ग्रह तथा लग्नेश होकर षष्ठस्थ चन्द्र और शुक्र का दोष तो अपरिहार्य माना गया है।

---

(5) चन्द्र और गुरु के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रहों की सप्तम

वेला को) अत्यन्त संकुचित कर बैठे हैं–

(5) चन्द्र और गुरु के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रहों की सप्तम में स्थिति का दोष अपरिहार्य माना गया है।

(6) नीचस्थ या नीचांशस्थ चन्द्र; नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र और नीचस्थ, शत्रुराशिस्थ या अस्तंगत भौम के अष्टमस्थितिदोष को परिहार्य माना है। लग्नेश ग्रह एवं लग्नेश होकर अष्टम में स्थित चन्द्र, भौम, शुक्र का दोष तो अपरिहार्य माना गया है। **किंच–** अष्टमस्थ बुध, गुरु का दोष भी परिहार के क्षेत्र में नहीं माना जाता।

(7) चरराशिस्थ चन्द्र के समय चरलग्न के चरनवांश का दोष भी अपरिहार्य बतलाया गया है।

विवाहलग्न–शुद्धि के प्रसंग में आजकल के लगभग सभी दैवज्ञ / पंचांगकार प्रचलित परम्पराप्राप्त इन उपरोक्त लग्नभंग–परिहारों के अलावा अन्य (संहिताओं में सप्रपंच चर्चित, आगे बतलाए जा रहे) महत्त्वपूर्ण इन दस परिहारों में से किसी का भी प्रयोग अक्सर नहीं करते– यह उनके सम्पादित पंचांगों में दिए विवाहमुहूर्त्तों को देखने से स्पष्ट है। संहिताओं में पदे–पदे उपलब्ध होने वाले इन दस लग्नभंग–परिहारों (जिनमें से प्रत्येक में सभी प्रकार के लग्नभंगदोषों को सर्वथा सम्मार्जित करने की प्रबल क्षमता का संहिताकारों ने दृढ़ता से निर्देश किया है) को देखने से स्पष्ट है, इन दैवज्ञों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले ये उपरोक्त प्रचलित मात्र दो–चार लग्नभंग– परिहार कितने अपूर्ण हैं। **सभी संहिताग्रन्थों में निरपवादरूप से उपलब्ध लग्नभंग–परिहारक ये दस ग्रहादि स्थितियां *हैं, जिन्हें उपेक्षित कर ये दैवज्ञ लग्नभंगपरिहार के क्षेत्र को (या यूं कहिए विवाहकृत्य की मांगलिक वेला को) अत्यन्त संकुचित कर बैठे हैं–**

(i) सप्तमहीन केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित कोई शुभग्रह (गु., शु. बु.)।

(ii) सप्तमहीन केन्द्र में लग्नेश।

(iii) सप्तमहीन केन्द्र में लग्ननवांशेश।

(iv) उच्चस्थ लग्नेश।

(v) वर्गोत्तमगत लग्न।

(vi) वर्गोत्तमगत चन्द्र।

(vii) एकादशस्थ लग्नेश।

(viii) एकादशस्थ लग्ननवांशेश।

(ix) एकादशस्थ सूर्य।

(x) एकादशस्थ चन्द्र।

लग्नभंग के इन दस परिहारों में से यदि कोई एक भी लग्नकुण्डली में उपलब्ध हो तो लग्नकुण्डलीगत लग्नभंगकारक उपरोक्त सभी (सातों) दोष सर्वथा विलीन हो जाते हैं, ऐसा वसिष्ठ, कश्यप, नारद आदि सभी संहिताओं में ऐकमत्येन लिखा मिलता है। **'मुहूर्तमार्त्तण्ड'**, **'मुहूर्तचिन्तामणि'** आदि परवर्त्ती मुहूर्तग्रन्थों में भी इस मत को बल देकर उपस्थापित किया गया है। **जैसे देखिए– कश्यप कहते हैं–** यदि लग्नकुण्डली में शुक्र, गुरु या बुध केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो सभी दोष (लग्नदोष) इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं– जैसे हरिस्मरण से पापपुञ्ज–

" काव्यो गुरुर्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र–त्रिकोणगः।
नाशं यान्त्यखिला दोषाः पापानीव हरौ स्मृते।।" –*(कश्यप)*

कश्यप का यह दूसरा वाक्य कहता है– वर्गोत्तमगत लग्न होने पर सभी लग्नदोष विलीन हो जाते हैं–

" वर्गोत्तमगते लग्ने लग्नदोषा लयं ययुः।" – *(कश्यप)*

** ये दस ग्रहादि स्थितियां लग्नभंग का परिहार तो करती ही हैं, ये लग्न को बल (विश्वाबल) भी देती हैं (एतदर्थ मेरी पुस्तक 'मुहूर्त्तगजानन' में दिया –* ***" विवाह–लग्नबलसाधन की परम्परागत पद्धति–एक समीक्षा"*** *– लेख पढ़िए।)*

इस बारे नारद भी यही कहते हैं–

" दोषाणां हि शतं हन्ति बलवान् केन्द्रगो बुधः।
द्युनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः।।" – (*नारद*)

नारद का यह दूसरा वाक्य देखिए, जो कहता है– लग्नेश या लग्ननवांशेश यदि एकादश या केन्द्र में स्थित हो तो लग्नसम्बन्धी सभी दोष आग मे इन्धन की तरह भस्म हो जाते हैं–

" लग्नेट् लग्नांशनाथो वा चायगः केन्द्रगोऽपि वा।
राशिं निहन्ति दोषाणामिन्धनानीव पावकः।। " – (*नारद*)

वसिष्ठ कहते हैं– लग्नकुण्डली में एकादशस्थ सूर्य से सभी दोष नष्ट हो जाते हैं–

" यत्रैकादशगः सूर्यो दोषा नाशं ययुस्तदा।" – (*वसिष्ठ*)

'मुहूर्त्तचिन्तामणि'कार द्वारा **प्रमिताक्षरा** में उद्धृत यह वाक्य देखिए, जो स्पष्ट कह रहा है कि– लग्नगत पापनवांश तथा लग्नस्थ पापी ग्रह भी त्रिकोण–केन्द्रस्थ गुरु या शुक्र द्वारा शुभफलप्रद बन जाते हैं–

"सक्रूरराशेरशुभो नवांशः प्रोक्तः सपापोऽपि विलग्नसंस्थः।
त्रिकोण–केन्द्रेषु गुरुः सितो वा यदा तदासावशुभोऽपि शस्तः।।"

'मुहूर्त्तचिन्तामणि'कार ने **'विवाहप्रकरण'** के निम्नस्थ इन दो श्लोकों में संहिताओं में निर्दिष्ट लग्नभंग– परिहारकारक सभी मतों को इस प्रकार संगृहीत कर लिखा है कि– सप्तमहीन केन्द्र; त्रिकोणगत गुरु–शुक्र– बुध; सप्तमहीन केन्द्रगत लग्नेश/लग्ननवांशेश; एकादशगत सूर्य, चन्द्र, लग्नेश, लग्ननवांशेश तथा वर्गोत्तमगत लग्न, चन्द्र द्वारा दुष्ट मुहूर्त्त (रविवार को अर्यमा आदि) तथा क्रूरनवांश आदि सभी लग्नदोष आग से रुई की भान्ति भस्म हो जाते हैं। देखिए–

"केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः।।"
– (*मुहूर्त्तचिन्तामणि*)

किञ्च–

" त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं।
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।।
भवेदाये केन्द्रेंऽगप उत लवेशो यदि तदा।
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति।।"
–(*मुहूर्त्तचिन्तामणि*)

उपर्युक्त विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि– प्रचलित परम्परागत (आजकल दैवज्ञों द्वारा प्रयुक्त किए जा रहे) लग्नभंग–दोष–परिहार **264** पृष्ठ पर उक्त सातों लग्नभंगस्थितियों का परिहार नहीं कर सकते। जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं, इनमें से (1), (3), (5) और (7) स्थितियों (लग्नभंग–स्थितियों) के परिहार तो इनसे सर्वथा असम्भव माने गए हैं, शेष केवल तीन [(2), (4), (6)] लग्नभंगस्थितियों को ही इन्होंने परिहार्य माना है, इनमें भी षष्ठ–अष्टमस्थ लग्नेश को परिहार्य नहीं माना। **लेकिन इधर (पृ. 265 पर) देखिए–यहां दिए ये इस प्रतिपाद्यमान लग्नभंग– परिहारक पद्धति में लग्नभंग के 10 परिहार हैं और प्रत्येक परिहार लग्नभंग की उक्त सातों स्थितियों के दोष को सहसा (एकसाथ) समाप्त करने की क्षमता रखता है। उदाहरणार्थ देखिए–** विवाहलग्न–कुण्डली में भले ही **'लग्न में पाप या अन्तिम नवांश', 'लग्न–चन्द्रकर्त्तरी', 'लग्नस्थ चन्द्र या पापग्रह'** आदि सातों लग्नभंगस्थितियां क्यों न हों और वहां इन विवेच्यमान 10 लग्नभंगपरिहारक स्थितियों में से एक भी स्थिति उपलब्ध होने पर केवल मात्र उसी से इन सभी (सातों) लग्नभंगस्थितिजन्य दोषों का सहसा परिहार हो जाता है। **" समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति "** – ऐसे प्रमाणवाक्यों से यह स्पष्ट है। इस पद्धति की यह भारी विशेषता है। इसे अपनाने पर मंगलकृत्यों के विधान के लिए अपेक्षाकृत कहीं अधिक शुभ(शुद्ध)काल भी हमें प्राप्त होता है– यह भी सुस्पष्ट है।

यहां लग्नशोधक दैवज्ञ को यह बतला देना आवश्यक है– उपरि निर्दिष्ट प्रचलित परम्परानुसारी 'लग्नचन्द्र क्रूरकर्त्तरी', 'षष्ठस्थ चन्द्र–शुक्र' एवं 'अष्टमस्थ चन्द्र–मंगल–शुभग्रह' के ये परिहार भी उपेक्ष्य नहीं हैं।

इन 10 लग्नभंग–परिहारों के परक (Supplements) मानना होगा,

लघु लग्नसारणी

इन्हें इन 10 लग्नभंग–परिहारों के पूरक (Supplements) मानना होगा, क्योंकि लग्नभंग के ये परिहार भी संहिताओं में निर्दिष्ट हैं। अतः इन 10 परिहारों में से यदि कहीं एक भी उपलब्ध न हो तब सम्भव (शक्य) हो तो इन परिहारों का प्रयोग अनिवार्यतः करना होगा।

अपि च– लग्नभंग–परिहार के प्रसंग में यह भी लग्नशोधक के लिए अपरिहार्यरूपेण विचारणीय रहना चाहिए–

शुभता की दृष्टि से गुरु ग्रहमण्डल में अद्वितीय माना गया है। फलितशास्त्र की संहिता–जातक–मुहूर्त आदि सभी शाखा–प्रशाखाओं में गुरु की युति व दृष्टि द्वारा दोषपूर्ण किसी भी योगायोग को निष्प्रभाव कर डालने की अद्भुत क्षमता का प्रचुर निर्देश है। इस निर्देश को दृष्टि में रखते हुए लग्नशोधनप्रक्रिया में गुरु की युति–दृष्टि के आधार पर भी दैवज्ञ को लग्नदूषक (लग्नभंगकारक) योगों के परिहार को प्रामाणिक मानना होगा।

अन्त में हम इन दो और बातों की ओर भी दैवज्ञों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं–

(i) गत वर्ष हमने प्रत्येक शुद्ध विवाहलग्न के आगे कोष्ठक में उन लग्नभंग करने वाले ग्रहों का भी निर्देश किया था, जिनका वहां परिहार हो गया था। इस वर्ष से हमने ऐसा निर्देश अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है।

(ii) क्योंकि, उपरोक्त प्रत्येक लग्नभंग–परिहार बड़ी से बड़ी लग्नभंगकारक ग्रहादि स्थिति के दोष का पूरी तरह निवारक माना गया है, अतः चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु की पूजा के सामान्य दोष का भी निवारक वह होगा ही⊗ अतः इन शुद्ध विवाहलग्नों में इनकी पूजा का निर्देश हमने यहां नहीं किया है।

⊗ *" दावानलो दहन्नागानृत्यजेन्नैव हि वृश्चिकान् ।" (अर्थात् जो वनाग्नि बड़े–बड़े सर्पराजों को जला डालती है, वह भला वृश्चिकों को छोड़ देगी ?)*

लघु लग्नसारणी

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघुलग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह 'लघुसारणी' सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 जिला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टै. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। ध्यान रहे– भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह 'लघु लग्नसारणी' अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Parkashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,'
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त–सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन व अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ–साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*– यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७१ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। – प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से त्रयोदशी (३१ मार्च से १३ अप्रैल, २०१४ ई.) तक मीनस्थ सूर्य।			
चैत्र शु. १५ मं.	अप्रै. १५	स्वा.	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. २ गु.	अप्रै. १७	अनु.	व्यतीपात,
वैशा. कृ. १२ श.	अप्रै. २६	उ.भा.	भौमवेध,
वैशा. कृ. १३ र.	अप्रै. २७	उ.भा.	भौमवेध, वैधृति,
वैशा. शु. ४ श.	मई ३	मृग.	भद्रा,
वैशा. शु. १० शु.	मई ९	उ.फा.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. १४ मं.	मई १३	चित्रा	मासान्त,
वैशा. शु. १५ बु.	मई १४	स्वा.	संक्रान्ति
ज्ये. कृ. २ शु.	मई १६	मूल	२६/१८ तक मृत्युबाण, लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. १० शु.	मई २३	उ.भा.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. १२ श.	मई २४	उ.भा.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. १२ र.	मई २५	अश्वि.	केतुयुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. १३ चं.	मई २६	अश्वि.	क्षीणचन्द्र, केतुयुति-अपरिहार्य,
ज्ये. शु. १ गु.	मई २९	रोहि.	क्षीणचन्द्र,
ज्ये. शु. १० र.	जून ८	हस्त	व्यतीपात,
ज्ये. शु. ११ चं.	जून ९	चित्रा	भद्रा,
ज्ये. शु. ११ चं.	जून ९	स्वा.	परिघार्ध,
ज्ये. शु. १५ शु.	जून १३	मूल	मृत्युबाण,
आषा. कृ. १ श.	जून १४	मूल	मासान्त,
आषा. कृ. ३ र.	जून १५	उ.षा.	संक्रान्ति,
आषा. कृ. ४ चं.	जून १६	उ.षा.	सूर्यवेध,
आषा. कृ. ४ चं.	जून १६	धनि.	वैधृति, मृत्युबाण,
आषा. कृ. ७ गु.	जून १९	उ.भा.	भौमवेध,
आषा. कृ. ८ शु.	जून २०	उ.भा.	भौमवेध,
आषा. कृ. ९ श.	जून २१	अश्वि.	भद्रा, केतुयुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. १० र.	जून २२	अश्वि.	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा. कृ. १२ मं.	जून २४	रोहि.	क्षीणचन्द्र,
आषा. कृ. १३ बु.	जून २५	रोहि.	क्षीणचन्द्र,
आषा. शु. ८ श.	जुला. ५	हस्त	मृत्युबाण,
आषा. शु. ८ श.	जुला. ५	चित्रा	मृत्युबाण,
गुरु वार्धक्य, अस्त और बाल्यदोष (८ जुलाई से ७ अगस्त, २०१४ ई. तक)			
श्राव. शु. ११ गु.	अग. ७	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १२ शु.	अग. ८	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १२ शु.	अग. ८	उ.षा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १३ श.	अग. ९	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. १५ र.	अग. १०	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. १ चं.	अग. ११	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. ४ गु.	अग. १४	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र. कृ. ५ शु.	अग. १५	रेव.	मृत्युबाण, केतुयुति-अपरिहार्य,
भाद्र. कृ. ५ शु.	अग. १५	अश्वि.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ६ श.	अग. १६	अश्वि.	मासान्त, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ८ चं.	अग. १८	रोहि.	मृत्युबाण,
भाद्र. शु. २ बु.	अग. २७	उ.फा.	केतुवेध,
भाद्र. शु. ३ गु.	अग. २८	उ.फा.	केतुवेध,
भाद्र. शु. ५ श.	अग. ३०	चित्रा	७/१६ तक क्रान्तिसाम्य, राहुयुति अपरिहार्य,
भाद्र. शु. ७ चं.	सितं. १	अनु.	वैधृति,
भाद्र. शु. १२ श.	सितं. ६	उ.षा.	मृत्युबाण,
श्राद्ध (महालय) पक्ष-भाद्र. शु. १५ मं. से आश्वि. अमा बु. (९ से २४ सितं., २०१४ ई.) तक।			
आश्वि. शु. ३ श.	सितं. २७	स्वा.	वैधृति, विष्कंभ,
आश्वि. शु. ४ र.	सितं. २८	अनु.	अपरिहार्य भौमयुति,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७१ वि.)

शुक्र वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष- आश्वि. शु. ५ चं. से मार्ग. शु. ८ श. (२९ सितं. से २९ नवं., २०१४ ई.) तक

तिथि-वार	तारीख २०१४-१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु. ९ र.	नवं. ३०	उ.भा.	राहुवेध,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १	उ.भा.	राहुवेध,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु. ११ मं.	दिसं. २	रेव.	व्यतीपात, केतुयुति-अपरिहार्य,
मार्ग. शु. १४ शु.	दिसं. ५	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १५ श.	दिसं. ६	रोहि.	भौमवेध,
मार्ग. शु. १५ श.	दिसं. ६	मृग.	भौमवेध,
पौष कृ. १ र.	दिसं. ७	मृग.	भौमवेध,
पौष कृ. ६ शु.	दिसं. १२	मघा	भौमवेध,
पौष कृ. ७ श.	दिसं. १३	मघा	भौमवेध,
पौष कृ. ८ र.	दिसं. १४	उ.फा.	केतुवेध,
पौष कृ. ८ चं.	दिसं. १५	उ.फा.	केतुवेध, मासान्त,
पौष कृ. ८ चं.	दिसं. १५	हस्त	मासान्त,

धनुःस्थ रवि- पौष कृ. ९ मं. से माघ कृ. ८ मं.
(१६ दिसं., २०१४ ई. से १३ जन., २०१५ ई.) तक।

तिथि-वार	तारीख २०१४-१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ कृ. १० गु.	जन. १५	स्वा.	लग्नाभाव,
माघ कृ. ११ शु.	जन. १६	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
माघ कृ. १२ श.	जन. १७	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
माघ शु. २ गु.	जन. २२	धनि.	व्यतीपात,
माघ शु. ५ श.	जन. २४	उ.भा.	राहुवेध,
माघ शु. ६ र.	जन. २५	उ.भा.	राहुवेध,

तिथि-वार	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु. ६ र.	जन. २५	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
माघ शु. ७ चं.	जन. २६	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
माघ शु. ११ शु.	जन. ३०	रोहि.	क्रान्तिसाम्य,
माघ शु. १२ श.	जन. ३१	मृग.	वैधृति,
फाल्गु. कृ. १ बु.	फर. ४	मघा	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. २ गु.	फर. ५	मघा	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. ६	उ.फा.	भद्रा, केतुवेध,
फाल्गु. कृ. ३ श.	फर. ७	उ.फा.	केतुवेध,
फाल्गु. कृ. ४ र.	फर. ८	उ.फा.	केतुवेध,
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	चित्रा	भौमवेध, भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ६ मं.	फर. १०	चित्रा	भौमवेध, भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ८ गु.	फर. १२	अनु.	मासान्त, शनियुति-अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ. ९ शु.	फर. १३	अनु.	संक्रान्ति, शनियुति-अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ. १० श.	फर. १४	मूल	मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. २ शु.	फर. २०	उ.भा.	राहुवेध, भौमयुति-अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ३ श.	फर. २१	उ.भा.	राहुवेध, भौमयुति-अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ३ श.	फर. २१	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ४ र.	फर. २२	रेव.	केतुयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	मृत्युबाण, १०/१८ तक क्रान्तिसाम्य,

होलाष्टक - फाल्गु. शु. ८ गु. से फाल्गु. शु. १५ गु.
(२६ फर. से ५ मार्च, २०१५ ई.) तक।

तिथि-वार	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र कृ. १ शु.	मार्च ६	उ.फा.	भौम- केतुवेध, भुजंगपात,
चैत्र कृ. २ श.	मार्च ७	उ.फा.	भौम- केतुवेध, भुजंगपात,
चैत्र कृ. ३ र.	मार्च ८	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र कृ. ३ चं.	मार्च ९	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र कृ. ५ बु.	मार्च ११	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
चैत्र कृ. ६ गु.	मार्च १२	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
चैत्र कृ. ७ शु.	मार्च १३	मूल	मासान्त,

१४ मार्च, २०१५ ई. से वर्षान्त तक सूर्य मीनस्थ।

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक-लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

आज ही अपनी प्रति बुकसेलर से सुरक्षित कराएं।

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०७१ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं, काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा)
वैशा.कृ. १ बु.	अप्रै. १६	स्वा.	१२/४१ बाद, (शुक्रवेध विचार्य)
वैशा.कृ. ११ शु.	अप्रै. २५	शत.	१२/१५ तक,
वैशा.शु. ३ शु.	मई २	मृग.	११/१८ बाद,
वैशा.शु. १३ चं.	मई १२	हस्त	७/३५ तक,
ज्ये.कृ. २ शु.	मई १६	ज्ये.	
ज्ये.शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	११/५६ तक,
ज्ये.शु. ४ चं.	जून २	पुष्य	६/०४ बाद,
ज्ये.शु. १३ बु.	जून ११	स्वा.	१६/२६ बाद,
माघ कृ. १० गु.	जन. १५	स्वा.	८/०६ तक,
माघ शु. १ बु.	जन. २१	श्रव.	१५/१५ बाद,
माघ शु. ७ चं.	जन. २६	अश्वि.	११/४७ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	११/२७ तक,
फाल्गु. कृ. ७ बु.	फर. ११	स्वा.	८/१२ से १६/०५ तक,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ बाद, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य),

मुण्डन में विशेषः– किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी–मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ चं.	मई ५	पुन.	१५/४६ से १७/११ तक, (१५/४६ तक क्रान्तिसाम्य)
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	११/२७ तक,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ बाद, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य)

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

वैशा.कृ. १ बु.	अप्रै. १६	स्वा.	१२/४१ बाद, (शुक्रवेध विचार्य)
वैशा.कृ. ५ र.	अप्रै. २०	मूल	
वैशा.कृ. १० गु.	अप्रै. २४	धनि.	८/५० तक,
वैशा.कृ. ११ शु.	अप्रै. २५	शत.	१२/१५ तक,
वैशा.शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० बाद,
वैशा.शु. ३ शु	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा.शु. ५ र.	मई ४	आर्द्रा	१५/२८ तक,
वैशा.शु. ५ र.	मई ४	पुन.	१५/२८ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः– बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.शु. १२ र.	मई ११	हस्त	६/२४ बाद, (शुक्रवेध विचार्य)
ज्ये. कृ. १० शु.	मई २३	पू.भा.	१४/५३ तक,
ज्ये. शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	
ज्ये. शु. ६ बु.	जून ४	आश्ले.	७/४६ तक,
ज्ये. शु. १० र.	जून ८	हस्त	१६/२६ बाद,
आषा. कृ. ६ बु.	जून १८	शत.	१५/०७ तक,
माघ शु. १ बु.	जन. २१	श्रव.	१५/१५ बाद,
माघ शु. १० गु.	जन. २९	रोहि.	११/३८ से १६/२६ तक, (१६/२६ बाद क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. ६	पू.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ र.	फर. ८	हस्त	१५/०१ बाद,
फाल्गु. कृ. ११ र.	फर. १५	मूल	१६/३० तक,
फाल्गु. कृ. ११ र.	फर. १५	पू.षा.	१६/३० बाद,
फाल्गु. शु. २ शु.	फर. २०	पू.भा.	
चैत्र कृ. ३ र.	मार्च ८	हस्त	१३/०१ से १७/३० तक, (१३/०१ तक क्रान्तिसाम्य),

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

वैशा.शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० बाद, (बुधवेध विचार्य),
ज्ये. कृ. ५ चं.	मई १६	उ.षा.	
ज्ये. शु. ५ मं.	जून ३	आश्ले.	

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

गृहारम्भमुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

नूतन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. १२ मं.	जून १०	स्वा.	
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. ६	पू.फा.	
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	९/३४ तक, (९/३४ बाद रोगबाण),
फाल्गु. शु. २ शु.	फर. २०	पू. भा.	
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ बाद, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य),
चैत्र कृ. ४ मं.	मार्च १०	स्वा.	८/५७ बाद,

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० से २७/३३ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	मई २	मृग.	११/१८ से २४/४० तक,
वैशा. शु. ६ चं.	मई ५	पुन.	१५/४६ से १८/१० तक, (१५/४६ तक क्रान्तिसाम्य),
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	हस्त	७/३५ तक, (शुक्रवेद्ध विचार्य),
मार्ग. शु. १२ बु.	दिसं. ३	अश्वि.	२२/२९ तक,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ से १८/३८ तक, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य),

द्विरागमन में विशेष– विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव–विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भमुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ. ११ शु.	अप्रै. २५	शत.	१२/१५ तक,
*वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० बाद,
*वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	हस्त	७/३५ तक, (शुक्रवेध विचार्य),
माघ शु. १० गु.	जन. २९	रोहि.	११/३८ से १६/२९ तक, (१६/२९ बाद क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	११/२७ तक,
*फाल्गु.कृ. ७ बु.	फर. ११	स्वा.	८/१२ से १६/०५ तक,

* तारांकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष–वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

*वैशा. कृ. ७ चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	१८/०८ बाद,
*वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० से २७/३३ तक,
*वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. ११ श.	मई १०	उ.फा.	१४/२० तक,
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	चित्रा	७/३५ से १९/५० तक, (१९/५०बाद राहुयुति- अपरिहार्य)
*ज्ये. कृ. १ गु.	मई १५	अनु.	११/५४ बाद,
*ज्ये. कृ. ५ चं.	मई १९	उ.षा.	२२/१३ तक, (बुधवेध विचार्य),
ज्ये. कृ. ११ श.	मई २४	रेव.	१६/२५ बाद,
*ज्ये. शु. १ गु.	मई २९	मृग.	१८/१९ बाद,
*ज्ये. शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	११/५६ तक,

नूतन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. १० गु.	जन. २९	रोहि.	११/३८ से १६/२९ तक, (१६/२९ बाद क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. कृ. १२ चं.	फर. १६	उ.षा.	१४/४० से १९/४६ तक,

* तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है। अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

वैशा. कृ. १ बु.	अप्रै. १६	स्वा.	२३/०७ तक,
वैशा. कृ. ७ चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	१८/०८ बाद,
वैशा. कृ. ९ बु.	अप्रै. २३	धनि.	२१/५७ बाद,
वैशा. कृ. १० गु.	अप्रै. २४	धनि.	८/५० तक,
वैशा. कृ. १० गु.	अप्रै. २४	शत.	१९/४३ बाद,
वैशा. कृ. ११ शु.	अप्रै. २५	शत.	१२/१५ तक,
वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० से २७/३३ तक,
वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. ६ चं.	मई ५	पुष्य	१८/१० से २८/५६ तक,
वैशा. शु. ११ श.	मई १०	उ.फा.	१४/२० तक,
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	चित्रा	७/३५ से २७/०८ तक,
ज्ये. कृ. ५ चं.	मई १९	उ.षा.	२२/१३ तक,
ज्ये. कृ. ७ बु.	मई २१	धनि.	१९/०२ तक,
ज्ये. कृ. ११ श.	मई २४	उ.भा.	१६/२५ तक,
ज्ये. कृ. ११ श.	मई २४	रेव.	१६/२५ बाद,
ज्ये. शु. १ गु.	मई २९	मृग.	२५/०० बाद,
ज्ये. शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	११/५६ तक,
ज्ये. शु. ४ चं.	जून २	पुष्य	६/०४ से २८/५१ तक,
श्राव. कृ. २ चं.	जुला. १४	धनि.	१२/०४ से १९/३० तक,
श्राव. कृ. ६ गु.	जुला. १७	उ.भा.	२१/३५ तक,
श्राव. कृ. ७ शु.	जुला. १८	रेव.	८/५१ से २७/३१ तक,

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. कृ. १२ बु.	जुला. २३	रोहि.	७/४३ तक,
श्राव. कृ. १२ बु.	जुला. २३	मृग.	७/४३ से २६/५५ तक,
श्राव. शु. ४ गु.	जुला. ३१	उ.फा.	१३/४७ बाद,
श्राव. शु. ६ श.	अग. २	चित्रा	८/०४ बाद,
श्राव. शु. ८ चं.	अग. ४	स्वा.	६/१४ से १०/५४ तक,
श्राव. शु. १० बु.	अग. ६	अनु.	१०/३७ तक,
कार्ति. कृ. ८ गु.	अक्तू. १६	पुष्य	१०/४६ बाद,
कार्ति. शु. ७ गु.	अक्तू. ३०	उ.षा.	१५/४५ तक,
कार्ति. शु. ९ श.	नवं. १	धनि.	१७/०० से २३/२० तक,
कार्ति. शु. १३ बु.	नवं. ५	रेव.	१६/५६ तक,
मार्ग. कृ. ७ गु.	नवं. १३	पुष्य	१८/१६ से २१/४१ तक,
मार्ग. कृ. १० चं.	नवं. १७	उ.फा.	१४/५६ बाद,
मार्ग. शु. ४ बु.	नवं. २६	उ.षा.	११/१० तक,
मार्ग. शु. ७ शु.	नवं. २८	धनि.	१४/११ तक,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १	उ.भा.	२५/१४ तक,
मार्ग. शु. १५ श.	दिसं. ६	रोहि.	२३/३६ तक,
माघ कृ. २ बु.	जन. ७	पुष्य	१३/४६ तक,
माघ कृ. ११ शु.	जन. १६	अनु.	८/४८ बाद,
माघ शु. ५ श.	जन. २४	उ.भा.	१४/४३ बाद,
माघ शु. ७ चं.	जन. २६	रेव.	११/४७ तक,
माघ शु. ११ शु.	जन. ३०	रोहि.	९/५५ तक,
माघ शु. १४ चं.	फर. २	पुष्य	१८/०२ से २६/३२ तक,
फाल्गु. कृ. ७ बु.	फर. ११	स्वा.	८/१२ से १६/०५ तक,
फाल्गु. शु. १ गु.	फर. १९	शत.	२५/३० से २७/२५ तक,
फाल्गु. शु. ३ श.	फर. २१	उ.भा.	१८/३१ तक,

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १ बु.	अप्रै. १६	स्वा.	(शुक्रवेध विचार्य),
वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. ११ श.	मई १०	उ.फा.	
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	हस्त	७/३५ तक, (शुक्रवेध विचार्य),
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	चित्रा	७/३५ बाद, (राहुयुतिपरिहार),
ज्ये. कृ. ५ चं.	मई १९	उ.षा.	(बुधवेध विचार्य,)
ज्ये. कृ. १२ र.	मई २५	रेव.	
ज्ये. शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	
आषा. कृ. ६ बु.	जून १८	शत.	
आषा. कृ. ९ श.	जून २१	रेव.	१०/२१ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	
फाल्गु. कृ. ७ बु.	फर. ११	स्वा.	८/१२ बाद,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ बाद, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य),

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

आषा. शु. २ र.	जून २९	पुन.	८/५६ तक,
आषा. शु. ३ चं.	जून ३०	पुष्य	११/५० तक,
आषा. शु. ७ शु.	जुला. ४	उ.फा.	
आषा. शु. ९ चं.	जुला. ७	स्वा.	६/२३ बाद,
मार्ग. शु. १२ बु.	दिसं. ३	अश्वि.	

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति–प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी–अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग–शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु–शुक्रास्त– काल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्ति–प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

(कृष्ण चतुर्थी)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ४ श.	अप्रै. १९		८/४१ तक,
ज्ये. कृ. ४ र.	मई १८		
आषा. कृ. ४ चं.	जून १६		
भाद्र. कृ. ४ गु.	अग. १४		९/५८ तक,
पौष कृ. ४ बु.	दिसं. १०		
फाल्गु. कृ. ४ र.	फर. ८		
चैत्र कृ. ३ चं.	मार्च ९		७/०१ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

(शुक्ल नवमी, मूल नक्षत्र)

वैशा. कृ. ५ र.	अप्रै. २०	मूल	
वैशा. शु. ९ गु.	मई ८		
ज्ये. कृ. ३ श.	मई १७	मूल	७/१० तक,
ज्ये. शु. ९ श.	जून ७		
आषा. शु. ८ र.	जुला. ६		५/५८ बाद,
भाद्र. शु. ९ बु.	सितं. ३		
भाद्र. शु. १० गु.	सितं. ४	मूल	
माघ शु. ९ बु.	जन. २८		
फाल्गु. कृ. ११ र.	फर. १५	मूल	

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय– काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)
(कृष्ण चतुर्दशी, आर्द्रा नक्षत्र)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १४ चं.	अप्रै. २८		
वैशा. शु. ५ र.	मई ४	आर्द्रा	
ज्ये. शु. ३ श.	मई ३१	आर्द्रा	
आषा. कृ. १४ गु.	जून २६		
भाद्र. कृ. ११ गु.	अग. २१	आर्द्रा	
भाद्र. कृ. १४ र.	अग. २४		
माघ शु. १३ र.	फर. १	आर्द्रा	
फाल्गु.कृ. १४ बु.	फर. १८		६/०३ तक,

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)
(शुक्ल तृतीया)

वैशा. शु. ३ शु.	मई २		
ज्ये. शु. ३ श.	मई ३१		
आषा. शु. ३ चं.	जून ३०		
भाद्र. शु. ३ गु.	अग. २८		
आश्वि. शु. ३ श.	सितं. २७		
माघ शु. २ गु.	जन. २२		११/४४ बाद,
फाल्गु. शु. ३ श.	फर. २१		

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

वैशा. कृ. १२ श.	अप्रै. २६	उ.भा.	११/०२ से १३/२४ तक,
वैशा. शु. २ गु.	मई १	रोहि.	१०/०० बाद,
वैशा. शु. ३ शु.	मई २	रोहि.	११/१८ तक,
वैशा. शु. ११ श.	मई १०	उ.फा.	१४/२० तक,
वैशा. शु. १२ र.	मई ११	हस्त	८/३३ बाद, (शुक्रवेध विचार्य),
वैशा. शु. १३ चं.	मई १२	हस्त	७/३५ तक, (शुक्रवेध विचार्य),
ज्ये. कृ. १ गु.	मई १५	अनु.	११/५४ बाद,
ज्ये. कृ. ५ चं.	मई १९	उ.षा.	(बुधवेध विचार्य),
ज्ये. कृ. ११ श.	मई २४	रेव.	१६/२५ बाद,

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०१४-१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १२ र.	मई २५	रेव.	१६/१४ तक,
ज्ये. शु. २ शु.	मई ३०	मृग.	११/५६ तक,
ज्ये. शु. ४ चं.	जून २	पुष्य	६/०४ बाद,
ज्ये. शु. ८ शु.	जून ६	उ.फा.	१३/१८ से १५/०४ तक,
ज्ये. शु. १० र.	जून ८	चित्रा	१६/४८ बाद,
आषा. कृ. ९ श.	जून २१	रेव.	१०/२१ बाद,
आषा. शु. २ र.	जून २९	पुष्य	८/५९ बाद,
आषा. शु. ३ चं.	जून ३०	पुष्य	११/५० तक,
आषा. शु. ७ शु.	जुला. ४	उ.फा.	
आषा. शु. ८ श.	जुला. ५	हस्त	१७/२४ बाद,
भाद्र. कृ. ४ गु.	अग. १४	उ.भा.	९/५८ से १२/१९ तक,
भाद्र. कृ. १० बु.	अग. २०	मृग.	८/२३ से १५/४१ तक,
भाद्र. शु. ३ गु.	अग. २८	हस्त	११/३० बाद,
भाद्र. शु. १२ श.	सितं. ६	उ.षा.	१२/०२ तक,
आश्वि. शु. १ गु.	सितं. २५	हस्त	१३/२२ से १९/३९ तक,
आश्वि. शु. २ शु.	सितं. २६	चित्रा	८/३४ तक, (८/३४ बाद- राहुयुति-अपरिहार्य)
मार्ग. शु. १२ बु.	दिसं. ३	अश्वि.	२२/२९ तक,
माघ शु. ७ चं.	जन. २६	अश्वि.	११/४७ बाद,
माघ शु. १० गु.	जन. २९	रोहि.	११/३८ से १६/२९ तक, (१६/२९ बाद क्रान्तिसाम्य),
फाल्गु. कृ. ४ र.	फर. ८	हस्त	१५/०१ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ चं.	फर. ९	हस्त	११/२७ तक,
फाल्गु. शु. ५ चं.	फर. २३	अश्वि.	१०/१८ बाद, (१०/१८ तक क्रान्तिसाम्य),
चैत्र कृ. २ श.	मार्च ७	हस्त	१४/३६ बाद,
चैत्र कृ. ३ र.	मार्च ८	हस्त	१३/०१ से १७/३० तक, (१३/०१ तक क्रान्तिसाम्य),

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त–काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी–देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी– देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें– गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुवल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का ही निर्देश किया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा–मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु–शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु भद्रा आदि को वर्जित किया जाता है ।

Gyan Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat,

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७१ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधार्थ सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि -- इन तिथि-भ-वारज एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोगोत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग-- जैसा कि, इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु--शुक्रास्त, अधिमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। **यहां दिए अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे-- गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग** (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए।

रवियोग-- रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है-- रवियोग सभी वुरे योगों को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति रखता है-- " कुयोगविध्वंस--कराःशुभेषु"।

सिद्धियोग-- सिद्धियोग भी **सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भान्ति ही महत्त्वशाली हैं। शास्त्रों का कहना है कि, सिद्धियोग में **यमघण्ट, विष** आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

त्रिपुष्करयोग-- मुहूर्त्तविदों का कथन है कि--इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि आदि) का खरीदना भी त्रिगुणकारी है-- ऐसा मुहूर्त्तविदों का कहना है। **द्विपुष्करयोग**--ये योग मुहूर्त्तविदों के कथनानुसार त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर--इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है-- " त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।"

(इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ--समाप्तिकालों के साधन में **श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय--कुराली (पं.)** के सुयोग्य कार्यकर्त्ता **श्रीकृष्ण शर्मा, M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य** द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है।-- प्रियव्रत शर्मा)

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
(अप्रै. १	सू. उ.	अप्रै. १	२३ ५६)मं.	मई ५	१८ १०	मई ६	सू. उ.	जून २	१ ५९	जून ३	४ ५१	जून २४	सू. उ.	जून २५	० २०
अप्रै. ३	० ०५	अप्रै. ३	सू. उ.	मई ६	२१ ०४	मई ७	सू. उ.	जून ३	सू. उ.	जून ४	सू. उ.	जून २५	सू. उ.	जून २६	सू. उ.
अप्रै. ११	१८ १५	अप्रै. १२	सू. उ.	मई ९	सू. उ.	मई १०	४ ५३	जून ६	सू. उ.	जून ६	१३ १८	जून २९	८ ५९	जून ३०	११ ५०
अप्रै. १३	सू. उ.	अप्रै. १३	२१ ४५	मई ११	सू. उ.	मई ११	६ ३४	(जून ८	सू. उ.	जून ८	१६ ४८)र.	जुला. १	सू. उ.	जुला. १	१४ ५१
(अप्रै. १३	२१ ४५	अप्रै. १४	सू. उ.)र.	(मई ११	६ ३४	मई १२	सू. उ.)र.	(जून ११	१६ २६	जून १२	सू. उ.)बु.	(जुला. ९	सू. उ.	जुला. १०	१ १०)बु.
अप्रै. १७	२२ ४०	अप्रै. १८	सू. उ.	मई १५	६ ४५	मई १६	५ २६	जून १२	सू. उ.	जून १२	१४ ५५	जुला. १३	सू. उ.	जुला. १३	१५ ००
अप्रै. २०	सू. उ.	अप्रै. २०	१९ ३३	मई १९	० ०४	मई १९	सू. उ.	जून १५	८ ०१	जून १६	५ २४	जुला. १४	सू. उ.	जुला. १४	१२ ०४
अप्रै. २७	सू. उ.	अप्रै. २७	१० ०२	मई १९	२२ १३	मई २०	सू. उ.	जून १६	५ ३०	जून १७	३ १०	जुला. १८	४ ०१	जुला. १८	सू. उ.
(अप्रै. २९	सू. उ.	अप्रै. २९	९ ०५)मं.	मई २५	१६ १४	मई २६	सू. उ.	(जून २०	२१ ४८	जून २१	सू. उ.)शु.	(जुला. १८	सू. उ.	जुला. १९	३ ३१)शु.
अप्रै. ३०	९ १७	मई १	सू. उ.	मई २७	१६ ५८	मई २९	सू. उ.	जून २२	सू. उ.	जून २२	२२ ०९	जुला. २२	सू. उ.	जुला. २२	५ ५३

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१४-१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

रवि योग (सन् २०१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१४-१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
जुला. २३	सू. उ.	जुला. २४	सू. उ.
जुला. २५	१२ २६	जुला. २६	सू. उ.
जुला. २७	सू. उ.	जुला. २७	१८ ०४
(अग. ६	सू. उ.	अग. ६	१० ३७)बु.
अग. १०	१ ४५	अग. १०	सू. उ.
अग. १४	१२ १९	अग. १५	सू. उ.
(अग. १५	सू. उ.	अग. १५	११ ०५)शु.
अग. १५	११ ०५	अग. १६	सू. उ.
अग. १८	११ ५२	अग. १९	सू. उ.
अग. २०	सू. उ.	अग. २०	१५ ४१
अग. २१	१८ १५	अग. २२	२१ ०४
अग. ३०	१५ ४७	अग. ३१	सू. उ.
सितं. १	१८ ०१	सितं. २	सू. उ.
सितं. ६	१२ ०२	सितं. ७	सू. उ.
सितं. १०	० ५१	सितं. १०	सू. उ.
सितं. ११	सू. उ.	सितं. १२	१९ ३१
सितं. १५	सू. उ.	सितं. १५	२० ३२
(सितं. १५	२० ३२	सितं. १६	सू. उ.)चं.
सितं. १८	सू. उ.	सितं. १९	३ २५
(सितं. १९	३ २५	सितं. १९	सू. उ.)गु.
सितं. २४	१७ ३१	सितं. २५	सू. उ.
सितं. २७	सू. उ.	सितं. २७	२२ ४२
सितं. २९	सू. उ.	सितं. २९	२३ ५४
अक्तू. ३	२० १७	अक्तू. ४	१८ १९
अक्तू. ७	११ २२	अक्तू. ८	सू. उ.
अक्तू. ९	सू. उ.	अक्तू.१०	५ ४८
(अक्तू.१२	४ ४०	अक्तू.१२	सू. उ.)श.
(अक्तू.१३	सू. उ.	अक्तू.१३	९ ३३)चं.
अक्तू. १३	९ ३३	अक्तू.१४	६ २४
अक्तू. १६	सू. उ.	अक्तू.१६	१० ४६

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४-१५ ई.	घं. मि.	२०१४-१५ ई.	घं. मि.
(अक्तू. १६	१० ४६	अक्तू.१६	१३ ४५)गु.
अक्तू. १६	१३ ४५	अक्तू.१७	सू. उ.
अक्तू. २२	सू. उ.	अक्तू.२३	२ ३७
अक्तू. ३१	सू. उ.	नवं. १	० ५३
नवं. ४	सू. उ.	नवं. ४	१८ २४
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ६	१५ ४४
(नवं. ८	१४ ३०	नवं. ९	सू. उ.)श.
(नवं. १०	सू. उ.	नवं. १०	१५ ३०)चं.
(नवं. १३	सू. उ.	नवं. १३	२१ ४१)गु.
नवं. १७	६ ३१	नवं. १७	सू. उ.
नवं. १९	सू. उ.	नवं. १९	११ ०१
दिसं. १	२ १६	दिसं. १	सू. उ.
(दिसं. ३	० २२	दिसं. ३	सू. उ.)मं.
(दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	२३ ३९)श.
दिसं. १४	१४ ५३	दिसं. १५	सू. उ.
दिसं. २१	२० १७	दिसं. २२	सू. उ.
दिसं. २८	७ ३८	दिसं. २९	६ ३५
(दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३१	५ ३८)मं.
(सन् २०१५ ई.)			
जन. १	५ ४३	जन. १	सू. उ.
जन. ९	१९ २८	जन. १०	सू. उ.
जन. ११	सू. उ.	जन. १२	१ ४१
(जन. १२	१ ४१	जन. १२	सू. उ.)र.
जन. १८	७ ३४	जन. १९	५ ५१
जन. २५	सू. उ.	जन. २५	१२ ५९
(जन. २७	सू. उ.	जन. २७	११ १०)मं.
जन. २८	११ ०८	जन. २९	सू. उ.
फर. २	१८ ०२	फर. ३	सू. उ.
फर. ३	२० ३१	फर. ४	सू. उ.
फर. ६	सू. उ.	फर. ७	५ २२

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.
फर. ८	सू. उ.	फर. ८	८ २९
(फर. ८	८ २९	फर. ८	१५ ०१)र.
फर. ८	१५ ०१	फर. ९	सू. उ.
फर. १२	१७ २६	फर. १३	सू. उ.
फर. १५	सू. उ.	फर. १५	१६ ३०
फर. २२	२० ००	फर. २३	सू. उ.
फर. २४	१७ ४९	फर. २६	सू. उ.
मार्च १	२३ ५४	मार्च ३	२ ३३
मार्च ३	सू. उ.	मार्च ४	५ २७
मार्च ६	सू. उ.	मार्च ६	११ ३४
(मार्च ८	सू. उ.	मार्च ८	१७ ३०)र.
(मार्च १२	० ०४	मार्च १२	सू. उ.)बु.
मार्च १२	सू. उ.	मार्च १३	१ ०९
मार्च १६	० १०	मार्च १६	सू. उ.
मार्च १६	२२ २९	मार्च १७	सू. उ.

रवि योग (सन् २०१४ ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

अप्रै. ३	० ०५	अप्रै. ४	० ५६
अप्रै. ५	२ २७	अप्रै. ६	४ ३५
अप्रै. ८	१० ०४	अप्रै. १०	१५ ४७
अप्रै. १२	२० १६	अप्रै. १३	२१ ४५
अप्रै. १४	७ ३६	अप्रै. १४	२२ ४३
अप्रै. २०	१९ ३३	अप्रै. २१	१८ ०८
मई २	११ १८	मई ३	१३ ०८
मई ४	१५ २८	मई ५	१८ १०
मई ७	२३ ५९	मई १०	४ ५३
मई १३	७ ५५	मई १४	७ ३७
मई १९	२२ १३	मई २०	२० ३१
मई ३१	२३ २२	जून २	१ ५९

रवि योग (सन् २०१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
जून ३	४ ५१	जून ४	७ ४९
जून ६	१३ १८	जून ९	१७ २७
जून ११	१६ २६	जून १२	१४ ५५
जून १८	१ ०८	जून १८	२३ ३१
जून ३०	११ ५०	जुला. १	१४ ५१
जुला. २	१७ ५२	जुला. ३	२० ४४
जुला. ६	१ ११	जुला. ६	१० ०८
जुला. ७	२ २५	जुला. ९	२ २४
जुला. १०	२३ १५	जुला. ११	२० ४८
जुला. १७	५ १२	जुला. १८	४ ०१
जुला. ३०	० ०६	जुला. ३१	३ ०३
अग. १	५ ४५	अग. २	८ ०४
अग. ३	८ ३०	अग. ३	९ ५०
अग. ५	११ १०	अग. ७	९ १६
अग. ९	४ ४१	अग. १०	१ ४५
अग. १५	११ ०५	अग. १६	१० ३६
अग. १७	६ १५	अग. १७	१० ५२
अग. २८	११ ३०	अग. २९	१३ ५१
अग. ३०	१५ ४७	अग. ३१	२ ०८
अग. ३१	१७ १२	सितं. १	१८ ०१
सितं. ३	१७ ३२	सितं. ५	१४ २४
सितं. ७	९ १९	सितं. ८	६ २६
सितं. १३	१९ ०५	सितं. १३	२० ०४
सितं. १४	१९ २६	सितं. १५	२० ३२
सितं. २६	२१ २३	सितं. २७	११ ३१
सितं. २७	२२ ४२	सितं. २८	२३ ३२
सितं. २९	२३ ५४	सितं. ३०	२३ ४४
अक्तू. २	२१ ५३	अक्तू. ४	१८ १९
अक्तू. ६	१३ ४४	अक्तू. ७	११ २२
अक्तू.१४	६ २४	अक्तू.१५	८ १९

रवि योग (सन् २०१४-१५ ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
अक्तू.२७	५ २९	अक्तू.२८	५ ०८
अक्तू.२९	४ २७	अक्तू.३०	३ ३०
नवं. १	० ५३	नवं. २	२१ ४२
नवं. ४	१८ २४	नवं. ५	१६ ५६
नवं. १२	१९ ०५	नवं. १३	२१ ४१
नवं. २५	१० ३८	नवं. २६	९ १४
नवं. २७	७ ४४	नवं. २८	६ १४
नवं. ३०	३ २७	दिसं. २	१ १४
दिसं. ४	२३ २२	दिसं. ५	२३ १८
दिसं. १२	८ ४८	दिसं. १३	११ ५०
दिसं. २४	१५ ०१	दिसं. २५	१२ ५१
दिसं. २६	१० ५०	दिसं. २७	९ ०४
दिसं. २९	६ ३५	दिसं. २९	१० ५१
दिसं. ३०	५ ५५	जन. १	५ ४३
(सन् २०१५ ई.)			
जन. ३	६ ५३	जन. ४	८ ०१
जन. १०	२२ ३६	जन. ११	१२ ५६
जन. १२	१ ४१	जन. १३	४ २६
जन. २२	१९ २८	जन. २३	१६ ५५
जन. २४	१४ ४३	जन. २४	१५ १०
जन. २५	१२ ५९	जन. २६	११ ४७
जन. २८	११ ०८	जन. ३०	१२ ३७
फर. १	१५ ५२	फर. २	१८ ०२
फर. १०	१४ ०२	फर. ११	१६ ०५
फर. २१	२२ ०२	फर. २२	२० ००
फर. २३	१८ ३४	फर. २४	१७ ४९
फर. २६	१८ २६	फर. २८	२१ ३५
मार्च ३	२ ३३	मार्च ४	५ २७
मार्च ५	५ ०९	मार्च ५	८ २९
मार्च १२	० ०४	मार्च १३	१ ०९

सिद्धि योग (सन् २०१४-१५ ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
अप्रै. ३	० ०५	अप्रै. ३	सू. उ.
अप्रै. ११	१८ १५	अप्रै. १२	सू. उ.
अप्रै. २०	सू. उ.	अप्रै. २०	१९ ३३
अप्रै. ३०	९ १७	मई १	सू. उ.
मई ९	सू. उ.	मई १०	४ ५३
मई १९	२२ १३	मई २०	सू. उ.
मई २८	सू. उ.	मई २८	१७ ५६
जून ६	सू. उ.	जून ६	१३ १८
जून १६	५ ३०	जून १७	३ १०
जुला. १४	सू. उ.	जुला. १४	१२ ०४
अग. २१	१८ १५	अग. २२	सू. उ.
अग. ३०	१५ ४७	अग. ३१	सू. उ.
सितं. १०	० ५१	सितं. १०	सू. उ.
सितं. १८	सू. उ.	सितं. १९	३ २५
सितं. २७	सू. उ.	सितं. २७	२२ ४२
अक्तू. ७	११ २२	अक्तू. ८	सू. उ.
अक्तू.१६	सू. उ.	अक्तू.१६	१० ४६
नवं. ४	सू. उ.	नवं. ४	१८ २४
दिसं. २१	२० ५७	दिसं. २२	सू. उ.
(सन् २०१५ ई.)			
जन. १	५ ४३	जन. १	सू. उ.
जन. ९	१९ २८	जन. १०	सू. उ.
जन. १८	७ ३४	जन. १९	५ ५१
जन. २८	११ ०८	जन. २९	सू. उ.
फर. ६	सू. उ.	फर. ७	५ २२
फर. १५	सू. उ.	फर. १५	१६ ३०
फर. २५	सू. उ.	फर. २५	१७ ४७
मार्च ६	सू. उ.	मार्च ६	११ ३४
मार्च १६	२२ २९	मार्च १७	सू. उ.

द्विपुष्कर योग

(२०१४-१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
अप्रै. ५	२२ ५४	अप्रै. ६	४ ३५
मई २०	२० ३१	मई २१	सू. उ.
अग. २	१७ १७	अग. ३	९ ५०
अक्तू. ५	४ ३२	अक्तू. ५	१६ ०५
दिसं. ७	१८ ०२	दिसं. ८	० २७
(सन् २०१५ ई.)			
जन. ३१	सू. उ.	जन. ३१	१४ ०३
मार्च १७	२० १५	मार्च १८	१ ५५

त्रिपुष्कर योग

(सन् २०१४-१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
अप्रै. २६	सू. उ.	अप्रै. २६	११ ०२
मई ११	२ ५४	मई ११	६ ३४
जून २४	सू. उ.	जून २४	१० १०
जून २८	१५ २८	जून २९	८ ५९
जुला. १३	१३ ०६	जुला. १३	१५ ००
सितं. १	५ १५	सितं. १	सू. उ.
सितं. ६	सू. उ.	सितं. ६	१२ ०२
सितं. १४	१८ ४०	सितं. १४	१९ २६
अक्तू.२५	सू. उ.	अक्तू.२६	३ ३९
नवं. ८	सू. उ.	नवं. ८	१४ ३०
दिसं. २३	१७ १२	दिसं. २४	१ ४१
दिसं. २७	१४ ५४	दिसं. २८	७ ३८
(सन् २०१५ ई.)			
जन. ११	२३ ५५	जन. १२	१ ४१
फर. २४	१७ ४९	फर. २५	सू. उ.
मार्च १	१४ ०२	मार्च १	२३ ५४
मार्च ७	सू. उ.	मार्च ७	१४ ३८

अमृतसिद्धि योग

(सन् २०१४-१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
(अप्रै. १	सू. उ.	अप्रै. १	२३ ५६)मं.
(अप्रै. १३	२१ ४५	अप्रै. १४	सू. उ.)र.
(अप्रै. २९	सू. उ.	अप्रै. २९	९ ०५)मं.
(मई ११	६ ३४	मई १२	सू. उ.)र.
(जून ८	सू. उ.	जून ८	१६ ४८)र.
(जून ११	१६ २६	जून १२	सू. उ.)बु.
(जून २०	२१ ४८	जून २१	सू. उ.)शु.
(जुला. ९	सू. उ.	जुला. १०	१ १०)बु.
(जुला. १८	सू. उ.	जुला. १९	३ ३१)शु.
(अग. ६	सू. उ.	अग. ६	१० ३७)बु.
(अग. १५	सू. उ.	अग. १५	११ ०५)शु.
(सितं. १५	२० ३२	सितं. १६	सू. उ.)चं.
(सितं. १९	३ २५	सितं. १९	सू. उ.)गु.
(अक्तू. १२	४ ४०	अक्तू. १२	सू. उ.)श.
(अक्तू. १३	सू. उ.	अक्तू. १३	९ ३३)चं.
(अक्तू. १६	१० ४६	अक्तू. १६	१३ ४५)गु.
(नवं. ८	१४ ३०	नवं. ९	सू. उ.)श.
(नवं. १०	सू. उ.	नवं. १०	१५ ३०)चं.
(नवं. १३	सू. उ.	नवं. १३	२१ ४१)गु.
(दिसं. ३	० २२	दिसं. ३	सू. उ.)मं.
(दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	२३ ३९)श.
(दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३१	५ ३८)मं.
(सन् २०१५ ई.)			
(जन. १२	१ ४१	जन. १२	सू. उ.)र.
(जन. २७	सू. उ.	जन. २७	११ १०)मं.
(फर. ८	८ २९	फर. ८	१५ ०१)र.
(मार्च ८	सू. उ.	मार्च ८	१७ ३०)र.
(मार्च १२	० ०४	मार्च १२	सू. उ.)बु.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2071 वि.) का 'आयुसाधन विशेषांक'

(लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :–

विषय पृष्ठ

(i) समस्या एवम् समाधान.. 279–286

(ii) आयुनिर्णय.. 288

(iii) यवन–मयादि–मतानुसार आयुनिर्णय.. 288–291

(iv) आचार्य केशवोक्त आयुसाधन.. 291–297

(v) ग्रहायु एवम् लग्नायु–साधन कोष्ठक.. 298–301

आगामी वर्ष सं. 2072 वि. का विशेषांक

अगले वर्ष (सं. 2072 वि. में) '**राशिफल विशेषांक**' होगा। अपनी राशि के जिस दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक राशिफल को आप पंचांगों, पत्र–पत्रिकाओं में या T.V. पर उत्कण्ठा से पढ़ते–सुनते हैं– वह कहां तक विश्वसनीय है– इसका खगोल–शास्त्रानुसारी तार्किक विश्लेषण इस अंक में आप पढ़ेंगे।

– प्रियव्रत शर्मा

' अभिजित् प्रकाशन ' की पुस्तकों के विज्ञापन इस पंचांग में कहां–कहां ?

पुस्तक	पृष्ठ	पुस्तक	पृष्ठ
(i) भारतीय लग्ननिर्णय....................	124	(vi) व्रत–पर्व–विवेक....................	303
(ii) लघु लग्नसारणी....................	267	(vii) मुहूर्त्त–गजानन....................	टा. पृ. 4
(iii) ग्रहोदयास्त–निर्णय....................	197	(viii) ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन....	304
(iv) गणक मार्त्तण्ड....................	278	(ix) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण..........	302
(v) शताब्दी ग्रहभोगांश....................	302	(x) विश्व लग्नसारणी....................	287

ये पुस्तकें एवम् मुफ्त विस्तृत पुस्तक–सूचीपत्र (catalogue) मंगवाने के लिए हमें नीचे दिए पते पर लिखिए।

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा लिखित उपरोक्त इन सभी पुस्तकों के लिए छपे मूल्य पर 25 प्रतिशत की छूट और डाकव्यय माफ किया गया है। यह योजना केवल 21 जून, 2014 ई. तक ही लागू रहेगी, बशर्ते कि– पुस्तकें हमारे स्टॉक में उपलब्ध हों।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला– हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC-ORBC-0100988) भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं: 090413 30161 हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा सूचित करना न भूलें।

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर 6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, **Phone: 0172-2565 303**

110 वर्ष का सर्वप्रथम खगोलसिद्ध सूक्ष्मतम पंचांग (दो भागों में)

(द्वितीय संस्करण उपलब्ध)

पृष्ठ संख्या 826

गणकमार्त्तण्ड

साईज 24X18 सें. मी.

कम्प्यूटर द्वारा तैयार और मुद्रित किया गया भारत का सबसे पहिला 110 वर्ष (सन् 1941 से 2050 ई. तक) का सूक्ष्मतम पंचांग, जिसकी तुलना विश्व के किसी भी प्रामाणिक **Ephemeris** से की जा सकती है।

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

---

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस महाग्रन्थ में जन्मपत्र आदि निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं –

1–भारत के सभी (35) प्रान्तों के प्रसिद्ध 4,000 से भी अधिक नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर)।

2–विश्व के प्रमुख 230 नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैं.टा. का अन्तर।

3–विश्व के लगभग 120 देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।

4–0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल तथा सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्तसाधन की विधि।

5–विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि तथा भारतीय पंचांग के तिथि–नक्षत्र–योग आदि को अन्य देशों के स्टैं. टा. में परिवर्तित करने की सोदाहरण विधियां और Summer Time का विवेचन।

6–इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।

7–'अन्तर्न्यासपद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।

8–प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश तक) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् उनसे इष्टकालिक लग्नसाधन का सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।

9–नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिल भारतीय लग्नसारणियां, तदनुसार इष्टकालिक लग्नसाधन की सोदाहरण विधि तथा सन् 1941 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिक काल और अयनांश।

10– समस्त भारत के नगरों (अक्षांशों) के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वाली अद्भुत सारणियां, जिनकी मदद से किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल एक मिनट में ही विना गणित किए जाना जा सकता है।

11– सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है, जिससे जातक की जन्मकुण्डली 2–3 मिनट में ही बनाई जा सकती है।

12– 220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि, नक्षत्र, योगों का दैनिक समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) है।

13– 220 पृष्ठों पर सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा दिए गए हैं।

14– 110 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के साप्ताहिक स्पष्ट मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्टग्रह को तुरन्त ही इष्टकालिक बना सकते हैं। ग्रहों के वक्री–मार्गी होने की तारीखें भी दी गई हैं।

15– 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूची, गुरु–शुक्र के अस्तोदय की तारीखें, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख सभी मासिक पर्व तथा हरिद्वार आदि के चारों महाकुम्भों की तारीखें दी गई हैं।

ध्यान रहे– 110 वर्ष के इस पंचांग की गणित और मुद्रण–दोनों Electronic Computer द्वारा ही किए गए है, जिससे इसमें गणित एवम् मुद्रणसम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि की तनिक भी गुंजायश नहीं है।

पुस्तक के दोनों भाग उत्कृष्ट Imported Paper पर मुद्रित एवम् आकर्षक टाईटलों में निबद्ध हैं।

मूल्य **Rs. 1150/–** + डाकव्यय **Rs. 60/–**

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य **M.O.** या **D.D.** द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए।

पुस्तक मिलने का पता :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्या–(i) ग्रहणकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा की क्रान्ति समान होती है, फिर भी सभी ग्रहणकाल क्रान्तिसाम्य की सूची में नहीं आते– ऐसा क्यों ?

(ii) अयनांश में वृद्धि के कारण भारतीय मासों का सम्बन्ध निरन्तर ऋतुओं से हटता जा रहा है। आगामी लगभग ग्यारह हज़ार वर्षों में अयनांश का मान 180° के लगभग हो जाएगा। तब ज्येष्ठ के महीने में कंपकंपाती सर्दी और पौष के मास में तेज गर्मी हुआ करेगी। क्या कोई ऐसी व्यवस्था (अधिकमास, क्षयमास की तरह या अन्य) सम्भव नहीं जिससे निरयण–पद्धति और सायन पद्धति में समन्वय स्थापित हो सके ?

(iii) चन्द्रदर्शन की तारीखों के साथ दिए गए चन्द्र के 'उन्नत शृंग' की दिशा और 'अंश' से क्या अभिप्राय है ?

(iv) जन्माष्टमी के दिन मध्यरात्रिकाल कौन सा लिया जाए ? रात्रि $12^h.00^m$ I.S.T., स्थानीय सूर्यास्त और सूर्योदय का मध्य का काल अथवा स्थानीय चन्द्रोदयकाल ?

श्री धनीराम शर्मा,
V.P.O. किरमच, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

समाधान–(i) सूर्य–चन्द्र के ग्रहणों के समय घटित होने वाली सूर्य–चन्द्र की क्रान्तियों में समानता को " क्रान्तिसाम्य " कहा जाता है और ग्रहणों से अन्य काल में घटित होने वाली सूर्य–चन्द्र की क्रान्तियों में समानता को " महापात " के नाम से पुकारा जाता है।

जब सूर्य और चन्द्र के भोगांशों (राशि, अंशादि) का अन्तर शून्य या 6 राशितुल्य होता है, तब वहां क्रमशः सूर्य एवं चन्द्र के ग्रहण की स्थिति बनती है। ग्रहण की इन स्थितियों में घटित होने वाली क्रान्तियों की समानता ' क्रान्तिसाम्य ' के नाम से पुकारी जाती है।

जब सूर्य और चन्द्र के भोगांशों का योग शून्य या 6 राशितुल्य हो, तब घटित होने वाली इन ग्रहों की क्रान्तियों की समानता को ' महापात ' की विशेष संज्ञा दी गई है। यह ' महापात '' भी दो प्रकार का है– भोगांशों के शून्यतुल्य

योग से घटित ' महापात ' "वैधृति महापात " तथा दोनों के भोगांशों के छः राशितुल्य योग से घटित ' महापात ' ' व्यतीपात महापात " कहलाता है। ध्यान रहे– ' महापात ' को भी दैवज्ञ लोग अकसर ' क्रान्तिसाम्य ' ही कहते हैं। ' श्री मार्तण्ड पंचांग ' में " यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्णकाल " स्तम्भ के अन्तर्गत दिए जाने वाले क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ–समाप्तिकाल ' महापात ' के ही प्रारम्भ–समाप्तिकाल हैं। इन्हें शुभकृत्यों में वर्जित किया जाता है। वैसे, सूर्य–चन्द्र–ग्रहणकालीन क्रान्तिसाम्य भी शुभकृत्यों में वर्ज्य है। लेकिन उसे ' महापात ' के प्रारम्भ–समाप्तिकालों के साथ चर्चित करना अनावश्यक समझा जाता है, क्योंकि शुभकृत्यों में सूर्य और चन्द्रग्रहण वाला पूरा दिन अपने ूर्वापरवर्त्ती दो दिनों के साथ स्वतः वर्जित होता ही है।

(ii) इसमें सन्देह नहीं– हमारी निरयण पंचांगगणना हमारे चैत्रादि मासों और तत्सम्बद्ध व्रत–पर्वों को नकी मूलभूत वर्त्तमान ऋतुओं से धीरे–धीरे विच्छिन्न करती जा रही है। इस समस्या का कोई समाधान सचमुच पलब्ध नहीं है। यदि बलात् सायनगणना के आधार पर पंचांगों के निर्माण का प्रयास किया भी गया तो हमारे मासों, र्वों का इन मूल ऋतुओं से स्थायी सम्बन्ध तो अवश्य बन जाएगा। लेकिन हमारे प्राचीन सिद्धान्त–फलित–योतिष–साहित्य, वेद–पुराण–स्मृति–धर्मशास्त्र–काव्य–महाकाव्य आदि हमारे अन्य समस्त प्राचीन साहित्य में लभ्यमान ाक्षत्र, ग्रहगतिस्थिति आदि के असंख्य सन्दर्भ असह्यरूपेण बुरी तरह विक्षुब्ध हो जाएंगे और भारतीय 'त्रिस्कन्ध ज्योतिष' ा पूरे का पूरा साहित्य अप्रयोज्य (Obsolete) हो जाएगा। यही कारण है, भारत सरकार द्वारा आयोजित Indian alendar Reformation Committee भी हमारे इस भारतीय पंचांग की नाक्षत्रप्रकृति को चाहते हुए भी सायनप्रकृति देने ं विफल रही। इस स्थिति में हम अपने पंचांग की इस अनभीष्ट प्रकृति को सहन करने के लिए बाधित हैं।

(iii) अमावस्या के अनन्तर सायं सूर्यास्तबाद शुक्लपक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया तिथि के दिन जब श्चिमक्षितिज से लगभग 12 अंश की ऊंचाई (उन्नतांश) पर नया चान्द दिखाई पड़ता है, तब उसके बिम्ब का गभग 180 अंशात्मक परिधिखण्ड (सुवर्ण के आधे कंगन जैसा) पश्चिमक्षितिज की ओर चमकता दीख पड़ता है। स दीप्त परिधिखण्ड के दो छोर (Ends), जिन्हें यहां ' श्रृंग ' कहा जाता है, उत्तर एवं दक्षिण दिशा में होते हैं। श्चिमक्षितिज से नीचे सूर्य की स्थिति–दिशा के अनुसार ये दोनों ' **श्रृंग** ' कभी ' चन्द्रबिम्ब के केन्द्र से गुजरने वाली श्चिमक्षितिज के समानान्तर रेखा (प' क क्ष'– नीचे दिया आलेख देखें) के नीचे रहते हैं। इस स्थिति में यह माना ाता है कि– चन्द्र का कोई भी श्रृंग उन्नत नहीं है। जब कभी दोनों श्रृंगों में से कोई एक– उत्तरी या दक्षिणी श्रृंग स रेखा से ऊपर उठा होता है, तब माना जाता है कि– चन्द्र का अमुक (उत्तरी या दक्षिणी) श्रृंग उन्नत है। देखें– नीचे दिए आलेख में उत्तरी श्रृंग उन्नत दिखाया गया है।) उन्नत श्रृंग कितने अंश उत्तर या दक्षिण में उन्नत — इसका निर्णय इस प्रकार करेंगे (आलेख देखिए)–

चन्द्रबिम्ब के केन्द्र (क) से उन्नत श्रृंग (श्रृं.) को छूती रेखा (क ग) खींचिए। इस रेखा और " चन्द्रबिम्ब के न्द्र से गुजरती पश्चिमक्षितिज की समानान्तर रेखा (प' क्ष') से चन्द्रबिम्ब के केन्द्र '**क**' में बने कोण (∠ग क ') के तुल्य श्रृंग (श्रृं.) के उन्नतांश हमें ज्ञात हो गए। (इस ' आलेख ' में उत्तरी श्रृंग उन्नत दिखाया गया है।)

और स्पष्टता के लिए यह आलेख देखिए–

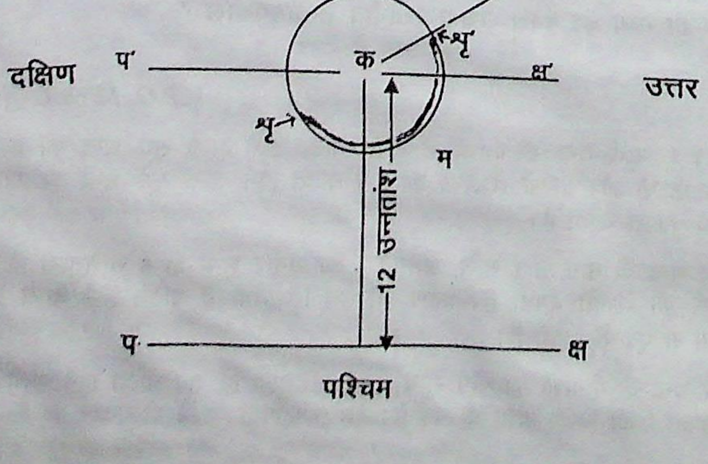

ख शृ. म शृ'. = चन्द्रबिम्ब
क = चन्द्रबिम्ब केन्द्र
प क्ष = पश्चिमक्षितिज
प' क क्ष' = बिम्बकेन्द्रगामी ' प क्ष '(पश्चिमक्षितिज) रेखा के समानान्तर रेखा।
शृ. म शृ.' = चन्द्रबिम्ब का दीप्त परिधिखण्ड।
शृ.' = उत्तर शृंग
शृ. = दक्षिण शृ.ंग
∠गकक्ष' = उत्तरी शृ.ंग का उन्नतांश कोण

(iv) स्थानीय रात्रिमान (सूर्यास्त से सूर्योदय तक के काल) को 15 से विभाजित करने पर रात्रि के एक मुहूर्त्त का मान प्राप्त होता है। रात्रि का आठवां मुहूर्त्त (रात्रि का मध्यवर्त्ती मुहूर्त्त) ' **निशीथ** ' कहलाता है। यह निशीथ रात्रि का मध्य माना गया है। कृष्णपक्ष की अष्टमी में निशीथ के आसपास ही चन्द्रोदय हुआ करता है। श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण का जन्म भाद्र. कृष्ण अष्टमी को ठीक चन्द्रोदय के समय बतलाया गया है। जिससे सामान्य जनता श्रीकृष्ण का जन्मकाल आसन्नमानेन मध्यरात्रि मानती है।

I. S. T. के अनुसार रात्रि के $12^h\ 00^m$ ($0^h\ 00^m$) का समय यथार्थ स्थानीय अर्धरात्रिकाल (निशीथ मध्यकाल = निशीथमुहूर्त्त का मध्यकाल) नहीं है। यह काल तो हमारी (भारत की) स्टैण्डर्ड मेरिडियन (82° 30' पू.) का स्थानीय मध्यमकाल है। स्वस्थानीय (स्वनगरीय) मेरिडियन का स्पष्टकालानुसारी $0^h\ 00^m$ काल ही स्वनगरीय यथार्थ रात्रिमध्यबिन्दु (निशीथमध्यकाल) होगा, जो स्थानीय सूर्यास्त एवं सूर्योदयकालों का ही मध्यबिन्दु है।

समस्या– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले क्रमशः वासन्त और शारद नवरात्रों से तो हम सभी परिचित हैं। लेकिन गत कुछ वर्षों से दो और नवरात्रों, जिन्हें **'गुप्तनवरात्रों '** की संज्ञा दी जाती है, की भी चर्चा सुनने को मिली है। इन गुप्तनवरात्रों की प्रारम्भ तिथियां तथा इनके अनुष्ठान आदि का कृपया परिचय दें। धर्मनिष्ठ समाज में इनका अब अच्छा प्रचार है, अतः इन्हें **'श्रीमार्त्तण्ढ पंचांग'** में प्रतिवर्ष निर्दिष्ट भी किया करें।

पं. रामदास शर्मा,
खिजराबाद (रूपनगर)।

समाधान– प्रचलित दो वासन्त और शारद नवरात्रों के अलावा जो दो और नवरात्र, जिन्हें गुप्तनवरात्र कहा जाता है, प्रचार में आए हैं, इनका प्रारम्भ आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा और माघ शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इनकी प्रारम्भ तिथियों का निर्णय ठीक उन्हीं धर्मशास्त्रीय नियमों के अनुसार होता है, जिनके आधार पर वासन्त, शारद नवरात्रों की प्रारम्भ तिथियों का। यहां एक बात ध्यान देने योग्य है– इन चारों नवरात्रों में से पहले तीन नवरात्रों का परस्पर अन्तर तीन–तीन मास का है– लेकिन चौथा नवरात्र (माघ मास वाला) अपने पूर्ववर्त्ती नवरात्र (आश्विन वाले नवरात्र) से चौथे मास पर घटित होता है। जबकि क्रमानुसार इसे पौष मास में घटित होना चाहिए। ऐसा लगता है– पौष मास को खर मास (धनुःस्थ सूर्य वाला मास) जानकर नवरात्रारम्भ के लिए उसे अनुपयुक्त मान लिया गया है।

इन नवरात्रों की अधिष्ठात्री देवी भी अन्य नवरात्रों की ही भान्ति दुर्गा ही है। इन नवरात्रों में किया जाने वाला अनुष्ठान आदि वासन्त, शारदनवरात्रों के अनुष्ठान से भिन्न नहीं है।

इन गुप्तनवरात्रों की चर्चा 'कालमाधव', 'तिथिनिर्णय', 'निर्णयसिन्धु' 'धर्मसिन्धु' आदि किसी भी व्रतपर्व–निर्णायक ग्रन्थ में नहीं है। इनका निर्देश केवल ' देवीभागवत ' में उपलब्ध है। इन नवरात्रों का विशेष प्रचार राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में रहा है, जो अब Media के प्रभाव से अन्य प्रान्तों में भी प्रविष्ट हो गया है।

समस्या– **क्या कारण था–सं. 2070 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' तथा महाराष्ट्र, गुजरात एवं द. भारत के पंचांगों में भी आश्वि. कृष्णपक्ष (महालय) का तृतीया–श्राद्ध उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन शनिवार को और चतुर्थीश्राद्ध उदयव्यापिनी तृतीया के दिन रविवार को लिखा गया था, जब कि पंजाब, हि.प्र., दिल्ली और राजस्थान के कुछ अन्य पंचांगों में ये श्राद्ध क्रमशः उदयव्यापिनी तृतीया और चतुर्थी के ही दिन (रवि और चन्द्रवार को ही) लिखे गए थे ?**

प्रो. डी.सी. शर्मा, M.A.,
भलवान–सरकाघाट (मण्डी) हि.प्र.।

समाधान– महालय श्राद्ध– पार्वण श्राद्ध होते हैं। ये पार्वण श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किए जाते हैं। (" पार्वणं त्वपराह्णके ")। यदि मृत्युतिथि (श्राद्ध तिथि) दो दिन अपराह्ण को विषमता से (एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम मात्रा में) व्याप्त करे तब धर्मशास्त्र का नियम है–उस तिथि का श्राद्ध उस दिन किया जाए जिस दिन वह अपराह्णकाल को अधिक मात्रा में व्याप्त कर रही हो। 'मरीचि स्मृति " का वचन है–

> " द्व्यपराह्णव्यापिनी स्यादाब्दिकस्य यदा तिथिः ।
> महती यत्र तद्विद्धां प्रशंसन्ति महर्षयः ।।"

सं. 2070 वि. में महालय की तृतीया और चतुर्थी तिथियां दो–दो दिन अपराह्ण को व्याप्त कर रही थीं। तृतीया शनि और रविवार को तथा चतुर्थी रवि और चन्द्रवार को अपराह्णव्यापिनी थीं। अतः उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार तृतीया–श्राद्ध शनिवार को (उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन) तथा चतुर्थी–श्राद्ध रविवार को (उदयव्यापिनी तृतीया के दिन) लिखा गया। क्योंकि ये तिथियां क्रमशः शनिवार और रविवार के दिन अपराह्णकाल को अधिक व्याप्त कर रही थीं।

इन दिनों पंजाब आदि में अपराह्णकाल लगभग $13^{\text{घं.}}$ $28^{\text{मि.}}$ से $15^{\text{घं.}}$ $53^{\text{मि.}}$ तक था।

स्पष्ट है– इन पंजाबादि प्रदेशों के जिन पंचांगकारों ने अपराह्णव्याप्ति की मात्रा का विचार किए बिना ही इन तिथियों के श्राद्ध क्रमशः उदयव्यापिनी तृतीया और चतुर्थी के ही दिन लगाए थे– वे शास्त्र–विहित नहीं थे।

समस्या–सं. 2069 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में श्रावणकृष्ण एकादशी (कामिका एकादशी) का व्रत स्मार्त्तों एवं वैष्णवों के लिए दो भिन्न–भिन्न तारीखों क्रमशः 14 और 15 जुलाई, 2012 ई.को लिखा था जब कि पंजाब के एक अन्य पंचांग में इसे दोनों के लिए केवल एक ही दिन 14 जुलाई को लिखा था– किसे ठीक समझा जाए ?

पं. नृदेव आचार्य,
वसन्तविहार, नई दिल्ली।

समाधान– यहां द्वादशी की वृद्धि है और एकादशी शुद्धा (अरुणोदयकाल में दशमी से अस्पृष्ट) है। इस स्थिति में सामान्यनियमानुसार तो वैष्णवों का व्रत भी स्मार्त्तों के व्रत के साथ ता. 14 जुलाई को ही (एकादशी के दिन) होना चाहिए। लेकिन आचार्य माधव (कालमाधवकार) के विशेष प्रतिपादनानुसार यहां वैष्णवों का व्रत एकादशी के दिन न होकर द्वादशी (वृद्धा द्वादशी) के दिन 15 जुलाई, 2012 ई. को ही (स्मार्त्तों के व्रतदिन से दूसरे दिन) होना चाहिए। इस विषय में ' धर्मसिन्धु ' का यह सोदाहरण विवेचन देखिए–

> " अथ दशमी 55 घ., एकादशी 58 घ., द्वादशी 60 घ. 1 प.– इयं शुद्धा (दशम्या अरुणोदये अविद्धा) एकादशी, द्वादशीमात्राधिक्यवती, अत्र वैष्णवानां द्वादश्यामुपोषणम्, स्मार्त्तानां पूर्वा। "

इस प्रमाण से 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दिया यह स्मार्त्तों और वैष्णवों का एकादशीव्रत शास्त्रविहित सिद्ध है।

ध्यान रहे– ' धर्मसिन्धु 'कार द्वारा उद्धृत यह उपरोक्त मत ' कालमाधव 'कार का है। यहां ' हेमाद्रि ' का मत आचार्य 'माधव' के मत के प्रतिकूल है। उसके मतानुसार तो इस उपरोक्त स्थिति में स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के व्रतके ही दिन (षष्टिघट्यात्मिका द्वादशी को) होना चाहिए। लेकिन अधिकतर आचार्य एवं 'पंचांगकार' इस स्थिति में कालमाधव को ही प्रामाणिकता देते हैं। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है, आप द्वारा निर्दिष्ट इस पंजाबी पंचांग में दिया गया एकादशी–व्रतनिर्णय माधव और हेमाद्रि– दोनों की दृष्टि से शास्त्रानुकूल नहीं है।

समस्या– सं. 2069 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में माघ शुक्ल में गोंतरी (गौरी) तृतीया का व्रत 13 फरवरी, 2013 ई. को लिखा था, जब कि तृतीया का चन्द्रमा 12 फरवरी, 2013 ई. को उदय हुआ था। इसी (चन्द्रोदय के) आधार पर हमारे यहां बहुत सी महिलाओं ने यह व्रत इसी दिन (12 फरवरी, '13 को) रखा था। 13 फरवरी, 2013 को तो तृतीया तिथि बहुत कम (केवल 3 घ. 4 प. ही) थी। क्या कारण है– फिर भी आपने गौरी व्रत 13 फरवरी, 2013 ई. को ही लिखा।

श्री सतीश कुमार,
गांव–कुनेर रतियां (ऊना) हि. प्र.।

समाधान– ध्यान रहे– इस व्रत का चन्द्रोदयकाल से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि दूसरे दिन तृतीया सूर्योदयानन्तर एक मुहूर्त्त (लगभग 2 घड़ी) भी विद्यमान हो तो भी यह व्रत दूसरे ही दिन करने की शास्त्राज्ञा है। 'कालमाधव'कार का वचन है–

> " मुहूर्तमात्रसत्त्वेऽपि दिने गौरी व्रतं परे। "

'पुरुषार्थचिन्तामणि'कार का भी मत है–

" चैत्र–भाद्र–माघ–शुक्ल–तृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्त्तमात्राप्युत्तरैव।"

' धर्मसिन्धु'कार तो दूसरे दिन एक घटी से भी कम तृतीया में भी इस व्रत की अनुमति देते हैं। लेकिन इस बारे ' कालमाधव' एवं 'पुरुषार्थचिन्तामणि' के मत को ही मान्यता दी जाती है।

पंचांग के पाठकों से हमारा बार–बार नम्र निवेदन है– वे तिथि के घड़ी–पलों की मात्रा (कम या अधिक) देख कर उस तिथि के व्रतपर्व का स्वयं निर्णय न किया करें। क्योंकि– किसी तिथि के व्रत–पर्व के दिन का यथार्थ निर्णय व्रतपर्वशास्त्र के अध्ययन के बिना नहीं किया जा सकता। इसके लिए तिथि के घड़ी–पलों के अलावा अन्य कई बातों का विचार करना होता है।

समस्या— ' गण्डमूल ' का क्या अर्थ है ? अश्विनी आदि छः नक्षत्रों को ही गण्डमूल क्यों माना गया है ? अश्विनी आदि गण्डमूल नक्षत्रों के जिन चरणों को दोषरहित माना गया है, क्या उनमें उत्पन्न जातक का जन्म होने पर भी शान्ति करवानी चाहिए ?

श्री ओमप्रकाश शर्मा, रामकोट (फाज़िल्का) पं.।

समाधान— रेवती–अश्विनी, आश्लेषा–मघा और ज्येष्ठा–मूल – ये तीन नक्षत्रयुगल गण्डमूल कहे जाते हैं। इन नक्षत्रयुगलों के ये दो–दो नक्षत्र जहां परस्पर मिलते हैं, वहां क्रमशः मीन–मेष, कर्क–सिंह और वृश्चिक–धनु राशियां भी मिलती हैं। अर्थात् रेवती–अश्विनी की सन्धि पर मीन–मेष, आश्लेषा–मघा की सन्धि पर कर्क–सिंह और ज्येष्ठा–मूल की सन्धि पर वृश्चिक–धनु की भी सन्धि है। यही कारण है– इन नक्षत्रयुगलों को ' गण्डनक्षत्र ' कहा जाता है, जिसका अर्थ है– जोड़(सन्धि) वाले नक्षत्र। संस्कृत में गण्ड शब्द का अर्थ जोड़ या ' गांठ ' होता है। ध्यान रहे– इन तीन नक्षत्रयुगलों के अलावा और कोई ऐसा नक्षत्रयुगल नहीं है, जहां (जिनके मध्य) राशि–सन्धि घटित हो रही है।

' सूर्यसिद्धान्त ' में इन गण्डमूल नामक नक्षत्रयुगलो के पूर्ववर्त्ती नक्षत्रो के अन्तिम चरणों को 'भसन्धि' और परवर्त्ती नक्षत्रों के प्रथम चरणों को ' गण्डान्त ' कहा गया है। 'भसन्धि' एवं 'गण्डान्त' में जन्म होना जातक के लिए अशुभ एवं इनमें किया गया शुभकृत्य विफल माना गया है।

यद्यपि इन गण्डमूल नक्षत्रों के 'भसन्धि' एवं गण्डान्त ' नामक चरणों में ही जन्म दोषकारक बतलाया गया है, इनके शेष चरणों को निर्दोष कहा गया है– तथापि अनेक मुहूर्त्तशास्त्रियों का परामर्श है, इनके ' इन शेष ' तीन–तीन निर्दोषचरणों में उत्पन्न जातक की भी गण्डमूलशान्ति करवा देनी चाहिए क्योंकि दोषपूर्ण 'भसन्धि' और 'गण्डान्त' चरणों के सम्पर्क से इन चरणों में भी कुछ दोष रहता है– ऐसा माना जाता है।

समस्या— कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को ' धनतेरस ' का पर्व मनाया जाता है। पंचांगकारों में इसकी तिथि (दिन) के बारे में अनेकदा मतभेद देखा गया है। कोई इसे उदयव्यापिनी तिथि में और कोई इसे इससे पहले दिन बतलाते हैं। इसकी यथार्थ तिथि का निर्णय कैसे किया जाना चाहिए ?

मि. संजय पाठक, पंचकूला (हरि)।

समाधान— व्रतपर्व शास्त्रानुसार शुक्लपक्ष की त्रयोदशी पूर्वविद्धा और कृष्णपक्ष की परविद्धा लेनी चाहिए। यदि वह (कृष्ण त्रयोदशी) परविद्धा न प्राप्त हो तो उसे पूर्वविद्धा ले लेना चाहिए। [" शुक्ल–त्रयोदशी पूर्वा, परा कृष्णत्रयोदशी। अलाभे सापि पूर्वैव ....।"– (*कालमाधव*)] इस शास्त्रनियमानुसार ही धनतेरस का निर्णय करना चाहिए। ध्यान रहे– सूर्योदयानुसार त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी (लगभग 6 घटी तक व्याप्त) तिथि परविद्धा होती है। दिनमान को 5 से विभाजित करने पर शुद्ध (वास्तव) त्रिमुहूर्त्त का मान ज्ञात होता है।

कुछ पंचांगकार तो इसतिथि (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) को उदयमात्रव्यापिनी देख कर ही, त्रिमुहूर्त्तन्यून तिथि के दिन ही ' धनतेरस ' लिख देते हैं। जो शास्त्रविरुद्ध है।

समस्या— ' वसन्त पञ्चमी ' पर्व की तिथि (दिन) का निर्णय कैसे किया जाना चाहिए ? इसकी तिथि के निर्णय में भी पंचांगकारों में अनेकदा मतभेद पाया गया है।

डा. रेणुका जोशी, देहरादून (उ. खं)।

समाधान– पूर्वाह्ण में व्याप्त माघशुक्ल पंचमी के दिन यह पर्व मनाया जाना चाहिए। यदि पञ्चमी दूसरे ही दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो उसी दिन, यदि वह दोनों दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो इसे पहले ही दिन मनाया जाता है। (' परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा,अन्यथा पूर्वैव।' –धर्मसिन्धु) दिनमान का पूर्वार्ध ही पूर्वाह्णकाल है।

पाठक ध्यान दें– उदयव्यापिनी तिथि के आधार पर ही किसी व्रतपर्व की तिथि (दिन) का निर्णय पाठक को स्वयं नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि सभी व्रत–पर्वों के कर्मकाल (मध्याह्न, अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष आदि काल– जिसमें व्रत–पर्व के पूजादि अनुष्ठान किए जाते हैं) व्रत–पर्व–शास्त्र में भिन्न–भिन्न बतलाए गए हैं। अपने कर्मकाल में व्रत–पर्व की तिथि की व्याप्ति के आधार पर ही उस व्रत–पर्व के दिन का निर्णय शास्त्र–नियमानुसार करना होता है।

समस्या–(i) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग' वैक्रम संवत 2070 (2013–14 ई.) के पृष्ठ 254 पर " विवाह मुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार " निश्चितरूप से स्वागतयोग्य संशोधन है। किन्तु विक्रमी संवत् 2069(2011–12) **पृष्ठसंख्या ('श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग') 259 पर 'श्री मुकेशजैन' द्वारा प्रेषित शंका नं. ii में आप द्वारा दिए गए समाधान में नकारा गया है– इसका क्या कारण था ?**

(ii) लग्नभंग के 255 पृष्ठ पर अंकित दस परिहारों में यदि केन्द्र–कोण तथा एकादश भावों में स्थित बु., गु.,शु., चं., सू. तथा लग्नेश यदि नीच राशियों या शत्रु राशि में स्थित हों– तो ऐसी स्थिति में क्या लग्नभंगदोष का परिहार मान लिया जाए ?

(iii) क्या 'जन्मराशि' तथा 'जन्मलग्न' से 'अष्टम लग्नदोष' का परिहार भी उक्त दस परिहारों में से किसी एक की उपलब्धि से सम्भव है ?

श्री दुर्गालाल शर्मा, राजपुरोहित,
किश्तवाड़प्रदेश (जम्मू–काश्मीर राज्य)।

समाधान–(i) हमारा नवार्जित मौलिक ज्ञान अनेकदा पूर्वार्जित अपने ही ज्ञान में हमें संशोधन के लिए बाधित करता है। ऐसा हमारे अपने दिव्यद्रष्टा ऋषि–मुनियों एवं आचार्यों में भी हम देखने चले आ रहे हैं। हमारे संस्कृत वैयाकरण आचार्यों में भी ऐसे संशोधनों को प्रमा माना जाता रहा है– " **उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्।**" इस प्रमाणवाक्य का स्पष्ट अभिप्राय यही है– " **उत्तरोत्तरं चिन्तनानां प्रामाण्यम्।**"

लग्नभंग परिहारों के बारे में मेरा ज्ञान एकमात्र परम्पराप्राप्तनिर्णयों पर आधारित होने के कारण बुरी तरह अपूर्ण था– यह मुझे मुहूर्त्तग्रन्थों, संहिताओं के गंभीर परिशीलन से जब स्पष्ट हो गया, तब सुदृढ़ प्रमाणों से परिपुष्ट नवज्ञात इस लग्नभंग परिहार सिद्धान्त को मैंने अपने " मुहूर्त्तगजानन " ग्रन्थ के माध्यम से प्रेक्षावान् विद्वानों के सम्मुख उपस्थापित किया। इसे आप जैसे तर्कनिष्ठ विद्वानों ने प्रशस्य माना– यह मेरे मनस्तोष के लिए है।

(ii) इस तरह की असंख्य विषमताओं से ज्योतिष–फलितशास्त्र भरा पड़ा है। **ध्यान रहे–** परम्परागत लग्नभंग परिहार वाक्य भी इस प्रकार की असमाधेय समस्याओं का शिकार है। मैंने इसका उत्तर " **मुहूर्त्तगजानन** " के पृष्ठ 145 पर दिया है कि– अपनी बलवत्ता की मात्रा के अनुपात से ही केन्द्र, त्रिकोण, एकादशभावस्थ गुरु आदि ग्रह भग्नलग्न के दोष की न्यूनाधिक मात्रा का परिहार कर सकेंगे। वास्तविकता तो यह है, किसी ग्रह के कुप्रभाव एवं सुप्रभाव की मात्राओं का याथार्थ्येन परिपूर्णतया निर्णय शक्य नहीं है, क्योंकि (यवनेश्वर के शब्दों में) ग्रहों के विविध शुभाशुभ योगायोगों की संख्या " समुद्राम्बुवत् अप्रमेय " है, जिनका विश्लेषण सम्भव नहीं है।

(iii) हां, काफी कुछ सम्भव है। जब दस परिहारों में से प्रत्येक परिहार को लग्नभंग दोषों का परिहारक तथा लग्न का बलाधायक संहिताकारों ने माना है, तब यह इस दोष का भी कुछ परिहार करेगा ही। लग्नभंग–दोष के परिहार का अभिप्राय यही है कि– उस परिहृत–दोष लग्न में विवाहित दम्पती का जीवन यथासम्भव सुख–समृद्धि–सम्पन्न होगा। अतः " जन्मराशि तथा जन्मलग्न से अष्टम लग्न–दोष " को भी उसे कुछ न कुछ परिहृत करना ही चाहिए। वैसे, इस दोष के विशेष परिहार " एकाधिपत्ये राशीशे मैत्रे वा नैष दोषकृत्। " का प्रयोग भी हो सके तो करना चाहिए।

समस्या– कज्जली तृतीया और मुक्ताभरण– ये दो नए व्रत–पर्व कुछ दिनों से Calendars एवं पंचांगों में चर्चित हो रहे हैं। इनके बारे में जानकारी दें कि– ये कब और किस तरह मनाए जाते हैं ?

श्रीसुभाष त्रिवेदी, धौला कुआं, दिल्ली।

समाधान– ये पर्व अभी तक इधर पंजाब आदि में प्रचलित नहीं थे। आजकल Media के प्रचार–प्रसार से इनका अनुष्ठान इधर भी होने लगा है। इनकी तिथि के निर्णय और अनुष्ठान–प्रक्रिया के बारे में इस प्रकार जानिए–

कज्जली तृतीया— यह व्रत परविद्धा भाद्र. कृष्ण तृतीया (शुक्लादि गणितानुसार– श्रावण कृष्ण तृतीया) के दिन किया जाता है। इस व्रत के देवता विष्णु हैं। अतः इस दिन विष्णु की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। विष्णु–सहस्रनाम–स्तोत्र आदि का पाठ करना भी पुण्यप्रद है।

मुक्ताभरण– पूर्वविद्धा भाद्र. शुक्ल सप्तमी के दिन यह व्रत किया जाता है। इस दिन उमा और शिव की पूजा–अर्चना करनी चाहिए। इसके अनुष्ठान से दीर्घायु–पुत्र की प्राप्ति होती है। इस व्रत को ' सन्तानसप्तमी व्रत ' भी कहा जाता है।

समस्या–(i) एकादशी के दिन चावल नहीं खाने चाहिएं– क्या इस बारे कोई शास्त्रवाक्य है ?

(ii) ग्रहणवेध, ग्रहणशूल, ग्रहणसूतक– क्या परस्पर पर्यायवाची हैं ?

(iii) कंकणग्रहण की आकृति कैसी होती है ? इसे चित्र द्वारा व्यक्त कीजिएगा।

शेर सिंह राणा,
ग्राम रामपुर, रुड़की (हरिद्वार) उ.खं.।

समाधान–(i) " भात या ओदन एकादशी के दिन नहीं खाना चाहिए "– ऐसा कोई स्पष्ट शास्त्रवाक्य मेरी दृष्टि में नहीं आया। हां– " एकादशी में कुछ नहीं खाना चाहिए, उसदिन उपवास रखना चाहिए अन्न नहीं खाना चाहिए"– ऐसे अनेक वाक्य तो शास्त्रों में उपलब्ध हैं, जैसे–

" एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि "

तथा च –

" अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरिवासरे। " –इत्यादि–इत्यादि।

संस्कृत में ' अन्न ' शब्द का प्रयोग प्राधान्येन गेहूं, जौ, चावल, चना, मूंग आदि अनाजों (Cereals) के लिए ही होता है (जैसे– "अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः" आदि) इसका प्रयोग " उबले चावल (भात) के लिए भी पाया जाता है।" " वसिष्ठस्मृति " का यह वाक्य देखिए–

" शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तम् सतुषं धान्यमुच्यते।
आमं तु वितुषं ज्ञेयम् स्विन्नम् अन्नम् उदाहृतम्।।

(अर्थात् खेत में खड़े चावल 'शस्य', तुष (Husk) युक्त 'धान्य', तुषरहित 'आम' और उबले हुए चावल ' अन्न ' कहलाते हैं।

इससे यह प्रतीत होता है कि " अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरि॰वासरे। " इत्यादि वाक्यों में अन्न शब्द का ' भात ' अर्थ, ऐसे पर्वतीय, बंगदेशीय, दक्षिणभारतीय आदि लोगों द्वारा किया गया है, जिनका प्रमुख खाद्य ' भात ' है।

अपि च– वैदिक काल में चावल प्रमुख अन्न रहा है। वैसे– धर्मशास्त्र के असंख्य वाक्य एकादशी में सर्वथा अनशन, उपवास (सभी प्रकार के अनाजों, खाद्यों के त्याग) का ही आदेश देते हैं। धर्मशास्त्र के इन वाक्यों में यह कहीं भी निर्देश नहीं है कि– एकादशी के दिन भात नहीं खाना चाहिए। वे तो भोजन (खाना खाने) का ही स्पष्ट रूप में निषेध करते हैं– " एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि " – इत्यादि।

अतः स्पष्ट है– जो लोग एकादशी के दिन केवल चावलों कों ही अभक्ष्य मान लेते हैं और शेष गेहूं, जौ, चना, मूंग आदि का भोजन कर लेना शास्त्रविहित समझते हैं, सर्वथा भ्रान्त हैं।

(ii) ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। यहां ' ग्रहणसूतक ' शब्द प्रसवसूतक (प्रसवाशौच) के सादृश्य पर बना है।

(iii) खग्रास सूर्यग्रहण में सूर्यबिम्ब चन्द्रबिम्ब से पूरी तरह ढक जाता है जब कि कंकण ग्रहण में उसे

समाधान– पूर्वाह्ण में व्याप्त माघशुक्ल पंचमी के दिन यह पर्व मनाया जाना चाहिए। यदि पञ्चमी दूसरे ही दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो उसी दिन, यदि वह दोनों दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो इसे पहले ही दिन मनाया जाता है। (' परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा, अन्यथा पूर्वेव।' –धर्मसिन्धु) दिनमान का पूर्वार्ध ही पूर्वाह्णकाल है।

पाठक ध्यान दें– उदयव्यापिनी तिथि के आधार पर ही किसी व्रतपर्व की तिथि (दिन) का निर्णय पाठक को स्वयं नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि सभी व्रत–पर्वों के कर्मकाल (मध्याह्न, अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष आदि काल– जिसमें व्रत–पर्व के पूजादि अनुष्ठान किए जाते हैं) व्रत–पर्व–शास्त्र में भिन्न–भिन्न बतलाए गए हैं। अपने कर्मकाल में व्रत–पर्व की तिथि की व्याप्ति के आधार पर ही उस व्रत–पर्व के दिन का निर्णय शास्त्र–नियमानुसार करना होता है।

समस्या–(i) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग' वैक्रम संवत 2070 (2013–14 ई.) के पृष्ठ 254 पर " विवाह मुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार " निश्चितरूप से स्वागतयोग्य संशोधन है। किन्तु विक्रमी संवत् 2069(2011–12) पृष्ठसंख्या ('श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग') 259 पर 'श्री मुकेशजैन' द्वारा प्रेषित शंका नं. ii में आप द्वारा दिए गए **समाधान में नकारा गया है– इसका क्या कारण था ?**

(ii) लग्नभंग के 255 पृष्ठ पर अंकित दस परिहारों में यदि केन्द्र–कोण तथा एकादश भावों में स्थित बु., गु.,शु., चं., सू. तथा लग्नेश यदि नीच राशियों या शत्रु राशि में स्थित हों– तो ऐसी स्थिति में क्या लग्नभंगदोष का परिहार मान लिया जाए ?

(iii) क्या ' जन्मराशि ' तथा ' जन्मलग्न ' से ' अष्टम लग्नदोष ' का परिहार भी उक्त दस परिहारों में से किसी एक की उपलब्धि से सम्भव है ?

श्री दुर्गालाल शर्मा, राजपुरोहित,
किश्तवाड़प्रदेश (जम्मू–काश्मीर राज्य)।

समाधान–(i) हमारा नवार्जित मौलिक ज्ञान अनेकदा पूर्वाजित अपने ही ज्ञान में हमें संशोधन के लिए बाधित करता है। ऐसा हमारे अपने दिव्यद्रष्टा ऋषि–मुनियों एवं आचार्यों में भी हम देखते चले आ रहे हैं। हमारे संस्कृत वैयाकरण आचार्यों में भी ऐसे संशोधनों को प्रमा माना जाता रहा है– " उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम् ।" इस प्रमाणवाक्य का स्पष्ट अभिप्राय यही है– " उत्तरोत्तरं चिन्तनानां प्रामाण्यम् ।"

लग्नभंग परिहारों के बारे में मेरा ज्ञान एकमात्र परम्पराप्राप्तनिर्णयों पर आधारित होने के कारण बुरी तरह अपूर्ण था– यह मुझे मुहूर्त्तग्रन्थों, संहिताओं के गंभीर परिशीलन से जब स्पष्ट हो गया, तब सुदृढ़ प्रमाणों से परिपुष्ट नवज्ञात इस लग्नभंग परिहार सिद्धान्त को मैंने अपने " मुहूर्त्तगजानन " ग्रन्थ के माध्यम से प्रेक्षावान् विद्वानों के सम्मुख उपस्थापित किया। इसे आप जैसे तर्कनिष्ठ विद्वानों ने प्रशस्य माना– यह मेरे मनस्तोष के लिए है।

(ii) इस तरह की असंख्य विषमताओं से ज्योतिष–फलितशास्त्र भरा पड़ा है। ध्यान रहे– परम्परागत लग्नभंग परिहार वाक्य भी इस प्रकार की असमाधेय समस्याओं का शिकार है। मैंने इसका उत्तर " मुहूर्त्तगजानन " के पृष्ठ 145 पर दिया है कि– अपनी बलवत्ता की मात्रा के अनुपात से ही केन्द्र, त्रिकोण, एकादशभावस्थ गुरु आदि ग्रह भग्नलग्न के दोष की न्यूनाधिक मात्रा का परिहार कर सकेंगे। वास्तविकता तो यह है, किसी ग्रह के कुप्रभाव एवं सुप्रभाव की मात्राओं का याथार्थ्येन परिपूर्णतया निर्णय शक्य नहीं है, क्योंकि (यवनेश्वर के शब्दों में) ग्रहों के विविध शुभाशुभ योगायोगों की संख्या " समुद्राम्बुवत् अप्रमेय " है, जिनका विश्लेषण सम्भव नहीं है।

(iii) हां, काफी कुछ सम्भव है। जब दस परिहारों में से प्रत्येक परिहार को लग्नभंग दोषों का परिहारक तथा लग्न का बलाधायक संहिताकारों ने , माना है, तब यह इस दोष का भी कुछ परिहार करेगा ही। लग्नभंग–दोष के परिहार का अभिप्राय यही है कि– उस परिहृत–दोष लग्न में विवाहित दम्पती का जीवन यथासम्भव सुख–समृद्धि–सम्पन्न होगा। अतः " जन्मराशि तथा जन्मलग्न से अष्टम लग्न–दोष " को भी उसे कुछ न कुछ परिहृत करना ही चाहिए। वैसे, इस दोष के विशेष परिहार " एकाधिपत्ये राशीशे मैत्रे वा नैष दोषकृत्। " का प्रयोग भी हो सके तो करना चाहिए।

समस्या– कज्जली तृतीया और मुक्ताभरण– ये दो नए व्रत–पर्व कुछ दिनों से Calendars एवं पंचांगों में चर्चित हो रहे हैं। इनके बारे में जानकारी दें कि– ये कब और किस तरह मनाए जाते हैं ?

श्रीसुभाष त्रिवेदी, धौला कुआं, दिल्ली।

समाधान–. ये पर्व अभी तक इधर पंजाब आदि में प्रचलित नहीं थे। आजकल Media के प्रचार–प्रसार से इनका अनुष्ठान इधर भी होने लगा है। इनकी तिथि के निर्णय और अनुष्ठान–प्रक्रिया के बारे में इस प्रकार जानिए–

कज्जली तृतीया–– यह व्रत परविद्धा भाद्र. कृष्ण तृतीया (शुक्लादि गणितानुसार– श्रावण कृष्ण तृतीया) के दिन किया जाता है। इस व्रत के देवता विष्णु हैं। अतः इस दिन विष्णु की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। विष्णु–सहस्रनाम–स्तोत्र आदि का पाठ करना भी पुण्यप्रद है।

मुक्ताभरण– पूर्वविद्धा भाद्र. शुक्ल सप्तमी के दिन यह व्रत किया जाता है। इस दिन उमा और शिव की पूजा–अर्चना करनी चाहिए। इसके अनुष्ठान से दीर्घायु–पुत्र की प्राप्ति होती है। इस व्रत को ' सन्तानसप्तमी व्रत ' भी कहा जाता है।

समस्या–(i) एकादशी के दिन चावल नहीं खाने चाहिएं– क्या इस बारे कोई शास्त्रवाक्य है ?

(ii) ग्रहणवेध, ग्रहणशूल. ग्रहणसूतक– क्या परस्पर पर्यायवाची हैं ?

(iii) कंकणग्रहण की आकृति कैसी होती है ? इसे चित्र द्वारा व्यक्त कीजिएगा।

शेर सिंह राणा,
ग्राम रनपुर, रुड़की (हरिद्वार) उ.खं.।

समाधान–(i) " भात या ओदन एकादशी के दिन नहीं खाना चाहिए "– ऐसा कोई स्पष्ट शास्त्रवाक्य मेरी दृष्टिं में नहीं आया। हां– " एकादशी में कुछ नहीं खाना चाहिए, उसदिन उपवास रखना चाहिए अन्न नहीं खाना चाहिए"– ऐसे अनेक वाक्य तो शास्त्रों में उपलब्ध हैं, जैसे–

" एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि "

तथा च –

" अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरिवासरे। " –इत्यादि–इत्यादि।

संस्कृत में ' अन्न ' शब्द का प्रयोग प्राधान्येन गेहूं, जौ, चावल, चना, मूंग आदि अनाजों (Cereals) के लिए ही होता है (जैसे– "अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः" आदि) इसका प्रयोग " उबले चावल (भात) के लिए भी पाया जाता है।" " वसिष्ठस्मृति " का यह वाक्य देखिए–

" शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तम् सतुषं धान्यमुच्यते।
आमं तु वितुषं ज्ञेयम् स्विन्नम् अन्नम् उदाहृतम्।।

(अर्थात् खेत में खड़े चावल 'शस्य', तुष (Husk) युक्त 'धान्य', तुषरहित 'आम' और उबले हुए चावल ' अन्न ' कहलाते हैं।

इससे यह प्रतीत होता है कि " अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरि॰वासरे। " इत्यादि वाक्यों में अन्न शब्द का ' भात ' अर्थ, ऐसे पर्वतीय, बंगदेशीय, दक्षिणभारतीय आदि लोगों द्वारा किया गया है, जिनका प्रमुख खाद्य ' भात ' है।

अपि च– वैदिक काल में चावल प्रमुख अन्न रहा है। वैसे– धर्मशास्त्र के असंख्य वाक्य एकादशी में सर्वथा अनशन, उपवास (सभी प्रकार के अनाजों, खाद्यों के त्याग) का ही आदेश देते हैं। धर्मशास्त्र के इन वाक्यों में यह कहीं भी निर्देश नहीं है कि– एकादशी के दिन भात नहीं खाना चाहिए। वे तो भोजन (खाना खाने) का ही स्पष्ट रूप में निषेध करते हैं– " एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि " – इत्यादि।

अतः स्पष्ट है– जो लोग एकादशी के दिन केवल चावलों कों ही अभक्ष्य मान लेते हैं और शेष गेहूं, जौ, चना, मूंग आदि का भोजन कर लेना शास्त्रविहित समझते हैं, सर्वथा भ्रान्त हैं।

(ii) ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। यहां ' ग्रहणसूतक ' शब्द प्रसवसूतक (प्रसवाशौच) के सादृश्य पर बना है।

(iii) खग्रास सूर्यग्रहण में सूर्यबिम्ब चन्द्रबिम्ब से पूरी तरह ढक जाता है जब कि कंकण ग्रहण में उसे

चन्द्रबिम्ब इस प्रकार ढक पाता है कि सूर्यबिम्ब बीच में काला और चारों ओर पिघली चान्दी के कंगन की तरह चमकता दीख पड़ता है (नीचे दिए गए चित्र की भान्ति)–

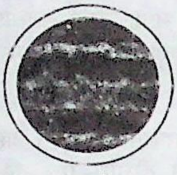

कंकण सूर्यग्रहण

(यहां मध्य में काला चन्द्रबिम्ब है। चारों ओर चमकता कंकणाकृति सूर्यबिम्ब है।)

चन्द्रमा जब पृथ्वी से अधिक दूर (उच्चस्थ या उच्चासन्नस्थ) होने के कारण सूर्यबिम्ब से कुछ छोटा दिखाई देता है, तब कंकण ग्रहण घटित हुआ करता है।

समस्या– **महर्षि पराशर ने बलवान् शुभग्रहों (गुरु– शुक्र) को केन्द्राधिपत्य–दोष बतलाया है। जातकग्रन्थकारों ने स्वराशिस्थ इनकी केन्द्र में स्थिति बहुत शुभफलप्रद (महापुरुष योगकारक आदि) लिखी है। अतः यदि ये ग्रह केन्द्र में स्वराशिस्थ हों, तब केन्द्राधिपत्य–दोष के कारण पराशर–मतानुसार इनका फल अशुभ और स्वराशिस्थ, केन्द्रगत होने के कारण शुभ– इस प्रकार दोनों अशुभ–शुभफलों का वहां मिश्रण होगा। ऐसी स्थिति में इन परस्पर विरोधी फलों में तारतम्य का निर्धारण कैसे करना होगा ? कृपया स्पष्ट करें।**

श्रीमायाधर शर्मा,
ग्राम–कैथो, सपनोट (मण्डी) हि.प्र.।

समाधान– "केन्द्राधिपत्य–दोषस्तु बलवान् गुरु–शुक्रयोः।"– पराशर के इस वाक्य का अर्थ आपने गलत समझा है। यहां "बलवान्" शब्द " केन्द्राधिपत्यदोषः " का विशेषण है, " गुरुशुक्रयोः " का नहीं। अतः इसका वास्तव अर्थ है– " गुरु–शुक्र का केन्द्राधिपत्यजन्यदोष बलवान् (माना गया) है।"

अब रही बात आपकी प्रकृत समस्या के समाधान की। ध्यान रहे– फलितज्योतिष के फलादेशकारक विभिन्न जातक, ताज़िक, अष्टवर्ग, गोचर, नाड़ी आदि पद्धतियों में समन्वय भारी समस्या है दैवज्ञों के लिए। इन पद्धतियों के परस्पर निरपेक्ष, फलादेशसिद्धान्तों में सुस्पष्टता से व्यक्त विरोधों का समाधान दैवज्ञ लोग, अपनी–अपनी चिन्तन शैली से करते चले आ रहे हैं शताब्दियों से, जिसके कारण इनसे प्राप्त फलादेशों में परस्पर वैमत्यों का आजतक कोई स्पष्ट समाधान फलितज्योतिष–जगत् उपलब्ध नहीं कर सका। इसका एकमात्र कारण– इन फलित–पद्धतियों की उपपत्ति–शून्यता (अवैज्ञानिकता) है। इसी लिए इसका " **इदमित्थम्** " समाधान संभव नहीं है।

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24x18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गई 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है! सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–

पुस्तक मिलने का पताः– **श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

आयुनिर्णय

(गतवर्ष से क्रमागत)

गतवर्ष *जैमिनि* व *सत्याचार्य*–मतानुसारी गणितीय आयुनिर्णय दिए जा चुके हैं। इन दोनों आयुनिर्णय– प्रकारों को देखकर पाठक अवश्य समझ गए होंगे कि– इन दोनों प्रकारों से निर्णीत किसी जातक की आयु के परिमाणों में कोई सामञ्जस्य ढूंढने का प्रयास अर्थहीन है। अब हम इसवर्ष दो और गणितात्मक आयुनिर्णय– प्रकार देने जा रहे हैं। इन्हें पढ़कर पाठक की गतवर्ष बनी एतद्‌विषयक यह धारणा और भी पुष्ट होगी कि– जन्मकालिक ग्रहस्थित्यादि के आधार पर जातक की जीवनावधि के निर्णयार्थ किए गए ये दीर्घात्–दीर्घतर प्रयास सर्वथा तत्त्वहीन हैं। लीजिए, हम यहां आयुनिर्णय की इस अन्तिम किस्त में *यवन, मय, मणित्थ, पराशर* आदि की आयुनिर्णायक पद्धति, जो *सत्याचार्य–पद्धति* से आंशिकरूपेण सादृश्य रखती है और *श्रीपति, केशव* आदि जातकपद्धतिकारों की प्रणाली, जो अपने विकट गणितजाल में दैवज्ञों को बुरी तरह उलझाकर अपने आपको युक्ति–युक्त सिद्ध करने के लिए व्यर्थ में एड़ी से चोटी तक का पूर्ण बल लगाए हुए हैं–पाठकों के सम्मुख उपस्थापित कर रहे हैं।

यवन–मयादि मतानुसार आयुनिर्णय–प्रकार

मय आदि के मतानुसार जातक के आयुनिर्णय के लिए हमें ग्रहों की **'स्पष्ट आयु'** (स्पष्ट ग्रहायु) तथा **'स्पष्ट लग्नायु'** अपेक्षित होती है। क्योंकि इन दोनों का योग ही जातक की आयु का परिमाण होता है, अतः हम यहां **'स्पष्ट ग्रहायु'** और **'स्पष्ट लग्नायु'** ज्ञान की प्रक्रिया बतलाएंगे। सर्वप्रथम **'स्पष्ट ग्रहायु'** साधन बतलाते हैं–

ग्रहायु–साधन

अपने उच्च (परमोच्च) पर स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि द्वारा जातक को दी जाने वाली आयु (ग्रहायु) क्रमशः 19, 25, 15, 12, 15, 21, 20 वर्ष है। इसे हम ग्रह की परमायु कहेंगे। ग्रह के अपने नीच (परमनीच) पर यह परमग्रहायु आधी हो जाती है। अर्थात् नीचस्थ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि द्वारा दी जाने वाली आयु क्रमशः $9\frac{1}{2}$, $12\frac{1}{2}$, $7\frac{1}{2}$, 6, $7\frac{1}{2}$, $10\frac{1}{2}$, 10 वर्ष होती है।

उच्च और नीच के मध्य ग्रहायु का निर्णय अनुपात से जानना चाहिए। यह अनुपात इस प्रकार है–

उच्च और नीच के अन्तर (6 राशि = 10800′) में ग्रहायु आधी नष्ट होती है तो ग्रह और उच्च के अभीष्ट अन्तर में वह कितनी नष्ट होगी ? इसके लिए ग्रह के उच्च और ग्रह के राश्यादि के अन्तर को ग्रह–परमायु के वर्षादि–अर्ध से गुणाकर 6 राशि (=10800′) से भाग देने पर प्राप्त वर्षादि को ग्रह की परमायु में से घटाने पर **'ग्रहायु'** प्राप्त होती है। **जैसे देखिए –**

जातक के जन्मकाल में स्पष्ट गुरु 7 रा. 01 अं. 20 क. है। यहां गुरु द्वारा दी जाने वाली **ग्रहायु** इस प्रकार ज्ञात की जाएगी–

		रा. अं. क.
स्पष्ट गुरु	=	7 01 20 = 12680′
गुरु उच्च	=	3 05 00 = 5700′
स्पष्ट गुरु और गुरु उच्च का अन्तर	=	6980′
गुरु–परमायु (15 वर्ष) का अर्ध	=	7 व. 6मा. = 2700 दिन

अतः **गुरु–आयु** $= 5400 - \frac{2700\times 6980'}{10800'}$

= 5400 दिन–1745 दिन

= 3655 दिन

= 10 वर्ष 01 मास 25 दिन हुई।

उपरोक्त ग्रहायुसाधन–प्रक्रिया में लम्बी–लम्बी संख्याओं का गुणा–भाग उकताने वाला है। यहां

Calculator का प्रयोग सुविधाप्रद रहेगा। यहां आगे एक "**ग्रहायुसाधन कोष्ठक**" दिया गया है। उससे किसी भी ग्रह की आयु अत्यन्त लाघव से ज्ञात की जा सकती है।

कोष्ठक द्वारा ग्रहायु–साधन की सरलतम प्रक्रिया

[इस कोष्ठक के प्रयोग के लिए हमने ग्रह के उच्च (परमोच्च) के स्थान पर नीच (परमनीच) का प्रयोग किया है– यह ध्यान रखें।]

अपने नीच से ग्रह यदि आगे 6 राशि के मध्य पड़ता हो तो ग्रह में से नीच घटाइए; यदि ग्रह के राश्यादि नीच के राश्यादि से कम हों तो, ग्रह में 12 राशि जोड़कर नीच घटाइए। यह अन्तर '**ग्रह–नीच**' कहलाएगा। ग्रह का नीच यदि ग्रह से आगे 6 राशि–मध्य पड़ रहा हो तब नीच में से ग्रह घटाइए। नीच के राश्यादि यदि ग्रह से कम हो तो उसमें 12 राशि जोड़कर यह घटाव कीजिए। यह अन्तर "**नीच – ग्रह**" कहलाएगा।

इस " **ग्रहायुसाधन कोष्ठक** " के बाईं ओर वाले पहले कॉलम में ' **ग्रह – नीच** ' या ' **नीच – ग्रह**' के राशि–अंशों द्वारा अभीष्ट ग्रह की आयु (सूर्यायु– चन्द्रायु आदि) वाले कॉलम से '**वर्ष–मास–दिन**' उठाइए। इनमें ' **अन्तर शेष** ' वाले कॉलम से शेष अंश–कलाओं द्वारा प्राप्त '**मास–दिन**' लेकर जोड़ दीजिए। बस, यह योगफल अभीष्ट ग्रह की वर्षादि आयु होगी। **स्पष्टता के लिए एक उदाहरण लेते हैं।**

मान लें– जातक का जन्मकालीन शुक्र (स्पष्ट शुक्र) 11 रा. 16 अं. 20 क. है। शुक्र का नीच 5 रा. 27 अं. है। यहां शुक्र अपने नीच से आगे 6 राशि के मध्य पड़ता है, अतः यहां ' **ग्रह – नीच** ' $5^{\text{रा.}}\ 19^{\text{अं.}}\ 20^{\text{क.}}$ [= ($11^{\text{रा.}}\ 16^{\text{अं.}}\ 20^{\text{क.}}$) – ($5^{\text{रा.}}\ 27^{\text{अं.}}\ 00^{\text{क.}}$)] हुआ। कोष्ठक के पहले कॉलम में 5 रा. 18 अं. के आगे शुक्रायु वाले कॉलम से $20^{\text{व.}}\ 3^{\text{मा.}}\ 18^{\text{दि.}}$ प्राप्त किए। इसमें ' **अन्तर शेष** ' वाले कॉलम से शेष 1 अं. 20 क. के 0 मास 28 दि. प्राप्त करके जोड़े तो **$20^{\text{व.}}\ 4^{\text{मा.}}\ 16^{\text{दि.}}$ शुक्र की आयु** मिली।

इस प्रकार इस कोष्ठक से इष्ट ग्रह की आयु के वर्षादि ज्ञात करने में कुछ भी गणित नहीं करने पड़ती।

ध्यान दें– उपरोक्त प्रकार से साधित ग्रहायु 'स्पष्ट' नहीं है, यह 'मध्यम' है। इसे 'स्पष्ट' बनाने के लिए ग्रहों की इन मध्यम आयुओं में ये निम्नांकित चार संस्कार करने पड़ेंगे–

स्पष्ट ग्रहायु–ज्ञान के लिए मध्यम ग्रहायु में दिए जाने वाले चार संस्कार

(1) **शत्रुक्षेत्रगत हानि–संस्कार (प्रथम संस्कार) :–** यदि कोई मार्गी ग्रह शत्रुराशि में हो तो उस ग्रह की मध्यम आयु में से उसका तृतीयांश कम हो जाता है। **ध्यान रहे–** वक्री ग्रह के लिए यह नियम नहीं है।

(2) **अस्तंगत(लुप्त) हानि–संस्कार (द्वितीय संस्कार) :–** शुक्र और शनि को छोड़कर यदि कोई अन्य ग्रह अस्त (सूर्य सान्निध्यवश लुप्त)[*] हो तो उस ग्रह की प्रथम संस्कार से संस्कृत[✦] मध्यमायु का आधा नष्ट हो जाता है।

---

[*] *ग्रहों के लोप (अस्त) की तिथियां अक्षांशभेद से बहुत भिन्न–भिन्न होती हैं, जिनके निर्धारण के लिए लम्बी जटिल गणितप्रक्रियाएं हैं। दैवज्ञ लोग सामान्यतः चन्द्र का सूर्य से अन्तर 12° से कम, भौम का 17° से, बुध का 13° से, गुरु का 11° से, शुक्र का $6\frac{1}{2}$° से और शनि का 15° से कम होने पर इन ग्रहों को अस्त मानकर फलादेश करते हैं, जोकि नितान्त स्थूलतामूलक है।*

[✦] *यहां "प्रथम संस्कार से संस्कृत **ग्रहमध्यमायु** " का अभिप्राय है कि– यदि ग्रह शत्रुक्षेत्रगत है तो उसकी मध्यमायु का तृतीयांश उसमें से घटाया जा चुका है। यदि वह शत्रुक्षेत्रगत नहीं है तो उसकी मध्यमायु में से तृतीयांश नहीं घटाया गया है। इस प्रकार दोनों स्थितियों में उसे (ग्रहमध्यमायु को) " **प्रथमसंस्कार–संस्कृत** " ही माना गया है। इसी प्रकार अन्य संस्कारों से संस्कृत " **ग्रहमध्यमायु** " का भी अर्थ समझना चाहिए।*

(3) चक्रोत्तरार्धस्थितिहानि–संस्कार (तृतीय संस्कार) :– यदि कोई पापी ग्रह (सूर्य, मंगल या शनि)◆ सप्तम भाव में हो तो उसकी प्रथम एवं द्वितीय संस्कार–संस्कृत मध्यमायु का छठा, अष्टम में हो तो पांचवां, नवम में हो तो चौथा, दशम में हो तो तीसरा, एकादश भाव में हो तो आधा भाग और द्वादशभाव में हो तो पूरा भाग नष्ट हो जाता है। यदि कोई शुभग्रह (चन्द्र–बुध–गुरु या शुक्र) सप्तम में हो तो उसकी प्रथम एवं द्वितीय संस्कार संस्कृत मध्यमायु का 12वां, अष्टम में हो तो 10वां, नवम में हो तो 8वां, दशम में हो तो छठा, एकादशभाव में हो तो चौथा भाग, द्वादशभाव में हो तो आधा भाग नष्ट हो जाता है। ध्यान रहे– यदि एक ही भाव में अनेक ग्रह बैठे हों तो उनमें से जो अधिक बली हो, केवल उसी की आयु में यह **चक्रोत्तरार्धस्थितिहानि–संस्कार** करना चाहिए।*

(4) पापाक्रान्त लग्नहानि–संस्कार (चतुर्थ संस्कार) :– लग्न में पापी ग्रह स्थित हो तभी यह संस्कार किया जाता है।

यहां यह ध्यान रखें– पूर्वोक्त तीन संस्कारों से संस्कृत सातों ग्रहों की मध्यमायुओं के वर्षादि योग को लग्न की अंश–कलाओं की कलाओं से (लग्न की राशि को त्यागकर शेष बची उसकी अंश–कलाओं की कलाएं बनाकर उनसे) गुणा कर 21600 से भाग देने पर प्राप्त वर्षादि लब्धि को, पापग्रह से युक्त लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो इस लब्धि के आधे को सातों ग्रहों की उपरोक्त तीन संस्कारों से संस्कृत मध्यमायुओं के कुल योग में से ही घटाइए। इसप्रकार प्राप्त इन सातों ग्रहों की वर्षादि स्पष्ट आयुओं का योग प्राप्त होगा।

इसमें आगे दी जा रही प्रक्रिया से ज्ञात स्पष्ट लग्नायु के वर्षादि जोड़ देने पर जातक की पूर्णायु (जीवनावधि) के वर्ष, मास, दिन प्राप्त हो जाएंगे।

स्पष्ट लग्नायु–साधन

लग्नायु के निर्णय में ये दो मत हैं–

(i) लग्न द्वारा भुक्तराशि–संख्या के तुल्य **'लग्नायु–वर्ष'** होते हैं। लग्न की वर्त्तमान राशि की अंश–कलाओं को कलात्मक बनाकर, उन्हें 10800 से गुणा कर 1800 से भाग देने पर प्राप्त दिनों को उपरोक्त लग्नायुवर्षों में जोड़ देने पर जातक की लग्नायु ज्ञात हो जाएगी। **इसका उदाहरण देखिए –**

स्पष्ट लग्न = 5रा. 10 अं. 15 क.
यहां लग्नायु वर्ष = 5 वर्ष
वर्त्तमान राशि 6 (कन्या) की अंश–कलाएं = 10 अं. 15 क. = 615 कला
उपरोक्त प्रक्रियानुसार लग्नायु = 5वर्ष + $\frac{360\times615}{1800}$
= **5 वर्ष 4 मास 3 दिन हुई।**

आगे दिए **' लग्नायुसाधन कोष्ठक (भाग 1)'** से यह लग्नायु तुरन्त जानी जा सकती है। इस कोष्ठक से लग्न के राशि–अंशों द्वारा लग्नायु के वर्ष–मास–दिन लीजिए। इनसे इसी कोष्ठक के दाईं ओर अन्तिम दो कॉलमों से लग्नशेष (लग्न की शेष) अंशकलाओं द्वारा प्राप्त मास–दिनों को लेकर इन्हें लग्नायु के इन वर्ष–मास– दिनों में जोड़ देने से जातक की **'लग्नायु'** प्राप्त हो जाएगी।

जैसे–स्पष्ट लग्न 5 रा. 10 अं. 15 क. है। इस कोष्ठक में 5 रा. 9 अं. द्वारा लग्नायु के 5 वर्ष 3 मास 18 दिन मिले। इसमें लग्न के शेष 1 अंश 15 कला द्वारा कोष्ठक से प्राप्त 0 मास 15 दिन को 5 वर्ष 3 मास 18 दिन

◆ ***ध्यान रहे–*** *इस आयुसाधनप्रक्रिया में केवल सूर्य–मंगल–शनि को ही क्रूर ग्रह माना गया है। यहां क्षीण चन्द्र एवं क्रूरयुत बुध को क्रूर नहीं माना जाता। राहु–केतु का तो इस प्रक्रिया में प्रयोग ही नहीं होता।*

* *यदि दो या अधिक ग्रह समान बली हों तो वहां क्या विकल्प होगा ? – इस बारे आचार्य मूक हैं। ऐसी स्थिति में मेरी दृष्टि से तो उस भाव में निर्दिष्ट चक्रार्धहानि की मात्रा (षष्ठांश–पंचमांश आदि) को उन समान बली ग्रहों में समान रूप से बांट देना चाहिए।*

में जोड़ने पर जातक की लग्नायु 5 वर्ष 4 मास 3 दिन प्राप्त हुई।

यह लग्नायुसाधन का प्रथम प्रकार है। द्वितीय प्रकार इस तरह है–

(ii) लग्नायुसाधन के दूसरे प्रकार में लग्न की भुक्त राशि को छोड़कर शेष अंश–कलाओं का ही प्रयोग होता है। लग्न की वर्त्तमान राशि की भुक्त अंशादि की कलाएं बनाकर, उन्हें 9 से गुणा कर 5 से भाग देने पर प्राप्त दिनसंख्या जातक की लग्नायु होगी। जैसे–

स्पष्ट लग्न = 6 रा. 10 अं. 25 क.

लग्न की भुक्त राशि 6 को त्यागकर शेष = 10° 25′ की कलाएं 625 प्राप्त हुईं

अतः उपरोक्त निर्देशानुसार लग्नायु = $\frac{9 \times 625}{5}$ = 1125 दिन

= 3 वर्ष 1 मास 15 दिन हुई।

आगे दिए गए ' लग्नायुसाधन कोष्ठक ' के (भाग–2) से तो यह लग्नायु तुरन्त ज्ञात हो जाती है।

लग्न की वर्त्तमानराशि की भुक्त अंश–कलाओं द्वारा इस " लग्नसाधन कोष्ठक (भाग–2) से वर्ष–मास–दिन प्राप्त कर, उनमें शेष कलाओं द्वारा कोष्ठक से प्राप्त मास–दिन जोड़ देने पर यह द्वितीय प्रकार की लग्नायु के वर्ष–मास–दिन ज्ञात हो जाएंगे।

जैसे– स्पष्ट लग्न 6 रा. 10 अं. 25 क. है। यहां वर्त्तमानराशि के भुक्त अंशादि 10 अं. 25 क. है।

लग्लसाधन कोष्ठक (भाग–2) में 10 अं. 20 क. द्वारा 3 वर्ष 1 मास 6 दिन मिले, इनमें लग्नशेष 05 क. द्वारा कोष्ठक से प्राप्त 0 मा. 10 दिन जोड़ देने पर लग्नायु 3 वर्ष 1 मास 16 दिन मिली।

यहां अब यह प्रश्न उठता है कि– दो प्रकार की इन लग्नायुओं में से आयुनिर्णयार्थ किसे स्वीकार किया जाए ? इस विषय में दो मत हैं। एक मत कहता है– यदि लग्नेश बलवान् है तो पहला प्रकार, लग्ननवांशेश बलवान् है तो दूसरा प्रकार स्वीकार करना चाहिए। लेकिन ' मणित्थ ' आदि के मतानुसार हर स्थिति में प्रथम प्रकार को ही आयुनिर्णयार्थ स्वीकार करना चाहिए। 'भट्टोत्पल' भी इसी मत का समर्थन करते हैं। लग्नेश एवं लग्ननवांशेश की बलमात्रा के अनुसार प्रथम एवं द्वितीय प्रकार से प्राप्त लग्नायु की स्वीकार्यता का निर्णय तो तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि लग्नेश और लग्ननवांशेश– दोनों के बल समान होने पर कई बार अनिर्णय की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः मेरा भी मत है, प्रथम प्रकार की लग्नायु को ही सर्वदा प्रयोग में लाना तर्कसंगत है।

इस प्रकार लग्नायु के वर्ष–मास–दिन ज्ञात हो गए। जैसा कि पहले भी बतला चुके हैं, यह 'लग्नायु स्पष्ट' है। इसमें किसी संस्कार की जरूरत नहीं है।

इस प्रथम प्रकार से प्राप्त स्पष्ट लग्नायु के वर्ष–मास–दिन को उपरोक्त सातों ग्रहों की स्पष्टायुओं के योग में जोड़ने पर जातक की पूर्णायु (जीवनावधि) के वर्षादि प्राप्त हो जाएंगे।

यह मय–मणित्थ आदि आचार्यों द्वारा समर्थित आयुसाधन का प्रकार है।

आचार्य केशवोक्त आयुसाधन–पद्धति

अब हम आचार्य केशव द्वारा उनकी ' जातकपद्धति ' ⊗ में निर्दिष्ट आयुसाधन की प्रक्रिया पाठकों

⊗ *बृहज्जातक, सारावली आदि जातकग्रन्थों में चर्चित फलादेशों की सबलता, निर्बलता का आंकिक मूल्यांकन करने वाले ग्रन्थों को हमारी ज्योतिष–परम्परा में ' **जातकपद्धति** ' के नाम से पुकारा जाता है। जातकपद्धतियों के रचयिता **श्रीपति, केशव, नीलकण्ठ, दामोदर** आदि अनेक विद्वान् ज्योतिर्विद हुए हैं। इनकी जातकपद्धतियां मूलतः एक होने पर भी अनेकत्र वैमत्य से बच नहीं सकी हैं। हमने तो यहां '**केशवीय जातकपद्धति**' को ही प्रमाण मानकर आयुनिर्णय किया है।*

को बतलाएंगे। इस प्रक्रिया में कुछ स्थलों पर ग्रहों के बलाबल की मात्रा की आवश्यकता पड़ती है, जिसके लिए पाठक दैवज्ञ को ' **जातकपद्धति** ' का ज्ञान होना जरूरी है। वैसे, मैंने वि. संवत् 2063 के '**श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** 'के ' **षड्बल विशेषांक** ' में ग्रहों के षड्बल की गणित सरल शैली में प्रस्तुत की है। पाठक उसे प्रयोग में ला सकते हैं। इस गणितप्रक्रिया में एक जगह सभी ग्रहों के ' **स्फुटगुणकों**' का प्रयोग आता है। ग्रह का **चेष्टाबल** और **उच्चबल** जाने बिना ग्रह का ' **स्फुटगुणक** ' ज्ञात नहीं किया जा सकता, लेकिन इस समस्या का समाधान मैंने ' **उदाहरण जन्मपत्र** ' ◆ के लिए तो कर दिया है। इस जन्मपत्र के काल के सभी ग्रहों के ' **स्फुटगुणक** ' मैंने पाठकों की सुविधा के लिए गणित द्वारा साधित कर इस ' **उदाहरण जन्मपत्र** ' से सम्बद्ध सामग्री (स्पष्टग्रह, स्पष्टलग्न तथा जन्मकुण्डली) के साथ यहां (नीचे) दे दिए हैं, ताकि इस उदाहरण द्वारा मुझे पाठकों को गणितप्रक्रिया समझाने में कठिनाई न हो। लेकिन, अन्य जातकों की आयुनिर्णय के लिए इस पद्धति के प्रयोगार्थ पाठक दैवज्ञ को ' **जातकपद्धति** ' तो देखनी ही पड़ेगी।

गणक को परामर्श है कि– वह इस विस्तृत आयुगणना के लिए Calculator का प्रयोग करे, अन्यथा वह अनेक प्रतिबन्धों से जकड़ी इस गणना में बुरी तरह उलझ सकता है। **स्पष्ट है–** Calculator का प्रयोग दशमलवगणित–ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। अतः उसे दशमलवगणित का ज्ञान होना चाहिए। इस गणनाप्रक्रिया में **'अंश–कलात्मक'** और ' **वर्ष–मास–दिनात्मक संख्याओं** ' का स्थाने–स्थाने गुणन–भाग करना पड़ता है। अतः गणक को अंश–कलाओं को अंश–दशमलवांकों में और वर्ष–मास–दिनों को वर्ष–दशमलवांकों में परिवर्तित करके ही इनका गुणा–भाग करना होगा, अन्यथा व्यर्थ का प्रक्रिया–विस्तार उसे सहना होगा। वैसे, यह आयुर्गणित जोड़–घटाव व गुणा–भाग के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। केवल निर्दिष्ट विशेष क्रमानुसारी सुदीर्घगामी (विस्तृत) प्रक्रिया के कारण गणक की विशेष सावधानता तो यह चाहती है।

लीजिए– इस गणितप्रक्रिया में उदाहरण के रूप में यत्र–तत्र प्रयुक्त किया जाने वाला जन्मपत्र (उदाहरण जन्मपत्र) स्पष्ट ग्रहस्पष्टादि सामग्रीसहित यह है–

उदाहरण जन्मपत्र

(यह जन्मपत्र मिथिला के ज्योतिर्विद्वान् स्व. श्री अपूछ शर्मा जी का है।)

जन्मकालिक स्पष्ट ग्रह* एवं लग्न–

	रा.	अं.	क.
सूर्य	10	12	58
चन्द्र	7	01	04
मंगल	11	24	27
बुध	10	07	17 (अस्त)
गुरु	1	19	57
शुक्र	8	25	43
शनि	3	18	08 (वक्री)
लग्न	6	18	35

जन्मकुण्डली

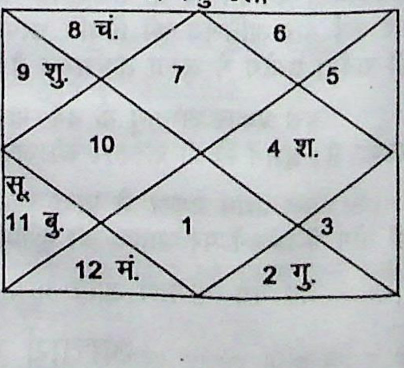

◆ *आयुसाधन–गणितप्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए मैंने इस ' **उदाहरण जन्मपत्र** 'की सामग्री (स्पष्टग्रह, लग्न, जन्मकुण्डली आदि) का उदाहरण के तौर पर यहां प्रयोग किया है।*

* *राहु–केतु का इस प्रक्रिया में प्रयोग नहीं होता।*

'जातक–जन्मकालिक' ग्रहों के स्फुटगुणक–

	अं.	क.	
सूर्य	1	28	(= 1°.467)
चन्द्र	0	56	(= 0°.933)
मंगल	1	23	(= 1°.383)
बुध	0	38	(= 0°.633)
गुरु	0	57	(= 0°.950)
शुक्र	1	39	(= 1°.650)
शनि	1	57	(= 1°.950)

ग्रहों के इन स्फुटगुणकों की साधनप्रक्रिया जानने के लिए ' जातकपद्धति ' देखनी चाहिए। इसे यहां स्पष्ट कर सकना सम्भव नहीं है।

केशवीय जातकपद्धति अनुसार आयुसाधन–प्रकार

स्पष्ट आश्रयगुणक–साधन–

स्वराशिस्थ ग्रह का	गृहांक	36
स्वहोरादि षड्वर्ग ✗ गत ग्रह का	गृहांक	18
अधिमित्र–राशिस्थ ग्रह का	गृहांक	30
अधिमित्र होरादि षड्वर्गगत ग्रह का	गृहांक	15
मित्रराशिस्थ ग्रह का	गृहांक	26
मित्रहोरादि षड्वर्गगत ग्रह का	गृहांक	13
समराशिस्थ ग्रह का	गृहांक	18
समहोरादि षड्वर्गगत ग्रह का	गृहांक	09
शत्रुराशिस्थ ग्रह का	गृहांक	10
शत्रुहोरादि षड्वर्गगत ग्रह का	गृहांक	05
अधिशत्रु–राशिस्थ ग्रह का	गृहांक	06
अधिशत्रु–होरादि षड्वर्गगत ग्रह का	गृहांक	03

जैसे– ' **उदाहरण–जन्मपत्र** ' में स्पष्ट सूर्य $10^{\text{रा.}}\ 12^{\text{अं.}}\ 58^{\text{क.}}$ है। **इसके गृहांक इसप्रकार हैं** – अधिशत्रु–राशिस्थ गृहांक 6, स्वहोरास्थ गृहांक 18, शत्रुद्रेष्काणस्थ गृहांक 5, सम–सप्तमांशस्थ गृहांक 9, अधिशत्रु–नवमांशस्थ गृहांक 3, अधिमित्र द्वादशांशस्थ गृहांक 15, अधिमित्र–त्रिशांशस्थ गृहांक 15 हैं। इस प्रकार हमारे इस उदाहरण में जातक के जन्मकालिक सूर्य के कुल गृहांक 71 हुए।

इसी तरह सातों ग्रहो के गृहांकयोग जान लें। यदि ग्रह स्वगृह(राशि) में हो तो उसके गृहांकयोग को 36 से, अधिमित्र राशि में हो तो 48 से, मित्रराशि में हो तो 54 से, समराशि में हो तो 72 से, शत्रुराशि में हो तो 108 से, अधिशत्रुराशि में हो तो 144 से भाग दें। यदि ग्रह स्वनवांश, वर्गोत्तम या स्वद्रेष्काण में हो तो ध्यान रखिए– प्रत्येक स्थिति में गृहांकयोग को 36 से ही भाग देना होगा। यहां अंश–कलात्मक लब्धि ' **मध्यम आश्रयगुणक** ' होगा।

[**जैसे–** हमारे **'उदाहरण जन्मपत्र'** में सूर्य का गृहांकयोग 71 है। क्योंकि, यहां सूर्य अधिशत्रु–राशिस्थ है, अतः उपरोक्त नियमानुसार इसके गृह्रांकयोग को 144 से भाग देकर प्राप्त लब्धि

✗ *होरा, द्रेष्कोण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश– ये होरा आदि षड़* (6)वर्ग हैं। एक वर्ग ' **गृह** ' भी है, जिससे वर्ग **'सप्त'** हैं। ग्रह कौन से वर्ग में स्थित है–यह जानने के लिए " **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** " के **'षड्बल विशेषांक'** (सं. 2063 वि.) के पृष्ठ 277–278 पर दिया **"सप्तवर्ग कोष्ठक "** देखिए।

Website: www.shrimartand.com

0 अं. 30 क. (= 0°.49) यहां सूर्य का **'मध्यम आश्रयगुणक'** हुआ।]

स्वनवमांश, वर्गोत्तम या स्वद्रेष्काण–गत ग्रह अधिशत्रु–राशिस्थ हो तो उसके गृहांक को 63 से भाग देकर प्राप्त अंशादि लब्धि को **' मध्यम आश्रयगुणक '** में से घटाने पर, यदि वह अधिमित्र–राशिस्थ है तो जोड़ने पर उस ग्रह का **' स्पष्ट आश्रयगुणक '** प्राप्त होगा। यदि स्वनवमांशस्थ, वर्गोत्तमस्थ या स्वद्रेष्काणस्थ ग्रह शत्रुराशिगत हो तो उसके गृहांक को 94 से भाग देकर प्राप्त अंशादि लब्धि को **' मध्यम आश्रयगुणक '** में से घटाने पर, यदि वह ग्रह मित्रराशिस्थ हो तो जोड़ने पर उसका **' स्पष्ट आश्रयगुणक '** प्राप्त होगा। यदि ग्रह स्वराशिस्थ या समराशिस्थ हो अथवा वह स्वनवांश, वर्गोत्तम या स्वद्रेष्काण में स्थित न हो तो उसके **'मध्यम आश्रयगुणक'** को ही **'स्पष्ट आश्रयगुणक'** माना जाता है।

*[**जैसे–** **'उदाहरण जन्मपत्र'** में स्वनवांशस्थ चन्द्र शत्रुराशिस्थ है। शत्रुराशिस्थ होने से इसका गृहांक 10 है। इसे 94 से भाग देने पर प्राप्त लब्धि 0 अं. 6 क. (= 0°.106) को चन्द्र के **मध्यम आश्रयगुणक** में से घटाने पर चन्द्र का **'स्पष्ट आश्रयगुणक'** प्राप्त होगा।]*

कर्मयोग्य गुणक

स्पष्ट आश्रयगुणक और **स्फुटगुणक**[*] के गुणनफल का वर्गमूल अंशादि **' कर्मयोग्य गुणक '** कहलाता है। इस **' कर्मयोग्य गुणक '** का प्रयोग आगे गणितप्रक्रिया में होगा।

(**जैसे, मान लें**[⊗]– किसी ग्रह का **स्पष्ट आश्रयगुणक** 2 अं. 10 क.(= 2°.167) और **स्फुटगुणक** 1 अं. 39 क. (= 1°.650) है तो इस ग्रह का **'कर्मयोग्य गुणक'** = $\sqrt{2^\circ.167 \times 1^\circ.650} = 1^\circ.891$)

लग्न और ग्रह की वर्षादि अंशायु

लग्न और ग्रह के राश्यादि के अंश बनाकर, उन्हें 40 से भाग देने पर शेष बचे अंशादि क्रमशः लग्न और ग्रह की **अंशायु (लग्नांशायु, ग्रहांशायु)** होती हैं।

*(**जैसे–** **'उदाहरण–जन्मपत्र'** में स्पष्ट लग्न $6^{\text{रा.}}$ $18^{\text{अं.}}$ $35^{\text{क.}}$ और स्पष्ट सूर्य $10^{\text{रा.}}$ $12^{\text{अं.}}$ $58^{\text{क.}}$ है। इनके अंश क्रमशः 198°. 6 और 313°.0 हुए। इन्हें 40 से भाग देने पर शेष क्रमशः 38°. 6 और 33°. 00 मिले। ये क्रमशः लग्न और सूर्य की अंशायु हैं।)*

चक्रार्ध–हानिगुणक

अब लग्न में से ग्रह को घटाकर शेष यदि 6 राशि से कम हो तो उसके अंश बनाकर, उससे 30 को विभाजित करें । विभाजन से प्राप्त अंशादि लब्धि को एक अंश में से घटाने पर प्राप्त शेष अंशादि **' चक्रार्ध–हानिगुणक '** होता है। लग्न में से ग्रह को घटाने पर शेष यदि एक राशि से अल्प हो तो शेष अंशों को 30 से भाग देकर प्राप्त अंशादि लब्धि को एक अंश में से घटाने पर शेष अंशादि **' चक्रार्ध–हानिगुणक '** होगा। **ध्यान रहे–** यह नियम केवल पापी ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि) के ही लिए है। शुभ ग्रह हो तो उपरोक्त प्रक्रिया से प्राप्त अंशादि लब्धि के आधे को एक अंश में से घटाने पर उस ग्रह का **' चक्रार्ध–हानिगुणक '** मिलेगा। यदि एक ही राशि में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें से सर्वाधिक बली[◘] ग्रह का ही **' चक्रार्ध– हानिगुणक '** बनाया जाता है, शेष का नहीं। इन शेष ग्रहों की अंशायु को तो स्वतः **' चक्रार्ध–हानिसंस्कृत '** समझना चाहिए।

इस **' चक्रार्ध–हानिगुणक '** से ग्रहों की उपरोक्त (अंशादि) अंशायुओं को गुणा करने पर ये अंशायुएं

---

[*] **' स्फुटगुणक '** देखें पृ. 292 पर।

[⊗] मैंने गणनासुविधा के लिए यहां अनेकत्र काल्पनिक उदाहरणों का भी आश्रय लिया है और पृष्ठ 292 पर दिए गए **' उदाहरण–जन्मपत्र '** को मैंने उपेक्षित किया है।

[◘] लग्न एवं ग्रह का बल जानने की प्रक्रिया **" जातकपद्धति "** से जानें।

'**चक्रार्ध–हानिसंस्कृत**' कहलाएंगी। **यह भी जान लें** – लग्न में से ग्रह घटाने पर शेष यदि 6 राशि से अधिक हो तो ग्रह की अंशायु में **चक्रार्ध–हानिसंस्कार** नहीं किया जाता। इस '**चक्रार्ध–हानिसंस्कृत**' अंशायु की कलाएं बनाकर, उन्हें अंशात्मक '**कर्मयोग्य गुणक**' से गुणा कर 200 से भाग देने पर ग्रह की "**वर्षादि** अंशायु" ज्ञात हो जाएगी।

किञ्च– लग्न की अंशायु को 3 से गुणा कर 10 से भाग देने पर लब्धि लग्न की **वर्षादि अंशायु** होगी। यहां यदि लग्न का बल※ 6 रूप (अंश) से अधिक हो तो लग्न की भुक्त राशियों के बराबर वर्ष भी उस (वर्षादि लग्न–अंशायु) में जोड़ दें और लग्न के अंशों को 2 से गुणा कर, उसे पांच से विभाजित कर लब्ध मासादि भी उसमें जोड़ दें। **इस प्रकार लग्न की ' वास्तव वर्षादि अंशायु ' हमें प्राप्त हो जाएगी।**

इस प्रकार जातक के जन्मकालिक सभी ग्रहों एवं लग्न की वर्षादि अंशायु ज्ञात की जाती है। इस 'वर्षादि अंशायु' का प्रयोग आगे चलकर किया जाएगा।

ग्रहों के पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग*

ग्रह में से उसके उच्च को घटाएं। शेष यदि 6 राशि से अधिक हो तो उसके अंशादि बनाइए। शेष यदि 6 राशि से कम हो तो उसे 12 राशि में से घटाकर उसके अंशादि बनाएं। यदि ग्रह नैसर्गिक शत्रुराशि में हो तो इसमें से इसी का तृतीयांश घटा दें। यदि ग्रह वक्री हो तो तृतीयांश न घटाएं। यदि ग्रह अस्त (लुप्त) हो तो इसमें से इसका आधा घटा दिया जाए। यह नियम शुक्र व शनि के लिए नहीं है। यदि कहीं तृतीयांश व आधा – दोनों घटने की स्थिति पैदा हो, तब वहां केवल आधा ही घटाया जाए। इस प्रक्रिया द्वारा हमें ग्रह का " **मध्यम–पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " प्राप्त होगा। (**स्पष्टता के लिए नीचे उदाहरण देखिए**)–

*[" **उदाहरण–जन्मपत्र** " में स्पष्ट बुध 10$^{\text{रा.}}$ 07$^{\text{अं.}}$ 17$^{\text{क.}}$ है। इसमें से इसका उच्च 5 रा. 15 अं. घटाने पर 4$^{\text{रा.}}$ 22$^{\text{अं.}}$ 17$^{\text{क.}}$ मिले। यह 6 राशि से कम है, अतः इसे 12 राशि में से घटाने पर 7$^{\text{रा.}}$ 07$^{\text{अं.}}$ 43$^{\text{क.}}$ हुए। इसके 217°.71 बने। यहां बुध **नैसर्गिक शत्रु** की राशि में नहीं है। अतः इसमें से तृतीयांश नहीं घटेगा। बुध यहां अस्त है, अतः इस (217°.71) में से इसका आधा 108°.86 घटा देने पर बुध का '**मध्यम पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग**' 108°.86 हुआ।]*

ग्रह के इस उपरोक्त " **मध्यम पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " में ' **चक्रार्धहानि–संस्कार** ' किया जाएगा। जिससे यह " **स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " बनेगा। ' **चक्रार्धहानि–संस्कार ' करने की विधि इस प्रकार है**–

पृष्ठ 294 पर ग्रह का " **चक्रार्ध–हानिगुणक** " ज्ञात करने की विधि दी गई है। ठीक, उसी विधि से ग्रह का " **चक्रार्धहानिगुणक** " ज्ञात करके उससे ग्रह के " **मध्यम पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " को गुणा कीजिए। गुणनफल ग्रह का अंशात्मक "**स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " (दूसरे शब्दों में ' **चक्रार्धहानि–संस्कृत** ' " **मध्यम पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** ") होगा।

(***जैसे,*** *मान लें– किसी ग्रह का* " **मध्यम पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " *302°.899* और " **चक्रार्ध–हानिगुणक** " *0°.902 है । अतः इस ग्रह का* "**स्पष्ट–पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " *= 302°.899 × 0°.902 = 273°.215 हुआ।*)

स्पष्टतर(वास्तव)पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग

यदि लग्न में लग्नेश से भिन्न कोई पापी ग्रह पड़ा हो तो ग्रह के "**स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** " को लग्न की वर्त्तमान राशि के अंशादि से गुणाकर उसे 360 से भाग दें। अंशादि लब्धि को "**स्पष्ट**

※ लग्न एवं ग्रह का बल जानने की प्रक्रिया " **जातकपद्धति** " से जानें।

* पिण्डायुर्भाग, निसर्गायुर्भाग और जीवायुर्भाग– यह ' **पिण्डादि त्रिकायुर्भाग**' कहलाता है। अर्थात् ये तीन प्रकार की आयु हैं। इनके अतिरिक्त एक आयु ' **अंशायु** ' भी है– जिसका साधनप्रकार हम पहिले बतला चुके हैं। जातक की आयु के निर्णय में किस आयुप्रकार का प्रयोग कहां होगा ? यह निर्णय आगे चलकर पाठक जान लेंगे।

पिण्डादि– त्रिकायुर्भाग " में से ही घटाइए। यदि पापग्रहयुक्त लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि है तो इस लब्धि का आधा ही घटाइए। इससे ग्रह का **"स्पष्टतर (वास्तव) पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** प्राप्त हो जाएगा। **ध्यान दें**– यदि लग्न में क्रूर लग्नेश हो तब उपरोक्त लब्धि को **" स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** में से घटाने की आवश्यकता नहीं होगी। तब तो **" स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** ही **"वास्तव–पिण्डादि त्रिकायुर्भाग "** माना जाएगा। **तथा च**– यदि लग्न में पापी या शुभ-कोई भी ग्रह न हो तब भी **"स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** को ही **" वास्तव–पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** समझना चाहिए। **देखिए**– हमारे **' उदाहरण–जन्मपत्र '** की जन्मकुण्डली में लग्न में न कोई अशुभ ग्रह है और न कोई शुभ। अतः यहां **" स्पष्ट पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** ही **"स्पष्टतर (वास्तव) पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग "** माना जाएगा।

ध्यान दें– अब हम आगे **'वास्तव पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग'** को केवल **' पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग '** ही लिखेंगे।

19, 25, 15, 12, 15, 21, 20– ये क्रमशः सूर्य आदि सात ग्रहों के **' पिण्डायु–गुणक '** हैं। **तथा च**– 20, 1, 2, 9, 18, 20, 50– ये क्रमशः सात ग्रहों के **' निसर्गायु–गुणक '** हैं। ग्रह के अपने पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग को अपने पिण्डायु–गुणक से गुणा कर 360 से भाग देने पर उसकी **वर्षादि पिण्डायु** प्राप्त होगी। इसी प्रकार ग्रह के अपने पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग को अपने निसर्गायुगुणक से गुणाकर 360 से भाग देने पर उसकी **वर्षादि निसर्गायु** प्राप्त होगी। ग्रह के पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग को 21 से भाग देने पर उसकी वर्षादि **जीवायु** प्राप्त होती है।

लग्न की वर्त्तमान राशि के अंशादि की कलाएं बनाकर, उन्हें 200 से भाग देकर **' पिण्डादि–त्रिकयोग्य वर्षादि लग्नायु '** होगी।

[**जैसे,** मान लें– सूर्य का **पिण्डादि–त्रिकायुर्भाग** 302°. 95 है, तो इसकी–

$$\text{पिण्डायु} = \frac{19\times 302^\circ.95}{360} = \begin{array}{ccc} \text{व.} & \text{मा.} & \text{दि.} \\ 15 & 11 & 26 \end{array}$$

$$\text{निसर्गायु} = \frac{20\times 302^\circ.95}{360} = \begin{array}{ccc} \text{व.} & \text{मा.} & \text{दि.} \\ 16 & 9 & 29 \end{array}$$

$$\text{जीवायु} = \frac{302^\circ.95}{21} = \begin{array}{ccc} \text{व.} & \text{मा.} & \text{दि.} \\ 14 & 5 & 03 \end{array}$$

किञ्च– मान लें– स्पष्ट लग्न $6^{\text{रा.}}\ 18^{\text{अं.}}\ 35^{\text{क.}}$ है। इसकी वर्त्तमान राशि तुला के अंश 18 अं. 35क. (= 1115′) हैं।

$$\text{अतः पिण्डादि–त्रिकायुयोग्यलग्नायु} = \frac{1115'}{200} = 5^{\text{व.}}\ 6^{\text{मा.}}\ 27^{\text{क.}}\ ]$$

जातक की कुल आयु

उपर हमने ग्रहों की अंशायु (वर्षादि अंशायु, वर्षादि पिण्डायु, वर्षादि निसर्गायु एवं वर्षादि जीवायु– इन चार प्रकार की आयुओं) का साधन किया है। ' वर्षादि–लग्न–अंशायु ' एवं ' पिण्डादि–त्रिकयोग्य वर्षादि लग्नायु ' –ये दो प्रकार की लग्नायु भी साधित की है।

अब हम ग्रहों की उपरोक्त इन चार आयुओं तथा दो लग्नायुओं के आधार पर जातक की कुल आयु (आयुपरिमाण या कुल जीवनावधि) के वर्ष–मास–दिन ज्ञात करेंगे–

(i) लग्न, सूर्य एवं चन्द्र– इन तीनों में से यदि लग्न अधिक बली[+] हो तो लग्नांशायु–सहित ग्रहांशायु (ग्रहों की अंशायु) द्वारा[✗], सूर्य अधिक बली हो तो पिण्डादि–त्रिकयोग्य लग्नायु–सहित ग्रहों की पिण्डायु द्वारा, चन्द्र अधिक बली हो तो पिण्डादि–त्रिकयोग्यलग्नायु सहित ग्रहों की निसर्गायु द्वारा जातक की आयु (जीवनावधि) का निर्णय करें।

(ii) यदि लग्न, सूर्य, चन्द्र– इनमें से किन्ही दो का बल समान हो (यानि दोनों समान बली हों) तो उन दोनों की आयुओं के योग के अर्ध से आयुनिर्णय करें। अर्थात् यदि लग्न, सूर्य– दोनों समान बली हों तो लग्नांशायु, ग्रहांशायु, पिण्डादि–त्रिकयोग्य लग्नायु और ग्रहपिण्डायु के योगार्ध–तुल्य आयु समझनी चाहिए। यदि लग्न और चन्द्र– दोनों समान बली हों तो लग्नांशायु, ग्रहांशायु, पिण्डादि–त्रिकयोग्य लग्नायु एवम् ग्रहनिसर्गायु के योगार्धतुल्य आयु समझें। यदि सूर्य, चन्द्र– दोनों समान बली हों तो– द्विगुणित पिण्डादि त्रिकयोग्य लग्नायु, ग्रहपिण्डायु तथा ग्रहनिसर्गायु के योगार्ध के समान जातक की आयु जानें।

(iii) यदि लग्न, सूर्य, चन्द्र– तीनों समान बली हों तो लग्नांशायु, ग्रहांशायु, द्विगुणित पिण्डादि–त्रिकयोग्य लग्नायु, ग्रहपण्डिायु तथा ग्रह–निसर्गायु के योग के तृतीयांश–तुल्य जातक की आयु समझनी चाहिए।

(iv) यदि लग्न, सूर्य और चन्द्र– तीनों हीनबली हों तो जातक की आयु पिण्डादि त्रिकयोग्य लग्नायु और ग्रहों की जीवायु के योग के तुल्य समझनी चाहिए।

ध्यान दें – यहां ग्रह एवं लग्न का षड्बल यदि 3 रूप (3 अंश) से कम हो तो वह 'हीनबली', 6 रूप से अधिक हो तो 'अधिकबली' कहलाता है। 3 रूप से अधिक और 6 रूप से कम बल वाला 'मध्यमबली' माना गया है। अतः यहां 'दोनों समान बली' का अर्थ है– 'दोनों हीनबली', 'दोनों अधिकबली' या 'दोनों मध्यबली'। इस प्रकार तीनों 'समानबली' का अर्थ भी समझना चाहिए।

यह है, केशवाचार्य–सम्मत आयुनिर्णय का प्रकार, जो सामान्य गणितमात्र परिकर्म–चतुष्टय पर आधारित होने पर भी विविध विधि–निषेधों के जाल में गणक को उलझाने वाला है।

समीक्षा

हमने इन तीन वर्षों (गत दो वर्षों एवं वर्त्तमान वर्ष) में आयुसाधन की चार गणितमूलक प्रमुख पद्धतियों का सप्रपञ्च निर्देश किया है। सामान्य बुद्धिस्तर वाला गणक, पाठक भी इनकी प्रक्रियाओं पर सर–सरी दृष्टिपात से ही इनसे प्राप्त परिणामों में सामञ्जस्य की सम्भावना को भी तुरन्त नकार देगा– यह स्पष्ट है। आयु–परिमाणसाधन की गणितात्मक प्रक्रियाएं इनके अतिरिक्त और भी भारी संख्या में हैं, जिनके आधारों का इस निर्दिष्ट प्रक्रिया–चतुष्टयी के आधारों से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं है। जिन्हें देखकर पाठक को इस विषय में किसी एक परिणाम पर पहुंचने का शेष बचा सम्भावनालेश भी नहीं रहेगा। आयुसाधन की गणितीय इन प्रक्रियाओं से प्राप्त परस्पर नितान्त विमुख असंख्य परिणामों का अनेक जातक–ग्रन्थोक्त विभिन्न भावस्थ ग्रहों से उत्पन्न आयुवर्षों के निर्धारण से भी कोई समन्वय नहीं होता–इत्यादि अनेक कारणों से जातक की आयु के वर्षों को 'इदमित्थम्' निर्णीत करने के फलित–ज्योतिःशास्त्रीय सभी दावे बुरी तरह निरस्त हो जाते हैं। इस विषय पर हम अगले वर्ष (सं. 2072 वि.) के पंचांग में विस्तारपूर्वक निष्पक्ष विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करेंगे, जिससे पाठक पूरी तरह समझ जाएंगे कि– जातक के निर्याणकाल का निर्धारण कदापि शक्य नहीं है।

[+] यहां लग्न और ग्रहवल से अभिप्रायलग्न और ग्रह के '**षड्बल**' से है। जैसा कि पहिले भी हम बतला चुके हैं– इसके लिए '**जातकपद्धति**' का '**षड्बल प्रकरण**' देखें। **सं. 2063 वि.** में प्रकाशित '**श्रीमार्त्तण्ड पंचाग**' के '**षड्बल– विशेषांक**' में भी इसका सरलतम प्रतिपादन किया जा चुका है–वहां देख सकते हैं।

[✗] अर्थात् लग्न की वर्षादि–अंशायु एवं सातों ग्रहों की वर्षादि–अंशायुओं के योग द्वारा।

ग्रहायु-साधन कोष्ठक (भाग–1)

ग्रह–नीच या नीच–ग्रह		सूर्य परमायु–वर्ष 19 (नीच 6 रा. 10 अं)							चन्द्र परमायु–वर्ष 25 (नीच 7 रा. 03 अं.)							मंगल परमायु–वर्ष 15 (नीच 3 रा. 28 अं.)						
		सूर्यायु			अन्तर शेष		आयु		चन्द्रायु			अन्तर शेष		आयु		भौमायु			अन्तर शेष		आयु	
रा.	अं.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.
0	00	9	06	00	0	06	0	02	12	06	00	0	06	0	02	7	06	00	0	06	0	1
0	04	9	08	16	0	12	0	94	12	09	10	0	12	0	05	7	08	00	0	12	0	3
0	08	9	11	02	0	18	0	06	13	00	20	0	18	0	07	7	10	00	0	18	0	4
0	12	10	01	18	0	24	0	08	13	04	00	0	24	0	10	8	00	00	0	24	0	6
0	16	10	04	04	0	30	0	10	13	07	10	0	30	0	12	8	02	00	0	30	0	7
0	20	10	06	20	0	36	0	12	13	10	20	0	36	0	15	8	04	00	0	36	0	9
0	24	10	09	06	0	42	0	14	14	02	00	0	42	0	17	8	06	00	0	42	0	10
0	28	10	11	22	0	48	0	16	14	05	10	0	48	0	20	8	08	00	0	48	0	12
1	02	11	02	08	0	54	0	18	14	08	20	0	54	0	22	8	10	00	0	54	0	13
1	06	11	04	24	1	00	0	19	15	00	00	1	00	0	25	9	00	00	1	00	0	15
1	10	11	07	10	1	06	0	21	15	03	10	1	06	0	27	9	02	00	1	06	0	16
1	14	11	09	26	1	12	0	23	15	06	20	1	12	1	00	9	04	00	1	12	0	18
1	18	12	00	12	1	18	0	25	15	10	00	1	18	1	02	9	06	00	1	18	0	19
1	22	12	02	28	1	24	0	27	16	01	10	1	24	1	05	9	08	00	1	24	0	21
1	26	12	05	14	1	30	0	29	16	04	20	1	30	1	07	9	10	00	1	30	0	22
2	00	12	08	00	1	36	1	01	16	08	00	1	36	1	10	10	00	00	1	36	0	24
2	04	12	10	16	1	42	1	03	16	11	10	1	42	1	12	10	02	00	1	42	0	25
2	08	13	01	02	1	48	1	05	17	02	20	1	48	1	15	10	04	00	1	48	0	27
2	12	13	03	18	1	54	1	07	17	06	00	1	54	1	17	10	06	00	1	54	0	28
2	16	13	06	04	2	00	1	08	17	09	10	2	00	1	20	10	08	00	2	00	1	00
2	20	13	08	20	2	06	1	10	18	00	20	2	06	1	22	10	10	00	2	06	1	1
2	24	13	11	06	2	12	1	12	18	04	00	2	12	1	25	11	00	00	2	12	1	3
2	28	14	01	22	2	18	1	14	18	07	10	2	18	1	27	11	02	00	2	18	1	4
3	02	14	04	08	2	24	1	16	18	10	20	2	24	2	00	11	04	00	2	24	1	6
3	06	14	06	24	2	30	1	18	19	02	00	2	30	2	02	11	06	00	2	30	1	7
3	10	14	09	10	2	36	1	20	19	05	10	2	36	2	05	11	08	00	2	36	1	9
3	14	14	11	26	2	42	1	22	19	08	20	2	42	2	07	11	10	00	2	42	1	10
3	18	15	02	12	2	48	1	24	20	00	00	2	48	2	10	12	00	00	2	48	1	12
3	22	15	04	28	2	54	1	26	20	03	10	2	54	2	12	12	02	00	2	54	1	13
3	26	15	07	14	3	00	1	27	20	06	20	3	00	2	15	12	04	00	3	00	1	15
4	00	15	10	00	3	06	1	29	20	10	00	3	06	2	17	12	06	00	3	06	1	16
4	04	16	00	16	3	12	2	01	21	01	10	3	12	2	20	12	08	00	3	12	1	18
4	08	16	03	02	3	18	2	03	21	04	20	3	18	2	22	12	10	00	3	18	1	19
4	12	16	05	18	3	24	2	05	21	08	00	3	24	2	25	13	00	00	3	24	1	21
4	16	16	08	04	3	30	2	07	21	11	10	3	30	2	27	13	02	00	3	30	1	22
4	20	16	10	20	3	36	2	09	22	02	20	3	36	3	00	13	04	00	3	36	1	24
4	24	17	01	06	3	42	2	11	22	06	00	3	42	3	02	13	06	00	3	42	1	25
4	28	17	03	22	3	48	2	13	22	09	10	3	48	3	05	13	08	00	3	48	1	27
5	02	17	06	08	3	54	2	15	23	00	20	3	54	3	07	13	10	00	3	54	1	28
5	06	17	08	24	4	00	2	16	23	04	00	4	00	3	10	14	00	00	4	00	2	00
5	10	17	11	10					23	07	10					14	02	00				
5	14	18	01	26					23	10	20					14	04	00				
5	18	18	04	12					24	02	00					14	06	00				
5	22	18	06	28					24	05	10					14	08	00				
5	26	18	09	14					24	08	20					14	10	00				
6	00	19	10	00					25	00	00					15	00	00				

नोटः– इस कोष्ठक से ज्ञात ग्रहायु 'मध्यम' है।

ग्रहायु- साधन कोष्ठक (भाग–2)

ग्रह–नीच या नीच–ग्रह		बुध परमायु–वर्ष 12 (नीच 11 रा. 15 अं.)							गुरु परमायु–वर्ष 15 (नीच 9 रा. 05 अं.)							शुक्र परमायु–वर्ष 21 (नीच 5 रा. 27 अं.)							शनि परमायु–वर्ष 20 (नीच 0 रा. 20 अं.)						
		बुधायु			अन्तर शेष		आयु		गुरु–आयु			अन्तर शेष		आयु		शुक्रायु			अन्तर शेष		आयु		शनि–आयु			अन्तर शेष		आयु	
रा.	अं.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.
0	00	6	00	00	0	06	0	01	7	06	00	0	06	0	01	10	06	00	0	06	0	02	10	00	00	0	06	0	02
0	04	6	01	18	0	12	0	02	7	08	00	0	12	0	03	10	08	24	0	12	0	04	10	02	20	0	12	0	04
0	08	6	03	06	0	18	0	03	7	10	00	0	18	0	04	10	11	18	0	18	0	06	10	05	10	0	18	0	06
0	12	6	04	24	0	24	0	04	8	00	00	0	24	0	06	11	02	12	0	24	0	08	10	08	00	0	24	0	08
0	16	6	06	12	0	30	0	06	8	02	00	0	30	0	07	11	05	06	0	30	0	10	10	10	20	0	30	0	10
0	20	6	08	00	0	36	0	07	8	04	00	0	36	0	09	11	08	00	0	36	0	12	11	01	10	0	36	0	12
0	24	6	09	18	0	42	0	08	8	06	00	0	42	0	10	11	10	24	0	42	0	14	11	04	00	0	42	0	14
0	28	6	11	06	0	48	0	09	8	08	00	0	48	0	12	12	01	18	0	48	0	16	11	06	20	0	48	0	16
1	02	7	00	24	0	54	0	10	8	10	00	0	54	0	13	12	04	12	0	54	0	18	11	09	10	0	54	0	18
1	06	7	02	12	1	00	0	12	9	00	00	1	00	0	15	12	07	06	1	00	0	21	12	00	00	1	00	0	20
1	10	7	04	00	1	06	0	13	9	02	00	1	06	0	16	12	10	00	1	06	0	23	12	02	20	1	06	0	22
1	14	7	05	18	1	12	0	14	9	04	00	1	12	0	18	13	00	24	1	12	0	25	12	05	10	1	12	0	24
1	18	7	07	06	1	18	0	15	9	06	00	1	18	0	19	13	03	18	1	18	0	27	12	08	00	1	18	0	26
1	22	7	08	24	1	24	0	16	9	08	00	1	24	0	21	13	06	12	1	24	0	29	12	10	20	1	24	0	28
1	26	7	10	12	1	30	0	18	9	10	00	1	30	0	22	13	09	06	1	30	1	01	13	01	10	1	30	1	00
2	00	8	00	00	1	36	0	19	10	00	00	1	36	0	24	14	00	00	1	36	1	03	13	04	00	1	36	1	02
2	04	8	01	18	1	42	0	20	10	02	00	1	42	0	25	14	02	24	1	42	1	05	13	06	20	1	42	1	04
2	08	8	03	06	1	48	0	21	10	04	00	1	48	0	27	14	05	18	1	48	1	07	13	09	10	1	48	1	06
2	12	8	04	24	1	54	0	22	10	06	00	1	54	0	28	14	08	12	1	54	1	09	14	00	00	1	54	1	08
2	16	8	06	12	2	00	0	24	10	08	00	2	00	1	00	14	11	06	2	00	1	11	14	02	20	2	00	1	10
2	20	8	08	00	2	06	0	25	10	10	00	2	06	1	01	15	02	00	2	06	1	14	14	05	10	2	06	1	12
2	24	8	09	18	2	12	0	26	11	00	00	2	12	1	03	15	04	24	2	12	1	16	14	08	00	2	12	1	14
2	28	8	11	06	2	18	0	27	11	02	00	2	18	1	04	15	07	18	2	18	1	18	14	10	20	2	18	1	16
3	02	9	00	24	2	24	0	28	11	04	00	2	24	1	06	15	10	12	2	24	1	20	15	01	10	2	24	1	18
3	06	9	02	12	2	30	1	00	11	06	00	2	30	1	07	16	01	06	2	30	1	22	15	04	00	2	30	1	20
3	10	9	04	00	2	36	1	01	11	08	00	2	36	1	09	16	04	00	2	36	1	24	15	06	20	2	36	1	22
3	14	9	05	18	2	42	1	02	11	10	00	2	42	1	10	16	06	24	2	42	1	26	15	09	10	2	42	1	24
3	18	9	07	06	2	48	1	03	12	00	00	2	48	1	12	16	09	18	2	48	1	28	16	00	00	2	48	1	26
3	22	9	08	24	2	54	1	04	12	02	00	2	54	1	13	17	00	12	2	54	2	00	16	02	20	2	54	1	28
3	26	9	10	12	3	00	1	06	12	04	00	3	00	1	15	17	03	06	3	00	2	03	16	05	10	3	00	2	00
4	00	10	00	00	3	06	1	07	12	06	00	3	06	1	16	17	06	00	3	06	2	05	16	08	00	3	06	2	02
4	04	10	01	18	3	12	1	08	12	08	00	3	12	1	18	17	08	24	3	12	2	07	16	10	20	3	12	2	04
4	08	10	03	06	3	18	1	09	12	10	00	3	18	1	19	17	11	18	3	18	2	09	17	01	10	3	18	2	06
4	12	10	04	24	3	24	1	10	13	00	00	3	24	1	21	18	02	12	3	24	2	11	17	04	00	3	24	2	08
4	16	10	06	12	3	30	1	12	13	02	00	3	30	1	22	18	05	06	3	30	2	13	17	06	20	3	30	2	10
4	20	10	08	00	3	36	1	13	13	04	00	3	36	1	24	18	08	00	3	36	2	15	17	09	10	3	36	2	12
4	24	10	09	18	3	42	1	14	13	06	00	3	42	1	25	18	10	24	3	42	2	17	18	00	00	3	42	2	14
4	28	10	11	06	3	48	1	15	13	08	00	3	48	1	27	19	01	18	3	48	2	19	18	02	20	3	48	2	16
5	02	11	00	24	3	54	1	16	13	10	00	3	54	1	28	19	04	12	3	54	2	21	18	05	10	3	54	2	18
5	06	11	02	12	4	00	1	18	14	00	00	4	00	2	00	19	07	06	4	00	2	24	18	08	00	4	00	2	20
5	10	11	04	00					14	02	00					19	10	00					18	10	20				
5	14	11	05	18					14	04	00					20	00	24					19	01	10				
5	18	11	07	06					14	06	00					20	03	18					19	04	00				
5	22	11	08	24					14	08	00					20	06	12					19	06	20				
5	26	11	10	12					14	10	00					20	09	06					19	09	10				
6	00	12	00	00					15	00	00					21	00	00					20	00	00				

नोटः–. इस कोष्ठक से ज्ञात ग्रहायु 'मध्यम' है।

ग्रहायु-साधन कोष्ठक (भाग–1)

ग्रह–नीच या नीच–ग्रह		सूर्य परमायु–वर्ष 19 (नीच 6 रा. 10 अं)							चन्द्र परमायु–वर्ष 25 (नीच 7 रा. 03 अं.)							मंगल परमायु–वर्ष 15 (नीच 3 रा. 28 अं.)						
		सूर्यायु			अन्तर शेष		आयु		चन्द्रायु			अन्तर शेष		आयु		भौमायु			अन्तर शेष		आयु	
रा.	अं.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.
0	00	9	06	00	0	06	0	02	12	06	00	0	06	0	02	7	06	00	0	06	0	1
0	04	9	08	16	0	12	0	94	12	09	10	0	12	0	05	7	08	00	0	12	0	3
0	08	9	11	02	0	18	0	06	13	00	20	0	18	0	07	7	10	00	0	18	0	4
0	12	10	01	18	0	24	0	08	13	04	00	0	24	0	10	8	00	00	0	24	0	6
0	16	10	04	04	0	30	0	10	13	07	10	0	30	0	12	8	02	00	0	30	0	7
0	20	10	06	20	0	36	0	12	13	10	20	0	36	0	15	8	04	00	0	36	0	9
0	24	10	09	06	0	42	0	14	14	02	00	0	42	0	17	8	06	00	0	42	0	10
0	28	10	11	22	0	48	0	16	14	05	10	0	48	0	20	8	08	00	0	48	0	12
1	02	11	02	08	0	54	0	18	14	08	20	0	54	0	22	8	10	00	0	54	0	13
1	06	11	04	24	1	00	0	19	15	00	00	1	00	0	25	9	00	00	1	00	0	15
1	10	11	07	10	1	06	0	21	15	03	10	1	06	0	27	9	02	00	1	06	0	16
1	14	11	09	26	1	12	0	23	15	06	20	1	12	1	00	9	04	00	1	12	0	18
1	18	12	00	12	1	18	0	25	15	10	00	1	18	1	02	9	06	00	1	18	0	19
1	22	12	02	28	1	24	0	27	16	01	10	1	24	1	05	9	08	00	1	24	0	21
1	26	12	05	14	1	30	0	29	16	04	20	1	30	1	07	9	10	00	1	30	0	22
2	00	12	08	00	1	36	1	01	16	08	00	1	36	1	10	10	00	00	1	36	0	24
2	04	12	10	16	1	42	1	03	16	11	10	1	42	1	12	10	02	00	1	42	0	25
2	08	13	01	02	1	48	1	05	17	02	20	1	48	1	15	10	04	00	1	48	0	27
2	12	13	03	18	1	54	1	07	17	06	00	1	54	1	17	10	06	00	1	54	0	28
2	16	13	06	04	2	00	1	08	17	09	10	2	00	1	20	10	08	00	2	00	1	00
2	20	13	08	20	2	06	1	10	18	00	20	2	06	1	22	10	10	00	2	06	1	1
2	24	13	11	06	2	12	1	12	18	04	00	2	12	1	25	11	00	00	2	12	1	3
2	28	14	01	22	2	18	1	14	18	07	10	2	18	1	27	11	02	00	2	18	1	4
3	02	14	04	08	2	24	1	16	18	10	20	2	24	2	00	11	04	00	2	24	1	6
3	06	14	06	24	2	30	1	18	19	02	00	2	30	2	02	11	06	00	2	30	1	7
3	10	14	09	10	2	36	1	20	19	05	10	2	36	2	05	11	08	00	2	36	1	9
3	14	14	11	26	2	42	1	22	19	08	20	2	42	2	07	11	10	00	2	42	1	10
3	18	15	02	12	2	48	1	24	20	00	00	2	48	2	10	12	00	00	2	48	1	12
3	22	15	04	28	2	54	1	26	20	03	10	2	54	2	12	12	02	00	2	54	1	13
3	26	15	07	14	3	00	1	27	20	06	20	3	00	2	15	12	04	00	3	00	1	15
4	00	15	10	00	3	06	1	29	20	10	00	3	06	2	17	12	06	00	3	06	1	16
4	04	16	00	16	3	12	2	01	21	01	10	3	12	2	20	12	08	00	3	12	1	18
4	08	16	03	02	3	18	2	03	21	04	20	3	18	2	22	12	10	00	3	18	1	19
4	12	16	05	18	3	24	2	05	21	08	00	3	24	2	25	13	00	00	3	24	1	21
4	16	16	08	04	3	30	2	07	21	11	10	3	30	2	27	13	02	00	3	30	1	22
4	20	16	10	20	3	36	2	09	22	02	20	3	36	3	00	13	04	00	3	36	1	24
4	24	17	01	06	3	42	2	11	22	06	00	3	42	3	02	13	06	00	3	42	1	25
4	28	17	03	22	3	48	2	13	22	09	10	3	48	3	05	13	08	00	3	48	1	27
5	02	17	06	08	3	54	2	15	23	00	20	3	54	3	07	13	10	00	3	54	1	28
5	06	17	08	24	4	00	2	16	23	04	00	4	00	3	10	14	00	00	4	00	2	00
5	10	17	11	10					23	07	10					14	02	00				
5	14	18	01	26					23	10	20					14	04	00				
5	18	18	04	12					24	02	00					14	06	00				
5	22	18	06	28					24	05	10					14	08	00				
5	26	18	09	14					24	08	20					14	10	00				
6	00	19	10	00					25	00	00					15	00	00				

नोटः– इस कोष्ठक से ज्ञात ग्रहायु 'मध्यम' है।

ग्रहायु-साधन कोष्ठक (भाग–2)

ग्रह–नीच या नीच–ग्रह		बुध परमायु–वर्ष 12 (नीच 11 रा. 15 अं.)							गुरु परमायु–वर्ष 15 (नीच 9 रा. 05 अं.)							शुक्र परमायु–वर्ष 21 (नीच 5 रा. 27 अं.)							शनि परमायु–वर्ष 20 (नीच 0 रा. 20 अं.)						
		बुधायु			अन्तर शेष		आयु		गुरु–आयु			अन्तर शेष		आयु		शुक्रायु			अन्तर शेष		आयु		शनि–आयु			अन्तर शेष		आयु	
रा.	अं.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	अं.	क.	मा.	दि.
0	00	6	00	00	0	06	0	01	7	06	00	0	06	0	01	10	06	00	0	06	0	02	10	00	00	0	06	0	02
0	04	6	01	18	0	12	0	02	7	08	00	0	12	0	03	10	08	24	0	12	0	04	10	02	20	0	12	0	04
0	08	6	03	06	0	18	0	03	7	10	00	0	18	0	04	10	11	18	0	18	0	06	10	05	10	0	18	0	06
0	12	6	04	24	0	24	0	04	8	00	00	0	24	0	06	11	02	12	0	24	0	08	10	08	00	0	24	0	08
0	16	6	06	12	0	30	0	06	8	02	00	0	30	0	07	11	05	06	0	30	0	10	10	10	20	0	30	0	10
0	20	6	08	00	0	36	0	07	8	04	00	0	36	0	09	11	08	00	0	36	0	12	11	01	10	0	36	0	12
0	24	6	09	18	0	42	0	08	8	06	00	0	42	0	10	11	10	24	0	42	0	14	11	04	00	0	42	0	14
0	28	6	11	06	0	48	0	09	8	08	00	0	48	0	12	12	01	18	0	48	0	16	11	06	20	0	48	0	16
1	02	7	00	24	0	54	0	10	8	10	00	0	54	0	13	12	04	12	0	54	0	18	11	09	10	0	54	0	18
1	06	7	02	12	1	00	0	12	9	00	00	1	00	0	15	12	07	06	1	00	0	21	12	00	00	1	00	0	20
1	10	7	04	00	1	06	0	13	9	02	00	1	06	0	16	12	10	00	1	06	0	23	12	02	20	1	06	0	22
1	14	7	05	18	1	12	0	14	9	04	00	1	12	0	18	13	00	24	1	12	0	25	12	05	10	1	12	0	24
1	18	7	07	06	1	18	0	15	9	06	00	1	18	0	19	13	03	18	1	18	0	27	12	08	00	1	18	0	26
1	22	7	08	24	1	24	0	16	9	08	00	1	24	0	21	13	06	12	1	24	0	29	12	10	20	1	24	0	28
1	26	7	10	12	1	30	0	18	9	10	00	1	30	0	22	13	09	06	1	30	1	01	13	01	10	1	30	1	00
2	00	8	00	00	1	36	0	19	10	00	00	1	36	0	24	14	00	00	1	36	1	03	13	04	00	1	36	1	02
2	04	8	01	18	1	42	0	20	10	02	00	1	42	0	25	14	02	24	1	42	1	05	13	06	20	1	42	1	04
2	08	8	03	06	1	48	0	21	10	04	00	1	48	0	27	14	05	18	1	48	1	07	13	09	10	1	48	1	06
2	12	8	04	24	1	54	0	22	10	06	00	1	54	0	28	14	08	12	1	54	1	09	14	00	00	1	54	1	08
2	16	8	06	12	2	00	0	24	10	08	00	2	00	1	00	14	11	06	2	00	1	11	14	02	20	2	00	1	10
2	20	8	08	00	2	06	0	25	10	10	00	2	06	1	01	15	02	00	2	06	1	14	14	05	10	2	06	1	12
2	24	8	09	18	2	12	0	26	11	00	00	2	12	1	03	15	04	24	2	12	1	16	14	08	00	2	12	1	14
2	28	8	11	06	2	18	0	27	11	02	00	2	18	1	04	15	07	18	2	18	1	18	14	10	20	2	18	1	16
3	02	9	00	24	2	24	0	28	11	04	00	2	24	1	06	15	10	12	2	24	1	20	15	01	10	2	24	1	18
3	06	9	02	12	2	30	1	00	11	06	00	2	30	1	07	16	01	06	2	30	1	22	15	04	00	2	30	1	20
3	10	9	04	00	2	36	1	01	11	08	00	2	36	1	09	16	04	00	2	36	1	24	15	06	20	2	36	1	22
3	14	9	05	18	2	42	1	02	11	10	00	2	42	1	10	16	06	24	2	42	1	26	15	09	10	2	42	1	24
3	18	9	07	06	2	48	1	03	12	00	00	2	48	1	12	16	09	18	2	48	1	28	16	00	00	2	48	1	26
3	22	9	08	24	2	54	1	04	12	02	00	2	54	1	13	17	00	12	2	54	2	00	16	02	20	2	54	1	28
3	26	9	10	12	3	00	1	06	12	04	00	3	00	1	15	17	03	06	3	00	2	03	16	05	10	3	00	2	00
4	00	10	00	00	3	06	1	07	12	06	00	3	06	1	16	17	06	00	3	06	2	05	16	08	00	3	06	2	02
4	04	10	01	18	3	12	1	08	12	08	00	3	12	1	18	17	08	24	3	12	2	07	16	10	20	3	12	2	04
4	08	10	03	06	3	18	1	09	12	10	00	3	18	1	19	17	11	18	3	18	2	09	17	01	10	3	18	2	06
4	12	10	04	24	3	24	1	10	13	00	00	3	24	1	21	18	02	12	3	24	2	11	17	04	00	3	24	2	08
4	16	10	06	12	3	30	1	12	13	02	00	3	30	1	22	18	05	06	3	30	2	13	17	06	20	3	30	2	10
4	20	10	08	00	3	36	1	13	13	04	00	3	36	1	24	18	08	00	3	36	2	15	17	09	10	3	36	2	12
4	24	10	09	18	3	42	1	14	13	06	00	3	42	1	25	18	10	24	3	42	2	17	18	00	00	3	42	2	14
4	28	10	11	06	3	48	1	15	13	08	00	3	48	1	27	19	01	18	3	48	2	19	18	02	20	3	48	2	16
5	02	11	00	24	3	54	1	16	13	10	00	3	54	1	28	19	04	12	3	54	2	21	18	05	10	3	54	2	18
5	06	11	02	12	4	00	1	18	14	00	00	4	00	2	00	19	07	06	4	00	2	24	18	08	00	4	00	2	20
5	10	11	04	00					14	02	00					19	10	00					18	10	20				
5	14	11	05	18					14	04	00					20	00	24					19	01	10				
5	18	11	07	06					14	06	00					20	03	18					19	04	00				
5	22	11	08	24					14	08	00					20	06	12					19	06	20				
5	26	11	10	12					14	10	00					20	09	06					19	09	10				
6	00	12	00	00					15	00	00					21	00	00					20	00	00				

नोटः–. इस कोष्ठक से ज्ञात ग्रहायु 'मध्यम' है।

लग्नायु–साधन कोष्ठक (भाग 1)

(बली लग्नेश के लिए)

								लग्न–शेष	
लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु
रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.	अं. क.	मा. दि.
0 00	0 00 00	**3 00**	3 00 00	**6 00**	6 00 00	**9 00**	9 00 00	**0 05**	0 01
0 03	0 01 06	**3 03**	3 01 06	**6 03**	6 01 06	**9 03**	9 01 06	**0 10**	0 02
0 06	0 02 12	**3 06**	3 02 12	**6 06**	6 02 12	**9 06**	9 02 12	**0 15**	0 03
09	0 03 18	**3 09**	3 03 18	**6 09**	6 03 18	**9 09**	9 03 18	**0 20**	0 04
12	0 04 24	**3 12**	3 04 24	**6 12**	6 04 24	**9 12**	9 04 24	**0 25**	0 05
15	0 06 00	**3 15**	3 06 00	**6 15**	6 06 00	**9 15**	9 06 00	**0 30**	0 06
18	0 07 06	**3 18**	3 07 06	**6 18**	6 07 06	**9 18**	9 07 06	**0 35**	0 07
21	0 08 12	**3 21**	3 08 12	**6 21**	6 08 12	**9 21**	9 08 12	**0 40**	0 08
24	0 09 18	**3 24**	3 09 18	**6 24**	6 09 18	**9 24**	9 09 18	**0 45**	0 09
27	0 10 24	**3 27**	3 10 24	**6 27**	6 10 24	**9 27**	9 10 24	**0 50**	0 10
00	1 00 00	**4 00**	4 00 00	**7 00**	7 00 00	**10 00**	10 00 00	**0 55**	0 11
03	1 01 06	**4 03**	4 01 06	**7 03**	7 01 06	**10 03**	10 01 06	**1 00**	0 12
06	1 02 12	**4 06**	4 02 12	**7 06**	7 02 12	**10 06**	10 02 12	**1 05**	0 13
09	1 03 18	**4 09**	4 03 18	**7 09**	7 03 18	**10 09**	10 03 18	**1 10**	0 14
12	1 04 24	**4 12**	4 04 24	**7 12**	7 04 24	**10 12**	10 04 24	**1 15**	0 15
15	1 06 00	**4 15**	4 06 00	**7 15**	7 06 00	**10 15**	10 06 00	**1 20**	0 16
18	1 07 06	**4 18**	4 07 06	**7 18**	7 07 06	**10 18**	10 07 06	**1 25**	0 17
21	1 08 12	**4 21**	4 08 12	**7 21**	7 08 12	**10 21**	10 08 12	**1 30**	0 18
24	1 09 18	**4 24**	4 09 18	**7 24**	7 09 18	**10 24**	10 09 18	**1 35**	0 19
27	1 10 24	**4 27**	4 10 24	**7 27**	7 10 24	**10 27**	10 10 24	**1 40**	0 20
00	2 00 00	**5 00**	5 00 00	**8 00**	8 00 00	**11 00**	11 00 00	**1 45**	0 21
03	2 01 06	**5 03**	5 01 06	**8 03**	8 01 06	**11 03**	11 01 06	**1 50**	0 22
06	2 02 12	**5 06**	5 02 12	**8 06**	8 02 12	**11 06**	11 02 12	**1 55**	0 23
09	2 03 18	**5 09**	5 03 18	**8 09**	8 03 18	**11 09**	11 03 18	**2 00**	0 24
12	2 04 24	**5 12**	5 04 24	**8 12**	8 04 24	**11 12**	11 04 24	**2 05**	0 25
15	2 06 00	**5 15**	5 06 00	**8 15**	8 06 00	**11 15**	11 06 00	**2 10**	0 26
18	2 07 06	**5 18**	5 07 06	**8 18**	8 07 06	**11 18**	11 07 06	**2 15**	0 27
21	2 08 12	**5 21**	5 08 12	**8 21**	8 08 12	**11 21**	11 08 12	**2 20**	0 28
24	2 09 18	**5 24**	5 09 18	**8 24**	8 09 18	**11 24**	11 09 18	**2 25**	0 29
27	2 10 24	**5 27**	5 10 24	**8 27**	8 10 24	**11 27**	11 10 24	**2 30**	1 00
00	3 00 00	**6 00**	6 00 00	**9 00**	9 00 00	**12 00**	12 00 00	**2 35**	1 01
								2 40	1 02
								2 45	1 03
								2 50	1 04
								2 55	1 05
								3 00	1 06

नोट :– इस कोष्ठक से ज्ञात लग्नायु 'स्पष्ट' ही है।

लग्नायु–साधन कोष्ठक (भाग 2)

(बली लग्ननवांशेश के लिए)

लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न–शेष	आयु
अं. क.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	कला	मा. दि.
0 00	0 00 00	10 00	3 00 00	20 00	6 00 00	1	0 02
0 20	0 01 06	10 20	3 01 06	20 20	6 01 06	2	0 04
0 40	0 02 12	10 40	3 02 12	20 40	6 02 12	3	0 06
1 00	0 03 18	11 00	3 03 18	21 00	6 03 18	4	0 08
1 20	0 04 24	11 20	3 04 24	21 20	6 04 24	5	0 10
1 40	0 06 00	11 40	3 06 00	21 40	6 06 00	6	0 11
2 00	0 07 06	12 00	3 07 06	22 00	6 07 06	7	0 13
2 20	0 08 12	12 20	3 08 12	22 20	6 08 12	8	0 15
2 40	0 09 18	12 40	3 09 18	22 40	6 09 18	9	0 17
3 00	0 10 24	13 00	3 10 24	23 00	6 10 24	10	0 19
3 20	1 00 00	13 20	4 00 00	23 20	7 00 00	11	0 20
3 40	1 01 06	13 40	4 01 06	23 40	7 01 06	12	0 22
4 00	1 02 12	14 00	4 02 12	24 00	7 02 12	13	0 24
4 20	1 03 18	14 20	4 03 18	24 20	7 03 18	14	0 26
4 40	1 04 24	14 40	4 04 24	24 40	7 04 24	15	0 28
5 00	1 06 00	15 00	4 06 00	25 00	7 06 00	16	0 29
5 20	1 07 06	15 20	4 07 06	25 20	7 07 06	17	1 01
5 40	1 08 12	15 40	4 08 12	25 40	7 08 12	18	1 03
6 00	1 09 18	16 00	4 09 18	26 00	7 09 18	19	1 05
6 20	1 10 24	16 20	4 10 24	26 20	7 10 24	20	1 06
6 40	2 00 00	16 40	5 00 00	26 40	8 00 00		
7 00	2 01 06	17 00	5 01 06	27 00	8 01 06		
7 20	2 02 12	17 20	5 02 12	27 20	8 02 12		
7 40	2 03 18	17 40	5 03 18	27 40	8 03 18		
8 00	2 04 24	18 00	5 04 24	28 00	8 04 24		
8 20	2 06 00	18 20	5 06 00	28 20	8 06 00		
8 40	2 07 06	18 40	5 07 06	28 40	8 07 06		
9 00	2 08 12	19 00	5 08 12	29 00	8 08 12		
9 20	2 09 18	19 20	5 09 18	29 20	8 09 18		
9 40	2 10 24	19 40	5 10 24	29 40	8 10 24		
10 00	3 00 00	20 00	6 00 00	30 00	9 00 00		

नोट :– इस कोष्ठक से ज्ञात लग्नायु 'स्पष्ट' ही है।

लग्नायु–साधन कोष्ठक (भाग 1)

(बली लग्नेश के लिए)

लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु
रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.	रा. अं.	व. मा. दि.
0 00	0 00 00	**3 00**	3 00 00	**6 00**	6 00 00	**9 00**	9 00 00
0 03	0 01 06	**3 03**	3 01 06	**6 03**	6 01 06	**9 03**	9 01 06
0 06	0 02 12	**3 06**	3 02 12	**6 06**	6 02 12	**9 06**	9 02 12
0 09	0 03 18	**3 09**	3 03 18	**6 09**	6 03 18	**9 09**	9 03 18
0 12	0 04 24	**3 12**	3 04 24	**6 12**	6 04 24	**9 12**	9 04 24
0 15	0 06 00	**3 15**	3 06 00	**6 15**	6 06 00	**9 15**	9 06 00
0 18	0 07 06	**3 18**	3 07 06	**6 18**	6 07 06	**9 18**	9 07 06
0 21	0 08 12	**3 21**	3 08 12	**6 21**	6 08 12	**9 21**	9 08 12
0 24	0 09 18	**3 24**	3 09 18	**6 24**	6 09 18	**9 24**	9 09 18
0 27	0 10 24	**3 27**	3 10 24	**6 27**	6 10 24	**9 27**	9 10 24
1 00	1 00 00	**4 00**	4 00 00	**7 00**	7 00 00	**10 00**	10 00 00
1 03	1 01 06	**4 03**	4 01 06	**7 03**	7 01 06	**10 03**	10 01 06
1 06	1 02 12	**4 06**	4 02 12	**7 06**	7 02 12	**10 06**	10 02 12
1 09	1 03 18	**4 09**	4 03 18	**7 09**	7 03 18	**10 09**	10 03 18
1 12	1 04 24	**4 12**	4 04 24	**7 12**	7 04 24	**10 12**	10 04 24
1 15	1 06 00	**4 15**	4 06 00	**7 15**	7 06 00	**10 15**	10 06 00
1 18	1 07 06	**4 18**	4 07 06	**7 18**	7 07 06	**10 18**	10 07 06
1 21	1 08 12	**4 21**	4 08 12	**7 21**	7 08 12	**10 21**	10 08 12
1 24	1 09 18	**4 24**	4 09 18	**7 24**	7 09 18	**10 24**	10 09 18
1 27	1 10 24	**4 27**	4 10 24	**7 27**	7 10 24	**10 27**	10 10 24
2 00	2 00 00	**5 00**	5 00 00	**8 00**	8 00 00	**11 00**	11 00 00
2 03	2 01 06	**5 03**	5 01 06	**8 03**	8 01 06	**11 03**	11 01 06
2 06	2 02 12	**5 06**	5 02 12	**8 06**	8 02 12	**11 06**	11 02 12
2 09	2 03 18	**5 09**	5 03 18	**8 09**	8 03 18	**11 09**	11 03 18
2 12	2 04 24	**5 12**	5 04 24	**8 12**	8 04 24	**11 12**	11 04 24
2 15	2 06 00	**5 15**	5 06 00	**8 15**	8 06 00	**11 15**	11 06 00
2 18	2 07 06	**5 18**	5 07 06	**8 18**	8 07 06	**11 18**	11 07 06
2 21	2 08 12	**5 21**	5 08 12	**8 21**	8 08 12	**11 21**	11 08 12
2 24	2 09 18	**5 24**	5 09 18	**8 24**	8 09 18	**11 24**	11 09 18
2 27	2 10 24	**5 27**	5 10 24	**8 27**	8 10 24	**11 27**	11 10 24
3 00	3 00 00	**6 00**	6 00 00	**9 00**	9 00 00	**12 00**	12 00 00

लग्न–शेष

लग्न	आयु
अं. क.	मा. दि.
0 05	0 01
0 10	0 02
0 15	0 03
0 20	0 04
0 25	0 05
0 30	0 06
0 35	0 07
0 40	0 08
0 45	0 09
0 50	0 10
0 55	0 11
1 00	0 12
1 05	0 13
1 10	0 14
1 15	0 15
1 20	0 16
1 25	0 17
1 30	0 18
1 35	0 19
1 40	0 20
1 45	0 21
1 50	0 22
1 55	0 23
2 00	0 24
2 05	0 25
2 10	0 26
2 15	0 27
2 20	0 28
2 25	0 29
2 30	1 00
2 35	1 01
2 40	1 02
2 45	1 03
2 50	1 04
2 55	1 05
3 00	1 06

नोट :– इस कोष्ठक से ज्ञात लग्नायु 'स्पष्ट' ही है।

लग्नायु–साधन कोष्ठक (भाग 2)

(बली लग्ननवांशेश के लिए)

लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न	आयु	लग्न–शेष	आयु
अं. क.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	कला	मा. दि.
0 00	0 00 00	**10 00**	3 00 00	**20 00**	6 00 00	**1**	0 02
0 20	0 01 06	**10 20**	3 01 06	**20 20**	6 01 06	**2**	0 04
0 40	0 02 12	**10 40**	3 02 12	**20 40**	6 02 12	**3**	0 06
1 00	0 03 18	**11 00**	3 03 18	**21 00**	6 03 18	**4**	0 08
1 20	0 04 24	**11 20**	3 04 24	**21 20**	6 04 24	**5**	0 10
1 40	0 06 00	**11 40**	3 06 00	**21 40**	6 06 00	**6**	0 11
2 00	0 07 06	**12 00**	3 07 06	**22 00**	6 07 06	**7**	0 13
2 20	0 08 12	**12 20**	3 08 12	**22 20**	6 08 12	**8**	0 15
2 40	0 09 18	**12 40**	3 09 18	**22 40**	6 09 18	**9**	0 17
3 00	0 10 24	**13 00**	3 10 24	**23 00**	6 10 24	**10**	0 19
3 20	1 00 00	**13 20**	4 00 00	**23 20**	7 00 00	**11**	0 20
3 40	1 01 06	**13 40**	4 01 06	**23 40**	7 01 06	**12**	0 22
4 00	1 02 12	**14 00**	4 02 12	**24 00**	7 02 12	**13**	0 24
4 20	1 03 18	**14 20**	4 03 18	**24 20**	7 03 18	**14**	0 26
4 40	1 04 24	**14 40**	4 04 24	**24 40**	7 04 24	**15**	0 28
5 00	1 06 00	**15 00**	4 06 00	**25 00**	7 06 00	**16**	0 29
5 20	1 07 06	**15 20**	4 07 06	**25 20**	7 07 06	**17**	1 01
5 40	1 08 12	**15 40**	4 08 12	**25 40**	7 08 12	**18**	1 03
6 00	1 09 18	**16 00**	4 09 18	**26 00**	7 09 18	**19**	1 05
6 20	1 10 24	**16 20**	4 10 24	**26 20**	7 10 24	**20**	1 06
6 40	2 00 00	**16 40**	5 00 00	**26 40**	8 00 00		
7 00	2 01 06	**17 00**	5 01 06	**27 00**	8 01 06		
7 20	2 02 12	**17 20**	5 02 12	**27 20**	8 02 12		
7 40	2 03 18	**17 40**	5 03 18	**27 40**	8 03 18		
8 00	2 04 24	**18 00**	5 04 24	**28 00**	8 04 24		
8 20	2 06 00	**18 20**	5 06 00	**28 20**	8 06 00		
8 40	2 07 06	**18 40**	5 07 06	**28 40**	8 07 06		
9 00	2 08 12	**19 00**	5 08 12	**29 00**	8 08 12		
9 20	2 09 18	**19 20**	5 09 18	**29 20**	8 09 18		
9 40	2 10 24	**19 40**	5 10 24	**29 40**	8 10 24		
10 00	3 00 00	**20 00**	6 00 00	**30 00**	9 00 00		

नोट :– इस कोष्ठक से ज्ञात लग्नायु '**स्पष्ट**' ही है।

साईज़ 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़),
पृष्ठसंख्या 722

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS

(1951 To 2050 A.D.)

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज़ के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। **भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है,** जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-

विशेष छूट-- ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज़ 24 x 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66$\frac{1}{2}$° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश .... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। **ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।**

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

साईज़-24x18½ C.M.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

व्रतपर्व–विवेक

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद् विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चाङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको जरुरत नहीं होगी।

मूल्य Rs. 525/– + Rs. 50/– डाकव्यय

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 272   साईज़ 24 X 18 सें. मी.   उत्कृष्ट बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित   आकर्षक बहुरंगा आवरण

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

[मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन]

[दूसरा संस्करण]

विवाह-सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रतिशत पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है- **प्रथम अध्याय** में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, **द्वितीय अध्याय** में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, **तृतीय अध्याय** में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। **चतुर्थ अध्याय** में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10-15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। **पंचम और छठे अध्याय** मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उदघाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपात्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं **"नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्"** और **" एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते"** आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित **"द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना"** और **"गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते"** - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत-मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन-मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे-पदे उदधृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाड़ीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" - इस प्रकार की अनेक मिलान-सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उदगम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि- मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

पुस्तक मिलने का पताः- श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,'
कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109, **Phone:** 0172.2565 303

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

॥ श्री राम ॥

राशि-रत्न + उपरत्न

Certified Gems

ज्योतिषाचार्यों के लिये विशेष

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि-रत्न + उपरत्न एवं नवरत्नों के ओपन सेट,
1 से 14 मुखी रूद्राक्ष, स्फटिक और रूद्राक्ष की मालाएँ इत्यादि
100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलने का विश्वसनीय स्थान।

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

S. पूरणमल कमलकिशोर • ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन : (दु.) 91-0141-2570540, टेलिफेक्स-2568446, मो. : 98292 16124
E-mail : vijay.8380.soni@gmail.com • Website : www.astralsgems.com

"ज्योतिष रत्न"

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अत: एक अच्छा ज्योर्तिविद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे। इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है।

इस पुस्तक में फलादेश की ''सम्यक'' विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है।

मूल्य : 125/- रुपये + 35/- (डाक व्यय)

सुख-समृद्धि की राह : **गृह-वास्तु**

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125/- + 35/-

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

- ❖ सुख और समृद्धि
- ❖ उत्तम दाम्पत्य जीवन
- ❖ स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति
- ❖ उत्तम शिक्षा और
- ❖ घर और व्यवसाय में सफलता
- ❖ एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गगया है। **भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन से लेकर आंतरिक** साज-सज्जा तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। फ्लैट्स के चयन और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों- सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

ज्योतिष एवं धार्मिक पुस्तकों का अनुपम भंडार

लाल किताब (दो खण्डों में, फोटोस्टेट)	2100.00
लाल किताब (एक खण्ड में, फोटोस्टेट)	1100.00
सम्पूर्ण लाल किताब	250.00
लाल किताब के टोटके	100.00
भृगु संहिता (तीन खण्डों में, फोटोस्टेट)	5100.00
रावण संहिता	250.00
मंत्र सागर	100.00
यंत्र सागर	100.00
गंडे, ताबीज और टोने-टोटके	100.00
क्यों	75.00
कुकिंग गाइड (रसोई शिक्षा)	75.00
स्वदेशी चिकित्सा सार	75.00
शिरडी साईं बाबा भजन सरोवर	75.00
ज्योतिष रत्न (ज्योतिष की अनुपम पुस्तक)	125.00
तंत्र पथ प्रदर्शक	150.00
अनुभुत फलित सिद्धांत	80.00
दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष	70.00
सुख और समृद्धि की राह - गृह वास्तु	125.00
सफलता की राह - कार्यस्थल वास्तु	125.00
मंत्र एवं रुद्राक्ष हीलिंग	60.00
धर्म, ज्योतिष और आप	80.00
ज्ञान सागर	45.00
वास्तविक जीवन का रहस्य	60.00
प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर	60.00
संपूर्ण हिंदु चिंतन	35.00
Complete Hindu Thoughts)	40.00
गौ-ग्रंथ (बहुरंगी छपाई, बहुरंगी जिल्द)	251.00
रामायण तुलसीकृत (भा. टी.) आठों काण्ड	301.00
श्री शिव महापुराण	251.00
सचित्र सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत् महापुराण	301.00
श्रीमद्भागवत् रहस्य (डोंगरेजी महाराज कृत)	251.00
श्रीमद्देवी भागवत् महापुराण	201.00
श्रीमद्देवी भागवत् महापुराण छोटा	101.00
श्रीमद्भगवद्गीता (बड़ा आकार, लेमी. जिल्द)	251.00

श्रीमद्भगवद् गीता भाषा (लेमी. जिल्द, दो रंगी छपाई)	175.00
श्रीमद्भगवद् गीता हिंदी अंग्रेजी सहित	100.00
श्रीमद्भगवद् गीता भाषा	50.00
श्री दुर्गा सप्तशती भाषा टीका (लेमी. जिल्द)	60.00
श्री दुर्गा सप्तशती भाषा (जिल्द, लाल अक्षर)	60.00
माँ का स्पर्श (लेमीनेशन जिल्द) डिमाई साइज	60.00
नौ दिन का पाठ- श्री दुर्गा नवरात्र पाठ	40.00
श्रीदुर्गा कवच	15.00
श्री चण्डी कवच	20.00
श्रीकाली कवच	12.00
विष्णु सहस्त्रनाम (लाल अक्षर, लेमी. कार्ड कवर)	20.00
गोपाल सहस्त्रनाम (लाल अक्षर, कार्ड कवर)	20.00
शिव सहस्त्रनाम (लाल अक्षर, कार्ड कवर)	20.00
हनुमान सहस्त्रनाम (लाल अक्षर, कार्ड कवर)	40.00
दुर्गा सहस्त्रनाम (ग्लेज पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	50.00
लक्ष्मी सहस्त्रनाम (ग्लेज पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	50.00
बारह महिनों के व्रत त्योहार नेगचार सहित	201.00
हिन्दुओं के नेगचार एवं गीत	60.00
रुद्राष्टाध्यायी हिंदी टीका सहित	90.00
55 चालीसा पाठ आरतियों सहित	80.00
नित्यकर्म पाठ (मैपलिथो पेपर, लेमी. जिल्द)	40.00
आदित्य हृदय स्तोत्र	40.00
कार्तिक मास की व्रत कथाएं एवं भजन	40.00
दीपावली पूजन (लाल अक्षर, लेमी. कार्ड कवर)	21.00
श्री विश्वकर्मा पूजा कथा (लाल अक्षर)	20.00
तुलसी विवाह (ग्लेज पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	15.00
संतान गोपाल (लाल अक्षर, कार्ड कवर)	15.00
नवग्रह पूजा पद्धति हिंदी टीका सहित	20.00
महाकाल श्रीशनि मृत्युंजय स्तोत्र भा. टी. सहित	20.00
सम्पूर्ण गणेश चतुर्थी व्रत कथा	40.00
शिव उपासना (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	40.00
गरुड़ पुराण (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	25.00
श्री सूक्तम् (छोटा साइज)	10.00
सुंदरकांड बड़ा साइज (लाल अक्षर, जिल्द)	150.00
सुंदरकांड भा.टी.	25.00

प्राप्ति स्थान: **अग्रवाल बुक डिपो (रजि.)**

460, खारी बावली दिल्ली- 6. फोन : 23943254

(डाक व्यय अलग)

ज्योतिष एवं धार्मिक पुस्तकों का अनुपम भंडार

हनुमान उपासना	50.00
हनुमान सहस्त्रनाम (लाल अक्षर)	40.00
श्रीऋणमोचन मंगल स्तोत्र (लाल अक्षर)	20.00
हनुमान बाहुक (मैप. पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	15.00
हनुमान कवच (मैप. पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	15.00
राम नाम लेखन पुस्तिका 11000 नाम	6.00
रामायण मनका एवं रामनाम माला (लाल अक्षर)	20.00
श्रीराम रक्षा स्तोत्र (लाल अक्षर)	10.00
साईं बावनी (दो रंगी छपाई, मैपलिथो पेपर)	12.00
श्री साईं महाकष्ट निवारण (दो रंगी छपाई)	8.00
श्रीगणपति अथर्वशीर्ष (लाल अक्षर)	12.00
शिव कवच (लाल अक्षर, मैप. पेपर)	15.00
कवच संग्रह (ग्लेज पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	35.00
कनक धारा (लाल अक्षर, मैप. पेपर)	12.00
पार्वती मंगल (लाल अक्षर)	25.00
नवग्रह स्तोत्र और नवग्रह कवच (लाल अक्षर)	25.00
श्री नृसिंह कवच हिंदी टीका सहित (लाल अक्षर)	15.00
श्री शिव महिम्न स्तोत्र हिंदी टीका सहित	15.00
श्री आदित्य हृदय स्तोत्र हिंदी टीका सहित	25.00
गीता सार (लाल अक्षर)	20.00
श्री शिवाष्टक रुद्राष्टक हिंदी टीका सहित	15.00
श्री बगलामुखी स्तोत्र (कवच सहित)	15.00
श्री बगलामुखी स्तोत्र (कवच सहित)	15.00
श्री गजेन्द्र मोक्ष हिंदी टीका सहित	10.00
श्री साईं व्रत कथा (लाल अक्षर)	11.00
कार्तिक माहात्म्य सम्पूर्ण 35 अध्याय	40.00
एकादशी माहात्म्य फलाहार विधान सहित	40.00
श्रावण माहात्म्य (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	40.00
माघ माहात्म्य (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	40.00
बैशाख माहात्म्य (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	40.00
पुरुषोत्तम माहात्म्य (ग्लेज पेपर, लेमीनेशन कवर)	40.00
राम अमृतवाणी	15.00
शिव अमृतवाणी	15.00
दुर्गा अमृतवाणी	15.00

सप्तवार व्रत कथा (आरतियों सहित)	30.00
सुंदरकांड	30.00
चालीसा पाठ संग्रह	30.00
महालक्ष्मी पूजन विधान भा०टी०	30.00
करवा चौथ, अहोई, दिवाली, भैय्या दूज व्रत कथा	15.00
सत्यनारायण व्रत कथा	15.00
सोमवार व्रत कथा	15.00
मंगलवार व्रत कथा	15.00
बृहस्पतिवार व्रत कथा	15.00
शुक्रवार व्रत कथा	15.00
शनिवार व्रत कथा	20.00
चार्तुमास व्रत कथाएं	30.00
श्री महाशिवरात्रि की व्रत कथाएं	20.00
वट् सावित्री व्रत कथा	20.00
अन्नपूर्णा व्रत कथा	20.00
संकटा माता एवं सकट चौथ व्रत कथा	20.00
पूर्णमासी व्रत कथा	20.00
प्रदोष व्रत कथा	20.00
चन्दन छठ, सूरज छठ, जीवत्पुत्रिका व्रत कथा	20.00
श्री धर्मराजजी, चित्रगुप्तजी की कथा	20.00
मंगला गौरी व्रत कथा	20.00
सोमवती अमावस्या व्रत कथा	20.00
एकादशी व्रत कथा	20.00
आरती का विशालतम संग्रह (175 आरती)	60.00
जन्मांग पत्रिका (मैपलिथो पेपर)	12.00
षड्वर्गीय (मैपलिथो पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	18.00
सप्तवर्गीय (मैपलिथो पेपर, लेमी. कार्ड कवर)	25.00
लग्न पत्रिका (मैपलिथो पेपर)	5.00
पीली चिट्ठी (मोटा पेपर)	5.00
ज्योतिष सर्वसंग्रह (ग्लेज पेपर)	40.00
हवन पद्धति	25.00
विवाह पद्धति	25.00
जन्म पत्रिका (मैपलिथो पेपर)	3.00

अग्रवाल बुक डिपो (रजि.) (डाक व्यय अलग)

प्राप्ति स्थानः 460, खारी बावली दिल्ली- 6 फोन : 23943254

तन्त्र पथ प्रदर्शक

लेखक:- श्री रमेश दत्त झा झक्करनाथ, झाबाबा मूल्य : रुपये 150.00

प्रस्तुत शोध प्रबंध में- तंत्र, मंत्र, यंत्र, ज्योतिष एवं साहित्य कर्मकाण्ड के विषय पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत-शोध-प्रबन्ध "रूचि" को तंत्र विद्या के विषय में आकृष्ट करना है।

"गुरुमुख" (दीक्षा संस्कार) के लिये प्रारंभिक-प्रयास, धार्मिक उपासना, पूजा-पद्धति साधना-उपासना की "आचारसंहिता" (नियमादि) रहस्यमयी माया के गूढ़ तथा गोपनीय-विज्ञान, जोकि तंत्र विषयक-विवेचनात्मक समीक्षा के आधार पर, यह शास्त्र षट्कर्म (Six fold activity) के रूप में माना जाता है। इसके वस्तुस्थिति से यथा संभव विषय-वस्तु से परिचय कराना चाहता हूँ।

जिस प्रकार "उपासना के ये सभी क्रियाएं-इच्छअनुसार प्रार्थना द्वारा अलौकिक प्रेरक शक्ति के माध्यम से प्रगतिशील मानव, उत्तम और सही दिशा में सफलता प्राप्ति के लिए प्रगति-पथ पर अग्रसर हों एवं गति प्राप्त करने के लिये उचित दिशा की ओर संकेत करती है। यह संकेत हमारी कुछ विश्वस्त परम्परा पर आधारित है। 6 प्रकार के कर्म इस प्रकार है - मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उद्वेषण और शान्ति। मानसिक तनाव, विकलता हलचल उद्विग्नता, आदि में शान्ति कर्म के द्वारा समाधान होता है। इस प्रकार से आवश्यकतानुसार अन्य कार्यों के लिये दूसरे निर्दिष्ट कर्म से समाधान संभव होता है।

कुलार्णवतंत्र के अनुसार - तांत्रिक प्रवृत्ति - सांसारिक वस्तु की उपलब्धि के लिये है। इसका फल शीघ्र होता है। महाकाव्य और पुराण में - इस रहस्यमय गूढ़ एवं गोपनीय विद्या के बारे में उपाख्यान के रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये सभी वर्णन प्रयोग रूप में है। यह विद्या पहले राक्षसों के बीच थी ऋषि शुक्राचार्य को भी यह विद्या प्राप्त थी, परन्तु सिर्फ राक्षस ही उनके शिष्य थे।

इस प्रकार यह ब्रह्म विद्या के रूप में अवतरिक हुआ। तंत्र विद्या के विषय में - हमेशा वर्णन है कि यह एक रहस्यमयी, गूढ़ और गोपनीय मार्ग है। एक तरह से - यह साधकों के धन-सम्पत्ति हरण कर देता है। पत्नी एवं उनके जीवन को भी बर्बाद कर देता है। फिर भी - इसके प्रति आस्था विश्वास और भरोसे पर सन्देह नहीं करना एवं इसके रहस्य को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं करना चाहिये।

किसी भी जाति के कोई भी व्यक्ति बिना कोई दिक्कत के इस शास्त्र में प्रवेश कर सकते हैं। मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं, यदि उनकी रुचि हो। प्राप्त करने की मानसिकता हो। प्राप्त करने योग्य हो। दृढ़ संकल्पित हो। तंत्र शास्त्र एक सुलभ व्याख्या है। वेदों की सत्यता का प्रमाण है। अल्पज्ञानी, थोड़ी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के लिए कलियुग के व्यस्त और बोझिल लोगों के लिए सर्वोत्तम और सर्वोच्च साधन है।

मनुष्य के कष्टों के समाधान के लिये - भगवान शिव ने इस शास्त्र को इसी युग (काल) के लिए उत्कृष्ट शैली में प्रचारित किया। धार्मिक सत्यता में प्रवेश करने का एक पारपत्र (वीजा) के रूप में तंत्र का आविष्कार किया।

इस प्रकार आगे बढ़ने के लिये - आध्यात्मिक निर्देशन भी आवश्यक होता है। सिद्धि और माया तंत्र शास्त्र में - शिव-पार्वती (कथोप-कथन) उत्कृष्ट और विशिष्ट भाषा शैली है। प्रतिमा की रचनात्मक क्रिया और पीठों की स्थापना मन्दिरों के निर्माण, जीवों के कल्याण, मानवों को दीक्षा (संस्कार) प्राप्त होने के लिये होता है। उपासना, साधना, तपस्या तथा आध्यात्मिक प्रयोगात्मक कर्म के लिये ही होता है। जिसे वांछित फल की प्राप्ति होती है, मनोरथ सिद्ध होता है। विशेष रूप से जिसकी जैसी भावना वैसा ही फल होता है।

अत: उपर्युक्त विषय वस्तुओं का विस्तृत वर्णन (संकेत) रूप में इस पुस्तक की विशेषता है।

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता

(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में दस खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगुसंहिता के फुलस्केप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज) मूल्य 5100/-

★ कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।

दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

तंत्रातमक रावण संहिता	3600/- रु.
हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	2500/- रु.
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	2500/- रु.
असली हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव *(यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)*	1600/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि *(दो खण्डों में)*	1200/- रु.

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की पूरी पहले भेजें।

अग्रवाल बुक डिपो (रजि.) 460, खारी बावली दिल्ली- 6 फोन : 011-23943254

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां **जन्मपत्र** एवं **वर्षफल** आदि शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्र आदि कम्प्यूटर से तैयार की गई (स्वनिर्मित) सारणियों से आवश्यक सभी संस्कार देकर बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं। जन्मपत्र आदि बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय लिखना न भूलें। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेशसहित बनाए जाते हैं।

भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 700 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 1200 रु. है। **विदेशी** जन्मपत्र की फीस कम से कम 1500 रु. है। भारतीय टेवा की फीस 100 रु. एवं दशामात्र टेवे की फीस 500 रु. है।

यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है कि– **इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। भारतीय वर्षफल की फीस 500 रु. व विदेशी वर्षफल की फीस 1,000 रु. है।**

प्रत्यक्ष मिलकर शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने एवम् कुण्डलीमिलान की फीस 500 रु. है। फोन द्वारा मुहूर्त एवं मिलान जानने की फीस 1100 रु. है। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 500 रु. है।

नोट:– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। [illegible] पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा। डाकव्यय अलग होगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। **एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000+500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार विमर्श' के अन्त में देखें।**

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. एवं Pin Code लिखना न भूलें।

पण्डित जी से मिलने हेतु

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय– 7 से 10 A.M.

पंडित जी से मिलने का समय – 9 A.M. से

दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तानप्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। **मूल्य 2500 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 2550 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।**

सिद्ध शनियन्त्र–विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। **भेंट– 1100 [illegible] कव्यय अलग।**

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इ[illegible]त्र क[illegible]िवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत [illegible] तुजर्बा लें। **भेंट– 2100 रु.**, डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, [illegible]ष व अठरा[illegible] मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो [illegible] निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तुजर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। **भेंट– 1100 रु.**, डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। **भेंट– 1100 रु.**, डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।
हरवर्ष 21 से 31 दिसंबर तक भी कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्रव्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]
Website: www.shrimartand.com

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(प्रकाशित हो चुकी है।)

लेखकः-- प्रियव्रत शर्मा.

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वसिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उदघाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है। ध्यान दें– गतवर्षीय विज्ञापन मे इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या केवल 120 लिखी गई थी, लेकिन विषयवृद्धि के कारण इसकी पृष्ठसंख्या अब 222 हो गई है। अतः अब इसका संशोधित मूल्य Rs. 500/– निर्धारित किया गया है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303